

**DUE DATE SLIP****GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj.)

Students can retain library books only for two weeks at the most.

BORROWER'S No.	DUE DATE	SIGNATURE

# वंश भास्कर

( पंचम खण्ड )

[ बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि-मंथिनी टीका सहित ]

मूल लेखक :  
सूर्य मल्ल मिश्रण

सम्पादक  
स्वर्गीय पंडित रामकर्ण आसोपा  
भूतपूर्व प्राध्यापक  
इतिहास विभाग  
कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

एकाधिकारी वितरक  
बाफना बुक डिपो  
चौड़ा रास्ता, जयपुर-३



एकाधिकारी वितरक

**बाफना बुक डिपो**

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ पष्ठदशशिप्रारम्भः ॥ ६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती विप्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इम बुंदियपुर आइकैं, रतनसिंह सठ रान ॥

रविमल्ल १८८१ हिं गारत रिपुन, पंचधन तिन दिय प्रान ॥ १ ॥

इत अर्द्धहिं बसु ८ अवद वय, सठ नृप हुन सुरतान १८९१ ॥

अधिप सठहिं चितोर उत, भो विक्रम बिजु भान ॥ २ ॥

पै बिक्रम १ वय मध्यपर, यातैं नहिं उतैं आस ॥

रसुको इत बुंदीस सुतर, पैहैं स्व वय प्रकास ॥ ३ ॥

षट्पात् ॥

बालपनहु यह अक्षुष तियन छलि विजन प्रतारहिं ॥

मोचत खिन बस्ति मल्ल पिडि लत्ता हनि पारहिं ॥

कतिकन सोयत कुमति पयन बिच सल्य प्रवेसहिं ॥

अंलुकैं नारिन अतैं दूर करि लखत कुंदेसहिं ॥

सामंत १८७१ आदि गुरु बंलु सब बाहिर १ लखि वरजैं बहुत ॥

निजजननि आदि अंवरोधन १ सुचहिं राव जाकों कुपुत ॥ ४ ॥

गुरुजन वरजन गंजि १ सिलुहु बिचरैं स्वतंत्रसम ॥

जननिहु वरजत जानि तर्कैं जलंधात दूष्टतम ॥

१ धर्मनृप को मारने लें ॥ १ ॥ २ लाहे आठ वर्ष की अवस्था के स्थान में विक्रमादित्य बिना ३ लानपाला हुआ ॥ २ ॥ ४ विक्रमादित्य अथवा कानरथा में था इस कारण ५ चित्तोर में कुंवार की आज्ञा नहीं थी ॥ ३ ॥ ६ प्रकाशने जियों को छत्रकर साधना करता था उस जियों को छोड़ते समय ७ योगि में पूज रहने के स्थान में अथवा लालकर, पीठ पर = लात (पद प्रहार) करके विगाता था और कितनी भी शक्ति करती हुई जियों की योगि में ९ शक्तिवाला हुआ होता था और ११ किरती हुई जियों के १० सातों (लहंगे) दूर करके १२ दूरा राज देवता १३ जनाते लें ॥ ४ ॥ अने लोगों के मना करने को १४ दवा-र १५ पानी लें अथवा सरना चिन्तारता

इस बारह १२ वय अब्द भयो तदपिहु खल भास्यो ॥

जननीलग्न सब जनन प्रदत्तमति कुसुत प्रकार्यो ॥

भटसचिवश्चादि अखिलान भनिय अप्पन नियत बिलोम

इहिं सिसुहिं आदि दैवो उचित रहहिं नतो कुलातिथ निरह ॥

बोधा—पुष्प समय मंचोरपुर, व्याहिय जैहँ बरसीह १८४१ ॥

तैंहँ सगपन खुरतान १८९१ को, अगैँ हुव सब ईहँ ॥ ६ ॥

नृप नारायन १८७१ क्रिय नियत, सुतसुतको संबंध ॥

जिनतिम तिन क्षिय जानिकैं, यह हह ६१ पसिसु अंध ॥

सब बुंदोके भटसचिवर, बदि आके कहि व्याह ॥

अयरठाहु मन्त्री न यह, राँच्यो सुनत कुराह ॥ ८ ॥

अहर्प्रति हह ६१ नईसको, बिथरयो अपजस वार ॥

कन यह सुनि मंचोरके, करतभये इनकार ॥ ९ ॥

पट्टपात्र—स्वांत तवहि भटसचिवर विजन लागि बीजं विचारन

लोधिय मनन सुपुत्र किति जग हुव सहकारन ॥

तजि समर्तव अन्न त्वरित याहि जित तित उरकावहि ॥

नृप अनूहपन निखिल लाज अप्पन सिर लावहि ॥

यातैन लाखहु अन्न सम १ असन्न २ बहिपसिलुहु व्याहहु कुम

कछुदूर बहुरि बँहूर किय नृप संबंध दिखाइ नैति ॥ १० ॥

बोधा—वह चालुक बछूरइन, महा कृपन सिरमोर ॥

भूपति दम्भदुलकर २००००० भुव, जस परबस जस १ जोर २ ॥

पट्टपात्र—जिहिं नालहु वनि जीव कहत कोउ न अभद्र क

नृप तव कवि तिहिं नाम लिखत एकांत भद्र लाहि ॥

बारह १ पर्य की अदरथा में हुआ तो भी बूढ़ ही दीखा २ हत बुद्धि ३ समय

में ४ अपन ५ आग ६ उलटा है ॥ ५ ॥ चरापर की ६ इच्छा से ॥ ६ ॥ ७ ॥ बुद्धे

में ७ राजा हुआ सुनकर ॥ ८ ॥ ८ प्रतिदिन ९ कैला १० लख ॥ ११ मन

कारण चिनारने लगे १३ फारस सहित १४ सखता (परादरी) को छोड़कर १५

राजा के १६ कुमार रहने से १७ आलस्योत खोलंखी अभिय के १८ बल्लता २

कन्ह कन्ह पुनि कन्ह भनहिं लिखि लिखि हम निर्भय ॥  
 भाजन अमुमेंत येदि जानि जिततित जय जय जय ॥  
 जिहि कन्ह जानित तंशुजा जुगलरनदिनी लहु तैंहें निर्यतिवर  
 रतान १८९१ बरहिं व्याहिष लविधि अहि स्वमुख ११ सावक २२ न अस  
 दोहा ॥

जियत होइ इह कन्ह जो, तो बड़ लखु तनयाहु ॥  
 लपहु जानि हठ ६१ हिं न दें, विरहें लग वर व्याहु ॥ १३ ॥  
 अनहु भयो पुव्वदि दौ, तल न रखा सुत तंतु ॥  
 हम तिहिं नारिन हठ ६१ इन, मन्ग्यो वर अति संतु ॥ १४ ॥  
 पदपात्र ॥

कन्ह कनिय बालुकिव नाम हरिकुमरि १=९१ सुखच्छन ॥  
 वरि आनिय लुंदीस दिवति १ पद लाहु २ दिवच्छन ॥  
 दुनापी १ अंगहि दयितें २२ चतुर १ कुसइज २ पहिचान्यो ॥  
 अति अघिज्ज गृह आइ संद निज भाग्य प्रमान्यो ॥  
 परि पवन अविष ससुमतिहु ससुभ्तावहु किन स्वीयसुत ॥  
 बस जो खलें न तो अब बद्ध देवर १ जेठ २२ सुलि हुन १२५ ॥  
 वधु सुगुन गिनि बिहसि इहिल कुलजन चंदाउति १८८१३ ॥  
 जंपतें ससुचितें जानि नियत बलिहार फोर सुति ॥  
 सामंता १८९१ दिक स्वीय बधूनत कथित प्रवाधिय ॥  
 अप्पन जिय अंगमि न लगइह करिकी सुभ सोधिय ॥

पुनि गिनहु नारि आश्रय पतिहि वहू तदपि औसी बहत ॥  
 तुम १ हम २ कहैं न इम यह तनय निज कुसंग खलपन नंदत ॥  
 इम विचारि नय उचित लिखुहि सिखयो सु समस्तन ॥  
 पै प्रतिदिन प्रतिकूल वन्यो मयमय बय बस्तन ॥  
 हार्यन वपु सोलहम ६१ विसंत भास्यो दूनो २ लुध ॥  
 हितकी दोधनदार करे प्रतिहत कलि जुग कुध ॥  
 वपुसेद बहन १ पुनि सूढपन २ बयसंगहि गय हुन २ बहत ॥  
 संभरनरेस सोलह १६ समहु चलीहि रथ ससुंचित चहत ॥  
 व्यायो १२ न जिल विहित उचित खुरखी २ आराधन ॥  
 हित हेरहिं तिन तरैजि सखि गुरु कार्य कुसाधन ॥  
 दसमी १० सुख मैह दिनहु बैठि रथ कज बनावहि ॥  
 अरुंग सबल पय अटत पानि अंसन भर पावहि ॥  
 सामंत १८७ १ आदितकत स्वहित बिबुहि बीज किय सब ॥  
 बाहुकी १८९ १ सहित चंद्राउति १८८ ३ हु कूर वजिय करि हितक  
 दोहा ॥

गुन नय तिथि १५६३ सक पुष्पगत, दहि इत वह बनवीर ॥  
 हुव अधीस हनि विकसहि, स्वयं रान अधसीर ॥ १९ ॥

दृष्टा से १ गर्जना करता है २ लवने शिजा दी ३ लदा ४ लदस्त; बा  
 ५. लन ले अर्थात् पिना मोहरी का ऊँट जावे जैसे जिसको फारसी में (शु  
 चंद्रार) कहते हैं अपस्थांवाले १ पकरों के समान अर्थात् युवा अवस्था वा  
 पकरा कासी बहुत होता है. सोलहवें ६ वर्ष में ७ प्रवेश किया तब हुनुना ४  
 दीप्ता ८ शरीर का मांस और सुखपन दोनों अपस्था के साथ बढ़ते गये. स  
 ल ७ वर्ष की अवस्था में ही ९ उचित रथ पर चढ़कर चलने लगा ॥ १७ ॥  
 पानन नही ११ करता था इसीप्रकार ११ वाक्य विद्या भी उचित नहीं समझी  
 हित चाहनेवालों को १३ समझा कर. छोटा साधन करके पडा १४ शरीर का  
 विद्या विजय दशली आदि १५ वस्तु के दिनों में भी रथ में बैठकर १६ क  
 करता था. बलाबाल १७ लेवकों के १८ कंधे पर भार देकर पैदल फिरता. पिना को  
 रण ही सब को १९ उदास करादेवे २० सुख बनी ॥ १८ ॥ \* दणवीर विकसादि  
 का भारकर २१ स्वयं चित्तोड का राणा बन गया २२ पाप में बंद करानेवाला ॥ १९ ॥  
 \* यह वर वि महाराजा तांगा के बड़े पुत्र पृथ्वीराज का पाँचवाँ पुत्र था जिसने १५९२ के सभ

कुंभलाननसिय कुमति, जो दासीभव जात ॥

सु वनवीर इस अप्प सिर, चामर छल चलात ॥ २० ॥

षट्पात्

भोजसु अग्रज भनिय प्रसिय कुमरहि सु कालगति ॥

हन्यो रतनरहहे ६१ स भयउ विक्रमइतव भूपति ॥

उदयसिंह ४ तस अनुज हुतो कुंभिलगढ लो हद ॥

तिहिं अंतर बढि अतुल सु हुव वनवीर दुरासद ॥

महिप जु प्रमत्त अहिफेनमद इम नरबद १८७ १२ दौहित्र बह ॥

विक्रम हन्यो सु वनवीर बढि वं है नृप प्रतप्यो असह ॥ २१ ॥

दोहा ॥

कुंभिलगढ हो तब कथित, उदयसिंह ४ अनुजात ॥

रोहु रह्यो यह दुखख सहि, परयो समुक्ति पैविपात ॥ २२ ॥

षट्पात् ॥

वरस तीन ३ कह्य विकल अप्प वनवीर अकंटक ॥

तप्यो असह चित्तोर छलत प्रभु सक्ति छकाछक ॥

कुल सीसोदनकोहु गोजि न सक्यो जिहिं गौरव ॥

दुजोहन वल दरित रहे नमिनमि जिय कौरव ॥

वनवीर असन इक ३ दिन विरयि करत सुखकर सलिल करि ॥

दाधीव वैद्य आचार्य द्विज परंयो खेमहु विंदु परि ॥ २३ ॥

हाराणा कुम्हा का पोता जो दासी के उदर से पैदा हुआ था उस वनवीर अपने ऊपर चामर छल चलाए ॥ २० ॥ १ दुरा (दुष्ट) ॥ २१ ॥ विक्रमादित्य का २ छोटा भाई २ यज्ञपात ॥ २२ ॥ ४ विशेष हाराण से ५ नहीं दबासके, जलका ६ गहवपन ७ दुर्गंधन के गल से ८ बरेहुग ९ भोजन करके जल को १० पोता था उसका ११ जलकल उठकर जलकल के १० लगा ॥ २३ ॥

महाराणा विक्रमादित्य को सारकर चित्तोड़ की गद्दी ली फिर एक दिन, गोजन करते समय अपना विदित भोजन पृथिवी चहुवाण रावत "खान" को दिया जिसने वनवीर को पातयानिया समझकर भोजन नहीं किया। इस पर वादनुवाद इत्तर रावतखान उदयसिंह के पास कुम्भलगढ चलागया, बहुतांश ना एकत्रित करके सम्वत् १५९७ में वनवीर को निकालकर चित्तोड़ पर अधिकार करके महाराणा उदयसिंह चित्तोड़ के स्वामी हुए।

मृत्तिय हिज जल असुचि न किम हरि द्विजन निवारहु ॥

रान काहिय सब रान विहित कर सुखि निचारहु ॥

यहुरि खेम खिजि बहिय सुखहुख रान डरे सब ॥

दासीभव तुम द्विजन असुचिबुख जल छुवात अन्न ॥

यह सुनि प्रहृष्टि बनबोर अति सु द्विज कहिदिय देस सन ॥

तब उदयधसिंह अभिलाख तकि गो कुंभिलगढ गिरि गहन ॥२४॥

दोहा ॥

पठये दल तँहँ लिखि पिहित, रान भटन इहिरीति ॥

उदयसिंहअनहु इहाँ, तुम द्विज गिरिचि प्रतीति ॥ २५ ॥

पट्टपात ॥

सुल्लपो तब द्विज खेम उदयधसिंह सस्यत सब ॥

बहिय उदयध धिनु पित्त कहहु बिस्वास वनै कद ॥

छंद सुभटन प्रति छन्न पुनिहु पठये इहिँ आसय ॥

सूचित धन तब सवन जोरि पठयो अभीष्ट जय ॥

चितोर द्वारपालन चतुर क्रम वसुँ अपि स्वकीय करि ॥

बोहिनी बहत आयउ उदयध धुँव सब मिलन प्रतीति धरि ॥२६॥

अन्न रजनि गढ आत द्वार भेदिन उघारिदिय ।

परिकर निज समुपेत कहि पर नर प्रवेश किय ।

प्रथमै पैरै १ बनबोर पिंड तो तो तस पावै २ ।

भजिहुजाइ १ जो भीत तोहु जन जियत बतावै २ ।

राजा के साथ १ करके जल को शुद्ध जानो २ अथविश्व. उदयसिंह की ३ अग्नि  
ताम्रा करके ॥ २४ ॥ ४ छाने पत्र लिखकर भेजा ५ विश्वास करके ॥ २५ ॥  
उदयसिंह को जाने सपना ६ तब प्रकाश किया, उदयसिंह ने कहा कि बि  
ना ७ भय भये विश्वास कैसे होसका है. उनराशों के नाम ८ पत्र ९ छाने  
साथ करने की १० इत्यादि से निराह के ११ द्वारपालों को १२ धन देकर अपने कि  
से १३ लेना १४ मिश्रण १५ विश्वास करके ॥ २६ ॥ १६ परन्तु १७ सहित १८ युद्ध में  
पाया जाता तो बनबोर का शरीर मिलजाता और रजजाता तो रसको हा  
व. जोविम प्रताप को दया हुआ वह हमने नहीं जाना ॥ २७ ॥

कैसेहु दोहु जानी न कह्यु पै सर नव तिथि १५९५ साक पर ॥  
चित्तोर आइ भो वह अचल धनी उदय धमेवार धर ॥२७॥  
॥ दोहा ॥

उदयधनन चित्तोर इम, लाहि गहिय नय लाइ ॥  
मेवारे निज गिनि लुमति, लिय सब स्व हिय लगाइ ॥२८॥  
स्व हित खेल आचार्यसन, दन्यो दहु सु खुव धारि ।  
सत्त७ ग्राम पिप्पलि १ सहित, दे दारिद दिय दारि ॥ २९ ॥  
कथन खेल १ के कुलहुको, रान उदय २ कुल राखि ॥  
धनंतरि १ जगतेसरधुर, सब १ रक्खिय सब रसंखि ॥ ३० ॥  
पुर बुंदिय सुरतान १ ८९ १ पहु, इत यह पसुआचार ॥  
द्वित भाखत ताकहँ इनत, सठ कुनिपति अहुसार ॥३१॥  
बुंदियदिन बीसे निवल, मरतहि नृप रवियल १ ८८ १ ॥  
जिततिततै जु रि अरिजनन, होतहि स्निन किय हल ॥३२॥  
केसर १ हागर २ नाम करि, जुगरंजवनन इत आत ॥  
कोटापति सिसु लखि कियउ, पुर कोटा निज पातै ॥३३॥  
जिन बुंदिय लिय जानिकै, तब यह सिसु सुरतान १ ८९ १ ॥  
इम कोटा करि निज अमल, पेटे जवन समान ॥ ३४ ॥  
॥ पदपात ॥

वावर ३ ७ रन भजि बहुरि सुपहु रवियल १ ८८ १ सरन सुनि ।  
भंजि बहुत रान भट पन्पो राघव १ ८७ १ तदीय पुनि ॥  
सुत वीरम १ ८८ १ कन्ह १ ८८ १ सुहि बाल वय औहि दिष्ट बस ।  
जिहिं निकासि पति जवन वने कोटा अरिष्ट बस ॥  
सु अरिष्ट फलहिं सुजन १ १० १ समय पै अन्नतो खल सबल परि ।  
ए जवन कहि जैताउतदास कोटापति हुव विजय करि ॥३५॥

दरिद्र को १ काट दिया । ३३ ॥ लय २ साजी है ॥ ३० ॥ ३ सुर भाग्य के अनु-  
सार ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ कोटा पर ४ पहे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ४ है ३ भाग्य बल ने  
७ लज्जुगता के वल से, यह अज्जुगता राव गुजन के समय में पादसे ॥ ३५ ॥



जैत्र १८९३ कुलहु जबतैहि निबल परिगो रहि निर्भुव ।  
 केसर १६ागर २ कहत हुलसि कोटा अधीस हुव ।  
 इम दिसदिस अंधेर दुजन धुंदिय भुव दब्बहि ।  
 सठ कुपुत्र सुरतान १८९१ गिनत जिततित अरि गब्बहि ।  
 निज जन भजै जु हितकी निपुन ताहि इनै प्रतिकूल तकि ।  
 जिन भुजन भार भट १ वंछु २ जे सब गेहन बेठे सरकि ॥ ३६ ॥  
 इकदिन काका उभय २ सहस १ सत्तल २ दासी खुव ।  
 अनाकाशनहु आइ हड्डराज १८९१ हि तर्जत हुव ॥  
 मंदन कुल तजि मग्न भुवन न रहै इस भोरे ।  
 जिन हसाहु रिपु जनन न गिनि हनरेहु निहोरे ।  
 कुलधर्म अबहु बहि तजि कुमति सहनय विलसहु राज्यसुख ।  
 अबतैहि नतौ सहिदै अटक दुर्जन जिम लहि कैददुख ॥ ३७ ॥  
 सुनत एह सुरतान १८९१ कोप अंतर सदर्प करि ।  
 जब बस परत न जानि टारि कछु समय अप्प टरि ।  
 निज सम्मति जन निकट १ दूर २ रोधंक करिकै हुँत ।  
 काका दुव २ छलि किमहु निलज पकराइलये हुँत ।  
 निज ढिग कढाइ दौउ २ न नयन कहि अबाच्य तिनको कुटिल ।  
 पठये निकेत मंचन पटाके कहत भली हुव अंध किल ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

इकखत घोर अनर्थ यह, तजि जम जिम सुरतान १८९१ ॥  
 सेसहु कति नही १ सोक २ सह, थू थू करि गय थान ॥ ३९ ॥

॥ पट्पात ॥

इमहि जैतगढ अधिप सिंह १८९१ लघुबयहि भीम १८८१ सुत ।

१ बिना मूर्ख २ शत्रुओं ने ३ गर्व करते हैं ४ अपने अपने घरों में जा बैठे ॥ ३६ ॥  
 ५ बिना बुलाए लाकर ६ घमकाया ७ शत्रुओं को अंतर्हंसा ८ नीति के सहित  
 राज्य को भोग ९ रोक ॥ ३७ ॥ १० रोकनेवालों को दूर करके ११ शीघ्र १२  
 स्तुति योग्य ॥ ३८ ॥ १३ लज्जा और शोक के साथ ॥ ३९ ॥

कहिप नृपहिं कुल काल जोहु सहि रहिष द्रोहजुत ।  
 रक्खि विरह रोधकन यह १८११हु लहि कहूँ \* एकाकिय १ ।  
 जिहिं गिराइ तालजल दुष्ट चिरलग + गोता द्विय ।  
 मरतहि सु जानि † वोरत मनुज छोरत हुव तिहिं रक्खि छल ।  
 अटकत निसास जलभृत उदर बच्यो सु निठिन आयुबल ॥४०॥  
 बढत घोरपन बिक्खि सु नृप सुर्जन १८६१सामंत १८८१हु ॥  
 करि अर्पन धिक्कार बारवारहि तैरज्यो बहु ॥

रायमल्ल १८८१२तिम दुष्ट संहज कल्ल्यानमल्ल १८८१३सह ॥  
 उभयशपितृव्यक एहु अटकि द्वारे खल आग्रह ॥  
 जननी १८८१३रुतासरानी १८९१२हु जुग २वरजि रही तस सत्रु बनि  
 उपदेस समुक्ति विप सभ अधम रहत निरंकुस दिन १२जनि ॥४१॥

दोहा ॥

उज्जि अधिप बिश्वास इम, सावधान अव सर्व ॥  
 रुचि जिम बचि लाग्यो रहन, गिनि कुपुत्रपन गर्व ॥ ४२ ॥  
 मन सलज्ज अप्पन मरन, बंछत रन बहु बंधु ॥  
 निज छत न लख्यो जाइ नृप, अर्वनी गेरत अंधु ॥ ४३ ॥  
 जैपै हित उपदेस जुहि, बरतै सुहि विपरीत ॥  
 हल्ल ६१न कुलन कुपुत्र हुव, असो निर्गम अतीत ॥ ४४ ॥  
 अर्जुन १८८११की खँटो अखिल, प्रभुता सुरजन १८९१ पास ॥  
 जोहु निजन गिनि लखि जैर, बँटै तसहु बिनास ॥ ४५ ॥

\* इकल्ला लेकर. ताणाव के जल में † डुबाया ‡ डुबाते जानकर. पेट में? जल भरकर  
 ॥४०॥ २ देखकर ३ धिक्कार देकर ४ धमकाया ५ दोनों काका ६ हठ करके ७ अंकुश  
 हित ॥ ४१ ॥ राजा का विश्वास ८ छोड़कर ॥ ४२ ॥ बहुत बान्धव लज्जा स-  
 हित सुख में अपना मरना ९ चाहने लगे १० अपने होते हुए ११ श्रुति को १२  
 रूप में डालता है ॥ ४३ ॥ जो हित का उपदेश १३ कहे सो १४ उलटा बर्तता  
 १५ वेद का १६ नाश करनेवाला; अथवा कुल की प्रतिज्ञा को मिटानेवाला  
 ॥ ४४ ॥ १७ सम्पादन की हुई १८ सम्पूर्ण १९ चाहते हैं ॥ ४५ ॥

कर्मध्वज जसकर्णके, जावल पत्तन जाइ ॥

सुत तस भैरवकी सुता, पटु सुर्जन १८९१ लिय पाइ ॥ ४६ ॥

पद्मिका ॥

सुर्जन १८९१ सु लग्न पहिलैं सुजान, बय उचित बीर सह मह विधान  
जसकर्ण तनय भैरव जनीसु, कर सृदुल साहि व्याहिय कनीसु ॥ ४७ ॥  
सौभाग्यदेवि १८९ अभिधान सोहि, जगविदित जसोदा १८९१ नामजोहि  
आनी सुव्याहिसुर्जन १८९१ उदार, बसु बुद्धि बिरचि अति मह विचार  
सुरतान १८९१ सु सोभा लखिसक्यो न, तैसे सु बंधु पर दित तक्यो न ॥  
इक रक्खिय माटुंदा अधीन, लुंभि इतर पटाके ग्राम लीन ॥ ४९ ॥  
घर ऋद्ध तदपि सोभा घटी न, हुव सुर्जन १८९१ नैक न बिभवहीन ॥  
बुंदीस ताहि मारन विचारि, सठ बिर्जन बुद्धि स्वमताबुसारि ॥ ५० ॥  
माटुंदा सल्लत कहिय मूढ, गढ़ावंहु तिहिं दल जाइ गुंढ ॥  
अर्जुन १८८१ के उद्धत त्रिकहिं तोरि, बसु अखिल लुद्धि आनहु बहोरि  
यह मंत्रधर्म्यो इक दिवस अग्न, सुनिलिय उन पुब्बहि छल समग्न ॥  
मूढन रचेहु कहु दुर्दंत मंल, तकि धर्म चलत रहत सु स्वतंत्र ॥ ५२ ॥  
अर्जुन १८८१ कै खट धर्मित हुव अपत्य, सुत तीन रहे तैं आयु सत्य ॥  
सुर्जन १८९१ तिम अखयर राज १८९१ सूर, पुनिरान १८९१ अनुजगुन  
ग्रामपूर ॥ ५३ ॥

सुरतान १८९१ मंत्र यह सुनि ससंक, पुच्छिय निज जोधन फलिप पंक  
बंधुनपर बिर्खहु स्वामि बैर, नासन सठ चाहत निजहि नैर ॥ ५४ ॥  
कोटा न लेत हनि जवन कैर, सिर बंधुन कटन बनत सूर ॥

कोमल १ हाथ पकड़कर ॥ ४७ ॥ २ नाम ३ धनकी ४ सृष्टि करके, बहुत उत्सव  
५ कैलाकर ॥ ४८ ॥ ६ लोभ करके ॥ ४९ ॥ तो भी घर की अष्ट ७ सृष्टि नहीं  
घटी ८ अकान्त में बुलाकर ॥ ५० ॥ जाहूदा ९ सालता है, सेना से १० घेरा  
लगाओ ११ जानि अर्जुन के तीनों १२ निरंकुश पुत्रों को मारकर १३ लय ॥ ५१ ॥  
१४ समग्र (सब) सृष्टों की रची हुई सजाह भी कहीं १५ छिपी रहती है ॥ ५२ ॥  
१६ सुखों के लखूह से पूर्ण ॥ ५३ ॥ १७ पाप १८ देखो, अपने १९ नगर का ही  
नाश करना चाहता है ॥ ५४ ॥ २० क्रूर अथवा मूर्ख

अब जियन १ मरन २ सब बिधि अर्चीन, पै करहु स्वामि स्वागत प्रदीन ५५  
 सुत सुज्जना १८९१ दिइम होत सज्ज, लखि स्वामि दोह १ कुल गौरिल ज्ज  
 अर्जुन १८८१ उदूँह जे ठी जु आहि, जग कहत जयवती १८८१ नाम जाहि  
 गाहिलोतनी सु अनुचित गिनाइ, छँम सुतन छुल्लि वह इठ छिनाइ ॥  
 बुल्ही न स्वामिसन रन विधेय, हे भीरु भजहु यह थान हेर्य ॥ ५७ ॥

दोहा ॥

चपारि ४हुं जननिन इम चवत, मन्नि सु पुत्र सुमंत्र ॥  
 सब परिकर बैभव सहित, तक्षिय धर्म स्वतंत्र ॥ ५८ ॥  
 माटुंदा तजि सुदयन, कठि पहिली निसकाल ॥  
 गो बहुरिहु चित्तो गढ, सुज्जन १८९१ सत्रुन साल ॥ ५९ ॥  
 निज मातुल सुत गिनि निपुन, उदयरान करि अर्घ ॥  
 सुज्जन १८९१ शखिखंय प्रीतिसह, बैरी कस्त १ न वगधै २ ॥ ६० ॥  
 दैन न दिय पहिलो पटा, सीसोदन हठ संधि ॥  
 कक्षिय रतन २ मारकहु लहि, बैरी बैरहिं बंधि ॥ ६१ ॥

पदपात् ॥

उदयधरान उच्चरिय रतन १ रविमल्ल २ रहे रन ॥  
 बैर तदपि जो बढहु सोहु सुरतान १८९१ भूप सन ॥  
 बलि अर्जुन १८८१ इन्ह वटप परिय चित्तोर कामपर ॥  
 पुनि मन मातुल पुत्र किम न रक्खहि निज हितकर ॥

इम उदय ४ समप्पिय सुज्जन १८९१ हिं पटा सहै सपैती स ३५००० सौं ॥  
 मुहु रहिय धारि फूफी सुतहि बंटहु तजि बुंदी समौं ॥ ६२ ॥

१ ब्रह्मा के हाथ है. स्वामि के १ आने का आंदर करो ॥ ५५ ॥ ३ सुरजन आदि  
 ४ कुल को कलंक लगने की लज्जा से. अर्जुन की ५ बिदाहिता पड़ी स्त्री ने ॥ ५६ ॥  
 इस वार्ता को ६ अनुचित जनाकर ७ समर्थ पुत्रों को बुलाकर. इस स्थान को - छों-  
 डकर ॥ ५७ ॥ ९ कहते ही १० श्रेष्ठ सलाह को मानकर ॥ १८ ॥ ५९ ॥ ११ आघ  
 (आदर) बैरियों रूपी १२ बकरों के लिये १३ सिंह ॥ ६० ॥ १४ हठ की प्रतिज्ञा  
 से शीपोदिया ने ॥ ६१ ॥ रत्नसिंह और १५ खंयमल्ल, दोनों ही युद्ध में रहे.  
 अर्जुन का १९ पिता. मेरे १७ सामा का पुत्र है १८ बुवा के पुत्र को ॥ ६२ ॥

## ॥ दोहा ॥

अनुज तत्थ सुर्जन १८९।१ उभय २, व्याहे समसंबंध ॥

अक्खयराज १८९।२ रू राम १८९।३ ए २, सह सह दुलह सुसंध ॥ ६३ ॥

स्वर्णाकुमरि १८९।१ मंडनसुता, रचि उच्छव रङ्गोरि ॥

अनुज सहोदर अक्खय १८९।१ हिं, जो व्याहिय कर जोरि ॥ ६४ ॥

सुता कबंध समर्थकी, अमरकुमरि १८९।१ अभिधान ॥

सुर्जन १८९।१ व्याही सोदरहिं, सो राम १८९।३ हिं सह मान ॥ ६५ ॥

बंध त्रय ३ हिं करिहं बहुरि, बुंदिय पाइ विवाह ॥

बंसहु तीन ३ नके बढहिं, रक्खन निज कुल राह ॥ ६६ ॥

पादाकुलकम्प ॥

रायमल्ल १८८।२ कल्लयानमल्ल १८८।३ रचि, विन्नति अति बुंदिय

अपजस बचि ॥

निज भतीज नृप बहुत निवास्यो, पै अनयोहि सुरतान १८९।१

प्रेसारयो ॥ ६७ ॥

सगपन इन्ह दोहुरन समकुलसन, रचिय अगग रविमल्ल १८८।१

धराधन ॥

बुंदीपति जिन्ह अबहु न व्याहत १, दायं हुदै न दहे हिय दाहता ॥ ६८ ॥

जरयो समह व्याहत लखिं सुर्जन १८९।१, व्याहैं किम सु स्व-

वित्त पितृव्यन ॥

रोध प्रतीपहिं तेशन सराहैं, चित्त उदास मरन रन चाहैं ॥ ६९ ॥

बुंदिय इम तिन्ह भाग्य बुलायो, अतिबल चढि मंडूपति आयो ॥

घेरा लागत भयो भय घरघर, अब सुरतान १८८।१ भटन किय

आदर ॥ ७० ॥

१ सखी प्रतिज्ञावाले ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ २ अनोति ३ कैलाई ॥ ६७ ॥

१ राजा सूर्यमल्ल ने १ घंट देने में, जले हुए हृदय को जलाता है ॥ ६८ ॥ १ अ-

ने धन से ७ रोकने के ८ विरुद्ध ॥ ७० ॥ ७० ॥

पट्पात ॥

सामंता १८७११दिक सुभट तदपि नृपतैं न मिले तैंह ॥

बाहिरतैं रतिबाह पटकि पीरे जवनन जैंह ॥

रायमल्ल १८८१२कल्लयानमल्ल १८८१३ पुरतैं कठि पंदर ॥

सन चहि आयै सरन भये खगगन तिलातिलभर ॥

इनसंग सहैस ११सत्तल २उभयर अंधहि खूब प्रहार असि ॥

चउ ११जात हहु ३१धारन चढि रु गिरतभये बहु भिच्छ ग्रसि ॥ ७१ ॥

दोहा ॥

रिपुसंख्या जानी न रन, पै बहुभिच्छन पारि ॥

पहुँके चउ ४काका परे, अप्पन लौन उजारि ॥ ७२ ॥

मिलि पिथल १८९११जगमाल १८९११मुखै, सह हरि १८८११कीरतिसीह

वलि दूजे २रतिबाहपैं, आयै सजिजयईह ॥ ७३ ॥

जिन वरजत सुरतान १८९११जडैं, प्रतिदिन हुव प्रतिकूल ॥

भारपरत बुंदिय सुभट, मिले तेहि जयमूल ॥ ७४ ॥

सब निजनिज गृहतैं समिटि, बुंदीबाहिर वीर ॥

नृप कुपुत्र ओर न निरखि, सजे कुल पथ सीर ॥ ७५ ॥

दूजो २ इन रतिबाह दिय, इमहि अचानक आइ ॥

पुनि भजिगो मंडूपति नु, पैहिले १जिम भय पाइ ॥ ७६ ॥

इम वचाइ बुंदिय अखिल, गये सुभट निज गेह ॥

न मिले मूढ नृपालतैं, अखिख कुठकुरै एह ॥ ७७ ॥

रायमल्ल १८८१२कल्लयान १८८१३रन, सहैस १२ सत्तल २सत्थ ॥

दुगह लज सुरतान १८९११दुख, परे लरे जिम पतैं ॥ ७८ ॥

१ राजा का युद्ध करके २ यवनों को पीड़ित किये ३ सीधे ॥ ७१ ॥ ४ राजा के ॥ ७२ ॥ ५ आदि ६ जय की इच्छावाले ॥ ७३ ॥ ७ मुख ॥ ७४ ॥ ८ एकवित होकर कुल के मार्गमें ९ बंद करके ॥ ७५ ॥ १० रात्रिबुद्ध ११ पहिले भागा था उसी प्रकार भय पाकर भागा ॥ ७६ ॥ १२ घुरा ठाड़र (स्वानि) कहकर ॥ ७७ ॥ १३ अर्जुन को समान लड़े ॥ ७८ ॥

पूरब गोपूर बाँह प्रभु, अब बापीजुग २ आहि ॥

बंधु सहेस १ सत्तल २ बिहित, जगत जनावत जाहि ॥ ७६ ॥

स्वाभिविमुख होइ न सके, पिकखहु राम २०३१४ नृपाल ॥

चउ४काका धारन चढे, सठ भतोजके साल ॥ ८० ॥

पहिले दुव अग्रज परे, धुव चौरा तिन्ह धाम ॥

सहेस १ सत्तल २ केर सुत, कलि अहेँ बलि काम ॥ ८१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायण २ षष्ठ ६ राशौ वीतिहोत्र  
वसुधेश्वर १ बीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंशयानुबंध  
श्रवविहितवर्णनवेलाव्याहार्यबुदीवसुधावरसुरताण १८९१ सिंहच  
रित्रे सुरताण १८९१२ राज्याभिषेकः १, चित्तोडे रत्नसिंहसूनुदुश्वरित्र  
विक्रमाभिषेकः २, मंत्र्यादिभिः सुरताणबोधनेपि तत्प्रबोधाभावः ३, बहू  
रेश्वरचालुक्यकन्हपुत्र्या सह सुरताणकरग्रहः ४, चित्तोडे त्रिनवत्युत्तर-  
पंचशताधिकसहस्रतमसंवत्सरेविक्रममारणपूर्वकं भौजिव्यबसावीर-  
कर्तृकशज्यग्रहणं ५, वरावीरानीतिदुःखितप्रजाभिर्वर्षद्वयोत्तरं कुंभि-  
लमेरादाहूयोदयसिंहस्य राज्ये स्थापनं ६, सुरताणकर्तृकं सहसा सात

पूर्वदिशा के शहर के १ द्वार २ बाहिर ह प्रभु राजसिंह ३ दो बा-  
वड़िये हैं ४ चनाईहुई ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ५ बिना सन्तान ६ मन्दिर ७ युद्ध में  
८ फिर ॥ ८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण  
वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं के  
कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के प्रपति सुरताणसिंह के चरित्र में  
सुरताण का राज्याभिषेक और चित्तोडे के रत्नसिंह के पुत्र खोटे चरित्रवाले  
विक्रमादित्य का अभिषेक, मंत्री आदि के सुरताण को समझाने पर भी उ-  
नके समझाने के अभाव से बालगणों के पाति सोलंखी कन्ह की पुत्री के सा-  
थ सुरताण का विवाह करना, चित्तोडे में १५९३ के सम्वत् में विक्रमादित्य  
को मारने पूर्वक पासवानिये वणवीर का राज्य लेना, वणवीर की राजनी-  
ति से दुःखी होकर प्रजा का दो वर्ष पीछे कुम्भलसरसे उदयसिंह को बुला-  
कर राज्य स्थापन करना, सुरताण का मारने के लिये सातल को बुलाकर दो

लोत्पाहूयपितृव्यद्वयाक्षिनिष्कासनं०, सुरताणाकर्तृकस्वप्रभापणावा-  
र्ताश्रवणात्सुर्जनस्य चित्तोदगमनम्८, सुरताणाकर्तृकाणि जैतग-  
ढाधीशसिंहस्य तडागे निमज्जनोन्मज्जनान्९, स्वहितेच्छुद्धुःस्वदसुर-  
ताणां विहाय बंधुवर्गेणा स्वस्वग्रामगमनडागरखाँकेसरखाँनामक-  
यवन्योः कोटाग्रहणाम्१०, माँडूप्रभोर्बुन्द्याक्रमणारम्भे स्वस्वग्रामेभ्य  
आगत्य बंधुवर्गेणा सौप्तिकयुद्धे माँडूप्रभोः सैन्यविद्रावणाम् ११,  
तत्र रायमल्लकल्लयाणामल्लसहसातलोत्तेसुरताणापितृव्यचतुष्टयमर-  
णाम्१२, मृतावशिष्टबंधुवर्गस्य स्वस्वगृहं प्रति गमनं चेत्याख्यानयुक्तः  
प्रथमोऽ मधूखः ॥ १ ॥ आदितश्चतुरशी१८४त्युत्तरशततमः ॥ ८४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सौराष्ट्री बोझा ॥

इत चित्तोर अभंग, सुर्जन १८९१ जय खड्डिय असम ॥

जित्ति सबरंपति जंग, पुरतानां१ लिन्नो प्रथमः ॥ १ ॥

धाटिनपति अभिधान, जिहिं मल्लिके१ सो भिल्ल जहँ ॥

वसु सुद्धिं बलवान्, पल्ली करि तानां१ पुरहिं ॥ २ ॥

बल रानहु बहु बेर, पठयो जहँ जयत्ताभपर ॥

नों काकाओं के नेत्र निकालना, सुरताण की अपने मारने की वार्ता सुनने से  
सुरजन का चित्तोद जाना, मारने के लिये सुरताण का जैतगढ के पति सिंह  
को तालाब में बुकाने और निकालने अर्थात् गोता लगाने से अपने हित की  
बाहनेवाले दुखदायक सुरताण को छोड़कर बन्धुवर्ग का अपने अपने ग्रामों  
को जाना, डागरखाँ, केसरखाँ नामक दो यवनों का कोटेको लेना, माँडूके प-  
ति का बुन्दी को घेरने के आरम्भ में अपने अपने ग्रामों से आकर बन्धुवर्ग  
का रतिपात देकर माँडू के पति और सेना को भगाना, तदा रायमल्ल क-  
ल्लयाणमल्ल का सातल सहित सुन्तारा के चार-काकाओं का करना, मरने  
से बाकी रहेहुए बन्धुवर्ग का अपने अपने घर जाने आदि की कथा सहित प्रथ-  
म मधूख खगता हुआ ॥१॥ और आदि से एकसौ चौरासी १८४ मधूख हुए ॥  
१ किसीसे मारा नहीं जावे ऐसा २ सम्पादन (पैदा) किया ३ भीलों के पति  
को ॥ १ ॥ ४ धाडायतिओं के पति का नाम ५ माल्या या ६ धन ७ ताणापुर  
को पाल (भीलों की बसती को पाल कहते हैं) बनाकर ॥ २ ॥



जो जो रन करि जेरै, मल्लिकः प्रतिभंग मुकल्यो ॥ ३ ॥  
 प्रजाविहित पुकार, संसद बिच जाकी सुनत ॥  
 बिरच्यो रान बिचार, कहहु पंच कैसी करहिं ॥ ४ ॥  
 इक्खत सुर्जनः १८९१ ओरै, अर्जुनः १८८१ सुत हसि उच्चरिय ॥  
 दब्बन दिल्लिय दोरै, राँजै पुच्छन रावरो ॥ ५ ॥  
 को खल रंक किरात, त्रासक दीनन तरकर सु ॥  
 परै जंत्य पविपांत १, कहा तत्थ तृनगन २ करै ॥ ६ ॥  
 महानिठुर हरिमंथे १, पै न समर्थ घरहुँ २ पर ॥  
 पापी चोरः न पंथ, जोलों लखहिं धनीरन जगि ॥ ७ ॥

### पद्मिका ॥

चित्तोरनाथ तव रन बिचार, साहनसिर मंडहिं जसप्रसौर ॥  
 कौतर किरात बत्त लु किलीक, इकलः सिपाह सदाहिं इतीक ॥ ८ ॥  
 जो कहहु अप्प मै अबहि जाइ, छिति खलन गंजि लौहों छुगइ ॥  
 तव रान दियउ भुज पुजि तास; हत्थी १ हय २ भूखन ३ चंद्रहांस ४ ॥ ९ ॥  
 सेना निज दै चउसहंस ४००० सत्थ, पठयो तैंहं सुर्जनः १८९१ समरपंथा ॥  
 असवार तिसत ३०० अप्पन अधीन, क्रमइअ अर्जुनः १८८१ सु-  
 त गमन कीन ॥ १० ॥  
 आयो जब यह बुंदी बिहाइ, पुहवीस हड्ड १ भय तवाहि पाइ ॥  
 हम्मीर १९०१ कुमार जुत संग होइ, पूराउत १७१३ मान १८९१ हु-  
 हित पुलोइ ॥ ११ ॥

१ दवाकर १ पीछा भेजा ॥ ३ ॥ २ प्रजा की की हुई पुकार ४ सभा में ॥ ४ ॥ ५ तरफ दि-  
 ल्ली का फैलाव दवाने के लिये आपका पूछना ७ शोभा देता है ॥ ५ ॥ दीन  
 खोकों को ८ त्रास देनेवाला ९ जहाँ १० बड़ा पड़ता है ॥ ६ ॥ ११ चने ११ क-  
 ठोर हैं तोभी १२ घरट पर बलवान् नहीं होसके ॥ ७ ॥ १४ यश फैलाता है  
 १५ कायर ॥ १८ ॥ १६ खड्ग ॥ १९ ॥ २० युद्ध में अर्जुन ॥ १० ॥ २८ बढाकर यह दि-

आयोतव सुर्जन १८९१ संग अत्थ, न मिल्यो पटाहु बुंदी अनर्थ ॥  
हम्मीर १९०१ तनय सह तैं हैं गैहीर, सोपैं हुव सुर्जन १८९१ भीर सीर १२  
अर्जुन १८८१ सुव हं किय इस असंक, तानाँ १ पुर वेढिय हुत तैं दंक  
दिन इक्क १ समर तोपन दगाइ, दूजे रहि दिवस किय हल्ल दौड़ ॥ १३ ॥  
निकर्यो खल आवत इन्ह निहारि, भिछी जन्पों हुन भज्योँ इभारि  
सुर्जन १८९१ को भातुल सुत सधीर, भैं दीपचंद गहिलोत भीर ॥ १४ ॥  
यह गो सवरन बिच हय उडाइ, खल गये बढत ताकों हु खाइ ॥  
चहि जय गिरंत इस दीपचंद, मज्जहि हय हहु ६१ न दिय अमंद ॥ १५ ॥  
करवाल पुर १८८१ सुत मान १८६१ केर, केरयो खल मस्तक चर्क फेर  
कवही न गिरत मल्लिक १ किरात, जैं गिरे सहि ६० सब भिछ जात ॥  
मल्लिक १ के दुबर सं होत मेल, सुर्जन १८९१ वं पु लग्गे मनहु सेल ॥  
अर्जुन १८८१ सुत तोहू हय उडाइ, खल पंचधन दिन्नै सिर खिराइ  
गिरतहि पक्षी पति विकल गायत, क्रम भजिग मेर १ भैं नै २ किरात ३ ॥  
सुर्जन १८९१ को जय १ हुव सुजस २ सत्थ, तानाँ १ पुर जित्यो संधन तत्थ  
सो तानाँ १ बाबर १ ग्राम संग, इहिं दियउ रान धरि जय उमंग ॥  
दस सहस्र १०००० पटा मान १८९१ हिं दिवाइ, मविर्यो पुर सुर्जन  
१८९१ विजय पाइ ॥ १९ ॥

अपिय पुनि रीक्ति रु रान याहि, सिंछुर १ हय २ भूखन ३ धन ४ सराहि ॥  
जित्यो इस पातोरा २ हु जाइ, निस्सेस धाटि जन हनि १ न साइ ॥ २० ॥  
दूजो २ हु व्याह सुर्जन १८६१ उदार, चितोर तैंहि किय बिधि विचार ॥  
पुर वंसवदाला नाम पत्त, राउल जसवंतहु मिलिय रत्त ॥ २१ ॥

गण का प्रश्न है ॥ ११ ॥ १ अनर्थ की जाती है २ गम्भीर ॥ १२ ॥ ३ वह भील के  
कारण ४ हल्ला किया ॥ १३ ॥ ५ सिंह ६ भय (कीन) ॥ १४ ॥ ७ भैंलों में ॥ १५ ॥  
८ पाक (चक्र) किरै जिम प्रकार ९ भील लोग ॥ १६ ॥ १० तीर ११ शरीर में  
॥ १७ ॥ १२ पाल का पति १३ भील १४ घन सहित ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ दार्था  
२२ भगाकर ॥ २० ॥ २३ जाकर २४ मीति ज

तैंहँ कनकवती १८९।२ कन्या तदीय, सुविवाहो सुर्जन १८९।१ गुन गौरीय  
 अवसर वरात चित्तोर आइ, पातोर २ सुर्जन १८९।२ बहुरि पाइ ॥ २२ ॥  
 भो तत्थ रान विस्वास भाजँ, सुनिये व वत्त मिच्छून समाज ॥  
 जिम सेरखान परसजि जात, वावर ३० मरयो सु हुव पुब्ब वात ॥ २३ ॥  
 पहिलैं विहार १ सूवा प्रधान, खल स्वामि विमुख हुव सेरखान ॥  
 बलि जिहिँ दवाइ रुहितास २ बंग १, भो प्रबल वावर ३० हिँ करन भंग १४  
 वावर ३० सजि जिहिँ सिर चलत बेर, ज्वर करि दपुछोरयो दिष्ट जेरा ॥  
 तव सक रस वसु तिथि १५८६ तनय तास, हुव साह बिदित  
 करि चंद्रहास ॥ २५ ॥

जिहिँ नाम हुमायों ३१।१ किन्न जेर, कैलि नत्ती इबाहीम २९ केर ॥  
 रेवत अधीस कैवर्त्तराजँ, कछु हारि सु मारयो बिजयकाज ॥ २६ ॥  
 गुजरात रंगजि इम सजि सँयान, पुनि सेरखान सिर किय प्रयान ॥  
 विक्रम सक खट नवतिथि १५६६ विहाइ, पूरव १ दिस हं किय ससय पाइ  
 हुत सेरखान सुनि बंगदेस, इत भेदे दिल्ली भट असेस ॥

लहि धन गनिकासँम जे निलज्ज, अरि तंत्र भये अरि करि कुकज्ज  
 जिनके बिसास दिल्लीस जाइ, रन वंग सीस कछु दिन रचाइ ॥  
 मुगले ६ स पराभव लहि महंत, आयो सुरि सह भय समुक्ति अंत २९  
 खल सेरखान नय १ कपट २ खेल, मरद हुन रक्खत पिहितें मेल ॥  
 दिल्लीस सीस जिहिँ छल उदगंग, मरद हटे पटके भजत मग्ग ॥ ३० ॥  
 नदि नाम कर्मनासा निकास, तिन्ह दिय दिल्लीसहिँ पहुँचि त्रास ॥

१ उस रावल जसपनासिह की कन्या शुर्णा में २ भारी ॥ २२ ॥ ३ विश्वासपात्र  
 ४ अथ न्लेच्छों के समाज की पात सुनो ५ पहिले ॥ २३ ॥ ६ नाश करने के लिये ॥ २४ ॥  
 ७ भाग्य के उकायमें होकर ८ उसका पुत्र १० लज्ज से प्रसिद्ध सुजा ॥ २५ ॥ ११ युद्ध  
 में इबाहीम के पोते को १२ कैवाट ॥ २६ ॥ १३ चतुर ॥ २७ ॥ १४ अपने वें मिलाए  
 १५ वेश्या के समान धम देकर १६ शत्रु के अधीन होगये १७ खोदा कार्य करके  
 ॥ २८ ॥ १८ बंगाल की सीमा में १९ पराजय ॥ २९ ॥ २० छाने २१ उदय ॥ ३० ॥

परिभवं लहि तत्थहु सहत पीर, आयो सु हुमायों १३११ भजि अधीर  
जिहिं आइ आगरा कटक जोरि, बैरिन सिर हल्ला किय बहोरि ॥  
पुर कान्यकुब्ज अंकित प्रदेस, बलिं हुव समीकं दुवदिस बिसेस ३२  
जय सुगलदराज तत्थहु न जानि, पुनि सहकुटुंब भजिबो प्रमानि ॥  
दिल्ली तजि परिजन जुत उदास, आयो भजि पच्छिम ३ जियन आस  
तैंहं गर्भसहित बेगम तदीय, ही सोहु भज्यो लौ लस्तं हीर्य ॥  
सुनि पिडि लये अरि आत सीस, इहिं सरन लयो अंजमेरईस ॥३४॥  
पहु मालदेव तैंहं छलप्रवीन, अजमेर १ आदि जिहिं किय अधीन ॥  
इहिं राष्ट्रकूटनृप पाप अैनं, दिल्लीस चहिय पकराइदैन ॥ ३५ ॥  
जब सोहु भेद सुगलेदस जानि, नैंहो निसीयें मन गहन मानि ॥

कोसन सत १०० संतैत वायु कोन ६, भजत लख्योन जल १ अ-  
क्षरभोन ॥ ३६ ॥

धर जंगल लंघत इम अधीर, नर १ बाजि मरे बहु चहत नीर ।  
तस पिडितदपिसन्न तजी न, लियजाइ पलावतें थलिन लीन ३७  
बाबर ३० सुत तिन्ह लखि भजिबहोरि, हुव अस्तव्यस्त जन मन अहोरि  
असवारबीस २० बेगम १ उपेत, रहिगो सु सुगल थकि थलिन रेत ३८  
पहुंचे तैंहं कछु अरि होत प्रात, दिल्लीस लरयो तब बल दिखात ।  
अरिनायक उर दिय तीर एक १, असुहीन गिरयो वह बीर एक ॥३९॥  
बिनु नायक अरि हुव अस्तव्यस्त, तिहिं छिद्र भज्यो पुनि सुगल ६ त्रैस्त  
जल कहूँ न मिल्यो दिन तीन ३ जाहि, इमसिंधुसीम पहुँच्यो सु आहि ॥  
नृप सोढा ऊमरकोट नैर, तल्लयो सु सरन तिहिं विगैतवैर ॥

वहाँ भी १ पराजय लेकर २ पीड़ा सहता हुआ ॥ ३१ ॥ कान्यकुब्ज से  
३ जाना जावे ऐसे प्रदेश में ४ कुछ ॥ ३२ ॥ ५ अपने लोगों सहित ॥ ३३ ॥  
६ उसकी बेगम गर्भवती थी ७ छरेछुर ८ हृदय से ॥ ३४ ॥ उस ६ राटोड़ों  
के राजा ने १० पाप का घर ॥ ३५ ॥ ११ आगा १२ आधी रात्रि में १३ नि-  
रन्तर ॥ ३६ ॥ १४ भागता हुआ १५ रेगिस्थान में ॥ १६ ॥ १७ शत्रुओं के पति के  
हृदय में १८ प्राणहीन होकर ॥ ३९ ॥ १९ तितर चितर १९ डरकर ॥ ४० ॥ २० धीरे रहित

सोढा तिहिं स्वागतकरि विलेस, रक्खयो सुहुमायौ ३१। १पटु नरेस। ४१।  
अकबर ३७। १हुव बाहुं ल८मास अत्य, सक अड अंक तिथि १५९८मि  
ति समर्थ ॥

यह जन्म जव न १ग्रंथन अधीन, अज २नमत औ हैं पुनि प्रवीन ॥ ४२॥  
सोढा इम सुगल ६हिं रक्खि सूर, दल तास अरिन लरिकियउ दूर।  
सुनि यह तैं मासपनाम साह, निजबल प्रगल्भ ईराननाह ॥ ४३ ॥  
दे दल जिहिं ऊमरकोट एस, दिल्लीस बुलायो स्वीय देस।

नीरधि जिस बुद्धत मिलाहि नाव, मो इम बाबर ३० सुत स्वस्थभाव ४४  
स्व कलत्र १पुत्र २परिजन ३समेत, ईरान गयो यह नैतिउपेत।

इक १अब्द रह्यो पुर इस्फहान, मन्थ्यौ तैं मासप सरन मान। ४५।  
नृप राम २० ३। १सुनहु अव इत उदंत, लहि सेरखान जय नयें लसंत।  
अद्यानव तिथि १५९८सक लगत अब्द, सुनि जग निज जस १जय २  
अभय ३सब्द ॥ ४६ ॥

वह सेरखान ३२प्रभुता उपेत, दिल्लीस भयो सुख सवन देत।  
सत्तानव ९७उतरत अरि नसाइ, अद्यानव ९८लगत पटु आइ ॥ ४७॥  
सुहि सेरखान हुव सेरसाह ३२, अति निपुन मंत्र १प्रभुता २उछाह ३।  
इम वंग १उर्दय १दिस अटक २अस्त ३, सतपंद ४ १५०० कोसन सुव स-  
मस्त ॥ ४८ ॥

करि सड़क पंथ १प्रतिकोस २दू ३परिजद ३पथिकालय ४रम्यरूप ॥  
॥ ४९ ॥

१ चतुर ॥ ४१ ॥ यहीं पर २ फार्तिक मास में अकबर का जन्म हुआ १ समर्थ ४ यह जन्म फारसी ग्रन्थों के मत के अनुसार है ॥ ४२ ॥  
५ आयों के मत से आगे कहा जावेगा ६ अपने पल ले चतुर ॥ ४३ ॥ ७ पत्र देकर ८ अपने देण में ९ समुद्र में डूबते हुए को नाव मिले इस प्रकार ॥ ४४ ॥  
अपनी १० स्त्री ११ अपने लोकों सहित १२ नज्जता १३ सहित ॥ ४५ ॥ हजर का १४ वृत्तान्त १५ नीति में जोम दान हुआ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ १६ राजा की मन्त्र आदि तीनों जगियों में चतुर १७ बंगाले तक १८ पूर्व दिशा में और अटक नदी तक १९ पश्चिम दिशा में ॥ ३० हुए २१ सराप २२ सुन्दर ॥ ४९ ॥

सत निज उपदेसक पदंगिभारद, पथिको दैन असजाँट इहि प्रकार ।  
 पाद पै फल जाई पथ दुर्पास, किय सेरसाह ३२ प्रभुपन प्रकास ५०  
 इम भिसत ३०० कोस इत आगम १६, मंहूर लग किय मग चतुरचार ।  
 थल थल पुर घोरै न डाक ? अपि, व्यापारिन धिर्हरन अभय अपि ५१  
 संवच्छर तीन रहि रहिय साह, पे प्रभु बन्यो सु सब ज्योपनाह ।

प्राकार १ दुर्गर सर ३२ हल ४ पूर, लुखदेन रचे सदठाम सूर ॥ ५२ ॥  
 प्रमदी १ सिंहासक कत कनक पानि, जिहि राज्य मर्ग विच अभय जानि ।  
 वानिज्य करन हित नरन ब्रौत, जिततित निसंक दिस दिसन जात ॥

पहु सेरसाह ३२ असे प्रताप, दिल्ली होइ लिय जस दुरार्प ॥  
 अजमेर १ सिंहासक ३ अर्धास, गुजरात ४ गंजित पि सवन सीस ॥ ५४ ॥  
 सजुन निहारि रन थंभ सेस, आयड तिहि जितन सबल एस ॥

बेढिय गिरिनादिर कटक बंदि, सुभ १ असुभ २ देव दिय तबहि संदि ॥ ५५ ॥  
 लिय जिति दुर्ग रन थंभ १ लाह, स्व विसास तास विच धरि सिपाह ।

हो विजई दिल्ली चलन हार, विपरीत बन्यो भावी वचारे ॥ ५६ ॥  
 ससि व्योम अष्टि १६० १ सकलगत साल, किय देव अचानक अंतकाल  
 बारुद निलेय पावक प्रवेश, दगि उडिय निदाट दल उँद देस ॥ ५७ ॥

जाहीविच दिल्ली नारि जार, छर्म सेरसाह ३२ किय नियति छार ॥  
 सुत ताको तदुं सलेमसाह ३३ १, नृप सो हुव दिल्ली नारि नाह ॥  
 प्रभु गटिय अदद दसुन्यह परंतु, सजिग तब जिततित अरिन मंतु ॥

१ भाग (अर्ध) देनेवाले २ मार्ग चलनेवालों को भोजन ३ जाया ४ कल देने  
 वाले ५ सुत ६ मार्ग के दोनों ओर ॥ ५८ ॥ ६ सुन्दर ७ घोड़ों की जात रक्षक ८  
 पिछले में ॥ ५९ ॥ यह बादशाह तीन ९ वर्ष तक ही रहा १० प्राणों के रक्षक १  
 बाद ॥ ६० ॥ १२ सिद्ध १३ जोना जगलने के १४ मार्ग में १५ सनुप्यों के समूह  
 ॥ ६१ ॥ १६ सुलभ ॥ ६२ ॥ जायाओं में रणपरमार को १३ जाया देनेका १४  
 शता सहित १९ आग्य से २० बदला दिया ॥ ६३ ॥ २१ जोना का पवन उखटा  
 पाया ॥ ६४ ॥ २२ सन्ध्या में २३ सनुप्य हुए, बादल के २४ घर में अग्नि पड़कर २५  
 जागृत हो देस ॥ ६५ ॥ २६ समर्थ २७ आग्य से २८ सहम कर दिया २९ जिसपाँधे  
 ॥ ६६ ॥ ३० सगारा ॥ ६७ ॥

याकेहिसमय सुरतान १८९१ अंध, बंधुन दिय नास शनिकास रबंध  
 गज उचित स्व वपु गुरुता शिनी न, पटके धमकेहित इतर २पीन ॥  
 कति सचिव १दास २ताडित कराइ, श्रुति १नकरहित कति नीसराइ  
 द्विज १आदि जनंगम २अंतदेस, विनु मंतु प्रजा लुट्टिय विसेस ॥  
 चुंडाउत १४१० राघव १८९१ पग्घ चोरि, जिहिं लिन्न बरूधनि  
 कुजस जोरि ॥ ६१ ॥

पग्घ हि रहै न यातै पयंपि, चुंडाउत १४१० कव्यो हठनचंपि ॥  
 आसापूरनि अर्चन अनेह, सामंत १८७१ हनन धारिय सनेह ॥ ६२ ॥  
 सठ जो निज बलि अज दैन सज्ज, क्रिय ताहि सैन तस घात कज्ज  
 कहुहु अज मारन जब कृपान, पहिलै सूचितके लेहु प्रान ॥ ६३ ॥  
 जोछुअतवहि सामंत १८७१ जानि, सुर्जनसमान १८९१ अवधान आनि  
 अरु सज्जि कहा कुलदेवि अज्ज, अज १थान हड्ड २मंगत अकज्ज ६४  
 मैजरै १ततो सृदुरयह कुमार, है बाल बलिन परमोपहार ॥  
 नृपनंदन अखयराज १९०१ नाम, हो तत्थ अड्डसम वयहगाम ॥ ६५ ॥  
 सो लिय उठाइ सामंत १८७१ सुर, दिन्नो उतारि कहि बाह्य दूर ॥  
 इम बचि तजि बंसी स्व भुज आस, पहुँच्यो सामंत १८७१ सलेम  
 ३३१ पास ॥ ६६ ॥

रनथंभमाहिं तिहिं साह रक्खि, किल्लापति किन्नो उचित अक्खि ॥

हाथी के शरीर का १ बडप्पन नहीं देखा और केवल धमका लुनमे के कारण  
 २ अन्य ३ पुष्टों को गिराये "यह लोकोक्ति है" ४ ताड़ना युक्त करके कितनों  
 के ही कान और नाक कटाकर निकला दिये ॥ ६० ॥ ५ चण्डालों को ६ अपने  
 देश की सीमा में बिना अपराध प्रजाको लूटी ७ ग्राम का नाम है ॥ ६१ ॥ ८  
 कहकर ९ पूजन के समय ॥ ६२ ॥ अपनी और से वकरे को बलिदान करने को  
 सज्जित हुआ उसी सामन्तसिंह को मारने का इशारा किया कि जब १० बकरा  
 मारने को खड्ग निकाले तब ॥ ६३ ॥ उस ११ छल को १२ सावधान होकर  
 ॥ ६४ ॥ मैं १३ बुढ़ा हूँ, बालक की १४ बड़ी भेट है, अवस्था के १५ आराम में  
 अथवा उत्सव में ॥ ६५ ॥ १६ बाहर निकाल दिया ॥ ६६ ॥

संह भट सतसप्तक ७०० \* पानपूर, रनथंभ रक्षो सामंत १८७१ सूर  
सक नव नभ सोलह १६०१ लगत साल, कछु गद सलेम ३३किय  
मास काल ॥

नंदन तदीय फीरोज ३४११ नाम, ग्वालेर गयो कछु सीधकाम ॥ ६८ ॥  
सुनि जनकमरन फीरोज ३४११ साह, ग्वालेरहि बैठो पट्टगाई ॥

आयो पितृव्य १ मातुल २ हु आहि, जग भनत सुबारकखान ३३११  
जाहि ॥ ६९ ॥

साहहि कछु मासनमै नसाई, सो साह बन्यो बैरहि बसाइ ॥

निज रक्खि मुहेम्मद ३२१२ अपर २ नाम, पायो अदली ३५१२ पद अघ  
प्रकाम ॥ ७० ॥

भानेज भंजि तस पाइ पट्ट, बच्छर १ बहो सुं कछु घटि कुवट्ट ॥

पहुंचत दह सोलह १६१० सक प्रमान, मिलि अरिन हन्यो रन यह  
अमान ॥ ७१ ॥

तव सेरसाह ३२काका तनूज, हुंव साह सिकंदर ३६११ प्राप्तपूज ॥

इत आकुल बुंदियजन असेस, सुरतान १८९११ सठहि न चहै नरेस  
उपदोहा ॥

बुंदिय भट १ मंलि २ न बिबिध, छैनै दिय इम छदन ॥

सुर्जन १८९११ इम सुरतान १८९११ सठ, करहु दूर १ कै कदन २ ॥ ७३ ॥

इष्ट सपर्य जुत लिपि उचित, सुर्जन १८९११ ते दैल सकल ॥

कहि इम दिनै रान कर, निरखहु सत्य १ कि नकल २ ॥ ७४ ॥

कह्यो रान सत्य १ कि नकल २, जानै हम १ तुम २ जबहि ॥

\* पूर्ण पराक्रमवाला ॥ ६७ ॥ कुछ १ रोग से सलेम को काल ने अपना  
आल किया ॥ ६८ ॥ १ सिंहासन के स्थान में २ काका का मामा ॥ ६९ ॥

३ मारकर ४ दूसरा नाम ५ अदली (इन्साफ करनेवाला) पद पाकर  
६ पाय की ७ विशेष कायना ले ॥ ७० ॥ ८ एक वर्ष ९ कुमार्ग चलकर १०

मान रहित वा अतोल ॥ ७१ ॥ काका का ११ पुत्र १२ पूजायोग्य ॥ ७२ ॥ १३

शुभ १४ पत्र दिया कि हे सुरजन इस दुर्ख सुरताण को दूर करो; अथवा १५

मारो ॥ ७३ ॥ इष्ट के १६ सौजन सहित वे सत्य १७ पत्र ॥ ७४ ॥ यह सत्य है



कटक खरच मंगहु कथित, सो भेजै मिलि सबहि ॥ ७५ ॥  
 कुंभिलमैरुहि लेख करि, पठयो धन मोप्रतिहु ॥  
 तब मन्नी वह रीति तुम, रक्खि परकखहु रतिहु ॥ ७६ ॥  
 सोहि लिखी तब सुर्जन १८९११ हु, पृतनाके व्यय प्रमित ॥  
 बसु भेजहु जिम विस्वसहि, अर्सु रच्छक गिनि अमित ॥ ७७ ॥  
 बुंदी जो दल बंचितहि, प्रचुर सचिव १ भट २ पिहित ॥  
 द्वैअयुत २००००० न हुंडी दई, सुर्जन १८९१२ के सैन्निहित ॥ ७८ ॥  
 सुर्जन १८९१२ लहि व्यय बसु सब सु, मन्नि शान अनुमतिहु ॥  
 इकसहस्र १००० दलै किय असह, तहँ बुंदिय भटकतिहु ॥ ७९ ॥  
 आरंभिय गृह आगमन, त्वरित सजि भट १ तुरंगर ॥  
 बुंदीके हरखे विविध, देस १ प्रकृति २ पुर ३ दुरंग ४ ॥ ८० ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो पष्ठदशौ वीतिहोत्रव-  
 सुधेश्वरबीजव्याख्यानबीजहृद्धाधिराटस्थिपाल १५५ वंशप्रानुबंधयवि-  
 दितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरताणसिंहचरिते  
 चित्रकूटाधीशमहाराणोदयसिंहाज्ञया हृद्धसुरताणस्य ताखारूपमि-  
 ल्लपल्लीं विजित्य मल्लिकाभिधमिल्लनिपातन १ दिल्लीन्द्रसम्राट्कुमायोःशे  
 कि नकल है सो तुम और हम जब जानें कि उन्न लोगों से १ फौज खरच मांगो  
 ॥ ७५ ॥ २ मेरे पाल भी धन भेजा था ३ प्रीति की परीक्षा करो ॥ ७६ ॥ ४  
 सेना के खरच के ५ प्रमाण ६ धन भेजो ७ विश्वास करेंगे ८ प्राणरक्षक जानकर  
 ॥ ७७ ॥ ९ बहुत १० गुप्त सुरजन के ११ समीप ॥ ७८ ॥ राणा की १२ सलाह  
 मानकर १३ सेना बुन्दी के १४ कितने ही डमराव ॥ ७९ ॥ १५ अमात्य आदि  
 राज्य के प्रधान पुरुष ॥ ८० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पष्ठ राशि में अग्निवंशी राजाओं  
 की व्याख्या के बीज हृद्धाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वृ-  
 त्तान्त की व्याख्या में वर्णनीय बुन्दी के राजा सुरताणसिंह के चरित्र में चि-  
 त्तोड़ के स्वामी महाराणा उदयसिंह की आज्ञा से हाडा सुरताण का ताणा  
 नामक भिल्लों के नांव को जीतकर मल्लिक नान भील को मारना, बादशाह  
 कुमायू का शेरखां यवन से बङ्गाल में पराजय पाकर आगरा शहर में सेना इ-

रखांयवनाद्वृद्धदेशे पराजयमवाप्यार्गलापुरे कटकमाहत्य कान्यकुब्ज  
जनपदसमरे स्वयिजयानिश्चयादन्तर्वत्न्या निजपत्न्या सहावाचीका  
ष्टाया वायुकोष्ठापलायन २ वस्वङ्गवाणविधु ( १५९८ ) वर्षस्योर्जेपा  
रसीकेतिहासमतादूसरकोटप्रदेशेऽकबरप्रादुर्भावकथन ३ ईरानेशमा  
सपामिधसम्राजो दलदानेन हुमायोनैजजनपदाकारणाशेरखांयवन  
स्यास्मिन्नेव शरदिशेरशाहाभिख्यया दिल्लीद्रङ्गपालन ४ शेरशाहाराज्य  
प्रशंसापूर्वकरणतमैवरद्रङ्गविजयानन्तरं शशिखरसविधु ( १६०१ ) व  
र्षे बन्दिच्छासद्वदहनाच्छेरशाहमरणा ५ शेरशाहसूनुफीरोजसम्राजः  
कतिपयमासान्तरेण तन्मातुलमुबारकशाहसाम्राज्यासादन ६ भा  
गिनेयहन्तुमुबारकशाहस्य शत्रुकरकर्तन ७ शेरशाहपितृव्यपुत्रसिक  
न्दरस्यसाम्राज्यासादन ८ बुन्दीन्द्रसुरताणापाकरणार्थं सैन्यसंप्रेष  
णोन चित्रकूटाद्वदसुरजनाह्वाने द्वितीयो मयूखः ॥ २ ॥ आदितः पञ्चा  
शीत्यधिकशततमो मयूखः ॥ १८५ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कट्टी करके कतोज की लड़ाई में अपना विजय न दीखने से गर्भवती अपनी  
स्त्री के साथ पश्चिम दिशा की ओर वायुकोष्ठा में भागना, संवत् १५९८ के  
कार्तिक मास में पारसी तवारियों के मत के अकबर को धीं अकबर का पैदा  
होना, ईरान के बादशाह सासपनादशाह का कौज देकर हुमायू को अपने  
देश में बुलाना और शेरशाह पदन का उसी वर्ष में शेरशाह नाम से दिल्ली का  
राज्य करना, शेरशाह के राज्य की प्रशंसा के साथ रगतन्दर किले को फा  
ट करने के बाद संवत् १५०१ में वास्तव से बकान जल कर शेरशाह का मर  
ना, शेरशाह के पुत्र फीरोजशाह के जितनेक नदीनों ने बाद उसके मामा मु  
बारकशाह का बादशाहत लेना, भागने को चारनेवाले मुबारकशाह का शत्रु  
के साथ से मरना, शेरशाह के जेरे पुत्र खिंदर का बादशाह होगा, बुन्दी  
के राजा मुरनाज को दूर करने के लिये लेना निज कर चित्तौड़ से डाला सु  
जन को पुताने का कजरा मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि के एक सौ  
पचासवां मयूख हुए ॥ १८५ ॥

इकश्हायने ईरान इत, सु रहि हुमायौं ३१।३ साह ।  
 स्वस्थ भयो अवलंब सुभ, लहि तैं मातपश्लाह ॥ १ ॥  
 तह मासप पुच्छिय तहाँ, कोनै प्रजाः मतर कोन ।  
 उत्तर दिय हिंदू उहाँ, दीन जुदे हम दोर न ॥ २ ॥  
 साह कहिय तिनकी सुता, निज पुत्रन परिनाइ ।  
 अप्पन करि दैभू अधिक भूमि रूपहु तर भाइ ॥ ३ ॥  
 तैं मासप इम अक्खि तस, सैन्य अयुत १०००० दिय संग ।  
 ताविच चउधमट सुख्य तिन, जयकारक हुव जंग ॥ ४ ॥  
 कंदहार कावल करहु, अक्खिय प्रथम अधीन ।  
 इम धरि दिल्ली पट्ट इहिं, प्रकटावहु जस पीन ॥ ५ ॥  
 भाखि इम सु चउधनिज भटन, सह अनैकि दै सत्थ ।  
 वावर ३० सुत सिर करै विरचि, अक्खिय अद्धहु अत्थ ॥ ६ ॥  
 सो तस माहपसाहके, प्रभुपन पाइ प्रसाद ।  
 मुरयो हुमायौं ३१।१ पुव्व १ मग, विजित करत प्रतिवाद ॥ ७ ॥  
 सब भ्रातन बहिकाइ सठ, अबुज कामराँ ३१।२ अगग ।  
 पंजाब १० कावल प्रमुख, दवे सुलक उदगग ॥ ८ ॥  
 कामराँ ३१।२ रु गदरु ३१।२ कलहैं, तिमफलान ३१।४ ए तीन ॥  
 हद निजनिज जय सखि हुव, न्यारे तरतन सीन ॥ ९ ॥

एक १ वर्ष, मालपशाह का शुभ आधार लेकर २ स्थिर विश्वासाला हुआ ॥ १ ॥  
 उस मालपशाह ने पूछा कि ३ हिन्दुस्थान में प्रजा कौनसी है और उसका ४  
 धर्म क्या है इसके उत्तर में हुमायों ने कहा कि वहाँ प्रजा हिन्दू है, जिसका  
 ५ धर्म जुदा है, परन्तु हम और वे जुदे नहीं हैं ॥ २ ॥ मालपशाह ने कहा कि  
 उनकी ६ पुष्टि अपने पुत्रों को व्याह कर अपने कर लो और अधिक ७ भूमि  
 देकर जिसप्रकार भूमि में = जड़ जमाकर वृक्ष रूपते हैं तिस प्रकार रूपो ॥ ३ ॥  
 ॥ ४ ॥ यश को ९ पुष्ट करके प्रकट करो; वा पुष्ट यश प्रकट करो ॥ ५ ॥ १० सेवा  
 साध देकर ११ विराज नियत करके कला गि आधा यहाँ भोजा करो ॥ ६ ॥ १२।  
 प्रसन्नता पाकर १३ विरोधियों को विजय करता हुआ ॥ ७ ॥ १४ उदय (निरंकुश)  
 होकर ॥ ८ ॥ १५ युद्ध ॥ ९ ॥

कंदहार१कावल२कथित, पहिलौ लैन प्रमानि ।

बढ्यो हुमायों३११२जय चहत, अनुजन सिररिस आनि ॥१०॥

तह मासप दिय संग तिन्ह, नामहु राम२०३१४नरेस ।

सुभट चउ४न जानहु सुयति, इहाँ जनश्रुति एस ॥ ११ ॥

अविषमपयोधराऽष्ट८८गगालीलावती ।

जखमी अवहुल्लाखान१प्रथम१निज बलि दूजो२बहरा२वली ।

तीजो३सु अलाउदीन३कडम४तिय खांनजिहाँ४किय भीर भली ।

तह मासपके असवार अयुत१००००तिम पंचसहस्र५०००निज

कटक करे ।

इस कंदहार१कावल२पर अंगलि धुर धर प्रति रनविजय धरे ।१२॥

गदरू३१३अभिधानक तास अनुज इक१आतहि अग्रज१पयन परयो

मन१बचन२काय३करि सासन सिरधरि लुनत अरिन रन अ-

ग लरयो ।

जयसाधक जानत हुलसि हुमायों३११लघु गदरू३१३हिय लाइ लयो

दुहिता ताकी सन अतिमह अप्पन अंगज अकबर१व्याह्रिदयो ।१३॥

अग्रज१जय सदन ताहिसनय कहूँ आयो कादहु अनुज२यहै ।

करि हिय लस चिंता साह हुमायों३११२हत बत नाहा हानि कहै ।

अतिबल लखि अग्रज१आइ सरन अब कामरा३१२हु इस प्रनतिकरै

गधु साफ पता करि देहु अमयपद अब हनु अनुचर पयन परै ।१४॥

रीकन लुनि अग्रज गो तरा डेरन कागरान३११२ सिर नाई रझो ॥

इक१रीज जनम जय कहुन आकुल साह दिन सु दुहुँ२ओर गहो

बलि हठसह विन्यति कासुराँन ३१।२ करि मक्का निवासि रु एह मरयो  
 अनुजांत न लग्यो चोथो ४ चरनन करि रन सो गहि अंध करयो ॥ १५ ॥  
 भुव कावल १ आदिक लरि छदसमाँ लग जित्ति हुमायों ३१।२ अधिप भयो  
 इतकों पुनि आयउ दिल्ली २३ बन लरि मग जिततित विजय लयो  
 सज्जित साँदी १ गन पंद्रह सहस्र १५००० रु पँति १ प्रबल बहु सहस्र बडे ॥  
 इततेंहु सिकंदर ३६।१ तजि घर अंदर बल्लिय पुनि दुव रत्नारन बडे ॥ १६ ॥  
 सरहिंद सीम छियघोर समर हुव सुर १ सिकंदर ३६।१ भीत भज्यो ॥  
 भुव जित्ति अरिन हनि आइ हुमायों ३१।१ दिल्ली पड सु प्रीत भज्यो ॥  
 सिव सोलह १६।१ लगत विक्रम संगत जित्ति सिकंदर ३१।१ जुद्ध जई  
 लरि इम बाबर ३० सुत दूजी २ वेरहु अतिबल दिल्ली जीतिलई ॥ १७ ॥  
 पच्छो ईरान कटक सब पठयो कहत रह्यो बहरान १ किते ॥  
 अकबर १ छत हुव बहरास रतु ओरहु जंपत इम दुव रगिनत जिते ॥  
 भो बहुरि खानखानाँ नवाब ताको यह ततिहि बहुत भनै ॥  
 विधि सत्प किमहु कह्यो होहु हेमहिँ हठ नैक न बर्णन मात्र बनै ॥ १८ ॥  
 बलि इम अज्जैन भुव अकबर १ जन्महु बंधू विदित बघेलनके ॥  
 भजि खेरसाह ३२।१ भय गर्भवती गय हुरम तहाँ बिलु हेलैनके ॥  
 हुव तथहि अकबर १ जन्म सुहात बघेलहिँ मातुल कहतहुतो ॥

इस कारण मजा में १ निवास करके सरा, चौथा २ छोटा आई चरणों में नहीं  
 सागा इस कारण दूसको युद्ध में पकड़कर अन्धा कर दिया ॥ १५ ॥ छः ३ वर्ष  
 लड़कर ४ समझकर ५ सवार ६ पैदल ॥ १६ ॥ ७ युद्ध ॥ १७ ॥ ८ पिता ॥ १८ ॥  
 ९ आर्यावर्त में १० बिना अपराध, अकबर \* बघेलों को ११ आना कहता था

\* अकबर का जन्म दिनांक मन् १५५९ तारीख १४ रविवार सुताविक विक्रमी सम्वत् १५९९ मार्गशि  
 ० शुद्ध पूर्णमासी को ऊमरकोट में हुआ था सो अकबर जौहर की किताब "तज्जिकरतुल्लुकिआत" से सि  
 द्ध है इसमें कई फारसी तारीखों में भी मत भेद है, परन्तु आधुनिक विद्वानों के मत से उग्रोक्त लेख हो  
 मय मान्यता है जिसका अधिक श्रुतत विस्तार के मत से लिखना होच दिया है, परन्तु अधिक प्रमाण  
 देते हैं सो "शुद्धर के जन्म दिन से मन्वेक" इस नाम की उदयपुर की कविराजा श्यामलदास की ब  
 न्दई हुई किताब में देते, यहाँ मन्वा कहने का प्रमाण दिया सो सो रज्जुगन्ध से भी होता है, अर्थात्  
 नाम की मन्वा भीमसिंह जालोटेया के साथी बाँवली की इमकारण दोटा के राजा भीमसिंह को नुरम नाम  
 के राजा ने, ऐसा ही नाम ही देते भी देते ॥

सतकार अधिक करि भूप बघेलहि मन्नों किम\*विनुहेतु सुतो।१९।  
 गदि इम मतभेदहु कति गति नावहिं समुझहु संभव है सु सबै॥  
 है बिजई दूजी २ बेर हुमायों ३१।१ तिम लिय दिल्लियतगत तवै ॥  
 बुंदिय भट १ सचिव २ न भेजि इत सधन बुल्लिय सुर्जन १८९।१ वेग बली  
 सो रान उदय अनुमत लाहि सत्वर बुध नय\*हंक्रिय तेग बली ॥२०॥  
 तव नृप सुरतान १८९।१ हिं भोग बिभानहिं पहुँचत आनहिं सुँधि परी  
 पुच्छिय तव पंचन पिहित प्रपंच न कारन रंच न आत अरी ॥  
 दिय उत्तर पंचन आत सुरथपुर रक्तादंताके दरसन ॥  
 जब लंछि सुरथपुर आत कहिय जड क्यों आवत अब जंपहु जन  
 भट १ सचिव २ न भाखिय तातें १ पितामह २ चौरन अर्चत आत यहै ॥  
 करि पूजन जैहै बहुरि न अहै हित निज व्हैहै सकल कहै ॥  
 जितनै प्रभु पट्टनि चलहु नतो जन नाहक दोउ २ न कोप करै ॥  
 जड जड मिलि जुझै विहित न जुझै प्रभु तब इत १ दोउ २ द्रोह परै  
 गदि इम सुरतान १८९।१ हिं लै सब पट्टनि नृप जडपन जसकरन गए ॥  
 भट तहै सब यासन लाहिलहि सिक्ख रु भोनन कछुमिस आत भए ॥  
 अवसेसन अक्खिय तैटिनी चम्मलि परतट बिबिध सिकार बनै ॥  
 चढि नाव सुनत नृप परतट चल्लिय संग न हुब तव स्वजन सनै ॥२३॥  
 अही तटिनी पहुँचत नृप अक्खिय भटवर आवहु क्यों न भलै ॥  
 ऐसे प्रभुवेनुहि भले तिन अक्खिय चलहु तुमहिं हम नाहिं चलै ॥  
 गिनितव बदल सब वंदन बिगारत सिटि परतट सुरतान १८९।१ गयो  
 भूपतिके अनुसंतमैं जोजो खलजन हो सोसो संग भयो ॥ २४ ॥

\* बिना कारण उनका रान क्यों बढ़ाया ॥ १९ ॥ इस प्रकार मतभेद १ कहकर  
 १ धन भेजकर महाराणा उदयसिंह की २ सम्मति लेकर ३ शीघ्र ॥ २० ॥  
 धाँगा नामक आल पर आये ४ छपर लुई ५ मुत ६ तुच्छ शत्रु के आने का कुछ  
 भी कारण नहीं है ॥ २१ ॥ ७ पिता और दादा के दंग स्थान पर बने हुए स्थानों  
 का पूजने आना है ८ मुख मूर्ति मिलकर लड़ने ९ उचित ॥ २२ ॥ १० घाकी रहे  
 जिन्होंने कहा ११ चावल नदी के परले किनारे ॥ २३ ॥ १२ मुख बिगाड़कर  
 १३ सलाह में ॥ २४ ॥

इत बुंदी आतहिः राजनिलय रहि कछुदिन सुर्जन १८९१ कछु न कही  
 पंचम ५५ दिन अक्खिय चंद्राउति १८६३ प्रति सुतगति सवन न जात सही  
 जंपिय पुनि पंचन सुत ढिग जावहु भूपति हम सुर्जन १८६१ हिः भज्यो  
 कहि इम वह कछिय पुनि तस परिजन लोक सकल हुव संग लज्यो  
 सहस ११ सत्तल २ सुत जहँ विक्रम जुत पहिलैं अरिहनि उभय २ परे ॥  
 कही सुरतान १८९१ प्रसू तदनंतर क्रम परिजन सब संग करे ।  
 सिसु अक्खिय राज १९०१ कुमार सहित लजि पुनवंधू निज संग लई ।  
 इम धावर १ धाई २ आदि स अनुर्ग ३ न भूप्रसू कछिजात भई ॥ २६ ॥  
 बुंदी नारायन १८७१ के कुलतैं वचि कुल नरवद १८७१ भव स्वामि  
 करयो ॥

धरनीपति सुर्जन १६०१ सक सिव सोलह १६११ वैठि तखत हँम  
 छल धरयो ।

लाखि सब अनुकूल सुभट १ सचिवादि क अनुर्ग ३ अवधि हिय  
 लाइ लये ।

निजनाम पटा करि सवन निवे दिर दढहित कछु कछु अधिक दये २७  
 भ्राता भटसिंह १८९१ रु मान १८९१ रु भैरव १८९१ भीम १८९१ रु पु  
 ११८८१ रु मोकल १८८१ रु भव ।

इन्ह जैतगड १ रु दिंडोली २ अप्पिय जक्खमूल ३ जुत दान सजवै ।

बुंडाउत १४१२ रावव १८९१ सावर बाहूत दुहि वरुपनि ४ दंग दयो

कुंभकरन १८८१ सुत जगमाल १८९१ उदय १८६१ कुल पिप्पलदा

४ पति नृपति नैयो ॥ २८ ॥

वंसी ६ पुरपति सावंत १८७१ बुलायड जिहि रनथंभ तज्यो न जई ।

\* राजपुत्र में सदाकर सुभावे में हुन की गति रुक छै सही नहीं जाती. इनमें  
 सुर्जन को राजा ५५ दिना है १७ अथवा लोक ॥ २७ ॥ जिम पीछे सुरताण की  
 १ भाता को निकाली २ मेरे की महु को ३ बाज ४ खेवको कछित ५ राजा की  
 माता ॥ २७ ॥ ६ भूपति ७ लमके ८ लमको तज ९ अपभं नाथ को पदे करके लमको  
 दिये ॥ २७ ॥ १० पुत्र ११ लीय १२ सुता ॥ २८ ॥

बिनुभुव राघव १८७१ सुत कन्ह १८८१ हिं बिक्खिं रु कोटा गंजन  
मंत्र कियउ ।

लाखि, दढ भट १ सचिव २ न किय तब बिन्नति रहहु अबहि नवराज्य  
लियउ ।

कन्ह १८८१ हिं तब सुर्जन १९०१ अपि जयस्थल १ लै दै हैं कोटा २  
हु कस्यो ।

पै तिहिं बालिसपन जंपन निजजन लेहु लरहु सुनि चपल चह्यो ३३  
जुब्बन मदकरि प्रभुसासन बिनु जैं सत दुव २०० मेद १ रु सबर २ सजे:

ग्राम चिपथ चम्मलि उत्तर निस गय सृध करि कोटा लैन मजे ॥

जवनन यह जानी पहुँचत पुब्बहि भट अतिमानी समुद भये ।

राघव १८७१ सुत कन्ह १८८१ समेत मिलत २ न भिल्ल १ रु मेद २ भ-  
जाइ दये ॥ ३४ ॥

महिप सु सुनि अक्खी जैसे हैं जन १ तैसे सुहृद २ सहाय मिलैं ।  
जयथल इम जंपि रु छिन्निलयो छुभैं बहुरि न बुल्लयो खीजैं खिलैं १२ ।

जब नृप चितोरहिं जात जाजपुर दूजे २ दिवस सुकाम दयो ।

निज गुरु सिख्यो तैं एक बनिक् नमि भूप सरन लाहि अनुगै भयो ३५

नृपके कर १ चरन २ न रेखा निरखि रु गुरु यह भाँवी भूप भन्यो ॥

बनिक् सु नारायन १ नाम २ रु जाति ३ खटोर २ सु सुनि नृप अनुग बन्यो ।

बुंदी अब आइ रु गद्दी बैठत कोबिदैं बनिक् सु सखिर्व करयो ।

तैं दुलहनि तीजी ३ चिमन कुमरि १९०१ चालुक सूरसुता बहुरि

वरयो ॥ ३६ ॥

१ देखकर २ कोटा कोबिजय करने की सलाह की. आपने बुन्दी का राज्य ३  
नवीन लिया है इस कारण अग्री ठहरो ४ लूखपन से ॥ ३३ ॥ ५ कोटा ६ भील  
७ ग्राम का नाम है ८ युद्ध करके ॥ ३४ ॥ ९ मित्र १० सन्धि ने ११ क्रोध करके  
१२ बाकी. अपने गुरु का १३ सिखाया हुआ १४ बनिया (वैश्य) १५ लेवक हुआ  
॥ ३५ ॥ १६ राजा के चरण और हाथों की रेखा देखकर गुरु ने कहा था कि आनेवाले  
समय में यह राजा होवेगा १७ उस चतुर बनिये को १८ प्रधान किया ॥ ३६ ॥



सुर्जन १९०१२ के हुव चितोणहि हुवरसुत भूपतिपन तीजो ३हु भयो ॥  
दूदा १९१११तिम भोज १९१२रु राममल्ल १९१३यह नामधेय त्रिक ३  
लिक ३ हि दयो ॥

क्रमतै हुव तीन ३हि रानिनके सुत तीन ३हि ए रन १ दानरपुरि ॥  
मानत नव ९व्याह करे कैति मागधं भाखत सु विदित त्रिक ३हि  
भूरि ॥ ३७॥

सुर्जन १९०१२ अब बुंदिय हैरहो सोदर व्याहेव्याह लय ३हु दुसरयो  
क्रम जे कहियत हे प्रभु राम २०३१४ सुनो सब दान बडे हुव तयो ॥  
दुवतयो १ हुवतयो २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

बरनी कछवाही सेखाउति इंदुनती १८९१२ अकखयराज १८९१२ बरी  
क्रमतै बरि तीजी ३चिमनकुमारि १८९१३ सिसोदनी सु बांमांग करी  
नामहु करि कुमरी १८९१४ अल्लिय बोथो ४ अकखय १८९१२ निपुन  
लही ललाम ॥

स्वसुरहु तस अलुपम १रामसाहि २तिम सेरसिह ३इहि त्रिक ३तनाम  
इम रान १८९१३ हु चालुक भीमसुना अजबकुमारि १८९१२ दूजे  
व्याह वरयो ॥

क्रम तीजी ३अर्जुन कूरमकी तनया गंगा १८९१३ करप्रह्न कथो ॥ ३९॥  
अकखय १८९१२ के पुत्र दयालु १९०१२ उदय १९०१२रु जुगर पहिली  
१रहोरि जने ॥

सेखाउति दूजी ३के सुरतान १९०१३ भयो तीजो ३इम अय ३हि भने ॥  
इम तीनन ३तै जग अकखयराज १८९१२ जनन प्रकट्यो बढि जंग जई  
जा अर्जुन अकखयराज पउत्त १९१५ गिदा गुनईसम १९संख्य भई ४०  
वासो लखु राम १८९१३ लहे चल ४ जंगज जर्त्य बिजय १९०१३रहोरि  
१ जनयो ॥

१ राजा द्रुप पीछ २ नाम ३ पतिउत ४ जिततै ही राटलो क गौ विवाह कहते  
है ५ चहुत प्रसिद्ध तीन ही विवाह हैं ॥ ३७ ॥ ६ रति घनाई ॥ ३८ ॥ ७ विवा  
ही ॥ ३९ ॥ ८ पंश ६ भेद ॥ ४० ॥ १० जहाँ चार पुत्र

दूजीके सुत दुव२ भूत हठी जुतसिंह१६०।२रुदोलतसिंह१९०।३भन्यो  
गंगा१८९।३कछवाही तीजी३के सुत अकखयसिंह१९०।४चउत्थ४। गद्यो  
वीसम२०इम च्यारि४नतै हि बढ्यो कुल राम२०।१६जिहि नाम बढ्यो  
सुरतान१८६।१कुमार जु अकखय१६०।१ सूचिय कुल तस अवसर  
भावि कढ्यो ॥

सुरतानपउत्तर१।१७तथा इकवीसम२। विदित सु हड्ड६१न भेद बढ्यो  
वैठो सुरतान१८९।१तखत सुर्जन१९०।१बुधधीधन तासहि छत्र धरयो  
पीठिन संख्या१८९।१सन नृपति नाम पर एक१ अंक इम अधिक  
१९०।१ परयो ॥ ४२ ॥

तनया हु भई सुर्जन१९०।१कै तीन३हु जेठो पूरकुमारि१९१।३जहाँ  
सो भोज१९१।२ स्वसाँ दूजी२लालकुमारि१९१।२तीजी३मदनकुमा-  
रि१९१।३ तहाँ ॥

अनुजाँ दुव२जाँमि अनूढ मरी तिनकी जननी न कही तासौं ॥  
सुभ गुनइम सुर्जन१९०।१वैठि तप्यो सबके सिर सुखमासौं ॥ ४३ ॥  
दोहा ॥

इत सिटाइ सुरतान१८९।१ अरु, छमपन जिनु मन छिज्जि ॥  
पलंटी समुझी सब प्रजा, खल दुर्बल जिम खिज्जि ॥ ४४ ॥  
जननी सुत१ पतनी२ जुत सु, सब निज वस लै सत्थ ॥  
पहुँची पुरतट पुत्रपँह, जठरहि निंदत जत्थ ॥ ४५ ॥  
मनकरि१धुव इच्छत कुमति, बिक्रम करि२ सु बिगोई ॥  
गज१हु वैठि न सकै गरुड, हयारुढ कब होइ ॥ ४६ ॥

\* छुप १ कहा ॥ ४१ ॥ १ रुसय पर २ बुद्धि ही है धन जिसके ऐसा सुरजन  
सुरताणसिंह के पाठपर पैठा ॥ ४२ ॥ ३ ओज की कहिन ४ दोनों छोटी ५ व-  
हिन ६ बिना धिवाही मरी ७ प्ररम शोसा ले ॥ ४३ ॥ ८ बिना समर्थपन के  
॥ ४४ ॥ ९ अपने पेट की निन्दा करतीहुई ॥ ४५ ॥ १० पराक्रम से खाईहुई  
भूमि को वह सूर्य मन से चाहता रहा ११ शरीर से मोटा होने के कारण  
हाथी पर भी नहीं बैठ सका था सो घोड़े पर सवार कैसे होवे ॥ ४६ ॥

सुरताणका खीचियों के शरणमें रहना] पठराशि-तृतीयमयूख (२२३१)

चंद्राउति दुर्मन चविय, रे कुपुत्र अब रोइ ॥

हमरी सिक्ख गिनी न हित, लै फल बीजहिं बोइ ॥ ४७ ॥

खिजि तिभहि सोलंखिनी, रानी कहिय कुरांज ॥

अप्प गजानन तुंद यह, कित भरिहो अंसु काज ॥ ४८ ॥

अब तुमको मरनो उचित, बुंदीद्वारहि बेग ॥

अतिबल मैं न सहैं इमहु, तब कहते मम तेग ॥ ४९ ॥

सुरिंरवि जिमजिम स्वजन, इनइम कहि जल याहि ॥

पटु तिमतिम छिज्योपरै, किमकिम सहैं काहि ॥ ५० ॥

मुख बिगारि बुंदीबहिष, परतट इन पछिताइ ॥

सु तकि बंधु खिजिइन सरन, पत्तो तैंहें दुख पाइ ॥ ५१ ॥

बिफल कोप असो कुबुध, करत सुन्यो नन कोहु ॥

गदत सिक्ख जिहिं अरि गिनी, जननीअर तियजोहु ॥ ५२ ॥

जाइ मऊ पुर हड्डै जिहिं, रायमल्ल नरराय ॥

प्रभु किनो खिजिइन प्रथित, कुंजर भर गुरुकाय ॥ ५३ ॥

पुर बरोदको परगना, सुरतान१८९हिं दै सूर ॥

रायमल्ल तैंहें रक्खयो, दायदरयो लखि दूर ॥ ५४ ॥

जवनन कोटा लिन्न जब, परतट सेसैं प्रवेश ॥

दब्बे खिजिइन तिन दिनन, बिनु रविमल्ल१८८बलेसैं ॥ ५५ ॥

पहिलैं छिनि बरोदपुर, अब पछो तिहिं अप्पि ॥

खिजि३१ रक्खिय हड्डै स्थल, थल निर्वाहमित अप्पि ॥ ५६ ॥

१ उदास बनसे कहा ॥ ४७ ॥ २ हे छोटा राजा आज इस ३ गजेज के समान  
पेट को ॥ प्राण के छिपे कहाँ असेने ॥ ४८ ॥ तुम कहते थे कि मैं ५ बड़ा पलवान  
हूँ, सो मेरा खड्ग ६ हाथी भी सहन नहीं कर सकता ॥ ४९ ॥ ७ अपने लोक  
ज्यों ज्यों सोड़ते थे ॥ ५० ॥ ८ ब्राह्मण नदी के पार. खीचियों को आई जानकर  
उनके शरण ९ गया ॥ ५१ ॥ १० अखंड स्वामि किया ११ हाथी के बराबर  
१२ गड़े करीर वाले उस सुरताण के ॥ ५२ ॥ १३ अपना दायभाग छूटा हुआ  
देखकर ॥ ५३ ॥ ब्राह्मण के पैरो बिनारे का १४ बाकी का प्रदेश १५ आटापला नामक  
पर्वत के पति स्वर्गमल्ल बिना ॥ ५४ ॥ १६ निर्वाह के नाफिक छोटा स्थल देकर ॥ ५५ ॥

निवेसय जो है नानता, निकट नंदना १ नाम ॥

चंद्राउतिके जो १ रु चंड ४, गेल इतर है ग्राम ॥ ५७ ॥

तैंह जननी सुरतान १८९१ की, बापी १ रुचिर बनाइ ॥

चिरची डिग वर बाटिका २, जे जस अवहु जनाइ ॥ ५८ ॥

इति श्री वंशशास्त्रे महाचम्पूके पूर्वायणे षष्ठदशौ वीतिहोत्र-  
वसुधेश्वरवीजव्याख्यानवीजहृदाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्य  
विहिततुत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यदुन्दीवसुधावरसुरताखसिंहच-  
रित्रे ईरानदेशाधीशालसप्तम्राज ईरानदेशस्थितहुमायुसम्राजं प्रति  
तत्पुत्राखामार्गपुत्रीभिः सह पाण्डिग्रहणाशिक्षाकरणा १ ईरानदेशा-  
धीशालाहायणेन पुनरार्थावर्तागतहुमायुसम्राजः काबुलसीमाविजये  
सिकन्दरशयनं विजित्य दिल्लीसिंहासनारोहणा २ आर्यलोकमतानु-  
सारेणाकबरजन्मप्रवचनं दुन्दीन्द्ररावसुरताखसिंहपत्न्याने सुरजन  
स्वामितालादनेन दुन्दीराज्यस्य नारायणदासकुलसंपर्कपरित्यागा-  
त्तदनुजनरपदकुलसंपर्कीकरणा ४ दुंदीन्द्रसुरजनस्य बन्धुवर्गस्यः  
सामन्तादिभ्यश्च निजनामाङ्कितग्रामापिपत्यप्रतिपादकपत्रप्रदानेन  
तद्विश्वासन ५ अर्जुनसूनुविवाहपुरःसरसंतानकथन ६ दुंदीराज्यच्यु-

१ ग्राम २ अन्य ग्राम उक्तके साथ हैं ॥ ५७ ॥ ३ वान ॥ ५८ ॥

श्रीवंशशास्त्रे महाचम्पू के पूर्वायण के षष्ठ राशि में अग्निवंशी राजाओं  
की व्याख्या के धीज हृदाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के वृ-  
त्तांत की व्याख्या में वर्णनीय दुन्दी के राजा सुरताखसिंह के चरित्र में ईरा-  
न देश के बादशाह पालस का ईरान देश में स्थित हुमायों को उनके पुत्रों को  
आप्यों की कन्याओं के साथ विवाह करने की शिक्षा देना, ईरान के बादशा-  
ह की सहायता से फिर आर्यावर्त में आयेष्टुण प्रसायों को काबुल की सरहद  
फतह कर, सिकंदर बादशाह को जीतकर दिल्ली के तख्त पर बैठना, आर्यलो-  
कों के मतानुसार अकबर के जन्म का कथन, दुन्दी के राव सुरताखसिंह के  
भगने पर सुरजन के स्वामित्व होने से पुत्री के राज्य का नारायणदास के  
कुल का संबंध कृत्कर उसके छोटे भाई नरपद के कुल में जाना, दुन्दी के रा-  
जा सुरजन का बन्धुवर्ग और सामन्त आदि को अपने नाम की सुहर लगा-  
कर पद लिख देने से विरपाश उत्पन्न करना, अर्जुन के पुत्र के विवाह के सा-

अकबरका भगवंतदासकी कन्या व्याहना] बहुराशि-तृतीयमयूख (२२३३)

तसुरतामय मकराजखिचिरायमल्लाश्रयमा भयानं तृतीयो मयूखः ॥३॥

आदितः षडशीत्यधिकशततमो मयूखः ॥ १८६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

साह हुमायों ३१।१ इत सबल, पुनि लंहि दिखियपट ॥

तह माँसपङ्क उपदेस तब, बिधि चिंत्यो नयबँह ॥ १ ॥

आँखेरे भगवंतकी, कन्या हीरकुमारि ॥

व्याहना नंगी अकबर३७।१हिँ, धर१ धन२ दैवो धारि ॥ २ ॥

कूरमनूप भगवंत किय, आराधन इन्कोहि ॥

बाबर३०तँ, अबलौ वजैँ, सासन साधक सोहि ॥ ३ ॥

बदिय साहं तासौं जिहसि, दुहिता तुम नृप देहु ॥

व्याही अब हमरेहु बनि, लाभ धरा१धन२लेहु ॥ ४ ॥

मिरजापद अबतैँ तुमहिँ, दुर्लभ यह हग देत ॥

संबंधी बनि दै सुता, हमरो पिकखहु हेत ॥ ५ ॥

सजातीय हमरे लकल, मौरैँ पति न मोहि ॥

तनया लेहु भलौहिँ तो, हम अखिय नृप ओहिँ ॥ ६ ॥

षट्पात् ॥

कहिय हुमायों ३१।१ कोन पति नृप तुमहिँ प्रतारहिँ ॥

काल संतुं को करहिँ होहिँ टारक सो हारहिँ ॥

धैं संतान का कथन, दुम्दी के राज्य के जारिज हुए सूरताण का मज के राजा  
लीची राज्यभक्त के करण एतने का कहने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ ॥३॥

और आदि ले एक सौ छियासी मयूख हुए ॥ १८६ ॥

\* बादशाह हुमायों को ईरान के बादशाह सामरा ने आर्यों की पुत्रियों से  
विवाह करने का उपदेश दिया था उसको स्मरण किया १ नीति के मार्ग से  
॥ १ ॥ २ आँखेरे के राजा भगवन्तदास की ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३ हमारी जा  
तिवाले (जत्रिय) ४ पंक्ति बाहिर नहीं करें ५ आश्चर्य है ॥ ६ ॥ ६ हे राजा !  
तुमको पंक्ति के बाहिर कौन निकालेगा ७ काल का अपराध कौन करेगा ८  
दासनेवाला होवेगा सो ही हारेगा

तन्यहु लक्ष्मि नृप कतिहु हुने मनेकायति जागरि ॥  
 मिरजानृप हममाहि कहिय हम तिनहु लोभ करि ॥  
 भगवंतभूप आमैरदन हीरकुमारि तनया तवहि ॥  
 अधिराज सुगतनुत अकबर३७१५दि व्याही निगम विरोधवहि ॥७॥  
 तवहि १ धवहि२ अन्त्याशुभासः ॥ ३ ॥

पोता ॥

कुमार हुतो भगवंतके, धरत नाम १ अशिषान ॥  
 अकबर३७१ सालक पोषदे, बालक व्याह विधान ॥ ८ ॥  
 अजे १ नृपन जवनन यहे, पुनिन व्याहन पंथ ॥  
 पारयो नृप वृरन प्रथम१, लोभ दुलभ मिलि अर्थ ॥ ९ ॥  
 किते कहत पुत्रवहु पदुन, पुनिता कहु कहु दान ॥  
 पे विरोध लिखित१ न प्रकटत, हे प्रमानकरि दीने ॥ १० ॥

दोहा ॥

बिदित रीति सुजरा १ दि बहु, सूचिय प्रथम १ असेस ॥  
 पै हुब बोरन अजपन, असह रीति अव एस ॥ १२ ॥  
 इम बिबाहि सुत अकबर ३७ ॥ हिं, कूरमभूप कनी सु ।  
 करत राज्य आसहि कछुक, वत जु चरम बनी सु ॥ १३ ॥  
 पुस्तकगृह अटलपर, अटत इकदिन एह ।  
 बैठि स्वरथ हुब श्रयित बलि, इत हुब संभ्रमनेह ॥ १४ ॥  
 सोघ अचानक तिहिंसमय, बगिकार दिय बंगि ।  
 आसां डिगिगय उठतहि, भरं परि तँहँ कछु भंगि ॥ १५ ॥  
 फेला डिगतहि अंग झुकि, उलटिपरयो भुव आइ ।  
 तजिय हुमायों ३७ ॥ साह तनु, प्रबल कालगति पाइ ॥ १६ ॥  
 सिव सोलह १६ ॥ ११ मित लगत सक, पुनि लिय दिलिय दृप ।  
 पा १६ ॥ ११ हि बरसके उत्तरन, इम परि मृत चढि अट ॥ १७ ॥  
 बय बिताइ बारह १२ बरस, तनुभय अकबर ३७ ॥ तास ।  
 बरस तेरहम १३ पहु बन्ग्यो, ससि सितपक्ख प्रकास ॥ १८ ॥  
 गनित हुमायों ३१ ॥ नाम गत, आत अंक इकतीस ३१ ।  
 सैर ३७ ॥ प्रभृति पीछे सततै, इहाँ पंचहुव ईस ॥ १९ ॥  
 अकबर ३१ ॥ अके अभिधान, इम, संख्या हुब सैतीस ३७ ।  
 इक रजियाफन गिनी इहाँ, नरहि गिनै अँवनीस ॥ २० ॥

के पास रहना, इत्यादिक विधि से उनका वह कथन, बगल (एक ओर) में रहता है अर्थात् इलजाता है ॥ ११ ॥ प्रथम मिलाप में सुजरा करना आदि सम्पूर्ण रीति की सूचना पहिले की गई है परन्तु आख्यपन को १ हुबोनेवाली असह रीति यह अब हुई ॥ १२ ॥ २ अन्तिम वार्ता हुई ॥ १३ ॥ ३ पुस्तकालय (लाइब्रेरी) की ४ छत पर एक दिन यह वादशाह फिरता था ५ संख्या समय हुआ ॥ १४ ॥ ६ निमाज की अजा देनेवाले ने अजा दी ७ भार पड़ने से आशा (सुहार का काष्ठ) डिग कर लूटनया ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ८ पुत्र ९ स्वामि बना ॥ १८ ॥ १० बोरकाह आदि ११ निरन्तर ॥ १९ ॥ इसकारण १२ अकबर के नाम पर सैतीस की संख्या आती है १३ हे राजा रामसिंह यहां पुरुष वाद-

बयःकरि सिंसुसमरवैठतहि, नतिःकरि बृद्ध समान ॥

राज्य, सम्हारयो न्यायरत, अकबर ३७१ गुनन अभान ॥ २१ ॥

हरिगीतम् ॥

इत भूप सुर्जन १९०१ बैठि बुंदिय अंतराय दुःखदकै ॥

कोटा बसी करिवे अनीक सज्यो नकीवन सब्दकै ॥

सक सकरी खट इक १६१४ लगत भूप दह ६१ न सकम्पौ ॥

जबतै सु ग्राम चिघट लंघि रु बट जुज्जन पै जम्पौ ॥ २२ ॥

अभिधानसिंह १८९१ रुमान १८९२ भैरव १८९३ सत्य अर्थन अंकये ॥

अय ३ ही पितृव्यतनूज भात हरोलै निर्भय हंकये ॥

नरबद १८८१ तनूभव आत नरहरि १८९३ ईस खटपुर कोइतै ॥

नगराज १८८१ नंदन जो बंधनि २ ईस राघव १८९१ हू जितै ॥ २३ ॥

पुनि कुंभ १८८१ अंगैज संगही जगमाल १८९१ पिप्पलदा ३ पती ॥

नवग्राम ४ नाह दलेलै १८८१ सुत जगमाल १८९१ जंग महामती ॥

ब सदारि ५ सासक मेव १८७१ केतुत माल १८८१ सुत जयपै बढ्यो ॥

सामंत १८७१ सुत बलकर्ण १८८१ बंसिप्रदपाइ प्रष्टप्रथो पढ्यो ॥ २४ ॥

गैनोलि ७ सासक रामसाहि १८८१ सुत पर्वत १८८१ को गज्यो ॥

संग्रामप्रिय जुज्कार १८८१ सुत संग्राम १८९१ ठिक्कर पति सज्यो ॥

जिम लाडपुर ९ पति भरत १८७१ नंदन कितिसिंह १८८१ बढ्यो जई ॥

लागि बाव पितृल १८६१ अनथडा १० पति गंग १८८१ सुत बलगाँव १२५

शाह हुए सो ही गिने हैं राजिया नामक एक स्त्री पादशाह हुई सो नहीं गि-

नी ॥ २० ॥ १ अवस्था से बालक के सज्जन और २ बुद्धि से बूढ़ों के सज्ज-

न ३ न्याय में रत होकर ४ अतोल ॥ २१ ॥ ५ स्त्री ६ वर्ष आश्रित दो वर्ष के

अन्तर से ७ सेना = नकीयों के शब्द से ९ सुख करने के आर्ग पर जचा ॥ २२ ॥

१० अपने नामों के अक्षरों के अर्थ रत्न करनेवाले वा अपने नामों को सत्य

अर्थ से चिन्ह युक्त किये "यहां अद्भुत शब्द अक्षरार्थ बाची है जैसे अद्भुत के अद्भुत

कहते हैं" ११ काका के बेटे भाई १२ कासी भाषा में आगेको हरोल और पीछे

को चन्दोल कहते हैं १३ पुत्र ॥ २३ ॥ १४ पुत्र १५ अष्ट रीति अधवा अपनी

कुल परम्परा ॥ २४ ॥ १६ डिंगल भाषा में घोड़ा दौड़ाने को बाग जठाना अधवा

बागलेमा कहते हैं ॥ २५ ॥



खज्जूरि११सासक खेम१८८१२सुत भरतेस१८९११दास१८९१२दु-  
आत यों ।

जजाउरा१२धिप भीम१८७११सुत हरिसिंह१८८११गव्वत जात यों ।

हहू१८२१२कुलाधिप लकख१८९१२सुत डव्भी१३स भीम १९०११  
बली हुतो

हम्नौर१८९१२नंदन हत्थ१८११२कुल संग्राम१९०११खिन्न१४प्रती  
सुतो ॥ २६ ॥

पुनि मोहेनोत्तरपताप१८६१२देव१८८१२तनूज वच्छोला १५पती ।

तेजह१८९१२सुत हरि१९०१२नेमडा१६धिप घुग्घुलोत्तरतनी तैती ।

इत्यादि आत गनै सनाभि१सगोत्र२अल्पहु उप्फनै ।

असगोत्र३जे भट अग्न आदिखय जोध झाँ तिनके जनै ॥२७॥

खुंवीस रक्खि स्व पिछि यों इतके प्रवीर बहे पत्नी ।

महिपाल पुँव्वहि नीति निच्छनपै इती कहि सुकली ।

रविमह१८८१२मरतहि सून्य भू सुरतान१८९११बाल विचारिकै ॥

ताके प्रयाद दई तुम्हैं सु छवीसर२६हायन हारिकै ॥ २८ ॥

अब राहै१ जागिअ प्राण लौ तुम चोर२भगहु अजही ।

करनौ सैमीक ततो विलंब न होउ समुह कजही ।

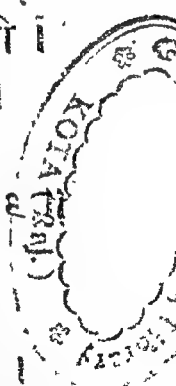
सुनि एह केसरखान१डागरखान२हंक्रिय समुहे ।

छमै ज्यो भुजंगल होत समुह मंत्रवादिन पै छुँदे ॥ २९ ॥

रन भू भइनाँ आमतैं दिस पुँव्व कोसै१मिता रही ।

वत्त छेरमिले तहँ तेग उम्काट बेग द्वैर दिभतैं वही ।

इक१जान आदिखअनूरुतौ रथ रोकि इफरतु आकथो ।



- १ गये काता कृष्ण २ हात का स्वाभि ३ खीरया नामक आम का रसि ॥२१॥  
४ गिलगारी ५ रक्ति ६ लपिखी ॥२७॥ ७ पटिले ही ८ छर्यमल के करने ९  
आलस्य अथवा उन्नतता के कारण १० छवील यनै रम्यता ॥२८॥ ११ आग-  
हसार जगा है लौ तुम चोर आगो १२ कुल करना है तो १३ समने उर के  
समान १४ लपरी किया ॥२९॥ १५ पत जोस १६ अग्न नामक सारथि से एक

धरनी मचकत धक्क लगि नागसे को नत नकभो ॥ ३० ॥  
 पलचौर १ भैरव २ जुगिनी ३ सिव ४ सक्ति ५ नारद ६ पाहुने ।  
 लघु आइ इच्छित पाइ बाह कहैं बहैं सिर लै लुने ।  
 बचियो नदंछत जवन जे भटकेनमें भटके झुके ।  
 कटकेसलों वटके बनावत रंगमें भट के रुके ॥ ३१ ॥  
 नृपके चमूपति मान १८९१ भ्रात तुरंग समुह नखखयो ॥  
 किय रुंड केसरखान १ सिर तस चिल्ह १ गिद्ध २ न चखखयो ॥  
 आसि भारि डागर २ मानके सिर मान १८९१ के सिर एकही ॥  
 करि रुंड तिहि निजभ्रातलों बलकी कथा खल के कही ॥ ३२ ॥  
 भिरि सीसहीन हु मान १८९१ कछुखिन मान ज्यों हनतोभयो ॥  
 गैनालिसासक रामसाहि १८८१ सराहि डागर २ पै गयो ॥  
 दुव २ वीर जुत रहि दाव के भटके परस्पर दै अरे ॥  
 वर अच्छरी दुलहीन डागर १ रामसाहि २ उभेश्वरे ॥ ३३ ॥  
 मिहराव मिच्छ भतीज ह्वैं बढि घोर संगर मंडयो ॥  
 भट स्वीय १ भग्गत थंभि गन परकीय २ खग्गन खंडयो ॥  
 जजाउराधिप भीम १८७१ सुत हरिसिंह १८८१ को हनि मिच्छजो ॥  
 अधिराज सोदर राम १८९१ पै गय अप्प प्रान अनिच्छ जो ॥ ३४ ॥  
 जिहि कुतै मारिय सत्रुपै सहि सो खिजे बढि संभरी ॥  
 करवालदे अरिकंधरी धरतै जुदी लैरतै करी ॥

पहर पर्यंत रथ रोकने को सूर्य ने कहा. शेषनाग की १ नासिका भुक्तगई ॥ ३० ॥  
 २ मांस खानेवाले ३ शीघ्र आकर ४ कटोहण मस्तकों को लेकर ५ शीघ्रता करके  
 खड्गों के प्रहार से लगे ६ सेनापति नक ७ टुकड़े करतेहुए युद्ध में ८ कितने ही  
 वीर रुके ॥ ३१ ॥ ९ मानसिंह के मस्तक पर घमण्ड के साथ एक खड्ग मारा ॥ ३२ ॥  
 १० जिसप्रकार घेत सहित मारे तिस प्रकार मारता रहा ११ खड्ग ॥ ३३ ॥ १२  
 शत्रुओं के वीरों को १३ जजाउर के पति १४ अपने प्राण की इच्छा नहीं कर  
 नेवाला ॥ ३४ ॥ १५ भाला १६ खड्ग के प्रहार से १७ कंधे (गरदन) १८ छड़ते

मिहिराव ३३६ हि मारिं असि सामंत १८७।२ सुत सिव १८८।६ संहरयो ॥  
 बलकर्ण १८८।१ तैंहें तस बंधु काय कबंधको सु ॥ द्वि ३ धा करयो ॥ ३५ ॥  
 दुव २५ सर गुलामनवी ४ इतैं वढि भूप सुर्जन १९०।१ कै दये ॥  
 तिहि वीर तुरकन प्रानलोभ तक्यो न गंजतही गये ॥  
 नृपघात अकखय १८९।१ मारि तोसर ह्यां गुलामनवी ४ हन्यो ॥  
 वढि अगग मारि रही म ५ को जयथंभ बुंदियको वन्यो ॥ ३६ ॥  
 प्रभु राम २०३।१ मिच्छन यों प्रबंध हुतो न जीवत हारिहें ॥  
 परं भूप सुर्जन १९०।१ भाग्य सुखय १ हनैं रु खिलैं २ अव पारिहें ॥  
 भट सेस जवनन देस छोरि रही म २ तुटतही भजे ॥  
 कोटापुरी पहुँचे रु जित्तन सूर सुर्जन १९०।१ के सजे ॥ ३७ ॥  
 ततकाल पत्तन पैठि ह ६ ६ १ न जुजिभ सत्रु हने तहाँ ॥  
 जवनेस डागर २ भ्रात रोग असाध्य तैंहु जुरयो तहाँ ॥  
 सालारगाजी २ नाम जो तजिमंच सम्मुह संक्रम्यो ॥  
 दल फार ह ६ ६ १ न द्वार पूगत खग १ ह ६ ६ १ न रलो दम्यो ॥ ३८ ॥  
 तस भ्रात १ भट २ गन रोगबिनु तजि जुद्ध बाहिर ज्यो जुरयो ॥  
 सहै रोग तिनसन सो १०० गुनो यह ३ वीरता रन अंकुरयो ॥  
 असि भारि कीरतिसिंह १८८।१ टोप रु मारि खट ६ भट सो मरयो ॥  
 तस नाम अजंहु द्वार वज्जत जत्थ जो भवने तरयो ॥ ३९ ॥  
 सालारगाजिय ३ पारि संभर सत्रुगन खिल संहरयो ॥  
 कोटा सु अव्व छवोस २ दैं गतैं गांजि अप्पन यों मुरयो ॥

३५ ने ३ दो टुकड़े करदिये ॥ ३५ ॥ १ पाशा ५ भाला मारकर ॥ ३६ ॥ १ हे  
 रामसिंह १ परन्तु ३ पाकी रंग जिनको अय मारेगा ४ पाकी के यवन ॥ ३७ ॥  
 ५ सम्मुख बला हाथों की सेना का सम्मुख द्वार पर पूगने ही खट और ६ रोग  
 के कारण अपना शरीर के अलावा पाकी रंग थे जिनको लेकर मारे ॥ ३८ ॥  
 ७ रोग सहित था तो भी उन नैराश्रयवालों से आशुना ८ युद्ध में लड़ा हुआ ६  
 पाज भी जिनके नाम द्वार प्रसिद्ध है १० संसार को तिरा ॥ ३९ ॥ ११ चहु-  
 बाज १२ गया हुआ

तैंहँ मान १८९११ सिव १८८१६८ हरि १८८११ रामसाहि १८८११ स्वधा-  
त ए चउ४ तुष्टये ॥

असगोल वर भट अहु८के अहु छोह लोइन छुष्टये ॥ ४० ॥

पहिलें लिविक्रम१स्वामिसों रन ठानि सैंगर जो परयो ॥

इहिं संतु तल तुत सोहु बंधन गाम धाम सु उत्तरयो ॥

सैंगर प्रताप२तथापि तक्षिय सरन भूप सुभांठ१८६१४ही ॥

माहिपाल लाखि इम सुख पुनि ताकीहि ताहि दई नही ॥ ४१ ॥

इही१मही२अन्त्यानुमासः १ ॥

जुग२घाय बाबर३० जुद्धमें लारि दीप३तास तनै लहे ॥

सुत ताल इहिं रन स्याम४११ वपु तंजि स्वर्गके सुख सैंगहे ॥

प्रतिहार मल्हन१स्यामजुत सोलांखि सिव सुत प्रेम३त्यो ॥

हरि४कर्णसरबाहिषा तनै दहिया प्रतापज हेम५त्यो ॥ ४२ ॥

तोमर सुमेर६प्रतापनंदन कछरतन तनै नरु ७ ॥

बलराजपुत प्रमार त्यो बलुदेव ८ बुंदिय बाहू ॥

नरु १ हरु २ अन्त्यानुमासः ॥ १ ॥

असगोत्र अहु ८हि संटि ए सब भिच्छ सुरजन१९०११ संहरे ॥

जिम भ्रात चउ४ असगोत्र पंचक५ पिंड धारनमें जरे ॥ ४३ ॥

नृपआदि त्रिक३ सहजात दुव दुव२ इक१ छतं क्रम निबन्धो ॥

लारि घाय इक१ सामंत१८७केर कुमार१बलकर्ण१८८११४हु लखो-

असगोत्र वीरनमें समान १ कुवेर२केसरि ३अग्रनी ॥

अमरेस ४ संकर ५ घाय पाइ हनी सु भिच्छनकी अनी ॥ ४४ ॥

सृष्टं ज्यों मरे नृप जात बुंदिय भिच्छ यों सबही मरे ॥

१ नारेगये २ अष्ट वीरोंके ३ प्राय शत्रों ले गये ॥ ४० ॥ ४ इस अपराध से

५उलकी भूमि पीछी उली को दी ॥ ४१ ॥ ६ प्रतापसिंह का पुत्र ॥ २४ ॥

७ सहायक = पदले में देकर ॥ ४३ ॥ ९ सनेआई १० पावों का एक

ला क्रम निबाधा ११ यवनों की सेना को जारी ॥ ४४ ॥ १२ बुद्ध में बुन्दी

जाने के समय ज्यों बुन्दी के राजा मरे त्यों कोटा जाने के समय सब न्लेच्छमरे

कोला १ दि परवस प्रांत सांत निसान निज वजतेकरे ॥  
 हम दपि खिदि १३ म जो लई घर सो सबे घर आनिकें ॥  
 सृष्टमें नउपति राखसह १ प्रसाधैपतन तन सानिकें ॥ ४५ ॥  
 खिल किय अर्पाग परतुनेद १८७१११३ कितितिदि १८८१११३ हौं खिरे  
 चउ बीर बलि अन्नगोत्र नाम अलुंछ धारनमें दिरे ॥  
 लाहि पै मज १ सन प्रांत पच्छिम हउ ६१ हेरि विजै लहो ॥  
 रनसह प्रायल गत दुंदिप आय उच्छवतैं रहो ॥ ४६ ॥  
 वन१ नाम अपि रमान १८९१११३ नुतहमरी १९०१११३ तितित आदरयो ॥  
 क्रम रामसाहि १८८११३ नूज अतिपन बाधेमान १८९११३ वली कहो ॥  
 हरिदिदि १८८११३ तोहर राधाह १८८११३ मसोव वै हिय लाइकें ॥  
 बलि कितितिदि १८८११३ नूज करन १८९११३ हि अर्घि मान वडाइकें ४७  
 व सदारिके बधसेव १८७१३ के सुत लाल १८९१३ तैं हित विस्तरयो ॥  
 बलि कर्ण १८८१३१३ अंधखय १८८१३१३ अदि पापल दैदयो हित मैवस्यो  
 तिन आन १ मान वडाइर सुर्जन १९०१३ भूप यों सबमें तप्यो ॥  
 अरं जंत नरेसन देरदेसन रदिव सेसन औलप्यो ॥ ४८ ॥  
 कलुकाळ अकवर ३७१३ पटु बैठतही व्यतीत इतैं करयो ॥  
 तैं हेम ३८ ऊर्ज ३ अग्रवाल अभीष्ट छिद नदी तरयो ॥  
 वदैगाम १ गुरुजुत कहि अकवर ३७१३ अप्प ओसैरमें वली ॥  
 गहि पटु दिहियको लहो अब कोन पिच्छनको गली ॥ ४९ ॥  
 हम जाति वनिक ३ हु साइ ठे नरनाह १ अंजनको हसैं ॥

१ कोला के प्रांतों के अन्त तक अपने नगरे बजाये २ 'अन्त' अन्तार्थ  
 ॥ ४५ ॥ ३ बाही के ४ बाँधवे ५ जितने नाम उक्तों साकल नहीं हैं वे त-  
 रगाशों की धाराओं में जानेवे ६ हाज कर्मियों का दंड ॥ ४६ ॥ ७ आद-  
 र करने ॥ ४७ ॥ ८ धातकों के लट्ठ को लोह में मूषका दिया ९ एकके य-  
 ज को १० कल ॥ ४८ ॥ ११ हेतु नामक चरमप्रांत वैद्य ने १२ अपने अलुल  
 १३ नरनाह नामक सुत पतिन आत्मान नामके दो मित्रों के १४ अपने समय  
 में बलवान् हुआ ॥ ४९ ॥ हेतु पतिवा है तो भी आदलत होकर १५ अपने

विधिजोग अब जय छोग यह तजि भीरु बीरनमें बसैं ॥  
 धरि दर्प यों वह हेम३८ ऊरुज३भोग बिलसनमें धर्यो ॥  
 दुव२जुद्ध जित्ति सतहुँपार उतारि मुगलदन उल्लस्यो ॥ ५० ॥  
 जिहिं लाखि प्रमत्त रु मुगल६ इत लाहोर पुनि जयकों जुरे ॥  
 घन थट्ट संचय बंवं बहुविध जंगपैं जिनके घुरे ॥  
 जड हेम३८ बानिज३ अग्रवाल सु भोगमें प्रविसैं न जो ॥  
 तैमूर२२को कुलतंतु इक१हु अत्थ दै रहिबै नतो ॥ ५१ ॥  
 पै बनिक३ दुर्लभ राज्य पाइ प्रमत्त भोगनमें परयो ॥  
 विधि एह पिक्खि रु बनिक भखपर जाल मुगलदन बिस्तरयो  
 सब स्वीयजुत बहराम१ मत इत साह अकबर३७१सज्यो ॥  
 दल दाव बानिज हेम३८ पै बढि वेग मुगलदन वहाँ दयो ॥ ५२ ॥  
 सुनि साह१आवत साहजूर जयलाह सम्मुह संक्रमैं ॥  
 जुग२आंत अभिमुख जंगयों इम रंग पानीपथ जमैं ॥  
 रवि जुद्ध तोपन अग्न होतहि खंगमैं न रुकेरहे ॥  
 बल१हेति२मूल१कलारु तोल१तुल१वृथा इतके बहे ॥ ५३ ॥  
 उतके प्रवीर कर्जाक मुगलदन बनिक३बल बढि अंगम्यों ॥  
 बपुरो सु विक्रयकाँर बेढत सोर विक्रयको सँम्यों ॥  
 बाजार गव्वनहार कूटछँडल संचय बिकखरयो ॥  
 करि हेम३८बनिक३हि कैद मुगलदन भेट अकबर३७१की करयो  
 राजाओं को हसता है १ ब्रह्मा के योग से अर्थात् भाग्य से २ उत्साह ३ श-  
 तद्रुनदी के पार मुगलों को उतार कर ४ बढ़ा ॥ ५० ॥ ५ नगारे ६ वह सू-  
 ख हेतु बनिया भोग भोगने में नहीं लगता तो तैमूर के पंश का एकतन्तु भी  
 यहाँ नहीं रहनेदेता ॥ ५१ ॥ ७ बनियाँ रूपी मच्छी पर ॥ ५२ ॥ ८ वह हेतु  
 नामक बनियाँ बादशाह को आया सुनकर जय लेने के लिये सन्मुख चला ९  
 सन्मुख पानीपथ में युद्ध जंचा १० तरवारों में ११ सेना १२ शस्त्र १३ सुल और  
 व्याज (तृद) १४ तराजू ॥ ५३ ॥ १५ युद्ध करनेवाले १६ पकड़ा अथवा काबू में  
 किया १७ विचारा बेचनेवाला घेरने का शोर सुनकर १८ बेचने को झूलगया  
 १९ बाजार में गर्व करनेवाला २० झूठे छेले का संचय बिकखर गया ॥ ५४ ॥

हनतो न अकबर ३७११ ताहि पै बहराम १ गुरु\* असु दै हन्यो ॥  
बलि आइ दिल्लियत गाह नाह सु साह अकबर ३७ही बन्यो ॥  
रनथंभमै पहिले रहे भट सेरसाह ३२११ सलेम ३३११ के ॥

अब राज्य अकबर ३७११के सम्हारत भीति धारत अकबरके ॥ ५५ ॥

मके १ बके २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

गढईसँ वह सामंत १८७११हड्डहि एकशतिन्ह सरनौगह्यो ॥

चलाचित्तकै सरनौशन भाइपलाइ उब्बरनौचह्यो ॥

किय बिनती तुम दुर्गरक्खहु हमहि जीवत कहिकै ॥

बलको धनी सु नतो ब अकबर ३७११दे हमै पहु बहिकै ॥ ५६ ॥

मन्नी सु सुनि सामंत १८७११संत न मोहि दुर्ग यहै मिलै ॥

गुरु ग्राम सुर्जन १९०११भूपबिनु बनि साह सुर्जनको गिलै ॥

दल भूपप्रति यह चितिकै सामंत १८७११अतिहितसौ दयो ॥

गढ अप्प रक्खहु आइ होत नतोब मिच्छनकै गयो ॥ ५७ ॥

दोहा ॥

हतपुब्बहि सुर्जन १९०११अधिप, व्याहे दुवसुत बीर ॥

बल्लनोत बनबीरकी, सुता उभय विधि सीर ॥ ५८ ॥

पुब्ब निहारहु राम २०३११प्रभु, रुचित हुती यह रीति ॥

सुद्धकुलहि इक सोधते, न धनधरा २ दृग नीति ॥ ५९ ॥

ग्रामनपति व्याही गिनि रु, भूमिपतिन छूत भूप ॥

किय सुत दूदा १९१११भोज १९११२के, उपयर्म जगरअभिरूप ॥ ६० ॥

अकबर उस हेमू को नहीं मारता परन्तु अकबर के वस्ताद बहराम ने\*चित्त देकर अथवा ताप देकर "यहां असु के स्थान में 'असि' होना संभव है जिसका अर्थ 'गुरु बहराम ने तस्वार की देकर मारा यह है' मारा फिर दिल्ली के स्थान (फारसी भाषा में स्थान जगह को 'गाह' कहते हैं) में आकर अकबर ही बादशाह हुआ १ घवराए ॥ ५५ ॥ २ किलापति ३ भागकर ॥ ५६ ॥ ४ पत्र ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५ यह रीति अच्छी लगती थी ६ भूमि और धन पर दृष्टि नहीं देते थे ॥ ५९ ॥ ७ राजाओं के होतेहुए भी ८ विवाह ९ सुन्दर ॥ ६० ॥

जेठी१लच्छी१९११नामजुन, दूदा१९११लाहिय उदार ॥  
 राजकुमारि१९११छोटी वरिय, भोजकुमार१९११जस आर ॥ ६१ ॥  
 दुजनसल्ल१९११मकीरदृढ, व्याहन सल्लेधि घेर ॥  
 सीमा पुं सीखोरकी, धाये मोधन घेर ॥ ६२ ॥  
 तीर प्रगंड१रु हत्यतलर, सहि दुय२दुर्जनसल्ल१९११ ॥  
 कुसर दुराये सो निकर, हनि सिद्धन करि हल्ल ॥ ६३ ॥  
 धीर हनें बहु धादिधर, विदुसिर इहि रनबीच ॥  
 तुलाराय२किय जस अतुल, द्विजन व्यास दाधीच ॥ ६४ ॥  
 पीछें धरि उपनाहपट, कर जोरयो कुमरेस ॥  
 प्रथित चाहुकिन इस परनि आयो साहुज एस ॥ ६५ ॥  
 कर्कनसोदन पुव१किय, पीछें यह करपट ॥  
 दूदा१९११इकदस११बरस वय, द्विजथ लये कुलदृढ ॥ ६६ ॥  
 इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठ ६ राशो वीतिहो  
 प्रवसुधेरवरबीजवपाख्यानबीजहल्लाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवं-  
 श्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानवमरव्याहार्यबुन्दीवनुधावरसुरतायासि  
 हचरित्रे दिल्लीन्द्रकुसायुसम्राजो मासपोपदेशेनामिरराजकूर्मभगवंत  
 सिंहपुत्र्या कह स्वकुताकवरपाणिमहारासंपादन१ आर्यपुत्नीभिः स-

॥ ११ ॥ १ विवाह के सलीप के समय में ॥ ६२ ॥ २ कलाई (कुहनी के ऊपर का भाग) और हथेली पर दो पाण लटकर ३ गाँछों के सह्र को छुड़ाया ॥ ६३ ॥ ४ पाठावतियों का। इस युद्ध में धीर ने बिना अस्तक होकर घड़ियों को सारे जिसका अत्यन्त यश दाधीच वंश को ५ द्वालाउ तुलाराज ने किया अर्थात् उसने इस युद्ध का काव्य रचा ॥ ६४ ॥ ६ पांटा (पाच सिदामे का उपचार) दाधकर दुसर ने हथलेवा जोड़ा ७ प्रसिद्ध ॥ ६५ ॥ ८ कंकणडोरका पहिजे खोला और ९ पाच के पाट को पीछे खोला ॥ ६६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वजनों के छठे राशि में अग्निपंथी राजाजों का व्याख्या के बीज हलाधिराज अरिपताल के वंश और वंश के पीछे के वृत्तान्त की व्याख्या से वर्तनीय बुन्दी के मृपति सुरजन के चरित्र में दिल्ली के बादशाह हुमायों का इराक के बादशाह सासप के उपदेश से आमेर के राजा भगवन्तासिंह कछवाहे की पुत्री से अपने पुत्र अकबर का विवाह करना;



हास्य यवनप्रथमपाणिग्रहणावसरस्य समर्थन २ पुस्तकालयाद्वप-  
तितहुमायुमरणोऽकबरसाम्राज्यासादन ३ बुन्दीन्द्रसुरजनस्य केश  
रखानडागखानविजयनेन कोटाराज्यस्य पुनर्बुन्दीराज्यसंमिश्रणा ४  
अग्रवालवंश्यहेमूवैश्यस्य मुगलयवनान् शतद्रूपरतीरमुत्तार्य दिल्ली-  
सिंहासनारोहणा ५ पानीपथसमरबद्धहेमूवैश्यस्य बहरामविहितवधेऽ-  
कबरस्य दिल्लीपतित्वासादन ६ बुन्दीन्द्रसुरजनज्येष्ठसुतदुर्जनसाल  
स्य गोप्रहणयुद्धक्षतावस्थायां पाणिग्रहणकथनं चतुर्थो मयूखः ॥४॥

आदितः सप्ताशीत्यधिकशततमो मयूखः ॥ १८७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इम ग्रामनपति अंगजा, पुत्तजुंग २ हि परिनाइ ॥

सुता नृपन सुर्जन १६०१ समय, अब व्याहहिं अधिकाइ ॥ १ ॥

इकखहु पै प्रभु राम २०३१४ यह, सिसु बय दुर्जन १९११ सल्ल ॥

सन्नह सोलह १६१७ सकसमय, बह्यो विजय मूध मल्ल ॥ २ ॥

रायमल्ल १९१३ सिसुतर रहत, इम यह अबहि अनूढ ॥

वयग्यारह ११ नवक्रम वरस, बुध भ्राता जुग २ व्यूढ ॥ ३ ॥

आर्यों की पुत्रियों का यवनों से विवाह होने के इस प्रथम अवसर का सम-  
र्थन करना, पुस्तकालय की छत के ऊपर से गिरकर हुमायों की मृत्यु और  
अकबर के बादशाह होने का कथन, बुन्दी के राजा सुरजन का केशरखान  
और डागरखान को जीतकर कोटा को फिर बुन्दी के राज्य में मिलाना, हेमू  
नामक अग्रवाला वंश के वैश्य का मुगलों को शतद्रु नदी के पार उतार कर  
दिल्ली का बादशाह होना, पानीपथ के युद्ध में पकड़े हुए हेमू को बहराम के  
मारने पीछे अकबर का दिल्लीश होना, बुन्दी के पति सुरजन के बड़े पुत्र दु-  
र्जनसाल का गौआँ को छुड़ाने के युद्ध में घायल अवस्था में विवाह करने की  
कथा का चौथा मयूख समाप्त हुआ ॥४॥ और आदिसे एकसौ सत्तासी मयूख  
हुए ॥ १८७ ॥

१ ग्रामों के ठाकुरों की पुत्रियाँ २ दोनों पुत्रों को व्याहकर ॥ १ ॥ ३ युद्ध कर-  
नेवाला मल्ल ॥ २ ॥ ४ बिना विवाह ५ विवाहे ॥ ३ ॥

किय अकखय १८९१ सोदर कुमति, आगैस तब अवनीस ॥

इम दिय इक १ नवताड़ इहिं, तजि पट्टनि १ मुख तीस ३० ॥४॥

बुंदीपति बनिवे बिमति, यह रनथंभ उदंत ॥

दिय दिल्लिय किय जोहिदढ, मत सुर्जन १९०१ सामंत १८७१ ॥५॥

सांघिबिग्रहिक सचिवसुत, हो दिल्लिय तब हेम ॥

लहिपिहित सुअकखय १८९१ लिखित, पठयो तिहिं पति प्रेम ॥६॥

लै पट्टनिसुख छंद सु लिखि, अकखय १८९१ सोदर अंत्य ॥

अपिय नृप नवताड़ इक १, तजि बिसासपन तत्थ ॥ ७ ॥

हुँन्यो निलयकोन सु दुमैन, लै अकखय १८९१ यह लज्ज ॥

मर्यो अरहि न दिखाइ मुख, खावन न लहि अखज्ज ॥ ८ ॥

तस पत्निन जेठो तनय, पट्ट दयालु १९०१ खिन पाइ ॥

पटक्यो बुंदिय नृप पयन, प्रमुदित निर्यत पढाइ ॥ ९ ॥

पट्टनि तदपि दई न पहु, इत १ चउ ४ ग्रामहि अपि ॥

सालहरा १ तारज्ज २ सह, थिर परस्तैट दिय थपि ॥ १० ॥

षट्पात ॥

चितिय नृप नयचर्तुर पुनिहु जिन राम १८९१ पलाटिय ॥

इतर बंधुकुल अयन खोइ नृपपन कै खटिय ॥

इम अकबर ३७१ आतंकगंजि नभ दृग सोलह १६२० सम ॥

अस्वखैर्व आरूढपति चउसत ४०० बिसास प्रेम ॥

लै भूप अद्रिसिर छत्र लैहु पहुँचन हुँत करवाइ पथ ॥

रनथंभ प्रविसि अद्दी १ रजनिवेलिय जवन बिसासि अथ ॥ ११ ॥

१ अपराध २ ग्राम का नाम है ३ पाटण आदि तीस ग्राम छोडकर ॥ ४ ॥ ४

मूर्ख ५ वृत्तान्त ॥ ५ ॥ ६ सन्धि और विग्रह करनेवाला ७ छाने ॥ ६ ॥ ८ पत्र

९ यहां ॥ ७ ॥ १० छिपा ११ घरके कोने में १२ उदास १३ शीघ्र ही १४ अभिदय

नहीं खाया ॥ ८ ॥ १५ प्रसन्न मन से १६ निश्चय ॥ ६ ॥ १७ चामल नदी के

परले किनार ॥ १० ॥ १८ नीति चतुर १९ अन्य २० बन्धु कुल का घर २१ अ-

कबर के भय को दवाकर २२ छोटे घोड़े पर चढ़कर २३ चार सौ पैदल २४

परम विश्वासवाले के साथ २५ शीघ्र २६ शीघ्र ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

दुर्गअधिप सामंत १८७११ दृढ, जवन हुते बस जास ॥  
तिन जुत मुख्य अजीम तिन्ह, प्रैनम्यो तँहँ पहुपांस ॥ १२ ॥  
अखिखय विन्नति अगहि अग, निजभुव हमहिँ निकासि ॥  
अहँ कछु रक्खि रु लखि अभय, भेजहु घर हितभासि ॥ १३ ॥  
॥ षट्पात् ॥

तिन्ह सुर्जन १९०११ तब कहि अगहि अग मग निज आश्रय ॥  
ऊमरथूनाँ अत्थदये छिपिरहंन महासंय ॥  
इक १ वरसलग अवधि निखिल रक्खे तँहँ निर्भय ॥  
पुनि अवसर तिन्ह परस्य पिहित पठये जनाइ जय ॥  
मिलि तेहु सिकंदर ३६११ कुल मुदित जानतहुव अव आहि जिय ॥  
गहि इत नरेस रनथंभगढ क्रम प्रसन्न सामंत १८७११ किय ॥ १४ ॥  
दोहा ॥

गहिय भूप मम गेह गढ, थित जोलोँ रनथंभ ॥  
किल्लापति सामंत १८७११ कुल, थिर तोलोँ पनथंभ ॥ १५ ॥  
इम सामंतहिँ तँहँ अधिप, अप्पि दुर्ग अधिकार ॥  
लखि संचित सम्मद लहो सब जुझन संभार ॥ १६ ॥  
॥ षट्पात् ॥

भूप सकल भंडार खुलि संचय पिकखन खिन ॥  
अतसी १ कोद्वै २ आदि अन्न निरखे हड्ड ११ न डन ॥  
तैल १२ मधु २ रु सन तूल २ गंज वारूद १ रु गोलेन २ ॥  
संभृत वस्त्र १ रु सस्त्र २ मुहुर १ रुपय २ कितेहि मन ॥

१ नमस्कार किया (भुका) ॥ १२ ॥ पहिले ही विनति की २ पर्वत अर्थात् इस  
रणतभँवर के पर्वत से हमको बुन्दी की भूमि में निकालकर वहाँ ३ कुछ दिन  
रखकर ४ हित का प्रकाश करके घर भेजा ॥ १३ ॥ तब सुरजन ने उन को पर्वत  
के मार्ग से वृत्तों में अपना आश्रय देकर निकाल दिया ५ महाशय ने ६ एक वर्ष  
पर्वत ७ समको रक्खे = घर ९ छाने भेजे १० हैं ॥ १४ ॥ ११ प्रतिज्ञा का धर्म  
॥ १५ ॥ १२ युद्ध करने की सामग्री देखकर ॥ १६ ॥ १३ देखने के समया १४ अलसी  
(धान्य विशेष) १५ कोदू (धान्य विशेष) १६ दाडों के राजा ने १० रु १२ भरे हुए

कनकादि धातुअघटित संकल इतिमुख चिरतनशनव्यश्रव ॥  
 गुड़१आज्य२श्लवन३पशु४खाद्यर्गन सुमन१जवा२दिक धान्य सब १७  
 दोहा ॥

सोरा१गंधक२शाल३सह, इम नाना उपहार ॥  
 निजगढ कोस खुलाइनृप, देखे अखिल उदार ॥ १८ ॥  
 अतसी संभृत कोस इक१, देख्यो ताबिच दोइ२ ॥  
 कर्मन विष्णुप्रतिमा कढी, हड्ड६१लई नतं होइ ॥ १९ ॥  
 प्रतिमा जे बुंदीपुरहि, पुनिभेजहिं महिपाल ॥  
 मन्निय मोद गिनाइ गढ, तिसत३००नौलिचउ४ताल ॥ २० ॥  
 वेताल ॥

चहुवानराज दुराइ, चामर थान लिय रनथंभ ॥  
 मुनि ओदके चहुँ४ओर सात्रवै आनि सत्व अछंभ ॥  
 सामंत१८७१को करि दुर्गसासक स्वीय सो गढ सज्जि ॥  
 दिल्लीस चित्त खटाकि दब्बिय ग्राम चउसंत४००गज्जि ॥ २१ ॥  
 बुंदी१रु पट्टनि२तव दये सुत दुजनसल्ल१९११हिं सूर ॥  
 पुनिद्वैरहि दिय लखैरि१ खटपुर२भोज१९११हित बसुपूर ॥  
 सिसु रायमल्ल१९१३हिं त्योंहि अप्पि पलहायथ१रु संगोद२ ॥  
 रनथंभअप्प बली रह्यो करि स्वीय भुव चहुँ४कोद ॥ २२ ॥

१ स्वर्ण आदि २ बिना घड़ीहुई ३ इत्यादि बहुत समय की थी और अब नवीन  
 ४ घृत ५ पशुओं के खाने के पदार्थ ६ गोहूँ ॥ १७ ॥ ७ नाना प्रकार की सामग्री  
 ॥ १८ ॥ ८ अतसी धान्य से भराहुआ भण्डार देखा जिसमें विष्णु भगवान्  
 की ९ सुन्दर दो मूर्तियां निकली १० झुककर ॥ १९ ॥ ११ तोपें ॥ २० ॥ १२ डूरे  
 १३ जगु १४ पराक्रम में \* आश्चर्य करके ॥ २१ ॥ १५ धनसे पूर्ण १६ चारों दिशा

\* मेवाड़ के इतिहास में रणतर्भर का गढ चित्तोड़ के आश्रित होना लिखकर राव सुरजन को उसका  
 किञ्जेश्वर करना लिखा है यही वार्ता कर्नल टॉडने 'टॉडराजस्थान' में भी लिखा है और महाराणा रत्नसिंह  
 के समय रणतर्भर चित्तोड़ के आधीन था जिसकी साक्षी तुजकवावरी से भी होती है राव सुरजनने अप  
 ने लाभ करके महाराणा को यह गढ अकबर को दे दिया जिसकी निन्दा टॉडराजस्थान में बहुत लिखी है।

सुत भोज १९१।१ खटपुर बास करि तब किय स्वदेस सम्हारि ।  
 पगि प्रीति अग्रजसों मिले बुंदीहु कवहु पधारि ॥  
 ही बल्लनोति जु भोज १९१।२ की कुमरानि रूपविहीन ॥  
 निज भूहु इच्छन ही सु कज्जलकी रचै सु नवीन ॥ २३ ॥  
 बहिनी बडी ढिग जो रहै तिहि लेन खटपुर बुल्लि ॥  
 बुंदीहु आइ रु जाइ बलि तिय मैं हिय हित तुल्लि ।  
 भनि इच्छ रति प्रजावती बुंदीहि रक्खहि भोज १९१।२ ॥  
 आधान रत्न १९२।१ कुमारको रहिहै तबहि अति ओज ॥ २४ ॥  
 सूचकन सूचित सूचना सुनि साह सुजन १९०।१ सीस ॥  
 चढि दुर्ग जितन चितयो इहि, अखि बुंदियईस ॥॥  
 इहिबीच बत्त सुनी अधानक दुसह कछिय दोरि ॥  
 गुजरात हाकिम गर्वगंजत वित्त देस बिलोरि ॥ २५ ॥  
 भगवंत तब आमैरभूपति पुब्व तत्थ पठाइ ॥  
 बहुरयो सुन्यो वढतोहि बिग्रह नैर अहमद नाइ ॥  
 पठयो सु मानकुमार तस पुनि सहसदस १०००० दल सत्थ ।  
 सुत आत सुनि अरिसीसही तस तात रुकिगय तत्थ ॥ २६ ॥  
 मिलिकै पिता सुत २ द्वैस्तहै मद मंद कठिन मारि ॥  
 गुजरात हाकिम पै लगाइ मुरे परस्मय गारि ॥  
 करजोरि हाकिम मानकुमार सु रक्खयो कछुकाज ॥  
 चितोर चितिय रानतै मिलिवोहि कूरमराज ॥ २७ ॥  
 इहिआत सुनतहि रान उदयहु प्रांत बंधु पठाइ ॥

की भूमि को अपनी करके ॥ २२ ॥ १ बिना रूपवाली २ एक और नहीं था  
 सो काजल का बनाती थी ॥ २३ ॥ ३ भोजाई कथन करके भोज को अकरा-  
 यि बुंदी में रक्खेगी ४ गर्व ५ बडा प्रतापी ॥ २४ ॥ ६ सूचना करनेवालों की  
 की हुई सूचना ७ काठी लोग दौगकर गुजरात के हाकिम का घमण्ड मिटाते हैं  
 ८ मधकर ॥ २५ ॥ ९ आमैर के राजा भगवन्तसिंह के पुत्र मानसिंह की १० उ-  
 स मानसिंह का पिता ॥ २६ ॥ ११ जूझ काठियों का घमंड नारकर १२ बहुरो  
 या गर्व मिटाकर ॥ २७ ॥ १३ महाराणा उदयसिंह ने सीमा तक अपने भाईको

पहुगम्य सीमहु आइ प्रविसत अप्प गो अलसौइ ॥  
 निज रीतिपथ मिलि द्वैरहि नृपचित्तोर आये चाहि ॥  
 प्रविसाइ डेरन कुम्भमपहु गय रानरहित अवगाहि ॥ २८ ॥  
 तिहिंजाइ दुर्ग बिसेस स्वागत दै कही गुरु ताहि ॥  
 जेलौ गये तिन्ह तत्थ जंपिय अप्प गौरव आहि ॥  
 हमरे नरेस कह्यो बडोदिन आत कूरम अज्ज ॥  
 तुमहूबिचारि सु प्रीति तक्कहु यौ रहै सम अज्ज ॥ २९ ॥

रमअज्ज १ समअज्ज २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

महिपाल उदय कहाइ दिय तुमको बडे नृप मानि ॥  
 बल ईस अकबर ३७ ३ तै बचावहु अप्प इत हित आनि ॥  
 सुनि एह हुव भगवंतके कटि प्रार्थ फुल्ल समान ॥  
 रतिकौ दिखाइ कह्यो बडे निजधर्म रच्छक रान ॥ ३० ॥  
 तनया दई अपनी सु विधि तकि चाह मन्निय चित्त ।  
 सीसोदहू अब दैन संतति मोहि मन्नत भित्त ॥  
 इम जानि रान निकेत जाइ रु कुल बडे कछवाह ।  
 एकांत अक्खिय हमहु हेरत चित्तसौं हितचाह ॥ ३१ ॥  
 सुनि रान उत्तर ना दयो कछु जोध बोधेक सोधि ।  
 बढती कही भगवंत त्योंहि गिनी महत्तव प्रबोधि ।

भेजा और वह राजा भी १ जब जान योग्य सीमा में पहुँचा तब आप २ आलस्य करके गया अर्थात् बादशाहों के संबंधी होने से अग्रगामिता उत्साह पूर्वक नहीं की ३ कछवाहे राजा को डेरों में पहुँचाकर ४ हित का थाह लेकर ॥ २८ ॥ ५ आये का आदर करने की सामग्री देकर अपने मनुष्यों को भेजे जिनने जाकर कहा कि आप बडे हैं और हमारे राजा (महाराणा) ने कहा है कि ६ कछवाहे के आने से ७ आज बडा दिन हुआ ८ बराबर आर्यपन ॥ २९ ॥ ९ नितंब फूल गये "धमण्ड पूर्वक प्रसन्न होने में यह लोकोक्ति है" १० प्रीति दिखाकर ॥ ३० ॥ भगवंतदास ने जाना कि मैंने मेरी पुत्री बादशाह को विवाही जिसकी चित्त में चाहना करके राणा भी अपना संतान बादशाह को देना चाहता है ११ राणा के घर में जाकर ॥ ३१ ॥ १२ कुछ समराव समझा देंगे यह जानकर राणाने उत्तर नहीं दिया १३ बढप्पन जना

सह असन खिन पुनि कुम्भ अखिय रान बैठहु सत्थ ॥  
 तब उदय जंपिय अज्ज मम व्रत इक्ख भोजन तत्थ ॥ ३२ ॥  
 भगवंत आखिय भोनेभो व्रत इक्खोरहु अप्प ॥  
 दुत रानके भट सु सुनि बुलिय रक्खि निज कुल दप्प ॥  
 तुम संग भोजन हमहु न करहिं दूर रान उदंत ॥  
 दिल्लीसकाँ दुहिताँ बिबाहतहो बडे कुल हंत ॥ ३३ ॥  
 देखो इहाँ असगोत्र सुभटन रान पुत्रिय देत ।  
 हमहु नदेहँ अप्पघरँ अब जानि सुगलन हेत ॥  
 यह सुनत कूरम छिज्जि मन खिजि छोरि भोजन उट्टि ।  
 चलतैं चवी इत मान आवहिं तिहिं न सूत्रहु तुँट्टि ॥ ३४ ॥  
 चवि एह कूरम रुड्डिगो प्रतिकूल गिनि चित्तोर ।  
 जिहिसंक अज्जनखंड सो लाखि हो ब अकबर ३७११ जोर ॥  
 कछवाह नृप इम ठानि गो इन्ह दर्प नासन कज्ज ।  
 सुत तास मानहु सोहि सुनि मिलिबेहि आयउ सज्ज ॥ ३५ ॥  
 भगवंततैं जुहि बत्त हुव सुहि मान सुनि मद भार ।

कर १ साथ भोजन करने के समय कछवाहे ने राणा से कहा कि शामिल बैठो ३ उदयसिंह ने कहा कि आज मुझको एकासना है ॥ ३२ ॥ ४ भगवन्तसिंह ने कहा कि अकबर न हुआ न हुआ इससे अकबर को छोड़ दो ५ अपने कुल का दर्प (धमंड) रखकर ६ राणा के भोजन करने का वृत्तान्त तो दूर रहा हम भी आपके शामिल भोजन नहीं करते ७ पुत्री = खेद है ॥ ३३ ॥ ८ असगोत्र उमराओं को ९ आपके घर में हम भी पुत्री नहीं देंगे १० चलते समय कहीं ११ इस बात से प्रसन्न होकर ॥ ३४ ॥ १२ चित्तोड़ को विरुद्ध जानकर १३ आर्यावर्त पर जिसका भय है तिस अकबर का जोर अब देखोगे ॥ ३५ ॥ जो वार्ता भगवन्तसिंह से हुई वही भगवन्तसिंह के पुत्र \* मानसिंह से हुई सो

\* यह कथा महाराणा प्रतापसिंह के समय की है उदयसिंह के साथ इस कथा का होना भ्रम से लिखा जाना प्रतीत होता है, उदयपुर से तीन कोश के अन्तर पर पूर्व दिशा में उदयसागर नामक तालाब की पाल पर यह वार्ता हुई थी अर्थात् सम्वत् १६३० के प्रथम आपाठ में महाराणा प्रतापसिंह और आमेर के कुमार मानसिंह से भोजन के कारण विरस हुआ जिसकी कथा जयसिंहचरित्र नामक जयपुर के इतिहास में भी लिखा है और अकबरनामे में भी इसकी साक्षी है, और टाडराजस्थान, व-मेवाड़ के इतिहास में तो विस्तार पूर्वक है ।

तुमरी कनी जवनी करौं इम उड्डिगो कहि तौर ॥

सुनि रान बीर गये मनावन मानकुमरहि सुद ॥

तोहु न मन्नि कुमार गो तिम करन अकबर ३७११ कुद ॥ ३६ ॥

मिलि वप्प १ सुत २ जुग २ वंधि अक्खिय साह प्रति अतिमान ॥

रनथंभकौं तजि पुब्ब कंटक बेग दब्बहु रान ॥

सुनि स्वसुर १ सालक २ वत्त अकबर ३७११ ह्वै बली तिन्हसंग ॥

चित्तोर गंजन रुडि चछिय चक्रलै चतु ४ रंग ॥ ३७ ॥

सुरतान १ ८९११ तोपनसंग दै लक्खेरिमंग गय साह ॥

तिहिं मूढ चिंतिय साह तोपन लैन बुंदिय लाह ॥

जिहिं बाम सुरि भगवंतगढ सन दूर सुर्जन १ ६०११ जानि ॥

दल १ देसको कपतानकौं दिय लोभ परधन दानि ॥ ३८ ॥

सब तोप बाम मुराइ इम कपतान १ सुत सुरतान २ ॥

अतिलोभ बुंदिय लैन आयउ मन्नि नृपपन मान ॥

हो राम १ ८६१३ सुर्जन १ ९०१२ भ्रात बुंदिय सोहु तच्छलै हेरि ॥

सब हड्ड ६१ लै रु भिरयो समी धिय रति खगन खेरि ॥ ३९ ॥

तहैं सो सक्यो न सम्हारि तुंदहु रतिरन सुरतान १ ८९११ ॥

सठ निडिनिडि घंसीटि तोपन भजिगो बिनु भान ॥

पहिलै १ ८७११ जु मेव गुढा बसायउ तत्थ जाइ परंत ॥

बह राम १ ८९१३ तत्थहु गो अचानक हंकि हड्ड ६१ न हंत ॥ ४० ॥

दूजो २ दयो रतिवाह पुनि तहैं जाइ राम १ ८९१३ उदार ॥

सुरतान १ सह कपतान २ भेजिगय छोरि सब संमौर ॥

सुनकर १ तुम्हारी पुत्री को मुसलमानी करुंगा इसप्रकार २ उच्चस्वर से क-

हकर उठगया ॥ ३६ ॥ १ चतुरङ्गिणी सेना लेकर ॥ ३७ ॥ ४ कप्तान को आ-

धा देश देने का लोभ देकर सुरताणसिंह ने पीछी लुन्नी लेना चाहा ॥ ३८ ॥

५ राजापन का मान करके ६ उस वा उसके छल को देखकर ७ युद्ध में रा-

त्रि के समय ॥ ३९ ॥ ८ वह सुरताणसिंह बड़े पैर को नहीं सम्हाल सका ९

रात्रि के युद्ध में १० बिना ज्ञान ॥ ४० ॥ ११ सब सामान छोड़कर



पहिलैं १ समीधिय लुटि लिय बिजुतोप कछु बैसु ब्रांत ॥  
 दूजैं २ युद्धा रतिबाह देत भज्यो सब तजि भात ॥ ४१ ॥  
 सुरतान १ तैं कपतान २ हू खिजि भिन्न भो तजि संधि ॥  
 बलकेर तोपन आदि सब बसु राम १८९।३ लिय जय बंधि ॥  
 दूख तोप १ सकंट २ न जोरि जवनन लुटि बैभव बीर ॥  
 धरि अगंग राम १८९।३ सबै लिवायसु पंत बुंदिय धीर ॥ ४२ ॥  
 सुरतान २ ओ कपतान २ खिजि उत होइ सनुसमान ॥  
 अतिनेह बंटन रंग लागिय माँहिँ माँहिँ अमान ॥  
 कपतान १ अखिखय मूढ तव सत मनि मैं हुव कूर ॥  
 सुरतान २ अखिखय जित्तिआवहिँ अबहु अप्पन सूर ॥ ४३ ॥  
 उत होत भूँट राम १८९।३ इत सब लुटि बुंदिय आइ ॥  
 भट मुख्य बुँलि रु बुद्धयो करतव्य को अब भाइ ॥  
 तिन कहिय अकबर ३७।१ की चमूसनं प्राण लैं लिय तोप ।  
 कैलि जित्ति तिन्ह उपहार इतरहु लैं लये अतिकोप ॥ ४४ ॥  
 सुरतान १८९।१ मान हरयो जु अप्पन सो न सहि सुलतान ॥  
 मुरिआइहैं चितोर तजि इत असन अप्पनमान ॥  
 जवनेस अगंग कितीक बुंदिय कोन अप्पन जोर ।  
 मुरिआइ लारि सुरतान १८६।१ कौ पुनि करहिँ हड्ड १ न मोर १४५।  
 नरनाह है रनथंभ ईम हम तुमहिँ गिनि नरनाह ।  
 सुभ कहत न गिनहु अप्प जय प्रभु गिनहु अकबर ३७।१ साह ॥  
 सब अप्पि बृख १ गनजुत तोप २ न आदि दिहिय साँज ॥

१ युद्धमें २ धन का ३ समूह ॥ ४१ ॥ तोपों के चरखों में ४ वृषभ जोतकर ५ युद्ध में गया ॥ ४२ ॥ हे मूर्ख तेरी ६ सलाह मानकर ॥ ४३ ॥ ७ विवाद ८ मुख्य उद्योगों को बुलाकर कहा कि ९ अब क्या करना चाहिये १० सेना में प्राण तोपों ही धी सो लेली ११ युद्ध जीतकर उनकी अन्य सामग्री भी लेली ॥ ४४ ॥ १२ बादशाह नहीं सहन करके १३ हाडों का मुकुट करेंगे ॥ ४५ ॥ १४ इसकारण १५ पैलों के समूह सहित १६ सामग्री

कपतान बुल्लि रु ठानि स्वागत भेजिये हितकाज ॥ ४६ ॥  
 इत साह अकबर ३७११ क़ुद हुब सुरतान १८९१ कृत सुनि एह ।  
 नृपभात राम १८९१३ हु बुल्लि इत कपतानसन किय नेह ॥  
 सब तोप १ बैल २ न जुत समप्पि रु भुजनधरि जय भार ।  
 कपतानकों कछु द्रव्य दैकिय स्वीय परबन्धकार ॥ ४७ ॥  
 किय अरज नालिन लै रु जानहि साहसन कपतान ।  
 सुरतान १८९११ मूढ नहै यहै बूंदीस भात समान ॥  
 तिहिं राम याहि भजाइ लै पुनि मोहि अप्पिय तोप ॥  
 याको विसास अहोन अब इस करत कालहु कोप ॥ ४८ ॥  
 दिन्नौ बिडारि इतीहि गिनि दृढ साहनें सुरतान १८९११ ।  
 सु गयो मऊ बलि रायमल्लहिं मन्नि रक्खन मान ।  
 जवनेस इत चित्तोर जाइ रु विंटयो बहु वीर ॥  
 धुर रान कहि रु अंकुरे गढकेहु प्रतिभट धीर ॥ ४९ ॥  
 जयमल्ल १ मेरतिया पता २ सीसोद ए दुव २ जोध ।  
 गरै बंधि निज चित्तोरगढ विँफुरे चखाइ विरोध ॥  
 कतिदुर्गबाहिर गुल्म हे तिनकों सम्हारनकज ॥  
 करि अन्य बेस निसा कडे सह दैरहि गढपति गर्ज ॥ ५० ॥

दोहा ॥

निकसि पता १ जयमल्ल २ निस, बाहिर विक्खि प्रबंध ॥  
 सत्य अलप आवत समय, सवरन मिलिय सुसंध ॥ ५१ ॥  
 मिलन मझ साह भट, जे छैनें गढ जात ॥  
 वेढिलये लुंटाकें बनि, चापन प्रदर चलात ॥ ५२ ॥

॥ ४६ ॥ अपने १ ज्ञानुओं को मारनेवाला किया ॥ ४७ ॥ २ तोपें ॥ ४८ ॥ ३  
 मुख्य ॥ ४९ ॥ ४ चित्तोड़गढ़ को अपने गले से बांधकर ५ क़ुपित हुए ६ सेना  
 के हुकमे ७ गर्जना करके ॥ ५० ॥ ८ भीलों से मिले ९ ओठ प्रतिज्ञावाले  
 ॥ ५१ ॥ भीलों ने इनको बादशाह के बीर जाने १० गुप्त ११ लूटनेवाले होकर  
 घेर लिये १२ धनुष से बाण चलाते ॥ ५२ ॥

अक्खिय तँहँ जयमल्ल१ इम, हित मरिबो कित होइ ॥  
 पतार कहिय उत१ जम प्रचुर, धन इतर देहु धकोइ ॥ ५३ ॥  
 को हो तुम सबरन कहिय, सुनतहि यह संलाप ॥  
 किम उत१ इतर संकेत किय, अंगमि सरनहु आप ॥ ५४ ॥  
 होहु निडर छिग आत हम, पहिलै स्वमत प्रकासि ॥  
 बहुरि देहु आयुध१ वसन२, तुम यह संसय त्रासि ॥ ५५ ॥  
 जाइ निकट इम अक्खि जिन्ह, परिचित कछु पहिचानि ॥  
 निजरच्छक मन्नें निडर, जुगरहि दुर्गपति जानि ॥ ५६ ॥  
 पानि जोरि प्रत्युत प्रनमि, मंतु तु छमन छमाइ ॥  
 जंपिय हम जानें जवन, जिन गढ भेदन जाइ ॥ ५७ ॥  
 तिन्ह किंकर पछिताइ ते, अरज भिल्ल इम अक्खि ॥  
 गढलौ पहुँचावन गये, रंच न मन भय रक्खि ॥ ५८ ॥  
 दुर्गपतिन तब दुर्गके, दक्खिन२ दिस लधुँ द्वार ॥  
 बाहिर चोकी तेहि बुध, हसिकिय रक्खनहार ॥ ५९ ॥  
 बारह१२ हायन कति बढत, गँदित त्रि३ चउ४ कति ग्रंथ ॥  
 भो चिरँ घेरा हम मनत, पै न मिल्यो गढपंथ ॥ ६० ॥  
 अनुचर इक जयमल्ल जँहँ, आगसँ कछु अनखाँइ ॥  
 करन१ सिंघिनी२ हीन करि, नापित दिय निकसाइ ॥ ६१ ॥

१ बहुत ॥ ५३ ॥ २ भीलों ने कहा ३ यह बोलना सुनकर ॥ ५४ ॥ ४ पहिले अपना विचार कहो ५ सन्देह मिटाकर ॥ ५५ ॥ ६ कुछ जानेहुओं को पहिचान कर ॥ ५६ ॥ ७ उलटा नमस्कार करके ८ वह अपराध से स्वार्थों से जसा कराके ॥ ५७ ॥ ९ उनके सेवक ॥ ५८ ॥ १० दक्षिण दिशा के छोटे द्वार पर "चित्तोर-दुर्ग के दक्षिण में कोई द्वार नहीं है यह छोटा द्वार उत्तर दिशा में है जिन को लाखोटा की घेरी कहते हैं" ११ चतुरों ने ॥ ५९ ॥ १२ कितने ही लोक चारह वर्ष तक सुख होना कहते हैं और कितने ही अन्य तीन चार वर्ष १३ कहते हैं परन्तु हम (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि १४ बहुत समय पर्यन्त ऐसा रहा ॥ ६० ॥ १५ एक सेवक पर १६ कुछ अपराध से १७ क्रोध करके कान और १८ नासिका काटकर उस नाई को निकाल दिया था ॥ ६१ ॥

पारि मेल जिहिँ साहप्रति, अति बसु दिय सु अवेरि ॥  
 बिगरायउ रुचि भेद विधि, गढजल गोपल गेरि ॥ ६२ ॥  
 दुर्गाधिप जानि सु दुरित, अररहि प्रात उधारि ॥  
 बैस मरन समुचित वनै, फोज परन रन फारि ॥ ६३ ॥  
 गढ सम्हारि गढपति प्रगुन, अद्वी रजनि अनेह ॥  
 इक १ गवकख बैठे उभय २, सुँडा पिबन सनेह ॥ ६४ ॥  
 जिहिँ दिन गिनिय अपेयजल, तास निसीथ हु तथ ॥  
 दिय दिखाइ बैठे दुवहि, नापित बिरचि अनर्थ ॥ ६५ ॥  
 जरीबैसन रुचि जगमगत, मुख्य सु गिनि जयमल्ल १ ॥  
 पल्लेकी आरिय तुपक, साह निर्गमपथ सल्ल ॥ ६६ ॥  
 पट्टे निजतोप चलाक प्रति, दिय कैतिकहत निदेस ॥  
 होहु किमहु जिसतिम हन्यौ, जयमल्ल सु जवनेस ॥ ६७ ॥  
 मेरतिया १ अकिखयमरत, विदित प्रताप २ बकारि ॥  
 कढहु प्रात तवलैकढहु, वैपु मम गज बैठारि ॥ ६८ ॥  
 बिरचि निर्गल द्वारबुध, बिधि सुहि सखि विद्वान ॥  
 जयमल्लहिँ गज थपि जिन्ह, परदलै किय प्रस्थान ॥ ६९ ॥  
 दुजन सुँधि न परन दियउ, मरन निसहि जयमल्ल ॥

१ द्यूत धन दिया जिसको इकट्ठा करके, गढ के जल में २ गौओं का नाँस डलाकर भिगड़ा डाला ॥ ६२ ॥ ३ किल्लादार ने ४ वह पाप जानकर ५ प्रभात ही बिबाद खोलकर ६ मरने के उचित पौसाक (कसरिया) करके ॥ ६३ ॥ ७ विशेष गुणवान् = आधी रात्रि के समय ८ एक झरोखेमें दोनों बैठे ९ मद्य पीने को ॥ ६४ ॥ ११ पानी को नहीं पीने योग्य समझकर उसी आधी रात्रि को १२ नाई ने अर्थ करके दोनों को बैठे दिवाये ॥ ६५ ॥ १३ जरदोजी के बन्धों की कान्ति १४ दूर पर लगनेवाली १५ बन्दूक चलाई १६ वेद सार्ग के १७ लाल बादशाह अफसरने ॥ ६६ ॥ १९ कितने ही कहने हैं कि १८ चतुर अपने तंग चलानेवाले को आज्ञा दी ॥ ६७ ॥ २० आमेर के राजत पत्ता से मेड़गिना जयमल्ल ने मरते समय कहा २१ गैरे झरोखे को हाथी पर बैठाकर ॥ ६८ ॥ उस जगिन ने २२ द्वार खोलकर २३ प्रभात समय में २४ शत्रुओं की सेना पर प्रस्थान किया ॥ ६९ ॥ शत्रुओं को २५ खबर नहीं होने दी ॥ ७० ॥

जान्यौ तव बचि अब जुग२ हि, आवत विरचि उभल्ल ॥ ७० ॥

जिहिं निस मृत जयमल्ल जँहँ, सो जुग२ \*जामहि सेस ॥

नटन१ गानश्वादन३ निचित, बिलसियं सुमह बिसेस ॥ ७१ ॥

हिसेस१ बिसेस२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

देखि तवहि बहु दीपिका, निजगढ उच्छव जानि ।

साह कबंधहिं सँहरन, माँघ जतन लिय मानि ॥ ७२ ॥

अबकुणैप३हिं बैठारि इभँ, पातहि निकसि प्रताप२ ॥

मथि अनीक सुगँलैसको, इम तिलतिल हुव आप ॥ ७३ ॥

तँहँ पम्मार असोकसुत, बिंभोलीपति बीर ।

इक१ घरी सिरबिनु अरघो, मारि परघो बहु मीर ॥ ७४ ॥

अकबर पहुँ किन्नौ अमल, चढि तव गढ चित्तोर ॥

गढ पुनि कुंभिलमेरु गय, उदय प्रतीची ओर ॥ ७५ ॥

\* दो प्रहर राजि बाकी रहते १ रचकर ३ अष्ट उत्सव भोगा ॥ ७१ ॥ बादशाह ने १ राठोड़ जयमल्ल को मारने का पत्तन २ भूटा माना ॥ ७२ ॥ ३ सुई जयमल्ल को ४ हाथी पर बिठाके ५ बादशाह की सेना को मथकर ॥ ७३ ॥ ६ बादशाह के अमीरों को मारकर ॥ ७४ ॥ ७ \* मधु = उदयसिंह पश्चिम दिशा में कुम्भलगढ गया ॥ ७५ ॥

\* दिल्ली के बादशाह अकबर का चित्तोड़ पर चढ़ाई का पूर्ण विचार देखकर महाराणा उदयसिंह के छोटे पुत्र सतिशंह ने जो महाराणा की अपसन्नता के कारण पहिले से बादशाही सेना में चलागया था अकबर को छोड़कर चित्तोड़ में आकर महाराणा उदयसिंह से बादशाह के आने की खबर दी, तब सबकी सलाह से महाराणा अपने कुटुम्ब सहित पश्चिमी पर्वतों में चलेगये और चित्तोड़ का गढ आठ हजार क्षत्रियों के साथ, मेढ़ता के राज वीरमदेव के पुत्र जयमल्ल राठोड़ और आमेठ के राजत चूड़ाटत पत्ता के आधीन किया, विप्रकी सन्धत १६१४ मार्गशिर कृष्ण ६ को अकबर ने चित्तोड़ के किले को घेरा और दोनों ओर से भयंकर युद्ध होता रहा एक दिन रात्रि के समय किलेकी दीवार पर फिरता हुआ हजारमेखी चमकदार सिंहर पढ़ने, जयमल्ल मोरचे सम्हाल रहा था उस समय बादशाह अकबरने बग़ीची गोली चलाई जिससे जयमल्ल का पैर घुटना में से तूट गया, और इस जगह गढ में खानपानादि सामग्री भी तूट चुकी थी इसकारण प्रभाव होके ही राजपूतोंने किले के किवाड़ खोलकर बादशाही सेनापर हल्ला किया, इस समय जयमल्ल का पैर तूटने के कारण, उसके भाई कल्ला राठोड़ने जयमल्ल को अपने कंधे पर चढा लिया और दोनों वीर उल्लूकसे हुए हनुमानपाँख और भैरवपाँख के बीचमें मोरमेरे और राउत पत्ता भी धारता के

कति जयमल्लप्रतापकों, समय विभावी सीस ॥

छितिपति रान प्रताप छत, अस्वहिं दुर्ग अधीस ॥ ७६ ॥

इम भगवंत१रु मान२रन, जनक१सुत२न उत जाइ ॥

सँह भोजन टारयो समुक्ति, खल मच्छर अनखाइ ॥ ७७ ॥

रान कुलहु निज सम करन, पिसुनभाँव मन पूरि ॥

अकवर२७कों चित्तोर इम, भनि आन्याँ फल भूरि ॥ ७८ ॥

रान तदपि कुलरखिखवे, छिति१पुर२दुर्ग३न छोरि ॥

वनचरपन धरि लिय बिपति, जीवन धर्महिं जोरि ॥ ७९ ॥

संतति दैवे प्रमुख सब, दिल्ली अभिमंत दाहि ॥

सुख तजि स्वमट१कुटुंब२सह, उदय गह्वो दुख आहि ॥ ८० ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठदशशो वीतिहोत्रव-  
सुधेश्वरबीजव्याख्यानबीजहृद्वाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यवि

कितने ही लोग इस १ प्रभावशाली जयमल्ल और पत्ता को २ महाराणा

प्रतापसिंह के समय में ३ कित्लादार होना कहते हैं ॥ ७६ ॥ ४ शामिल

भोजन कराने से जुदा जानकर दुष्टोंने ५ मत्सरता से क्रोध करके ॥ ७७ ॥

६ राणा के कुल को अपने समान अष्ट करने को ७ जुगली करने से मनक

पूर्ण करके ८ बहुत फल दिखाकर लाये “ शामिल भोजन नहीं करने के का

रण कहवाहे मानसिंहने बादशाह अकबर को कुछ करके मेवाड़ पर बादशा

ही फौज चढ़ा लाया था वह युद्ध महाराणा प्रतापसिंह से हलदी घाटी के स्था

न पर हुआ था जिसका वर्णन आने आयेगा” ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ९ सन्तान दे

आदि सब दिल्ली की १० हज्जा को जलाकर ॥ ८० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी राजा

की व्याख्या के बीज हृद्वाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश के पीछे के ४

साथ मारा गया, जिसपछे सम्मत १६२४ चैतवदि १२ को गव्यान्ह के समय बादशाह अकबरने चित्तोड़

पर अपना भन्दा खड़ा किया वहाँ पर गढ के पानी को गौचों के नांस टाटने से अपेय कर देना लिखा

सो नहीं बनसक्ता क्योंकि इस गढ के जलाशय गढ के ऊपर है वहाँ रात किसी प्रकार से भी नहीं पहु

सक्ते थे और गोली लगने से जयमल्ल राठोड़ फा उसी रात्रि में मरजाना लिखा सो आईनअकबरी के ३

नुसार है परन्तु यह सत्य नहीं है वह तबहुपर से ऊपर नूचना किये हुए स्थान पर प्रयात समय में

गया जितके अनेक प्रमाण विद्यमान हैं सो स्थानाभाव से नहीं लिखेजाते, जिनको देखना होवे, मेवाड़

इतिहास वीरविनोद में देखें, इस युद्ध का बारह वर्ष तक होना लिखा तो भी असत्य है

हितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरताशासिंहचरि-  
त्रेबुन्दीप्रतिसुरजनस्य रखातभँवरदुर्गस्थशेरशाहसलेमभटाश्रयप्रदाने  
नरखातभँवरदुर्गस्वाधिकारसंपादन १ रखातभँवरविजिगीषुदिल्लीशा-  
कबरसम्राजोऽहमदाबादपत्तनाधिकारिगर्वगञ्जककाठीजनतोपद्रवो-  
दन्तश्रवणादामेरराजभगवन्तसिंहेन सह स्वसैन्यसंप्रेषणा २ गुर्जरवि-  
जयिप्रत्यावृत्तामेरराजभगवन्तसिंहस्य निजकुमारमानसिंहसहितस्य  
सहभोजनानङ्गीकारकारणोनापकारिमहाराणोदयसिंहपुलीगां यव-  
नीकरणाप्रतिज्ञापूर्वकमकबरान्तिकामग्न ३ चित्रकूटप्रयागिसम्राट्  
सैन्यं लोभेनाकृष्य तत्सहायाबुन्दीपुरीप्रत्यादित्सुरताखानपतेर्बुन्दी-  
रोधे शालिसंगरे पराजित्य पत्तायन ४ चित्रकूटरोधात्प्रागेव महारा-  
णोदयसिंहोऽवाचोदिशं संप्रस्थिते चित्रकूटदुर्गाधिकारिमेटितियारा-  
ष्ट्रकूट ( राठौड़) जयमल्लस्यामेटपतिपत्ताभिधेयस्य च चित्रकूटमधि-  
ष्टायाकबरेणा सह समरंकरणा ५ अकबरकरवन्हिबाणाविजयमल्ले  
पञ्चतामवाप्ते प्रातरेव दुर्गकपाटोद्घाटनेन पत्तादिवीराणां रखाशय्या

तांत की व्याख्या में वर्णनीय बुन्दी के भूपति सुरजन का रखातभँवर के गढ़  
में रहेहुए शेरशाह और सलेम के धीरों को अपने शरणा में रखकर रखातभँवर  
को अपने अधिकार में करना १ रखातभँवर को विजय करने की इच्छावाले  
अकबर का अहमदाबाद के हाकिम का गर्व मिटानेवाले काठी लोगों के उप-  
द्रव का वृत्तान्त सुनकर आमेर के राजा भगवन्तसिंह को साथ लेकर प्रथम  
गुजरात पर येजना २ गुजरात को विजय करके पीछे फिरे हुए आमेर के रा-  
जा भगवन्तसिंह और उसके कुमर मानसिंह का चित्तोड़ के महाराणा उद-  
यसिंह के सामिल भोजन नहीं करने का अपमान होकर राणा की पुत्रियों को  
यवनी बनाने की प्रतिज्ञा करके बादशाह अकबर के पास जाना ३ चित्तोड़ पर  
जातीहुई बादशाही सेना को लोभ से भिटाकर बुन्दी को पीछी लेने की इ-  
च्छावाले सुरताख का बुन्दी के घर में रात्रि के शुद्ध में पराजय होकर भाग-  
ना ४ चित्तोड़ गढ़ को घेरने से पहिले महाराणा उदयसिंह पश्चिम दिशा में  
निकल जाने पीछे चित्तोड़ के किल्लादार मेटितिया राठौड़ जयमल्ल और आमे-  
र के राखत पत्ता का चित्तोड़ के किल्ले में रहकर दिल्ली के बादशाह अकबर  
से युद्ध करना ५ अकबर के हाथ की बन्दूक लगने से जयमल्ल के मारे जाने

शयन ६ एतत्समरसमयसंबन्धिन्यूनानाधिकावधिप्रतिपादकमतभेदसूचनादिकथनं पञ्चमो मयूखः ॥५॥ आदितोऽष्टाशीत्युत्तरशततमः ॥ १८८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

अकबर ३७१ लै चित्तोर इम, रच्छक अप्पन रक्खि ॥  
गिनत बंधु आमैरगढ, सबल सुरयो जय सक्खि ॥ १ ॥  
दरकुंचन रनथंभदुत, आयो जित्तन आस ॥  
समुक्तावन भगवंत लुहि, प्रेरयो सुर्जन १९०१ पास ॥ २ ॥  
साह पाइ क्रूरम सुता १, महं नोरोज मनाइ ॥  
गुरु स्वधर्म नासक गिन्यो, भूपन सासक भाइ ॥ ३ ॥  
आन न दिय गढमाहिं इम, अकबर ३७१ स्वसुरहि अक्खि ॥  
हुव सम्मह सुर्जन १९९१ हरखि, दुर्जन परखि दुःसक्खि ॥ ४ ॥  
न बनै कछु आयैहि नृप, बनै कहै मत बैन ॥  
तातै पठवहु दूत तुम, इत हु यहै मत औन ॥ ५ ॥

मदनावतारः ॥

भोजि पहु दूत इम कुम्म भगवंतपै, अप्पनिजधर्म थिति ख्यात किय अंतपै ॥

के प्रभात ही गढ के द्वार खोलकर पत्ता आदि वीरों का माराजाना ६ इस युद्ध के समय की न्यूनानाधिक अवधि बताने के मत भेदकी सूचना आदि कथाओं का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ इठ्यासी मयूख हुए ॥ १८८ ॥

१ सम्बन्धि २ जय की साजी से मेजा सहित पीछा किया ॥ १ ॥ ३ शीघ्र ॥ २॥  
४ भगवन्तसिंह कछवाहे की पुत्री को पाकर ५ उत्तमक. राव सुरजनने भगवन्तसिंह को अपना धर्म नाश करने में ६ बड़ा समझा ७ राजाओं को बादशाही आज्ञा में करने की रीति से ॥ ३ ॥ ८ उसको अकबर का सुखरा बहक र ऊपर कहीहुई दोनों साक्षियों के कारण शत्रु जानकर गढ में नहीं आनेदिया ॥ ४ ॥ ९ इस स्थान में यही सलाह है ॥ ५ ॥



सुरजन को मानलिहका समझाना पट्टराशि-षष्ठमसूत्र १ (२२११)

दूत तब भैजि इम कुन्म लिपिदूत दिय, लाहँ खिन बाह तुम साह  
अरि जानिलिय ॥ ६ ॥

हुकम तस होइ विकसो दयेले बडे, सहत धन १ धाम २ जिन्हें  
नाम जसमैं मढे ॥

अकबर ३७११ हिं अज्ज को अज्ज रन अंगमैं, निखिल यह खंड  
अरि दंड जिहिपै नमैं ॥ ७ ॥

तुमहु रनथंभ करि भेट हठ देहु तजि, भोग बहु जोग भय रोग  
बिनु लैहु भजि ॥

मान करि रान १ लघु प्राँन तजिगो सही, स्वान अफगान बिनु  
ज्ञान भजिगो सही ॥ ८ ॥

समय अनुसार बल अप्पनोँ ए सहेँ, विकिख इन्ह जोर इस सिर  
हि अप्पन बहेँ ॥

परहु यह जानि हित मान दिल्लीस पय, देहु रनथंभ मुगलेदस  
जिम हे सदैय ॥ ९ ॥

हुग लिख चोर जिय ध्यांत बिलुही दयो, अब न रहि हे सु महि  
साह रवि उगगयो ॥

कहिदिय जियत तुम वधेय अफगान के, हेरहि अपराध गिनि  
ये न प्रभु दानिके ॥ १० ॥

पै वै रनथंभ करि भेट मुख पाइहो, जो न यह बत तजि भोन  
भजिजाइहो ॥

१ पत्र दिया २ लाभ के समय ॥ ३ दोनो ४ आज अकबर को कोत आख्य मुक्त  
में देना सकता है ५ सब ॥ ७॥ ६ भय रूपी रोग के दवा ७ दूत पराक्रमवाला  
राजा और बिना रक्षा के अफगानिस्थानवाला ८ दुस्ता आगमन ॥ ९॥ १० हाथ के  
कनुनार अर्थात् पादजात का लाभ मस्तक पर रहे तो बड़ी चरना बन है १०  
दयावान होवे ॥ ९ ॥ ११ अन्वरे में चोर के समान बिना दवाइया गढ़ लि-  
ना है सो शाह रूपी सूर्य उदय होने पर अब नहीं रहेगा १२ मारने योग्य कि  
नने की अफगानों को तुमने जीवित निकाल दिये ये दोनो अपराध मरु के १३  
देने योग्य नहीं हैं ॥ १० ॥ परन्तु १४ अब

\*कुम्भ दल धंघि यह हड्ड १ नृप कुप्पयो, अंग निजभंग गढ  
संग गिनि † उप्पयो ॥ ११ ॥

वीर गढमें हि ‡ परदूत ढिग बुल्लयो, खग्गमत मग्ग तिहिँ अग्ग  
दढ खुल्लयो ।

कुम्भप्रति जाइ हैमवैन क्रम यौ कहो, लुँविम तुम अप्पि दुहि  
ताँ हुवसु १ भूरल्लहो ॥ १२ ॥

चोर १ हस साह लाखि जो व भजिवो चहैं, साह नहिँतो हमहिँ  
लाहलौछ क्यों सहैं ॥

इल्लकरि मोहि गढद्वार अबही हनहु, एह रनथंभ करि गेह छक  
उप्पनहु ॥ १३ ॥

होत निज सरन अफगान दिय कहि हम, सरनगतं त्रान कुल-  
धर्म गिनि प्रानसम ॥

साह वरजोरँ वचिवो न मम है सही, मोहि हनि लखहु रनथं-  
भगढकी सही ॥ १४ ॥

अधिप इम अक्खि परदूत पठवाइकें, नाँलि दगिवेहिदिय सैन  
निधंराइकें ॥

गृहि पहिलें न तुम हनहु परसत्थैकाँ, वे करैं घात तव सखनौ  
अत्थैकाँ ॥ १५ ॥

१ कल्लदण्डे का गण पत्र बाँचकर १ जोमित हुआ ॥ ११ ॥ २ शत्रु के दूत को पास बुलाया ३ शत्रु चलाने का विचार ४ हमारे बचन कल्लवाड़े से इस काम में कहो कि ५ लोंग करके ६ पुत्री देकर धन और भूमि तुम ही लो ॥ १२ ॥ वादसाह को बेगार पर जो हम भगजायें तो चोर हैं नहीं तो हम ही साह (साहकार) हैं भो हमारा १ मिले हुए लाभ के व्याज को (नाश हुआ अर्थ निहित के अन्य अर्थ का कलना व्याज है) क्यों सहन करें ॥ १३ ॥ २ कारण गण दूत की रक्षा करना इतल भरी है ॥ १४ ॥ ३ शत्रु दूत को ४ लोंग चलाने को ५ समीप लेकर ११ शत्रु के साथ को १२ अपना अर्थ साधना साधिये ॥ १५ ॥

दुजनदेख टारि तव तोप गढकी दगी, लाय सुगलेस उर तदपि  
बढती लगी ॥

बहत रन दुर्ग सिर नाखि उतकी चली, आइ गढमें लगी मि-  
रन गोलावली ॥ १६ ॥

सुर्जन१६०।१हु अकिख तव साह दल सँहरन, सज्ज हुव लहरन धु-  
वसरन असरनसरन ॥

तोप दुहुँ२ओर दगि भूत पंचकंधतप्यो, जनन डरि मनन संवर्त  
आगस जप्यो ॥ १७ ॥

भुम्भि डगमग्नि गिरि शृंग जंगम भये, छित्ति निभं काल कर-  
माली लहरु छये ॥

सामविधि जानि कति दुर्गाडिग हे सिबिर, कदन निज टारि ल  
दि तेहु गय दूर किर ॥ १८ ॥

फेरपर फेर बलि दहन दिसदिस फुरयो, जानि कपिदेव लंका-  
हिं जारन जुरयो ॥

गोल लागे सीस गजभेद मुक्ता गिरे, करन भुव चित्रं करका  
निकर ज्यो किर ॥ १९ ॥

तुंग गृह कलस१ध्वज२छत्र३इत उत्तरे, पँत्ति१गज१बाजि३वाँसं-  
त४उत ढहिपर ॥

लुत्थिपर लुत्थि बहु बुँत्थि संचितलगै, पार पलचार दलकार  
पल नाँ पगै ॥ २० ॥

१ शत्रु की सेना को बचाकर २ गोली की पेंत्ति गिरने लगी ॥ १६ ॥ ३ कहा  
४ संहार करने को ५ तैयार हुआ ६ पंचशत (पृथ्वी, अग्नि, तेज, वायु, आ-  
काश) तपगये ७ प्रलय का ८ आना कहा ॥ १७ ॥ ९ चलायमान होगये १० महश  
११ तरबारों की १२ लहरें छागई १३ मिलाप होजाने की विधि जानकर १४ ढेर  
१५ अपना नाश बचाकर १६ किल (निश्चय) ॥ १८ ॥ १७ अग्नि १८ हनुमान को  
दिया हुआ १९ भद्रजाति के हाथियों के मस्तक पर गोले लगकर २० पृथ्वी  
पर आश्रय करते हैं २१ आँलों (गड़ों) के २२ समूह २३ गिरे ॥ १९ ॥ २४ ऊँचे २५  
पैदल २६ ऊँद २७ मांस के टुकड़ों के समूह लगते हैं २८ मांस खानेवाले ॥ २० ॥

याँ विजय आस कछुमास अकबर ३७१ अरघो, काल नृप  
तास दलआस तोपन करघो ॥

कुम्भ भगवंत तव साहप्रति याँ कछो, लगि \*चिर निहि चितो  
र अप्पन लहो ॥ २१ ॥

सुरुष दुर्गस जयमल १ जो नाँ मरै, पुनिहु जययाँहि बहु अवैदसंसय परै  
तोहु तिम न्हासै बहु आस दलको तहाँ, ज्योहिँ अब आँहि गढ-  
याँहिँ सुर्जन १९०१ जहाँ ॥ २२ ॥

इष्ट तिहिँ अप्पि यह दुर्ग अब अंगमै, जिम सु निज होइ इत  
अमल अप्पन जमै ॥

यहहि वहराममुख भटन हित उचरयो, कुम्भ तव साह सुहि  
राह रच्छक करघो ॥ २३ ॥

कुम्भ गढद्वारंगत एह कहिबुंक्कली, बुलि डिग सोहि बलि इष्ट  
अवखहु बली ॥

दुर्ग बिच कुम्भ १ चउ४ जुत तव बुलि हुत, पीठ इक १ वैठि  
बुंदीस भिंख्यो प्रनुत ॥ २४ ॥

कहिय कछवाह सम मंतुँ विस्मृत करहु, इष्ट लहि अप्पगढ दै  
रु जस उदरहु ॥

बलिप सामंत १८०१ तँहँ साह बलवान है, मरिहु गढ देत तु-  
मरो न इम मान है ॥ २५ ॥

लेहु लिखवाइ मनचाह धित लाह जो, सोहि अब देहिँ गढ  
लहिँ इम साह जो ॥

सत्त७ लहि वत तव देन गढ स्वीकारिय, इमहि नरनाह कछ-  
वाह प्रति उच्चरिय ॥ २६ ॥

\* गढ तब समय कनकर ॥ २१ ॥ १. फिह्ला राह १ चर्च २ सेना का वाश ३ तुआ  
४ है ॥ २२ ॥ ५. उमकी उच्छा के अनुसार देकर ६ लेवें ७ चतुर्गम आदि ८ उल  
मिलाप के मार्ग की रक्षा करनेवाला ॥ २३ ॥ ८ गढ के द्वार पर जाकर १०  
पैदा सेव (आसन) पर बैठकर ॥ २४ ॥ कछवाहे ने कहा कि ११ सेने अप्पगढ  
को १ भूल जाओ ॥ २५ ॥ १३ साल यात्रे लेकर गढ को देना स्वीकार किया ॥ २६ ॥

सुर्जन और मानराजा का वार्तालाप] पठराशि-पठमयूख (२२११)

पुलि दिय अप्प तिम हम न परिनाइहैं१, जु किय नोरोजं तैंह  
न हम तिय जाइहैं२ ॥

अटकं नदि पार पठवैं सु नहिं उत्तरैं३, आम१ अरु खास२ इक१  
सखसह अनुसरैं४ ॥ २७ ॥

लालप्राकारलग बंबं हमरो बजैं५, तुरगर्तन लगगत सु दग्ग  
जवन न तजैं६ ॥

कज कछु सज्ज नहिं अज्ज अनुगर्तकरैं७, सत्त७ ए बत्त लहि  
साह हित अनुसरैं ॥ २८ ॥

अधिक भुव साह अब दै सु तुम उच्चरहु, कुम्म नरनाह तब  
चाह गढकी करहु ॥

सुनि सु नृपं मंत भगवंत गय साहपैं, रक्खि रंति कहिय हित  
होत इहिं राहपैं ॥ २९ ॥

चविषैं खिजि साह तुम हिंदु हिंदुन चहो, क्यों हमहिं बंचि१  
यह स्वीय कल्पित कहो ॥

कहिय भगवंत चलि अप्प सुनिये कथा, तेहु लखिलौनैं बपु बे-  
स बदलहु तथा ॥ ३० ॥

पलटि तब बेस सुगलेस गहि दूतपन, संग गय हड्ड६१ हठ बैन  
निहचै सुनन ॥

आपने पुत्री दी तैसे हम नहीं परखावेंगे? जो नोरोजों का उत्सव नियत किया है उसमें हमारी स्त्रियां नहीं जावेंगी २ अटक नदी के पार भेजे सोनहीं उतरेंगे ३ आम दरबार और खास दरबार में एक सख लेकर जावेंगे ॥ २७ ॥ ४ लालकोट तक हमारा ५ नगारा यजेगा ६ घोड़ों के शरीर में दाग लगता है वह दाग लगाना यवन छोड़े ७ किसी कार्य पर सज्जित करने में ८ आर्य का ९ सेवक नहीं करे १० राजा सुर्जन का मंत्र (सलाह) सुनकर ११ प्रीति रखकर ॥ २८ ॥ १२ कहा १३ हथको ठगकर १४ यह अपनी कल्पना की हुई वार्ता क्यों कहते १५ देखने के लिये शरीर का वेश बदलदो ॥ ३० ॥

इक१\*जलधार दुवर दास तिम दूत इक१, संगगढसाहिं गय  
पुच्छ यह साहसिक ॥ ३१ ॥

दूतश्चह टारि तँहँ धारि मुगलोसश्चुत, तत्थ गय कुम्भश्चुनि स  
त्थ जन च्यारि४जुत ॥

कहिय बुंदीसप्रति एह हठ नाँ करहु, धगनिप्रभु साह आदिसँ  
मथैँ धरहु ॥ ३२ ॥

कोल करि एह करिये न तिहिँ कोपमैं, अपि गह है सु भुव  
लेहु जस ओपमैं ॥

सु सुनिनृप कुप्पि गहि सुच्छ असि संग्रहो, कट्टि कुल हह ६१  
रनथंभ दव्वहु कहो ॥ ३३ ॥

अद्भुतं तुम जवन इम जवनहित आचरत, धरनिश्चनरचाहि मि-  
रजाहि उप्पद धरत ॥

हमहिं बहिकाइ तुम ज्यौं करहु सो न है, कुल्य नृप अज्ज चहि  
मिच्छसम कोन है ॥ ३४ ॥

कोल हम पुन्व कुलधर्म रक्खनकरैं, उचित लाहि देस पुनि से  
स कालि आदरैं ॥

तो ब रनथंभ हम अपि आश्रय तर्कै, नाहिं यह होइ तब छु-  
 द लोभहि नैकै ॥ ३५ ॥

धर्महित सीस दिल्लीस सासनधरै, कज्ज निज धर्महित रज्ज<sup>३</sup> त्या-  
गहु करै ॥

धर्महित रानसहवामंश्चन धाम किय, कुंडलशर बर्मरतजि क  
र्गजग नाम किय ॥ ३६ ॥

\* जल रखनेवाला १ हठी ॥ ३१ ॥ भूमि का पति बादशाह है जिसकी २ आज्ञा मस्तक पर धरो ॥ ३२ ॥ ३ नियम ४ शोभा में ॥ ३३ ॥ ५ तुम आधे यवन हो हसकारण यवन का हित ६ करते हो ७ पदवी (खिताब) ८ कुलवान आर्य ॥ ३४ ॥ ९ तुच्छ लोभ १० नहीं करेंगे ॥ ३५ ॥ ११ अपने राज्य को भी छोड़ दें १२ स्त्री सहित १३ कुण्डल और कवच देकर ॥ ३६ ॥

सृजन और मारराजा का वार्ताबाप] षष्ठराशि-पष्ठमयूख (२२१७)

भूप सिवि३मंस जिहिं कज्ज अप्पन भयो, देह जिहिं कज्ज जीमूत  
वाहन ४ दयो ॥

तकि जिहिं भूप अजमीढ प्रभुता तजी, भूप हरिअंद ६ जिहिं  
कज्ज छवता भजी ॥ ३७ ॥

सोहि हम रक्खि सुगलेसाढिग संघरैं, कोहि तिहिं खोइ जड स्वा-  
मि मिच्छहिं करैं ॥

जो रुचत एह करि देहु तो लेख जिम, अकवर ३७।१ हिं नाह मि-  
नि तजहिं रनथंभ इम ॥ ३८ ॥

हैं न यह लेख तब आपि सिरधर्महित, इक्क १ जस रक्खि हम  
हहु ६१ करिहैं उचित ॥

कहि अफगान रनथंभ लिय नीति करि, ओर विधि ताहि ल-  
हिहो न तुम धर्म अरि ॥ ३९ ॥

साह १ तुमरो रु तुमरोहि जबसंहरहु, कलह जय पाइ तब दुर्ग  
सासन करहु ॥

कुन्म खुनि दूत निहं साह प्रति यों कह्यो, सुनत तुम हहु ६१ विनु  
लेख सासन सह्यो ॥ ४० ॥

साह मम वैन विच द्वापरहि स्वीकरैं, कहहु तुम हहु ६१ विनु  
कोल रनही करैं ॥

स्वीकरैं १ हीकरैं २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

ध्वस्त लखि धर्म बुंदी हुतनलों तजैं, भूप निजधर्म अंशुरूप तु  
मको यजैं ॥ ४१ ॥

१ मांस २ जीमूतवाहन नामक राजा ने "यहां जितने उदाहरण दिये हैं  
निगली कथा ऊपर आसुकी है इस्कारण यहां पर टीका करना अनावश्यक है" ३  
पाप जाल बन लिया ॥ ३७ ॥ ४ जायें ॥ ३८ ॥ १ धर्म के शत्रु "अकबर को पुत्री दिवाहने से  
अगवन्त सिंह को यहां धर्म अरि कहा है" ॥ ३९ ॥ १ मुक्त को मार डालांगे ७ ३ न के  
सदृश वेप धारण दिये हुए बादशाह से कहवाहे ने कहा ॥ ४० ॥ = सन्देह करते तो  
१ धर्म का नारा देवकर १० बुन्दी को भी १ १ रूपने सदृश धर्म रखकर तुमारी

दूतमिससाहसकछवाहरइम तत्थ दुवर, हहृ६१नृप बैन सुनि  
सैन पुनि जातहुव ॥

साहप्रति कहिय कछवाहअप्पहु सुनी, गाँठसह हहृ६१जुहिटेक  
किय सोगुनी ॥ ४२ ॥

अज्ज हम अप्पसन कज्ज छल आदरहिं, पाप सहि ताप तव  
क्यौ न दोजख परहिं ॥

साह तव छापसह कोल लिखि सत्त७ही, कुम्मकर भेजि दैआ-  
हु हहृ६१हि कही ॥ ४३ ॥

भू अधिक लैन जो बैन सुर्जन१९०११भनै, परगनै सत्त७तो देय  
तिहिं अप्पनै ॥

करहि इच्छा पुनिहु लैन छिति तो कहो, लोभ मित देस गुड  
वान जिति रु लहो ॥ ४४ ॥

जेहु पुनि दुर्ग गय सत्त७हद लेख जुत, देस सप्तक७सहित दैन  
लग्गो सु इत ॥

सप्त७हदलेख नृप हहृ६१ तँहँ स्वीकरयो, देस लैयो सु गुडवान  
जय आदरयो ॥ ४५ ॥

कहिय गुडवान जय साह उपदा करौ, धरनि इच्छा प्रमित  
तवहि बढती धरौ ॥

देय भुव लेख करिदैन जो आदरहु, सोहु लिखि साह रनथंभ  
अपनौं करहु ॥ ४६ ॥

कुम्म इम लैन भुव हहृ६१इच्छा कहिय, वादनी५२दैन तव सा  
सेवा करेगा ॥ ४१ ॥ १ संगी सँ पीछे गये २ दृढता से ॥ ४२ ॥ ३ कार्य सँ ४ न  
रक सँ ॥ ४३ ॥ ५ अधिक भूमि लेने का वचन ६ फिर पृथ्वी लेने की इच्छा करें  
तो ७ छोटा देश वा लोभ के माफिक ॥ ४४ ॥ ८ गुडवान देश को विजय  
करके लेना स्वीकार किया ॥ ४५ ॥ गुडवान को विजय करके जय वादशाह  
की ९ नजर कहेगा तब इच्छा के १० अनुसार अधिक भूमि लूंगा ॥ ४६ ॥ ११  
वाचन परगने देने की आदेशाह ने



ह संधावहिय ॥

पत्र लिखि साह सुहु दह्दह १६१ डिगपेसैयो, दुर्ग खालीकरन तदनु  
सासन दयो ॥ ४७ ॥

दोहा ॥

भगवंतहिँ सुर्जन १९०११ भनिय, अब निँसवेला आत ।  
कलिह दुर्ग खाली करहिँ, पावहु साह प्रभात ॥ ४८ ॥  
कुम्भ सुनत तँहँ इम कहिय, सुर्जन १९०११ प्रति सामंत १८७११  
गढ दै तुमसासन गहहु, इहाँ चहत हम अंत ॥ ४९ ॥  
जब बुंदिय सुरतान १९६११ जड, मारनेलग्गो मोहि ॥  
मैं तब निकस्यो रन मरन, दहहिँ जरठपँन द्रोहि ॥ ५० ॥  
तब सलेम ३३१११ करि दुर्गपति, थप्यो मैं रनथंभ ॥  
ओर सुभट ममबस अखिल, रक्खे जयआरंभ ॥ ५१ ॥  
अबलग तबतैं किय असन, या गढको मैं अन्न ॥  
अब मोहि न जीवन उचित, अतिबार्दकँ आपन्न ॥ ५२ ॥  
तँहँ सुर्जन १९०११ भगवंत २तिहिँ, सुपहु रहे ससुक्काइ ॥  
तदापि सज्ज सारन १८६११ तनुज, भयो मरन रन भाइ ॥ ५३ ॥

षट्पात् ॥

इम तँहँ कूरम इनहिँ कहिय सामंत १८७११ जोरि कर ।  
बडेशरिपुन कर बह्नि बनत लँहुरे २हु कित्तिबर ॥  
अफगाननको अन्न परयो मम जठर दूधपन ।

जियत मैहि तिन्ह जोध सकल दिय कहि इहाँ सन ॥

अकबर ३७१११ हि मारि निर्भय अवहु हुलासि सिकंदर ३६१११ चहत हम ।

१ प्रतिज्ञा की २ भेजा ३ जिसपीछे ॥ ४७ ॥ ४ रात्रि का समय आगया है ॥ ४८ ॥ ५ तुम  
गढ देकर बादशाह की आज्ञा ग्रहण करो ६ हम यहीं मरना चाहते हैं ॥ ४९ ॥ ७ बुढापे  
से डेप रखनेवाला ॥ ५० ॥ ८ सब ॥ ५१ ॥ ९ भोजन १० अत्यन्त दूधपन से ११  
दुःखी हूँ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ कछवाहों के राजा को हाथ जोड़ कर सामन्त ने कहा  
कि १२ छोटे भी बड़े शत्रुओं के हाथ से मारे जाकर कीर्ति के पात्र होते हैं १३ पैद

आगमं यहै न सहिबो १ उचित दुजन हमहिं हनिबो २ हि दम ॥ ५४ ॥  
 कूरम नृप तब कहिय हड्ड ६ १ सामंत १ ८ ७ १ सुनहु हित ।  
 उहाँ तुमहिं गढ अधिप अबहु रक्खहि जस अंकित ॥  
 पटा १ मरातब २ पाइ भुगि खंडारि १ प्रमुख भुव ।  
 थिर बिलसहु रनथंभ दुर्ग दुस्सह सारन १ ८ ६ १ सुव ॥  
 साहको जिते परिकर सहित आवन देहु तितोहि अब ।  
 गढमै स्वसंग लावहिं मुगल ६ सिर झेलहु यह भार सब ॥ ५५ ॥  
 दोहा ॥

हड्ड ६ १ नृपहु दैव कहिय, अधिक परगना १ एक १ ।  
 तदपि जरठ सामंत १ ८ ७ १ तैंहैं, टारी नैंक न टेक ॥ ५६ ॥  
 सारन १ ८ ६ १ सुत अक्खिय सुपहु, चित्त न दिलिय चाह ।  
 हमहि दुर्गके द्वारहनि, खजुत पविसहु साह ॥ ५७ ॥  
 दै सपथहु याको दुवरहि, सुपहु रहे समुझाइ ।  
 तदपि न हठ सामंत १ ८ ७ १ तजि, लारन खरो हित लाइ ॥ ५८ ॥  
 पहु कूरम यह साहप्रति, आनि कहिय पट अैन ।  
 पंचलख ५०००००० दम्न पटा, दिल्लीसहु किय दैन ॥ ५९ ॥  
 हठो तदपि सामंत १ ८ ७ १ हुव, तनमित मन्नत ताहि ।  
 महिपति इत कहि सुकलिय, अब खिनदागम आहि ॥ ६० ॥  
 कलिह दुर्ग खाली करहिं, अप्पन विभव अवेरि ।  
 संभ्र दुहाई साहकी, हिय अँफसोसहु हेरि ॥ ६१ ॥

॥ पटपात ॥

क्रम यह अधिप कहाइ विष्णुप्रतिभा दुव २ वंदित ।  
 व्यवहित कहिय बीर दुर्गबाहिर आनंदित ॥

में १ आना २ दरड ॥ ५४ ॥ ३ जय से जाना जायै ऐसा करके ४ इज्जत ५ हे  
 सारण के मुज्रा ६ परगह सहित ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ७ राजा ५८ ॥ ८ डेरों  
 में ॥ ५९ ॥ ९ अब राजा का आगम है ॥ ६० ॥ १० चिन्ता करके ॥ ६१ ॥ ११  
 विष्णु भगवान की दो मूर्तियाँ १२ सावधान होकर

अग्नें निक्सी एहि उभयश्चाल्पं अलसीके ॥

ते पठर्ड निस तबहि नेर बुंदिय जिधि नीके ॥

तोपहु निक्कासि रक्खिय अतुल गढबाहिर दुवशर्तगँत।

तनुमात्रं तेहु पठई तिमहि निज निकोत दुर्लभ नियत ॥ ६२ ॥

पथ्यामीतिः ॥

इक्षुचतुर्भुजः आठहंय, दूजिः कल्याणराजनामा द्वैः ।

मूरति स्याम सिलाय, पुरबुंदिय तोष दोइरजुत पठई ॥ ६३ ॥

सिव मंदिर पहिली१ सो, प्रतिष्ठा१ बुंदीपुरहि पधराई ॥

महिपसुभक्तिलिलीसो, उदितं तिलकचोकं चयारिभुजवारी ॥

दुरः१ नालि धूरिधानी, जिम दूजी, २ करैक बिज्जुली २ जानी ॥

ए२ सुभटन पुर आनी, तारागढ तेहु चरखन चढाई ॥ ६५ ॥

दुवर्प्रतिमा नाली दुवर्, व्यवहित ए चउ४पठाइ इस बुंदी ॥

सुर्जनं १९०।१ नृपञ्चर्जुन १८८।१ सुंन, पुनिगढ रनथंभ अप्पन प्रमान्या ॥

बैभव निज कहि बहुरि, करि खाली दुर्ग प्रातहि कहाई ॥

जवनै जवन आवहु जुरि, दिल्लीपतिकी बै केरहु दुहाई ॥ ६७ ॥

दर्शन पठ्यो जब अकबर ३७१, सम्झुह सामंत १८७१ कहितव किलेसौ

प्रधान विरचि तोरनपर, अष्ट निज सतरुत्त १०० जुत तिलतिल् सो ६८

जाहि भरोसा जानत, चाफगान सलेम३३।१साह गढ अप्यो ॥

मस्तक संदं<sup>१९</sup> मानत, तोकाँ सामंतः ८७।१यौ असिन्नं तुष्टयो ॥६९॥

सुर्जन १९०१ को सत्कार हु, सब भूपन अधिक जानि अक्रबर ३७१३ सौ

याकसीको? अण्डार में निकली थीं उक्त रीति से तुलना रहित (बड़ा) १ गढ़ के  
बाहिर दो नहरों से बिना चरख नरीर (नाली) मात्र १ अपना घर निश्चय ही दुर्लभ  
जानकर ॥ ६॥ १ तामक ॥ १२॥ ८ पक्का जिन ॥ ६४॥ ९ सुख तो १० हनुमन्ती नामक  
११ कड़क विजली नामक ॥ ६६ ॥ १२ स्थायमान होकर का जाले १३ चार्ज  
का पुत्र ॥ ६७॥ १४ यवन लोग इकट्ठे होकर जीव याचो १५ अब ॥ ६८॥ १६ से-  
ना १७ युद्ध १८ बाहिर के द्वारपर ॥ ६९ ॥ १९ नस्तक के बदले २० तरवारों से

प्रयित सुजस करिनिजपहु, अप्पनअफगान लोन उद्धारयो ॥१७॥  
 साहभट सहेस१०००संहरि, बिनुसीसहु बहि मुगल बहु मानी ॥  
 कुलहड्ड१६न उज्जल करि, सोयो सामंत१८७१चौर भटसैज्जा ॥७१॥

सतसत्त ७०० संग सुभटहु, जो बिरुदहु सेरसाह३२ सत्रु जई ॥७२॥  
 प्रभु रावरे कुल प्रथम, सुर्जन१९०११चउ नेत्र अष्टि१६२४मित सकमै  
 सत्तहि७हद अकबर३७११सन, लिखाइ गढ दै तदाश्रय लयो यों ७३  
 राजा च्यारि४ सम्हारहि, भुग्गि सु रनर्थम होइ तस भेदी ॥

गढ दै पुनि आश्रय गहि, इम हुव सुर्जन१९०११सहाय अकबर३७११कै।

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो पष्ठराशौ वीतिहोत्रेवसु  
 थेश्वरबीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंशयानुवंश्यविहि  
 तवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे सुरज-  
 नस्यामेरराजभगवन्तसिंहद्वारा नियमसप्तकपुरस्सरं रणतभैवरदुर्ग  
 स्याकवरसम्राटायत्तीकरणासूचन १ समरकराकबरसंशीतिदूरीक-  
 रणार्थं भगवन्तसिंहस्य दूतवेषावृताकबरसम्राजः सुरजनान्तिकप्राप  
 णा २ तादृशाकबरसम्राजः सुरजनहठावलोकेन तद्विहितनियमसप्त-  
 कस्वीकरणा ३ प्रतिज्ञापत्राप्तरणास्तम्भदुर्गेऽकबराधिकारकरणां प

तूटा ॥ ६९ ॥ १ प्रसिद्ध ॥ ७० ॥ २ वीरशंखा सोया ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ३ उस का  
 आश्रय लिया ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण  
 वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं  
 की कथां बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के श्रुति सुर्जन के चरित्र में सु-  
 रजन का आखिर के राजा भगवन्तदास द्वारा सात नियम कराकर रणतभैवर  
 का गढ बादशाह अकबर के आधीन करने की सूचना करना १ उस युद्ध कर  
 नेवाले अकबर का सन्देह दूर करने के कारण दूत के वस्त्र में उस अकबर को  
 राजा भगवानदास को हाड्डा के पास लेजाना २ बादशाह अकबर का दूत के  
 वस्त्र में सुरजन का हठ देखकर उसके कहे हुए सात नियमों को स्वीकार कर  
 ना ३ अकबर से नियम पत्र पाए पीछे रणथम्भ के गढ को अकबर के आधीन

ष्टो मयूखः ॥ ६ ॥ आदितो नवाशीत्युत्तरशततमः ॥ १८९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

पहिले अमल कराइ पुनि, अकवर ३७।१ गढपर आइ ॥

रनथंभहि कतिदिन रह्यो, जोध स्वकीय जमाइ ॥ १ ॥

कुम्भ १ बघेल २ नतैं कियउ, सुर्जन १६०।१ अधिक प्रसन्न ॥

भूपहु सो अकपट भज्यो, स्वामिधर्म संपन्न ॥

याही जिन नृप १६२४ साक इत, भूप उदय जस भव्य ॥

गयो जानि चित्तोरगढ, नगर बसायउ नव्य ॥ ३ ॥

प्राथित नाम तस उदयपुर १, ताके ढिगहि तड़ांग ॥

रुचिर उदयसागर २ रच्यो, रान उदय जसरा ६ ग ॥ ४ ॥

उदयरानकै सुत उदित, बीस २० प्रमितवरबीर ॥

जैठो १ कुमार प्रताप २ जहैं, धर्म सहायक धीर ॥ ५ ॥

सगतसिंह २ जगमाल २ सम, अतिधृति १९ मित सुत और ॥

अष्ट ८ भये कुलधर अडर, जिनमें रन घनजोर ॥ ६ ॥

सगत २ जग्ग ३ अग्र ४ रु सगर ५, पंचायन ६ गन ७ नाम ॥

कन्ह ८ रु लवनादिक करन ९, कुलतानक जसकाम ॥ ७ ॥

कुल तिनकै तिन्ह नाम करि, अग्न कहावत उत्त ॥

सगता उत्त १ प्रमुख सब, जानहु इम असजुत ॥ ८ ॥

करने का छटा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ निवासी १८९ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ कपट रहित स्वामिधर्म से सेवन किया ॥ २ ॥ २ शुभ यश से ३ नवीन \* नगर बसाया ४ प्रसिद्ध ५ तालाब ६ यश में प्राप्ति करके ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ आठ पुत्र कुल बढ़ानेवाले निर्भय हुए ॥ १ ॥ ८ कुल को फैलानेवाले ॥ ७ ॥ ९ सगता

\* मेवाड़ के इतिहास में लिखा है कि चित्तोड़ छूटने से पहिले सम्वत् १६१६ में महाराणा उदयसिंह ने उदयपुर बसाया और इसी सम्वत् में उदयसागर नामक तालाब बनाना प्रारम्भ किया सो १६१६ में समाप्त हुआ और सम्वत् १६२२ की वैशाख सुदि ३ को इस तालाब की प्रतिष्ठा हुई ।

किते उदयनृपकै कहत, जेठो१सुत जगमाल३ ॥

पै कछु हेतु अमोघ परि, भयउ प्रताप१मुवाला ॥ ६ ॥

पहिलैं हुव इत जोधपुर, मालदेव नृप नाम ॥

ताकै चउ४प्रकटे तनय, रीति सुनहु प्रभु राम२०३।४ ॥१०॥

पादाकुलकम् ॥

जेठोचंद्रसेन१तैंहैं जानहु, पहु तस बंस भनाय प्रमानहु ॥

तनुं छोरिय नृप मालदेव तैंहैं, जरिय अछुत उमा रानी जैंहैं ॥११॥

इम भट१वंधुरजोधपुर आयै, पुत्र सबन जिस्मन पठवायै ॥

जिनदिवसन बंधुन कुमारजन, जाते सब अंतहंपुर जिस्मन ॥१२॥

जाइ सिमुन इम असन चह्यो जब, तैरजै चंद्रसेन१जननी तब ॥

भाखिय तुमहिं असन खिनभावत, पहु अबहि मेरो लुत पावत ॥१३॥

उत आदि ॥ ८ ॥ १ सचा ॥ ९ ॥ १० ॥ २ मालदेव का देहान्त हुआ तब ३ अ-  
स्पर्शी कीहुई उमादे नामक राखी जली ॥ ११ ॥ ४ जनाने में जीमले जाते थे  
॥ १२ ॥ जब बालकों ने भोजन मांगा तब चन्द्रसेन की माता ने ५ धमकाकर  
कहा ६ भोजन करने का समय ॥ १३ ॥

✽ मारवाड के इतिहास में राव मालदेव का देहान्त सम्वत् १६१६ के कार्तिक में होना लिखा है और  
१ कुटुंब के बालकों को भोजन नहीं करानेवाली माता के ज्येष्ठ पुत्र को राज्य से वञ्चित रखना और बाल-  
कों को भोजन करानेवाली माता के लघु पुत्र को राज्य विटाने आदि कथा लिखी सो इस संग्रह की नहीं  
है, किन्तु राव सूजा के समय की है, जिसका संक्षेप वृत्तान्त इस प्रकार है, कि राव सूजा को असाध्य रोग  
ग हुआ तब उस समय के सर्नापी सभी भाई एकत्रित हुए उस समय सूजा को बड़ा पुत्र बाबा कुमारपन में  
ही परलोक चला गया था और बाबा के पुत्र वीरम, गांगा आदि विद्यमान थे, जब जोधपुर के समीपी आ-  
ताओं के बालक जनाने में भोजन करने गये तब वीरमदेव की माता ने कहा कि मैं भटियारी नहीं हूं सो  
इतने लोकों का भोजन बनाऊं यह सुनकर गांगा की माता ने उन बालकों को अपने स्थान पर लेजाकर  
भोजन कराया इसके कुछ दिन पछे राव सूजा का देहान्त हो गया तब राज्य के हकदार वीरम को निकाल  
कर उगराव सरदारों ने सिन्धी सम्वत् १५७२ के कार्तिक में राव गांगा को जोधपुर का राजा बनाया,  
उस समय बगड़ी के ठाकुर जैता ने तिलक की साग्रशी नहीं मित्रने के कारण अपने हाथ के अंगूठे को नी-  
रकर श्मिर से तिलक किया, तभी से जोधपुर के सिंहासन पर बैठते समय राजाओं को बगड़ीवालों के  
तिलक करने की प्रथा चली आती है ॥ और उन समय बगड़ी के ठाकुर जोधपुर के सिंहासन बैठनेवाले  
नये प्रभुओं को निवेदन करते हैं कि आप को जोधपुर मुबारक हो इसके उत्तर में अभीश कहते हैं कि  
मुझको बगड़ी मुबारक हो.

यातँ मोहि नैकहु न अवसर, धनी भूख तो जाहु खाहु घर ॥  
सोति अपरं २९ सोतिवचन सुनि, पिकिखविमुख जावत कुमरन पुनि  
तिहिँ निजगृह लेजाइ जिमाये, असन विरचि बाहिर सिसु आये ।  
निजजनकन यह सिसुन निवेदिय, कुपि विलोम प्रपंच भटन  
किय ॥ १५ ॥

पठई कहि यह चंदसेन प्रति, अवही पट्टसुहूर्त विघ्न अति ॥  
पहु गाहिय अच्छे खिन पावहु, बासर कछु असैहि विहावहु ॥ १६ ॥  
इम खिजि भटन लगाइ रोक उत, सिसु भोजे ताको बुल्लयो सुत ।  
उदय२नाम मातुलंगुह हो वह, मालदेव सुत ठूजो अर्थमह ॥ १७ ॥  
सो अतिजव बुल्लयो करभासन, आतहि भटन धर्यो नृप आसन ।  
वर्गरीपति जैताउत बंधव, न लाखि त्वरामैं तिलक बस्तु नव ॥ १८ ॥  
उदय२माल तिहिँकाल असंकित, अंगुलिरुधिर कटि किय अंकित  
अधिपति होत तौस तिम हा उत, जबतैं तिलक करत जैताउत ॥ १९ ॥  
जिहिँमाता स्वकुमर भोजेजिमैं, अधम सु उदय२भटन नृप किय इम ।  
तातैं चंदसेन अग्रज तस, विनुगाहिय रहिगो भावीवस ॥ २० ॥  
अव भनायसासक तस अन्वयैं, भो नृप उदय२उहाँ अघ निर्भय ।  
तीजो३जाता सत्रुसल्लक्षतस, भदाजैन कुलभव जानहु जस ॥ २१ ॥

इसकारण सुंझको कुछ भी ? अवकाश (समय) नहीं है रद्वंजरीसौत ने पहिली  
ही सौतके ये वचन सुनकर ३ भूखे जाते हुए बालकों को देखकर ॥ १४ ॥ भोजन करके  
५ क्रोध करके उलटी ६ रचना की ॥ १५ ॥ अच्छे समय में कुछ दिन ९ बिताओ ॥ १६ ॥  
१० बालकों को भोजन कराया उसको पुत्र को बुलाया ११ यामा के घर था  
१२ पापी "यहाँ पापी कहने का कारण आगे बतावेंगे ॥ १७ ॥ १३ ऊँट पर बि-  
ठाकर शीघ्र बुलाया १४ बगड़ी नामक ग्राम का पति १५ शीघ्रता में तिलक  
करने की १६ नवीन वस्तु नहीं देखकर ॥ १८ ॥ १७ उदयसिंह के ललाट में शं-  
का रहित अंगुली से रुधिर निकाल कर १८ तिलक किया ॥ १९ ॥ जिसकी  
माता ने अपने कुसरों को भोजन कराया १९ जिससे अधम उदयसिंह को उ-  
सराओं ने राजा बनाया ॥ २० ॥ २० उलकी वंश भणाय में दृढ़मत करता है  
२१ पापी २२ ग्राम का नाम, २३ कुल में उत्पन्न ॥ २१ ॥

ताको अनुजराम ४ चोथो ४ तँहँ, तिहिँ कुल मालवँ आमकरा जँहँ ॥  
 दूजो २ उदय २ चउ ४ न बिच दाहनेँ, राजाहुव साधुन रोखारुन ॥ २२ ॥  
 कलिँमलजो इहिँ घोर कुमायो, अब कहियत अवसर तस आयो ।  
 पहिलेँ यह जब हुतो बालपन, जननी तब याकी सह परिजन ॥ २३ ॥  
 जानलगी तीरथ या सुत जुत, दासिन रथ वृख इक १ तब मृत हुत ।  
 स्व प्रतिसीम मग जँहँ बहु सासनँ, नियति कियउ तँहँ तिहिँ  
 वृख नासन ॥ २४ ॥

दस १० दस १० को सहिराया चहुँ ४ दिस, नमिल्यो कहुँ पति ग्राम भई निस  
 सासन ग्राम मिले मंडल सब, तिनमै नमि इक १ वृख संग्यो तब ॥ २५ ॥  
 कहुँ द्विज १ कहुँ चारन दुँविधि करि, मिलि रु झूठ बोले दैहँ मरि ।  
 भेजै ह मन तनहु आजू भनि, बालिँस वके विविध परज्यो बनि ॥ २६ ॥  
 मुल्लहु दै रानी वृख मंगिय, सोहु दयो न नटेहि कुँसंगिय ॥  
 रति रही तत्थहि तब रानिय, अह दूजे २ अलुगनँ वृख आनिय ॥ २७ ॥

१ उस रामसिंह \* का कुल मालवे में आमकरा नामक नगर में है. २ अग्रंकर  
 ३ श्रेष्ठ पुरुषों पर श्रोत्रित ॥ २२ ॥ ४ इसने घोर पाप किया ॥ २३ ॥ दासि  
 यों के रथ का एक बैल ५ शीघ्र मर गया ६ अपनी सीमा के मार्ग में ७ उदक के  
 बहुत ग्राम थे वहाँ पर ८ भाग्य ने बैल को मारा ॥ २४ ॥ ९ अपने पति का  
 कोई ग्राम नहीं मिला १० उस प्रान्त में सप उदक के ग्राम ही मिले ११ नश्र  
 ता करके एक बैल मांगा ॥ २५ ॥ १२ खोटी सलाह करके १३ जंगल १४ मूर्ख  
 ॥ २६ ॥ १५ खोटे संगवाले १६ दूजे दिन सेवकों ने बैल आना ॥ २७ ॥

\* मारवाड़ के इतिहास में लिखा है कि त्रिभूमी सम्वत् १६१९ में राव मालदेव का देहान्त हुआ जि-  
 स पहिले ही मालदेव ने अपने नये पुत्र रामसह जिसको रामराजा भी लिखते है देश बाहिर निकाल दिया  
 क्योंकि रामसिंह पिता (मालदेव) को मारटालना चाहता था, बाकी १० पुत्र रहे जिन में बड़ा उदयसिं  
 ह था उसको माता की अप्रसन्नता के कारण मारवाड़ से निकाल के छोटा भाई चंद्रसेन गद्दी बैठ गया, प-  
 रन्तु रामसिंह और उदयसिंह, बादशाह अकबर के पास पुकारा हुए इसकारण बादशाहने सेना भेजकर चं-  
 द्रसेन को दूसरे ही वर्ष निकाल कर जोधपुर को ग्वाले कर लिया, चन्द्रसेन शिवाग मे रहकर शाही सेना  
 से १६३६ तक लड़ता भिड़ता रहा, फिर उसका वहांत हुए पीछे सम्वत् १६४० में बादशाह अकबर ने  
 राजा का पद देकर उदयसिंह को जोधपुर दे दिया, जिसका इतिहास यहां आगे लिखा है और इस चन्द्र-  
 सेन का वंश इस समय अजमेर के जिले भणाय में है ॥



जब आदरवारी दासिन जुत, द्वारावति सु गई रिसमैं दुत ॥  
 रानीकोहि कहत कति वह रथ, पै निज देसहु दुख लह्यो पथ ॥२८॥  
 इहिंसि सु उदयसिंह दुख इकरयो, सु नृप लैन बड़ला अबसि करयो  
 जिते नटे सासनवारे जन, सासन तिन्ह लिय छिन्नि क्रोधसन ॥२९॥  
 मरुधर रीति यहै दृढ मानै, इक दुख सब सासनधर आनै ॥  
 जातैं द्विजचारनमुख सब जन, संगी हुवतिन के तन मन रसन ३०  
 पुर खैरवा हुतो जब पापी, थिर लै दत्त कुमति तहँ थापी ॥  
 सुनत मिले सासनजीवा सब, तिन्ह इतरन दत्तहु छिन्नै तब ॥३१॥  
 खट्टदरसन इम अखिल खिजाये, इहिंसि मरन आउवा आये।  
 करि इक सिवमंदिर बिचमैं किर, सब बैठे लंघत धरनांसिर ॥३२॥  
 चंपाउत गोपाल मुखनै चहि, सुभटन नृप बरज्यो कुवैन सहि ।  
 मनि न तदपि कह्यो उत धरिमन, धरनांसि तुमहि दिवायो धुत्तनै ३३  
 यह बिखतरु तुम कुमति उपायो, अरु खैहो व फलहु तस आयो।  
 लंघत दिन सप्तम इत लग्यो, भ्रम तब जियन सबन मन भंग्यो ३४  
 अकखयराज बारहठ अप्पन, सुंध्याहरपति बुल्लि महीधन ।

१ शीघ्र ॥ २८ ॥ इस उदयसिंह बालक ने २ माता का दुःख देखा था ॥ २९ ॥ ३  
 सांसणवाले एक का दुःख सबका दुःख समझते हैं ४ ब्राह्मण, चारण, आदि  
 सब लोक साथी हुए ॥ ३० ॥ उस समय वह पापी उदयसिंह खैरवा ग्राम में  
 था ५ सांसणों को लेने की कुमति करी सो सुनकर ६ सांसणों से जीनेवाले  
 सब लोग जब अकखिन हुए तब ७ अन्य लोकों के उदकग्राम भी छीन लिये  
 ॥ ३१ ॥ इस कारण सभी ८ खट्टदर्शनों को क्रोधित किये सो इस (उदयसिंह)  
 पर मरने को आउवा पुर में आये और ९ निश्चय ही एक शिवमन्दिर को भी  
 च में करके १० उपवास करके धरणा देने को बैठे ॥ ३२ ॥ ११ गोपालदास चं-  
 पाउत आदि १२ तुम ही धूर्तों ने धरना दिवाया है ॥ ३३ ॥ १३ चिप का वृत्त  
 १४ अब स्वाद्योगे १५ उपवास करते १६ जीने का भ्रम ॥ ३४ ॥ १७ राजा ने

\* माथाइ में सन्यासी रागावत, नीमावत, हिन्दू साधु, जो विशेष कर देवमंदिरों के पुजारी भी हो  
 ते हैं १ ब्राह्मण २ चारण ३ जंती (जैनमत के साधु) ४ फकीर (यवनमत के साधु) ५ देवताओं के पु-  
 जारे कन्निय, जैसे रामदेवजी के पुजारे तैवर वंश के क्षत्री हैं ६ इन छहों को खट्टदर्शन कहते हैं अर्थात् ये  
 छहों दर्शन करने योग्य हैं, इन्हींको डिंगलभाषा में खटवन भी कहते हैं ।

भेज्यो वह रु कह्यो इम भाखहु, रसां अमंतु लै रु जिय राखहु ॥३५॥  
 अपराधिन संगति पै उज्झहु, गिनि तिन्ह हेय देह तजि गुज्झहु ॥  
 अकखय इतर पठावन अक्खिय, राजा वहहि भोजि हठ रक्खिय ॥३६॥  
 पटगृहतैं सु निकसि नयँ पावन, स्वामि निदिष्ट चलयो समुक्तावन  
 जब नृपको दुंदुभिबादक जो, संगहि गय गोविंद नाम जो ॥३७॥  
 अकखय जब धरनाँ बिच आयो, जाचकँजूह विविध बिरुदायो ।  
 बुल्ले बिरुद चारन १ रु विप्र २हु, छोरन बपुनँ भये हम छिपहु ॥३८॥  
 अकखय सब स्वामीजब अहेँ, वसुंधेसाहि तब खेत बतेहैं ।  
 अहेँ लंघाइ इते प्रभु आये, स्वजन तदपि हम अधिक सुहाये ॥३९॥  
 अकखय कहिय मंडि बिच आसनँ, समुक्तावन आयो नृप सासन ।  
 अब पै मरत १ जाति २ द्विज २ आदिक, मरन १ हित न २ जावन १ पा-  
 सादिक २ ॥ ४० ॥

इम कहि ढहीतँ अकखयहु इनमैं, रहिगो मरन धरन धारिनमैं ॥  
 गह्यो मरन बादकँ गोविंदहु, उत यह सुनत कुपि नैरहंदहु ॥४१॥

अपने बारहठ खूँषियावाड़ के पति अखैराज को बुलाकर. जिनमें अपराध  
 नहीं है वे अपनी १ भूमि लेकर जीव को रक्खो अर्थात् मत मरो ॥३५॥ परन्तु  
 अपराधवालों का साथ २ छोड़ दो उन अपराधियों को ३ त्याग्य जानकर ४  
 दूर से देह को छोड़ने दो ५ अक्षयसिंह ने दूसरे को भेजने के लिये कहा पर-  
 न्तु राजा ने हठ करके उसीको भेजा ॥ ३६ ॥ ६ डेरे से ७ पवित्र नीतिवाला  
 ८ स्वामि की आज्ञा से ९ राजा का नगरची (ढोली) ॥ ३७ ॥ १० चारणों  
 के घाचकों के समूह ने अखैसिंह को ११ उत्साह बढ़ावेवाली स्तुति से बिरु-  
 दाया १२ हम जीघ ही १३ शरीरों को छोड़नेवाले हुए हैं. हे अखैसिंह जब  
 सब का स्वामि आवेगा तब उस १४ राजा को १५ इतने दिन लंघन कराकर  
 थाप इधर आये हो ॥ ३९ ॥ अखैसिंह ने सबके बीच में १६ आसन लगाकर  
 कहा १७ अपनी जातिवाले (चारण) और ब्राह्मण आदि मरते हैं इसकारण  
 मरना ही अच्छा है १८ महलोंवाले (राजा) के पास जाना अच्छा नहीं; अथ-  
 वा महलों में जाना अच्छा नहीं ॥ ४० ॥ १९ ललित होकर २० धरणा लगाने  
 वालों में रह गया २१ गोविन्द नामक ढोली ने भी मरना ही स्वीकार किया  
 २२ राजा भी क्रोधित हुआ ॥ ४१ ॥

मेजि कटार कहाई निर्मय, यहै तुमहु मारहु गुद अकखय ॥  
हरखिलयो सुहु उठि बारहठ, हुव प्रातहि अब मरन फौर हठ ॥४२॥  
जरठ इक्खखाटिकै आयो जहँ, तिहिँ प्रातहि छुव मरन सुन्यो तहँ ॥  
जो चारन भाजिगो घर डरजुत, सदन परनि आयो तब तस सुत ॥४३॥  
पुच्छयो तिहिँ वह करत प्रवेसहि, दैवविलोम वंचयो किम देसहि ॥  
किम हुव सौम उठ्यो धरनाँ किम, जपहु तात उदंत वन्यो जिम ॥४४॥  
भीत जनक बुल्लयो खय होतैं, मरिजैवो न वन्यो सुत मोतैं ॥  
आलय में पातैं भजिआयो, सह दुलही तू दुलहर सुहायो ॥४५॥  
यह सुनि लपित छुराह सु अंचल, चढि देहलि दुलही तजि चंचल ॥  
सुरजन वसन मोर कंकन सह, आयो भजि धरनाँ तस सुत वह ॥४६॥  
अहँ खटलंघि दिवस सप्तम इत, द्विय धरि छुव प्रातहि मरनोहित  
विविध सुरस भोजन बनवाये, इकठौँ सब जिम्मन जुरिआये ॥४७॥  
पति वनत वह दुलह पैइछो, हठ करि नैर्म कतिन हसि दिछो ॥  
परिवेसन पैवहु इम अक्खिय, पिता पुत्र ए दुव रहि असनैँ प्रिय ॥४८॥  
पतरि दुव रतातैं परिवेसहु, इक लें जाह खाय इक एसहु ॥  
इम रिस दुलहु खाटिकेहि आई, पत्रावलि द्वैरही परसाई ॥ ४९ ॥  
उमामूर्ति थप्पी सु पूजि अब, सप्तम दिन वितत जिम्मे सब ॥  
अंवाकी प्रतिमाके अंगैँ, ज्वलन हविरैय धूपर जहँ जगैँ ॥५०॥

१ हे अर्जुनसिंह यह गुदा में मारना २ हठ के समूह से प्रभात ही भरना निश्चय हुआ ॥ ४२ ॥ वहाँ पर एक ३ बृद्धा खेड़िया जान्वा का चारण आया ४ वनके गह में उसका पुत्र व्याहकर आया ही था ॥ ४३ ॥ ५ देश का उलटा भाग कैसे गया ६ सेल कैसे हुआ ७ हे पिता जैसा वृत्तान्त हुआ सोवे तैसा करो ॥ ४४ ॥ ८ लज्जित ॥ ४५ ॥ ९ लज्जित होकर वह गठजोड़ा छुटाकर १० उक्त भाग जानेवाले खेड़िया जान्वा का पुत्र ॥ ४६ ॥ ११ छः दिन का लंचन हो कर १२ भर जातवें दिन ॥ ४७ ॥ १२ पानि में सुला १३ हसी करने १४ परामने के १५ समग की १६ भोजन के प्यारे हैं ॥ ४८ ॥ इसकारण हमको दो १७ पत्रावली परोसो १८ खेड़िया जान्वा के दूढ़ को इसकारण क्रोध लाया और १९ दो ही पातले परोसाई ॥ ४९ ॥ २० देवी की मूर्ति २१ अग्नि में मृत का धूप २२

बाद्य पटह<sup>१</sup>हुं<sup>२</sup>दुभि<sup>२</sup>मुख वर्गै, लक्ष्मन विध पद्यन नुति लगै ॥  
 भीरु सुनत सिंधुन स्वर भगै, मरुप उदय पीठहु डगमगै ॥ ५१ ॥  
 अस्त्रन मैं हु उमा आवाहन, करिकरि कछि जजन लगै जन ॥  
 बैठ सवन निसा सु बिहाई, इम इच्छित बेला ढिग आई ॥ ५२ ॥  
 अर्द्धउदित रवि जानि तजन अंसु, सिवंगृह सिर थप्यो गोविंद सु  
 खिल रहि मैं लखौ इतनौ खय, इम गल छेदि गिरयो सु इनोदय  
 पिक्खि गिरत गोविंदहि दृढपन, जिततित मगनलगे जाचकजन ॥  
 वह खाटिक दुल्लह बिच आयो, बप्पै<sup>१</sup>तनय<sup>२</sup>जुग<sup>२</sup>सरन बतायो ५४  
 यहमेरी<sup>१</sup>रु जनककी<sup>२</sup>है यह, बिधि इम छिन्न भिन्न किय विग्रह ॥  
 सवन अरज किय इष्टदेवसन, जिम हम भरत सरे नहिं द्वै<sup>२</sup>जन ५५  
 जीवहिं इक<sup>१</sup>दुरसा<sup>२</sup>अह्वा जैकि, तो इहिं नृपहिं लै जावे खल तक ॥  
 जीवहिं यह दुल्लह<sup>२</sup>दूजो<sup>२</sup>जिम, तियजुत आयु समेय बिलसै तिम ५६  
 उमा सवन विन्नति मन्नी यह, जुग<sup>२</sup>ए बचे छिन्नभिन्नहु जह ॥  
 जन खिल सृत<sup>१</sup>धायल हुव जानहु, मानव लक्ष<sup>१</sup>००००० अधिक  
 तहँ मानहु ॥ ५७ ॥

१. डोल नगारे आदि २ छन्दों में देवी की स्तुति होती थी ३ सिन्धुवी रागिनी  
 के स्वर लगाने से अर्थात् बड़े राग के दोहे लगाने से कायर भागने लगे ४ मा-  
 रवाड़ के राजा उदयसिंह का ५ सिंहासन छिलने लगा ॥ ५१ ॥ अस्त्रों में देवी  
 का ६ आवाहन (निमन्त्रण) ७ पूजन करने लगे ८ आवाहना समय ॥ ५२ ॥ आ-  
 ध्या सूर्य उदय होने पर ९ प्राण छोड़ना जानकर १० शिव के मन्दिर के शिखर  
 पर ११ उस गोविन्द नामक राजा के नगरवासी (नगरखाने की नौकरी करने  
 वाले) दाली को बिठाया १२ उस गोविंद ने सोचा कि मैं बाकी रहकर इनका  
 नाश नहीं देखू इसकारण गला काटकर वह सूर्य १३ उदय होते ही गिरा ॥ ५३ ॥  
 वह खेड़िया दुल्लह सेवक बीच में आया और १४ पिता और पुत्र दोनों का  
 मरना बताया अर्थात् एक धाव अपने नाम का और एक पिता के नाम का  
 दोनों अपने ही शरीर पर मारे ॥ ५४ ॥ १५ शरीर का १६ दो जने साथ नहीं  
 चले अर्थात् नहीं मरे ॥ ५५ ॥ एक तो दुरसा आढा १७ गिरकर जी जावे १८  
 तो राजा को दृष्ट देखकर लजित करे ॥ ५६ ॥ १९ देवी ने ॥ ५७ ॥

बपु गोविंद तज्यो बिनुवाचक, जिहिं कुल हम किन्नो निज जाचक  
लखि बध यह फटिगो सिबलिंगहु, हठि नृप बहुरि भक्त दिय द्विगहु  
भूपहिं सुनि मरतहु नहिं भाये; पीठिबिंदारन अनुगं पठाये ॥

जब पल्ली पुरपति परिकर जुत, चहि गोपालदास चंपाउत ॥ ५९ ॥  
अहो रहि रु रोकि नृप अनुगत, पीठि भजावतभयो निबहि पन ।

इम खल नृपपल्लीहु उतारी, धीर सु बहि गोपाल सु धारी ॥ ६० ॥  
संग निजहि लेकैं जाचक सब, ताजि पल्ली मेवार सु गो तब ।

उदयरान जो पट्ट याहि दिय, सु सबन वंदि स्वयंमत बिलसिय ६१  
इम गोपालदास चंपाउत, जाचक अखिल निवाहे जसजुत ।

जब खल नृप मगिहै तब जेहैं, द्विजसूतन पुनि थान दिवैहैं ॥ ६२ ॥  
करि भुव त्यागै बारहठ संकर, बीकानैर तबहि गो बुधवर ।

पाइ पलोधिग्राम दुवसतदसर १०, खिल खटद्वरन जिवाधो ले जस  
परदुखदुखित देखिइहिं भूमिपै, पुरनागोरत्रिलकख ३००००० पटादिय

अखयमरयो संकरकठिगो इम, तहँ गल भिन्न वच्यो दुरसा  
इतिम ॥ ६४ ॥

न हुव नाममालानृपन्यारो, इक संदं जु भदोरेवारो ।

बहुदिन खल सु जातिके बाहिर, जिहिं अपराध रह्यो जगजाहिर ६५

१ गोविंद ने बिना पोले धारीर छोडा "गोविंद को मन्दिर के ऊपर बिठाया था  
कि स्वयं उदय होने की खबर देवें तो सब भरे, सो गोविंद ने मुख से कहने में सब के  
भरने का पाप समझा इसकारण मुख में कुछ नहीं कहकर स्वयं उदय होते ही  
आप अपना गला काटकर समझाया" उस गोविन्द के कुल को हम (चारणों)  
ने जाचक बनालिया २ फिर हींग का भाता दिया ॥ ५८ ॥ ३ निकालने को ४  
संघकों को भेजे ५ पालीपुर का पति ६ परगह साहेब ॥ ५८ ॥ ७ राजा के से  
पकों को ८ इसकारण उस दुष्ट राजा ने पाली उतार ली ॥ ६० ॥ ९ स्वयं  
होकर ॥ ६१ ॥ १० चारणों को ॥ ६२ ॥ ११ भूमि जोटकर १२ अंठ १३  
बाकी रहे जिन चट्टनको जिलाप या न्याय में जिनको चट्टन कह्य है नि  
नीको चट्टन भी कहते हैं ॥ ६३ ॥ १४ राजा ने १५ अचयसिंह मारा गया  
इसकारण संकरदान निकल गया १६ दुरसा भाडा ॥ ६४ ॥ १७ सांद शाखा

॥ दोहा ॥

पापी नृप हुव जोधपुर, इम सु उदय अभिधान ॥  
 नामतज्यो जाको नरन, मानि अवाच्य समान ॥ ६६ ॥  
 इन १२मित सुत हुव उदयकै, कुलधर तहँ जसकाम ॥  
 सूर १ कृष्ण २ दलपति ३ सहित, माधव ४ सगत ५ सनाम ॥ ६७ ॥

॥ बैतालः ॥

भगवानदास ६ रतन ७ पुनि जगनाथ ८ भूपति ९ नाम ॥  
 नव ९९ भये कुललुहि जनक रु महिप चउ ४ प्रभुराम २० ३ ४ १  
 पहु सूर १ रु पहु रु कृष्णकुल नृप कृष्णगढ अब आहि ॥  
 रतलामआदि नरस दलपति २ वंस मालवमाहि ॥ ६८ ॥

॥ षट्पात् ॥

माधव ४ चोथो ४ महिप प्रथित हुव पुर पीसंगनि ।  
 महर्घो १ जुन्या २ प्रमुख नदी खारी तस कुल खानि ॥  
 ए चउ ४ नृप खिल इतर पंच ५ कुल अबपदिचानहु ।  
 सगतसिंह ५ खैरवा सु प्रभु १ २ ० ३ ४ प्रमानहु ।  
 गोइंदगढ १ रु बड़ली २ बहुरि बज्जथल ३ खैरवा ४ दि बहु ॥  
 भगवानदास ६ कुल बस भनत सेल त्रिक ३ ज ग्रामन सुपहु ६९

दोहा ॥

लहँलुट्टी १७ अरु चोसला २८, निडोठी ३१ सुख नाम ।

का चारण भदोरा नामक ग्रामवाला राजा को छोड़कर चारणों की नाममा-  
 ला में शामिल न हुआ वह दुष्ट बहुत दिन तक जात बाहर रहा ॥ ६९ ॥ १  
 उदयसिंह नामक २ नहीं कहने योग्य समझकर लाकों ने उसका नाम लेना  
 छोड़ दिया ॥ ६९ ॥ ६७ ॥ ३ पिता के कुल की वृद्धि करनेवाले ४ चार राजा  
 हुए ५ हे प्रभु रामसिंह! ६ अब कृष्णगढ में हैं ॥ ६८ ॥ ७ प्रसिद्ध ८ आदि ९  
 उसके कुल की खान खारी नदी के पास है अर्थात् उपरोक्त सब ठिकाने खारी  
 नदी के समीप हैं १० हे प्रभु रामसिंह! सगतसिंह के कुल को खैरवा में जानो  
 ११ बाकी के तीन पुत्रों के वंशवाले ग्रामों के ठाकुर हैं ॥ ६९ ॥ १२ ग्राम का  
 नाम है जिसको लैलोटी कहते हैं १३ बीठोठी आदि

क्रमतः ए नव९ उदयकुल, रमो भजत अविराम ॥ ७० ॥

पीछें छिपहि पाप पकि, मरहिँ सु उदय महीप ॥

तखत लंहहिँ सुत सूर१ तस, दुँरित दूर कुलदीप ॥ ७१ ॥

अकबर३७१ निज रनथंभ इत, थपि रु जावत थान ॥

पठयो जित्तन हड्ड६१ पँहु, गढवारी गुडवान ॥ ७२ ॥

इतिश्रीविंशभारकरे महाचम्पूके पूर्वायणो पठराशौ वीतिहोत्रव-  
सुधेश्वरवीजव्याख्यानवीजहड्डाधिगडस्थिपाल १५५ वंशयानुवंश्यवि-  
हितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे चि-  
त्रकूटाधीशमहाराणोदयसिंहस्योदयपुराभिधनवनगरादयसागराख्य  
तडागनिर्माणा १ उदयसिंहस्य विंशतिपुत्रेषु नवसूनुसंततिकथन २  
योधपुराधीशरावमालदेवसूनु पट्टपपुत्रचन्दसेनदायापहतिपुरःसरं त-  
दनुजोदयसिंहसिंहासनसमारोहण ३ सातुस्तीर्थाटनसमयवृषभंदा  
नारकीकारकुपितोदयसिंहस्य ब्राह्मणचारणादिभगपहरण ४ धरा-  
पहरणाकुपितब्राह्मणचारणादेराउवाभिधयाम्भेऽनशनजतोत्तरमात्मघा-  
तेन लक्ष्मणुप्यमरण ५ अवशिष्टब्राह्मणादीनां गोपालदासचाँपावत

१ लक्ष्मण का खेवन करने हैं अथवा आदि करत हैं २ निरन्तर (विश्राम रहि-  
त) ॥ ७० ॥ ३ जीज ही इस पाप का फल पककर ४ पाप दूर करके ॥ ७१ ॥ ५  
हाथों के राजा को ॥ ७२ ॥

अविंशभारकर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण  
वंशवर्णन के अंतर्गत लताधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की जान्वाओं की  
कथा बताने के समय के वचनों में बुन्दी के रूपनि सुरजन के चरित्र में चित्तोड़  
के महाराणा उदयसिंह का उदयपुर नगर के नवीन राजधानी और उदयसागर  
नामक तालाब बनाना १ उदयसिंह के भीतर पुत्रों में नौ पुत्रों के कुल की वृद्धि  
का जयन २ जोधपुर के राजा मालदेव का मरान्त में होने पर पाटली का एक  
भिडाकर लोटे उदयसिंह का राजा होता ३ सातु के तीर्थाटन समय वृषभ  
देना आखीकार करने के कारण जोधिया होकर उदयसिंह का ब्राह्मण और  
प्राण आदि की उदक जूमि उतारना ४ इन खटवजेन का क्रोडिग होकर आ-  
उवा शाम में शान दिन का बरणा लगाने का उक्त मनुष्यों का आत्मघात  
करना ५ शेष याचकों को मेवाड़ में लेजाकर गोपालदास चाँपावत का अपना

कृतमेदपाटनयनेन निर्वाहकरणा ६ बीकानरेशदत्तदशोत्तरद्विशत-  
२१० ग्रामप्रदानेन ब्राह्मणशंकरदानस्य षड्वर्णापालन ७ उदयसिंह  
नृपतिपुत्रद्वादशके नवानां वंशवृद्धिकर्णनं तेषु च चतुर्णां राज्यकरणां  
सर्वेषां च वंशजस्थानसूचनं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥ आदितो नवत्यु-  
त्तरशततमः ॥ १९० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुर्जन१९०।१इम जिन अष्टि१६१४सक, सत्त बचन अनुसार ।

लै आश्रय मुगलैस६कौं, दिय रनथंभ उदार ॥ १ ॥

सर्ज भरोसाके सुभट, थप्पि अचल रनथंभ ॥

पुर दिहिय प्रस्थानको, अकबर३७।१किय आरंभ ॥ २ ॥

साह कहिय तब सुर्जन१९०।१हिं, जो गुडवान विजेय ॥

जो जयकरि आवहु तुमहिं, देस इष्टं तब दैय ॥ ३ ॥

कुम्भहिं तब सुर्जन१९०।१कहिय, साह बलहु कछु संग ॥

मंगै वा नहि मंल मत, अष्प बदहु नय अंग ॥ ४ ॥

कुम्भ कहिय जो नृप करहु, इच्छितदेसनआस ॥

चित्त सहाय न तो चहहु, पाँतिप करहु प्रकास ॥ ५ ॥

हीरकसू ॥

जवँकरि करि सिक्ख तबहि सुर्जन१९०।१जवनेसतैं ॥

पहिलैं बुंदिय पधारि दल सब लिय देसतैं ॥

और से निर्वाह करना ६ बीकानेर के राजा के दिय हुए २१० ग्रामों को देकर  
ब्राह्मण शंकरदान का खटब्रन को पालना ७ राजा उदयसिंह के बाराह पुत्रों में  
नौ का वंश वृद्धि करना और उनमें चार का राजा होना तथा सबके वंश के  
स्थानों की सूचना करने का सातवाँ ७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक  
सौ १९० मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ तैयार करके ॥ २ ॥ २ वाञ्छित देश ३ फिर देवेंगे ॥ ३ ॥ ४ बादशाह  
की सेना भी ॥ ४ ॥ ५ वाञ्छा किये हुए ६ पराक्रम ॥ ५ ॥ ७ शीघ्रता से



दूदा११११अरु भोज१९११२दुवरहि रच्छक धरि देसमें ॥

सूरहु कति तिन्ह सहाय रक्खिय अवसेसमें ॥ ६ ॥

नववय गृह रक्खि इमसु माइ पयनमें नम्यो ॥

सुर्जन१९०१२समुचित अनीक संगत पुनि संक्रम्यो ॥

रोप रु दग अष्टि१६२५लगत संबत ऋतुराजमें ॥

हंकिय इम हड्ड६१नृपति कोविद जमकाजमें ॥ ७ ॥

बारी गढ गय सबेग गंजत गुडवानको ॥

घेरि रु जरि नालि जाल मांडिय घमसानको ॥

लोपन गढ गोहन जर तोपन दगि लगगयो ॥

मच्छत भरमार भार भूतल डगमगयो ॥ ८ ॥

कसमसि फनदेस सेस१कुंकरि हुव कुंडली ॥

आसत किरि जास२मचकि जानुनबिच टुंडली ॥

पत्थरनिभ अंग समिटि कच्छपचिपटो परयो ॥

प्रोथित अतली३दिपुट७न संकट घन स्वीकर्यो ॥ ९ ॥

गोहन बमती प्रलंब नालिन अरि भू ग्रसै ॥

निठिन नरहल्ल१गज टल्ल२न पुनि निरखसै ॥

मानहु बनि आसक निजनासक निगिलै मही ॥

कहन इत जानि निज कि पीलुव प्रबिसे पैही ॥ १० ॥

१ घाकी ॥६॥ २ उचित ३ सेना साथ लेकर ४ चला ५ चसन्त ऋतु में ६ षतुर. ॥ ७ ॥ ७ तोपों की जाली लगाकर ८ युद्ध रचा ९ तोपों की भरमारी के भार से ॥ ८ ॥ १० फणों को हिलाकर शेषनाग ११ अपने अंग को कुण्डलाकार करके १२ वराह को आस देने लगा १३ वराह ने उससे मचककर १४ घुटनों में १५ तुण्ड कर ली १६ अपने अंगों को समेटकर कच्छप पत्थर के समान चिपटा होगया १७ प्रसिद्ध अथवा घोड़ों (घोड़ों की दौड़) से १८ अतल आदि नीचे के लोकों ने ॥ ९ ॥ १९ गाले उंगलती हुई लम्बी तोपों के पहियों को २० सो मझों अपना नाश करनेवाली जानकर भूमि उन तोपों का आस करके गिटती है और २१ हाथी उनको अपनी जानकर घुसे छुए २२ पहियों को निकालते हैं ॥ १० ॥

जामशु इकशठाम दगत तोपन पकरै जथा ॥  
 परिपरि छिति दूर पूर पलपल पलटैप्रथा ॥  
 संतत तम रत्तिशदिवसरधैति विवस संकुल्यो ॥  
 डरशन गढकेरन मन आन्हिक विधिमें डुल्यो ॥ ११ ॥  
 भासत इकधुंधि भूशनभरप्रसरीभई ॥  
 दिनकरँ उपरार्ग मनहुँ खँ ग्रसि प्रथनाँ दई ॥  
 दिग्गजः सुख ईह न रत चीहँ करत दिग्गजीर ।  
 लीह डरत धीह झरत सीहँ परत ज्यों लजी ॥ १२ ॥  
 पावत इकश हथिय गढ तोपन उडिके परे ॥  
 पावत उतर पंथ परन दुग्ग बैरन जे परे ।  
 बाहिर कति गोडनगन सौमिकँ रन बिथरै ॥  
 सुर्जन१९०१ भट सज्जितकरि लाजित तिन्हँ सहरै ॥ १३ ॥  
 बावन ५२ दिन हड्ड ६१ लरत गढविच बल वित्तयो ॥  
 जोधन रतिवाहहु तनि गौडँप नहि जित्तयो ।  
 कोटहु ढहि ठामठाम पैठन पदवी करी ।  
 निश्रेनिन दै तब नृप उच्च चढन उच्चरी ॥ १४ ॥  
 सासकँ सह व्याकुल तब बारीगढ सूर है ।  
 दुर्जन इम दै कहाइ सुर्जन१९० रन दूर है ।  
 तो हम बचिबो बिचारि संभरै सरनौ तकै ॥

१ रीति २ निरन्तर ३ दिन में ही रात्रि घालकर अंधेरा भरगया ४ अंधेरा हो-  
 जाने के कारण सन्ध्या करना भूलगया ॥ ११ ॥ ५ अंधेरा ६ फैली हुई ७ सूर्य के  
 ग्रहण में मानों ९ खग्रास का १० विस्तार दिया ११ दिग्गजोंको सुख की इच्छा  
 नहीं होने से दिग्गजकी स्त्री १२ चीख मारने में रत हुई, नगरों के उत्कट शब्द  
 से सीमावधि डरन लगी १३ जैसे सिंहके ऊपर पड़ने से लज्जित होये तैसे वे  
 दिशाओं की हथिनियें लज्जित हुई ॥ १२ ॥ १४ गढ के १५ कोट १६ रतिवाह १७  
 सजे हुए ॥ ११ ॥ १८ रात्रि का युद्ध १९ गौड़ क्षत्रियों का पति २० मार्ग (पग  
 डगड़ी) ॥ १४ ॥ २१ मालिक सहित २२ चहुवाण का शरण

अप्पहु गुडवान तउ न अप्पहु इम ओदकै ॥ १५ ॥  
 जो अब बिगैरै न मान १ थानहु नहि जाइ २ तो । ७  
 अप्पहिं प्रैनमै चुहान गौडनगन आइ तो ।  
 सुर्जन १९०।१ यह सुनि बिचारि गौडन मत स्वीकरयो ।  
 चीरन गढ़ बीरन कति धीरन तँहँ उच्चरयो ॥ १६ ॥  
 भाखिय नृप मारन १ सन धारन सरन २ भलो ।  
 चारन सुनि कारन इन्ह लारन न किम लैचलो ।  
 अप्पनं अरजीसन इन्ह सासहु भुव अप्पिहै ।  
 थान जु गुडवान सु सुनि गौडन घर अप्पिहै ॥ १७ ॥  
 अक्खि तँहँ राम १८९।२ अनुज पुच्छहु पहिलै पहुँ ।  
 लावहिं १ ढिग कै इन्ह हनि आवहिं २ भनिये लहूँ ।  
 संभर सुनि विन्नति लिखि आसय लिय साहको ।  
 लावन १ हनि आवन २ सन सूचिय जस लाहको ॥ १८ ॥  
 पुब्बहु त्रय ३ बेर कटक गौडनपर प्रेरयो ।  
 हटिहटि उलटो गयो सु काहुन जय हेरयो ।  
 काहु न मित दम्भन व्यय कोसनसन लगगयो ।  
 भी करि रन गौडन मन गर्वन तउ भगगयो ॥ १९ ॥  
 सुर्जन १९०।१ तिन्ह लावन १ हनि आवन २ दुव २ स्वीकरै ॥  
 तो अब गहिलावन तिन्ह धी हम जह महीधरै ॥  
 साहहु यह सोधि रीति सुर्जन १९०।१ प्रति सूचई ॥  
 आनहु गहि तो इम अति जानहु जस हे जई ॥ २० ॥  
 लिखि यह फरमान नृपहु गौडनदत्त लेख्यो ॥

आप गुडवान नहीं दोषे हसकारण १ डरते हैं ॥ १५ ॥ २ नमस्कार करें ॥ १६ ॥  
 ३ हलकारों से कारण सुनवर ॥ १७ ॥ तहिं ४ राजा से पूजा ५ शीत ॥ १८ ॥ कि-  
 सीने भी ६ न्यून खर्च नहीं किया ७ भय ॥ १९ ॥ २० ॥ ८ गौड़ों का पत्र लिखा

दै बच निज इष्टे उनहिँ अप्पहु लिखि त्यों दयो ॥  
 गौडहु तजि बारियगढ नतै तब नृपपै गये ॥  
 भनिभन्ति सरनौँ स्वकीय बिन्नति रचतेभये ॥ २१ ॥  
 गौडन तिन्ह दै बिसास भूपहु गढमै गयो ॥  
 अकवर ३७१ ध्वज गड्डि आन फेरत जब उन्नयो ॥  
 नृप तँहँ निजनाम पोलि उच्छिँत इक १ निर्मई ॥  
 भौँ तिम दिनदिन बिसेस बारियगढकी भई ॥ २२ ॥  
 पोलि १ सु बनवाइ पतित साँल २ हु सुधराइकै ॥  
 लकखनमित जनपद कर जन पद कर लाइकै ॥  
 घन जिम जयके निसान १ दुँदुभि घुरवाइकै ॥  
 टल्लन १ थरकाइ दुर्ग चामर २ दुरवाइकै ॥ २३ ॥  
 गौडन जुत हंक्रिय इम जय करि गुडवानमै ॥  
 दिल्लिय पहुँच्यो उदार प्रतिपल अतिप्रानमै ॥  
 दिल्लिय बिच थाँन यहाँ सो न लियउ संभरी ॥  
 बाहिर करि दल मुकाम निर्भय तिथिही बरी ॥ २४ ॥  
 जानिय बिनुबंधन लखि गौडहिँ पकरैँ जथा ॥  
 पातल कबहु खिजैँ हु अप्पन कुलकी प्रथा ॥  
 यौँ लखि भुवैँ १ काल २ नगर बाहिर नृप उत्तरयो ॥  
 अवसर गुडवान बिजय अकवर ३७१ उपदौँ करयो ॥ २५ ॥  
 अखिखय नृप गौड हुकम हे प्रभु तव आदरयो ॥

१ अपमे इष्ट का वचन देकर २ नञ् होकर ॥ २१ ॥ ३ उठा ४ ऊँची बनाई ५ क्रान्ति  
 ॥ २२ ॥ ६ डार ७ पड़ी हुई शाला को सुधरा कर ८ देश के लाखों रुपयों का हाँ  
 सिल और मनुष्यों के हाथ अपने पाँवों में लाकर (लगवाकर) ९ नगरे "यह  
 निशान शब्द नोयत का और दुन्दुभी शब्द नगरे का वाचक है" १० बड़े भन्ने  
 खड़े करके ॥ २३ ॥ ११ अत्यन्त बल में १२ दिल्ली में स्थान नहीं लिया १३ शर  
 यागत की रक्षा लेकर ॥ २४ ॥ १४ देशकाल देखकर १५ नज़र ॥ २५ ॥

बंधव कति हे \*विलोम विग्रह तिन बिस्तरयो ॥  
 तिन्ह मरतहि गौड़नृपति अप्पन सरनों तक्यो ॥  
 बारीगढ साह आन फेरन पहिलैं बक्यो ॥ २६ ॥  
 देसहिँ कर देसरलेत शोकन हमको रदई ॥  
 सासन बस जो कही सु लाजित सिरही लई ॥  
 बारीगढ बाहिर निज परिजन सब बुल्लये ।  
 द्वारन निज रक्खि हमहि केवल रहिबेदैये ॥ २७ ॥  
 अगगहु पठये अनीक तब जब मिलिबो तक्यो ॥  
 इतरन अटक्यो यह तिहिँ आगैस पुनि ओदक्यो ॥  
 पिसुनन मत श्रुति परैं सु अप्प न उर आनिये ।  
 गौड़न पति पय लगाइ मोदित सनमानिये ॥ २८ ॥  
 संभरपर रीझि साह सूचित सब स्वीकरयो ॥  
 याकँहँ कृत लेख देय अप्पन पुनि उच्चरयो ।  
 यह सुनि फरमा बजीर १ मुनसी २ प्रति मंगयो ।  
 संतवर विरचि सु समुद्र दिल्लियपतिकों दयो ॥ २९ ॥  
 बावन ५२ मित जनपंद लिपि ताबिच पहिलैं बनी ।  
 भाखिय अकबर ३७१ वरं को भुव तुमरो भनी ॥  
 कासी १ सत्रसों वर नृप अक्खिय हमरै कहैं ।  
 मरतहि जन जत्थ मुक्ति लाह सु सहजें लहैं ॥ ३० ॥  
 दहदह ६१ हिँ सुनि एह साह अकबर ३७१ अति तुष्ट है ॥  
 जुहु दिय बढती लिखाइ कासिय १ हित जुष्टं व्हे ।  
 जंपिय क्रिय माफ तुमहि कासिय १ हद हाजरी ।

गौड़ के कितने ही भाई \* विरह्ये उन्हींने युद्ध किया ॥ २६ ॥ १ अपने सय  
 सेवकों को बुलाए ॥ २७ ॥ २ अन्य लोगों ने रोकते उस अपराध से ४ डरा  
 ५ चुगलों का जत जान पड़े उसको आप मत मानो ६ प्रसन्न होकर ॥ २८ ॥ ७  
 फरमान ८ शीघ्र छाप लगाकर ॥ २९ ॥ ९ देशों की लिखावट १० तुमको अष्ट  
 भूमि कौनसी दीक्षती है ॥ ३० ॥ ११ हित में प्रीति करके

चाहत हित सद्धु खिल बावन ५२ की चाकरी ॥ ३१ ॥  
 जूनपद तब नृप छबीस २६ कासियदिग जँच्चये ।  
 दलः करि इतके छबीस २६ दलबिच रहिबेदये ।  
 इहिं क्रम फरमान अपर २ लिपि जुत करवाइकैं ।  
 लेख सु दिय सुर्जन १९०१ हित घन हित मन लाइकैं ॥ ३२ ॥  
 पदवि रावराजा निज करि हय पँट अप्पिये ।  
 भूखन अरु हेति पंच सहँस हु मुनसब दिये ।  
 अकबर ३७१ बर बैभव इम सुर्जन १९०१ हित अप्पयो ।  
 बारीगढ गौडनपय लाइ रु बहुग्यों दयो ॥ ३३ ॥  
 अग्रज १ हित बुंदिय इत मध्यकुमर आइकैं ।  
 भोज १९१२ सु मिलिजावहिं दुन खटपुर निस भाइकैं ।  
 राजकुमरि १९१२ भोज १६१२ रमनि बुंदिय विमना रहैं ।  
 अच्छ न बपु आकृति इम चित न तिहिं जो चहैं ॥ ३४ ॥  
 हुव रन रनथंभ तबहु मध्यर कुमर पैत वहाँ ।  
 ही वह कुमरानि न्हाइ पति रित अँनुरत्त वहाँ ।  
 अँग्रज १ तिय देवर तँहँ राखिय निस इक १ ही ।  
 गर्भ स्थिति ताहि रजनि देवरजुवती गही ॥ ३५ ॥  
 प्रातहि चढि गो कुमार भोज १९१२ सु अपनी पुरी ।  
 क्रम करि इत बुंदिय वह गर्भस्थिति अँकुँरी ।  
 सायक दग सोलह १६२५ सक सावन ५ दलः स्वेत १ मै ।

(१) श्री भावन परगनों की चाकरी नाथो ॥ ३१ ॥ २) भागे, उन बावन परगनों को  
 ३) छबीस परगने इधर बुन्दी के समीप उपत्रमें रहने दिये ४) अन्य ॥ ३२ ॥ राव  
 ५) देकर ६) हाथी ७) वस्त्र ८) अष्ट ॥ ३३ ॥ ९) धर बुंदी में मध्यम कुंवर  
 १०) भोज की स्त्री बुन्दी में उदास रहती थी ११) उसके  
 १२) शरीर की आकृति अच्छी नहीं थी ॥ ३४ ॥ १३) वहाँ गया १४) प्रीतियुक्त १५) बड़े  
 भाई की स्त्री ने ॥ ३५ ॥ १६) उठी १७) आग के शुरू पक्ष में

चउदसि १४ जनम्यौ कुमार गणकन खिन चेतमै ॥  
जयवति १८८।१ नृपमाइ जवहि मोहित महं मंडयो  
द्वेय सु बहुस्वापतेय मग्गनगनको दयो ।  
दुर्जनसल्ल१९१।१ हु भतीज जनि सु वसु१ भूर दये ।  
बुंदिय महके बिनोद भोज नन बढतेभये ॥ ३७ ॥  
सुर्जन१९०।१ अब दिल्लिय इम नत्तिय जनम्यौ सुन्यौ ।  
लकखन करि दान इतर दानन बढिबो लुन्यौ ।  
नत्तिय अभिधानहु नृप रत्न १९२।१ हि चहि रक्खयो ॥  
ए हहि गणकनअधीस होवहि इम अक्खयो ॥ ३८ ॥  
अति जस लहि सिक्ख बहुरि बुंदिय नृप आत भो ।  
जेठो १ सुत सम्मुह तस पत्तनसन जात भो ।  
पहु करि पुरमै प्रवेस पय परि पैनमी प्रसू ।  
बुल्लि सु सुतसुत बिथारि बलि मह वक्खस्यो बैसू ॥ ३९ ॥  
बुंदिय तव आइ भोज१९१।२ खटपुरसन वेगही ।  
वंदित निज तौत१ आत२ आसिखै सुखमो वही ।  
नूतन नृपमाइ पुब्ब सरै १ मंदिर २ निर्मये ।  
दोउशन इक१ उच्छव जव संचयै खुलिवे दये ॥ ४० ॥  
पलवल जुहि मैनन किय तारागढ पुब्बघाँ ।  
हड्ड६१ नपति माइ हाल विरतुत किय ताल१ हौ ।  
लकखन खनिवे लगाइ दीनन अचलवदै ।

१ज्योतिषियों के॥३६॥२उत्सव३धन ४भतीज के जन्मपर ५बुंदी में आनंद और  
गोत्रें बहुत हुई; वा बुंदी में तो आनंद बहुत हुआ परंतु भोज को विशेष नहीं  
क्योंकि यह पुत्र दुहागिन स्त्री के हुआ था ॥३७॥ ६पोते को ७ अन्य राजाओं  
के दान चढने को काटदिया ८ज्योतिषियों ने कहा कि यही राजा होवेगा ॥३८॥  
९पुर से१०माता को नमस्कार किया११धन दिया॥३९॥१२पिता को१३ आशीर्वाद  
की१४शोभा धारण की१५तालाब १६धन॥४०॥१७तालाब जो मीनों ने तारागढ  
के पूर्व दिशा में किया था वहां बंढा तालाब बनाया १८ खोदने को

रक्खन निज किति दम्भन लक्खन निकुरं ब दै ॥ ४१ ॥  
 ताल १ सु गहिरो खुदाइ अंकिय निजनामते ॥  
 पल्लिहु गिरि प्रमान तास बंधिय विधि बामते ॥  
 बापीसम द्वार तास सेतुहि विचबंधयो ॥  
 सीढिन सुधराइ पंति पद्वर पथ संधयो ॥ ४२ ॥  
 अंदर अपसव्य १ सव्य २ रक्खिय दुवर ओवरी ॥  
 गीबीजक लिपि सव्य २ सुद्ध पत्थर तहँ बिस्तरी ॥  
 अच्युतगृह बीजक लिपि तत्थहि खुदवाइकै ॥  
 प्रतिवृति हरिकी पुनि दिय मंदिर पधराइकै ॥ ४३ ॥  
 गोलहा कृत बापी दिग सिंखदिस २ हरिगेह जो ॥  
 नूतन बिरच्यो अपुव्व जयवति १८८१ अति नेह जो ॥  
 लच्छो १ सह नारायनरे थप्पिय तहँ लाडसौं ॥  
 उच्छित्तपन मंदिर वह छन्न न कहँ आडसौं ॥ ४४ ॥  
 नव इम सर १ मंदिर २ जुग २ अर्जुन १८८१ तिय निर्मयो ॥  
 भूपति अब आतहि तिन्ह उच्छव विधिसौं भयो ॥  
 व्यंय परि धन लक्खन सर १ मंदिर २ दुवर यौं बनें ॥  
 लक्खन पुनि उच्छव लखि घाँघाँ उघरे घनें ॥ ४५ ॥  
 सायक दग सोलह १६२ सक उच्छव यह इद्धभो ॥  
 सुनिसुनि जस जस बिसाल बैरिन हिय विद्ध भो ॥  
 दूदा १९११ दुभगासुत इम ताहि न नृप आदरै ॥  
 वैरा १ स्याम २ नकै १ बक १ धोगहु छवि नाँ धरै ॥ ४६ ॥

\* समूह ॥ ४१ ॥ १ पालमें ॥ ४२ ॥ १ दाहिनी + बाँई ॥ ओवरी में जुद्ध पत्थर पर उसका  
 बीजक लिखाया १ विष्णु भगवान् के मन्दिर का बीजक उसी में खुदवाकर स्मृति  
 ॥ ४३ ॥ ३ गोलहा की बनाई हुई बावड़ी ४ अग्नि दिशा में ५ लक्ष्मी सहित ६ ऊँचे पन  
 में ॥ ४४ ॥ ७ खरब ८ दिशा दिशा में ॥ ४५ ॥ ९ बटा उत्तम ब्रह्मा १० जिसका बडा  
 पशु सुन सुनकर ११ वेधन हुआ १२ दुर्जनशाल दुहागन का पुत्र था इसका  
 १३ कालारुद्र १४ बाँकी नासिका ॥ ४६ ॥



भोज१९१२आसेचनकरु बल्लभ तियकै भयो२ ॥  
 तकि इस अति नेह ताहि लालनपन सो लयो ॥  
 तीजो३सुत रायमल्ल१९१३जाहि हु हितसौं तकै ॥  
 नैकहु जनकत्वनेह जेठे१सुतपै नकै ॥ ४७ ॥  
 बनितो जेठे१रु मध्य२इक१इक१पहिलैं वरी ॥  
 अब नृपसुत तीन३न जिम व्याहन मति आदरी ॥  
 पुत्रनत्रिक३व्याहिय तिम वेगहि महसौं पहु ॥  
 वर१जुत जितनी बधाइ घर लिय दुलही बहू ॥ ४८ ॥  
 नाम१रु भित्ति२जाति३नैर४कहियत क्रमकी कथा ॥  
 जे अब प्रभु राम२०३१४सुनहु रविकवि बरनैं जथा ॥  
 कर्मध्वज छत्रसिंह अवहरप्रतिकी कनी ॥  
 जेठे१सुत उमा१९१२नाम दूजी२परनी जनी ॥ ४९ ॥  
 रानाउति धन्यकुमारि१९१३भारत तनया भनी ॥  
 बिजयनगर यह तीजी३दूदा१९१२बिबही बनी ॥  
 भूपति इस तीन३हि तिय व्याहिय सुतको भली ॥  
 चंद्राउति चौथी४पुनि अप्पहिं वरिहै बली ॥ ५० ॥  
 बुंदियपति तिम विवाह भोज१९१२हिं खट६व्याहयो ॥  
 गदियत जिम रूच्य दान अर्थाव अवगाहयो ॥  
 जगन्नाथ कर्मपुत्रि जसोदा१६१२सनाम जो ॥  
 आनी तिय भोज१९१२कुमार दूजी अभिराम जो ॥ ५१ ॥  
 पंचानन पुत्रिय पट्टे रठोरि जु छप्पनी ॥  
 जसकुमारि१९१३सु भोज१६१२कुमार तीजी३परनी जनी ॥  
 मालदेव मरुपतिसुत रामसिंहकी सुता ॥

१ अत्यन्त रूपवान् २ लाड से शिष्यापन का स्नेह ३ नहीं करता ॥ ४ ॥ ५ स्त्रियें ॥ ४८ ॥  
 ६ सूर्यमल्ल कवि वर्णन करता है सो सुनो ७ कर्मध्वज (राठोड़) आहोर के पति  
 की कन्या ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ८ कहते हैं ९ दुलह ने १० दान के समुद्र का ११ थाह  
 लिया १२ सुन्दर ॥ ५१ ॥ १३ चतुर १४ छप्पन देश की "ईडर के देश को छप्पन

जो व्याही भाग्यवती १९१४ चुन्थी ४ गुनसंजुता ॥ ५२ ॥

पुत्रि भल्लसिंहकी सु लालकुमरि १९१५ पंचमी ५ ॥

मानकुमरि १९१६ खदिराट गजेससुताही छमी ६ ॥

तनया बलकर्णकी अभिजनकुमरि १९१७ तोमरी ॥

पट्टनिपुर पहुँचि वीर सप्तमी ७ यहै वरी ॥ ५३ ॥

भोज १९१८ हिं पुनि इम छद्म व्याह व्याहि रु अब भूपती ॥

सत्त ७ हि दिय व्याह रायमल्ल १९१९ कुलजा सती ॥

विक्रम भुवनांगवंस दौपदि १९१२ तनया दई ॥

इम चालुक पित्तल तिहिं रंगकुमरि १९१२ अर्पई ॥ ५४ ॥

कृष्णकुमरी १९१३ तीजी ३ कछवाह कुंभकी कनी ॥

जिम चौथी ४ अग्रकुमरि १९१४ कुम्भ अचलजा जनी ॥

कावंधिय राजकुमरि १९१५ चंद्रसुता पंचमी ५ ॥

छत्रकुमरि १९१६ चंद्राउति अचलकी सुता छमी ॥ ५५ ॥

सप्तम ७ सीसोदनी सु रामसुता रुक्मिणी १९१७ ॥

गहि क्रम ए दुवर छद्मसत्त ७ सुत त्रय ३ बिबही गिनी ॥

जंपहि अवसर समस्त संतति इनकी जथा ॥

करि हित प्रभु राम २० ३१ ४ सुनहु संभव पहिली कथा ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

पुत्रत्रिक ३ हिं इम व्याह पट्ट, अवनि विभागहु अप्पि ।

रुचिर कनी उपयम रचिय, थान लगन २ वर थप्पि ॥ ५७ ॥

लालकुमरि १९१२ मध्या २ ललित, मदनकुमरि १९१३ लघु नाम ।

ए कन्याभावहि उभय २, विनु असु किय विधि बाम ॥ ५८ ॥

इन दोउ २ नसन अग्रजा १, कन्या पूरकुमारि १९११ ॥

कहते हैं और इस छप्पन का थोड़ा सा भाग उदयपुर और डुंगरपुर के अधि-  
कार में भी है ॥ १ चौथी ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ २ राठोड़ी ॥ ५५ ॥ ३ कहेंगे ४  
समय पर ५ सब ६ सन्तान को ॥ ५६ ॥ ७ विवाह ॥ ५७ ॥ ८ सुन्दर ९ कन्या

सुरजन के संतान का विवाहना] पट्टराशि-अष्टममयूख (२१९१)

व्याहन नृप-संचय विविध, सह महं दिन्न प्रसारि ॥ ५९ ॥

॥ घनाक्षसे ॥

जोधपुरभूप कीनों पंचम उदयरंपापी भाख्यो भू विहीन चंद्रसे-  
न१ताको जेठो भात ॥

ताके उग्रसेननाम पट्टपकुमार हुतो बुंदीपति ताहि न्यौंतिबुल्लयो  
बहु लै बरात ॥

भोज१६११वारी सोंदर स्वसा जो पूरकुमारि १९११ सो उचित  
सुदाय अण्णि ताकैहँ विवाही तात ॥

स्वीय आरतीके नेग सामूसों छुराइदीनों मुर्जन१६०११पुरोहितन  
तबैतँ मिल्योहीजात ॥ ६० ॥

चौथो१४चंद्रसेन१जो भाख्यो रामसिंह१भाई भाग्यवती१९११४ ता-  
की धिय चौथी१४तिय व्याहो भोज १९११२ ॥

पीछैं कहि आये सो उदंत रु इहाँतो इम कन्या उग्रसेनही वि-  
वाही भूप अति भोज ॥

दीनों आयु अवधि स्वकन्याकाँ सुरथपुर कीनों जसविदित वि-  
वाहत महत सोज ॥

पीछैं कर्मसेन१कन्ह२आदि सुत ताके भये भागिनेय भोज १९११२  
के किरावन अरिनि फोज ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

इम विवाहि कन्या अधिप, सह दुल्लह दिय सिक्ख ।

रस बहत दुव१दिस रह्यो, त्याग१असन२दुव२तिक्ख ॥ ६२ ॥

सुत पट्टप सामंत१८१११को, बलकर्ण१८८११जु अधिवीर ॥

भुजनगरी१तिहिँ सह विभव२, धरनीपति दिय धीर ॥ ६३ ॥

कुनपु१रूप२जेठो कुमार, बूढा१९११सूर१उदार२ ॥

यन में ही मरगई ॥ ५० ॥ ५१ ॥ १ अष्ट दहेज देकर २ अयनी ॥ ५२ ॥ ३ पु-  
र्वा ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ४ राजा ने ॥ ५३ ॥ ५ शरीर से छुल्ल

पितरभक्तकुलधर्म पटु४, अर्चनी१जसरखवार५ ॥ ६४ ॥  
 तदपि जानि दुभगातनय, राच्यो सुभगाँ रंग ॥  
 भूप न रक्खै भूपनहु, इच्छु याके अंग ॥ ६५ ॥  
 रजतकेहु भूखन रहित, बाजि१रु स्वर्धाहि बखर ॥  
 अनुंजनसम नहिँ आदर३हु, सुबरन खंचित न सख ॥ ६६ ॥  
 दुजनसल्ल१९१।१हुर्विध दसा, पट रहि तदपि प्रसन्न ॥  
 अनय न चितै कदहु यह, वंसु व्यय बिरह बिपन्न ॥ ६७ ॥  
 पै याको बूंदी२पुरी, दिय सह पट्टनि२दंग ॥  
 यातै अब कासी१अधिप, मंडै रहन उमंग ॥ ६८ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो पष्ठराशौ वीतिहोत्रवसु  
 धेश्वरबीजव्याख्यानबीजहृद्वाधिराजस्थिपाल १५५ वंशयानुवंश्यविहि  
 तवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरसुरजनचरित्रे दिल्ली  
 देशाहुन्द्यागतसज्जसेनसुरजनस्य गुडवानवारीदुर्गावरणा १ आवरणा  
 युद्धव्याकुलशरणागतगौडराजसकबरयवनेन्द्रान्तिकमानीय सुरज-  
 नस्य तदर्थतदुर्गदापन २ एतत्समरपारितोषिकद्विपञ्चाशत्प्रान्तप्राप्त्य-  
 नन्तरं वाराणासीमासाद्य सुरजनस्य रावराजापदप्रापणा ३ कनिष्ठा-  
 १ पिता का भक्त २ भूमि की ॥ ६४ ॥ ३ हुहागिन का पुत्र ४ सुहागिन के रङ्ग में  
 रचा ५ राजापन का चिन्ह एक भी नहीं रखता था ॥ ६५ ॥ ६ अल्पमूल्य के वस्त्र  
 ७ छोटे भाइयों के समान ही उसका आदर नहीं था = स्वर्ण में जड़े हुए शस्त्र  
 नहीं थे ॥ ६६ ॥ ९ दरिद्रता में १० वन के खरब के विरह से आपदा से पीड़ित  
 था तो भी अनीति का स्मरण नहीं करता था ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में अग्निवंशी चहुवाण  
 वंश वर्णन के कारण हृद्वाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं  
 के कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुरजन के चरित्र में  
 सुरजन का दिल्ली से बुन्दी आकर सेना सभ्रकर गुडवान में वारी गढ़ को  
 घेरना १ उस घेरे के युद्ध से व्याकुल होकर शरण आये हुए गौड़ों के राजा  
 को बादशाह अकबर के समीप लेजाकर सुरजन का वह गढ़ पीछा उसीको  
 दिलाना २ इस युद्ध की प्रसन्नता के दान में वाचन परगने और काशी का नि  
 वास पाकर सुरजन का रावराजा पद पाना ३ सुरजन के छोटे पुत्र आज के पुत्र

त्मजभोजस्य रत्नसिंहाख्यं सुतजन्माकर्णनेन यवनेन्द्राज्ञया सुरजन  
स्य बुन्द्यागमन ४ बुन्दीनगरेऽर्जुनपत्नीसुरजनजनन्योः कासारमन्दि  
रप्रतिष्ठाकरत्नानन्तरं सुरजनसुतासूनुपाणिपीडनसूचन ५ कुरूपदुर्भ  
गापुत्रहेतोर्ज्येष्ठकुमारदुर्जनशल्योपरि सुरजनस्याप्रसन्नत्वभक्षण ६  
मष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥ आदित एकनवत्युत्तरशततमो मयूखः ॥ १९१ ॥

॥ प्रायोत्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

वारीगढ जयपै वनी, वावनपरगढ बखसीस ॥

अदेरइतअदेरइहि उतर, बंटिलये बुंदीस ॥ १ ॥

ग्रामक सह कासीनगर, मिल्यो इजाफामाहिं ॥

यातैं तहँ रहिवे अधिप, अब मन चिंतन आहिं ॥ २ ॥

॥ मनाहरम् ॥

वावनपरदये जे देस तिनमें छ सात गढ विमुखन दाविराखे ते-  
हू साहनैं दये ॥

सवहि लये ज्यों फरमानमें लिखाइ नृप त्योंही काढि विमुख  
स्वकीय करि ते लये ॥

खीचीशरायमल्लहिं फिराऊ सो समुक्ति मऊशताकी राजधानी  
दैन अक्षर जवैं भये ॥

भूप तव भ्रातनमें भेद न उचित भाखि गो नटि मऊशपैं ताके  
वर्गी बदलेगये ॥ ३ ॥

रत्नसिंह का जन्म सुने पीछे बादशाह से विदा लेकर सुरजन का बुन्दी आना ४  
बुन्दी में अर्जुन की स्त्री और सुरजन की माता के तालाब और मन्दिर की  
प्रतिष्ठा हुए पीछे सुरजन के पुत्रों के विवाहों की सूचना और सुरजन की पु-  
त्री के विवाह का कथन ५ कुरूप और दुहागन का पुत्र होने के कारण बड़े कु-  
मार दुर्जनलाल से सुरजन के अप्रसन्न होने के कथन का आठवां ८ मयूख स-  
माप्त हुआ ॥ और आदि से १९१ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ आशों सहित २ अधिकाई में ॥ २ ॥ ३ आशुओं ने ४ अक्षर ॥ ३ ॥ ४ ॥

बुंदीके समीप हिंगुलाजगढ१साहाबाद२मालपुर३टोडा४टोंक५  
रामपुर६मानिये ॥

सेरगढ७केकरी८सिरो९वरवाडा१०बलि बालाभेट११खाताखे-  
री१२भेलसा१३वखानिये ॥

खंडारि१४रू. मल्लारना१५चैनपुर१६बारी१७खैरी१८रैनगढ१९सिं-  
घोली२०रू भैसरोर२१जानिये ॥

केथोली२२रू साढोरा२३गुगौर२४पुनि खल्लीपुर२५प्रीतसह आग-  
र२६छबीस२६पाहिये ॥ ४ ॥

कासी१के समीप \*प्रांत प्रथित छबीस२६पाये जानैजिते नाम  
तिनहूके अवधारिये ॥

गढ चरनाला१मांडा२रामगढ३मैनपुर४सैदाबाद५भबलपुर६आ-  
वर७निहारिये ॥ ५ ॥

कोटापतिभीम१९९१२ रावराजा बुधसिंह१९७१३समै बुंदी लूटि  
लेखालय लेख सब लेगयो ॥

जह सह नाम फरमान इन देसनको जाइ सरवस्व साथ कोटा-  
गढमें ठयो ॥

भागधन कल्पित कितेक लिखिदीनै यातैं सकसिखसह पायो ति-  
न्है मन कहिवे भयो ॥

कासी१बिनु हाजरी इजाफा सब ग्रामनसों तहाँ रहिवेको नृप  
निषम अबै लयो ॥ ६ ॥

रानी मध्यमा२जो सुर्जन१९०१३कै कनकवती१६०१२दुर्गापुरी ता-  
कै तँह ताल१तिहिं निर्मयो ॥

सो कनकसागर१कहावत अवहू ख्यात राम२०३४नरनाह देखो  
तवको खन्योगयो ॥

\* प्रदेश १ प्रसिद्ध १ सुनो ॥ ५ ॥ २ दफतर लूट कर ३ रहा ४ बड़याभादों ने  
५ झूठे ६ साची सहित ॥ ६ ॥ ७ तालाव बनाया ८ हे राजा रामसिंह

सुरजनका ५२ परगनों में से कुछ बांधवों को देना पठराशि-सप्तममयूख (२२६६)

सो मानी बनिक बेनीदास १ रु मथुरादास २ अधिक अमात्य जु-  
गश्नृपसों करघो नयो ॥

दिल्ली होइ कासी रहिवे पर प्रयान कीनों नूतन अमात्य जुगर्सं  
ग यहही लयो ॥ ७ ॥

पट्टनि १ सहित बुंदी २ दूदा १ ९१ १ कौं दई बिचारि लाखैरी रु खटपु-  
र २ भोज १ ९१ २ कौं बिचारिकैं ॥

पलहायथे १ सों सांगोद २ दोन्ही शयमल्ल १ ९१ ३ हित अप्पन उचित  
यातैं कासी धिय धारिकैं ॥

आगैं भो अमात्य जाजपुरके मुकामन जो सेवराके भाखैं भावी  
नृपहिं निहारिकैं ॥

देसमें सो नारायन बनिक खटोर राखि लीनैं संग नूतन अमा-  
त्य दुव टारिकैं ॥ ८ ॥

उभय २ अमात्यन निवेदी नृपतैं यों कासी रहिबोही आयु अवधि  
—बिचारयो तो ॥

छाया सम संगी अवरोधन १ अनुग २ आदि संग चलिहैही दिल्ली पंथ  
किम धार्यो तो ॥

भिन्न मग स्वीयन पठैवो पहिलैं जो होइ स्वामिबिनु काहु नयो  
अमल निवार्यो तो ॥

मांडा १ दिक दुर्ग लाह राह रुकि जैहैं हाहा हैहैं लिख्यो हुकम  
हजूरको हु हारयो तो ॥ ९ ॥

पहिलैं पधारि कासी अमल जमाइ यातैं अंतेउर १ आदिक ध-  
नीके धाम धारिये ॥

स्वामि अनुरागिनी प्रजाहू सैरिहै ही संग ताकों वास विहित वि-  
सास दै बितरिये ॥

१ नवीन ॥ ७ ॥ २ बुद्धि से ॥ ८ ॥ छाया के समान साथ रहनेवाले ३ जनाना और  
सेवक आदि ॥ ९ ॥ ४ जनाना ५ साथ चलेगी ६ उचित ७ दान करो

माँडाशमुख जो न फरमान मानै ताको जीति आन एक अपनी  
अमोघ अनुसरिये ॥

पीछें पातसाहकी पधारि पीछे प्रीति पहु इच्छित अनहेलों संने  
ह सेवा करिये ॥ १० ॥

————मानि अरजी यौ जवनेसकों दै सीख लौ सुहायो जस  
बागके बगरमें ॥

अंतहपुरादि लै स्वकीय सब संग चलयो दायादैन देकै देस  
जगरमंगरमें ॥

बुन्दी तजि द्वैसत २०० गृहस्थ पुरवासी गये सबन निवाहि भक्ति  
लौ गर सगरमें ॥

सुरजन १९०१ जाइ स्वामी भो स्वकीय भण्डे भेंटि लुकाइ  
विश्वनाथके नगरमें ॥ ११ ॥

पीछें चरनादिगढादि चउबीस २४ प्रांत कासीके समीप उतर  
पाये अपनाइके ॥

रामगढा माँडाशुवन्दस्युन दये न दावि दीनाँ तँह वनीदास १ स  
चिव पठाइके ॥

खो हा लहु जाइ लौ दिन त्रय ३ में रामगढ १ दूजे २ दुर्ग गोलन  
को गजैर लगाइके ॥

सुरजन १९०१ के धीसख पलेटा पुरतनाको डारि खाँडीके खि-  
ल्हार लयो माँडा २ गरदाइके ॥ १२ ॥

१ खाली नहीं जावे ऐसी रचाछित समय पर्यंत ॥ १० ॥ बाग के ३ चगड़ (चोक) में ४  
दायभाग पानेवालों को ५ चमकता हुआ ६ गैल (साध) में ७ सगड़ (शकट),  
“यहां सगड़ शब्द एक वचनान्त है परंतु ऊपर कदेहुए दो सौ गृहस्थों के  
संबंध से यह वचनान्त जानना चाहिये” ८ मालिक हुआ ९ काशी में अप-  
ने भण्डे १० शीघ्र खड़े करके ॥ ११ ॥ ११ शत्रुओं ने १२ निरन्तर प्रहार १३  
मन्त्री ने १४ सेना का १५ खत के खिलाड़ी ने ॥ १२ ॥



सुर्जन का काशी में राज्य करना] पट्टराशि-बचममयूख. (२३०१)

वज्रभर गोलनको सोलह<sup>१६</sup>दिवस \*बूढ़ि दावी द्युति कल्पके  
धुमंडेघोर घनकी ॥

तोरन<sup>१</sup>वरन<sup>२</sup>अट्ट<sup>३</sup>गढके गिराइ अधिरोहिनी भिराइ माँहिं पैठो  
माँडि मनकी ॥

हुंगीं किते दाटि करवालन कितेक काटि पाटि जस खाटि यों  
वडाई वीरपनकी ॥

सो मानी सचिव माँडा<sup>२</sup>सों मानी फिगाइ आयो सलहम<sup>१७</sup>दिव  
स दुहाई सुर्जन १९०१ की ॥

ईसपुरी अंतिक छवीस<sup>२६</sup> ही परगनाँ यों अमल जमाइ अप-  
नाइ चरौचरको ॥

थानथान थानाँ धरि आपुनो उचित इत मध्यभाग कासीको  
लयों दे मोल पटकों ॥

नाम राजमंदिर १ बनाइ तहाँ धाम निज प्रासादन चहुँ ४ धों  
बसाइ परिकरको ॥

राखि बीच अवरोध अमित अनीक औसैं आराधन आयो अब  
आप अकबर ३७१२ को ॥ १४ ॥

सौध १ नैव रचन उपक्रम लगाइ सिलपी चिति रचनोँ में मति-  
मान चुनि चाहसों ॥

वेल २ विबुधालय ३ निपान ४हु बनाइबेको विविध विदेग्ध रा  
खि राज रुचि राहसों ॥

संगरको सामग्री समस्त चरनाल सजि सेना सविसेस देस बा  
वन ५२ के लाहसों ॥

\* दृष्टि करके १ कान्ति २प्रलय के ३सुरज ४निसरनी लगाकर ५किल्लेवालों को  
६ वैश्य जाति विशेष ७ मानवाला ॥ १३ ॥ काशी के ८ समीप ९ चर और  
अचर सब को अपना करके १० महलों के ११ बासों और १२परमह को १३ पट्टन  
१४ सेना के बीच में जनाने को रखकर १५सेवन करने को ॥ १४ ॥ १६ लड़क १७  
नवान १८ आरम्भ १९ सिलावट २० चुनावट (महल) बनाने में अनुभव रखने-  
वाले २१ प्राग २२ मन्दिर २३ जलाशय २४ चतुर २५ बुद्ध को ॥ १३ ॥

कासीअधिराज इस सुर्जन १६०११ विलासी वीर आइ पुर आ-  
गरा सभामें मिल्यो साहसों ॥ १५ ॥

आगैं लोन आगरतैं ग्राम आगरा जों कीनों नैर गढ बांदलसो  
सिकंदर २८११ साहनैं ॥

सो स्वनाम अंकितकों अकबर ३७११ साह बडो विधिसों बसायो  
अव स्वर्ग सुखमा हनैं ॥

जमुना तटीपैं जथा जा समैं वनतहो जों वहाँ यों जवनेस ही तहाँ  
यों बगवाहनैं ॥

आपुनी अपुव्वआठअयुत ८०००० अनीकिनीसों दिल्ली नर-  
नाह १ मेढ्यो कासीनरनाह २ नैं ॥ १६ ॥

तबहु कहाई अैसें सुर्जन १९०११ तैं सुलतान आगराके अंदर रंहो  
धवल धाममें ॥

तदपि न मानि रहि बाहिर कहाई ताहि माँहि बास बंधन बनै-  
गो दुत काममें ॥

साधिहो समीप रहि सासन निसीथहुको सोही स्वीकराइ स-  
सुझाइ सोही साममें ॥

लालकोट तोरनलों राहतैं वजत बंन साहतैं मिल्यो सो एक १  
आयुधसों आममें ॥ १७ ॥

कहत कितेक बहराम सब अंगमिकैं आगैंहो बजीर बयवाला  
अकबर ३७११ को ॥

पहिले १ वजत (जारी) बनाने के आगर के कारण जिस आम का नाम आगरा  
था जिसको पढ़ाकर गिकन्दर ने पुर बनाया उसको अपने नाम से जाना जाय  
ऐसा अकबर ने विशिष्ट पूर्वक बताया जो अब स्वर्ग को २ परमेश्वर को मि-  
टाता है ३ जमुना नदी पर ४ सेना से ॥ १६ ॥ ५ आधी रात्रि को श्री १ मिलाप में  
७ लालकोट के दरवाजे तक नगरा बजाता हुआ ८ बड़ी सभा में एक शस्त्र  
लेकर मिला ॥ १७ ॥ बहराम ने सब को ६ दवाकर

तानें छलघात हनि साँहकों चह्यो तखंत सो सुनि भज्यो सिसु  
डरायो काल डरको ॥

आगरालों आत खानखानाँ बहराम सुब जाइकैं मिल्यो ले सि  
र काटि पाप परको ॥

जाइमिले श्वीय सबही जहाँ तहाँ तबतैं नियत बढ़ैवो बन्ध्यों  
आगरा नगरको ॥ १८ ॥

कोबिदै बजीर खानखानाँ आगराही करि पूछि प्रिय अध्याप-  
क दूजेर बहरामको ॥

स्वामी बनि दिल्लीआइ प्रकृति सुधारिसव नीतिनिपुनत्वकैं  
निकारयो निज नामको ॥

मोहिकैं प्रजामन स्वकोस १ देस २ दुर्ग ३ सेना ४ जोग १ खे-  
म २ घेर सुंघि सचिव छ ६ जामको ॥

आनि आन १ अंडुकैं २ मैं राज्य १ इभ २ साइ अैसे कंदुकैं  
कुमार ज्यो उठायो कर कामको ॥ १९ ॥

अजनैकी विद्या उपयोगिकी अधिक जानि आदरी वहै हू खो-  
लि खतम खजानाँसे ॥

बानिज टोडरमल्ल १ नरहरि १ गंग २ बंदो सूरि १ कवि २ नाना  
सभ्य पावै सुधापानाँसे ॥

विप्र पंच गौडनमैं कान्यकुब्ज वीरवल १ बाँधैं जो बिहासैं १  
प्रतिउत्तर २ मैं बानाँसे ॥

१षादशाह को छल घात से आरकर तखत लेना चाहा २निश्चय तभी से आगरा  
यहा ॥ १८ ॥ ३ पण्डित ४ पहानेवाले ५ राज्य के अंगों को सुधारकर ६ नीति  
की निपुणता से ७ अपना खजाना ८ उपाय ९ चेस में १० चतुर सचियों को  
दिन रात्रि के आठ पहर में छः प्रहर तक प्रेरणा की और अपनी आण रुपी  
११ सांकेतिक में राज्य रुपी हस्ती को लाकर राज्य कार्य को ऐसा उठाया कि जैसे  
बालक १२ गेंद को उठाता है ॥ १९ ॥ १३ आर्य लोगों की १४ सम्पूर्ण १५ ह-  
सी के १६ पीछा नहीं हठने का चिन्ह

अज्ञनकी १ आपुनी २ उभै २ ही अपनावै उभै २ स्वामी बुंध  
आप १ से वजीर खानखाना २ से ॥ २० ॥

पंडित१ मोलवा२समान जानै जाकी प्रीति अज्ञनकी१बिद्या  
तऊ मन अति आकै ॥

मिच्छनतैं पहिलैं गयो घटि द्विजन मान एधमान सो अब स-  
नाथ सुखमाँ धरै ॥

स्मृति१श्रुति२नीति३आदि आसय सबे समुक्ति काम१अर्थ२तं  
बहु प्रमान प्रभु एकरै ॥

साहकों सुहावै तिते तदपि समाँजो१सूरि२जदपि निमाजीआदि  
जवन किते जरै ॥ २१ ॥

कलमाँ१निमाज२रोजा३आदि अपनो जो कर्म साधि अर्थसंहि-  
त कुरान२मान कहतो ॥

आखरी जभाँके मजहबके अकान१ अर्चि सासनो सकाम२  
हु फकीरनकी सहतो ॥

बिद्यामैं बिसेस जानि तदपि स्व बुद्धिवल चित्त अज्ञ मूरिनै स  
वित्त१मित्त२चहतो ॥

धौतैपटधारक क्रिया अर्वाधि आप्लवतैं कच्छाँ एक१करि कि-  
तैकैकाल रहतो ॥ २२ ॥

नित्य जगि नित्यहिनिवेरि१मैंडै मूलमंत्र२ज्योहीं तसैलीमलो सबे  
सचिव जातैपै३ ॥

१ आर्यों की और यवनों की दोनों विद्याओं को २ चतुर ॥ २० ॥ ३ आर्यों की विद्या का अधिक आदर करना था ४ बढ़कर ५ परम शोभा ६ आज्ञा ७ समानद = पण्डित ॥ २१ ॥ १ महीना के अन्तिम शुक्रवार के दिन अपने धर्म के कार्य १० कामना रहित करना था ११ पूजन करके फकीरों की आज्ञा को कामना सहित सहेन करना १२ आर्य पण्डितों को भन सहित १३ मित्र था- दया था १४ धोनी पहिनकर १५ कार्य की अवधि पमित १६ स्नान से १० एक कादवा १८ कितनेक समय तन रहता ॥ २२ ॥ १५ लज्जाम

निज पर देसनकी सूर उदै सुदि सुनि ४ विविध नियोग दै सुनत  
तिन ज्ञात पै ५ ॥  
रीति के नई पुनि प्रजा सुख निमित्त रचै दनीति दै नियोगिन ७  
गिनै न श्रम गात पै ८ ॥  
राज्यलाखि ९ एक १ भोजी १० सूरिन समाज रहि ११ जाम जुग २ सो-  
इ ११ जगै पहर १ के प्रात पै १३ ॥ २३ ॥  
जानै पच्छर्पात व्यवहारमै न कहूँ जान्योँ सर्वकोँ सदाही साव  
धान सरसायो २ जो ॥  
सिथिल भयो न गुनवाननको जाके संग ३ कोऊ मतनिंदक न  
कबहु कहायो ४ जो ॥  
भीतनको त्राता ५ सुभकाज अदिलबी ६ भयो लोकनकोँ हेलन  
निवारि मग लायो ७ जो ॥  
ईश्वर उपासक ८ अलोलुप ९ सदय १० सूर ११ दाता १२ मिले दुखहु  
प्रसन्नमुख १३ पायो १४ जो ॥ २४ ॥  
दिल्ली १ अरु आगरा २ उभै २ ही राजधानी राखि नीति १ धर्म २ प्रेरत  
सगहो नरनरनै ॥  
दैदै जोर अमल जमायो नये देसनमै कोसैनमै आवत दयो न छेह  
करनै ॥  
चरनै निहारयो निज १ पर २ न जथा चरनै सरनविहीन हैरहे के  
दीन सरनै ॥

१ खबर १ आज्ञा १ समूह पर ४ आज्ञा पालन करनेवालों को नीति देकर  
५ शरीर पर श्रम नहीं जानता ६ दिन में एक समय भोजन करता ७ पण्डितों  
की सभा में रहकर दो प्रहर शयन करके एक प्रहर रात्रि बाकी रहे उठता  
॥ २३ ॥ ८ पच्छर्पात उरे हुआ का ९ रत्नक १० शुभ कार्य में दिलंब नहीं करने  
वाला हुआ ११ लोकों के अपराध को मिटाकर मार्ग में लाया ॥ २४ ॥ १२ ख-  
जानों में हांसिल ने छेह नहीं दिया अर्थात् हांसिल निरंतर आता रहा १३  
हलकारों से अपने और पराये को जाना १४ चरणों में आने के बिना ही दीन

पहिलो छत्तीस३६ पातसांइन न जैसी पाई औसी एक अदल ज-  
साई अकबर३७११ नै ॥ २५ ॥

सीकरी१ फतेपुर२ मुकामन रहत साह जाग्य वय जानि रु प्रमा  
नि पैरिचै परै ॥

दूदा१९११ भोज१९१२ बुंदी१ खटपुर२ तै बुलाइ द्वैरही भूप हौ  
मिलाये जाइ कुसर सभाभरै ॥

मुख्य सख्ख१ वस्त्ररूप३ भूखन४ न मानि मुख्य भोज१९१२ दि  
मिल्यो यों पहिलै१ खिलत भा खरै ॥

पीछै मिल्यो दूदा१९१२ सो लयो पै पहिस्थो न पेलि पूछै कह्यो  
इष्टहिं बडाइ पहिरयोकरै ॥ २६ ॥

स्यामरंग१ वांकीताक२ साधारन वस्त्र३ सख्ख४ दीस्यो जो१ अमुख्य  
यों न ताहि पहिलै दयो ॥

जानि मुख्य आदर सुहागिनितनूजलुको नायक जनाइवैसै मौ-  
न नृपहू लयो ॥

सीख लैकै पीछै स्वीय सिधिरं सिधारतहु निरखि बिलोम दूदा  
१९१२ अनाखि रु नौ नयो ॥

योहिं चलयो जानी स्तब्ध जानिहसि साह याकों भाख्यो खान  
लकर १९१२ सुनाम तयतै भयो ॥ २७ ॥

राजा रह्यो हांजिर कुमार २ चले डरनकों भोज १९१२ रह्यो पीछै  
तव तैसी सोधि भयतै ॥

लोग शरण में रहे अर्थात् दान लोग दूर रहने पर भी निर्भय रहे ? इत्यादि ॥ २५ ॥ १ जानकारी में आवें, राजा, वस्त्र, रूप और श्रवण में बड़े कुसर को मुख्य नहीं जानकर भोज का ३ खिलन पहिले लिखा ४ आन्ति ५ बडाका, पछने पर कहा कि पहिले ६ इष्टदेन को पहिनाकर पीछे पहिने हैं ॥ २६ ॥ १ बडा नहीं दीया इस कारण पहिले इसको नहीं दिया ८ सुहागिन का पुत्र जानकार ९ पादवी की सूचना करने में राजा सुरजन भी चुपचाप १० लोगों में ११ यह उलटी सीमा देस कर १२ क्रोध करके दूदा ने खाना नहीं की १३ जान अविशिष्ट जानकर बाद बाद ने इसको १४ लज्जित कहा तभी से इसका नाम लज्जित हुआ ॥ २७ ॥

जान्यो मोहि लैं दयो सुहि असह जानि अग्रज हनैं ही \* छद्म  
धातके अनयतैं ॥

यातैं पहिराइ अनुगतकों खिलंत एह आप बेस ओर करि जो  
बचोतो अयतैं ॥

संकल्प असों कै गनेस जोइसीको स्वीये खिलत उतारि पहि  
रायो स्वीय सयतैं ॥ २८ ॥

श्रीगोड़ १ रु सेवारे २ उदीच्य ३ तिम सहोदरे ४ कासिके प्र-  
संगकरि बुंदी बसते भये ॥

पूरकुमरि १९११ के ससुरालयप्रसंग परि ठान लैं इहाँही आइ  
विष्णुनगरे ५ ठये ॥

अधिप विवाहो रानी मध्यमा २ कनकवती १९०१२ दान जहैं  
सुर्जन १९०११ विमान सबकों दये ॥

बाँसवहालेको लें प्रसंग चउबीस ६ विप्र असैं ए गनेस १ आ-  
दि बुंदीपुर आगये ॥ २९ ॥

सो गनेस १ हो तब कुमार भोज १९११२हीके संग ईरूपो छल  
माहिं तिहिं दीरूपो दान इतही ॥

अग्रज १ विचारी अग्र भेद जननीको यातैं हेरि हिय धारयो  
नाँ पिताहू सम हितही ॥

सुरूप मानि अनुज २ न बोल्यो तिहिं लैंहो मारि जानी उत  
असैं इत भोज १९११२ भयभितही ॥

अग्रज १ तैं दुरिवो १ विचारयो सो उचित पै यों चित्यो बध वि-  
प्रको करैवो २ अनुचितही ॥ ३० ॥

\* छलपात करते बड़ा भाई भाग्याइस तारण १ खेवक को २ बहू अपना खिलत  
पादेना कर ३ आनेवाले मयघ के जुन कसों से ४ ऐसा विचार करके ५ अपना  
चित्त अपने ६ हाथ से गणेश नाम के ज्योतिषी को पहनाया ॥ २८ ॥ ७ ये ब्राह्मणों  
के जाति भेद के नाम हैं ॥ २९ ॥ ८ बड़े भाई ने, दूदा ने ६ छोटे को बड़ा मानकर १०  
परन्तु ब्राह्मण का बध विचार सो अनुचित ही है ॥ ३० ॥

वस्त्र द्विजकों जे पहिराइ भोज १९१२ दूजे २ बेस टोकिन स  
कैं को ज्यों चुकाइ चिन्ह टरिगो ॥

खारभाँहि आगैं नीलीखेतके समीप खरो पंथ रोकि दूदा १९१२  
रह्यो असो दोह परिगो ॥

आतहि निसामैं जानि हरित दुकूलवारी कौरो कठितापैं एक १  
कुंत हाथ करिगो ॥

सो पै उर विद्व विप्र गिरत कंगह्यो सुनि मानी माँनी भोज-  
१९१२ तो बच्यो को रंक मरिगो ॥ ३१ ॥

भोज १९१२ की भुजा हु हनी प्राप्त बेधी एक १ भट इतर गये भ  
जि अचानक भे आनिकैं ॥

हैं तजि सुघायल कुमार दुग्घो खेतहीमें दीपिकैं दूदा १९१२  
सुत विप्र इत मानिकैं ॥

बुंदी भजिआयो इत एह सुनि बुंदीपति तत्थ लाहि सिक्ख आइ  
उच्च स्वर तानिकैं ॥

हेलौ प्रियपुत्रको दयो तिहिँ कुमर हेरि नीलीतैं सु निखरयो  
पिताही पहिचानिकैं ॥ ३२ ॥

देखत तरजि कह्यो भीरुसंस कपोत दुग्घो भारुयो भोज १९१२  
अग्रजतैं दुरिवो भलाई ही ॥

सो सुनि सराहि विद्ववाँहु सिविकैं सुत लाजित सिविर ला-  
यो भाखि रिपु भाईही ॥

भजि उपचार कल्पे मध्यमशकुमार भयो साहहु तथा सुनि प्रसाद

१ खाल (नाले) में नील के खेत के समीप २ दूरे वज्रोंवाला ३ वह काले रङ्ग  
वाला (दूदा) ४ भाले का ५ हृदय घेयन होने से ६ दुःख का वचन (हाय  
हाय) किया सो सुनकर जाना कि ७ मानवाला भोज तो बच गया और ८ कोई  
गरीब मर गया ॥ ३१ ॥ ९ भाले से एक वार ने भोज की भुजा को भी घेयन की १०  
भय ११ घड़े को छोड़कर १२ चिराग से १३ बुलाया १४ नील के भीतर से १२३ १५  
कटे हुए बाहु से १६ पालखी में १७ डेरे में १८ इलाज से १९ नैरोग्य



लपा पाईही ॥

कह्यो नृपतैं यो तैं जनायो बडो दूदा१९११क्यों न ताहि दैकैं  
दै तो याहि तो मो पटुताई ही ॥ ३३ ॥

चीनी हमहू व मुख्य१मध्यम२कों कियो कहत नबिनु बिसेस है  
सो रीति मनसों नई ॥

दूदा१९११हू दुबुद्धि मनतैं तो भोज१६१२कों गो मारि हमरे  
ढिगहि ठानि कानि हमरी हई ॥

पहिलैं परंतु मंतु भासैं पिता१ पुत्र२नमैं गोई रिस तातैं गई यह  
तो गिनीगई ॥

दूदा१९११हू बुलाइ इक१बेर तो बिसासि देनो भूपहि यों उपां-  
लंभि साहकै छमा भई ॥ ३४ ॥

बुंदीसहु जानि साह आसय यहै विदित दूदा१९११कों बुलौवै  
पुर बुंदी दल यों दयो ॥

इतके प्रमाद जो भई पै जानि जेठो१अब गिनिहै प्रथम१साह मं  
तुहुं करयो गयो ॥

आवहु निसंक प्रीति पावहु कुमर इहाँ लावहु न संसै लाखि भा-  
वहु भलो लयो ॥

कीनोही अजानैं बिप्रपातकको प्रतीकार भ्रातक२को जातैक  
को पै मन मनैं भयो ॥ ३५ ॥

पिताके निदेसपहिलैं इत बुंदी आइमारयो द्विज यातैं मृत आ-  
पुनकों मानतो ॥

उस भूल की १ लज्जा २ चतुराई थी ॥ ३३ ॥ हम ने भी ३ जाना कि मध्यम  
पुत्र को पादवी किया चाहते हो ४ अदब मिटाई ५ अपराध ६ क्रोध दिखाकर  
७ उहलना देकर बादशाह के क्षमा होगई ॥ ३४ ॥ बादशाह का ८ अभिप्राय  
जानकर ९ पत्र १० भूल ११ अपराध क्षमा किया १२ वैर दुबि १३ भाईकेमन  
ने वैर उत्पन्न हुआ था परंतु वह भी मिटगया है सो निःशंक होकर यहां आ-  
जाना ॥ ३५ ॥

जानें बिनु कीर्नें को बनाइ प्रतिकार जथा दीनें और द्विजन  
असेस विधि दान तो ॥

तनय गनेसको बुलायो ग्रामदैव तहाँ जोहु जड बुन्दीतें गयो  
भजि भै जानतो ॥

तातनै बुलायो अब लैसिरनिदेस ताको पुनिगोहजूर दूदा १९११  
प्रीति पहिचानतो ॥ ३६ ॥

तातके अनीकपास जातहि तुरंग तजि एकाकी असस्त्रकरि  
बस्त्र बेढ करसौं ३ ॥

प्रनभ्यौ पिताकौ जाइ नाइ सिर पायनमें भूप सय छायो उर  
लायो नेह भरसौं ॥

पाइही खिंसाइ दूदा १६११ भोज १९१२ वहाँ बुलाइ पुनि उ-  
रहिं मिलाइ भाइ भेट्यो धाइ अरसौं ॥

आगसं छमाई पीछें लाइ नृप ओसरमें आदर दिवाइ जो मि-  
लायो अकबरसौं ॥ ३७ ॥

साह सनमान्यो दूदा १९११ जैठो भोज १९१२ हू सौं जानि  
भ्रातहु परस्पर वहाँ स्निग्ध दुव २ ही भये ॥

साधि साह सेवन समी इक १ यौ सुर्जन १९०१ हु ठाम गयो  
कासी उभै २ कुमर इहाँ ठये ॥

कूरमनरेस भगवंत इतछोरयो काय मान व्है महीप दान प्रेतें  
विधिके दये ॥

उदयपुरी यौ रान उदय हु होत अस्त ता सुत प्रतापलाभ धर्म  
१ जस २ के लये ॥ ३८ ॥

विधिके प्रसाद आउवाके धरनातैं बच्यो आढा दुरसा जो बे-

॥ ३६ ॥ पिता की १ सेना के २ घोड़ा छोड़कर ३ अकेला ४ वस्त्र से हाथ बांध-  
कर. राजा ने मस्तक पर ५ हाथ रक्खा ६ शीघ्रता से ७ अपराध दक्षमा कराके  
॥ ३७ ॥ ९ माहोंमाह (एक दूसरे से) १० स्नेह युक्त ११ एक वर्ष पर्यंत. मानसिंह  
ने आसैर का राजा होकर १२ प्रेतकर्म में दान दिया ॥ ३८ ॥ ब्रह्मा की १३ प्रसन्नता से

धि कंठ छुरिका अनी ॥

पडत, सभासैं स्वरभंग किम साह पूछी भनी स्वाज काह्यो तोहू  
को ह्यौ पहुँच्यो भनी ॥

उदय कबंध रोखि डिगहि बलायो उहाँ ताकी जवनेस तहाँ नि-  
दा रिसकैं तनी ॥

पापी सो इतैं अब पँरासु भयो जोधपुर धाम तस जेठो सूरसिंह  
सुत भो धनी ॥ ३९ ॥

दूजा १६११ भोज १९१२ दिल्ली रहे सेवन कुमार द्वैरही मानैं  
जानि सुद्धमन साहहु मँहरपैं ॥

एतेमाँहिं गुज्जरधरालों डर डारि इतैं साह भो जवन कोऊ सूर-  
ति सहरपैं ॥

कोहु कहैं हो जो कुलवर्ग १ भैं कितेक कहैं ओरन २ भैं द-  
खिखनी पै दंस दै अँहरपैं ॥

दिल्ली १ भू दवावन प्रपंचमैं परयो सो सुनि लीनी जय संघा  
साह साहस लहरपैं ॥ ४० ॥

मेघहिं दै लाज गाज भेरिन दराज मची फाबी फीत फीलैं  
पताका पंति फरकी ॥

१ बादशाह ने पूछा कि स्वरभंग क्यों है इसपर दुरसा आढाने कहा कि कुत्सेने काटा है बादशाह ने २ कहा कि यहाँ तक कैसे पहुँचा तब दुरसा आढाने क्रोध करके राओड उदयसिंह को समीप ही बलाया तब बादशाह ने ३ क्रोध करके उस (उदयसिंह) की निन्दा फैलाई वह पापी अब \* जोधपुर में ४ सरा ॥ ३९ ॥ ५ कृपा पर १ गुजरात तक ७ अधर पर दांत देकर अर्थात् होठ चबाकर जय करने की ८ प्र-  
तिज्ञा ॥ ४० ॥ ९ नगरों की मर्जना १० चडी ११ सझूह १२ हाथियों पर

\* यहाँ आमेर के राजा भगवानदास, उदयपुर के महाराणा उदयसिंह और जोधपुर के राजा उदैसिंह का देहान्त एक ही समय पर होना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि उदयपुर के महाराणा उदयसिंह का देहान्त विक्रमी सम्वत् १६२८ में और आमेर के राजा भगवानदास का देहान्त १६४६ में और जोधपुर के राजा उदयसिंह का देहान्त सम्वत् १६५२ में होना इन तीनों राज्यों के इतिहासों में लिखा हुआ है।

\* अंबरमें १ धावके फिराव हय लैलै आत † संवरमें नावके  
तिराव भूमि सरकी ॥

लाखन कटक मिल्यो पाखन हिलोर लेत फैलत § फनी १ के  
फन२ कोल १ दह २ करकी ॥

सूरतिके लाह पर बाह लै सनाह सजी अैसे राह सेना बढी  
साह अकबर ३७११ की ॥ ४१ ॥

सुरजन १९०१ राखी नये लाभतैं अधिक सेना बुदीको बँरुथ  
लै कुमार जुग बरसो ॥

दूदा १९११ भोज १९१२ संगहि लये ए सुलतान द्वे २ ही संज  
सु चल्थो यौं दिल्ली चापसन सर सो ॥

मगगके मिवासनको पहर करत पूगि झारि जव लोलनको  
गोलनको भरसो ॥

तीनों ३ दिस लीनों बेढि बाहिर छबीनों तोरि सूरतिमें तापी  
कोस भास दर हर सो ॥ ४२ ॥

भरसो १ हरसो २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

वासर बहु तोपन बन्यो, मृध जन मारनमूल ॥

बाँरि रह्यो सीतल १ विमल२, कछु तापी परकूल ॥ ४३ ॥

रहती बनि रन रंतिके, सो नदि आगि समान ॥

जनु कहती सूरति नजरि, परि पायन चहि प्रान ॥ ४४ ॥

\* आकाश में † दाँडने के फिराव लेकर घोड़े फिर और † जल में नाव तिरै  
इस प्रकार भूमि डिगी § शेषनाग के ॥ ४१ ॥ १ सेना २ सज्जित होकर दिल्ली  
रूपी ३ धनुष से बाण के समान चला ४ मेवासाँ (चौर आदि के स्थानों) को  
सीधा करता हुआ वेग युक्त ५ चपल गोलों का झुड़ लगाकर ६ सुरत नगर  
में तापी नामक नदी के कोश में प्रकाश करके ७ भय मिटाया ॥ ४२ ॥ = बहुत  
दिन ९ युद्ध १० जल ११ पैले किनारे का ॥ ४३ ॥ १२ रात्रि के १३ अग्नि के  
समान होकर वह तापी नदी यह कहती थी कि सुरत शहर नजर है ॥ ४४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठदशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे सनिश्चयज्ञातसुर्जनद्विपञ्चाशत्प्रान्तप्राप्तिगणन १ बुन्दीप्रस्थितसावरोधवाराणासीप्राप्तसुर्जनस्य सैन्यसहितस्वामात्यप्रेषणो रामदुर्ग-मांडाप्रान्तविजयीकरण २ आगरासंज्ञाप्राप्तिद्विकारणात्तद्वृद्धि कथनेन सहाकबरयवनेशगुणावर्णन ३ स्वायुजभोजार्थयवनेन्द्रदत्त पारितोषिकप्रथमप्राप्तिनिमित्तभोजवधोत्सुकदूदाकृतभोजभ्रमहेतुक-गणेशज्योतिर्विद्वनन ४ कनिष्ठसूनुपट्टपचिकीर्षुसुर्जनस्य यवेनन्द्रो पालम्भप्राप्तिहेतुकपट्टकुमारदूदाबुन्दीसन्मानयनतन्मन्तुक्षमापन ५ आढागोलदुरसाचारणप्रात्साहितयवनेन्द्रकृतोदयसिंहधिकरणा ६ आमेरराजभगवन्तदास-उदयपुरमहाराणादयसिंह-योधपुरेशोदयसिंहप-रासुत्वसूचनानन्तरयवनेन्द्राकबरससैन्यसूरतपुरवेष्टनं नाम नवमो मयूखः ॥ आदितो द्विनवत्युत्तरशतंतमः ॥-१९१॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन को वावन परगनों के मिलने में निश्चयता पूर्वक जानेहुओं की गणना १ बुन्दी से जनाना सहित काशी गये हुए सुर्जन का अपने मन्त्री को सेना सहित भेजकर रामगढ़ और मांडा नामक परगनों को विजय करना २ आगरा नाम के प्रसिद्ध होने के कारण सहित आगरा नगर की वृद्धि के साथ अकबर बादशाह के गुण कथन ३ अपने लघुभाई भोज को बादशाही खिलत अपने से पहिले मिलने के कारण भोज को मारने की इच्छावाले दूदा को भोज के धोखे से गणेश जोशी को मारना ४ छोटे पुत्र को पाटवी बनाने की इच्छावाले सुर्जन का बादशाह से उपालम्भ पाने के कारण पाटवी पुत्र दूदा को बुन्दी से बुलाकर उसका अपराध क्षमा करना ५ आढा शाखा के चारण दुरसा का बादशाह से राजा उदयसिंह को धिक्कार दिलाना ६ आमेर के राजा भगवन्तदास, उदयपुर के महाराणा उदयसिंह और जोधपुर के राजा उदयसिंह के देहान्त की सूचना ७ गुजरात में सूरत नगर में शत्रु के प्रचल होने की सूचना पाने पर बादशाह अकबर का मेला सहित सूरत नगर को घेरने के वर्णन का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ वानवें १९२ मयूख हुए ॥

## ॥ दोहा ॥

जगि तोपन सूरति जरत, उछरत झरत अलात ॥  
 पंथ बरत १ अहंन २ परत, जोध लरत रुकिजात ॥ १ ॥  
 जलमंतुन पुर डिग जब मु, छोरयो आतप छिजि ॥  
 दिव परपंखी अब दहन, धामहु रहन न धिजि ॥ २ ॥  
 जान्यो सूरति साह जब, पर दनिहे अब पेठि ॥  
 जब संगसमय कडिजुर्यो, वय अतिरप हय बैठि ॥ ३ ॥  
 निमसेनासह निफल्यो, सानि मन इन साह ॥  
 इनहु भई तोपन अटक, लैन रटक असिलाह ॥ ४ ॥  
 वीर हाक वीरन वजो, वीरन अभिमुख धाव ॥  
 मिलि तीरन की रन मिले, दल चौरन असि दाव ॥ ५ ॥

## ॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

असैं सूरति साह चाह अपनी देखो नृया दुर्गतें ॥  
 केते चाँसर तोप जगैं करिकैं सो हों कल्यो सजौंदी ॥  
 दिखो केह बल्ये देखि दृढता ताकी सराही तहाँ ॥  
 किल्ला तो मरि है परस्पर कहो लखी इहाँ लजही ॥ ६ ॥  
 बसैं होत लगीं बिलंबबहु सो पैं यों प्रसंसा पंगे ॥  
 पशुमायें जितनै निरौड उतरके लोहा नखें लगे ॥

१ जगि २ सुरजो चौर कोरी ये ॥ १ ॥ ३ जान से जानकर ४ शत्रु ॥ २ ॥ ५  
 आवु भावत सुनकर सारंग ६ विजय के संदेश नदित ७ अत्यन्त वेगवान्  
 जोह पर पैदर ॥ ३ ॥ ८ गह से बल करन के नाम से ॥ ४ ॥ ९ समुदा दीड  
 ॥ ५ ॥ इस प्रकार लाने के बादवान ने गर से अपनी चाह इस देवी. अतः  
 ही १० अतः लाने से ११ बल के बल से १२ अतः १३ अतः अतः अतः  
 १४ अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः  
 १५ अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः  
 १६ अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः  
 १७ अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः  
 १८ अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः  
 १९ अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः  
 २० अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

ताजी बेग मिलाइ एहु तबतो मित्रत्व मानी मिले ॥  
 ओछे अंतर देत लेत उरभे जेजे समीपी जिले ॥ ७ ॥  
 फाटे बाजि गिरै १ भिदे गज कहाँ लैलै तँवारे फिरै २ ॥  
 खंडाधार खिराइ हड्डि विखरै ३ के लुथि बुथी किरै ४ ॥  
 पै पै ईस हसै रु गान बिलसै ५ त्यों ताल दै पब्बई ६ ॥  
 ज्याँ रीभे चउसडि ६ ४ बावन ५ २ भनै यों ए १ रु यों ए २ जई ७ ॥ ८ ॥  
 मज्भै नारदहू बजात महती धूमै संगनै घनै ८ ॥  
 लूमै रक्खस १ भूत २ डाकिनि लैटी बंटै स्व दाई बनै ९ ॥  
 भूमै सीस गिरै न ज्याँ भटनके त्यों खेल संभू तनै १० ॥  
 भूमै साकिनि भुंड रक्त भगैरै अच्छे पिवै उफ्नै ११ ॥ ९ ॥  
 पैठे कंक १ रु गिद्ध २ चिल्ह ३ पलभै गोदादि मेदै गिलै १२ ॥  
 पावै यों पल दूर पूर पसरै मंगै जुही ज्याँ मिलै १३ ॥  
 कंकाली डमरू वजाइ किलकै कंकाल संचै करै १४ ॥  
 काली खप्पर आडि १२ ईडि १३ कलिहैं भूखी बँपासौ धरै १५ ॥ १० ॥

मे तब तो दिल्लीवाले भी १ घोड़े उठाकर मित्रों के समान छाती भिड़ाकर  
 मिले और थोड़े अंतर से देते लेते समीप के दोनों तरफ उलभं ॥ ७ ॥ घोड़े  
 फटफट (कटकट) कर गिरते हैं और कहीं पर भिदे हुए हाथी २ झोखे लेकर  
 (लगकर) फिरते हैं तरवारों की धारें खिरकर हड्डियां विखरती हैं और कितने  
 ही लूथ बुथ होकर गिरते हैं जहां पैर पैर पर महादेव हँसते हैं और ३ पार्श्व-  
 ती ताल देकर गाने का सुख लेती है और ४ रीभे हुए चौमठ जंगिनी और  
 बावन बैरव इधर इनको और उधर उनको विजयी बताते हैं ॥ ८ ॥ बीच  
 में नारद ४ महती नामक वीणा को बजाकर ५ मस्तक घुमाते हैं, डाकि-  
 नियों की ६ केशों की लटी से लटक कर राक्षस और भूत ७ दायभागी बन-  
 कर घंट करते हैं और वीरों के मस्तक भूमि पर नहीं गिरने पावें इसतरह का  
 महादेव खेल फैलाते हैं, साकिनियां होकर भगडा करती हैं और उफना हुआ  
 अच्छा रक्त पीती हैं ॥ ९ ॥ मांस में कंक गिद्ध और चिल्हे घुसती हैं और ८  
 मज्जा आदि ९ मांस खाते हैं इस प्रकार मांस का समूह दूर तक फैला हुआ  
 पाते हैं जिसमें फैलकर जो मांगते हैं वही मिलता है १० किलकारें करती हुई  
 कालिका डमरू बजाकर ११ हड्डियों का संचय करती है और कालिका  
 खप्पर १२ मांडकर १३ स्तुति करके १४ मज्जा को धारण करती है ॥ १० ॥

के बानैत कटै १ अटै २ रु उलटै ३ फूट ४ रु फाली फटै ५ ॥  
 हत्थी १ घोरन २ तै किते असि हनै ह्वे व्यंग ६ ह्वे भू ७ हटै ८ ॥  
 घोटै स्वास बिनासमै बिछुरिबे घाँघाँ घनै के घटै ९ ॥  
 रीझे देखत मारते १० मरते श्लाघा सुपर्वा रटै १० ॥ ११ ॥  
 बैत्री ह्वे वहिकाइ प्रेत प्रतिमू घाँघाँ भिरावै घनै ११ ॥  
 ते तुटै भर मुंडमाला तिनकी बेहैं कपाली बनै १२ ॥  
 हत्थी कृति प्रसारि अंसु हुलसे जे छदा सूली जनै १३ ॥  
 भृंगी १ नंदि २ भुलाइ १४ भजतै १५ उमा भै पाइ लखे भनै १६ ॥ १७ ॥  
 मंड्यो प्रातहिसौ महां मृध मजाकुप्पी चमू द्वे २ कटी ॥  
 घोरै १ गै २ भर ३ द्वै ४ हि पति घटतै पैली २ अनीही घटी ॥  
 त्यों बेधी रु—क(?) छोरै तजिकै ठाँ अद्वा नाँ ठाहरे ॥  
 तोहू सूरति साह मंडि तुमुलै धाराहि पै पै धरे ॥ १३ ॥  
 जो दिल्लीदलकी हरोल हनिकै अगै बढ्यो यों जहाँ ॥  
 पैने सखन पाइ सूर प्रसभी तुटै दुहुँ रघाँ तहाँ ॥

कितने ही । बाणविद्या जाननेवाले अथवा युद्ध का बाना बांधनेवाले २ फिरते  
 हैं और ३ छलांग मारनेवाले फटते हैं तरवारों के मारहुए हाथी घाँड़ जुदे  
 होकर भूमि को छारकर हटते हैं ४ स्वास बुझकर नाश के समय बहुत शरीर  
 बिछुटते हैं और मारते और मरते हुआँ को देखकर ६ देवता ५ प्रशंसा करते  
 हैं ॥ ११ ॥ ७ वत हाथ में रखनेवाले अर्थात् छड़ीदार होकर बहकाते हुए प्रेत  
 जायिन हो हो कर ठौर ठौर पर बहुतों को भिड़ाने हैं उन लूटे हुए (कटे हुए)  
 वीरों की महादेव युद्ध में मुंडमाला बनाते हैं और कन्ये पर ८ गजचर्म को  
 फैलाकर प्रसन्न होते हैं ११ भगतें हुए ९ भुक्ति और १० नन्दि नामक गणों  
 का भूलकर पार्वती भय पाकर फिर मिल जाना कहती है ॥ १२ ॥ प्रभात से ही  
 वीर दोनों पंक्ति के १४ घटते ही सूरत की सेना घटी त्यों ( ) १५  
 छोड़कर और अपने स्थान को तजकर वहाँ पर आधे भी नहीं ठहरे तोभी  
 सूरत के बादशाह ने १६ भयंकर युद्ध करके तरवारों की धार में पग पग आगे  
 दिया ॥ १३ ॥ दिल्ली की सेना की १७ हरोल (सेना के अग्रभाग) को मारकर  
 इसप्रकार जहाँ सूरत का बादशाह आगे बढ़ा तहाँ १८ तीखे शस्त्रों को पाकर



कच्छी भोज १६१२ कुमारको हु कटिगो संवाध संग्राममें ॥  
 है पाइके खगो हरोल करिवेलगो त्वेरा काममें ॥ १४ ॥  
 रुहो जस्थ कुमार खगग पटकैं बहीन लग्गीरहैं ॥  
 अप्पैं वाहें सिपाह रीझि इतके खासा चढेगो चहैं ॥  
 सोहू जानि बख्शानि पाँनि चलते उच्छाह दै साहहू ॥  
 वाजी किर्णव १ नाम खास बखरूपो आरौहिदै वाहहू ॥ १५ ॥  
 वाजी खास अरोहि भोज १९१२ बढिकैं ज्योँ खगग आरघो बली  
 चकलपो सूरति साह अग्रंग चमू छै छै सु पच्छी चली ॥  
 सोहू सनु हगेल तुटत समै गे गाहि नारें गयो ॥  
 भाला छतिच मारि पारि अरिकों जे पुज्ज ग्राही भयो ॥ १६ ॥  
 गौहैं १२ कैकि रु सीस पट्ट गिरतैं ताको लयो तेरिकैं ॥  
 जामैं इक १ अतुल्लय वजू १ निकस्यो भा इंदु जो जोरिकैं ॥  
 मानिकै पारदि महर्घ सर्व मनिमैं जो हो असंभू तथा ॥

दोनों ओर के हठवाले वीर लूटे (मरे) वहाँ २ भयंकर युद्ध में बुन्दी के कुमार  
 भोज का १ घाड़ा कदगधा तहाँ ३ पैदल होकर आगे खड़ा हुआ और युद्ध के  
 कार्य में ४ शीघ्रता करने लगा ॥ १४ ॥ वह कुमार क्रोधित होकर जहाँ खज्र  
 पटकता था तहाँ पाधी (चमड़ी) भी लगी नहीं रहती थी जिसकी सिपाह  
 प्रसन्न होकर ५ प्रशंसा करते थे और इधरवाले उनको खासा घोड़े पर चढ़ाना  
 चाहते थे और उसकी ६ प्रशंसा जानकर और ७ हाथ चलते देखकर बाद-  
 शाह भी उत्साह देता था और अपनी सवारी का किर्णव नामक घोड़ा ८  
 चढ़कर ९ प्रहार करने को दिया ॥ १५ ॥ उस बलवान् ने खासा घोड़े पर  
 चढ़कर आगे बढ़कर खज्र चलाया सो १० आगे चलनेवाले सूरत के बादशाह  
 ने उस खज्र को चला और उसकी सेना ११ टपक टपक कर पीछी चली उस  
 शत्रु की हरोल लूटते समय उसके हाथी को मारकर समीप गया और उस  
 (सूरत के बादशाह) की छाती में भाला मारकर और शत्रु को गिराकर विजय  
 को प्रथम लेनेवाला हुआ ॥ १६ ॥ १२ घोड़े को झपटाकर गया सो शाह के  
 गिरते समय उसके अस्तक से शिरपंच तोड़लिया जिसमें एक १३ तुलना रहित  
 हीरा निकली जो चन्द्रसा के समान १४ क्रान्तिवाला था १५ मायक आदि सब  
 १६ महंगी मणियों में वह १७ असंभव हीरा था तोभी

तोहू ता सिरुपेचमें तरनिलौं भास्यो सु हीरा १ जथा ॥१७॥

सो लैकैं सिरुपेच भोज १९१२ सुररयो भाला तज्यो सत्थही ॥

तीखे तोमर १ संगि २ तेग ३ मृतपैं पीछे चले तत्थही ॥

जाहीठाँ मुगलेस जाइ रिपु जो पिकख्यो मर्यो भू परयो ॥

भाला फूटिख्यो कुमारकरको जामाँहिँ सोभा भरयो ॥१८॥

कोनँ एह हन्यौं कह्यो बहु तहाँ झूठेहि हंताँ वनेँ ॥

याको मारक जास प्राँस सुहि यौ भाखे हु मो.मो भनै ॥

अकखी कुंत कडाइ देखि कर लौ दिल्लीस काको यहै ॥

नाना तोहु धनी वनेँ भर नये जो कोन जाको यहै ॥१९॥

काको यहै १ जाकोयहै २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

दिल्लीसासक पृछि पासहि लख्यो आकुंत दूदा १९११ हुको ॥

बुल्लयो दुर्जनसल्ल १९११ कुंत यहतो मो भातके बाहुको ॥

भू नाती कछवाह मानहु भनीभाला यहै भोज १९१२ को ॥

फूटो सूरतिसाह जाकरि अहो स्वामी इती फोजको ॥ २० ॥

दाहुको १ बाहुको २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

भाला तावकैं है कि भोज १९१२ प्रति यौ दिल्लीस पृच्छा भई ॥

भाख्यो भोज १९१२ धनै धनीन घन भो जो क्यौं वजै मो जई ॥

मोको सूरति १ तँ दई मुगल ६ यौ भाखी बली भोज १९१२ सौं ॥

यातैं बुंदिय २ तोहि मै दिय अबैं जान्यौं जई आजसौं ॥२१॥

उस १ शिरपेच में २ सूर्य के समान वह हीरा दीखा ३ वह हीरा लेकर भोज पीछा फिरा और वह भाला वहीं पर छोड़ा, उस मरेहुए बादशाह पर ४ तीखे भाले ५ बरखी और तरवारें पीछे चली ॥ १८ ॥ झूठे ही ६ मारनेवा ले बने ७ जिसका यह भाला है वही इसका मारनेवाला है सो यह सुनकर यह भाला 'मेरा है, मेरा है' ऐसा सभी कहने लगे ८ भाला निकलवाकर ९ अनेक वीर उस भाला के धनी बने ॥१९॥ १० यह भाला किसका है सो दूदा से पूछा ११ भूमि के सम्बन्ध से ॥ २० ॥ १२ तेरा है क्या? १३ दिल्लीश ने पूछा १४ इस भाले के बहुत स्वामी होगये हैं, तहां बादशाह ने कहा कि मुझ को सूरत शहर देने दिया है इसकारण तुझ को बुन्दी दी १५ पराक्रम से ॥ २१ ॥

## वैतालीयम् ॥

भाखत इम साह भोज १९१२तैं, हनि रिपु सूरति १ तैं दई हमैं ॥  
 किय दुष्कर मन्निमोजतैं, इम दिय बुंदियस्तोहि तुष्ट हैं ॥ २२ ॥  
 दुर्नय प्रभुराम २०३१४ देखिये, सुनत कुमार इतीहि भोज १६१२सैं ॥  
 हुलस्यो गिनि लाभ जो हिये, करत भयो हि सलाम राज्यकी ॥ २३ ॥  
 विरची नटि यों न विन्नती, बुन्दीतो हमरैहि हे बनी ॥  
 प्रभु रीझे सर्व भूपती, अप्पहिं देन कहा न ओर है ॥ २४ ॥  
 न इमहु बुल्लयो वरानसी, जनक अनंतर मोहि देहु जो ॥  
 बुंदिय इक शवित् ११धी २वसी, लखि पारध कवड्ड रंकलों ॥ २५ ॥  
 बुंदिय इम देत वेगही, करतहि भोज १९१२सलाम राज्यकी ॥  
 मन्निम दूदा १९११गईमही, न अवहि पै उपदा निवेदई ॥ २६ ॥  
 यह इक न लोन आसैंहे, बदलैं रीझ वहारि बोधैंसैं ॥  
 इहिं मृगतृष्णा लग्यो यहै, दूदा १९११हू रिसको दवातभो ॥ २७ ॥  
 ॥ सहै १५है २ अन्त्यानुपासः १ ॥

इत सूरति ठानि अप्पनी, रच्छकराखि विसासके बली ॥  
 अब अकबर ३७१ मोरि कै अनी, पलट्यो दज दखिखन माहिं पदैंरो २८  
 चंद्रा अभिधान चौंसैं, अहमदनौर जु राज्य अंगमें ॥  
 सुहि वेगम संपरायसैं, विधवा प्रतिभट साहपैं बनी ॥ २९ ॥  
 कति गोला हेम शतारि २के, बहु मासन तस दुर्गतैं बहे ॥  
 क्रम अकबर ३७१ शीर बारिके, तोपनभार भुनै अरे तहाँ ॥ ३० ॥

१ कडिन २ रीझ ३ प्रसन्न होकर ॥ २२ ॥ ४ हे प्रभुराप्रसिद्ध उक्त जनीतिवाजे को देखो ५ प्रसन्न हुआ ॥ २३ ॥ २४ ॥ यह नहीं कहा कि पिता के पीछे का जी गुने दो ६ बुद्धि में ७ पसंद ८ कौड़ी को रक्त देने इस प्रकार उगाने बुन्दी को देना ॥ २५ ॥ ९ जीने ही १० परंतु नगराना नहीं किया है यही एक ॥ २६ ॥ ११ याचना है १२ विपार से बुन्दी देने का यह रीझ बदल देवे १३ भूदे लाभ में लगकर ॥ २७ ॥ १४ स्वीधा ॥ २८ ॥ १५ दृष्टा से १६ अहमदनगर के राज्य को दखान हुए थी १७ बुन में ॥ २९ ॥ नौना १८ चाँदी के मोके बलाए १९ वीरों को पाद; अथवा बाहर के वीर ॥ ३० ॥

जिम सूरति१जंगं भो जई२, तत्थ२हु भोज१९१२कुमार ठानि त्यों।  
दुर्गहि अधिरोहिनी दई, गो चढि जो उतके गिराइकै ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

सत्थ सहिल्ली सत्तसत७००, चहि लाहि खग्गचलाक ॥

जो बेगम सम्मुह जुरी, तुटत गढ रहै तार्क ॥ ३२ ॥

सूरति१सम अत्थ२हु सबल, भट निज पिछित भोज१९१२ ॥

गढसिर चढि पहिलै गयो, आँजि अतुल अति आँज ॥ ३३ ॥

बाहिर कढि इम बेगमहु, तुमुल भारि तलवारि ॥

जुरी सत्तसत७०० सखिनजुत, परी तिय सु बहु पारि ॥ ३४ ॥

रन जवनी चंदा रच्यो, असो बहुरि न ओर ॥

सेना अकबर ३७१ साहकी, घनी हनी बनि घोर ॥ ३५ ॥

करत कतल बाहिर कढी, सुनि गढ तुटत संह ॥

कथित सखिन सह जो कटी, हसत नरन रनहह ॥ ३६ ॥

अहमदनैरहु विजितयह, करि गढ भोज१९१२ कुमार ॥

इक सफरमें बस उभय २, किय अकबर३७१जसकार ॥ ३७ ॥

रीक्ति साह पुनि भोज१९१२ रन, अहमदपुर अपनाइ ॥

कहिय ईष्ट मंगहु कुमर, मनहु जुही मन भाइ ॥ ३८ ॥

षट्पात् ॥

रीति लाखहु प्रभुराम २०३१४ मन्नि बुंदिय संटनै मन ॥

भू इतर न लिय भोज१९१२ सोहि दृढ किय साहस सन ॥

इम जंपिय जिम अचल आहि दिखिय तुम आलाय ॥

इम बुंदिय मम अदन निबहि भुगै कुल निर्भय १ ॥

हसि साह कहिय ईतरहु लहहु मंगिय तव पंच ५ हि कुमर ॥

१निसरनी लगाकरा॥३१॥सात सौ २सहेलियों को साथ लेकर३दृढदेखकरा॥३२॥  
५ भोज कर वयुद्ध में७तुलना रहित८बड़े प्रताप से॥३३॥ ९भयंकरा॥३४॥३५॥१०  
शब्दा॥३६॥११अहमदनगरा॥३७॥१२च्छा होवे सो सांगा॥३८॥१३बुन्दीको बदल  
कर१४जैसे आप के घर में दिखी दृढ है तैसे बुन्दी मेरे दृढ रहे१५और भी लो

भोजका अकबर से वांछित मांगना] षष्टराशि-दशममयूख (२३२१)

सुनि लेहु तेहु नरनाह सब विरुद रूप दिय जेहु बर ॥ ३९ ॥  
 अप्पि कोल रनथंभ सत्त ७ पहिलैं किय सुर्जन १९१२ ॥  
 तिनमैं सप्रम ७ तुच्छ मन्नि पछिताइ रहिय मन ॥  
 गो१ सुरमूरति २ गेह ३ नसत ढिग कबहु निहारे ॥  
 करि प्रसन्न साहकँहँ बहुरि ए ३ लैन बिचारे ॥  
 न मिल्यो तथापि अवसर नृपहिं रीझन खिन हेरतरहयो ॥  
 प्रवभोज १९१२ प्रथम त्रिक ३ लैन यह करन जोरि इहिं विधि कहयो ४०  
 देसढिग १ रु दँलढिग २ हु न ठहै यह त्रिक ३ कहुँ नासन ॥  
 गो१ सुरमूरति २ गेह ३ लहै हम लखत विनास न ॥  
 यह त्रिक ३ जव दिय अप्प बहुरि दुव २ तब मंगै बर ॥  
 बरखा लहि सिक्खबिनु घुमँडि ऋतु छँबि जैहाँ घर १ ॥  
 चढि अप्प चलत हित यानँ चढि सह चलिहैं बिनु सासनहु २ ॥  
 इम त्रिक ३ रु जुगल २ मिलि पंच ५ ए बरहि भोज १९१२  
 लहि कहिय बहु ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

त्रिक ३ जुग २ मिलि ए पंच ५ तँहँ, मंगे इष्ट कुमार ॥  
 साह रीझि दै तेहि सब, दिय अंसि छह ६ उदार ॥ ४२ ॥  
 जाँस गदा अभिधान जग, कहत हु मुख्य कृपान ॥  
 छहो ६ अकबर ३ ७ १ रीझि छँम, दयो अधिक हित दान ॥ ४३ ॥  
 बुंदी नहि सँटी बुधहु, जातैं हानि जनात ॥

१ स्तुति रूप ॥ ३६ ॥ रणथंभ के गढ़ में सुरजन ने सात कौल किये  
 थे जिनमें अन्तिम कौल को तुच्छ मानकर पछिताया और मन में  
 यह माना कि गौर्व, २ देवताओं की मूर्ति और देवताओं के मन्दिरों  
 को नाश होते समीप में कभी नहीं देखने थे तीनों बातें बादशाह को प्रस-  
 न्न करके फिर कभी लेखेंगे परन्तु राजा को ३ खनय नहीं मिला ॥ ४० ॥ ४  
 सेना के समीप ५ देवमूर्ति ६ ऋतु की शोभा देखकर ७ इच्छा पूर्वक सवारी  
 पर चढ़कर ८ बिना आज्ञा भी ॥ ४१ ॥ ९ खड्ग ॥ ४२ ॥ १० जिसका नाम 'गदा'  
 कहते हैं ११ समर्थ ॥ ४३ ॥ १२ बुंदी नहीं बदली इंसकारण उसकी बुद्धिमान्ती

जैहँ इक१त्रिक३जुग२सब जुरत६, असि तँहँ सप्तम७आत ॥४१॥  
 कुमरहिँ ए सव७ कति कहत, सूरतिही दिष साह ॥  
 हुव पीछैं बेगम हनन, रन सु भिन्न मत राह ॥ ४५ ॥  
 दूदा ११११२ तव जानिय दुमन, अब बुंदिय गत आहि ॥  
 सत्रु भयो यह साइहू, जानत हे प्रभु जाहि ॥ ४६ ॥  
 पै कैसी भवितव्यपर, संग रहयो यह सोधि ॥  
 अब दिलिय पहुँचाइ इहिँ, बनी निवेसहिँ बौधि ॥ ४७ ॥  
 गढ जित्यो अहमदनगर२, है रन भोज१११२ हरोल ॥  
 भोजधुरज१ विरची भली, तँहँ निजनाम अतोल् ॥ ४८ ॥  
 इमहिँ ख्यात कहियत अबहु, अहमदनैर सु अट्ट ॥  
 अकबर३७११ दिलिय पत इम, वैरिन करि दहबट्ट ॥ ४९ ॥  
 गदत किते अहमदनगर, सफर अंत्य लिय साह ॥  
 तो न कुमर१नृप२भोज१११२तँहँ, इम ठहै मति अवगाँह ॥ ५० ॥  
 सूरति ही तव संभवत, रीझ लहन कुमरेस ॥  
 प्रचुर प्रमान मिलाइ पै, अकिखय हम दृढ एस ॥ ५१ ॥  
 जानी दूदा १११११ हू तजी, अहमदपुर भुव आस ॥  
 जित्यो कुमरहिँ भोज१११२जैहँ, गढ चढि करि पर ग्रस ॥ ५२ ॥  
 साहहिँ दिलिय पत सुनि, पहुँ सुजन ११०११ जैहँ पत ॥  
 तँहँ उर लायो भोज१११२तिम, द्रुत हित जिम सब दत्त ॥ ५३ ॥  
 दूदा१११११ हू चितिय दुमन, करै जनक अब कोन ॥

में हानि दीखती है १ सात की गणना आती ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ २ उदास होकर  
 ३ जिसका स्वामी जानने थे सा शत्रु होगया ॥ ४६ ॥ ४ आगे क्या होता  
 है ५ जैसी चनेगी तैसी निवेडेंगे ६ यह विचार के ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ७ प्रसि-  
 द्ध ८ धुरज ९ बरगाद ॥ ४९ ॥ १० अंतिय सफर में लिया था ११ इसप्रकार  
 बुद्धि का थाह होना है ॥ ५० ॥ १२ तब सुरत के युद्ध में ही बुन्दी आदि रीझ  
 का मिलना सम्भव है १३ बहुत प्रमाणाँ से ॥ ५१ ॥ १४ शत्रुओं का नाश कर-  
 रके ॥ ५२ ॥ १५ गया हुआ सुनकर १६ देकर ॥ ५३ ॥

पै तिम इच्छयो भोज १९१२प्रिय, दिय आसा तजि दोरन ॥५४॥

सहसा सत्य स्वकीय सजि, रति चलयो चढि रुढि ॥

सरनि फतेपुर सीकरी २, पति साहहिं दियहुंछि ॥ ५५ ॥

॥ मनोहरम् ॥

साहको तबेला सीकरी करी हो सो सकल लूटि आयो पुर बुं-

दी दूदा १९११अनखाइकैं ॥

सुनत सु सोर साह अकबर ३७११घोर सेना सजिय कितीक बुं

दी लैन दरसाइकैं ॥

मेरतिया नाम बलभद्र इक ११रठऊर खूनी अकबर ३७११को भयो

जो धन खाइकैं ॥

सगपन स्वीय जानैं रामपुर कीनौ पर परनिसकैं न अब दिल्ली

डर पाइकैं ॥ ५६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठदशौ बुन्दीशसुर्जनचरिते सुर्जनकनिष्ठसूनुभोजकृतयवनेन्द्रशत्रुसूरतपतिमारणातच्छिरास्नानार्घवज्जतत्करपतन १ एतत्समरप्रसन्नयवनेन्द्राकबरकृतभोजार्थबुन्दीप्रदानाज्ञोत्तरमहमदावादतिजयपरितुष्टयवनेन्द्रप्रसादेनभोजस्य स्वसमक्षगोदेवमूर्तिदेवमन्दिरविध्वंसनाभाववरप्रापण २ यवनेन्द्रदिल्लीयानानन्तरभोजबुन्दीप्राप्तिमुर्जनप्रसाददर्शनरुष्टदूदाकृतफत

अकबर और राजा सुरजन १ दोनों से बुन्दी मिलने की आशा छोड़ दी ॥५४॥

२ अचानक अपने साथ को सभ्रकर ३ मार्ग. बादशाह को स्वामि समझने में ४ पृष्ठ दी ॥ ५५ ॥५ अपना सम्बन्ध ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन के लघुपुत्र भोज के हाथ से बादशाह के शत्रु और सूरत नगर के पति का माराजाना और उसके मस्तक का अमूल्य हीरा भोज के हाथ लगना ? इस युद्ध की प्रसन्नता में बादशाह अकबर का भोज को बुन्दी देने की आज्ञा दिये पीछे अहमदावाद को विजय करने के कारण बादशाह को प्रसन्न करके गौ, देवमूर्ति और देव मन्दिर अपनी दृष्टि के आगे खिद्यत नहीं होने का भोज का घर पाना २ बादशाह के दिल्ली गये पीछे भोज

हपुरसीकरीस्थितयवनेन्द्रहयशालालुण्टनोत्तरबुन्द्यांगमनं नाम दश-  
मो१०मयूखः ॥ आदितस्त्रिनवत्युत्तरशततमः ॥ १९३ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्रकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सूर \* मुरड़ि इम साहसूँ, लूटे हय जय लाह ॥

हाणि रच्छक दूदा१९११हठी, आयो धरत उछाह ॥ १ ॥

बुंदी आइ सन्हालि वळै, सावधान करि सर्व ॥

दूदा१९११मुँड़ि रहियो दुसह, पावण जस रखा पर्व ॥ २ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

जिणसमय बलभद्र१नाम मेड़तिया गठोड़ धाड़ायताँनै धुंधर कहावै।

अर जिणरा आतंककरि दूदूरै मार्गभी सोदागर न होलै रके-  
ही देस निगंकुसँ वसण नपावै ॥

जिणराठोड़ कँवर दूदा१९११नूँ अकबर३७११हूँ मुरड़ि प्रायो जा-  
णि जिकोही आपनूँ अवलँवरो देणहार बिचारियो ॥

अर रामपुरे आपरो सगपण हुबो जिणरा विवाहणामें दसोररा  
फोजदारनूँ नीड़े जाणि केहीवार संकल्प पाछो पाड़ि तुरकारा पे-  
चमैं कैदहोणरो डर धारियो ॥ ३ ॥

मेड़तिये बुंदी आइ दूदा१९११थी कहियो आपरो सहाय मिलै  
तो रामपुरे चंद्राउतारै द्रंगँ विवाहणारै काज जाईजै ॥

अर आप न हालो तो कन्यानूँ तरुणी हुई जाणि चंद्राउताँ  
पुरोहितरो धरगोँ दिवाइ मोनूँ बींदरो बेस कराइ साहसथी आणि-  
यो तोभी दिल्लीरा दून दसोर पूगा जाणि पाछोही पैलाईजै ॥

को बुन्दी मिलने में राव सुर्जन की प्रान्नता देनकर फतेपुर सीकरी में बाद-  
शाह की हयशाला को छुटकर दूदा के बुन्दी आने का दशना १० मयूख समाप्त  
हुआ ॥ आदि से एकसौ तरानवें १९१ मयूख हुए ॥

\* बदल कर ॥ १ ॥ १ सेना २ विरुद्ध होरहा ३ बुद्ध के समग्र ॥ २ ॥ ४ भय से  
५ चले ६ निर्भय ७ आधार ८ समीप ९ विचार ॥ ३ ॥ १० नगर ११ भाग्य



दूदाका अकबर से विरुद्ध रहना] पठराशि-एकादशमयुल (२३२५)

दूदो १९११२ कँवर सरगाईसाधार सुणाताँही सहाइ देर लार  
हुवो जिकणा आपरा अनादररै आँटै अकबर ३७११ जिमड़ा पात  
साहथी तोड़ि तिणारो प्रतीकार दिखावणरैकाज केवल वीरभाव  
रो जस चाहियो ॥

अर घणाँ देसाँरा लूटणाहार धाराँरा अधीस पराईभूमिरा भो-  
हणाहार मेड़तिपा बलभद्र १ नूँ रामपुरै लेजाइ विवाहियो ॥ ४ ॥

जरै चंद्राउताँभी पहली ओराँरा बिनाहणाहार कुमार दूदा  
१९११२ नूँ बडा साहसरैसाथ एक १ पुत्री विवाहि पछै बीदेणी  
हुती जिका दूजी २ पुत्री राठोड़ बलभद्रनूँ विवाहि दीधी ॥

अर आवश्यक कृत्य वणिासकियो जिको करि दसोरथी फोज  
चाली जाणि दो २ ही बराताँ प्रातही विदा कीधी ॥

दो २ ही जानैतो रामपुराथी आइ भाणापुर मुकाम दियो ॥

अर निसीथेरैसमय दसोररै फोजदार दो२ ही बर आइ नेडावि  
या जिको सुणाताँही बलभद्र १ नूँ ऊहाँ उभय २ रैसाथ आगै च-  
लाइ कँवर दूदा १९११२ पाछै रहि मरणीक थियो ॥ ५ ॥

दोहा ॥

सउँच १ न्हाणा२ मुख साधि सब,राचे राजसराह ॥

क्रम बेठो संभा करणा, दूदा १९११२ कँवर दुवाह ॥ ६ ॥

करि संभा १ जप २ आदि क्रम, पूजि इष्ट गोपाल३ ॥

स्व कराँ करि भोजन सदा, करी निवेदणा काळ ॥ ७ ॥

आप करै सोही असँणा, इष्ट भोग अवसेस ॥

इम पूँपी जुगर करि उठै, प्रभुरै कीधी पेसँ ॥ ८ ॥

१ घरण आये हुआँ का आधार २ बदले ३ बैर मिटाना ४ भागनेवाला ॥ ४ ॥

५ दुलहन ६ जरूरी काम ७ बरातें ८ आधी रात्रि के समय ९ समीप थिया

१० दोनों दुलहनों के साथ ११ काम आने (मारेजाने) को तयार हुआ ॥ ५ ॥

१२ सोच जाकर स्नान करने आदि ॥ ६ ॥ १३ अपने हाथ से भोजन पकाना

॥ ७ ॥ १४ भोजन १५ बाकी १६ रोटी १७ भेट घरी ॥ ८ ॥

## ॥ सचरणागदाम् ॥

जतरैतो दसोररा चालिया प्राणांरी बाजोरा खेलहणाहार अक  
वर ३७१२ रा वानैत काळरा किंकर अणाचींतिया पाहुणाँ साँकै  
डैही आयपूगा ॥

जिकाँनूँदेखताँहीं पुलियार कायरारै कंप १ वीरारै वीरसरार  
सोगुणाँ जोस २ ऊगा ॥

दूदो १९११२ प्रभुरो भोगावसेस भोजन करि इष्टदेवरो बटवो  
गळे बाँधि साँवळिया तुरंगरी पीठि आयो ॥

जतरै इणारा साथियाँ तुरकाँरो संपात नीठि रोकियो ॥

अर कँवरभी आरूढहोताँहीं त्रि३भाँगो तोमर भुजादंडथी भ-  
माइ सत्रुवारै साम्हें आपरो बाह ओकियो ॥ ९ ॥

पैलाँमें पविर्पातरै प्रमाण पूगतोँही उठीराभी कायर चळविचळ थिया ॥

अगसूर हूँतातिके कँवर दूदो १६११३मँकुमानी मिलाइ निहालकिया ॥

भालारी भचाकाँ चखाइ केही पटेताँनूँ पाडि कुमार आपरै-  
देसरी दिसा आँडै पग आवणाँनूँ मरतैभारतै प्रयाण कीधो ॥

अर तुरंग साँवळियारा बेगहूँ पैलाँरा बाजियाँरा बेग थकाइ  
एकला १ फोजदारनूँ आपरै समीप आवणादीधो ॥ १० ॥

दो२ ही वीर साँकैडै मिलियाँ दावकरता १ बचता २ हडोती-  
के मार्ग वहियाआवै ॥

अर ओरभी दो २ ही तरफरा प्रवीर जुदाजुदा जुझकरता याँदो  
२ ही महावीरारै पाछें रहियाआवै ॥

आगैआवताँ एक खाल्ल बारह१२ हाथको चोडो १ घणों ऊँडो २

१ बाण चलानेवाले; अथवा बालाबंध २ यमराज के संवक ३ समीप ४ ओंठ  
से बाकी रही वस्तु ५ प्रहार ६ भाला चलाने समय उसके दो भाग आगे को  
और एक पीछे को रखकर धामने से उसको त्रिभागा कहते हैं ७ भाला ॥९॥  
८ वज्र प्रहार ९ महमानी १० पटा फेंकनेवालों को ११ चला ॥१०॥ १२ समीप  
१३ विशेष वीर १४ नाला

कृदाका मेडतिया बलभद्रको सहायदेना] षष्ठराशि-एकादशमयुख(२३२७)

आडै आयो जठै कुमार दूदो १९१।२ तो सहजमैं साँवळियानैं भँपाइ  
खाळरै वार आइ भालो ऊवाइ साम्हों खडो रहियो ॥

जिको दुष्कर देखि परैही रुकियेथकै जवन नाम पूछियो जेरैं  
कुमारभी आपरा सहाय देखारो सारोही उदंतै अभिधान सहित  
कहियो ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

सुर्जन १९१।२ सुत १ बुंदी सदन २, संज्ञा ३ दुरजया साल १९१।३ ॥

व्याहण हूँ बलभद्रनूँ ४, हुवो सहायक दाल ॥ १२ ॥

सरण सहायक बिरुदसिर, पहलीही कुळपाँख ॥

अकबर ३७।१ हूँ मुड़ियो अबैं, त्रस्त करूँ तुरकाँख ॥ १३ ॥

जिम थारो खूनीं जिको, किरैं बलभद्र कबंध ॥

अठै विवाहण आणियो, सरणों में बळसंध ॥ १४ ॥

भड़ म्हांरा पाछैं भिड़ै, जिकौ बहोड़ो जाइ ॥

अच जै भड़ियो एक भो, तो पड़ियो पँचि तौइ ॥ १५ ॥

ऊजड़ै दसपुर अगँसूँ, वळैं तिकारैं बैर ॥

निज घर थे जावो नतो, खान विचारो खैर ॥ १६ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

या सुणातौही कुमाररा पाणिपँनूँ प्रमाणकरि पाछो जाइ फोज-  
दार आपरा वीराँनूँ बहोड़ि दसोर पूगो ॥

अर पाछैंसूँ आपरोसाथ आइमिलियाँपछैं कवँरभी आगलासाथमैं  
आइ मेडतियानूँ अभयरोमहामह मनाइ अँकैरै उपमान ऊगो ॥

इणारीति बुंदीसरो बडोकुमार दूदो १९१।२ सहाय देर मेडतिया  
बलभद्रनूँ विवाहण रामपुरै गयो जठै आपभी आपरा वीरपणारा

१ कृदाकर २ वृत्तान्त ३ नाम सहित ॥ ११ ॥ ४ घर ॥ १२ ॥ ५ कुल  
के पराक्रम से ६ तुरकों के राज्य को कम्पित करूँगा ॥ १३ ॥ ७ निश्चय =  
बल की प्रतिज्ञा से ॥ १४ ॥ ८ पीछा करो १० वज्र ११ तहाँ ॥ १५ ॥ १२ शून्य  
१३ मदसोर को दमाऊँगा ॥ १६ ॥ १४ पराक्रम १५ सूर्य

लुभाया चंद्राउतनरेस दुर्गदासरा पुत्र रामपुरारा अधीस गजसिंहरी  
कन्याजसकुमरि १९१४ कुमराणीनूँ बिबाहि बुंदी आयो ॥

अर राठोड़नूँ रभणीसहित केहीदिन राखि भरोसारा भडसाथ  
देर उगारै आगारै पुगायो ॥ १७ ॥

जिको सुणाताँही अकबर ३७११ रै जाणौं बारूदरा गंजमें दमंग  
भडै जिखारीति क्रोधानळरो प्रकर्ष छायो ॥

तिको तबैलारी लूटरा घावपर बडा खूनीनूसहाय देर लूणा लगायो ॥

पातसाह सुर्जन १९०१ नरेसनूँ कहियो बुंदी छुडावणारैकाज  
फोजमेंथारोबी जावणौं होइ तो ठीकहै ॥

जठै नरेस कहियो फोजरै अर भोज १९१२ रैसाथ म्हारा जाव  
णामेंतो पिता १ पुत्राँ २ रै दोरहीतरफ अपजसरो अनीकहै ॥ १८ ॥

जिणायी म्हारा भाई काका भीमरा १८८२ पुत्र सिंह १८६१  
नूँ भेजीजै तो सुजसरैसाथ हुकम सधसी ॥

अरजुद्धमैजय हुवाँ दूदा १९११ जिसा दुष्टारैऊपर हजरतरो अ-  
प्रमाण असह आतंक बधसी ॥

जिणायी भाईनूँ बधारो देर भोज १९१२ रै सहाय फोजरै साथ  
कीजै ॥

अर जुद्धरा जीतणहार टळिया वानैत भरोसारा होइ तिके ला  
र दीजै ॥ १९ ॥

जरै जवनेस सुर्जन १९०१ रै कहियाँ भीमाउत १६१२ हाडा  
सिंघदेवनूँ १८९११ सहस्राप १ सहरैसाथ अढाईहजारी २५००  
रो मुनसव देर बुंदीरै ऊपर बिदाकीधो ॥

अर जवनाँमै मालिक करि भोज १९१२ रोभीडूँ नवाब मुहब्ब  
तखान २ साथ दीधो ॥

१ स्त्री सहित २ घर पहुँचाया ॥ १७ ॥ ३ ससुर में ४ अग्नि ५ अधिकता ६ बुराई  
७ सेना ८ हसकारण से ९ भय ॥ १९ ॥ १० सहायक

लकड़खान १ रै ऊपर चलावणारा कारणा करि जिको नबाव  
मार्गहीमें कुठारखान २ कहायो ॥

इगारीति सिंघदेव १ मुहब्बतखानसहित मध्यम २ कुमार भो-  
ज १९१२रै सहाय बडाकँवर दूदा१९११नू मारणारैकाज बुंदीऊपर  
अकबर ३७।१रो अनीक आयो ॥ २० ॥

ग्राम बडधा १ कुमारती २ रै बीच मुकाम हुवो ॥

अर रात्रिरे आगमें तिकाँरै प्रमाद राखणारो कुकाम हुवो ॥

निसीथरै समय कुमारदूदै १९११ तिकाँमाथै जाइ नत्रीठा बाजी  
पटकिया ॥

अरदिल्लीरा बीराँनूँ कोरँडो लोह चखायो जिणआगै बडाबडा  
दुर्बाह बनैत न टकिया ॥ २१ ॥

नागराजरा भोग फेणँभरिया लटकिया ॥

अर तुरकाँरा हाडाँपर हाडाँ६१रा खारा खड्ड खटकिया ॥

चंद्रहासाँरा चीरिया जठीतठी बकतर१टोपाँ२रा टूक चटकिया ॥

अर कायरारै प्राण केवल नाँडियाँमाँहँ अटकिया ॥ २२ ॥

जठै कुमार लकड़खान१चौडै खेत जाइ कुठारखान२भाँजियो ॥

अर आपणाँ अनुज भोज१६१२काका सिंहदेव१८९।१समेत  
अवसेस दिल्लीरो दळ गाँजियो ॥

मुहब्बतखान२रै मरताँही दिल्लीरा दोइहजार२०००बीराँरो खेत  
पडियो जाणि कुमार भोज१९१।२रो बचियो न मानि तिकणनूँ ले  
र सिंहदेव१७९।१हाडापणाँनूँ फाँको दिखाइ नीचा नेत्र करि पाछो  
दिल्ली पूगो ॥

१ सेना ॥२०॥ रात्रि २ आने पर ३ गफलत ४ बहुत शीघ्रता पूर्वक; अथवा अ-  
त्यन्त दौड़ कर ५ घोड़े डाले ६ निकेवल ७ यह वीर का विशेषण है ८ नहीं भागने  
की प्रतिज्ञा का चिन्ह रखनेवाले; अथवा बाण विद्या को जाननेवाले ॥२१॥ ६ फण  
१० भाग से ११ खड्ड १२ यह तूटने के शब्द का अनुकरण है ॥ २२ ॥ १३ विजय  
किया, अथवा मारा

अर जठीतठी बडाकुमार लकडखान १९११रा पराक्रमरो सुज-  
स ऊगो ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

ले मुनसव पदवी पडेण, आयो सिंह १८९१अवीह ॥

भांजिकुठार १भजाडियो, सोरत्तकड १९११रासीह ॥ २४ ॥

करि बळ दूखों कौपियो, जिको दुसह जवनेस ॥

सुर्जन १९०१ह कहियो सजे, अब मारो सुत एस ॥ २५ ॥

॥ सचरणगचम् ॥

अठी कुमार दूदे १९११ विजयरा धंव घुगाइ बुंदी आई आप  
समैं भरोसा भागो जणाइ कुमार रत्न १९२१ सहित अनुज भो-  
ज १९१२ री वडी कमलाणि बालखांति रायकुमारि १९११ बुंदी-  
हूँ दिल्लीनरसरे कनै भोजिदीधो ॥

तिको सुर्जन १९०१ भी पुतमहित कासी भेजि धर्मरा धारणा  
में बडा कैवररी तारीफ कीधो ॥

अकवर ३७१ भी बडा साहसरेसाथ सुर्जन १९०१ नूँ सजाइ  
बुंदीमाथें विदाकीधो ॥

अर नवाव रणमस्तखान २ नूँ भोज १९१२ री लाज भळाइ  
तिकोभी लार दीधो ॥ २६ ॥

दोहा ॥

सुर्जन १९०१ नृप रणमस्त २सह, भोज १९१२ कुमारक भीड ॥

भाभी अकवर ३७१ भेजिया, नामी प्रतिगट नीड ॥ २७ ॥

सनरणगचम् ॥

अकवर ३७१ कपटकरि आँखियो जे दूहो १९१२ आंगे समुभा  
यो चाकरीकरानूँ आवे तोना फेगभी बुंदी १ एवज तिकरानूँ बी

॥ २७ ॥ २ पहिली मरने सो द जिनेर ॥ २४ ॥ २२ ॥ २३ ॥ ३ न्यायावर धोम  
४ शक्ति धोम अगवा दूरा के समीप ॥ १७ ॥ ५ कहा

जोरस्थान दीधोजावै ॥

अर नहींतो हरामखोर इया आर्यावर्तमें कठेही बचण न पावै ॥

इसडो हुकम सुणि नरेस सुर्जननबाव रणमस्तखान २ कुमा  
र भोज १९१२ नूँ लेर बुंदी आया ॥

अर दूदा १९११ नूँ सामरैसाथ आइमिलणामें अनेक लाभ ज-  
गाया ॥ २८ ॥

दोहा ॥

कालिह मिले दूद १९११ कही, बळे करे रणबात ॥

पगे पडण निहचै पछै, तजि असि आऊँ तात ॥ २९ ॥

सचरणगद्यम् ॥

इसडो कहाइ दूजै २ हीदिन कुमार दुर्जनसाल १९११ आखेटरा  
रमणाहूँ परमारोही घोडाँरा चाकगँनूँ बरजाई दोडाँरा साधिया घो  
डाँरा पचास ५० ही छडौँ असवार साथ लेर पितारै पगेलागणनूँ  
दिल्लीरी फोजरैसमीप आयो ॥

अर पचास ५० ही घोडाँनूसूनो छोडि तिकाँरै हानैँ भाला ल-  
गाइ जनकरै आगैँ प्रणामपूर्वक माथो नमायो ॥

नरेससुर्जन १९११ भी पुत्रो खाँधो आपलि हृदयहूँ लगाइ वि-  
स्वासियो ॥

जिको दोरही पिता १ पुत्राँ २ रो मिलाप सुणि अंतरमें एक  
जाणि तुरकाँरो तौम त्रासियो ॥ ३० ॥

नरेस १ भी दूदा १९११ रा आवशारी जगाइ रणमस्तखाँ २  
बुलायो तिकणभी आइ दूदो १९११ सादगीरैसाथ न पहिचाणि  
यो ॥

अर बैठौँ पछैँ नरेसरे कहियाँ च्यारिपाँच साथियाँरै बैठैँ बैठो

१ मिलापके साथ ॥ २२ ॥ २९ ॥ रसना कराकरेधाडा डालने में सिलाप दृष्ट दोड़ो  
को ४ अक्षय अथवा केवल ५ विना रत्नक १ आसन के अगले भागपर ७ मन  
में ८ समूह ॥ ३० ॥ ९ नीचे

जाणियो ॥

जवनभी उगहूँ लगाइ कहियो जिण वीरराघोडाँमें इसडो एको  
तिकणनूँ पाणिंग पाणुरैसाथ पातसाहरो प्रेरियो किसडो वानैत  
आसंगमें आणै ॥

अर सामरैसाथ सत्कारहूँ मिलायोथको सीसरैसाँटै स्वामीरोही  
सासन प्रमाणै ॥ ३१ ॥

जठे नरेस १ नवाव २ हूँ कहियो आपणै आवताँ अकवर ३७  
१ रो आदेस इसडो हुवो सो बुंदी१रैएवज औरस्थान२ लेर चाक-  
रीकरणौ न मानैतो दूदा १९११२ नै पकडिआणौ ॥

अरु नहीतो भेजणौ उगगा सीसरो नजराणौ ॥

अव ए दूदा १९११२ रा साथीभी पचास ५० ही दूदा१९११२रै सा  
थहै जिणथी समस्तराही सीस बढि सँलोतो भरि दिल्ली पुगावो ॥

अर पुत्र १ रा मारणमें पिता २ रो अग्वंड अपजस उगावो ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

भणायो जवन१ जदि भूप२ हूँ सूरकँवर करि साहि ॥

हाँलि मिलावो साहहूँ, चुगली मेटण चाहि ॥ ३३ ॥

अधिप कही जदि हालि अव, सुत तू म्हारैसाथ ॥

मिलि पाछी लै मह महँर, अकवर ३७११ सूं सँह साथ ॥ ३४ ॥

॥ पट्पातू ॥

कवँर जरै जोडिकर प्रणामि कहियो नरेसप्रति ॥

प्रभुरो आयौ पत्र निडर आतो धारे नैति ॥

पणारण मस्त १ पटैत भोज २ भाई करि भेळा ॥

अण अवसरै इम आइ खोलिदीर्घा डर खेळा ॥

१ हाथ के पराक्रम के साथ २ भेजा छया ३ काबू में करारता है ४ मस्तक का  
बढ़ता ॥ ३१ ॥ ५ सब के मस्तक काट कर ६ ऊँट का ओरा भरकर ॥ ३२ ॥ ७  
पलकर ॥ ३३ ॥ = कृपा ८ धन सहित ॥ ३४ ॥ १० नम्रता धारण करके ११ बिना  
समय १२ क्रीड़ा ॥ ३५ ॥



जिहाहेतु कालिह रणएक जुडि पहुँ लागि मभुरै पगाँ ॥  
कैद है बालि सुजरो करूँ तार सुजस १ अपजस २ लगाँ ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

बदियो जदि रणमस्त बहु, मानि कवँर सो बैरा ॥  
बिगा रण हालो दासं वणि, अप्पण पावण अँगाँ ॥ ३६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सो सुणि दुरजणसाल १९११ कोपि रणमस्त बकारे ॥  
कहियो थाँ जिम कवण मान भाँजै छल मारे ॥

पहली भेजणा पत्र हुकम करतो है हाजरि ॥

अब सो सुर्जन १९०१ आणा प्रधन पहली ईखूँ अरि ॥  
है जेर बळे सह हालिहूँ कपट बिलंब न खिण १ करूँ ॥  
नरनाह १ टाळिजै इम नहीं तोतो दळ नड्डो तरूँ ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

दूदो इम भाखे दुसह, आयो ऊठि अगार ॥

मग गहियो रणमस्त २ मिलि, प्रकटे निज मन प्यार ॥ ३८ ॥

दूदा १९११ सुणि माने अदल, सम्मद तो १ मोर साखि ॥

मारै नहँ मिळिपाँ सुगलद, राज १ धरा २ धन ३ राखि ॥ ३९ ॥

कहियो सुणि दूद १९११ कवँर, ईळा न लेणी ओर ॥

लेहालो बुंदीलगा, जाणूँ मालिक जोर ॥ ४० ॥

बिहसे तदि सुर्जन १९०१ बदी, बुंदीही तव बाँहँ ॥

बाबर ३११ सुत बाँवै बळे, छत्रहेठ दे छाँहँ ॥ ४१ ॥

कर जोडे पाछो कवँर, कही जनक बळ कोडि ॥

एक १ बुलावण आवतो, दास धाँवतो दाँडि ॥ ४२ ॥

१ बिना युद्ध किये. अपना २ घर पाने के लिये ॥ ३९ ॥ ३ कौन ४ सौजन्य  
५ युद्ध में ६ झुक कर ७ नाडा (लुच्छ जलाशय) रूपी ॥ ३७ ॥ ८ घर ॥ ३८ ॥  
९ इन्ताफ ॥ ३९ ॥ १० श्रुति ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ११ कोड़बल है ताँभी १२ दौड़ता "यहाँ  
दौड़ने की अधिकता बताने के लिये एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग है" ॥ ४२ ॥

## ॥ षट्पात ॥

जैरँ कुमर हठ जाणि जनकआगँ इम अक्खी ॥

आप टळै दिस एक सकळ बळ आइ \* समक्खी ॥

किंकर दूदो १९११ काढि अनुज १९१२ बुंदी अवधारो ॥

आजि भचक लै एक १ बळे डर मूक्त विचारो ॥

जै डर न होइ जाणौ जनक प्रणैत काल्हि लागूँ पगाँ ॥

सो जै न होइ दीजै सहज सुत अपजस असगाँ १ सगाँ २ ॥ ४३ ॥

॥ दोहा ॥

आपो बूंदी भाखि इम, संधाँ लडण समाहि ॥

करणा बिजै दूदै १६११ कँवर, चुणिया भड अर्ड चाहि ॥ ४४ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

दूजै ३ दिन कँवरतो पहली सुरथपुर जाइ रक्तदंतारो पूजन कीधो ॥

अर पैलारै कटक जोभूरा तंडागरे उत्तरतट आइ मुकाम दीधो ॥

जठाहूँ दोइ हजार २००० असवारो सुरथपुर आइ कुमार बेढियो ॥

अर दूदै १९११ भी अंबारा अर्चनरै अनंतर आपरासाथियाँ समेत

साम्दै आइ घोर घमसाण कियो ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

पैला रण जिण छूटि पग, पुळियाँ डेराँ पाइ ॥

जै कहाई जनकहूँ, दूदै १९११ सपथ दिवाइ ॥ ४६ ॥

सचरणगद्यम् ॥

विजयरालोभी रजपूत चाहै जिणसमय आइ सम १ विसम २

जुद्धकरै ॥

\* सन्ध्या १ धारण करो २ युद्ध में ३ प्रणाम करके ४ यदि नहीं होवे तो ५ बिना  
सम्यन्धवालों में ६ सम्यन्धवालों में ॥ ४३ ॥ ७ प्रतिज्ञा ८ हठ करके ॥ ४४ ॥  
९ रक्तदन्ता नामक देवी का १० ताळाव ११ देवी का पूजन करने पीछे ॥ ४५ ॥  
१२ भागे ॥ ४६ ॥

दूदाका अकबर की सेनाको भगाना षष्ठराशि-एकादशमयूख (१३३५)

अर जनकादिक गुरुजनानूँ टाळि तिकारैसाभैतो अनुगत  
भाव धरै ॥

जिणथी आपरो सिविँर ऊँचास्थलपर होइ तो कुपुत्रनूँ आदाब  
राखणरी सुद्धि रहै ॥

अर बाकीरा बीर दोर ही तरफ आपसमें असिवर चखाइ बानै-  
तपणारै विरुद्ध बहै ॥ ४७ ॥

इसडी कहाई तोभी नरेस सुर्जन १९०११ आपरा डेरा जुदा न  
टाळिया ॥

अर एक१ ही घररो जुद्ध जाणि अठी १ उठी२ दोही २ तर्फरा  
सर्वही स्वकीय भाळिया ॥

जरै दूद१९११ कुमार जोभूरा सरोवररो उत्तरतट फुडाइ जळ  
काढियो ॥

अर बूडता बचता बीजा२ चतुरंगनूँ चळविचळ हुवो जाणि रति-  
वाह देर अचाणक आइ बाँडियो ॥ ४८ ॥

जिण घोरसमयमें सखारो प्रहारकरि व्याकुलहुवो नबाव रणम-  
स्तखान१ तो कुमार भोज२ नूँ लेर एक गर्तमें तृणारसमूहदेठै द  
वि रहियो ॥

अर महीपभी आपरी माळानूँ मंचपरही मेलि एक दिसारो मा-  
ग गहियो ॥

बाजी साँवळियारा चरण डेरारो तणारो उळभिया जाणि कु-  
मार दूदा१९११ रो चाबक बहियो ॥

जरै परबस भाँप लेताँ आँत तूटी जिणथी कवरै घोडैभी पर-  
लोक लहियो ॥ ४९ ॥

१ बडे लोकों को २ डेरा ३ खवर ४ बाना धारण करने के यश को धारण  
करै ॥ ४७ ॥ ५ सेना को १ काटा ॥ ४८ ॥ ७ खड्गे में ॥ ४९ ॥

दोहा ॥

जठै भोज१ रणमस्त२ जुग२, बचिया गर्त बिंचाळ ॥

पुल्लियो जिम सुतहूँ पिता, महीपाळ तजि माळें ॥ ५० ॥

ईखे हय मृत आपरो, दूदा १९११२ कुमार दुबाह ॥

बाजी खास नवाबरो, लो चढियो जयलाह ॥ ५१ ॥

जनक१ सिविर १ टाळे जिको, जवनसिविर२ धन जोडि ॥

आयो पुर दूदो १९११२ अडर, माझी परदळ मोडि ॥ ५२ ॥

गो दिल्लीदळ जैतगढ, मंडे सभय मुकाम ॥

बीजे२ दिन दूदै१९११२ बळै, कीधा मिळण सुकाम ॥ ५३ ॥

सचरणागद्यम् ॥

इणरीति ग्राम वोरखंडीरा धमसाणमें दिल्लीरा दळनूँ भजाइ दूजै  
२दिन दूदो १९११२ हाथवांधि जैतगढराडेरौ जाइ पितारा पगाँ प-  
डियो ॥

जिणरा वीरपणहूँ रीक्षियेथकै रणमस्तखानभी उरहूँ लगाइ  
हितरो संलाप घडियो ॥

नरेसहूँ नवाबर कहियो अब दूदो १९११२ आइमिळियो जिण  
थी इणनूँ लेजाइ साहरा कदमाँ लगावाँ ॥

अर बुंदीरै अबज कुमार भोज १९११२ बीजी२ठाम दिवाइ दोर  
ही भाइपरै आपराजै वधियो विरोध भगावाँ ॥ ५४ ॥

दोहा ॥

हाँलो धाम दिवाडिहाँ, अथवा इणनूँ ओर ॥

पण अब मेलौ सादपग, जाखे जय१ नय२जोर ॥ ५५ ॥

जंपि सपथ रणमस्त जदि, बीच अलाह बताइ ॥

लाधो दूदो १९११२ लारही, कटकाँ कूच कराइ ॥ ५६ ॥

१ खड़े के २ चौथ में ३ भगा ४ माला छोडकर ॥ ५० ॥ ५ अपन घोड़े  
को सरा देखकर ॥ ५१ ॥ यवन के डेरे का धन ६ इकट्ठा करके ॥ ५२ ॥ ५३ ॥  
७ चार्तालाप ॥ ५४ ॥ ८ चलो ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

पातसाह अकवर ३७।१ पगे, जिको लगायो जाइ ॥

सोधे भूप १ नवाबर सुभ, स्व धरम सपथ सुणाइ ॥ ५७ ॥

तोभी अकवर ३७।१ ताकिया, उखरा खून अमोघ ॥

करि मिळियो अंतर १ कपट २, ऊपर १ आदर २ ओघ ॥ ५८ ॥

नृप १ नवाब २ साकियो नथी, जिको साह छळ जाणि ॥

कँवर भिळायो हेत करि, पावन आण प्रमाणि ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पृर्वायणे षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशसुर्जनचरित्रे सुर्जनपट्टपकुमारदुर्जनशल्य (दूदा) सहायेन मेड़न्तिकवल भदरामपुरपरिखायनोत्तरं तलैव तत्परिखायन १ स्वानुसृतदशपुराधि कारिविजयपूर्वकोभयजन्यसहितबुन्दागमन २ एतदपराधश्रवणारुष्टयवनेन्द्रसैन्यसुर्जनलघुसूनुभोजबुन्दीप्रस्थापन ३ दुर्जनशल्यपराजितभोजप्रत्यागमनातिरुष्टयवनेन्द्राकबररखामस्तखांसहितरावसुर्जनबुन्दीप्रस्थापन ४ सरखामस्तखांसुर्जनपराजयोत्तरविनयसमागत कुमारदुर्जनशल्येन सह रावसुर्जनस्य यवनेन्द्रान्तिकगमन ५ दुर्जनशल्यकृतामोघमन्तुनिमित्तकान्तश्छलेऽपि बहिरादरदर्शनपूर्वकयवनेन्द्रमेखनवर्णनं नामैकादशोऽऽमयूखः ॥ आदितश्चतुर्नवत्यधि

अपने धर्म के १ सौजन सुनाकर ॥ ५७ ॥ २ खाती नहीं जावें ऐसे ३ मसूदा ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पृर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में सुर्जन के पादवी पुत्र दुर्जनसाल (दूदा) का मेड़तिया बलभद्र को अपनी सहायता से रामपुरे परखा कर वहीं पर अपना भा विवाह करना १ अपना पीछा करनेवाले मन्दसोर के हाकिम को विजय करके दोनों बरातों सहित बुन्दी छाना २ इस अपराध के सुनने से क्रुपित होकर सुर्जन के लघु पुत्र भोज को सेना सहित बादशाह का बुन्दी पर भेजना ३ दुर्जनसाल से पराजित होकर भोज के पीछे आने से अत्यन्त कोपवाले बादशाह अकबर का रणमस्तखांसहित राव सुर्जन को बुन्दी भेजना ४ रणमस्तखांसहित पिता को जीतकर नम्रना पूर्वक आये हुए कुमार दूदा को साथ लेकर राव सुर्जन का बादशाह के समीप जाना ५ कुमार दूदा को अमोघ अपराधों के कारण मन में छल और ऊपर से आदर दिखाकर अकबर के मिलने के वर्णन का ग्यारह-

कशततमः ॥ १९४ ॥

प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

इंदु राम नृप १६३१ साक इत, द्विज कवि तुलसीदास ॥

किय नूतनपुर कोसला, रामायन मतिरासं ॥ १ ॥

सदैव छोरि यह हरि सरन, भयो रामपद भक्त ॥

मधु१सित२नवमी३कुज३मिलत, सो तिहि रचन प्रसक्त ॥ २ ॥

प्रकट१ प्रीति२ अंतर १ कपट २, सबि मिलत इतसाह ॥

किन्न छलि रु दूदा १९१११ कुमार, राज्य मुदित कछु राह ॥३॥

सिक्ख दर्ई नृप सुर्जन १९०११ हिं, कासी यह करि कज्ज ॥

अरु पठयो रनमस्त इत, सूबा लवपुर सज्ज ॥ ४ ॥

तस सहाय दूदा १९१११ हु तँहँ, हित दिखाइ लाहोर ॥

संगहि पठयो साहनै, जानि पिहित छल जोर ॥ ५ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

असै कुमार दूदा १९१११ तो रणमस्तके संग करि पहिलेही  
पंजाबमें भेजिदीनों ॥

अरु पीछेंसौ आमैरकेअधीस कूर्म मानसिंहकों काबलके सू-  
बापर बिदाकीनों ॥

सिंधुनदीकेपार दिल्लीको अमल रह्यो सो काबलकी सीमाक-  
रि तर्हिाको सूबा कहायो ॥

ताको प्रबंध कराइबेकों राजा मानसिंहकों सासनगहायो ॥६॥

॥ दोहा ॥

वां ११मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ चोरानवे १९४मयूख हुए ॥  
१ बुद्धि का समूह ॥ १ ॥ २ घर. चैत्र सुदि नवमी ३मङ्गलवार. रचने में ४ आ-  
सक्त हुआ ॥ २ ॥ ५ बादशाह अकबर ॥३॥ ६ लाहोर के खं पर ॥४॥ ७ गुप्त  
काबुल की सीमा के सम्बन्ध से उस खंवे का नाम काबुल का सूबा हुआ ॥६॥

कुम्भहिँ इम जावत कह्यो, साह कपट अनुसार ॥

दूदा १९११ हनि लाहोर दुतै, पोछै जावहु पार ॥ ७ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

अैमै साह१को सासककछवाह२ सौं गुप्त भयो तथापि गणम-  
स्तखानके पुत्रनै यह दूदा१९११कोँ मारिवेकी बात जानिलीनीं ॥

अरु तबही आपुनै पितापति एक १ पत्रिका अैसीरीति लिखि  
के भेजिदीनीं ॥

सो दूदा १९११ अपनै बाँहबचनसँ बिस्वास करिआयो ॥

अरु अब ताको कपट करि मारिवेकोँ १ वा गहिभेजिवेकोँ २  
पोछैसाँ साहनै साळा मानसिंह पठायो ॥ ८ ॥

दोहा ॥

तासौं अब हे तात तँनु, दूदा१९११ संगहि देहु १ ॥

कहि रु भेजहु पिहित के २, अति अधर्म लखि एहु ॥ ९ ॥

सचरणागद्यम् ॥

या पत्रिकाके पढतही रनमस्तनै दूदा१९११ सौं समस्तही अ-  
भिप्राय खोलिदीनीं ॥

अरु कुमारनैहू दूजी २ कुमरानी राष्ट्रकूटी उमाकुमारि १९१२  
संगही ताकोँ एरुसके बेस बनाइ द्वैर्दी पति १ पत्नी२न तीजे ३  
तुरंगी जोइसी जगन्नाथ ३ सहित प्रच्छन्ननिकसि आपनै देसकोँ  
प्रयान कीनीं ॥

साहनै राजामानकोँ काचलके सूबापर भेज्यो तबही नवाब नो  
सेरखान१ कोँ मध्यम२ कुमार भोज १९१३ कोँ अमल कराइवे  
काज बुंदी पठायो ॥

अरु इतकोँ कुमार १ कुमरानी २ जोइसी जगन्नाथ ३ इनको

द्वादशाह के कपट के १ साथ २ शीघ्र ३ सिन्धु नदी के पार ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥  
शरीर को ॥ ९ ॥ ५ घोड़े का सवार ६ ज्योतिषी ७ छाने

त्रिक ३ ही कद्दीगीति प्रच्छन्न कडि कासीकी समताके महातीर्थ  
कुरुक्षेत्र आयो ॥ १० ॥

तहाँ जोइसी जगन्नाथकों ग्राम खानखेडा १ दान दैकैं पीछैं रा  
खि मिथुनर ही मथुरा आवतभयो ॥

तहाँ आपुनो सातक अहरनाम एक १ ग्रामके अधीस रहोड  
छत्रसिंहका कुनर मिला ताके साथ दैकैं कुमरानी राधूकूटीकूँ  
ताके पिउदर पठावतभयो ॥

आप इकल १ असवार आभैर आइ उहाँसों ओर बाजी बदलि  
लायो सोहूँ टूँकनगरके परिसरलों पहुँचत पंचमीपधाराके प्रमान  
करि थकिरह्यो ॥

तब टुकके चालुकन बीस २० सार्दी संग दैकैं आपुनै ग्वासा  
हयपैं चढाइ भेज्यो तानै नंदनांग्रामलों आवत कितोक आपुनो  
परिकरहु सम्मुह लह्यो ॥ ११ ॥

दोहा ॥

नृपसुत आवत नंदनां, बुंदिवभट विस्वस्त ॥

सम्मुह जाइ कुमारसन, मिले संगोद समस्त ॥ १२ ॥

वानैधर तिनमैं बली, द्वैसत २० धीर दुवाँह ॥

मिले तिनहि कुमरहु मिल्यो, रक्षिष भरोसागह ॥ १३ ॥

कुमरानीदिग सिविरैकार, सुन्यो परयो नोसर ॥

तिहिं जितन पहिलें तफगो, हृदा १११११ विरचि नदेर ॥ १४ ॥

सबखमचम् ॥

नंदनांमों चलाइ कुमार हृदा १११११ रतिवाहदेकें अकबर २७११

काशी की १ पराधी करनेवाले १०॥ १ जोड़ा में ३ पीढ़र ४ प्रमीप की भूमि  
तक ५ आशिकुन्दित, भागित, २१११, अलित, अलुन इन पाँच प्रकार की वा  
रा में अन्तिम भारा में (हृदा ११११) अन्त के कारण वरना ७ परगह ॥ ११॥  
६ बरोसा के १ आनन्द पूर्वक ॥ १२ ॥ १० आना को भारथ करनेवाले धीर  
॥ १३ ॥ ११ वरा ॥ १४ ॥



के अनीकपै अचानक आइपरयो ॥

अरु अनेक जवननके ओघ पारि नोसेरखानकाँ भजाइ पहि-  
लैं सत्रुनके सिबिर लूटि पीछैं पुरमैं प्रवेशकरयो ॥

पितामही जयवती १८८१ के पपन परि असैं अकबर ३७१  
सौ तोरि आपुनैं साहसकरि बूंदीको राज्य सम्हारयो ॥

अरु तारागढके तैरैं निजनामकरि नयेमहल २ तथा गीहड़गढ २  
से दुर्ग २ बनाइ अपुनो आतंक प्रसारयो ॥ १५ ॥

कुमारदूदा १९११ के कृष्णावती १९२१ रामा १९२२ स्या-  
मा १९२३ भानुकुमरि १९२४ ए च्यारि ४ही कन्या भई तिनमैं पहि-  
ली १ तो आमैरके राजा मान २ काँ परिनाई दूजी २ रामपुराके अ-  
धीस गजसिंहके कुमार चंदाउत चद्रसिंह २ काँ विवाहदई ॥

तीजी ३ अरु चोथी ४ के स्वसुरालय न जानैगये ॥

अरु असैं ही या बडे १ कुमार के चतुर्भुज १९२१ परसुराम  
१९२२ स्त्रामसिंह १९२३ ए तीन ३ ही पुत्र भये ॥ १६ ॥

इनमैं पहिलो १ पुत्र चतुर्भुज १९२१ सोहि दूजे २ नाम करि  
अमरसिंह १९२१ कहायो ॥

पीछैं इनकेही बंसनैं दूदाउतर २११८ कहाइ हड्ड ६१ नमैं बावी-  
समों २२ भेद पायो ॥

असैंही पीछैं रायमल्लके कुपुत्र रामचंद्र १९२१ के अनंतर राम-  
सिंह १९२२ बुद्धिचंद्र १९२३ दीपचंद्र १९२४ पृथ्वीसिंह १९२५ स्या-  
मसिंह १९२६ प्रद्युम्न ११२७ पद्मसिंह १९२८ भगवद्दास १९२९  
कल्याण १९२१० सोही भुवनांग १९२१० ए दस १०ही भये ति-  
नमैं कुलधर पंच ५नके बंसके हड्ड ६१ नमैं तेवीसमों २३ भेद रा-  
यमल्लोत २३१२९ कहाये ॥

अकबर की १ सेना पर अचानक २ समूह ३ दादी ४ नीचे ५ भय फैलाया  
॥ १५ ॥ १६ ॥

ए द्वैरही नयेभेद भावीबातके प्रसंगमें आये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कछु यह हम भावी कहिय, बर्तमान अब बत ॥

सोह भज्यो नोसेर सुनि, पूरे कोपहिँ पत ॥ १८ ॥

दल दुवलख २००००० सहाय दै, भेज्यो बुंदिय भोज १९१२ ॥

सक रद नृप १६३२ लगगत समय, मची बहुरि रन भोज ॥ १९ ॥

जानिय दूदा १९११२ कुमार जब, बुंदिय अब रहिबो न ॥

चहि हित जो धारै न चढै, करै राज्य तब कोन ॥ २० ॥

यह विचारि रनभारि असि, दोहिन हथ दिखाइ ॥

कथित १६३२ साक दूदा १६११२ कुमार, कढिगो भय न कहाइ ॥

निजनिज पिउहर नारि निज, दूदा १६११२ कुमार उदार ॥

दिल्लीमंडल दोरिवे, सज भयो गहि सार ॥ २२ ॥

कब्यो परसुधर १ कुमारकै, स्वीय पुरोहित सत्य ॥

मनतै गो हम्मीर १९०११२ मिलि, यह भ्राता रहि अत्य ॥ २३ ॥

अग्रज १ दोरत भोज २ इत, बुंदिय देस विनास ॥

सुनि पुरतै अवरोध सब, पठयो सुजन १९०१२ पास ॥ २४ ॥

कठि रद नृप १६३२ सक इम कुमार, जिहिँ दूदा १९६१२ अति जोर ॥

बुंदिय १ जुत मंडिय बहुल, दिलिय २ मंडल दोर ॥ २५ ॥

कुमारभोज १६११२ इत स्वीय करि, बुंदिय विरचि प्रवेस ॥

नये सचिव तय ३ किय निपुन, सुनि सु बनिक जससेस ॥ २६ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

पहिले सचिव खटोर बनिक नारायण परलोक पायो जानि भो-

ज १९११२ कुमार बुंदी बैठतही खड्गारा चालुक जोगीदास १ दहि-

या दोलतसिंह २ इन दोउरनको जकुट २ तो कर्म सचिव कीनौ ॥

॥ १७ ॥ कोप में १ प्राप्त होकर ॥ १८ ॥ १९ ॥ २ मारे जावें तो ॥ २० ॥ २१ ॥ ३ खड्ग

लेकर ॥ २२ ॥ २३ ॥ ४ जनाना ॥ २४ ॥ ५ दौड़ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ६ खैराडा का

७ जोड़ा

के अनीकपैं अचानक आइपरयो ॥

अरु अनेक जवननके ओघ पारि नोसेरखानकों भजाइ पहिलैं सत्रुनके सिबिर लूटि पीछैं पुरमें प्रवेसकरयो ॥

पितामही जयवती १८८।१ के पयन परि असैं अकबर १५१९ साँ तोरि आपुनैं साहसकरि बुंदीको राज्य सम्हारयो ॥

अरु तारागढके तैरैं निजनामकरि नयेमहल १ तथा गीहड़गढ़ से दुर्ग २ बनाइ अपुनाँ आतंक प्रसारयो ॥ १५ ॥

कुमारदूदा १९१।१ के कृष्णावती १९२।१ रामा १९२।२ स्यामा १९२।३ भानुकुमरि १९२।४ ए च्यारि ४ही कन्या भई तिनमें पहिली १ तो आमैरकेराजा मान २ काँ परिनाई दूजी २ रामपुराके अधीस गजसिंहके कुमार चंद्राउत चद्रसिंह २ काँ विवाहदई ॥

तीजी ३ अरु चोथी ४ के स्वसुरालय न जानैगये ॥

अरु असैं ही या बडै १ कुमार के चतुर्भुज १९२।१ परसुराम १९२।२ स्यामसिंह १९२।३ ए तीन ३ ही पुत्र भये ॥ १६ ॥

इनमें पहिलो १ पुत्र चतुर्भुज १९२।१ सोहि दूजे २ नाम करि अमरसिंह १९२।१ कहायो ॥

पीछैं इनकेही बंसनैं दूदाउत २२।१८ कहाइ हड्ड ६१नमें बावीसमों २२ भेद पायो ॥

असैंही पीछैं रायमल्लके कुपुत्र रामचंद्र १९२।१ के अनंतर रामसिंह १९२।२ बुद्धिचंद्र १९२।३ दीपचंद्र १९२।४ पृथ्वीसिंह १९२।५ स्यामसिंह १९२।६ प्रद्युम्न ११२।७ पद्मसिंह १९२।८ भगवद्दास १९२।९ कल्पान १९२।१० सोही भुवनांग १९२।१० ए दस १०ही भये तिनमें कुलधर पंच५नके बंसके हड्ड ६१नमें तेवीसमों २३ भेद रायमल्लोत २३।२९ कहाये ॥

अकबर की १ सेना पर अचानक २ समूह ३ दादी ४ नीचे ५ भय फैलाया ॥ १५ ॥ १६ ॥

ए द्वैरही नयेभेद भावीबातके प्रसंगमें आये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कछु यह हम भावी कहिय, बर्तमान अब बत ॥

सोह भज्यो नोसेर सुनि, पूरे कोषहि पत ॥ १८ ॥

दल दुवलकख २००००० सहाय दै, भेज्यो बुंदिय भोज १९१२ ॥

सक रद नृप १६३२ लगगत समय, मची बहुरि रन मोज ॥ १९ ॥

जानिय दूदा १९११२ कुमार जब, बुंदिय अब रहिबो न ॥

चहि हित जो धारै न चढै, करै राज्य तब कोन ॥ २० ॥

यह बिचारि रनभारि असि, दोहिन हथ दिखाइ ॥

कथित १६३२ साक दूदा १६११२ कुमार, कढिगो भय न कहाइ ॥

निजनिज पिउहर नारि निज, दूदा १६११२ कुमार उदार ॥

दिल्लिमंडल दोरिबे, सज भयो गहि सार ॥ २२ ॥

कब्यो परमुधर १ कुमारकै, स्वीय पुरोहित सत्य ॥

मनतै गो हम्मीर १९०११२ मिलि, यह भ्राता रहि अत्य ॥ २३ ॥

अग्रज १ दोरत भोज २ इत, बुंदिय देस विनास ॥

सुनि पुरतै अवरोध सब, पठयो सुर्जन १९०१२ पास ॥ २४ ॥

कढि रद नृप १६३२ सक इम कुमार, जिहि दूदा १९६१२ अति जोर ॥

बुंदिय १ जुत मंडिय बहुल, दिल्लिय २ मंडल दोर ॥ २५ ॥

कुमारभोज १६११२ इत स्वीय करि, बुंदिय विरचि प्रवेस ॥

नये सचिव तप ३ किय निपुन, सुनि सु बनिक जससेस ॥ २६ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

पहिले सचिव खटोर बनिक नारायण परलोक पायो जानि भोज १९११२ कुमार बुंदी बैठतही खड्गंगा चालुक जोगीदास १ दहिया दोलतसिंह २ इन दोउरनको जकुट २ तो कर्म सचिव कीनी ॥

॥ १७ ॥ कोष में १ प्राप्त होकर ॥ १८ ॥ १९ ॥ २ मारे जावें तो ॥ २० ॥ २१ ॥ ३ खज्र लेकर ॥ २२ ॥ २३ ॥ ४ जनाना ॥ २४ ॥ ५ दौड़ ॥ २५ ॥ २६ ॥ ६ खैराबा का जोड़ा

अरु सनाढ्यविप्र लछमन३को बरुथेस बनाइ चोरीके प्रबंधपर  
प्रेरयो ताहीनै पीछै खानखवास३औसो उपटंक रयातिमै लीनौ ॥

इतको आमैरके अधीस मानसिंह कावलके सूबामै अच्छीरी-  
ति अकबर३७१ को अमल जमाइ हजूर आयो ॥

अरु लैवपुरतै आपुनै स्वसुर कुमारदुर्जनसल्ल१९११को पहिलै  
ही कठिजैबेको उदंत सुनायो ॥ २७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सेना नगर मऊ इत साजै, रायमल्ल खिच्ची १३ नृप राजै ॥

भट पित्थल रटोर तास भो, सु वसु रौछवानगर जास भो ॥ २८ ॥

हयनिमित्त जिहिँ सठबिरच्यो वषसुँ, मातुल निज खिच्ची १३ महाराज सु।  
तापर चंदरपुकारयो सुत तस, तब अकबर३७१ पठये दल जुत तस २९  
जे दुवखेर कंबध सु जित्यो, बलि बिस्वास दुर्घाँ मन बित्यो ॥

रायमल्ल हुव पित्थल रच्छक, धरीन भ्रात हन्याँ तापर धर्क ॥ ३० ॥  
बलि यातै दै संग कटक बहु, पठयो साह सु कुम्म मान पहु ॥

लखैरिय दरं निकसि भग्ग लहि, चम्मलिपुनि लंघ्यो सत्वरं चहि ३३  
जो दूदा१९११व गिन्याँ न जमाई, धाँटि पटकि दल लूट धमाई ॥

जिहिँ बहीर पीछै सन धन जुत, दल नदि लंघत लुट्लिई द्रुत ॥ ३२ ॥  
मान जाइ पित्थल वह मारयो, नृप खिच्ची १३ लै मऊ निकारयो ॥

संगहि तास कव्यो सुरतान १८९१ सु, बलि पछुवारा रन सु भयो वषसु  
रायमल्ल लखिप्रतापरानहिँ, गो सु उदैपुर उजिँ गुमानहिँ ॥

जुइक १ समी लरिजित्ति मऊ जिम, मान मुखो कगिसाह अमल इम ३४  
दूदा१९११ कुमर असह हित दोरयो, बुंदिय शिल्लिय मुलक बिलो रयो

१ सेनापति २ पदवी ३ प्रसिद्ध ४ लाहौर से ५ वृत्तान्त ॥ २७ ॥ घोड़े के  
कारण ६ मारा ॥ २९ ॥ ७ दोनों ओर ८ क्रोध ॥ ३० ॥ लाखैरी के ९ दर्रे से  
निकलकर १० शीघ्रता ॥ ३१ ॥ ११ धाँडा १२ आधी नदी उतरने पर ॥ ३२ ॥  
१३ मारा गया ॥ ३३ ॥ १४ छोड़कर १५ गुमान (घमंड) का १६ एक वर्ष खड़ा  
॥ ३४ ॥ १७ मथा

मातुलकुलरठोर मिलाइ रु, इकसमय थांनालग आइ रु ॥ ३५ ॥  
 कहिपठई बुंदिय \* जुज्झनकहँ, तापर दल भोज १९१२हु पठयोतहँ  
 कटकमाँहि कल्यान १९२१२० मुख्य किय, भोज १९१२हु इम  
 सम्मुह तिहिँ भेजिय ॥ ३६ ॥

कुमर मारि दूदा १९१११२ कल्यानरहिँ, स्व हय कटक मन्थ्यो  
 अवसानहिँ ॥

जिम इततैं हम्मीर १६०११ भ्रात जब, तिहिँ दिय पिहिते खास नि-  
 ज हय तव ॥ ३७ ॥

तिम निकस्यो दूदा १९११२ चढि तापर, भीर भये ते बहुत कटे भर  
 जीवित पुनि जुज्झन जय जानत, मुरिगो तव दूदा १९११२ भय मानत  
 दास १९०१२ भरत १९०१२ खज्जूरीके ७३ दुव २, हडे ६१ एहु  
 कुमरसंगी हुव ॥

दूदा १९११२ अनुमत लखि तिन्ह दोरि रु, जुटिलयो धन देस बिलोरि रु ॥  
 कुमरभोज १९११२ उच्छिन्न तेहु किय, द्विज तिन्ह पिठिखवासखानकिय  
 जिहिँलगि पिठि उमैरइम ताँगे, न बलि बसत कहँ सुनै १ निहारे २ ॥ ४० ॥  
 खानखवास बिरचि जिहिँ खेटे, मैने हनि रु प्रजादुख मेटे ॥

पुर बरोद धारुव रखिची १३ पहु, लरि सु कुमर दूदा १९११२ दंड्यो लहु ॥  
 धिंगरमल्ल २ पकरि खिची १३ धन, सुल्लेव लटे छ अयुत ६००००  
 लिय तासन ॥

पकरि बहोरा चंप३भानपुर, अयुत १००००० दम्भ लै तज्यो सु आतुर ॥  
 सारंगपुर १ दसोर २ सिरोभ ३ हु, लुटि सेरपुर ४ मालपुरा ५ लहु ॥  
 बलि सह डावरी ६ रु वंभोरी ७, लुटि पट्टनि ८ रु मऊ ९ बिलोरी ॥ ४३ ॥  
 बलि सुखेत १० रीछवा ११ वकानी १२, मुरि इतिमुख लुट्टे बहु मानी ॥

॥ ३५ ॥ \* युद्ध करन के लिये ॥ ३६ ॥ १ अन्त २ छाने ॥ ३७ ॥ ३ भट ॥ ३८ ॥  
 ४ सलाह ५ मथकर ॥ ३९ ॥ ६ उच्छेदन (नाश) ७ ताड़े (निकाले) ॥ ४० ॥ ८ युद्ध  
 ९ मैनों को मारकर १० शीघ्र ॥ ४१ ॥ ११ ताँचे के साथ हजार टके लिये १२ पी-  
 डित ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ १३ इत्यादि

इम दूदा १९११ दोरत भुव उत १ इत २, मृध सब करे वेद सर भू १५४ मित ।  
सत्तावन ५७ तिनमें हठ दीसों, दूदा १९११ रन किन्न दिल्लीसों ॥  
रन पचास ५० संमताक राजन, सैतालीस ४७ धाँटि पातिनसन ॥ ४५ ॥  
कलह १ इते १५४ दूदा १९११ कुमार करि, धकतिम अकबर ३७ १ हनन  
चित्त धरि ॥

पातसाह बीजापुरको पुनि, सो पत्रन भयो अतिबल सुनि ॥ ४६ ॥  
क्यों न लोहु दिल्ली ताप्रति कहि, बुल्लयो ताहि सहाय अप्प ब्रहि ॥  
तिहि दूदा १९११ सु बुलायो तत्थहि, सुनत कुमार चलयो चरसत्थहि ।  
मालवमें देवग्रामनामक, हुती बसति पहुँच्यो सु तहाँतक ॥  
ताके जनन महादुष्टन तँहँ, करि अधर्म दिन्नो विप ताँकँहँ ॥ ४८ ॥  
इम वसु गुन खट ससि १६३८ सक अंतर, तजिग देह दूदा १९११ तँदनंतर  
भोज १९१२ कुमार सु सुनत तज्यो भय, जिततित स्वभुव जमाइ  
रह्यो जय ॥ ४९ ॥

बसि कासी सुर्जन १९०१ इत भूवर, पूरबमग निर्भय किय पढ़र ॥  
विप्र च्यारि ४ बुंदिय बसवाये, पहु तिन्ह नाम सुनहु इम पाये ॥ ५० ॥  
पूर १ भट्ट सट्टोदर प्यारा, उपाध्याय लोहार मेवारा ॥  
श्रीगौड़ जु गोविंद ३ जोईसिय, क्रम संगहि औदीच्य बेनु ४ किय ॥ ५१ ॥  
बुंदी ए चउ ४ भेजि बसाये, पुर कासी बहु जस नृप पाये ॥  
कनकतुला जुग २ अप्प दान किय, दढदय रजततुला पंचक ५ दिय  
पुरटतुलाँ इक १ ठानि प्रमूषँहँ, तिम बुध द्विजन दिवाई सो तँहँ ॥  
दुहिती निजकर इक्क १ दिवाई, इक्क १ हि पौत्ररतन १९२१ बढ आई ॥ ५३ ॥  
ए दुवर रजततुला हुव औसँ, जानहु अब आलय क्रम जैसँ ॥  
उपवन इक्क १ पुरढिग तँनवायो, बसन राजमंदिर श्वनवायो ॥ ५४ ॥

१ युद्ध ॥ ४४ ॥ २ वरावर के राजाओं से ३ धाड़ा पटकनेवालों से ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४  
हलकारे के साथ ही ॥ ४७ ॥ ५ जिस पीछे ॥ ४८ ॥ ६ भूपति ७ सीधा ॥ ५० ॥ ८ ज्यो-  
तियो ॥ ५१ ॥ ९ चांदीका तुलादान ॥ ५२ ॥ १० एक सोने की तुला माता से  
कराई ११ पुत्रा के हाथ से ॥ ५३ ॥ १२ बाग को फैलाया ॥ ५४ ॥

सुरमंदिर पुरविच चोरासिय=४, कुंड बीस २० करिकिय बर कासिय  
मग जगदीस अवाधि भय भेट्यो, भयद चौर काहु न जन भेट्यो । ५५ ।

॥ सचरणगद्यम् ॥

हह ६१ नको वेद साम ३ यातैं राज्यमैं हस्त १३ नक्षत्रपर हो तो  
श्रावैनिका को महँ तो ॥

अरु प्रजामैं सदैव पूर्णिमा १५ के दिन रहतो ॥

नरेस सुर्जन १९०११ नैं यह उत्सव पूर्णिमा १५ के दिन हू राखि  
द्वै २ ही समय हर्षके मानैं ॥

अरु हाडा ६१ मान १८६११ के पुत्र हम्मीर १६०११ नैं अब शु-  
क्लवापीके सम्मुख है सो वापी १ अरु गैडेको वाग २ कहावै सो  
उपवन २ ए दोर ही स्थान बुंदीमैं बनाये जानैं ॥ ५६ ॥

इतकों आमैरको अधीस मानसिंह १ आपनैं पुत्र जगत्सिंह २  
सहित अकबर ३७११ नैं आर्यावर्तके ईसानको न के अंतर आ-  
सामदेसके बिजयकों पठायो ॥

तानैं ब्रह्मपुत्र नदमैं नावनकों पेलिपेलि सन्तुनको दुर्ग पायो सो  
ही तोपनको ताप दै रु नैं ठायो ॥

याही समरमैं भोज १९११ कुमारको जामाता असो राजामानसि-  
ंह १ को कुमार जगत्सिंह २ परलोक पावत भयो ॥

ताकै सोक करि द्वि २ गुन को पारुन कूर्मराजके बिक्रम करि  
परनसों पलटि आसाम अकबर ३७११ के आवत भयो ॥ ५७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

यहहि देस आसाम, कामरूप अपनैं कहत ॥

करि रन दुँकर काम, जित्तिलयो नृपमान जो ॥ ५८ ॥

ब्रह्मपुत्र नदबीच, जाही रन नावन जुरत ॥

मानकुमार लिय मीच, जगतसिंह अभिधान जिहिं ॥ ५९ ॥

१ भय देनेवाला ॥ ५९॥ २ आवण मास का ३ उत्सव ४ वाग ॥ ५६॥ १ नष्ट किया  
५ क्राय में लाल उपराक्रम से ८ शत्रुओं से ॥ ५७॥ ९ कदिना ॥ ५८॥ १० मृत्यु ॥ ५९॥



इम दूदा १९११ दोरत भुव उत १ इत २, मृध सब करे बेद सर भू १५४ मित ।  
सत्तावन ५७ तिनमें हठ दीसों, दूदा १९११ रन किन्ने दिल्लीसों ॥  
रन पचास ५० सैमताके राजन, सैतालीस ४७ धौटिपातिनसन ॥ ४५ ॥  
कलह १ इते १५४ दूदा १९११ कुमार करि, धकतिम अकवर ३७१ हनन  
चित्त धरि ॥

पातसाह बीजापुरको पुनि, सो पत्रन भेद्यो अतिबल सुनि ॥ ४६ ॥  
क्यों न लेहु दिल्ली तापति कहि, बुल्ल्यो ताहि सहाय अप्प बहि ॥  
तिहि दूदा १९११ सु बुलायो तत्थहि, सुनत कुमार चलयो चरसत्थहि ।  
मालवमें देवग्रामनामक, हुती बसति पहुँच्यो सु तहाँतक ॥  
ताके जनन महादुष्टन तँहँ, करि अधर्म दित्रों बिप ताँकँहँ ॥ ४८ ॥  
इम वसु गुन खट ससि १६३८ सक अंतर, तजिग देह दूदा १९११ तँदनंतर  
भोज १९१२ कुमार सु सुनत तज्यो भय, जिततित स्वभुव जमाइ  
रह्यो जय ॥ ४९ ॥

बसि कासी सुर्जन १९०१ इत भूवर, पूरवमग निर्भय किय पद्वर ॥  
बिप च्यारि ४ बुँदिय बसवाये, पहु तिन्ह नाम सुनहु इम पाये ॥ ५० ॥  
पूर १ भट्ट सट्टोदर प्यारा, उपाध्याय लोहार मेवारा ॥  
श्रीगोड़ जु गोविंद ३ जोईसिय, क्रम संगहि औदीच्य वेनु ४ किय ॥ ५१ ॥  
बुँदी ए चउ ४ भेजि बसाये, पुर कासी बहु जस नृप पाये ॥  
कनकतुला जुग २ अप्प दान किय, हठदय रजततुला पंचक ५ दिय  
पुरतुला इक १ ठानि प्रमूषँहँ, तिम बुध द्विजन दिवाई सो तँहँ ॥  
दुहिती निजकर इक १ दिवाई, इक १ हि पौत्र रतन १९२१ बढ आई ॥ ५३ ॥  
ए दुवर रजततुला हुब औमें, जानहु अब आलय कम जैसँ ॥  
उपवन इक १ पुरखिग तँनवायो, वमन राजमंदिर स्वनवायो ॥ ५४ ॥

१ युद्ध ॥ ४४ ॥ २ वराचर के राजाओं ने ३ घाड़ा पटकनेवालों से ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४  
५ लकार के साथ ही ॥ ४७ ॥ ६ जिम पीछे ॥ ४८ ॥ ७ भूपति ५ सीधा ॥ ५० ॥ = ज्यो-  
तिषी ॥ ५१ ॥ ८ चाँदी का तुजादान ॥ ५२ ॥ ९ एक सोने की तुजा माता से  
कराई ११ पुत्रों के हाथ से ॥ ५३ ॥ १२ बाग को फैलाया ॥ ५४ ॥

सुरमंदिर पुरविच चौरासिय ८४, कुंड बीस २० करिकिय बर कासिय  
मग जगदीस अवाधि भय भेट्यो, भयद चौर काहु न जन भेट्यो ॥ ५५ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

हहु ६१ नको बेद साम ३ यातैं राज्यमैं हस्त १३ नक्षत्रपर हो तो  
श्रावैनिका को महँ तो ॥

अरु प्रजामैं सदैव पूर्णिमां १५ केदिन रहतो ॥

नरैस सुर्जन १९०१ नैं यह उत्सव पूर्णिमा १५ केदिनहू राखि  
द्वै २ ही समय हर्षके मानैं ॥

अरु हाडा ६१ मान १८६१ केपुत्र हम्मीर १६०१ नैं अब शु-  
क्लवापीके सम्मुख है सो बापी १ अरु गैडेकोवाग २ कहावै सो  
उपवन २ ए दोर हीस्थान बुंदीमैं बनाये जानैं ॥ ५६ ॥

इतकों आमैरको अधीस मानसिंह १ आपनैं पुत्र जगतसिंह २  
सहित अकबर ३७१ नैं आर्यावर्तके ईसानकोन ८ के अंतर आ-  
सामदेसके विजयकों पठायो ॥

तानैं ब्रह्मपुत्रनदमैं नावनकों पेलिपेलि सत्रुनको दुर्ग पायो सो  
ही तोपनको ताप दै रु नैठायो ॥

याहीसमरमैं भोज १९१२ कुमारको जामाता असो राजामानसिं-  
ह १ को कुमार जगत्सिंह २ परलोक पावत भयो ॥

ताके सोक करि द्वि २ गुन कोपारुन कूर्मराजके विक्रम करि  
परनसों पलटि आसाम अकबर ३७१ के आवतभयो ॥ ५७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

यहहि देस आसाम, कामरूप अपनैं कहत ॥

करि रन दुँकर काम, जित्तिलयो नृपमान जो ॥ ५८ ॥

ब्रह्मपुत्र नदबीच, जाही रन नावन जुरत ॥

मानकुमर लिय मीचैं, जगतसिंह अभिधान जिहिं ॥ ५९ ॥

१ भय देनेवाला ॥ २५॥ २ आवण आस का उत्सव ४ वाग ॥ ५६॥ ५ नष्ट  
६ कांध में लाल उपराक्रम से ८ शत्रुओं से ॥ ५७॥ ९ काठिन ॥ ५८॥ १० मृत्यु ॥ ५९॥

राजा मानका आसाम विजय करना] पछराशि-द्वादशमयूख (२३४०)

सुभमति १९२१ व्याहो सोहि, कुमर भोज १९११ वारी कनी ॥

जास सुता हुव जोहि, दाँरा ४०१२ कँहँ पीछँ दई ॥ ६० ॥

सुत हुव जास सलेम ४११२, नत्ती साहजिहान ३९१२ को ॥

वाको नाना एम, मानकुमर यह यँहँ मरयो ॥ ६१ ॥

सुनि आमैर सतीसु, ज्वलन बैठि सुभमति १९२१ जरी ॥

गहि कुलतियन गती सु, स्वर्ग गई निज पतिसहित ॥ ६२ ॥

सैसव बय लहि श्रेय, तनय हुतो रघुनाथ तस ॥

जोहि रतन १९२१ जाँमेय, कुमर भोज १६१२ दौहित्र कहि ॥ ६३ ॥

सो सिसु कछु भय साहि, आयो भजि नाना अर्यन ॥

इम बुंदीपुर याहि, भोज १९१२ रतन १६२१ रक्खयो भलै ॥ ६४ ॥

अखिखय एह उदंत, तनु अंतर भावी तथा ॥

उत कूरमसुत अंत, भयो तदपि बिजई भयो ॥ ६५ ॥

भिरतहि हनि १ रु भजाइ २, कामरूपके कौलंजन ॥

इम देस सु अपनाइ, मान रह्यो कछुदिन मुदित ॥ ६६ ॥

॥ षट्पात् ॥

कामाक्षा जँहँ कहत आहि देवी बर आलय ॥

वाकी प्रतिकृति अपर २ दिपँत कौलन दुर्गालय ॥

ते हारत खिन ताहि गेरि संपू न्हदविच गय ॥

पहु मौनहिँ इम स्वपन दयो देविय तिहिँ सोदय ॥

मोकहँ निकासि लैचलि महिप जुरिहँ बैलि १ अर्यन २ जथा ॥

सेवक कहाय अनुकूल सुभ तव निकैत रहिहौं तथा ॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

१ जिसके पुत्री हुई सो २ दाराशाह को ॥ ६० ॥ शाहजहाँ का ३ पोता ॥ ६१ ॥

४ अग्नि में ॥ ६२ ॥ ५ बालक अवस्था ॥ ६३ ॥ रत्नसिंह का ७ भानजा ॥ ६४ ॥ नाना के

द्वारा ॥ ६५ ॥ यह वृत्तान्त कहा सो ९ कछु छेटी से होनवाला है ॥ ६६ ॥ १० वामनाग-

वाले लोकों को ११ प्रसन्न ॥ ६७ ॥ उस देवी की १२ मूर्ति १३ शोभायमान, हारते १४

समय १५ मान को १६ दया पूर्वक १७ बलिदान, तुम्हारे १८ घर में

आनी तब कूरम अधिप, जलतैं उद्धरि जोहि ॥

गिनहु विदित आभैरगढ, सल्लहादेविय सोहि ॥ ६८ ॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वागणो पष्ठदशौ बुन्दीशसुर्जन  
चरित्रे रणमस्तखांमहितपुर्जनपट्टपकुमारदुर्जनशल्यलाहोरगम-  
नतच्छलघातवधसूचनांतगनिभूतनिःसरणबुन्द्यागमन १ दूदाकू-  
तस्वसेनापतिनवशंखापगजयपलायनअवशातिरुष्टाकबरलक्षद्वय  
सैन्यसहितभोजप्रेषणदूतानिःसागशोतगभोजार्थबुन्दीवितरण २ य-  
वनेन्द्राकबरसभैन्यकूर्ममानसिंहमऊप्रस्थापन ३ राष्ट्रकूटपृथ्वीसिं-  
हवधोत्तरखिचीवृपरायमल्लनिःसागकमऊग्राहककर्ममानसिंहयवने-  
न्द्रान्तिकप्रत्यागमन ४ कुमारदुर्जनशल्यकृतबुन्दीदिल्लीप्रमुखगण्ड-  
शटनरणगणानान्तगविषप्रयोगतन्मरण ५ आभैरगभूपमानसिंहासा-  
मदेशविजयनवाममार्गीयदेवीमूर्तिममानयनमल्लहादेवीसंज्ञयाऽऽभैर-  
दुर्गतस्थापनं द्वादशो मयूखः ॥ १२ ॥ आदितः पञ्चनवत्युत्तरशत-  
तमः ॥ ११५ ॥

॥ १७ ॥ जल से १ निकाल कर ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वागण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन  
के चरित्र में सुर्जन के पादवी पुत्र दुर्जनसाल का रणमस्तखा के साथ ला-  
होर में जाकर अपने छल घात से मानसिंह की सूचना मिलने पर छाने निकल  
कर बुन्दी आना १ अपने सेनापति नोशंगखान के दूत से पराजित होकर  
भागने की खबर से क्रोधित अहमद का भाज के साथ दो लाख सेना देकर  
दूदा को निकाल कर बुन्दी का राज्य भोज को देना २ बादशाह अहमद का  
कछवाहा मानसिंह को सेना सहित मऊ की ओर भेजना ३ उस मानसिंह  
का पृथ्वीसिंह राठौड़ को मारकर और बीभी राजा गायमल को निकालकर  
मऊ के दर पीछा बादशाह के पास जाना ४ कुमार दूदा के बुन्दी और  
दिल्ली आदि देश लूटने में युद्धों की गणना के अनन्तर विष देने का कारण दू-  
दा की मृत्यु होना ५ आभैरग के राजा मानसिंह का आनाम देश को विजय  
कर नवाम मार्गियों की देवी की मूर्ति को लाकर सल्लहा देवी के नाम से  
आभैरग मठ पर स्थापन करने का चारदशों मयूख समाप्त हुआ ॥ और आ-  
दिश पदसौ पचासवें १६५ मयूख हुए ॥

राणा विक्रमका भानु कविपरकोप करना षष्ठ (अशि-त्रयोदशमयुग (२३४९)

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

भगिनी मान भुवालकी, अकबर ३७१२ व्याहो अग्न ॥

तकै तस कूरम तपो, मिलि संबंधिन भग्न ॥ १ ॥

द्रुम १ रु गज २ ग्रामा ३ दि दिय, जिहि तब भरनां जोरि ॥

कूटहि किति कशइवे, कूटहि कविन छकोरि ६००००००० ॥ २ ॥

विप्र १ सूत २ बंदि ३ न तबहि, गनिकामत अवगाहि ॥

अनर्यदान लौ बंदि वह, अपिप्य अति जस याहि ॥ ३ ॥

हड्ड ६१ नको कुलबारहठ, सुकवि धीर सामोर ॥

पुबहि बिनुसंतति परयो, अन्वय न रह्यो ओर ॥ ४ ॥

हम तुमरे हुव बारहठ, सीति सु अब प्रभु राम २०३४ ॥

सुनिये जिम सच्चे सुकवि, धूरि गिनहि धीर १ धाम २ ॥ ५ ॥

मृग मृगीया जव अग्न मृत, महिप रत्न १ रविमल्ल २ ॥

सीसोद १ न हड्ड २ न सहज, हुव बिरोधपन हल्ल ॥ ६ ॥

रत्न १ अनुज विक्रम २ रह्यो, तस गहिय चित्तोर ॥

निज कवि जिहिं प्रेरे निखिल, अग्रज कथन ओर ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

भूसुर १ चारन २ भट्ट ३ सबन विक्रम निदेश सुनि ॥

रान रतन काठ्य रचि चविय तस जस प्रकृप चुनि ॥

मिहिरमल्ल १८८१ कहि मूढ कुजस वरनिय ताको किल ॥

प्रभु ममकुल परपुरुष रूपात कवि भानु १६४२ रहे खिल ॥

रंच न निदेश किय गनको विक्रम हुव तिनपर विमन ॥

१ भूपति की २ लज्जा ॥ १ ॥ ३ रूपय ४ झूठी कीर्ति कराने के लिये ५ झूठे क-  
वियों को ॥ २ ॥ ६ चारण ७ देश्या के मत का ८ अनोति का दान ९ दिया  
॥ ३ ॥ १० वंश ॥ ४ ॥ ११ भूमि ॥ १२ हरिणों की १३ जिकार में ॥ १४ ॥ १५ सब  
॥ ७ ॥ १४ ब्राह्मण. विक्रमादित्य की १५ आज्ञा सुनकर १६ कहा. रत्नसिंह का  
१७ विशेष यश किया १८ सूर्यमल्ल को १९ निश्चय २० कुछ भी आज्ञा नहीं  
मानी २१ उदास

संसर्द गये न तबतैं सु कवि मन्निजडहि तिरिहिँ औचि मन ॥ ८ ॥

विमनं१ विमन२ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सासन उंटोलाव १ सह, इनके लौ सब इठै ॥

असन१ बसन२ हित ग्राम इक१, रक्खिय केवल रिठै ॥ ९ ॥

किय तथहि निर्वाह कवि, पै न गये जडपास ॥

वहै नृप बुल्ले उदय इठि, आये तबहु उदास ॥ १० ॥

पधराये जिन्ह उदयपुर, गदियैत भानुगनेस ॥

प्रचुर ताल१ मंदिर२ प्रमुख, प्रोजिक्तै रचिय प्रदेस ॥ ११ ॥

अक्खिय तिनप्रति नृप उदय, मुख्य कविन यह मंग ॥

चवहिँ सत्य१ अनृत२ न चवहिँ, लोभहि रंच न लग ॥ १२ ॥

छिति गंत लेहुव हमहिँ छैमि, अग्रज कृत अपराध ॥

अरु रजपूतन आचरन, बरनहु जिम अधर्माध ॥ १३ ॥

॥ पट्टपात ॥

नृपहिँ भालु१६१२तब नटि रु निजहु सासन गत लिय नन ॥

रक्खिय इक्क१ हि रिठै अंतहु बरन्यौ न पुब्ब रन ॥

पीछै तदनुज पुत्र सुकवि ईस्वर१९५॥१आख्यासह ॥

पहु अब रान प्रताप बहुरि बुल्ले अति आग्रह ॥

अरु कहिय कविन कुलरीति यह कहततिमाहि जिम हम करहिँ ।

अव रन सु सत्यवरनहु अभय धरहु स्वीर्य करि गंत धरहिँ ॥ १४ ॥

वनेँ जिम न तुम वदहु त्रास बाहुजै२ न भजै तब ॥

१ सभा में ॥ ८ ॥ २ इष्ट (उत्तम अथवा अनुकूल) ३ रीठ नामक ग्राम ॥ ९ ॥ ४ उदयसिंह ने ॥ १० ॥ ५ कहते हैं कि वनों ने भाणा गणेश को पधराये ६ बहुत ७ छोड़े हुए प्रान्त में ॥ ११ ॥ ८ मार्ग ॥ १२ ॥ ९ गईहुई भूमि को हम को १० चमा करके लो ११ पाप मिटानेवाला ॥ १३ ॥ पहिले के युद्ध को १२ सत्य नहीं कहा १३ नाम, गईहुई भूमि को १४ अपनी करके धारण करो ॥ १४ ॥ भागने वाले १५ चत्रियों को डर नहीं है

सुर्जनका ईश्वर कविको बुलाना] षष्टराशि-त्रयोदशमयुक्त (२३५१)

तिनहुमाँहिँ हम भक्त करी चाहि सुनि इच्छैँ कव ॥  
इष्ट सपथ१मम सपथ२अप्प वरनहु कृत वत्तिहिँ ॥  
इम निहोरि नृप इमहिँ मुदित गत दैनलग्यो महि ॥  
सु लई न तदपि ईस्वर१९५१सुकवि पै निदेस करनोँ परयो ॥  
जब रैन कुजस१रविमल्ल१८८१जस२करि कवित्व रुपीपित  
करयो ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

निरपराध कहि हड्ड६१नृप१, सत्यसंध प्रभु सूर ॥  
रानश्चकित जडपापरत, कह्यो कुहक सठ कूर ॥ १६ ॥  
पै रहियो न बिचारि पुनि, तजि रिड्ड१हु कवि तत्थ ॥  
जावन चित्यो जोधपुर, स्व कुलधर्म नय सत्थ ॥ १७ ॥  
महिप प्रतापहु सुद्धमन, सपथ१प्रनंति२ अनुसार ॥  
लाहि साहस३रखन लग्यो, प्रकटि कृतवद प्यार ॥ १८ ॥  
पै न रहै ईस्वर१९५१सुपहु, राम३०३१४सुनहु कुलरोति ॥  
कहिय अधम कहि स्वामिकैँहँ, आश्रित रहन अनीति ॥ १९ ॥  
इत बुंदीहु उदंत यह, कुमर भोज१९१२करि करी ॥  
पठई विज्रति जनकप्रति, पुर कासिय लिखि पंथा ॥ २० ॥  
तव सुर्जन१९०१यह सुनि त्वरित, पठयो इम प्रतिपत्र ॥  
तुम सुत सादर बुद्धि तिन्ह, तकि हित रक्खहु तज ॥ २१ ॥  
जो न रहहिँ तो कछु जुकति, इहाँ तिनहिँ लौ आहु ॥  
कित कवि जैहँ सत्य करि, निज कुल सुजस निवाहु ॥ २२ ॥

मस्त हाथी हैं तो १ अङ्कुश २ सत्य ३ प्रसन्न होकर गई हुई भूमि को देने लगा  
४ राणा रत्नसिंह का ५ सूर्यमल्ल का ६ प्रसिद्ध किया ॥ १५ ॥ ७ सत्य प्रतिज्ञा वा-  
ला ८ छली ॥ १६ ॥ ९ नीति के साथ ॥ १७ ॥ १० नज्जता ११ सत्य बोलनेवाले से  
प्यार करके ॥ १८ ॥ १२ हे राजा रामसेह. जिस स्वामि को अधम कहा उसी  
के १३ आश्रित रहना अनीति जानकर ॥ १९ ॥ १४ सुनकर १५ पत्र लिखकर  
॥ २० ॥ १६ शीघ्र १७ पीछा पत्र भेजा ॥ २१ ॥ १८ कुछ युक्ति करके ॥ २२ ॥

॥ षट्पात ॥

इत ईस्वर १९५१ कवि उज्जिह निलय मेवार धरा निज ॥

चलिय जोधपुर चाहि वृत्ति कविता जस वानिज ॥

सावर पहुँचे सुनत भोज १९१२ निजकर दल भेजिय ॥

दोला १ जोगियदास २ दमिक १ चालुक्य २ संगदिय ॥

ए सचिव जाइ सावर उभय २ पटु तिन्ह इत लायै प्रनमि ॥

प्रभु राम २० ३१ ४ स्वक विकुल परपुरुष जब आये हितभाव जमि ॥ २३ ॥

नगर बरोदन निकट अचल दक्खिन २ दूर अंतर ॥

संक्रमि कुमरहु सुमुख भोज १९१२ प्रकट्यो हित निर्भर ॥

इम बुंदिय तिन्ह आनि जिम सु आकूत जनायो ॥

एह न भायो इनहिं भावकुमरहिं सु न भायो ॥

तव कहिय होइ कासी तुमहु जावहु कवि निज ईष्ट जित ॥

रंचक अनेहिं सम्मिलि रहै १ अरु अलक्ष्य वहै तीर्थ २ इत ॥ २४ ॥

कासी गो यह कुमर निजहिं लौ संग मुदित तव ॥

अधिपहु तोरन अवधि आप सम्मुह लौगो अब ॥

सह गौरव समुझाइ वदिय वित्तत कछु बासैर ॥

करि तिम हमहिं कृतघ्न तुमहिं जेवो न उचिततर ॥

हमैं न होहिं जो अप्प हित बैलि कहूँ गमन विचारिये ॥

कछु काल सफल यह गेह करि इतहु नेह अवधारिये ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

विते हड्ड ६२ न वारहठ, संतति विनु सामोर ॥

जिम सगोल सिमु बुलि जिन, अंकरस्य न किय ओर ॥ २६ ॥

१ छोडकर. यश का २ व्यापार करने को ३ सावर नामक ग्राम में ४ पत्र ५ दक्षिया चत्रिय वनमरकार करके ॥ २३ ॥ दाखिण के पर्वत तक उदरा के भीतर ८ जाकर. अपना ९ अभिप्राय. जो इस कवि को नहीं १० रुचा सो कुमर को भी नहीं रुचा. अपनी ११ इच्छा हाँपे जहाँ. कुछ १२ समय ॥ २४ ॥ बाहिर के द्वार १३ तक १४ अप्पन सहित १५ दिन १६ फिर १७ धारण करा ॥ २५ ॥ १८ गाँव



सीसखोंका बुंदीका पोछपात होना] षट्तराशि-त्रयोदशमयूख (२३।३)

तातैं लौ कुलवृत्ति तुम, पय हम सयन पुजाइ ॥

होहु व हड्ड६१न वारहठ, प्रकटि कृपा हित पाइ ॥ २७ ॥

कवि मंत्री नृपके कहत, अति आग्रह करि एह ॥

हुव हड्ड६१न कुलवारहठ, गिनि बुंदिय निज गेह ॥ २८ ॥

कुंकुम१ मुक्ता२ प्रमुख करि, पूजि सु पहु कवि पाय ॥

थिर१जो दिय जो पुनि अथिर, राम२०३-४सुनहु नरनाथ ॥ २९ ॥

आत१ जात२ गौरव१ उभय२, मिलतहि अप्प महीप ॥

बलि हुवर सासन वृत्तिमैं, दये हुलभ कुलदीप ॥ ३० ॥

सुत१रु सुता२ उद्वे१ समय२, बलि दोउ२न संबंध१४ ॥

पुनि दोउ२नके व्याहर१६ पर, सिद्ध वृत्ति करि संध ॥ ३१ ॥

पुंसवन१७ रु सीमंत२१८ पुनि, नियतहि अष्ट८ अनेह ॥

दई वृत्ति तिनमैं दयो, आढ्य ग्राम जुगर एह ॥ ३२ ॥

वम्हनखेट१ स नाम बलि, भीमखेट२धनमूरि ॥

दंग मऊ१के ग्राम हुवर, पहु अप्पे हित पूरि ॥ ३३ ॥

निलय राजमंदिरनिकट, उचित हवेली१अपि ॥

छमैं कुटुंब सब लेखछदै२, थिर महींदि दिय थपि ॥ ३४ ॥

अधिपमरन कुमरहि उचित, दलै२३रु निमंत्रन१४दैन३ ॥

व्याह१मरन२मुख हेतु बलि, आवन नृप कवि अने१४ ॥ ३५ ॥

नहीं रक्खा ॥ २६ ॥ हमारे १ हाथों से पैर पुजाकर ॥ २७ ॥ २ आदि-  
स्थिर करके दिये थे सो बुन्दी का देश जाने के कारण ३ अस्थिर होंगये, अर्थात्  
हमारे वे ग्राम भी बुन्दी के परगने वारां मऊ के साथ ही जो उन प्रांतों में  
थे वे सप गये ॥ ॥ २९ ॥ ४ ताजीम ॥ ३० ॥ ५ जन्म के समय ६ प्रतिज्ञा  
करके ॥ ३१ ॥ ७ संस्कार विशेष जो गर्भाधान से दूसरे अथवा तीसरे मही-  
ने में किया जाता है ८ आगरणी जो पञ्चमासी के नाम से प्रसिद्ध है.  
इस आठ वसंत पर १०वन युक्त ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११ समर्थ १२ लिखावट के  
पत्र में अर्थात् परवाने में १३ महा शब्द स्थिर कर दिना अर्थात् पहिले महा-  
शब्द लिखकर पीछे कवि शब्द लिखने की रीति टढ़ की ॥ ३४ ॥ २५ ॥ १४ पत्र-  
कवि के २५वर पर ॥ ३५ ॥

पच्छिम३सूरजपारितै, चउ४हृदयन ढिग चाहि ॥

स्व पुरहु इक१ \*हृदा१सहित, जु दिय हवेती१जाहि ॥३६॥

सब इतिमुख आदर१सहित, दै १ समुचित सब १ देयर ॥

§ अच्छैत मुत्तिय३दै अलिक, पोलिपात्र किय प्रेय ॥ ३७ ॥

॥ पट्टपातु ॥

हुव२हि वृत्तिमाँहिँ दिय ग्राम चम्मलि पर२तट गत ॥

कहि सब सासनमुकुट मही दोउ२न निश्चलमत ॥

बम्दनखेट१रु भीमखेट२जिन्ह नाम विदित जग ॥

बलिनिज भुव क्रय वस्तु मुल नृप कर जिहिँ जिहिँ मग ॥

वीसम२०विभाग३ताको हु बलि देय नियत करि तिन्ह दयो ॥

हसमैं प्रजाहु प्रेरत महिप उपदा करि कहु४अप्ययो ॥३८॥

॥ दोहा ॥

गढ बंवावद बस गयो, धर मेवार अधीन ॥

सामोरन सासन सबहि, हुव ते नृप सब हीन ॥ ३९ ॥

समर१८१७दये इत संवसथ, मन कवि इच्छित मानि ॥

कच्छोला१दिक खट६कथित, जेहु लेहु इम जानि ॥ ४० ॥

कच्छोला१संगहि कथित, रोसुंदारहरिना३रु ॥

दोहुंदा४गिंडोलि५दिय, पंचक खेट६हु चारु ॥ ४१ ॥

तेहु टारि रक्खे निमहि, निज अभुक्त नरनाइ ॥

अप्ये सासन तेहि अव, रक्खी सासन राह ॥ ४२ ॥

पे तिन्ह तुच्छहि जानि पहु, गुरु अप्पिय खट६ग्राम ॥

पट्टनिपुर्के परगनै, करि सासन जसकाम ॥ ४३ ॥

॥ दुकान ॥ ३६ ॥ १ उचित ३ दान, मोतिनों के § अन्न १ लताद से लगाकर  
२ प्रिय ॥३७॥ अपना भूमि में देवी जानेवाली वस्तु के मूल्य पर बीसवां हिस्सा  
४ निश्चय, राजा की ५ प्रेरणा से ६ नजराना ॥३८॥ ७ ग्राम ८ वाञ्छित ॥३९॥  
९ सुन्दर ॥ ४१ ॥ १० राजा ने अपने खाल से में नहीं मिलाकर अभुक्त रक्ख  
११ उदक में हाथ नहीं डालने की रीति रक्खी ॥ ४२ ॥ १२ बड़े ॥ ४३ ॥

भीसणोंका बुंदीका पोछपात होना] पठराशि-त्रयोदशमयुख (२३५१)

तँहँ लवान१ गोहट्टरतिम, देवीखेटदहु देत ॥

इम खटदँ कौटा४ अपर२, पर्पट५ वक्र६ उपेत ॥ ४४ ॥

ते हे पट्टनि१ तंत्र तव, अब लक्ष्मैरि२ अधीन ॥

जे ए अधिक छद्गाम जँहँ, पहु अप्पे बसुपीन ॥ ४५ ॥

सासबसु८ खट६ ग्राम२ सह, नियंता१ नियंत२ निदान ॥

ए चउदह१४ नृप अप्पिकैँ, दिय नैभव बहु दान ॥ ४६ ॥

॥ षट्पातु ॥

दुव२ अलिपुंजित द्विरदं१ तुरग२ चालीस४० त्वरंगति ॥

मय३ बसु ससि१८ मय भत्त भये मंरुचपल भोनमति ॥

सिबिका४११ रथ५१२ सिरुपाव६१३ दुलभ अंतिम६३ क१ इक१ दिय

आयुंध ७११ अरु आभरन ८१२ सु रुचि सब खास समप्पिय ॥

तिम अयुत पंच५००००० रूपय१११ वित्तैरिक्कुम१ मुत्ति२ न तिलककरि  
पूजितेन प्रनेमिभोज१९१२ हिं भनिय धर्म बिरुद अभिलाखंधरि १७४१

॥ दोहा ॥

हे सुत, अब बय वृद्ध इम, संधौ तुम इमसाहि ॥

क्रम मूढन बोधहु स्वकुल, ए व बारहठ आहि ॥ ४८ ॥

पय निज खंध दिवाइ पहु, इम चढाइ इम अक्खि ॥

पहुँचाये डेरन प्रथित, राजा स्व बिरुद रक्खि ॥ ४९ ॥

निज सगोत्र१ असगोत्र२ नृप, पुनि कवि थान पठाइ ॥

प्रथित करायउ सबन पँहँ, उपदादिकैँ१ अधिकाइ ॥ ५० ॥

सक ख वेद रस ससि१६४० समय, गहि इम वैभव१ ग्राम२ ॥

१ सहित ॥ ४४ ॥ पाटण के २ अधिकार में थे ३ धन से पुष्ट ॥ ४५ ॥ पहिले-  
वाले ४ निश्चय उदक और पीछेवाले ५ अनिश्चय (जागीर) ॥ ४६ ॥ ६ अमरों के  
समूहवाले (अस्त) ७ हाथी = शीघ्रगतिवाले ९ अस्त ऊंट १० मारवाड़ के उत्पन्न  
११ देकर १२ पूजन कियेहुओं को भोज ने श्री प्रणाम किया १३ यश की १४  
अभिलाषा धरकर ॥ ४७ ॥ १५ प्रतिज्ञा. अपने कुल के मुखों को १६ समझाओ  
॥ ४८ ॥ ४९ ॥ १७ नजराना आदि ॥ ५० ॥

हुव हम तुमकुल बारहठ, रसार्जन प्रभु राम२०३१४ ॥ ५१ ॥

हायन दुव२तत्थहि रहिय, कवि१जुत भोज१९१२ कुमार ॥

धराधीस यह छत्रधरि, हुव तत्थहि अधहार ॥ ५२ ॥

दुव२आश्रम नृप१६४२ सक तदनु, मिलत दोजि३सित१मंग९॥

सुर्जन१९०१२नृप अंतिमसमय, इस किय उचित उदगंग ॥ ५३ ॥

कथित घट्ट मणिकर्णिका, पहु गंगातट पत्त ॥

दै विधि देय रु तजिदयो, गंगोदक रहि गंत ॥ ५४ ॥

सुर्जन१९०१२नृपको जनुसमय, सर हय तिथि१५७५मित साक ॥

पहु हुव सिव नृप १६११साकपर, छकि बुंदिय जस छाक ॥ ५५ ॥

अब दुव आश्रम४२साक इस, दिय इहि नृप तजि देह ॥

तनु हुत करि रानी त्रि३कहि, गय संगहि सुरगेह ॥ ५६ ॥

भोज१९१२स्व माताप्रति अनिय, अबहि जरहु क्यों अप्प ॥

दूदा१९११सो टरिगो दुसह, दाहक तुमहि सदप ॥ ५७ ॥

विरचहु सुतके राज्यविच, दै निदेस सब दान ॥

सहि व्रतादिक३बिहिते सब, स्वर्गभजहु अवसान ॥ ५८ ॥

कनकवती१९०१२पच्छोकह्यो, सुत तैं न कहिय साहु ॥

जसुदा१९०१२न भज्यो सुतहि जिम, दुभगौ जिहि दूदा१९११हु ॥

सु तो जरै पतिसंगही, मै ब रहौ सुत मोहि ॥

मो पहिलैं जो तू मरै, तो दुव२हत्या तोहि ॥ ६० ॥

यह लिखि दै सु लिखी न इहि तीन३हि रानिन तत्थ ॥

तनु हुत किय गंगातटहि, स्वामीके बपुसत्थ ॥ ६१ ॥

ब्रह्मनालिविच तिहिं निदित, अब तस चौरा१आहि ॥

१ हे श्रुति रामसिंह ॥ ५१ ॥ २ वर्ष ३ पाप को मिटानवाला हुआ अर्थात् देहान्त होगया ॥ ५२ ॥ ४ आर्गशिर ५ उदग्र ॥ ५३ ॥ ६ गङ्गा के जल में ७ शरीर रखकर ॥ ५४ ॥ ८ जन्म ॥ ५५ ॥ शरीर ६ होमकर ॥ ५६ ॥ १० सदप (वर्मद सहित) ॥ ५७ ॥ ११ उचित १२ अन्त में ॥ ५८ ॥ १३ साधु (श्रेष्ठ) १४ दुर्भाग्य ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

कथित डिगहि मणि कर्णिका, जु पै जनावत जाहि ॥ ६२ ॥

न रच्यो सुर्जन १६० १ कछु निलय, बुंदीनगर बिलेस ॥

कासी सब बिस्वे कहे, अब असैं स्मृत एस ॥ ६३ ॥

प्रेतकरम सब किय प्रथित, अप्पनविधि अनुरूप ॥

मगग १ विमल १ तेरसि १ ३ तदनु, भोज १ ६ १ २ कुमार हुव भूप ॥ ६४ ॥

कवि ईस्वर १ ६ ५ १ जुत दिवस कछु, रहि तैं हँ हड्ड १ नरेस ॥

आसों पुनि पुर आगरा, अकवर ३ ७ १ २ सेवन एस ॥ ६५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठराशौ बुन्दीशसुर्जन-  
चरित्रे आमेरनृपमानसिंहस्य स्वस्वसृयवनेन्द्राकवरपाणिपीडनजन्य  
लज्जानिवारणार्थब्राह्मणचारणमागधपट्कोटिदम्भवितरण १ हड्ड-  
क्षलियद्वारहठसामोरगोत्रचारणधीरवंशविनशनानन्तरहड्डद्वारहठीभू-  
तमिश्रणगोत्रचारणेश्वरदासदेयवस्तुनियमन २, बाराणसीमध्यराव  
सुर्जनपञ्चत्वानन्तरभोजभूपतीभवनं त्रयोदशो मयूखः ॥ १३ ॥ आ-  
दितः षण्णवत्युत्तरशततमः ॥ १९६ ॥

॥ प्रायोजनदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पतारान्न इत उदयपुर, अप्पन विधि अनुसार ॥

अजधरम धेरिय अखिल, लुज धरि सांसक भार ॥ १ ॥

॥ ६२ ॥ ६३ ॥ १ प्रसिद्ध २ अप्पन सदृश ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

॥ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सु-  
र्जन के चरित्र में आमेर के राजा मानसिंह का अपनी पंक्ति नन्देशाह अक-  
बर की परखाने की लज्जा मिटाने के कारण ब्राह्मण, चारण और जाटों को  
छः करोड़ का दान देना १ हाडा क्षत्रियों के द्वारहठ, सामार, बाला के चारण  
धीर का वंश नष्ट होने पर ईश्वरदास नामक मत्स्यशाखा के चारण को हा-  
डों का द्वारहठ होकर लेण नियत कराना २ कासी में राय सुर्जन का देहान्त  
होने पर भोज के भूपति होने का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि  
से एक सौ छिनमें १९६ मयूख समाप्त हुए ॥

३ महाराणा प्रतापसिंह सम्पूर्ण ४ आर्य लोको को धर्म में चलाए; अथवा आ-  
र्यों के सब धर्मों की प्रेरणा की ॥ १ ॥

\* दसपुरमुख पत्तनदुलभ, लिय दिखिय धर लुटि ॥  
 इत उत बहु गंजे अडर, † करवातन अरि कुटि ॥ २ ॥  
 कहिय पुव्व तिम कति कहत, यह हुव सब भुव ईस ॥  
 वदत किते हुव यह बिदित, अर्द्धी ‡ अवनि अधीस ॥ ३ ॥  
 चितोरहु कनि जवन चाहि, जसगाँहक लिय जिति ॥  
 जिमतिम तपिमेवार जिहि, किय निज विक्रम किति ॥ ४ ॥  
 चेटकनाटकमुख प्रचुर, रान लये हयराज ॥  
 न दयो पै भ्रातन निजन, इकहुँ अस्व'वर बाज ॥ ५ ॥  
 इम रुठो ताको अनुज, सँपि न लहि सगतेसर ॥  
 सेवन अकवर३७१निजन सह, आयो दिखिय एस ॥ ६ ॥  
 ॥ पट्पात ॥

दिल्लीअकवरदंग२उभय२अकवर३७१निवास इम ॥  
 कहूँ यहँ१कहूँ यह२कहिय तदपि समुझहु संभव तिम ॥  
 सगतसिंह२ सीसोद साह आतहि सनमान्यौ ॥  
 पहु इत रान प्रताप१ प्रवल प्रतिभट पहिचान्यौ ॥  
 सजि बरूथे बहुरिहु अखिल प्रस्थित हुव भेवारपर ॥  
 सीमा प्रवेस पावतसमय कहत चलो अंसि रानकर ॥ ७ ॥  
 अडर रान इकलहि अँब चेटक चढि आयो ॥  
 व्यवहित रहि कछुबर साहदल मिलित सुहायो  
 सरत जवहि निजसीम अँघ्रि दुवर दिय अकवर३७१ईम ॥

\* मन्दसौर आदि नगर † खड्गों से ॥ २ ॥ आधी ‡ भूमि के स्वामि ॥ ३ ॥ १  
 पक्ष के ग्राहक ने. अपने २ पराक्रम से ॥ ४ ॥ ३ बहुत घोड़े ॥ ५ ॥ ४ घोड़ा नहीं  
 मिलने के कारण सगतसिंह रुठ गया ५ अपने सेवकों सहित ॥ ६ ॥ ६ आगरा  
 ७ कहीं पर दिल्ली और कहीं पर आगरा कहा है परन्तु जिस समय जहाँ पर  
 बादशाह होवे वहाँ उसी स्थान को जानना चाहिये. यहाँ स्थान बताने का  
 प्रयोजन बादशाह की समीपता से है ८ दाय ९ सेना १० चले. कहते हैं कि राणा  
 के हाथ का ११ खड्ग चला ॥ ७ ॥ चेटक नामक १२ घोड़े. पर चढ़कर १३ गुप्त.  
 बादशाह अपनी सीमा में १४ चला तब १५ चरण. अकबर के १६ हाथी ने

तैंहँ आरिय तरवारि नृपति जमकी रसनानिभ ॥  
 कछवाह मान भज अगग कछु भैयद खानबहलोल भट ॥  
 हो तैंहँ प्रताप तस सिरशहरयो कटि पक्खरशहयश्जुत प्रकट ॥८॥  
 बहूत बह बहलोल खग उततैंहु चलयो खैर ॥  
 इकशतिहिं चेटक अंग्रि अवनि कटि रू प्रकटयो अर ॥  
 सो नृप जानि संक्यो न कढत अतिवेग यहै करि ॥  
 त्रय३ पय चेटक तुरग धुरंग मारयो सु पटी धरि ॥  
 जिहिं पिठि बहुतलग्गे जवन जैंहँ पहुँचत दुवर जानिकँ ॥  
 कर जोरि अरज सगतेसरकिय मन अग्रजशहित मानिकँ ॥६॥  
 अग्रज जब लिय अस्व याहि तिनमैं दिय इक्कशन ॥  
 तब रिसाइ सगतेसरमंगि भूखन मार्तासन ॥  
 तैसोही इकश तुरग लोल सोदागरतैं लहि ॥  
 इम अकवर३७।१ पैंहँ आइ रक्खि कछु दाय गयो रहि ॥  
 अब जानि त्रि३पय हय अग्रजशहिं चहत बचावन ईमैं चविय ॥  
 जो होइ हुकममैं पूगि जिहिं जातहि हनि आऊँ जैविय ॥१०॥  
 साह कहिय सगतेसर जाहु मारहु रानशहिं जव ॥  
 बाजि दपटि यह बीर त्वरित सज्जित पहुँच्यो तब ॥  
 उभय२जवन हे अगग तिनहिं हनि अगग बढ्यो तिम ॥  
 रानशहिं अक्खिय रहहु अनुगैं यह सगतसिंह२ इम ॥  
 पूगतहि जवन तिन्ह मारि पथ कछु अप्पैहि आयो कहन ॥  
 हय त्रि३पयछोरि चढि जवनहय ब्रजहु भ्रात पन निब्रहन ॥११॥

॥ दोहा ॥

यमराज की १ जिह्वा के सदृश २ भयंकर ॥ ८ ॥ ३ तीक्ष्ण ४ भूमि पर ५ शीघ्र  
 ६ बहलोललाई को मारकर ७ घोड़े की अत्यन्त दौड़ का नाम पटी है ॥ ८ ॥ ८  
 माता से भूषण मांग कर ९ चपल १० अपने कुछ दायभाग को छोड़कर ११ बड़े  
 भाई के घोड़े को तीन पैरोंवाला जानकर १२ बेगवाले को ॥ १० ॥ १३ सेवक  
 १४ आप को १५ यवन के घोड़े पर चढ़कर जाओ ॥ ११ ॥

असंभूत सम दत्त यह, बाढत मन न बिसास ॥

जे अकबर ३७१ बानैत जिस, पहुँचै इक १ न पास ॥ १२ ॥

है २ ही पहुँचत जानि हट, तिनहि हनै सगतेस ॥

पहुँचै यह याकोहि पुनि, अहुतसूचक एस ॥ १३ ॥

विश्व जन दुकगहु अवहु, मन कज्ज न गहिपाल ॥

तनुके कज्ज वनै न तिन, वनै सु विरवै बाढ ॥ १४ ॥

पिहित साहजल भिलि पता, करिखै पुव्व कही सु ॥

अनुज २हि पहुँचै नहि इतर २, शीति अचिज्ज रही सु ॥ १५ ॥

पै धुरधन अक के लुपन, तब हुन रान अताप ॥

विपिर्नधर्म हित जो बस्यो, आपत्तिहु सहि आप ॥ १६ ॥

वीरपनहु याकोहि बलि, उघाखो सब सिर एक ॥

हठि इम तैंहें संभव चहत, अहुत जसहु अनेक ॥ १७ ॥

॥ पट्पात ॥

इक १ आकृति कति कहत हुते उभय २हि बंधुन हय ॥

पहुँचि अनुज २इम पास रान हय लिय सु लिशप्य रय ॥

चपला ग्व हय अग्रज १ चढाई पठयो पन पालन ॥

शास्त्रिय साहहिं आइ कटि जवनन करवालि ॥

१ यह पाता ॥ असम्भव सी है ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ २ दुस्कर. मन से राजाओं के ३ कार्य अथ भी करते हैं परंतु शरीर के कार्य उन प्रकार नहीं बनते ॥ १४ ॥ ४ सुख १ अन्य नहीं पहुँचें २ यह आश्रय की सीमा है ॥ १५ ॥ ५ इस कलिकाल के राजा में से धुर धन धारण करनेवाला अदाराणा प्रतापसिंह दुआ जिन्होंने मेरी को पराजित की वे मन में काम किया ॥ १६ ॥ १७ ॥ १ इनकारना इन कथा का होना संभव मालूम होना से क्योंकि उन २ अनेक अहुत यथ है १० एक से रूपवाले ११ तीन पैरों से चलने वाला १२ चलो से ॥ १३ ॥



पुनि छेदि इच्छामय हय पयहु दुस्सह भय जय खिन दया ।  
 सो रान प्रबल हजरत सुनहु गंजि सवन बचि इकगयो ॥ १८ ॥  
 संक्रानि अकबर ३७१२ सुनत \* पत बल अतुल उदैपुर ॥  
 चित्तोरहि १ कति बबत धारय बहुबिध जुज्झन धुर ॥  
 जिहिं बहुदिन लारि जिति १ पुहनि मेवार लई पुनि ॥  
 रक्खन धर्महि रान बसिय वन बलि चित्रन चुनि ॥  
 पठई कंहाइ दिलीस पहु सासन मभ कछु अनुसरहु ॥  
 नहिं और नृपन सम तुम नृपति रहि दिलिय सेवन करहु ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

हनरे रक्खहु दाग १ हय २, नौचै चिन्ह १ निसान २ ॥  
 कहिहैं हमरे ३ पहहिं करि, राज्य करहु पहु रान ॥ २० ॥  
 नैक न मन्नी रान बटि, सुनहु राम २० ३ ४ प्रभु सोहु ॥  
 पठई कहि रहिहैं स्वपथ, हम नासहि किन होहु ॥ २१ ॥  
 इत अकबर हठ अकुरयो, प्रतिभट उतसु प्रताप २ ॥  
 मन्ग्यौ नन दुवर्धा १ मिलन, आप मतहिं तजि आप ॥ २२ ॥  
 सुनु रानकै दस १ सुनै, पै तिहिं समय प्रवीर ॥  
 पट्ट कुनर अमरेस १ पट्ट, भये जनकै मत भीर ॥ २३ ॥

॥ पद्यात् ॥

उभय २ पिता १ सुत २ अतुल कहि नारि १ न संगहि करि ॥  
 सब भट २ परिजन ३ सहित धर्म न तजन मन पन धरि ॥  
 गहन वरुनदिल १ गिरिन रहिय चिरंलौ तैंह राना ॥

\* गयो १ कितने ही चित्तोड़ कहते हैं १ भूजि १ आश्चर्य कोके २ मेरा कुछे कुछ मानो और हनरे राजाओं के मन्त्राज दिली में रहकर सेवा मत करो ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ वृत्त में ३ खंडा वृक्षा ४ दोनों ओरवालों ने मिलना नहीं माना आपने ५ आपने को छोड़कर; अथवा जल (पराक्रम) को छोड़कर ॥ २२ ॥ ६ पिता के मत का सहायक भूया ॥ २३ ॥ ७ तुलना रहित ८ सेवक ९ पदों की दिशा (पश्चिम) के पर्वतों में १० बहुत समय पर्यंत

भोगे दृढ सब भांति खुल्लि आपति खजानां  
 कंटकी तरुन आहति कलित तिहिं अंतर तन १ पत्र २ तनि ॥  
 इम विविध कायमान १ रु उटज २ बंनवाये नृप बन्धु बनि ॥ २४ ॥  
 तहैं अंतहपुर तिमहिं रखि रानि १ न कुमरानि २ न ॥  
 अप्प १ कुमर २ कछु ओटरहे बाहिर छंद छानिन ॥  
 आहति बाहिर अखिल बीर १ अरु अनुग २ बसाये ॥  
 पिउहर निज पठई न लार ना १ रनि कतिलाये ॥  
 अवरोध तेहुं अखिय अधिप निज पुत्रिन सम हित नियत ॥  
 साहस अमोघ इहिं संकटहु जवन भृत्य न बजै जियत ॥ २५ ॥  
 रह्यो इत सु भुव रुंधि १ सबल छोरै दृढ साह न ॥  
 अधिक अधिक दुख देत रोकि अन्नागम राहन ॥  
 दूजे २ तीजे ३ दिवस स्वजन जुहि अन्न प्रवेसहिं ॥  
 बंदि सबन इक १ बेर अप्प लै तब अवसेसहिं ॥  
 कोद्वै १ गेवंधु २ न मिलै कहहु साक १ फल २ न व्है तब असन ॥  
 कलिहको खिलहु विच डारि कछु रंधिलहहिं हेरहि रंसन ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

पै जब व्है तब पतिं परि, विचजिम्महिं नृप बैठि ॥  
 निजनिज स्वामिन खिल अनुग, पावहिं अवसर पैठि ॥ २७ ॥  
 रीति सु तहैं पीडिन रहैं, जहैं विपदा बढिजाइ ॥

१ कांटोंवाले वृक्षों के २ घेरा लगाकर अर्थात् कांटों की बाड़ करके ३ विदित-  
 उन के भीतर तृण और पत्र छाकर अनेक प्रकार के ४ तृणकुड्य (तृणों की  
 झोंपड़ियाँ) ५ पर्णकुटी (पानों की छाई हुई टपरियाँ) बनाकर चह राजादेवनवासी  
 हुआ ॥ २४ ॥ ७ जनाना, बाहर की ८ टपरियों में ९ बाड़ के बाहर के १०  
 जनाने में ११ निश्चय ॥ २५ ॥ १२ भूमि को भर कर १३ अन्न आने के मार्गों  
 को रोककर १४ अपने लोकों में जिस अन्न की परीसगारी होती थी वह सब  
 को दिन में एक समय बाँटकर बाकी रहता सो १५ आप लेता १६ कोदां १७  
 गेहूँ १८ भोजन, कल का १९ बाकी रहा हुआ २० स्वाद नहीं देखते थे ॥ २६ ॥  
 २१ बाँकी के सेवक ॥ २७ ॥

पै सहभोजन उदयपुर, होत अबहु यह हाइ ॥ २८ ॥

पतारान् इम धर्मपर, संधां अबितथ साहि ॥

रोर दुखहु सहि सुरिरह्यो, निजजन सब निर्बाहि ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

जिहिं विपत्ति गर्भजुत रहतकोउक कुमरानिय ॥

बासर तीजे३ कबहु अन्न स्वजनन तहँ आनिय ॥

हुव तस रुट्टी होहि अखिल बट अद्धी१ अद्धी१ ॥

गुरुपन कारन द्वि२ गुन लाभ ताकहँ इक१ लद्धी ॥

आहार करत आतापिनी गगन भूपटि तिहिंलैगई ॥

अमरेसैनारि करि त्राहि वह भयाबिहाल क्रंदत भई ॥ ३० ॥

स्वसुर१ सुनत बट स्वीय अद्ध१ पूर्पिय तिहिं अप्पिय ॥

सो३ हि स्ववट सस्सूर हु दईत मग रहि बधूहिं दिय ॥

इम ताके हुव इक्क१ जोहु न लगी खावन जहँ ॥

सस्सूर१तह सह सपथ कठिन भो१जी स्वबधूकहँ ॥

दुखको न सेस अन्नहु दुलभ सूर तदपि संगररसिक ॥

अरि जवनतिमिर भास्यो उदित अज्जनूपन रवि गन इक्क१ ॥ ३१ ॥

१ साथ भोजन ॥ २८ ॥ २ प्रतिज्ञा ३ संत्य ४ भयंकर दुःख सहन करके ॥ २९ ॥

उस ५ विपत्ति में ६ तीजे दिन ७ रोटी ८ सब का आधी आधी रोटी का पण्ड होता था ९ गर्भवती के वडपन के कारण उस कुमरानी को एक रोटी मिलती थी भोजन करते समय १० संबली (चीलह) ने भूपट मारकर ११ अमर सिंह की छी १२ रौने लगी ॥ ३० ॥ १३ अपने बट की आधी १४ रोटी उस कुमरानी को दी १५ प्यार के मार्ग से बहू को दी १६ मांगन सहित १७ कठिनाई से भोजन कराया तो भी १८ युद्ध के रसिक थे सो १९ यवन रूपी अन्धे रे में २० आर्य्य राजाओं में एक महाराणा का ही सूर्य के समान उदय दाख-

\* यहां पर अब भी यह रीति होना लिखकर ग्रन्थकर्ता ने खेद प्रकाश किया है सो अपने सरदारों को पंक्ति में बिठाकर अपने सन्मुख भोजन कराना तो राजाओं को शोभा दायक है परन्तु सरदारों के सेवक पंक्ति में आकर सरदारों को उन्निष्ट पातले बिखा की रीति के अनुसार उठा ले जाते थे यह रीति अनुचित समझकर महाराणा स्वरूपसिंह ने तोड़ दी सो अब नहीं है ॥

## ॥ सौराष्ट्र दोहा ॥

स्व धर्म दृढ संवादि, दै सीसशु को भूरदविन ॥ ३१ ॥

अग्गहु लखखनआदि, रानहि बहु सुरेरहे ॥ ३२ ॥

याहीतैं जन अज्ज, अज्जनइन भाखैं इनहिं ॥

लुपत धर्म कुललज्ज, तक्की इन इतरन न तिम ॥ ३३ ॥

जवन कहत लखु जानि, अप्पन अज्जन हिंदु इम ॥

मति जड सुहि दृढ मानि, हिंदु हम अज्जहु कहत ॥ ३४ ॥

हिंदुस्थान कहंत, अज्जावत्तहिं अज्ज इम ॥

लज्ज न सुनि हु लहंत, मिच्छन हिंदुस्तानमित ॥ ३५ ॥

भाख्यो हिंदुन भानु, जनन इमहि रानन जनन ॥

सो जहैं ज्वलित कसानुं, हुव प्रताप अरि करन हुव ॥ ३६ ॥

भोजमानसे भप, सचिव खानखानादि सब ॥

रहे स्व र्व अनुरूप, करन संधि समुझाईकै ॥

## ॥ षट्पात् ॥

पठई कहि मानप्रति रान यह वत्त धर्मरत ॥

दुहितौ जवन न दै रु तुमहु संबंध उतहि तैत ॥

अपने धर्म को दृढ़ ? कहकर अपना मस्तक देते हैं तिनके सुमि और  
२ धन क्या है ३ गढ़ लक्ष्मणसिंह आदि ॥ ३२ ॥ इसी कारण से ४ आर्य  
लोक इनको ५ आर्यदिवाकर कहते हैं, ६ अन्य लोकों ने देखी ऐसे  
इन्होंने नहीं देखी अर्थात् अपने धर्म में दृढ़ रहे ॥ ३३ ॥ यवनलोक ७ छोटे  
जानकर हम ८ आर्यों को हिन्दुवा कहते हैं सो सुखों ने उसी बात को दृढ़  
मानकर ९ आर्य भी कहने हैं कि हम हिन्दु हैं; जा आज भी हिंदु कहते हैं  
॥ ३४ ॥ इसी कारण आर्यलोक भी ॥ ३५ ॥ १० आर्योंवर्त को हिन्दुस्थान कहते  
हैं सो यवनों के समान हिन्दुस्थान कहने में लज्जा नहीं पाते ॥ ३६ ॥ इसका  
रण लोकों ने महाराणा के ११ वंश को हिन्दुवासरज कहा सो वहाँ जलते  
हुए १२ अग्नि के समान शत्रुओं को १३ होम करनेवाला प्रतापसिंह हुआ  
॥ ३७ ॥ १४ अपने अपने १५ सहस्र १६ मिलाप ॥ ३७ ॥ १७ धर्म में रत महाराणा  
प्रतापसिंह ने कछवाहा मानसिंह को कहलाया १८ पुत्री १९ इसकारण से

अकबर ३७।१ जा मिपे अग्न क्यों न नतें हमहिं करावहु ॥

अब पै सगपन १ असैन शंति पेलै भव पावहु ॥

जो पुनि नदेहु लिखि देहु जब लवकुल पुत्रिन तव लहहु ॥

हम स्वीय भटन देतहि हरखि रुचत नतो मिरजा रहहु ॥३८॥

॥ दोहा ॥

करो जवन लवकुल कानी, कहिय अग्न तुम कुपि ॥

बिमरायो सु न करि बचन, लज्ज १ धरम २ कुल ३ लुपि ॥३९॥

कनी दूर जवनी करन, कछवाहहु लौ कोहु ॥

तनया लवकुल जा ततो, हमको तुम अर्थ होहु ॥ ४० ॥

॥ पट्टपात् ॥

जब प्रताप अहुं जाइ कुम्भ व्याहहु तव मो कुल ॥

तनया १ व्याहहि न तनु तनय २ व्याहहु अतीत ३ तुल ॥

कहां रुठि तुम कियउ सिंह इत आनि फैंस सम ॥

हथी समुझें हमहिं तुल्य समुझे न अंध तिम ॥

कंदैरा लिय सु बहु मिलि किमहु तिम जो सखें हुकम तस ॥

तो हमहिं धर्म तुमलौं तजे बढहु सिंह १ कित सिंह २ वस ॥४१॥

मुख जो रखहु मुख साह श्रुति गहि समुझावहु ॥

दंग १ सु हय २ न दिवाइ चिन्ह १ ध्वज २ निजहि चलावहु ॥

उत उत्तर यह अपि भूप भोज २ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

१ पहिलोई, अकबर के आग हमको २ नज क्यों नहीं कराया ३ भोजन ४ हम जब के बंश से. हम अपने ५ उमराओं को ही प्रसन्नता ले पुत्रियें देते हैं १ मिरजा यह पानेवाले यवन ही रहो ॥ ३८ ॥ ७ कन्याओं को ॥३९॥ कन्याओं को ८ यवनी कराना तो दूर रहा परन्तु ९ कछवाहा भी कोई १० लव बंश की कन्या जो लेवे तो हमको ११ पाप होया ॥ ४० ॥ प्रतापसिंह के १२ भाग जायें जब १३ परावरी को छोड़कर १४ गौड़ के समान. किसी प्रकार यदुतों ने मिलकर १५ सिंह के रहने का स्थान लेलिया १६ तुमारे समान ॥४१॥ बादशाह का १७ कान पकड़ कर १८ बाँड़ों के दाग दिवाकर ध्वजा में बादशाही चिन्ह चलाओ

उतमैं न दैन दुहिता यहहु जो बलि दै सोहु जवन ॥  
दूदा१९११रुतुम१६१२हु तैनया दई कहहु धर्म रक्खहि कवन ॥४३॥

॥ दोहा ॥

मन्नहु अप्पहु अबहि किम, रक्खत ए छलराह ॥  
कलवाहनके जिन करहु, बिनु लिपि पुत्रन व्याह ॥ ४३ ॥  
अंतर१ मिच्छन बंधुर इम, ए ठग उप्पर१ ओर२ ॥  
अज कवन धिजै इनहिं, चोरै दीसंत चोर ॥ ४४ ॥  
॥ षट्पात् ॥

इम कहाइ रान इत बस्यो गिरिदुर्ग दुर्गवन ॥  
जहँ सकैं न अरि जाइ जाइ दिन निठि निजहि जन ॥  
साक पलास१ पलास२पलासनके उटजैन पहु ॥  
रहैं जलन तहँ रंच विसैं भर जदपि लागैं बहु ॥  
बरखा अनेहँ तहँ कछु बिघन अमर उटज प्रच्युत उदक ॥  
कुमरानि१सहित अनुताप किय जगिनिस कुमार१न पाइ जग ॥४५॥  
पिहित सुनत सब पास रजनि बिचरै उठि रानहु ॥  
कुमर उटजडिग कहत कथन परिगो वह कानहु ॥  
अमर दुखित उच्चरिय अहो हम सम न अभागे ॥  
वन यह सहत बिपत्ति जलहिं टारन निस जागे ॥  
थिर सुजन१६०१ रनथंभ काल हम सुनिय सत्त७ किय ॥

१ पुत्री नहीं देना २ फिर ३ पुत्री ॥ ४२ ॥ ४ बिना लिखावट कराए ॥ ४३ ॥  
भीतर से ये यवनों के ५ सम्बन्धी हैं ६ कौन आर्य इनका विश्वास करे ७ चौक  
(प्रसिद्ध) ही चौर दीखते हैं ॥ ४४ ॥ ८ पर्वतों के गढ़ में ९ दुर्गम होकर; अथवा  
दुर्गम वन में १० वृक्षों के पत्तों का शाक और मांस का भोजन. इसी प्रकार  
११ पत्तों की छाई हुई झोंपड़ियों में रहे. अधिक झड़ लगता है जब उनमें  
जल १२ प्रवेश होजाता है १३ समय. अमरसिंह की झोंपड़ी में पानी १४  
टपका १५ सन्ताप किया ॥ ४५ ॥ कुमार को १६ झोंपड़ी के समीप. अमरसिंह  
का यह १७ कहना महाराणा प्रतापसिंह ने सुनलिया

सब अधिप धन्य हमरे सगे महलन वितवत यह समय ॥  
 प्रवलाहि बुलाइ पद करि प्रहत न क्यों गहत नृप संधि१नय ॥ ४६ ॥  
 छंदन निलय निज छन्न आइ सुतो सुनि नृप यह ॥  
 परिकर बुल्लि रु प्रात सवन प्रति भनिय सुनुसह ॥  
 तुमहि संधि जो रुचन करहु तो है अनुमत किल ॥  
 इक१ मो सठ अपराध वसहु क्यों सब कारा विल ॥  
 यह सुनत भीत१विस्मितअखिल कहतभये यह अज किम ॥  
 प्रभुसंग दुख१रु सुखरपरिजनन जानहु हमहि स्वछाँहँ जिम ॥ ४७ ॥  
 कहिय रान जलकनन कुमार अनुताप रति किय ॥  
 छिजि१ मिलहु पीछाँहँ जु अब किन गिनहु उचित जिय ॥  
 करन राज्य नमि कुमार बुरे बालि हमहि बतावैं ॥  
 हम छत सादर मिलहु जिम न अरि अरुचि जतावैं ॥  
 तब नही१भीत१अखिय अमर गति दरिद्र१आख्य१न गदत ॥  
 मिलिवाँहि मन्त्रि किम प्रभु कहहु निज१पर१परदासहु नदत ॥ ४८ ॥

॥ दांदा ॥

कुमार लजानो इम कहि रु, रखा सदा तिहि राह ॥  
 जुगश्न रिपुन नैन१ जिमहि, पेने तिमहि सिपाह ॥ ४९ ॥

॥ पट्टरात् ॥

अकबर१११पाउसग्रंत गया तैंहँ धरिच्छकगन ॥

अन्य १ राजा यह समय जहाँ में २ विनाते हैं, राजा पन के पद का ३ नाश  
 करके राजा संधि की ४ नीति क्यों नहीं बदल करने ॥ ४६ ॥ आपने ५ पत्तों के  
 पर से ६ परगत की ७ पृथ मलित ८ तुम को मिलान करना रुचता है तो, नि-  
 श्चय की सुन रही ९ लजाना है तो १० कंदलाने में पसले की ११ दर में बर्षित  
 प्रकाश १२ यह आज गया सुखा १३ लक्ष्यों को १४ अपनी छाया के लजाने  
 लाना १५ लाने जाना ॥ ४७ ॥ रात्रि में कुमार ने १६ लजाना दिया १७ पीछाकर  
 १८ फिर, भय मोत और १९ लजाने प्रकाश, दरिद्री की नीति २० भयमान नहीं  
 क्यों है २१ मर्त्यता करना है २२ ॥ जिसप्रकार पिता और पुत्र दोनों आशुओं  
 को २३ मलानेवाले थे तिसप्रकार उनके सिपाही भी तीव्र आशु में ॥ ४८ ॥

इम प्रताप असुँ अवधि प्रथित निबस्यो स्वधर्मपन ॥  
 स्वकुल समप्पन सुजस धर्म अप्पन थप्पन धुर ॥  
 स्वाँमि सुनहु जिहिँ समय इक्क१हुव यहहिउदैपुर ॥  
 बिपदाह सहि रु अब्दन बंहुन बिहित बहिरु थिति चहि बिपिन ॥  
 बितयो स्व आयु तस देस१बसुरअमल गयो करि साह इन ॥५०॥

॥ दोहा ॥

आतहि दिल्ली साह इम, सब भूपन हुव सिक्ख ॥  
 पास रह्यो इक्क१मानपहुँ, तहँ साल्लर्कपन तिक्ख ॥ ५१ ॥  
 पुर आमैर१रु जोधपुर२, आदि बहुत अवनीस ॥  
 तियनजुतहि जे जाइ तिन्ह, सिक्ख रुचैँ रुचि सीस ॥ ५२ ॥  
 रहैँ साह पुरबाहिर१हि, जेहु कतिक लेजाइ ॥  
 बुंदी१मुखँ लखि बाहुँ, पुर निज साह पुगाइ ॥ ५३ ॥  
 इम भोज१९१२हु हुव२अब्दकी, लाहि सिक्ख रु जसलाह ॥  
 पहीलैँ बुंदिय स्वीयपुर, आयो सबल१उछाँह ॥ ५४ ॥  
 कुमर रत्न१९२१संबंध किय, इन दिवसन आमैर ॥  
 क्रूरमतैँ जु लिखाइ क्रम, वदहिँ सु अगग बिबैरैँ ॥ ५५ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

जान्यौँ बुंदिय जाइ, प्रतिमग सुरि रहि साहपँहँ ॥  
 पुनि उत सिक्खहिँ पाइ, कासी रहिहँ अब्व कछु ॥ ५६ ॥  
 इम हड्ड१नकुल ईस, पुर बुंदी आयो प्रथम ॥  
 सब निजकरि बखसीस, बिसवासे इतके बिबिध ॥ ५७ ॥  
 अप्पन वंचितँ अगग, जो गनेसद्विज जोइसी ॥

१ प्राण रहा तब तक २ प्रसिद्ध ३ हे स्वामिरामसिंह ४. बहुत वर्षों तक ५ उचित धर्म धारण करके; अथवा उचित मार्गमें चलकर ६ वनमें ॥५०॥ ७ राजा मानसिंह ८ सालापन की बड़ाई से ॥ ५१ ॥ ९ राजा १० प्रसन्नता ॥ ५२ ॥ बुंदी ११ आदि "यहां अजहत् स्वार्थ लक्षणा से बुंदी आदि का राजा जानना चाहिये" ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ १२ बिना डेप से आगे कहेंगे ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ १३ ठगाहुआ.



दूदा १९११ कुमर उदयग, मारयो निज खिन रोकि मग ॥ ५८ ॥

महादेव जिहि नाम, सो नृप बुद्धि गनेससुत ॥

दिय तिहि वसु उदाम, निबसथ सासन डिम्मली १ ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के षष्ठ ६ राशो बुन्दीशसुर्जनचरित्रे उदयपुराधिपमहाराणाप्रतापसिंहयवनेन्द्राकबररणानन्तरविपत्समयगिरिनिवासस्वधर्मदृढरक्षण १, आर्यकुलकमलदिवाकरख्यातिकारणप्रसिद्धीकरण २, बुन्दीभूपभोजामेरनृपमानसिंहसचिवखानखानादिसन्धिवचनानादरकधर्मदृढीभूतराणाकृतपरूपोपालम्भमाननृपलज्जितिकरण ३, विविधापत्प्राप्तिहेतुकुमारामरसिंहदुःखितवचनश्रवणसमकालमहाराणाकुमारत्रपासादन, ४, यावजीवमहाराणाप्रतापसिंहधर्ममार्गस्थितिसहितान्यार्यनृपार्थदिल्लीदङ्गात्स्वस्वराज्यगमनाज्ञावर्णनं चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

आदितः सप्तनवत्युत्तरशततमः ॥ १९७ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रायमल्ल दायोद रत्न, इत करि ईस्वरदास ॥

? उदय ॥ ५८ ॥ २ ग्राम ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति सुर्जन के चरित्र में उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह का बादशाह अकबर से युद्ध करके विपत्ति के समय पर्वतों में निवास काके अपने धर्म को दृढ़ रखना ? हिन्दुवास्तव कहलाने का कारण प्रसिद्ध करना २ बुन्दी के राजा भोज, अमर के राजा मानसिंह और सचिव खानखाना आदि के सन्धि के वचनों को नहीं मानकर धर्म में दृढ़ रहने के कारण का कठोर उपालम्भों से राजा मान को लज्जित करना ३ अनेक आपत्तियों भोगने के कारण कुमर अमरसिंह के दुःख के वचन सुनकर महाराणा का कुमर को लज्जित करना ४ जीवन पर्यन्त महाराणा प्रतापसिंह के धर्म पथ में रहने के सहित अन्य आर्य राजाओं को दिल्ली से अपने अपने राज्यों की सीख मिलने के वर्णन का चौदहवां १४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एकसौ सत्त्वानव १९७ मयूख हुए ॥

रायमल्ल का ३ भाई युद्ध करके

पैठो नगर मऊसु पुनि, नृपपन तजन निरास ॥ १ ॥

रहत साहके रच्छकन, भिरि वह कट्टिभजाइ ॥

भोखिची १३ गतभूमिको, अधिप मऊअपनाइ ॥ २ ॥

॥ पटपात ॥

सुनि असहन यह साहं दयो बुंदिय भोज १९१ २हिं दल ॥

नृप तब सीमा निकट भयो प्रतिभट खिची १३ खल ॥

गहि १ वाहनि १ तिहिं गहहु दहु ६१ दिष तुमहिं मऊ १ हम ॥

सत्र ग्रामनजुत सीम करहु निज करि निज विक्रम ॥

सुनि यह निदेस बुंदिय सुपहु सवल सज्जि हंकि य सजैव ॥

मनरतमिलाय पत्तन मऊ १ लिय गरदाइ लग्यो न लैव ॥ ३ ॥

॥ पद्धतिका ॥

इम वेदि मऊ १ पुर असह अप्प, दै तोप दुरदिन हरि अरिन दप्प ॥

दह्ला करि तीजे ३ दिनहि दहु ६१, अंदर पहु पैठो तोरि अहु ॥ ४ ॥

वज्जिय तैंहें खग्न निमित्त बाढ, गाजिय १ भट २ भाजिय १ चकित

गाढ २ ॥

भूपतिकोतिहिं रन भांगिनेय, जिहिं नाम कन्ह मन रन अजेय ॥ ५ ॥

सौ पूरकुमरि १९१ १ लघुतनैय सूर, पानिपैकरि मातुल अग्न पूर ॥

पीवत कबंध रन पगन प्रान, वह कन्ह खिग्यो खग्न अमान ॥ ६ ॥

इक जाम मच्छो मूर्ध तैंहें दुरओर, घोटै १ नर २ लोटै ३ असह घोर ॥

पैने १ असि दहु ६१ न करि प्रतीत, भजिगो वह ईश्वरदास भीत ॥ ७ ॥

पहु भोज १९१ १ मऊ १ सह विजय २ पाड, भंडे तस प्रातहु दिष भुकाइ

कै कथित मान जय अनैवहित्य, पहिलैं हन्यो जु गुरोर पित्य ॥ ८ ॥

॥ १ ॥ २ ॥ १ पत्र २ जत्र ३ अथवा मारकर ४ पराक्रम ५ क्षीय ६ क्षण भी

नहीं लगा ॥ ३ ॥ ७ दर्प = आह (रांक) ॥ ४ ॥ ९ तीक्ष्ण १० भानजा ॥ ५ ॥ ११

छोटा पुत्र १२ पराक्रम १३ अतोल ॥ ६ ॥ १४ युद्ध १५ घोटै १६ मारनेवाला

१७ तीक्ष्ण ॥ ७ ॥ १८ राजा मानसिंह ने आसन्न जय करके १९ पृथ्वीसिंह

को ॥ ८ ॥

नंदन तदीय जो भानुनाम, पैठो सु रीछवा पुनि प्रकाम ॥  
 वस है मऊ रहि खिचि १३ न प्रबंध, क्यों तब लहै न तिन भट कबंध ॥ १९ ॥  
 यह बहुरि रीछवानैर आइ, निज जानि रह्यो तब सब नमाइ ॥  
 भूपति जब खिच्यो १३ गो सु भागि, तस भटहु भजे गृह स्वस्व त्यागि १०  
 छलि तब कबंध तस संग छोरि, बैठो सु रीछवा रुपि बहोरि ॥  
 इहि हेतु मऊ रसन चढि अधीस, संक्रमिय भानु रहोरसीस ॥ ११ ॥  
 बिंद्यो पुर जातहि तोप वार, दुश्मुहूर्त सही पुर भू दशर ॥  
 कढि जान असंभव लखि कबंध, सय जोरि परयो पय प्रहतसंधा १२ ॥  
 न हन्यो १ न गह्यो २ तब पटु नरेस, आन्यो गिनि निज भट संग एस ॥  
 तदपि न द्रयो सुजित पुरहि ताहि, बुध और पटा दियनय निवाहि १३ ॥  
 बुंदीके अनुगत नय प्रबंध, कहियत तबतै तस कुल कबंध ॥  
 अथ तिहि कुल स्वानुज माल एस, निबसथ गागरनी हेनरेस ॥ १४ ॥  
 अहं कलुक मऊ पहु रहि अत्रैस्त, सीमाके ग्रामहु लखि समस्त ॥  
 सब ठाम रक्खि परिचितै सिपाह, बलि आयो बुंदिय नरननाह ॥ १५ ॥  
 प्रभु राम २० ३ ४ मऊ १ ग्रामन उपेत, तबतैहि भई हड्ड ६ १ न निकेत ॥  
 बुंदिय दुश्मद सिक्खहिं विताइ, जिम स्व कुलधर्म राज्यहिं जमाइ १६  
 खड्गारौ चालुक सचिव खास, अभिधा जिहिं जोगीदास १ आस ॥  
 दोलतसिंह २ सु दहिया द्वितीय २, रक्खे स्वराज्य निबहन गरीय ॥ १७ ॥  
 जगभाखत खानखवास ३ जाहि, सुहि द्विज सनाढ्य सलमन ३ सराहि  
 लखि चोरनजारनरोध लाह, सेनानी रक्ख्यो प्रिय सिपाह ॥ १८ ॥

१ वसका पुत्र २ विशेष कामना से ॥ १९ ॥ ३ अपने अपने घर छोड़कर ॥ १० ॥ ११ ॥

४ घेरा ५ दो घड़ी ६ प्रतिज्ञा छोड़कर हाथ जोड़ कर चरणों में गिरा ॥ १२ ॥

७ विजय क्रिया दृष्टा पुर ८ चतुर ॥ १३ ॥ ९ सेवक १० राठोड ११ आप

के छोटे भाई का साला है १२ गागरणी में रहता है ॥ १४ ॥ १३ कुछदिन १४

निर्भय १५ परिचय पाएहुए सिपाहों को ॥ १६ ॥ हांडों के १७ घर में ॥ १८ ॥

१७ खैराड़ा १८ नाम ॥ १७ ॥ १८ रोकने का लाभ २० सेनापति ॥ १८ ॥

हनि बारह १२ खेटनन गिनि देय, मैं नै खल गंजे जिहिं अमेय ॥  
 नृपभोज १६ १२ करत कासी निवास, इहिं छतन खलन जिघास ॥  
 रच्छक रचि चोरी श्लूट रगोध, मृग्य गव प्रजाहिं दिय द्विज सवोध ॥  
 जिहिं ग्राम अगग वय १ काल २ जाहिं, भेनीन प्रजागै रोग माहिं ॥ २० ॥  
 बुंदी बलप्रति तीजो ३ प्रवीर, सो द्विजहु इहाँ रक्षंया सु धीर ॥  
 अधिकार कुमरपन जिनाहिं अप्प, दिय पुढ्याहि दुजनन दलन दप्प २१  
 उन तीनन बुंदीबल उपेत, नृप रक्खि चलो दिल्ली निकेत ॥  
 मेना नव बावन १ २ प्रांत सत्थ, पहुँच्यो नृपतिहिं जुत इंदपत्थ ॥ २२ ॥  
 जिन दिग्गज असइ सब रिपु लजाइ, वसुधांतल डंका इक १ बजाइ ॥  
 इम राज्य अकंटक बिरचि ईस, सो अकबर ३ ७ १ प्रतपत सबन सीस ॥  
 निज सचिव खानखाना नवाब, आनिय जिहिं सतम स्वकुल आव ॥  
 नामे खान १ सम अदल न्याय, दाता हातम २ सम सकल दाया २ ४  
 परको विक्रम ३ सम हरन पीर, बानाँधर रुस्तुम ४ उपम बीर ॥  
 भाखा खट ६ संस्कृत सुखन भोज ५, मंजुल पर दूजो २ जनु मनोज १ २ ५  
 अरवी १ मुख निज भाखा अगाध ७, बिरचै सब बादिन बचन बाध ८  
 रिक्तवार ९ काव्यकर १० गुनन रासि ११, पटुमैनि १२ गुनगाहक १३ ज-  
 स प्रकासि ॥ २६ ॥  
 धुरधारक कर्ण १४ कि स्वामिधर्म, सब दईत १५ सील साकर १६ सु-  
 कर्म १७ ॥

मैनों के बारह खेड़ों को मारकर (विध्वंसकरके) १ त्वाज्य २ प्रमाण रहित- दुष्टों  
 का जीने की ३ आशानही ४ हुई ॥ १९ ॥ मैनों की स्त्रियों को ५ जागरण में- वह लोकोक्ति  
 है कि 'जिसके भयसे थपड़े हुए छोकरे सोते हैं'; अथवा जिसके चाससे मैनों की  
 स्त्रियों की अवस्था और उनका समय जागरण के रोग में ही बीतता है ॥ २० ॥  
 ६ दर्प ॥ २१ ॥ ७ इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) ॥ २२ ॥ ८ मंजुल पर ॥ २३ ॥ ९ क्रान्ति ॥ २४ ॥  
 १० नहीं भागने का चिन्ह धारण करनेवाला- संस्कृत ११ आदि १२ सुन्दरता  
 में १३ काफ़ेदेव ॥ २५ ॥ १४ शान्ति करानेवालों के १५ चतुरलोकों का मणि ॥ २६ ॥  
 सय का १६ प्यारा १७ शकर के समान

जिहि छत खल कथन \* मूकजीह १८, सरल १९हि । अज १ अगगहु  
रहत सीहर ॥ २७ ॥

लौकिक पटु १९ सकरुन २० ॥ अजु २१ सलज्ज २२, सतपुरुखन संगति  
सतत सज्ज २३ ॥

निज स्वामि अभ्युदय तेहु २४ नेक २५, दढ पन २६ समदरसी २७ यहि  
एक १ ॥ २८ ॥

इक बुध दरिद्र द्विज रिस उपेत, हुत होहु मिच्छ खय साप देत ॥  
सुनि कहिय होहु पंचमि ५ समास, तब द्विज प्रसन्न हुव बचन तास २९  
पगघहि निज फैंकी रीझि पास, नहि विफल उदारन रीझ नास ॥  
बहु छिद्र १ मलिन २ जनु कूट बीस २०, सुहि लौ नवाव बंधी स्वसीस ३०  
माँ १ वानी २ दुव २ इक १ धर मिलाइ, द्विज किय सु आर्ख्य बहु बसु दिलाइ  
इक धनिक नारि बय १ मदन २ अंध, सो कबहु लख्यो जावत सुसंध ३१  
तब लज्जहि जुबन मत्त तोरि, नवबय नवाव बुल्लयो निहोरि ॥  
तस पिहित जतन अनुकूल तथ, सो गो हु खानखाना समथ ॥ ३२ ॥

जिसके होते हुए दुष्ट लोक दुष्टता की कथा करने में \* गूंगे थे । बकरे के आगे  
सिंह भी सीधा रहता था । लौकिक के कामों में चतुर ॥ २७ ॥ § करुणा सहित  
॥ सीधा १ निरन्तर सत्पुरुषों की संगति करनेवाला २ प्रताप ३ निर्बल और  
सबल को समान देखने वाला ॥ २८ ॥ एक दरिद्री ४ पण्डित ब्राह्मण ने क्रोध  
सहित आप दिया कि यवनों का शोघ नाश होजावे यह सुनकर खानखाना  
ने कहा कि यहां पञ्चमी विभक्ति का ५ समास होवे (अर्थात् तुमने षष्ठी वि-  
भक्ती के समास से आप दिया है कि म्लेच्छों का नाश होवे यहां पंचमी वि-  
भक्ति का समास होवे अर्थात् "म्लेच्छों से नाश होवे" व्याकरण का फायदा है  
कि समास में विभक्ती का लोप होजाता है) ॥ २९ ॥ नवाव ने वह पगड़ी लेकर  
६ अपने मस्तक पर बांध ली ॥ ३० ॥ ७ लक्ष्मी और ८ सरस्वती को एक घर में  
मिलाकर उस ब्राह्मण को ९ धनवान् कर दिया १० एक धनवान् की स्त्री. अ-  
वस्था और ११ कामदेव से ग्रन्थ थी उसने १२ उस अष्टप्रतिज्ञावाले खानखाना  
को जाते देखा ॥ ३१ ॥ १३ जोवन में मस्त होने के कारण लज्जा को तोड़कर  
१४ छाने १५ उस व्यभिचार के अनुकूल ॥ ३२ ॥

बलि बुल्लयो बुल्लयो क्यों विकाल, बुल्लो वह तुम सम लहने वाला ।  
 आधानहि संसय कहिय आप, बलि है सुताहु बिथरै बिलाप ३३  
 है सुत हु मरै अल्पार्थु हाइ, खल है तो प्रत्युत हृदयखाइ ॥  
 अरु व्यंग छहु मुख देन ऐन, है मूढ तोहु मनकाम है न ॥ ३४ ॥  
 हायन इतके मम तुल्लय होन, कायहु रहै न तो लखहि कोन ॥  
 तातैं तू जननी मैं तनूजर, सासन सिर बहिहौं कृत सुपूज ॥ ३५ ॥  
 सुत गेह पधारहु जो सुहात, मैं वा मिलिजैहौं नित्य मात ॥  
 इम कहि लगात निज मुख उरोज, भिटिगो ब्राह्म करि तस मनोज ३६  
 सँध जोरि घनमि तबतैं सनेह, आर्जनम गिनी तिहिं भाइ एह ॥  
 अरु लोटि सीस करि तास अंक, आयो पहिले घर वह असंक ३७  
 स्मरै पारत रजारत इहिं समान, प्रभु राम २०३४ न जोगी मति प्रमान  
 इहिं शतिध विजैन तिय सेक आइ, जोगी शृंग मुंदि रु बनहु जाइ ३८  
 मोलविन द्विजन कहुं ओई नाहि, अखिख गुन निज निज महत आहि  
 मध्यस्थ नवावहि द्विजन मंडि, खत लिय कराइ मत पगन खंडि ३९  
 यह लिपि नवाव किय कृष्ण अंत, मैं जानत इकसन इक महंत  
 वंसी विमृषितादिक बनाइ, दिय मुख्य हरि रु संस्कृत दिखाइ ४० ॥

१ सुभक्त को बिना सजय क्यों बुलाया. तुम्हारे सजान वाला २ लेने के लिये  
 अर्थात् तुम से सम्भोग करने में तुम्हारे सहज ही वाला होवेगा. खानखाना  
 ने कहा कि प्रथम तो ३ गर्भ रहने में ही सन्देश है और जो गर्भ रहकर पुत्री  
 हुई तो अधिक बिलाप होवेगा ॥ ३३ ॥ पुत्र होकर थोड़ी अवस्था में मरजावे  
 तो भी दुःख है, और दुष्ट होवे तो ५ उलटा हृदय खावेगा. घर में सुख देने में  
 ६ व्यंगवाला अर्थात् दुःख देनेवाला ॥ ३४ ॥ मैं जितने ७ वर्ष में हुआ हूँ उतने  
 ही वर्षों में मेरे समान होसकता है जब तक तू जीवित ही नहीं रही तो कौन  
 देखेगा इसकारण तू माता और मैं तेरा ८ पुत्र हूँ सो तेरी आज्ञा मस्तक पर  
 धारण करूंगा ॥ ३५ ॥ ९ स्तन के सुख लगाते ही १० उस लजा से. उसका ११  
 कायदेव भिटगया ॥ ३६ ॥ १२ हाथ जोड़कर १३ जन्म पर्यन्त ॥ ३७ ॥ १४ का-  
 यदेव को १५ अज्ञान्त में ॥ ३८ ॥ मोलवियों ने और ब्राह्मणों ने कुछ १६ आड  
 में अपने अपने गुणों को बड़े बताए जहाँ पण्डितों ने इस नवाव को मध्यस्थ  
 किया और मोलवियों के मत को खण्डन करके विजय पत्र लिखवा लिया  
 ॥ ३९ ॥ १७ अन्त में कृष्ण को मुख्य बताकर यह लेख किया १८ वंशी आदि  
 में भूषण युक्त करके विष्णु और संस्कृत को मुख्य दिखाया ॥ ४० ॥

छितितल वसंततिलका सु छंद, अजहुं बढात भक्तन अनंद ॥  
 सुरवानि१ जवनवानि२रुहुं२सीर३, बरनै बहु ईति१ सुख जिहिं प्रवीर ४१  
 इक कहिय अरि१न अपकार२अपि, थिर मित्रजन१न उपकार२थपि  
 बंधु१न सतकार२हि तिम बनाइ, प्रख्यात होत अधिकार पाइ ॥४२॥  
 ईहिं बिहसि कहिय तजि फल उमंग, सोहत उपकारहि सबन संग ॥  
 असो नवाव यह बुध बजीर, बहरामतनय हत अनय वीर ॥ ४३ ॥  
 सुनि बंदि गंगकृत काठपसीस, त्रि३००००० रहित दिय रूपय ल-  
 कखतीस २७००००० ॥

प्रभुजैसो अकबर३७११पातसाह१, तैसोहि सचिव२किय दैव ताह ४४  
 इक सेख जवनमत निपुन आस, जग अबुलफजल३कुट नाम जास  
 अकबर३७११सौ तीजो३रतन एह, छर्म सर्व सोलविन मति अच्छेह ४५  
 आईनअकबरी१ग्रंथ आदि, तिहिं रचिय जवनवानौं विगादि ॥  
 पुनि अज्जर्मके दफतर२प्रबंध३, बहु किय जवनवानौं लेख बंध ॥४६॥

प्रबंध १ खबंध २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अरु टोडरमल्ल४हु पटु अलाभ्य, सु वनिक हुव चायो४रतन सभ्य ४७  
 जासहि सहाय तिहिं सेख३जात, विरची निजलिपि१मय अज्ज-वात ॥  
 छर्म कान्बकुब्ज बैच कुरन छिप्र, वीरबल१रतन पंचम३सु विप्र ॥४८॥  
 इम रतन अपूरव गानअनै, ससुअहु नृप छहो ६ तानसैन६ ॥

१ भूतल-पर उम खानखाना का जगदा हुआ वसंततिलका छंद २ आज भी  
 ३ संस्कृत ४ दोनों मिलीहुई आका ५ इत्यादि ॥ ४१ ॥ किसी एक ने कहा कि  
 शत्रुओं को अपकार ६ देकर मित्रों का उपकार करना चाहिए ७ विख्यात  
 ॥ ४२ ॥ ८ इस नवाब ने हँसकर कहा कि पीछा फल लेने की आशा छोड़कर  
 सध के साथ उपकार ही करना चाहिये ९ अनीस की मिटानेवाला ॥ ४३ ॥  
 १० जाट ॥ ४४ ॥ ११ समर्थ कुंनख के समान ॥ ४५ ॥ १२ फार्सी भाषा में १३  
 विशेष कथन करनेवाला होकर; अथवा बाद रहित १४ आर्थों के दफतर ग्रंथ  
 १५ फारसी में लेख बंध किये ॥ ४६ ॥ १६ सन्नाह ॥ ४७ ॥ जिस टोडरमल्ल  
 की सहायता से उस अबुलफजल ने अपनी १७ भाषा में आर्थों की वानी  
 (कुषि वाणिज्य आदि का ग्रंथ)-रची १८ समर्थ १९ वचन की शीघ्र स्फुरण में  
 ॥ ४८ ॥ २० गान के स्थान में

इन साहसचिव खटवरत्न अथ, ए तिहिं अनेह सुनियत समथ ४९  
रत्न नव९ कहत कति नृपतिराम २०३।४, न बिदित तँहँ तीन३न  
खिलन नाम ॥

इह चोथो४टोडरमल्ल४आहि, जन कति कायस्थहु कहत जाहि ॥५०॥  
तिम साह पुब्ब वितये छतीस३६, अकबर३७।१ सम तिनबिच न  
हुव ईस ॥

अरु श्रुति १ कुरान २ मत जुग २ हि एह, सिरधरहिं तदपि इत १  
अति सनेह ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

बहुत न्याय इतरन बिसम, सुमति निवेरे साह १ ॥

उदधि खानखानाँ १ हु इम, थाहे दुगम अथाह ॥ ५२ ॥

मुलक किते जितन १ मथन २, मन्थ्यो समुचित मान ॥

जिहिं काबल १ आसाम २ जिम, थिर दब्बे बहु थान ॥ ५३ ॥

अज्जन बिच कूरम यहहि, गिन्यो भरोसा गैल ॥

हुरम अनुजके बिदित हुव, फोजनवारे फैल ॥ ५४ ॥

भगिनी कति भगवंतकी, नृपति मानकी नाहिं ॥

व्पाह्यो अकबर३७।१ जो बंदत, मति तँहँ द्वाँपरमाँहिं ॥ ५५ ॥

वत्त रहहु तिम जिम बनी, आग्रहँ हमहिं न अथ ॥

बिजुमूलहि जन जो बंदत, सो न लिखहिं हठ सथ ॥ ५६ ॥

अकबर ३७।१ सो दिल्ली अयनँ, न इक १ भयो जवनेस ॥

सहित समर्थन प्रभु सुनहु, अगग किरन बिच ऐस ॥ ५७ ॥

१ उस अकबर के समय में ॥ ४९ ॥ २ हे राजा रामसिंह ३ बाकी के तीन  
रत्नों के नाम प्रसिद्ध नहीं हैं ॥ ५० ॥ ४ अकबर से पहिले छत्तीस बादशाह  
वात गये ५ वेद ६ वेद में अधिक स्नेह था ॥ ५१ ॥ ७ उलटे ८ दुर्गम ॥ ५२ ॥ ९  
राजा मानसिंह को उचित माना ॥ ५३ ॥ १० आख्यों में, भरोसा के ११ साथ  
१२ कुरम का छोटा भाई ॥ ५४ ॥ १३ कहते हैं, अंधकर्ता कहते हैं कि हमारी  
मति में यहाँ १४ सन्देह है ॥ ५५ ॥ १५ हमको हठ नहीं है १६ निर्मूल कहानी  
को नहीं लिखते हैं ॥ ५६ ॥ दिल्ली के १७ घर में १८ अगले मयूख में उस का  
समर्थन करते हैं सो सुनो



श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशभोज  
चरित्रे भोजमऊप्रान्तप्राप्तिहेतुमऊविजयोत्तरदिल्लीगमन ५, यवने-  
न्दाकबरसचिवखानखानागुणावर्णनेन सहाकबरपरिषत्पट्टरत्नग-  
खान२, अकबरगुणावर्णनेन सह गुणासमर्थनप्रतिज्ञाकरणां पञ्च-  
दशा मयूखः ॥ १५ ॥

आदितोऽष्टनवत्युत्तरशततमः १९८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पातसाह अकबर ३७।१ प्रतिम, न भयो दिल्लीयनैर ॥

कितहु राम२०३।४ प्रभु स्वीय कवि, बंधैं प्रीति१ न बैर२ । १।

तथ्य न व्है कथितव्य तो, अप्पहिं ध्रुवें अवनिस ॥

कबहु सुकवि अनृत न कहत, सहत जदपि दुख सीस ॥ २ ॥

यह प्रभुसंगतिको असर, पायो निज रहि पास ॥

तथ्य१हि प्रिय लगगत तिनहिं, अनृत२करि न असु आस ॥३॥

बैठे रजिया५।१हेम३८।२बिजु, तखतहु साह छतीस३६ ॥

लखहु हुमायों३६।१अवधिलग, अकबर३७।१सम को ईस ॥४॥

॥ पद्धतिका ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में भोज के चरित्र में  
भोज को मऊ का प्रान्त मिलने के कारण मऊ विजय करके भोज का दिल्ली  
जाना १ बादशाह अकबर के सचिव खानखाना के गुण वर्णन के साथ अक-  
बर के सभासदों में छः रत्नों की गणना करना २ अकबर के गुण कथन के सा-  
थ गुणों के समर्थन की प्रतिज्ञा का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ और आ-  
दि से एक सौ अठानवे १९८ मयूख हुए ॥

१ सहज २ हे राजा रामसिंह आपका कवि (सूर्यमल्ल) किसीके साथ प्रीति  
और बैर नहीं रखता किंतु जो इतिहास सत्य होवे वही लिखता है ॥ १ ॥  
कहने की वार्ता ३ सत्य नहीं होवे तो हे राजा रामसिंह ४ निश्चय ही आप-  
का कवि ५ झूठ नहीं कहता ॥२॥ झूठ वीतर ६ प्राण की आजा करना भी  
अच्छा नहीं लगता ॥३॥ ७ रजिया बेगम और हेमू बनिया इन दोनों के बिना ॥४॥

सप्तम७कह्यो जु महमूद७साह, तेबीसम२३सय्यद खिजर२३ताह ।  
 बिरलै हुव इतिमुख नय निबाहि, सुख दिय प्रजाहिं जिन धर्म साहि ।  
 इकदसम११अलाउद्दीन११आदि, बढिगय कति निर्दय जुलूम बादि ।  
 निर्लज्ज१प्रमत्त२हु कछु सनाम, रैमनी१मदिरा१रत सुनहु राम

२०३।४ ॥ ६ ॥

हुव चोथो४रुक्नुद्दीन४।१हाइ, लज्जा तजितिय१मधुरदिय लगाइ ।  
 अंतहपूर रहि जड जाँम अट्टन, रंचहुँ न सम्हारे रज्ज१रुँट२ ॥७॥  
 रजिया५।१तस भगिनी तब रिसाइ, इहिं कीलिं रुवैठी तखत आइ ॥  
 सब निज मिलाइ लाहि साह सब्द, इहि भोगी बिलिय च्यारि अब्दा ॥  
 यह जानि पठंताको अधीस, सजिकैँ दल आयो तास सीस ॥  
 अभिधानजास अलतूनियाँसु, मन इत दढाइ पहुँच्योमियाँसु ॥१॥

॥ नियाँसु१मियाँसु२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

रजिया५।१हु समुह जुरि रचिय रारि, गदिलिय तिय तँहँ तिहिँवल  
 विगारि ॥

तबही वनि प्रत्युँत नारि तास. आई इत पतिजुत पट्टास ॥१०॥  
 ताकोद्वितीयश्वहराम१।२भ्रात, भगिनीसँ जवन हनि खिल भगात ॥  
 डरघर रजिया१कहँ कैद डारि, साह सुहुव पंचम५।२सब सम्हारि ११॥  
 तस अग्रज रुक्नुद्दीन४।१तत्थ, कारीं हि मरयो कासुकैँ बिकैँत्थ ।  
 बलि इमहि नवम९सठ कैकुवाद९।१, पायो सुरापैँ१कासुकर  
 प्रमादँ ॥ १२ ॥

तिहिँ इम प्रजाहु लाखि संक तोरि, बहु हुव प्रमत्त घर मय बोरि ।

१ इत्यादि. धर्म को २ पकड़कर ॥ ५ ॥ ३ स्त्री ॥ ६ ॥ ४ नय ५ जनाने में ।  
 आठों प्रहर ७ कुछ भी ८ राज्य के सात अंग “स्वास्थ्यमात्स्यौ पुरंराष्ट्रं कोजदशौ  
 सुहृत्तथा ॥ सप्त प्रकृतयो खंताः सप्ताङ्गं राज्यमुच्यते” इति वरदातन्त्रे ॥ ९. रा  
 (देश) ॥ ७ ॥ १० कैद करके ॥ ८ ॥ ११ नास ॥ ६ ॥ १२ उजड़ी उमीकी की  
 घनकर ॥ १० ॥ १३ बहिन के पति को ॥ ११ ॥ १४ कैद में ही १५ कामी १६ नहीं  
 कहने योग्य १७ मद्य पीने से १८ झूल अथवा आलस्य अथवा वाचलापन ॥ १२ ॥

मस्जिदनमेंहु छकि सद अमान, हुवरतें प्रसक्तें करि लास हान १३  
को निज १पर २परतहि दृग कलत्र, मुख दिय लगाइ आसर्व अमत्र ।  
तेरहम १३ सुबारिक १३ १२तजि नरत्व १, बनितात्य भीरु समझयो  
बगत्वर ॥ १४ ॥

विस्त्र सु बनाइ पननारिबेस, सजिकें पट १ भूखन शंतिम असेस ॥  
जुग बंधि अभीरुन गेहजाइ, बनि ठनि नचि १ गावैं रूहा १ बिहाइ १५  
पुंडित्व हाव १ भाव २ न प्रसारि, सुरै संगह लैं राहमौरि ॥  
अरु वैठैं नग्नहि खास १ आम २, नासा १ सह रक्खैं न पट २ नाम १६ ॥  
पटप सु अलाउहीन १ पुत्त, औसो हुव कुल गल जस अछुत्त ॥  
पंद्रह १५ मसुहुम्मद १५ १ पातसांह, राँच्यो एनि तुगलक ३ जुलम-  
राह ॥ १७ ॥

बीरत्व १ सजैम २ र भक्ति ३ बास, यहदानी ४ पंडित ५ तदपि आसैं ॥  
खल जिमहि तपियइहिं अलिफखान १५ १, किन्नी यह अनुचित  
धरहु कान ॥ १८ ॥

सूबा गत जित्तन स्वार्पतेय, लग्नयो सु प्रजासिर डारि लेय ॥  
अवनिपर बढायो कर इतोक, जो देसकें न कैंधुक जितोक १९  
जन तयहि गेह १ खल जान २ जारि, सब भजन लागे जिय धन  
सम्हारि ॥

अप्पहि तब हैहुत अस्ववैर, सहँसन जन मारे रमि सिकार ॥ २० ॥

१ मथुन में २ आसक्त ॥ १३ ॥ ३ स्त्री दृष्टि में आते ही ४ मद्य का ५ पात्र (प्याला) ६ स्त्रीपन को ७ ओष्ठ सज्जका ॥ १४ ॥ ८ उस नकटे (नासिका विहीन) ने ९ गणिका का वेष १० अहीरों (गबालों) के घर जाकर ११ लज्जा छोड़कर ॥ १५ ॥ १२ नपुंसकपन के १३ बादशाहों के मार्ग को भिटाकर १४ काष्ठ के लम्बे के समान होकर; अथवा नासिका सहित होकर भी नाज मात्र को बख्त पास नहीं रखता अर्थात् नकटा अनुप्य तो लज्जा छोड़कर बग्न होजाता है परन्तु यह नासिका सहित होकर भी नग्न रहता था ॥ १६ ॥ जुलम के मार्ग में १७ रचा (रङ्गा) ॥ १७ ॥ वीरपन और १८ इन्द्रियों का रोकना १९ हुआ ॥ १८ ॥ १८ धन १९ पृथ्वी पर हासिल इतना बढाया २० करसे (खेती करनेवाले) १९ ॥ शीघ्र २१ घोड़े पर बैठकर ॥ २० ॥

तिन्ह भजत गरीबन सोस तोरि, प्रति कपिसिर बंधे पोरि पोरि ।  
 अैसेँ हि हुमायो ३११ काम अंध, विरच्यो इकतीसम ३१२ प्रबंध ३१  
 वर १ जो नव निकास्यो मग हु व्याहि, तो भोगि प्रथम दिष बरानि  
 २ ताहि ॥

करुनाको जम जिम लावन लाइ, चूसी प्रजाहु कर अति चढाइ २२  
 समुझायो सो जड संग साइ ३२, इकख्यो तव दुखखहु बस्तुवाह ।  
 इम पहिले साहन अति अधस, किय तिनहि सुनहु इतरहु  
 कुकर्म ॥ २३ ॥

पहिलै अज्जन सुरगृह १ पराइ, लगवाये मस्जिद २ प्रसन्न लाइ १ ॥  
 किय द्विज १ हु जवन २ मुख थूकि थूकि २, कति जन बचेहु परि  
 पयन कूकि ३ ॥ २४ ॥

जिंजिया १ दि दंड तिनपर जुराइ, महसूल लये बहु २ नय मुराइ ।  
 दधि १ दुग्ध २ दाह ३ तन ४ आदि दम्प, कटकन दये न कहूँ अटन  
 कम्म ५ ॥ २५ ॥

खिन रन केते संपन्न खेत, कटवाइ दये किल हयन हेत ६ ॥  
 सुंदरपन ह्वो तियन संग, तव हुव कलंक ७ रहि धर्म तंग ॥ २६ ॥  
 लग्गे जे दुहिता नृपन लैन, इतरन किस टारे गिनहु अन ८ ॥  
 जिन कियहु रोधि दुहिता १ दि जान, तोप १ न जुत लिय तिन्ह स-  
 वन प्रान ६ ॥ २७ ॥

१ कोट के कांगरे कांगरे पर ॥ २१ ॥ २ नवीन वर जां कोई विवाह करके मा-  
 र्ग में निकला ३ दुलहन ४ लेशमात्र ॥ २२ ॥ ५ अन्य भी ॥ २३ ॥ ६ आर्यों  
 के देव मन्दिर गिरवाकर ७ हठ करके ८ ब्राह्मणों के मुख में धूक धूककर ॥ २४ ॥  
 ९ आर्यों के तीर्थों पर एक प्रकार की लागत १० नीति मिटाकर ११ काट १२  
 काटनेवाले को १३ फिरने नहीं दिये ॥ २५ ॥ १४ युद्ध के समय में तो खेती  
 से भरे हुए खेत १५ निश्चय ही घोड़ों के लिये कटवा दिये ॥ २६ ॥ १६ जो रा-  
 जाओं से पुत्रियें लेने लगे वे अन्य के १७ घरों को कैसे छोड़ें १८ पुत्री देने को  
 रोका ॥ २७ ॥

भनजहु भय दैदै विष्टि<sup>१</sup> माँहिं, निखिलन गहि प्रेरे<sup>१०</sup> नाँहिं नाँहिं ।  
थाँती भित लेलै सिपह थट्ट, बिनु भय चले न कहँ पथिक

वट्ट<sup>११</sup> ॥ २८ ॥

तोहू तिन धाँटिन पटकि त्रास, बहु खिन लागि लुट्टे<sup>१२</sup> रहनि विसास  
लानत कलंक तिनके हु लगग, अकबर<sup>१३</sup> के तुल्य न कोहु

अगम ॥ २९ ॥

प्रभु एह सवन अपजस पखारि, जन सुखित करतहुव दुखहि  
जारी ॥

सुनिये जिहिं बिहरन कगन सम्म, मक मीर लखे जन बिंढि कम्म ३०

बिरचत कुंकुम धँय तिन्ह विसासि, मानिक वसु करिदिय  
भासि<sup>३१</sup> नाँसि ॥

पे जे लखे न आजू प्रसक्त, वे अवस रहे वहे दुपखचक्त ॥३१॥

जिहिं नाँति रीति राज्यहिं जमाइ<sup>३२</sup>, जिय प्रीतिरीति सब हृदय लाइ<sup>३३</sup>

हुव द्विजन कल्पतरु बुधै यहै<sup>३४</sup>हि, कविलोक अवहु तस जस  
कहेहि ॥ ३२ ॥

लाखियेसु संजमीपनाहु लैन<sup>३५</sup>, बलि रविपूजन रत<sup>३६</sup> सवला वैन<sup>३७</sup>

आदित्यवार दिन सीस अंत, हिंसा न होनदिय जिहिं<sup>३८</sup> मंदंत ॥३३॥

१ बेगार (बिना तनखा दिये बलात्कार कार्य कराने) में २ वहाँ नार्ती की स्त्री नार्ती रही अर्थात् बेगार कराने का नाश भी न रहा ३ थरोहर (अधामत अर्थात् मौं पाहुआ भन) ४ मार्ग चलनेवाले ॥ २८ ॥ ५ थाड़ा टालनेवालों ने ६ गढ़ गवन भापा का बिकार पाची शब्द है ॥२९॥ सबके अपयश को ७ चोकर, नमन करने के ८ सभर में ९ बेगार के कार्य से भीरों को भी भग था अर्थात् कोई बेगार नहीं कर सकना था ॥ ३० ॥ केदार के १० सख्त रक्तोपाते अर्थात् केदार का तिलक करनेवाले (पुजारियों) को विश्वास देकर उनके प्राणिहों का भन कर दिया "सब रक्तों से जाणिक बहु सूर्य में द्यमने जाणियों ने भनवाइ सोभा जिया है" ११ प्रतापमान १२ नाँसिक (बेना) तनना १३ नाँ १४ युव १५ आतक रहे अर्थात् गढ़वाइ से दूर रहे १६ कुन तुल्य आतक रहे ॥ ३१ ॥ १७ पण्डित ॥ ३२ ॥ १८ साँस लाने में १९ ज्यों को २० कर्मना ॥३३॥

प्रतिग्रब्ध जन्मदिन स्मृतिप्रधान, देतो स्वतुल्य भैर कनकदान १  
 इक १ बेर असन १ हिंसा विहेय ११, धरतो सु जवन इक नामधेय १३४  
 चहती प्रजाहु जिहिं इक स्वचेत, हुव बहु तस छात्रहि १२ समुक्तहेत  
 जिहिं राज्य कवहु कछु दुखखजोग, जान्यो न जनन १३ भरि  
 भौन भोग ॥ ३५ ॥

सुमन १ न विक्रय वासठि ६२ सेर १४, जवरसेर नवति चउ जुत ९४  
 न जेर १५ ॥

इहिं राज्यकरत इम न कछु ईति, प्रकृतिन कहूँ जानी आनि  
 प्रीति ॥ ३६ ॥

सीमा निज किय यह नियम साह, बिनु तरुन वहेन सिसु मि-  
 थुन २ व्याह १६ ॥

सूवा १७ सरकार १८ महाल १९ सुद, पटवारी २० कानूगो २१ प्रबुद्ध ३७  
 आईन थपि ऐसे अनेक, इहिं रखे सब कुलधर्म एक १ ॥

प्रस्थान जास इसतबल पास, इम १ पंचसहस्र ५००० हय २ अयु-  
 त १०००० आस ॥ ३८ ॥

किंमखाव फरस १ प्रसरात कंति १७, परदे मध्यमलमय मुंति २ पंति ३  
 पारि कोसनलग डेरन प्रसार, हुव मध्य सिविर इम निज बिहार ३९  
 जिजिया १ दिजानि कर सबन सीस, पहिले प्रवृत्त अटके इकीस २१ ॥

१ हरसाल २ आर्यों के धर्मशास्त्र को मुख्य मानकर अपने शरीर के ३ भार के  
 बराबर स्वर्ण देता था, एक समय भोजन करता और हिंसा बहुत ४ त्याज्य  
 थी: सुखलमानी एक ५ नाम ही धरता था ॥ ३४ ॥ ६ शिष्य ॥ ३५ ॥ ७ गेह:  
 इससे ८ कम नहीं थे ९ कभी ईति (अतिवृष्टिरिगावृष्टिः शलभा वृषकाः शुकाः।  
 स्वचक्रं परचक्रं च सप्तैता ईतयः स्मृताः) का अर्थ नहीं हुआ १० राज्य के अङ्गों  
 ने ॥ २६ ॥ बालकों के ११ जोड़े का विवाह नहीं होवे १२ बहुत चतुर ॥ ३७ ॥  
 १३ कानून १४ जिसकी हय शाला के पास पांच हजार १५ हाथी और दस  
 हजार घोड़ों का गमन होता था ॥ ३८ ॥ १६ जरी की विछाद्यत १७ कान्ति  
 फैलाती थी १८ मोतियों की पङ्क्तिवाले १९ फैलाव ॥ ३९ ॥ पहिले २० जारी  
 हुए जिजिया आदि कर रोकें।

अकबर का राजाओं की कन्या व्याहृत] पछराशि-षोडशमयूख (२३=३)

\*महमूद इते २१ अज्ज १ हि स्वमत्थ, सहते सब हिंदू २ रहन सत्य ४०  
मन । सदय तिन्हें अकबर ३ ७ १ मिटाइ, बिस्वस्ते करे सब भद्र भाइ ।  
अैसे उदंत समुचित अनेक, अकबर ३ ७ १ हि करे प्रभु राम  
२० ३ १ ४ एक ॥ ४१ ॥

पै अब बुरे हु जे किय प्रगल्भ, बिख्यात असह बिस्वास बल्भ ।  
तिन्ह देहु श्रवन जहँ गुन १ इतेक, तउ दबि बहत अवगुन रकि-  
तेक ॥ ४२ ॥

कूरमनृप कन्या पुँव काल, व्याहो जु ताँत तब हो सु बाल ।  
पै अबहु ताहि न बुरी प्रमानि, तिम चाहिय प्रत्युत प्रसभतानि ४३  
जोधपुर सूर भूपति जनी सु, कुल रहोरन तारक कनी सु ॥  
सुत निज सखेम ३ ८ १ के अर्थ साह, व्याही १ करि अज्जन विधि  
विवाह ॥ ४४ ॥

मूरहु तस डोला आनि संग, मुगलेस सुतहिँ दिय छिति उमंग ।  
इतरहु बहुकुलजा सहठ अक्खि, रानी १ न होनदिय हुरम २ रक्खि ॥ ४५ ॥  
भट्टी १ सोढारदिक बहु भुवालै, सबतहुन हुकम सु जदपि साल ॥  
जिहिँ करि प्रवृत्त मीनाबजार, देखी नोरोजहु सबन दौर ३ ॥ ४६ ॥  
निजडारन बनिठनि निकसि नारि, सब जे रहि ठँह्ये कुल बिसारि ॥  
उमरा १ गरीब २ सबकीहि आइ, देती तिहिँ उपदा नति दिखाइ ॥ ४७ ॥  
अतिरूप जु होती ताहि अप्प, बैसु दै रु बुलातो ४ जिम स्व बैप्प ॥

\* महमूद के मत की इक्कीस लागतें । आर्य लोक अपने मस्तक पर सहते थे  
॥ ४० ॥ १ अकबर ने दया सहित उन लागतों को मिटा दी. कल्याण करने की  
रीति से सब को १ विश्वास युक्त किये २ वृत्तान्त ॥ ४१ ॥ ३ उस बुद्धिमान  
ने नहीं सहने योग्य बुरे कार्य किये वे विश्वास के अवलुभ अर्थात् मानने  
योग्य सुनो ॥ ४२ ॥ ४ पहिले समय में ५ पिता ने ७ उलटा हठ फैलाकर ॥ ४३ ॥  
८ सरसिंह की पुत्री ९ कन्या १० आर्यों की रीति से ॥ ४४ ॥ ११ राजाओं को  
नहीं विवाहने दी ॥ ४५ ॥ १२ राजा १३ सबको स्त्रियों को देखी ॥ ४६ ॥ १४  
खड़े रहे १५ उमराव १६ नजर ॥ ४७ ॥ १७ आप १८ धन देकर १९ जिस प्रकार  
इसका पिता हुआया बुलाता था तिस प्रकार

करतो परंतु यह \*पिहितकर्म, किंति कहत धरयो नन जारधर्म ॥४८॥  
 सोनाँवाजारहि इक मंडि, छवि लखि खुस होतो कुमग छंडि ॥  
 सो पुनि निज गुरुजन मृति समीप, मुंडित करवातो सब महीप ॥४९॥  
 इतिमुख बुरेहु कछुकछु उदंत, सुनिये प्रभु तासहु वदत संत ॥  
 नोरोजरु डोलाखै अनीति, राजनलग प्रेरी असह रीति ॥ ५० ॥  
 पै करि प्रजाहि बहुविधि प्रसन्न, नसलग चही न दारिद ॥ विपन्न  
 जो राज्य इकैसासन जमाइ, प्रतप्यो समस्तसिर बाह पाइ ॥ ५१ ॥  
 सिरकसहु सुन्यो जिततित जुसाह, सुहि कियउ नम्रसुभटरु सिपाह  
 इहिंसमय सिरोहीवत एह, समुझहु हुव अनुचित हैत सनेह ॥ ५२ ॥  
 सुरतान करत जहँ राज्य सूर, पै वय किसोर सारल्यपूर ॥  
 चहुवान देवराधर्मचार, रक्खै रनशवितैरनसहि नकार ॥ ५३ ॥  
 तासहि सगोत्र भट बिजय तत्थ, सचिव सु हुव धनश्रवयश्मद समत्थ ॥  
 सब प्रकृति गंजिभोगत असंक, अनैन स्वामि भय मत्तयंक ॥५४॥  
 कालिंदीनामक वंगकेर, स्वामी सु बिजय हुव सबन सेर ॥  
 मुखपरन केस तउ बल महान, मन्नै खिल सुभटन मसकमान ५५  
 संबंध स्वामि को निजसमेत, कहँ भिन्नगोत्र बाहुजै निकैत ॥  
 जिहँ किय बहिनीजुगसुनि सुरूप, भल व्यादन अप्पैरु अप्प भूपर  
 बलि लग्न गये परिनय विचारि, परिसर मिलान दिय समय पारि  
 अनुजौसन प्रभुसंबंध आनि, जेठीसन निज किय विजयजानि

\*छाने किंतिने ही कहते हैं कि इसने व्यभिचार नहीं किया ॥४८॥ अपने बड़े  
 लोको के सरने पर सब राजा लोको को मुंडन कराता था ॥४९॥ इत्यादि ॥१०॥  
 ॥ आपदा (कष्ट) ॥ ५१ ॥ १ अनज २ स्नेह का नाश करनेवाली ॥ ५२ ॥ ३ बा-  
 लक ४ सीधा ५ दान में ॥ ५३ ॥ ६ राज्य के सब अज्जों को दवाकर ७ मस्तप-  
 न के चिन्ह से ॥ ५४ ॥ उसके मुख पर चाल नहीं था तो भी बड़े बल से  
 ८ मच्छर के समान ॥ ५५ ॥ ९ क्षत्रिय के १० घर में किया ॥ ५६ ॥ ११ विवाह  
 के विचार से १२ ग्राम के समीप की भूमि में श्रुत किया १३ छोटी बहिन  
 से राजा का और बड़ी से १४ विजयसिंह ने जानकर अपना सम्बन्ध किया  
 था ॥ ५७ ॥



उततैं हुव सचिवहिं विदित उक्त, जेठी१कुरूप लघु२रूपजुक्त ॥  
गदिपठई तव तिहिं स्वसुरगेह, हमरो लघुबहिनी२सौं सनेह ॥५८॥  
सुनि जान्यो तिन एहहि समर्थ, अनुजा२तव व्याही विजयअर्थ ॥  
जेठी१सुरतानहि सिचैय जोगि, पहिलैं तिन व्याहिय मुख्य पोरि ॥५९॥  
दिन चोथे४मिलतहि ऊँढ दाग, वरन्यो पति नृपप्रति छल बिथार ॥  
चैल निज १ जुरयो प्रभु अप्प चैल २, मम भाग्य उदित सुभ  
कर्म मेल ॥ ६० ॥

पै प्रभु प्रधान कपटिन प्रधान, किय अति अधर्म सुहु धरहु कान  
जेठी १ मै भगिनी बिजय जैथ, अनुजा २ मम ही प्रभु अप्प  
अर्थ ॥ ६१ ॥

पै सुनि सुरूप अनुजा प्रधान, हम सोहि बरी सठ दर्पवान ॥  
मैं अति प्रसन्न हुव इस महीप, पति पैत देवर९न बंस दीप ॥६२॥  
पै निज प्रमत्तपन असह पिक्खि, समुझहु नरेस नय अंबहु सिक्खि  
अप्पहिं किंसोरवय जानि एह, समुझयोमैं प्रभुजिम प्रभु सनेह ॥६३॥  
प्रातैं तिहिं मंगी जैं १ सु अप्प, दे तुमहिं बरी अनुजा२सदप्प ॥  
अक्खहु अधीस १ को को अधीन२, लखि नय न होहु आ-  
लस्यलीन ॥ ६४ ॥

नृपतिन प्रभुताबिनु है न नाम, अटकी सुहि अप्पन बिजय वामैं  
कुल जदपि बाहुजै१न व्हे २ किंसोर, तोहू नृप न तजत नृ-  
पन तोरैं ॥ ६५ ॥

सचिव को १ मालूम हुआ कि २ कहला भेजा ॥ ५८ ॥ ३ चला  
जोड़ा अर्थात् गठ जोड़ा लगाकर ४ मुखं द्वार पर ॥ ५९ ॥ ५ दुलहन  
ने ६ चला ॥ ६० ॥ ७ आपका प्रधान कपटियों में प्रधान (मुख्य) है. विज-  
यसिंह है ८ जहां अर्थात् झुंक बड़ी बहिन का सम्बन्ध विजयसिंह के साथ हु-  
आ था. मेरी छोटी बहिन आपके ९ लिये थी ॥ ६१ ॥ देवड़ा के पति के यहां  
१० पहुंची ॥ ६२ ॥ ११ अपने प्रसन्न मन से ॥ ६३ ॥ १२ घमण्ड सहित, हे स्वामि  
आपके अधीन कौन कौन है ॥ ६४ ॥ विजयसिंह ने १३ विरुद्ध होकर १४ क्षत्रियों  
के कुल में १५ प्रताप ॥ ६५ ॥

अकखत मैं यहहु न अबहि अप्प, दलि याहि राज्य बिलासहु  
सदप्प ॥

पै अकखत यह रहि सब प्रजापै, प्रभु सक्ति धरहु नन बजहु  
पाप ॥ ६६ ॥

सुनि यह गहि अमरख संभरीक, पिक्खे समर्थ तस प्रत्यनीक  
इक आनमाँहिँ सुरतानईस, सो गिनतहुतो खिल भँर स्वसीसा ६७।  
निज भटन कल्प यह सुनि निहारि, इक १ निम्मदेव बुल्लयो  
बिचारि ॥

याकै हे विधिकरि कर अलंघ, सो नर्म करतहो सचिव संव ॥ ६८।  
अँचन असि परिहै कबहु कम्म, अँचहुगे कैसेँ तव अँसम्म ॥  
नृप विजन बुल्लि वह निम्मदेव, अक्खिय प्रँगल्म हुव विजय  
एव ॥ ६९ ॥

मेरीहु कानि न करत प्रमान, मानत बली न कहु मोसमान ॥  
रक्खै जु राज्यमुद्रा मदीयँ, तिहिँ छिन्नि गंजि बल मद तदीयँ ॥ ७०।  
कै दुष्ट हनहु १ कै देहु कहि २, बैठारहु कारी ३ कै नँ बहि ॥  
चेताइ स्वभट संव मोरि चेत, पठयो इम निम्म सु बलउपेत ॥ ७१।  
गरदाई विजय तिहिँ तबहि गेल, डारयो डर चटकनँ मनहु डैल  
जंपिय तू कहतो विजय जत्थ, असि कैसेँ गहिहँ लारन अत्थ ॥ ७२।  
सुहि निम्म मैहु लघुकर सलज्ज, असि अँचन १ बाहन लाखहु अज

मेरा १ कहना २ प्रजा के पति ॥ ६६ ॥ ३ चहुवाण ४ उसके शत्रुओं को  
आण के बिना बाकी का ५ भार अपने मस्तक पर जानता था ॥ ६७ ॥ अपने  
उभराओं के ६ समूह को ७ नीमदेव के हाथ छोटे थे ८ हँसी किया करता था ९  
वज्र के समान ॥ ६८ ॥ १० समानता रहित ११ राजा ने उस निम्मदेव को  
एकान्त में बुलाया १२ विजयसिंह धीठ होगया है ॥ ६९ ॥ राज्य की १३ मेरी  
द्वारा १४ उसके मद को ॥ ७० ॥ १५ कैद में १६ मारने के लिये १७ सेना  
सहित ॥ ७१ ॥ १८ घेरकर १९ चिड़ियों से मानों २० देला (दकल) डाला ॥ ७२ ॥

सुरतानभूप भाखत सकोप, अब बचहु अपि सुदाशरु ओपर । ७३ ।  
 दव्वयो सु अचानक इम दिखाइ, जिम रन तदीय मद बिफल जाइ ।  
 बुद्धा लहि तासन स्व बला मंडि, छर्म निम्मश्छम दिय बिज-  
 यरछंडि ॥ ७४ ॥

नृप देत गहनश्मारनरनिदेस, असुं देत तदपि मै निम्म एस ।  
 भुल्लहु उपकारन बचहु भजि, सीमा हुन प्रविसहु बहुरि सज्जि ७५  
 लधु कर मम कहतो ते लखेहि, असुं दै भजात अब तोहि एहि ।  
 अरु कतिक रहे तब ढिग अजान, भट तेहु सुरहु इत भूपमान ७६ ।  
 बिजयशहिं भजाइ इम खिल विसासि, रहि निम्मरसचिव बी-  
 रत्वरसि ॥

सुरतानशुकम बहि सतत सीस, आजन्म गिन्यौ निम्मरसु  
 अधीस ॥ ७७ ॥

पापी भजि तियजुत रानपास, बिजय सु हुव आश्रित लहि  
 विसास ॥

तब हो प्रतापश्वा अमरस्तथ्य, सहि बिपिर्नबास आपत्तिसत्थ ७८ ।  
 तिहिं रान अन्न बटि ढँब्वि ताहि, स्व सरन गिनि रक्खयो प-  
 द समीहि ॥

बहुवेर पिछि बह डमरपात, अर्बुदभुव आयो मद अघात ७९ ॥  
 तबतबहि निम्म भिरि मद उतारि, पठयो सु बिजयश्रम मोर्ध पारि ।  
 पै डरत सिराहीकी प्रजासु, आई ढिग पुनिपुनि कुक्कि आसुं ८० ।

सुरतानशिविजयश्लखिलखि समीप, मत दूर भजावन गिनि महीप ॥

छाप और सचिव पन की यह शोभा देकर बचा ॥ ७३ ॥ २३ लका ३३ ५ ४ समर्थ  
 निम्नदेव ने उस असमर्थ बिजयसिंह को डाँड दिया ॥ ७४ ॥ जै तुम्हारा प्रमाण देता  
 हूँ ॥ ७५ ॥ मेरे छोटे हाथ कहता था सो देखो. येही हाथ तुम्हको अणाय देकर भगाते  
 हैं ॥ ७६ ॥ ८ वीरता का समूह ९ निरन्तर ॥ ७७ ॥ १० तहाँ पर राखा प्रतापसिंह था  
 अथवा अधरसिंह था ११ वनवास ॥ ७८ ॥ १२ दहराकर १३ अपने पद को ग्रहण करके  
 अर्थात् शीपाँदिया को शरणाई साधार कहते हैं इस पद को ग्रहण करके १४  
 पाँडे डालकर १५ पद से तृप्त ॥ ७९ ॥ १६ निरर्थक करके १७ शीघ्र ॥ ८० ॥

पिक्खी यह रानहु सहि बिपत्ति, प्रेरत इम विजयहिं ज-  
दपि पैति ॥ ८१ ॥

॥ बिपत्तिः पिपत्तिः अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रेरहिं उपाय असो प्रमानि, जिसे रान बिडारहिं अधमजानि ॥  
इम मंडि उपवहर मंत्रआप, पठयो इक चारन रहि अपाप ॥ ८२ ॥  
कछु छल तिहिं विजय सु दिष कडाइ, पुनि पाइ इत १हु वसु  
उत २हु पाइ ॥

इत विजय गिनी ए भूपअंज, लाखे मांहिं मांहिं सगपन सलज्ज ॥ ८३ ॥  
सुरतान १ कानि तिम न मम संग, इम अखिल चहत कछु  
भय अभंग ॥

सबको गुरु पातैं सेइ साह, पुनि देहुँ २न दहौं लहि बल सि-  
पाइ ॥ ८४ ॥

इम गिनि गो दिछिय विजय एह, सबरीति कछो अकबर ३ ॥  
१ सनेह ॥

बुल्लयो कहि सीसोद १न विराह, रठोर २ कुम्म ३ बलि पाहि  
राह ॥ ८५ ॥

विराह १ हिराह २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भिन्न कति १ कतिक अप्पहिं भुलाइ, निज पन दिखात छलि  
स्व सिर नाइ ॥

पै आइ करत ठगमत प्रनाम, विदेखहु तिनको मन कपट बा-  
न ॥ ८६ ॥

लघु राज्य सिरोही अल्प लौह, सोहू न गिनत प्रभु तुमहिं साह ॥  
अव स्वामि मोहि भेजहु उदरंग, मद सारि कर्गे सुरतानमग ॥ ८७ ॥

१ पैदल ॥ ८१ ॥ २ जिसकारण से ३ निकाल देवे ४ एकान्त में ॥ ८२ ॥ ५  
धन ६ आर्य राजा हैं ७ परस्पर ॥ ८३ ॥ राजा को जैसी सुरतांग की ८ कांछ  
है ऐसी मेरी नहीं है ॥ ८४ ॥ ९ छुल्लाई ॥ ८५ ॥ १० आप को भूलकर ११ देखो  
१२ विरुद्ध है ॥ ८६ ॥ १३ लाभ १४ उदग्र ॥ ८७ ॥

## ॥ दोहा ॥

दै कछु बल साहहिं विदित, भेजहु साह अभीत ॥

जो करि आऊँ बिजय जब, पिंखहु बिजय प्रतीत ॥ ८८ ॥

बुल्लि मीरबखसी तवहि, सासन इम दिय साह ॥

कहत बिजय जिमतिम करहु, रोकत लैछु नृप राह ॥ ८९ ॥

कछु दल इम इहिं अरज करि, दिय तस संग दुँरुह ॥

गढ सिरोहि बिजय सु गयो, जितनु प्रभु बल जूँह ॥ ९० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठदशौ बुन्दीशभो-  
जचरित्रेऽकबरभूतपूर्वदिल्लीशपट्टत्रिंशदावनेन्द्रदुर्गुणागणान १ अकब-  
रगुणवर्णनानन्तरतदुर्गुणाभणान २ सीरोहीपरावदेवड़ासुरतांणस्व-  
सचिवविजयसिंहानीतिनिमित्ततन्निष्कासनोत्तरनिम्पदेवप्रधानामा-  
त्यकरणा ३ कियत्कालपर्यन्तलब्धोदयपुरमहाराणाश्रयदेवड़ाविज-  
यसिंहयवनेन्द्राकबरान्तिकगमनेयवनेन्द्रचभूसहितविजयसिंहसीरो-  
हीविजयार्थयानवर्णनं षोडशो मयूखः ॥ १६ ॥ आदितो नवनवत्यु-  
त्तरशततमः ॥ १९९ ॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

## ॥ दोहा ॥

१ सेना २ देखो विजयसिंह की प्रतीति ॥ ८८ ॥ ३, छोटे राजा भी मार्ग रोकते  
हैं ॥ ८९ ॥ ४ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी. सेना के समूह से ॥ ९० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के प्रपतिभो-  
ज के चरित्र में अकबर से पहिले हुए दिल्ली के इत्तीश बादशाहों के अवगुणों  
की गणना १ अकबर के गुण वर्णन करने के अनन्तर उसके कुछ अवगुणों का  
कथन २ सीरोही के राव देवड़ा सुरतांण का अपने मन्त्री विजयसिंह की अ-  
नीति के कारण उसको निकालकर निम्पदेव को प्रधान करना ३ कुछ समय  
पर्यन्त उदयपुर के महाराणा से आश्रय पाएहुए देवड़ा विजय का बादशाह  
अकबर के समीप जाकर बादशाही सेना के साथ विजयसिंह का सीरोही  
विजय करने को जाने के वर्णन का सोलहवां १६ मयूख समाप्त हुआ और  
आदि से एकसौ निन्दानवे १९६ मयूख हुए ॥

बनि अकबर ३७१ बल करि प्रबल, विजय देवरा ९ वीर ॥  
 चढ्यो सिरौही लैन चहि, गहि सुरतान गह्वार ॥ १ ॥  
 तीजो ३ रान प्रतापतैं, जु हुव अनुज जगमाल ३ ॥  
 हो अकबर ३७१ आश्रित बहहु, संग दिय सुरिपु साल ॥ २ ॥  
 संगत सिंह १ अग्रज उपम, रानहिं यहहु टराइ ॥  
 गढ सिरौहि जगमाल गो, ढिग दिय सिबिर टराइ ॥ ३ ॥  
 महडू चारन नाम करि, जहुँ १ यह जगमाल २ ॥  
 रहत बाँढ मैत्री रचे, चिरतैं इक १ मन चाल ॥ ४ ॥  
 जगमाल १ सु कवि जहुँ २ जुत, विजयभीर इम वीर ॥

१ विजयसिंह देवड़ा २ गम्भीर ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ जाड़ा नामक ४ बहुत मि-  
 अता करके ॥ ४ ॥ ५ \* विजयसिंह की मलान ॥ ५ ॥

\* यह विजादेवड़ा के साथ जगमाल का जाना लिखा तो ठीक नहीं है क्योंकि सिरौही के राव सुर-  
 ताण और विजादेवड़ा में परस्पर विरोध होने के कारण बीकानेर के राजा रायसिंह के द्वारा सिरौही का  
 आधा राज्य बादशाह अकबर के खाटसे में हो गया था सो अकबर ने उदयपुर के महाराणा उदयसिंहके  
 छोटे पुत्र जगमाल को दे दिया था जिस पर अनल करने के लिये बादशाही सेना सहित जगमाल सिरौही  
 गया जिसके साथ विजादेवड़ा भी था क्योंकि जगमाल ने विजा की बेटी से विवाह किया था, स-  
 म्वत १६४० के कार्तिक सुदी ११ के दिन महाराज जगमाल और चारण जाड़ा महडू आदि वारता से  
 मोरगये सो सिरौही के इतिहास में विस्तार पूर्ण लिखा है और जगमाल का दिल्ली में अकबर के पास र-  
 हने का कारण यह था कि संवत १६२२ में उदयपुर के महाराणा उदयसिंह का गोगूदा नामक नगर में  
 देहांत हुआ तब पाटली कुमर प्रतापसिंह तो महागणा के दाग में चले गये और उदयसिंह का छोटा पुत्र  
 जगमाल पीछे रहा. जगमाल की माता से महाराणा उदयसिंह अधिक प्रसन्न थे इसकारण अपनी माता की  
 सहायता से जगमाल मेवाड़ की गद्दी पर बैठ गया परंतु जब महाराणा का शरीर दग्ध करके युवराज प्रता-  
 पसिंह अपने उमरावों सहित पीछे गोगूदा में आये उस समय मेवाड़ के उमरावों ने जगमाल को गद्दी से  
 उतारकर महाराणा प्रतापसिंह को गद्दी बिठा दिये इसकारण जगमाल वहां से आमेर के राजा मानसिंह के  
 पास चला गया और जाड़ा नामक महडू को जीविदा का उपाय करने को दिल्ली भेजा जिसने अपनी यो-  
 ग्यता और कविता के बल से अकबर के वजीर खानखाना अब्दुररहीम को प्रसन्न करके जगमाल के नाम  
 मेवाड़ का परगना (जो जहाजपुर के नाम से प्रसिद्ध है) लिखा दिया सो जब जगमाल को सिरौही का आ-  
 धा राज्य मिल गया तब जगमाल ने वह जहाजपुर का परगना चारण जाड़ा नामक महडू को दे दिया परंतु  
 जाड़ा ने जहाजपुर का परगना पीछा जगमाल को देकर उसमें से 'सरस्था' नामक एक ग्राम अपने अधि-  
 कार में रख लिया जो इस समय जाड़ा के वंशवालों के अधिकार में है ॥

सजिआयो सुरतानसिर, स्वामिधरम धरि सीर ॥ ५ ॥

इतरहु बहु गुरुश्लघुरआधिप, आये संग अमात ॥

ग्राम दतानी सीसगत, पटक्यो कटक प्रपात ॥ ६ ॥

अहो तिम दुरसा बहहु, पृतना संगहि पत ॥

गरदावन चहि प्रात गढ, रति रहे अनुरत ॥ ७ ॥

॥ पद्यतिका ॥

सुरतान देवराएनृप सिरोहि, सन्नद्ध उतहु सुनि असह सोहि ॥

अव्वपति आतहि दल अखँव, सुभिरायो विजयहिँ दुरित सर्व ॥ ८ ॥

करि तैं सठ पहिलैं वह कुकर्म, अब लैन भुवहिँ मंडिय अधर्म ॥

द्विपेजानि हमहिँ सिंहरेन दिखाइ, लायो सुगालं शफला कोन लाइ ॥ ९ ॥

अैसे हि हैं सिंहहु अनेक, इतकेहु सहहु अब एक एक ॥

विजयहु प्रतिउत्तर तजिविसास, पठयां इम लृप सुरतानपास ॥ १० ॥

तुम उद्वत न गिनत साहगोर, जिततित सुव उव्वन विरैरि जोर ॥

गिनते सदा जु साहन गनीम, सो रानभज्यो इत छोरे सीस ॥ ११ ॥

तुम दिय सहाय सब रीति ताहि, चकलहु फला ताको उचितचाहि ॥

सुरतान सुपहु इम सुनि अरांक, करि मंज करन सजुन ससंक ॥ १२ ॥

सुहि निम्म जु पिल्लयो विजयसीत, वहकरि समस्त निजबल

अधीस ॥

छिति ग्राम दतानी कोप छाड, पविगारै परयो इम रति आइ ॥ १३ ॥

पैने अव्वपति निज कृपान, दिह्यो दल मेरे जय निर्दान ॥

गजश्वाजिभटनं जिततित गिराइ, परदल फिगइ दिय दिय पिराँइ

१ बहुत २ पड़ाव ३ ३ जो आउवा के परत में घायल होकर पचा था और जिसने

पादशाह अकबर के मुख से जाँधपुर के राजा उदयसिंह का निंदा करवाई थी

वह आढा शाला का चारण दुरसा ४ मेला के साथ ही पहुंचा ५ अनुरक्त ॥ १॥

६ सज्जित हुआ ७ बड़ा ८ विजयसिंह का व्याप स्वरूप कराया ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

३१ वज्रपात के समान ॥ ३२ ॥ जय के ३३ कारण ३४ पीड़ित करके ॥ ३५ ॥

बल भजत साहको भय प्रवादि, अटुलनृप परे जगमाल १ आदि।  
 बहु पारि सिरोहीके प्रवीर, धारन चढ्यो सु सीसोद धीर ॥ १५ ॥  
 इकओर परयो कवि जड्ड १ एह, दुरसारहु परयो कहु विकलदेहु।  
 इकओर परयो विजय ३ सु अधर्म, कति कहत भज्यो फलि पु-  
 ब्वकर्म ॥ १६ ॥

इम जत्रकुत्र करि परअनीक, सुरतान नृप सु जित्यो समीक ॥  
 खोजन पुनि निज १ पर २ मून्य खेत, अब्बूपति प्रविश्यो हित  
 उपेत ॥ १७ ॥

पहिलैं छँत विकल सु सुद्धि पाइ, अट्टा कवि दुरसा लिय उठाइ।  
 अहिफेन पाइ तिहिँ हित उपेत, नृप धरि नृजान पठयो निकेत ॥ १८ ॥  
 निज १ पर २ कितेक जीवत निहारि, सब लिय उठाइ बैरहु बिसारि ॥  
 सो जड्ड १ कविहु कहु आयुसेस, निरखत बिसासि दिग गो  
 नरेस ॥ १९ ॥

आहिफेन दैनलगो उठाइ, सो जड्ड १ नट्यो यह नय सुनाइ ॥  
 जगमाल २ सुहृद मम आहि जत्थ, तह लैन उचित लैचलहु  
 तत्थ ॥ २० ॥

इहिँ छलि नृजान धरि भेजि अैन, सीसोद २ लख्यो व्यसु म-  
 ध्य सैन ॥

बिनुस्वास मुच्छ भौहन फवाइ, बलि कोहु देवरा ९ तँर दवाइ २१  
 सुतो तस उरपर कर कटार, पायो मृत सुहु करि सनु पार ॥  
 सुरतान राजकुल अति सराहि, तत्र किय विधि समुचित द-  
 हन ताहि ॥ २२ ॥

१ ललकार (मारमार) का भयंकर शब्द करके; अथवा भयंकर कोलाहल करके ॥ १५ ॥ २ जाड़ा नामक मनुष्य शाखा का चारण ॥ १६ ॥ ३ युद्ध ॥ १७ ॥ ४ घावों से ५ असल १ पालखी में ॥ १८ ॥ १९ ॥ मेरा ७ मित्र जगमाल है तहाँ ॥ २० ॥ ८ वर ६ मराहूआ. किसी देवड़ा को १० नीचे दयाकर ॥ २१ ॥ ११ छाती पर ॥ २२ ॥



जहुँहु जगमालहिँ अनसुँ जानि, गल छेदि मरयो पुनि असह  
ग्लानि ॥

जगमाल१आदि तिहिँघोरजुद्ध, पहुँ अहुँपर इत१के प्रबुद्ध ॥२३॥  
सुरतान पितृव्यक समरसीह१, इत्यादि मरे उत२के अवीह ॥  
जगमाल१विजय२समरा३दि जारि१, सनुहु सब घायल इम स-  
म्हारि२ ॥ २४ ॥

दुरसा१इक१रक्षिय स्वीयेंडंग, पठये खिल करि पटु साहसंग ।  
अह्नीं हु रह्यो तव गिनि सुअन, लखि उचित देवर९न अन्न लैन २५  
अव्वृपति तव तिहिँ वृत्ति अप्पि, थानक निज रक्षिय स्वी-  
य थप्पि ॥

तवतैहिँ देवर९न वृत्ति तास, कुल धरत राम२०३।१प्रभु जस  
प्रकास ॥ २६ ॥

कति कहत हारि यह सुनत क्रुद्ध, पठयो दल अकवर३७।१पु-  
नि प्रबुद्ध ॥

रानाँजिम कुल मग हठ रहंत, कढिगो सुरतानहु कति कहंत ॥२७॥  
इत जो बुंदीपति भोज१९१।२एह, गो सबन सासन साहगेह ।  
पै वत्त कतिकै अनुचित प्रमानि, जिहिँ नृप करी न कुल हेय  
जानि ॥ २८ ॥

जान्योँ सुर्जन१९०।१छत१प्रनति जोरि, कूरमें कनीसु व्याहत२  
वहोरि ॥

पै हुव सछँ जवतैँ नृपाल, हम मानत तवतैँ अवर हाल ॥२९॥  
दिल्लीविच बहुरि हु थान देत, न लयो१जु पुब्ब सुहि गिनि  
निकेत ॥

१ मराठ्या जानकर २ राजा ३ बहुत चतुर ॥२३॥ ४ निर्भय ॥ २४ ॥ ५ अपने  
नगर में ६ आढा शाखा का चारण दुरसा ७ देवड़ा का ॥ २५ ॥ २६ ॥२७॥ ८  
त्याज्य ॥ २८ ॥ ९ नम्रता १० कछवाहे की कन्या ११ छत्र सहित (राजा) हुए  
पीछे ॥ २९ ॥

इक खिन गोभारन गहत अैन, निरखे नृप मारकें अप्प नैन ॥३०॥  
 वरजे न रुके जे कछु विसास, ताडित तब तिन्ह करि असह त्रास ॥  
 पुनि छोरे शनिनहु न किय पुकार, अकबर ३७१ गिनि अर्जन  
 हित उदार ॥ ३१ ॥

हो कुम्भ सुताको स्वसुर हाइ, इतकी सत्र जानतहो अथाइ ॥  
 क्रमि ढिग जिहि मान सु साह कान, दिय डारि वज्र आगम  
 निदान ॥ ३२ ॥

सुनि बहुत काल पुव्वहि सु साह, गंभीर सिंधु मन किन्न ग्राह ॥  
 सुर्जन १९०१ नृप पीछै अवधि सेस, न इतेक काल पुच्छयो  
 नरेस ॥ ३३ ॥

संसद कहूँ अखिख सहेज साह, लखो तैं सूरति वज्र लाह ॥  
 नहि कबहु दिखायो हे नरेस, अवतो सु दिखावहु हुकम एस ॥३४॥  
 इम कहिय अधिप कर धरि कटार, वो पविको जानहु यह  
 अगार ॥

यामाहिं रहत हीरासु एक १, कबहुक लखिलेहैं खल कितेक ॥३५॥  
 सुनि एह गई कैरिगो सु साह, अखिख जग भोज १९१२ हिं  
 वाहवाह ॥

मुगलेस सहन यह सुभ न जानि, जरिगो सु मान छम नृपहि  
 जानि ॥ ३६ ॥

१ गौओं को मारने के लिये मार्ग में पकड़ते हुए २ मारने वालों को देखे ॥३०॥  
 ३ ताड़ना करके ४ आय्यों के ॥ ३१ ॥ ५ कछुवाहा आनसिंह चुन्दी के राजा  
 भावसिंह की पुत्री का स्वसुर था तो भी खेद है कि १ पास जाकर, मुरत के  
 युद्ध में ७ हीरा हाथ लगा था जो कारण सन्निह बादशाह को सुना दिया ॥३२॥  
 ८ समुद्र स्त्री मन में ९ गगर स्त्री उस वार्ता को छिपा दी ॥ ३३ ॥ १० सभा  
 में ११ हीरे का लाभ ॥ ३४ ॥ १२ उस हीरे का यह घर है ॥३५॥ १३ चमा का  
 गया अर्थात् सुनी अगसुनी करगया, बादशाह को इस १४ सहनशीलता को  
 चुन्दीय को १५ समर्थ जानकर मानसिंह जलमया

खट अयुत ६०००० दम्स जिहिँ अर्घ रूपात, देखन हु न दिय  
सो पैबि बैदात ॥

इहिँ मंतुँ साह नृप हनन आदि, करतो कितकि प्रभुता प्रबा-  
दि ॥ ३७ ॥

सागर गभीर पै सहिय साह, बलि नृपहि गिन्यो निज जय  
निबाह ॥

ओरन असकंय तउ किय अनेक, ईनराम २०३।४ सुनहु तिन  
एकएक ॥ ३८ ॥

जननीहु साहकी मरिय जत्य, सब अँज नृपन बुल्लि रु समत्य  
इम अकिखय तुमकुल रीति एह, व्है सुंडित गुरुजन मृति अ-  
नेह ॥ ३९ ॥

हम जननि मरन तिन क्यौँ न होहु, सब नृपन धरयो सिर हु-  
कम सोहु ॥

आमैर १ जोधपुर २ मुख अधीस, सब सुंडित हुव गिनि हुकम  
सीस ॥ ४० ॥

बुंदीस भोज १९१।२ तहँ प्रंसम बांधि, सुहु कथन न किय कुल  
धर्म संधि ॥

इम भोज १९१।२ साह परिखंद हु आइ, भास्यो तिन्ह संडै १  
न पुरुख २ भाइ ॥ ४१ ॥

मन्नत कति बैम्हनि साह माइ, मत भेद इहाँ संभव मनाइ ॥

जनम्यौँ यह ऊमरकोट जात, बरनी जु हुमायौँ ३१।१ समय  
बात ॥ ४२ ॥

उम हीरे का ? मूल्य साठ हजार प्रसिद्ध है. उस ३ उज्ज्वल २ हीरे के इस ४ अपराध पर ५ ललकार कर भोज को मारता तो उस की क्या प्रभुता थी. ॥ ३७ ॥ देहे राजा रामसिंह ॥ ३८ ॥ ७ आर्य्य राजाओं को बुलाकर बड़े लोकों के मरने के ल सज्ज सुंढन करारते हैं ॥ १९ आदि ॥ ४० ॥ १० हट करके ११ सभा में आकर १२ उन हीजडों में पुरुष की भांति दीखा ॥ ४१ ॥ १३ बादशाह की उस माता को कितने ही ब्राह्मणी मानते हैं ॥ ४२ ॥

पै जवन<sup>१</sup> खिलन इम निज \*प्रबंध, सुनिये तब ख्याति अप्प-  
२न जु संघ ॥

भजिगो सु हुमायौ<sup>३१</sup> जबहि भीत, तब तजि अंतहपुर दुख  
प्रतीत ॥ ४३ ॥

सब हुरम भजी जिततित ससंक, इकके तँहँ उधरे भाग्य अंक ॥  
जिहिं गर्भ साह सो भजतजात, बंधूगढ पहुँची दुख बितात ॥ ४४ ॥  
तत्थहि हुब अकबर<sup>३७</sup> तनय तास, उभयर हि तँहँ कछुबिधि  
विदित आस ॥

तब नृप बघेल लैजाइ ताहि, सादर सपुत्र रखी सराहि ॥ ४५ ॥  
पुनिदिल्ली अकबर<sup>३७</sup> जैनक पाइ, बनिता जिततित सुनि  
लिय बुलाइ ॥

नृप तब बघेल धरि तिन्ह नृजान, पहुँच्यो हजूर सासन प्रमा-  
न ॥ ४६ ॥

बनिसोहि बघेलन उदय बीजै, धी धारत अज्जन करत धीज ॥  
अगहु कछु सूचित यह उदंत, मन्नहु प्रसंगकरि पुनि सुमंत ॥ ४७ ॥  
जवन<sup>२</sup> निज ग्रंथन जत्थजत्थ, लिखिदिय अलीक अज २  
न अनत्थ ॥

रन प्रथम<sup>१</sup> सहाबुद्दीन हारि, पित्त १७७१ हिं हनि दूजै<sup>२</sup> गो  
पधारि ॥ ४८ ॥

लैगो गहि ३ बहु जन यहहु लायै, इम कतिक कहाँ व्है दुख  
अमाप ॥

प्रेभुके चरित्र अवसर प्रसंग, सूचित सु होहिं निज<sup>१</sup> पर<sup>२</sup> असंगा<sup>४९</sup>

यवनो ने अपने अग्र्यों (तवारीखों) में लिखा है । अब अपनी ख्याति में जो  
लिखा है सो सुनो- १ जनाना दुःख की प्रतीति से ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ २ प्रसिद्ध हुआ  
॥ ४५ ॥ अकबर के ३ पिता ने ४ स्त्रियों को ॥ ४६ ॥ बघेलों के उदय का ५ कारण  
हुआ ६ विश्वास ७ वृत्तान्त ८ बुद्धिमान् ॥ ४७ ॥ ६ मिथ्या १० पृथ्वीराज को  
॥ ४८ ॥ यह भी ११ कथन है १२ हे प्रभु रामसिंह आपके चरित्र में प्रसंग के

निज निलय वीरवल डक अनेह, साहहिं निमंत्रि बुल्लयो सनेह ॥

परिजन १ नवाबर नृप ३ मुख्य पास, डम गो सु वीरवलद्विज  
निवास ॥ ५० ॥

उतरत वसंतः ऋतु ग्रीष्मः श्रात, प्रसरत निदाघ असहन प्रपात ॥

सब कुंकुमादि जल बहु सुगंध, विरचि सु भरि कृत्रिम कुंड  
बंध ॥ ५१ ॥

किय अरज वीरवल उचितकाल, हजरत इहिं प्रविसहु करि  
निहाल ॥

पहिलें तैंहें अकबर ३७११ करि प्रवेस, बुल्ले भट १ सचिव २ अ-  
लुगर विसेस ॥ ५२ ॥

तब मान १ खानखानादि तत्थ, सब लग्गे प्रविसन हुकम सत्थ ॥

प्रविस्पो न भोज १९१२ तैंहें दृढ प्रमानि, ठहो अर्सि १ अहूनर  
सज्ज ठानि ॥ ५३ ॥

मुगले ६ सहु आग्रह जदपि मंडि, छम बुल्लयो तदपि न प्रस-  
म छंडि ॥

बुल्लयो प्रमत्त सब इस विचारि, ठहो मँरच्छक हृदय धारि ॥ ५४ ॥

इक १ अकबर ३७११ अंतिक होहु अल्प, पटु वीर बहुत चहियत  
प्रकल्प ॥

जिन्ह करत सत्रुमन न बढिजाइ, है चोकी बहु भट उचित  
दाइ ॥ ५५ ॥

सो वीरवलहु करि सबन सखिलें, आग्रहजुत बुल्लयो विसैंहु अखिल

अधस्तर पर गबरों के और आर्थों के जन भेद की सूचना की जावेगी ॥ ४९ ॥

एक १ समग्र चारवल ब्राह्मण के २ घर पर ॥ ५० ॥ ३ पवन अर्थात् अमल गयी  
पहुँची तब केसर आदि सुगंधित जल भरकर प्रेमनाथ हुए कुण्ड में ॥ ५१ ॥

॥ ५२ ॥ ५ मानसिंह कपयाला ६ तरवार डाल लेकर ॥ ५३ ॥ ७ समग्र अकबर

ने कुलाया तो भी हठ नहीं छोड़कर चोला न रखत ॥ ५४ ॥ ९ समीप १०

विशेष खान-अर्थात् चतुर बहुत चाहिये ॥ ५५ ॥ ११ सार्थ १२ दृढ़ १३ प्रवेश

मेरे घरही मम न अपमान, बुंदीस करहु लाखि सब विधान ॥५६॥  
तुम सब प्रमत्त इम अक्खि ताहि, सो भोज १९१२ खरो इक  
हठ समाहि ॥

इहिँ आगसँसाहु कोष आनि, पैवि १ मुच्छ २ न दैनहु इँठ  
प्रमानि ॥ ५७ ॥

पहिलैं रिक्ताइ अकबर ३७ १ हिँ पूर, सुर्जन १६० १ लिय बावन ५२  
प्रांत सूर ॥

बुंदी १ समीप तिनमैं छबीस २६, बलि कासी ३ डिग एकोन  
बीस १९ ॥ ५८ ॥

॥ छबीस १ नबीस २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

ए पैतालीस ४५ हि लिय उतारि, सप्तक ७ जुत कासी दिय सम्हारि ॥  
तँहँ सुर्जन १९० १ लकखन व्यय प्रतानँ, नव थान १ दुर्ग २ सुरगृह ३  
निपान ४ ॥ ५९ ॥

माँडा १ कासी श्वरनात्रि ३ मुख्य, सब ठास रचे निज धाम मुख्य ॥  
पच्छे नलये ते अब्द ८ प्रांत, भोज १९१ २ हि कै रक्खे अनय प्रांत ॥ ६० ॥  
नृप मन्निय बुंदिय क्यौ न लैहु, उज्जैन न धर्म सुचिबंस एहु ॥  
रहिगो बल्ल अदो ३ तदपि राज, मुदितहि रह्यो सु तिहिँ खिन  
समाज ॥ ६१ ॥

जिहिँ पुनि कहूँ अंवसर करनँ जोरि, बिनति जवनेसहिँ किय  
बहोरि ॥

समुभक्त हम प्रभुकी छिति १३ असेस, दैहो सुहि रक्खहिँ जि-  
यन देस ॥ ६२ ॥

करो यह कहकर १ विधि ॥ ५६ ॥ २ इस अपराध से ३ हीरा और डायी मंछ  
के त्वात्त नहीं देने के कारण अर्थात् बादशाह की माता के मरने के समय मराठन  
नहीं हुआ था सो हठ जानकर ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ४ लाखों रुपये खर्च करके ५  
मन्दिर ६ जलाशय ॥ ५६ ॥ ६० ॥ ७ धर्म नहीं छोड़ेंगे ८ अग्निवंश ॥ ६१ ॥ ९  
हाथ जोड़कर १० सब भूमि आप की ही समझते हैं ॥ ६२ ॥

जित लरन काम तित मरन जाँहि, निज स्वामि अनुग हम  
नाँहिनाँहि ॥

हनि धर्ममाँहि कहँ किमहु होइ, गति कर्म नाँहि रखै सु गोइ ६३  
प्रभुकोहि भरोसा तबहु पाइ, हम वजत अज लजन बिहाइ ॥  
न करहि बिलांब सिर दैन नैक, कुलधर्म मिटत कछु चित्त चैक ॥६४॥  
इहिं रक्खि हमहिं छिति दैहु तुच्छ, मति लेहु कुबिध इम नरन पुच्छ ॥  
जिजियाशदि तज्यो प्रभु दम जितोक, वाकोहु अनुग न गिनत इतोक ।  
कुल मग्न रक्खि जो लेहु काम, लघु असन बसन रतो अतिललाम ।  
अकबर ३७१२हु अरज यह सुनि प्रसन्न, छितिपहिं ऋजुँ जान्यो न  
छलछन्न ॥ ६६ ॥

॥ दोहा ॥

लवपुरको दैवै लग्यो, इहिं सूबा अधिकार ॥

नृप अक्खिय कासी निलय, है आवत दुख द्वार ॥ ६७ ॥

हौं दुँकरम दुकरहु हुकम, सबनहौं प्रभु सज्ज ॥

सिर जो रक्खहु स्वामिसय, किरँ को दुष्कर कज्ज ॥ ६८ ॥

अतिप्रसन्न साह सु अरज, मनि कहिय नृपमोर ॥

है कासी आवहु बहुरि, लघु जावहु लाहोर ॥ ६९ ॥

नृप गो तब कासीनगर, मंगि बिलांब छद्मास ॥

कुमर रैन १६१२मुख प्रकृति कुल, आनंदित सब आस ॥ ७० ॥

अकबर ३७१२ जौरति करन इन, आत अनय अजमेर ॥

दुव २ मिलैअन आमैर दिय, स्वसुरालय बल सेर ॥ ७१ ॥

१ सेवक रेनाँही करने की नाँही है अर्थात् कमी नाँही नहीं करते ३ छिपा-  
कर नहीं रक्खेंगे ॥ ६३ ॥ चित्त पर ४ क्रोध होता है ॥६४॥ ६५ ॥ ५ सीधा  
॥ ६६ ॥ ६ लाहोर का सूबा ॥६७॥ ७ दुष्कर कार्य और दुष्कर आज्ञा को माध-  
ने में तैयार हूँ ८ हाथ ९ किल (निश्चय) कठिन कार्य कौनसा है ॥६८॥ १० रा-  
जाओं के सुकुट ॥ ६९ ॥७० ॥ ११ यह यावनी भाषा का देश वासी शब्द है  
१२ सुकाम ॥ ७१ ॥

सस्सू तँहँ मुगल्लेसकी, माननृपतिकी माइ ॥

दिय महिमानो दुवरहि दिन, मह बहु पुरहु मचाइ ॥ ७२ ॥

बुल्लयो वह अवरोध बलि, जामाता निज जानि ॥

साहहु गो सस्सू सदन, उर आदर भर आनि ॥ ७३ ॥

नजरि१ निछावरि२ सहिनिज, बहुरि बँधूगन बुलि ॥

सुविधि कराई सवन सन, भाग्य सराह न भुलि ॥ ७४ ॥

हड्डीहू दुवर तँहँ हुती, इक सुभमति१९२१ अभिधान ॥

जगतसिंह निज कुमर जिहिँ, मह करि व्याहो मान ॥ ७५ ॥

सु तो जरी जब मृत सुन्यौँ, अर्पण पति आसाम ॥

भोज१६१२ सुता दुवरकुल भले, उज्जल किय अभिराम ॥ ७६ ॥

बुंदीही तस सुत बस्यो, नाम जास रघुनाथ ॥

भोज१९१२ सु रक्ख्यो प्रेष्ट भनि, सुता तनय हित साथ ॥ ७७ ॥

कृष्णावति१९२१ जेठी१ केनी, दूजी२ तँहँ दूदा१९१२ हु ॥

माननृपहिँ व्याही कुमर, विधि१ महर सह करि व्याहुँ ॥ ७८ ॥

दाहु१ व्याहु२ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

सोही तब पै तिहिँ समय, अति प्रसभहु आई न ॥

गई लैन सस्सूहि गहि, हा कुबधू मतिहीन ॥ ७९ ॥

तबहि खाइ कर्पूर तिहिँ, पिहितँ छुरी लै पास ॥

कछु अंतर सन गमन किय, अनुचित जियन उदास ॥ ८० ॥

पठई सस्सू अगग पुनि, आई व्याकुल एह ॥

दिठिपरत साहहु दुखित, देखी कंपतदेह ॥ ८१ ॥

पग डारत इतउत परत, बुल्ले अकबर३७१२ विकिखँ ॥

१ वत्सव ॥ ७२ ॥ २ जनाने में अपना ३ जमाई जानकर बुलाया ४ साल के घर में ॥ ७३ ॥ ५ पुत्र की बहुओं को बुलाकर ६ सब सविधि पूर्वक नजर न्यौछावर कराई ॥ ७४ ॥ ७ नाम ८ मानसिंह ने ॥ ७५ ॥ ९ अपने पति का १० सुन्दर ॥ ७६ ॥ ११ प्यारा कहकर ॥ ७७ ॥ १२ बड़ी कन्या १३ विवाह ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ १४ छाने ॥ ८० ॥ ८१ ॥ १५ देखकर



को आवत यह असु बिकल, सासन निवहन सिक्खि ॥८२॥

यह दूदा१९११की अंगजा, सुनि बुल्लयो उठि साह ॥

सस्सू जड तैं किय विरस, लेत सभा रस लाह ॥८३॥

जो हड्डी६१ यह तो सजव, जिम तिम गृह लै जहु ॥

खायो कछु इहिं मरनकहु, सस्सू जदपि सुहाहु ॥८४॥

जाहु१ साहु२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

विरचावहु बैद्यन बिहितें, आसु जियन उँपचार ॥

सस्सू गय ढिग यह सुनत, लखी बिकल ज्ही लार ॥८५॥

औषध दिय बैद्यन उदित, जिहिं पच्छी लैजाइ ॥

छन्नैं ढिग निकसत छुरी, हेतु कह्यो करि हाइ ॥८६॥

मैयाकँहँ उर मारती, मुख लखतो जो मिच्छ ॥

ताहु लखी हड्डी६१हु तिहिं, यातैं जियन अनिच्छ ॥८७॥

तुमरे सुतके अब तँलप, जैवो पैरभव जोग ॥

कहि इम पुरवाहिर कढी, भैवके परिहरि भोग ॥ ८८ ॥

पृथक ग्राम हड्डीपुरा, बाहिर रहिय वसाइ ॥

जब मृत मान सु तब जरिय, स्व कुलहि मुख्य लैसाहि ॥८९॥

यह भावी पै इम सु अब, अकबर३७११ है अजमेर ॥

दिल्लीपुर गो पुनि दुसह, बाँहुरि संभर्व वेर ॥ ९० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठ ६ राशौ बुन्दीशभोज  
चरित्रे सीरोहीविजयार्थयुद्ध शीर्षोद्दिग्गममालादिनरशारावसुरतागावि

१प्राण रक्षाज्ञा ॥८२॥ २ पुत्री ॥८३॥ ४ शीघ्र ॥८४॥ ५ उचित वशीघ्र ७ इलाज  
८ लज्जा सहित ॥ ८५ ॥ ९ कारण ॥ ८६ ॥ १० शय्या पर ११ दूसरे जन्म  
में १२ संसार के भोग छाड़कर ॥ ८८ ॥ १३ निज १४ मानसिंह मरा तब १५  
शोभायमान करके १६ यह बार्ता आगे होतवाली है १७ पीछा फिरकर १८  
सम्भव समय पर ॥ ८९ ॥ १० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज  
के चरित्र में सीरोही को विजय करने के युद्ध में जगमाल शीर्षोद्दिग्ग आ-

जयासादन १, यवनेन्द्राकबरबुन्दीशभोजकृतानेकापराधक्षमनभोज  
जस्वधर्मदृढीभवन २, अजमेरनगरपीरयात्रार्थप्रस्थितयवनेन्द्राकबर-  
स्वश्वशुरगृहामेरगमनादिकथावर्णनं सप्तदशो १७ मयूखः ॥

आदितो द्विशततमः ॥ २०० ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक छ वेद सोलह १६४६ समय, इत कासीनृप अैन ॥

कुमर रत्न १९२१ के हुव कुमर, दुर्जय पर भय दैन ॥ १ ॥

असित १ भाद्रपद ६ दोजि २ अह, जन्म तास लिय जानि ॥

आव्हय गोपीनाथ १९३१ इहिं, पायो गनित प्रमानि ॥ २ ॥

अधिप मान दौहित यह, लीला १९२१ औरस मूर ॥

सुनि जनम्यो बरख्यो सुपहु, पुरटमेह यह पूर ॥ ३ ॥

कछु कासी १ चरनादि २ कछु, रहिय भोज १९१२ अधिराज ॥

बुंदी जिम विलसिय बिभव, सुरपति प्रतिम समाज ॥ ४ ॥

हुतो पुरोहित संगही, द्विज इक १ देवीदास ॥

गैल इतर क्रोड न गयो, बुंदीही करि बास ॥ ५ ॥

दिष्ट ज्वरी किय सोहु द्विज, यातै नृप अनखाइ ॥

पलटन और पुरोहितन, भोज १६१२ चहिय हिय भाइ ॥ ६ ॥

किय विन्नति तैंहें जोरि कर, व्यास चक्रधर विप्र ॥

पुब पुरोहित गर्वपर, छोर न समुचित छिप्र ॥ ७ ॥

दि मारे जाकर राव सुरताण का विजयी होना १ बुन्दी के राव भोज के अ  
पराधों को बादशाह अकबर का क्षमा करना और भोज का अपने धर्म में द  
ढ रहना २ अजमेर में पीर की जारत करने को प्रयाण करनेवाले बादशाह  
अकबर का अपने स्वसुर गृह आमैर में जाने आदि कथाओं के वर्णन का सप्त  
हवां मयूख १७ समाप्त हुआ और आदि से दोस्तों २०० मयूख हुए ॥

काशी के १ स्थान में ॥ १ ॥ २ द्वितीया के दिन ३ नाम ॥ २ ॥ ४ स्वर्ण क  
मेह ॥ ३ ॥ ५ इन्द्र के ६ सदृश ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ भाग्य ने ८ ज्वर युक्त किया ॥ १  
९ उचित १० शीघ्र ॥ ७ ॥

पैठवाल१द्विज तजि सुपहु, चोलंख्या२पुनि चाहि ॥  
करहु पुरोहित प्रीति करि, निज कुल रीति निबाहि ॥ ८ ॥

॥ मनोहरम् ॥

चोलंख्या धनेस्वर जो भूसुरसो भूपभोज१९१३,

करन पुरोहित बिचारयो जानि जबही ॥

देवीदास ज्वरकी दसाहुमैं दुसह दुख,

ताको तार्कि देसमैं पठायो पत्र तबही ॥

नाभा१सिवदास२दूदा३रामा४ओभा५केदार६,

रु परसा७स्वदेसतैं ए सात७आइ सबही ॥

द्वार रहि ठाढे दीन विन्नति करन लागे,

क्यों तजो हमैं यह करी न काहु कबही ॥ ६ ॥

॥ पद्धतिका ॥

नृप कहिय हाल कल्लोल नाम, जो रहत मत्त इमैं अष्ट८जाम ॥

इहिं पूजि पुरोहित रहहु अप्प, द्विज तजहु नतौ अब मोघ दप्प १०

नाभा तब पूज्यो वहहि नाग, भाख्यो न जाइ हम वृत्ति भाग ॥

इम नम्र विविधकर जोरि अक्खि, सुंढाधरि हड्डन सबन सक्खि ११

पूजनविधाइ किन्नौ प्रनाम, करिराज भयो सुभ द्विजन काम ॥

पहिलेहि विप्र इम रहत पोरि, रहिगो सु धनेस्वर मनहिं मोरि १२

नाभाहित पुहवी कछु नरेस, बखसन जहैं लग्गो हित बिसेस ॥

भाखिय तहैं नाभा जिम स्वभंग्ग, एकासी=१बीधा अवनि अग १३

पाई कुलपुरुखन विधि प्रमान, लाहि हेतु कछु सु गत हुव लवान ॥

सुहि मोहि देहु नृप धर्म सोधि, बारहठ सुकवि ईस्वर १५

महिपति तब ईस्वर १६

१७ मन मनाइ, भुव सोहि दिवाई उचित भाइ

अक्खिय नृप कवि तुमलेहु ओर, जो पै न लई कवि सुमति जोर १५

॥ ८ ॥ १ देखकर ॥ ९ ॥ २ हाथी ३ झूठा घमंड ॥ १० ॥ ४ साची ॥ ११ ॥ १२ ॥

५ अपने भाग (हिस्से) की ६ भूमि ॥ १३ ॥ ७ ग्राम का नाम ॥ १४ ॥ १५ ॥

लिखि सुतहिँ पत्न सुहि छिति लबान, दिय सर्व पूर्वगत द्विजन दान॥  
द्विज नाम धनेस्वर१काँ स्व देस निबसथ सु धोहरा२दिय नरेस ॥ १६ ॥  
रहि दूदा३९११डिग जिहिँ परसुराम४, किय अति विरोधमय विविध  
काम ॥

तोहू व ग्राम गग्घोस२ताहि, सुर्जन१९०॥१ सुत अप्पिय गुन सराहि  
चरनादि१रू कासी२मास च्यारि४, संभरनरेस रहि सब सम्हारि ॥

रच्छक तँहँ रक्खिय कुमार रैन १९२॥१, अक्खिय सुत आनहु स-  
वन अैन ॥ १८ ॥

पुर दिल्ली पुनि सासनप्रमान, आयो बुंदीपति बल अमान ॥  
संसद बुलाइ तिहिँ कहिय साह, मचि डमरु मिटत लाहोर लाह ॥ १९ ॥  
निज बल सिख हीरासिंहनाम, नानक विनेय जगहित निकाम ॥  
अनुमांनि नरन रचि धाटि एस, वपुसी प्रजाहिँ लुटत विसस ॥ २० ॥  
तासौ बचाइ नृप जाइ तथ, सूबा सम्हारि विरचत समर्थ ॥  
पुहवीस सु सुनि लाहोर पत्त, सूबापति तँहँ हुव चाहि स मत्त ॥ २१ ॥  
जुतधर्म१नीति२राज्यहिँ जबाइ, पट्टु चर पठाइ सिख सुद्धि प्राइ ॥  
बेढ्यो हि जाइ खल हड्ड६१वोर, सुमिराइ बिलुटुन पाप सोर ॥ २२ ॥  
तरवारिभारि तिम रन रचाइ, मारयो सु धाटिधर जस मचाइ ॥  
सूबा अभीत करि संभरीक, प्रतप्यो सम्हारि तस सब प्रतीक ॥ २३ ॥  
बुंदीस स्व बल जिम सिख विपन्न, सुनि तिम उदंत अकबर३७१  
प्रसन्न ॥

मालपुर१टौक२टोडा३समेत, यह त्रिक३वहोरि दिय हित उपेत २४  
इतकाँ बुंदेलन बल उफान, थानाँ बहु कहिय थानथान ॥

१ ग्राम ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ २ सभा में ३ उपद्रव ॥ १९ ॥ नानक का ४ शिष्य  
होकर, संसार के हित में ५ निकम्मा ६ अपनी सलाह में लेकर ॥ २० ॥ ७  
समर्थ ॥ २१ ॥ ८ चतुर ९ हलकारा भेजकर १० लूट स्मरण कराके ॥ २२ ॥ ११  
जस सूबा के सय अंगों को सम्हाल कर ॥ २३ ॥ १२ विपद् अस्त ॥ २४ ॥

प्रकटहि दुश्आबल ग लूट पारि, अति धन बहु निबसथ दिय  
उजारि ॥ २५ ॥

सूबा प्रयागको अपि साह, पठयो सिरीफखाँबल प्रबाइ ॥  
तिहिं जात अरज किय हित बताइ, हड्डि ६१ नबस गढ चरनादि १  
हाइ ॥ २६ ॥

अधिकारी तैसे गढ उपेत, खल सब जुरि जितहिं बीर खेत ॥  
वह मोहि देहु तिनसौं उतारि, बलि लखहु प्रजा सुख सुभविचारि ।  
जाकेहिसंग फरमान तथै, अकबर ३७ १ पठयो गढ दैन अतथै ॥  
लाहोर तिमहि दूजो लिखाइ, भेज्योसु भोज १९१ २ प्रति उचित  
भाइ ॥ २८ ॥

नृप १ बाँचि वह रु कुमरहिं निदेस, पठयो लिखाइ गढ करहु पेस ॥  
पहुँच्या सु बिलौबि रु कुमरपास, सूबापति अग्गाहि गो सकास २९  
जिहिं गढ प्रयाग प्रभुता जमाइ, लैवे गढ पठयो दल १ लिखाइ ॥  
सौंपै फरमान २ हु ताहि सत्य, सूबापति पठयो बल समत्य ॥ ३० ॥  
इत रैन १९२ १ कुमारहु जिहिं अनेहै, अधिबीर हुतो चरनादि एह ॥  
गो तँहै फरमान १ सु तिहिं गिन्यो न कहि हमहिं देत नृप हुकम २  
क्योंन ॥ ३१ ॥

पच्छोसु दूत पुनि गो प्रयाग, भाख्यो न देत गढ गिनि स्वँ भाग ॥  
सुनि यह सिरीफ लाहि अल्प सत्य, समुझावन कुमरहिं गो स-  
मत्य ॥ ३२ ॥

जिहिं रैन १९२ १ कुमार चरनादि जाइ, समुझायो छोरहु गढ सुनाइ  
नृपको हि कुमर मंग्यो निदेस, सूबापति बुल्लयो खाजि बिसेस ॥  
तू बैप हुकम क्यों चाहत तौनि, सुगलेस बडे अप्पहिं प्रमानि ॥

१ ग्राम ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २ तहाँ ३ अर्थ (गढ देने के लिये) ॥ २८ ॥ गढ ४  
नजर करदा ५ दर से पहुँचा ६ समीप ७ पत्र ॥ ३० ॥ जिस ८ समय में ९ वीरों  
का पति ॥ ३१ ॥ १० अपने हिस्से का जानकर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ११ पिता का हुकम  
१२ खैच करके

कुमरहु यह सुनि खिजि हनि कटार, फारयो सिरीफ उर गर्व  
फार ॥ ३४ ॥

महिपति भोजा १९१२ बुज रायमल्ल १९१३, सुत रामचंद्र १९१४  
तस सर्व कुल सल्ल ॥

सिसु बैहि जनक सन जो रिसाइ, पति कछुदिन दूदा १९१४  
कुमर पाइ ॥ ३५ ॥

पुनि रहि सिरीफखाँ स्वाभिपास, बहिकाइ कशायो तस विनास  
मरतहि सिरीफ सुहु राम १९१४ मूढ, अरि कुलको गो भजि  
तैंहें अंगूढ ॥ ३६ ॥

जुझे इत १८२ के कछुक जोध, बलि जवन भजे असहन विरोध  
पुनि भोज १९१२ हुकम गो कुमरपास, सुत देहु दुर्ग सासन  
विनास ॥ ३७ ॥

अंतर इतेक पहिलैंहि एह, इत हुव उदंत आंगस अछेह ॥  
सो असह सुनत अति छुद साह, चितयो हड्ड १९१४ नसिर हनन  
चाह ॥ ३८ ॥

ओरनसम अकबर ३७१ पै न आहि, गंभीर सिंधुमन नयवगाहि ॥  
सिवपुरिंय १ परगनाँ सत्त ७ सत्थ, सब लिय उतारि अट्टहि समत्थ  
सुर्जन १९०१ के विरचे थान साह, लिय नहि कारीविच गि  
निकुलौहि ॥

माँडा १ चरणादिक २ आदि माँहिँ, वाकेहु रचे लिय सर्व आँहिँ ॥ ४० ॥  
अधिकार दये लवपुर १ उपेत, मालपुर १ टोक २ टोडा ३ समेत ॥  
इतकेहु लये हैं अग्रसन, बुल्लयो नृप भोज १९१२ हिँ चहि  
विपन्न ॥ ४१ ॥

१ हृदय २ समूह ॥ ३४ ॥ ३ भोज का छोटा भाई ४ अपने कुल का खाल ॥ ३५ ॥  
५ प्रसिद्ध ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ६ अपराध ॥ ३८ ॥ ७ अकबर अन्य वादशाहों के लज्जान  
नहीं था ८ मन का गंभीर समूह ९ नीति का आद लेनेवाला ॥ ३९ ॥ १० लोटा  
लान ॥ ४० ॥ ११ विपन्न ॥ ४१ ॥

पहु भोज १९१२ तबहि सासन पठाइ, बुंदी सब अपने लिय बुलाइ  
रनवाससहित तब कुमार रेन १९२१, आयो सब स्वीयेन स्वीय  
अने ॥ ४२ ॥

अहि बेद अष्टि १६४८ संवत अनेह, इस पत्तो बुंदिय रत्न १९२१ एह  
इत भोज १९१२ हु दिल्ली सजव आइ, जवनेसहिं सेयो नति  
जनाइ ॥ ४३ ॥

इहि कृत बहु रन जय चित आनि, जवनेस बुलायउ स्वीय जानि  
दिय नृपहिं उपाखंडहु दु २ पार, किय यह अति हेलन तब  
कुमार ॥ ४४ ॥

तब कानि तज्यो नहिं तो मंत्रास, इनतो मै रेन १९२१ हिं हैन हास  
माग्यो सिरीफ जिहिं निबुद्धि मंतु, तस मै न रक्खतो कुलहु तंतु ४५  
सुर्जन १९०१ के तेरे सै सुकर्म, मै अटक्यो सुभिरत विविध मर्म ॥

इम होइ हात कछु दिन अतीत, पछोनरेस किय साइ प्रीत ॥ ४६ ॥

इहि समय नाम जाको अयाज, सु जवन तातारी रहित साज ॥

विगरयो विपत्ति आगम विसेस, इतको तब आयो दुखितएस ॥ ४७ ॥

वनिता सगर्म संगहि विहाल, कन्या हुव ताकै प्रसवकाल ॥

तातार अज्ज भुव अंतराल, बन गहन प्रसूता हुव सुवाल ॥ ४८ ॥

हे भूख पुव्वहि सत्त्रहीन, दुखमै पुनि यह दुख दिष्ट दीन ॥

इम रूपवती कन्याहु उज्झि, बनमै रु चले मग अग्न बुझि ॥ ४९ ॥

तिम सिंगुसन कछुकछु दूर जाइ, सुरि सुरि तिम देखत वप्प १ माइ २

कन्या परी सु पढति किनार, माताको तह दिव मोह मार ॥ ५० ॥

बच्चा बच्चा कहि तवसु बाल, बिलपात गिरी भुव अति विहाल ॥

१ ज्ञाना २ सेवकों सहित अपने ३ घर में आया ॥ ४२ ॥ ४ शीघ्र ५ मज्जता

दिनाकर ॥ ४३ ॥ ६ आलस्य ७ अपराध ॥ ४४ ॥ ८ चढ़ दही नहीं है ९ बिना

अपराध ॥ ४५ ॥ १० बचतीत ॥ ४६ ॥ ११ बिना सामग्री १२ विपत्ति आने से

॥ ४७ ॥ १३ त्री. तातार और १४ आध्यात्म के १५ चाप में ॥ ४८ ॥ १६ परा-

क्रम हीन १७ होकर ॥ ४९ ॥ १८ उस छोटे हुए बालक से १९ वह कन्या मार्ग के

किनारे पर पड़ी थी ॥ ५० ॥ २० बच्चा बच्चा कह कर विहाल होकर भूमि पर गिर पड़ी

तिहिं लाखि अयाज पच्छोहि जाई, लायो कनी सु उरतैं लगाइ ५१  
 कति कहत लाख्यो सिसु कहनकाल, बपु बेढिरह्यो तस काल व्याल  
 वह गो भजि इहिं तनया उठाइ, अप्पी निज नारिहिं बहुरि आई ५२  
 तहँ मग मिलिं सोदागरन ताहि, बसुं कछुक दयों करुना निबाहि ॥  
 वाके बल लवपुरं तिनहु आई, बाँसर कछु कहे दुख बिताइ ॥५३॥  
 बनिता१रु सुता२जुत सुनि सु बत्त, पुनि यहअयाज दिल्लीहि पत्त ॥  
 साहहु तिम पट्ट सुनि लाखि समाज, वह कियउ मीरबखसी अयाज  
 ताकै दुव२सुत हुव जदपि तत्थ, सो प्रीत तदपि तनयाहि सत्थ ॥  
 अति रूप सुता वह लाखि अयाज, बिद्याहु स्वीय सिखई सबार्ज ॥५५॥  
 गुन१रूप२उभयरत्नहि वहि गंरीय, बयं मध्य२३लहत हुव बढि वंरीय  
 पहिलैहि फिरंगी पोर्तुगेज१, आये पुनि निज भुव अंगरेज२ ॥५६॥  
 अधिरोज राम२०३१४जिम यह उदंत, सब सुनहु सोहु क्रम अ  
 सुमंत ॥

अगैं यूरुपजन मग अजान, अजनैभुव सोदागरन आन ॥ ॥ ५७॥  
 मग हेरि थके जिततित महीप, पथ उत्तर११पच्छिम३२लाखि प्रतीप  
 बहु वरफ फसे जिनके जिहाज, सहँसैन जन मरिगय तउ सलाज ५  
 उद्योगिन न तज्यो प्रसभ एह, आयेदक्खिन२३दिस जिहिं  
 समय१रु सोदागर नाम२संग, प्रभुराम२०३१४सुनहु अब हुव प्रसंग  
 मसंग१ प्रसंग२ अन्त्यानुपासः १॥

संवत जब गुनसर तिथि१५५३समान, पावत तव नृपइह इहिं ॥ १॥

१ कन्या को छाती से लगाकर लाया ॥ ५१ ॥ कितने ही कहते हैं  
 उसकी माता ने बच्चा बच्चा कहा उस समय उस लड़की का काल २  
 ने घेर रक्खी थी ॥ ५२ ॥ ३ घन ४ लाहोर ५ दिन ॥ ५३ ॥ वह अयाज  
 ६ गया उसभा में ॥ ५४ ॥ नशीबता से ॥ ५५ ॥ ९ भारी १० सुन्दर ॥ ५६  
 ११ हे राजा रामसिंह जिसप्रकार यह वृत्तान्त है सो सुनो १२ आगे  
 के लोग आर्यावर्त का मार्ग नहीं जानते थे १३ आर्यों की भूमि का ॥ ५४  
 १४ उलटे १५ हजारों मनुष्य ॥ ५८ ॥ तो भी उद्योगियों ने १६ हठ  
 छोड़ा ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥



पोर्तुगीजों का हिन्दुतानमें आना] पष्ठराशि-अष्टादशमयुख (२४०९)

संग्रामशरान चित्तोर२सीस, इत बुंदीरनारायन१८७।१।२अधीस॥६०॥

गढ जोधपुर३ सु जब गंगदेव, आमैर भूप भगवंत एव ॥

लोदी५जु.सिकंदर२८।५दिष्टलाह, सो हो जब दिल्लिय५पातसाह॥६१॥

बलि ग्राम आगरा जिहिं विथारि, पुर किय बादलगढ नाम पारि ॥

घल्लिय तस अकवर३७।१अधिक घेर, बलि सुनहु सिकंदर२८ही  
हि वेर ॥ ६२ ॥

राना संग्रामाशदिक नरेस, वरनै जब तव हुव यह बिसेस ॥

पुर१ लिसवन२ जनपद२ पोर्तुगाल२, जब सज्जिय सोदागरन  
जाल ॥६३॥

॥ दोहा ॥

सासन लिसवन साहको, पोर्तुगेज जन पाइ ॥

आवन तव अज्जन अवनि, भये सज्ज हितभाइ ॥६४॥

॥ हरिगीतम् ॥

वास्कोडिगासा नाम तिन बिच मुख्य सोदागर बन्यो,

॥

राजा१ प्रजा२ वरज्यो कह्यो बहु पौत फसि हिममै रहे,

वहुतै मरे१ कछु बाहुरे२ जन व्यग्रभाव बहे बहे ॥६५॥

पहुँचै न अज्जनखंड तू जिन जाहु जल मग पोततै,

जन बरफ१तै न बचै तथापि जथापि सागर स्रोततै ॥

वास्कोडिगासा१ हुल्लायो तजिकै उदीचि१।१ प्रतीचि ३।१त्यो,

जै हों व बकिअन२।३ पंथलै पहुँचै जिहाज सभद्र ज्यो ॥६६॥

तिनतो जथापि भर्योगिन्यो रहतो त जाये नियो तथा,

---

॥ ६३ ॥ लिसवन नामका बादशाह जी ? आज्ञा लेकर २ आर्यावर्त में ॥६४॥  
३. जहाज वर्षों में फले ४ व्याकुल ॥ ६५ ॥ ५. लड्डू के प्रवाद में ६ उत्तर ७ प-  
श्चिम को छोड़कर ८ अन् ९ कुशलता पूर्वक ॥ ६६ ॥

पृथु द्रव्य तीन३ जिहाज भरिलिय अफ्रिका मगकी प्रथा ॥  
 जा उत्तमासा १ केप अब गुडहोप २ नाम उभै भैजै,  
 तिहि अंतरीप गया यहै जन साहसी पन क्यौ तजै ॥ ६७ ॥  
 बास्कोडिगामा १ केप अब गुडहोपतै मुरि वामकौ,  
 ध्रुव अदः जुत दस १० मांस करि पहुँच्यो सु अँजन धामकौ ॥  
 प्रभुराम २० ३१४ तँहँ सक अप्पनौ चउ पंच तिथि १५५४ मित पिदखयो,  
 भुव अप्पनी पहिलो १ फिरींगी १ एह तव प्रविसत भयो ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

मंदराज हाता २ महिष, अनल कोन २ दिस आहि ॥  
 अंग्रेजन परतंत्र अब, ताँतै नैऋत ५४ ताहि ॥ ६९ ॥  
 केरल भुव आयो कहत, जल निधि तट पुर जत्थ ॥  
 कलीकोट जु नाम करि, तरिनै लगाई तत्थ ॥ ७० ॥

॥ युग्मम् ॥

पुर दिल्ली कोटहि प्रथम १; सब उतारि संभार ॥  
 लाभ अधिक ताँतै लह्यो, बेचि सु वस्तन बौर ॥ ७१ ॥  
 इहाँ फिरींगी पुव्व यह, प्रविश्यो इम मग पाइ ॥  
 लाभ बहुत धन लैगयो, लिसवन विभैव लैसाइ ॥ ७२ ॥  
 पातसाह १ अरु सब प्रजा २, लखत ताहि हिय लाइ ॥  
 हुलैसि बधाई करतहुव, जिततित हरख जनाइ ॥ ७३ ॥  
 ताको इम जस १ जुत तवहि, सब गूरूप हुव सोर २ ॥

१ चडे खन मे. आफ्रिका के मार्ग की रीति ली ३ दोनों नामों को धारण करता है अर्थात् उत्तमासा के दोनों नाम से प्रसिद्ध है ४ साठवीं पुण्य अपनी प्रतिज्ञा को नहीं छोड़ते ॥ ६७ ॥ ५ आर्यावर्त में पहुँचा ॥ ६८ ॥ ६ अग्निकोण में है ॥ ६९ ॥ कहते हैं कि यह ७ केरल देश की शक्ति में गया था ८ सप्तद्वीप के किनारे के ९ जटान ॥ ७० ॥ १० सामग्री ११ समूह ॥ ७१ ॥ यहाँ सब से पहिले यह फिरींगी १२ आया जिसका नाम क बादशाह के १३ वैभव को १४ शोभायमान करके ॥ ७२ ॥ १५ प्रसन्न होकर ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

आयो लखि जलमग्न यह, अब किन चल्लहु और ॥ ७४ ॥

पोर्तुगेज? आदिक प्रचुर, लघु तब यूरुपलोक ॥

धरि पोतन विक्रय धन, आनलगे इहिं ओक ॥ ७५ ॥

पातैं सबनैं अति अधिक, लब्ध विक्रय लाह ॥

लखि सु कतिन पुर लंडनहु, चित्त बढी सुहि चाह ॥ ७६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायणो पष्ठदशौ बुन्दीशभोजभू-  
पचरित्रेप्राप्तलाहोराधिकारभोजनानकपन्थिहीरासिंहमारणात्प्रान्त  
तापनिवारणा १ कुमाररत्नसिंहकाशीचरणाद्रियवनेन्द्राधिपत्यार्थ-  
प्राप्ताज्ञप्रस्थितसिरीफखांपवनमारणा २ एतदपगधातुकाश्यादिद्युयव  
नेन्द्राधिपत्याच्च कुमाररत्नसिंहस्य वाराणासीतोऽबुन्द्यागमनभोजस्य  
दिल्लीगमनोत्तरसप्रश्रयवनेन्द्रप्रसादापादन ३ तातारागच्छन्नूरजि-  
हांजनकायाजार्थावर्तागमनसमयाध्वान्तन्नूरजिहांप्रादुर्भवनलङ्घित-  
लाहोरदरिद्रदशापन्नायाजदिल्लीगमनानन्तरसेनापतिपदवितरणा ४  
आर्यावर्ताध्वान्वेपकधूरपजनानेकपोतहिमप्रासनाशोत्तरपोर्तुगीजेश-  
लिसवनाज्ञावर्तिवास्कोडिगामानामवशिज आर्यावर्तप्रथमागमन ५

१ बहूत २ शीघ्र ३ जाहाजों में ४ बचने का धन भरकर ५ इस स्थान में आने  
लगे ॥ ७१ ॥ ६ बचने का लाभ ॥ ७६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के रूपति भो-  
ज के चरित्र में भोज का लाहोर के सुवे पर जाकर नानक पन्थी हीरासिंह  
को मारकर उस सुवे का ताप मिटाना १ काशी और चरणाद्रि को खालसे  
करने की आज्ञा लेकर गये हुए सिरीफखां का कुमार रत्नसिंह का मारना २  
इस अपराध के कारण और काशी आदि के खालसा होजाने से कुमार रत्न-  
सिंह का सकुटुम्ब काशी से बुन्दी आना और भोज का दिल्ली जाकर नञ्जता  
पूर्वक बादशाह को प्रसन्न करना ३ नूरजिहां के पिता अयाज का तातार से  
आर्यावर्त में आने समय जार्ज में नूरजिहां का जन्म होकर दरिद्र दशा में  
लाहोर होकर दिल्ली आने पर मीरवखशी के पद पर नियत होना ४ यूरुप के  
लोकों के आर्यावर्त के मार्ग में डूबने में अनेक जहाज बर्क में फलकर नष्टहुए  
पीछे पोर्तुगेज के बादशाह लिसवन की आज्ञा से वास्कोडिगामा नाजक सो-  
दागर का सब से प्रथम आर्यावर्त में आना ५ इसके अपूर्व लाभ को देखने

एतदपूर्वलाभदर्शनोत्तरयूरूपान्यवणिजांलगडननिवास्यांग्लानांचार्या-  
वर्ताजिगमिषावर्द्धनमष्टादशो मयूखः ॥ १८ ॥ आदित एकोत्तरद्वि-  
शततमः ॥ २०१ ॥

॥ प्रायोत्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत नृप रान प्रताप मृत, सुनि अकबर३७१२कछु सोचि ॥

सख पठाये सखधर, अब न काम आलोचि ॥ १ ॥

इम न भई तो डारि असि, बुल्लयो न अब विधान ॥

मोहि सख अवधानमैं, रक्खतहो इक रान ॥ २ ॥

सुनि यह अमर प्रतापसुत, खैटक४दुवखदुवखग ॥

पठये अकबरसाहप्रति, इम कहि वचन उदग ॥ ३ ॥

रक्खहु अप्प प्रसन्न रहि, सख द्विरगुन अबसाह ॥

पुत्रहुरानप्रतापकै, रक्खत निज कुल राह ॥ ४ ॥

पै पीछैं कति जन कहत, अति लोभी अमरेस ॥

हुकम साहको सद्धि हुव, उदयनैर प्रभु एस ॥ ५ ॥

सो भारीपै अब सुनहु, बर्गान खिन सक वत्त ॥

महि अजन अंग्रेज मिलि, आये जिमि अबुरत ॥ ६ ॥

॥ वेतालः ॥

दिल्ली सिकंदर२८१२हो जहाँ बुंदी नरायनदास१८७१२ ॥

अवनी इलाँ मग लखन जस तव पोर्तुगेज१न आर्स ॥

जवतैंहिँ यूरुप२के धनैजन आनलगिय अर्थ ॥

सं यूरुप के अन्य सौदागर और लण्डन के अंग्रेजों की आख्यावर्त में आने की चाहना बढ़ने का अठारहवाँ १८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ एक २०१ मयूख हुए ॥

इन शस्त्रों से अब काम नहीं है यह ? विचार कर ॥ १ ॥ २ प्रवृत्त अधका विधि अर्थात् अब शस्त्र रखने का काम नहीं है ३ शस्त्र रखने की सावधानता में ॥ २ ॥ ४ ढाल ५ उदग्र (निरंकुश) ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ प्रीतियुक्त ॥ ६ ॥ ७ मि और भूमि के मार्ग को देखने का यश पोर्तुगेजवालों को द हुआ ९ पहा

सबकेहि लाभ विसैस संचित भो जिहाजन साथ ॥ ७ ॥

अंग्रेज२लोकहु चाहि तवसन अज्जजनपद आन ॥

अब सज्जि च्यारि४जिहाज इन मिलि किन्न सीर प्रमान ॥

नर साहतो जब हो नही नहिं द्रंग लंडन लाह ॥

तिय नाम ऐलीजबथ१ही तैंहें साहजादिय साह ॥ ८ ॥

अब हे जँथा विकटोरिया तिनसी हुती प्रभुतत्थ ॥

सासन तदीयें लिखाइ इम लिय बनिज सीरिन सत्थ ॥

हमरे हि वस्तुनको उंहाँ क्रय अब्द पंद्रह१५ होइ ॥

बानिज्यतो हम जाइ विरचहिं छुटतैं न बिगोइ ॥ ९ ॥

॥ सामान्यलक्षणो नोल्ला लोविशेषणा कर्पूगेवा ॥

तव सासन ऐलीजबथ तिन्ह, अप्पि तिम रु पठये हि और ॥

कहि ईसट१इंडिया२कंपनी३, पुर्व्व१अज्जभुव२बनिक३पर ॥ १० ॥

सब सीरदार सोदागर१न, कहत उंहाँजनकंपनी२ ॥

दिस पुर्व्व१ईसट२अरु इंडिया१, भुव अज्जन१जावत भनी ॥ ११ ॥

कति सीरदार बानिज्य कर, ऐलीजबथ निदेस इम ॥

अंग्रेज१ प्रथम आये इहाँ, जोहु संमय सुनिये वँ जिम ॥ १२ ॥

इत दिल्लीपति यह अकबर३७१११हि, इंतं बुंदी नृप भोज१९११२यहें

अमरेस३ रान सीसोंद इन, सूर४जोधपुर इत सु बह ॥ १३ ॥

आमैर मौन५ छत बनिक्कें ए, चउ४ जिहाज भरि दैव्य चैय ॥

अंग्रेज२प्रथम आये यहाँ, सक रस सर सोलह१६५६संमय ॥ १४ ॥

॥ ७ ॥ १ तव से २ आर्य्य देश में आने लगे. उस समय ३ पुरुष बादशाह नहीं

था ॥ ८ ॥ ४ जिसप्रकार इस समय विकटोरिया है तिमप्रकार उस समय ऐ-

लीजेबथ नामक खलका थी ५ उसकी आज्ञा ३ छल से ॥ ९ ॥ ७ जीव ८ आ-

र्यावर्त के पूर्व्वदिशा के व्यापार पर ॥ १० ॥ ९ हिस्तेदार व्यापारियों को चर्ठा

कम्पनी कहते हैं १० पूर्व्वदिशा को ईस्ट, और आर्यावर्त को ११ इंडिया कहते

हैं ॥ ११ ॥ १२ अब ॥ १२ ॥ १३ शोचोदियों का मृत्य राणा अमरसिंह १४ सूर-

सिंह ॥ १३ ॥ १५ मानसिंह १६ व्यापार करनेवाले १७ धन के १८ समूह से ॥ १४ ॥

प्रभुराम२०३।४ आइ इम निज पुहवि, साधुभाव सह रीतिसन ॥  
 बानिज्य करनलगे विविध, चितवत डढ अप्पन चलन ॥ १५ ॥  
 अकवर३७।१हु साह दिल्लोस इत, कंटक हत राज्यहिं करत ॥  
 सासन तदीय भूपाल सब, धन१तन२मन३बचन४न धरत ॥ १६ ॥  
 सक अठ पंच सोलह१६५८सु कवि, केसव बिप्र कवित्व करि ॥  
 श्रीरामचंद्रिका१ ग्रंथ सुभ, प्रारंभिय पैदति पकरि ॥ १७ ॥

त्वकरि१ पकरि२अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

॥ पट्टपात ॥

अप्पिय मुनसब अगग हड्ड१कहँ पंचहजारी ५००० ॥  
 सत्तहजारी७०००सहित कुम्म२किय निज अधिकारी ॥  
 रीति इहाँ प्रभु राम२०३।४विविध जन बिबिध बतावत ॥  
 पै बहु बुधन प्रमान जथा निज सुकवि जतावत ॥  
 रूपय१तृतीय३अंस जु रहत वह मन्नहु इक१दाम अब ॥  
 तिन्हत्रिक३सु इक्क१रूपय तिमहिं तिनैकरि हो व्यवहार तब ॥

१ हे प्रभु रामसिंह २ अपनी भूमि (आर्यावर्त) में ३ श्रेष्ठ भाव से ॥ १५ ॥  
 ४ उसकी आज्ञा ॥ १६ ॥ ५ केशव नामक ब्राह्मण कवि ने १ कवियों का मार्ग  
 पकड़कर ॥ १७ ॥ ७ कछवाहे को. हे प्रभु रामसिंह अनेक लोग ८ अनेक  
 बताते हैं परन्तु ९ बहुत विद्वानों के मत से आपका कवि कहता है. एक रूपय  
 के तीसरे १० हिस्से को ११ एक दाम जानो इसीप्रकार १२ उन तीन \* दामों  
 का एक रूपया जानो जिससे सब व्यवहार होता था

\* यहाँ पर ग्रन्थकर्ता ने रूपये के तीसरे हिस्से को एक दाम रखा है परन्तु निश्चय नहीं होता कि  
 ग्रन्थकर्ता को यह प्रमाण कहाँ मिला है क्योंकि दाम का यह प्रमाण बहुत अधिक है, हमने चादशाही के  
 रमानों में छोटे छोटे परगनों की आमदनी (रैल) के क्रोड़ों दाम लिखे देखे हैं सो यदि उन दामों का प्रमा  
 ण रूपये का तीसरा भाग समझा जाये तो उन परगनों की आमद किसी अवस्था में भी इतनी नहीं हो  
 सकती, हमने जहाँ तक फारसी तबारीखों में इस प्रकरण की जाँच की तो दाम की तादाद एक रूपये के त  
 तीसरे हिस्से की निश्चय हुई सो ही ठीक समझी जा सकती है, अर्थात् चादशा दाम का एक रूपया हो  
 या इसका अधिक विवरण देखना होये तो तबारीख "गयासुल्लुगात" में देखो और मुन्सब के विषय  
 आईन अकबरी में लिखा है कि चादशाह अकबर के समय में दश से लेकर दश हजार पर्यंत मुन्सब थे  
 नौ जात का बराबर सवार हो तो वह प्रथम श्रेणी का मुन्सब माना जाता है और जात से आगे

अयुत च्यारि ४००००० दाम इम जु इंक शबिस्ती २० मुनसब जहँ ॥  
 दोइ २२ लकख २००००० मिलि दाम तिमहि इक १ सदी १०० को तहँ  
 बीस २० लकख २०००००० दाम बलि हुतो पढ इक १ हजार १०००  
 पंच ५ हजार ५००० प्रथित कोटि १०००००० दामन अधिकारी ॥  
 मुनसब हि कहत सेना प्रेमिति १ क्रम तिन दामन करि किते ॥  
 कति कहत हुते इहिँ मान करि इन दामन पर हय २ इते ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

सूबा अकबर ३७ १ सीमके, बिदित सहबाईस २२ ३ ॥

कहुँ देस १ न कहुँ पुर २ न करि, मन्नहु ख्याति महीस ॥ २० ॥

॥ पदवतिका ॥

तहँ सूबा दिल्ली १ प्रथम १ जानि, पुनि सोहु लेहु दहली १ प्रमानि ॥

सूबा द्वितीय २ पुर आगरा सु, जिम नाम अकबराबाद २ जा सु ॥ २१ ॥

लाहोर ३ सु लवपुर ३ गेय गम्प, रावी तट वाम सु बसत रम्प ॥

मुलतान ४ नाम बलि पुर ४ समेत, कसमीर ५ श्रीनगर ५ पुर निकेत

पैसोर ६ प्रिसावर ६ कहत केहु, त्रय ३ बढ मिलि काबल ७ १ इक १

रु तेहु ॥

उत्तर ४ ७ अफगा निस्तान १ आस, जमँ ओर २ ३ बलूचीस्तान २ जास

है चरम ३ ५ खुरासान ३ सु हिरात ३, दावल ७ इक १ ए त्रय ३ मिलि

१ प्रसिद्ध २ सेना के प्रमाण से ३ इस प्रमाण से इन दामों पर इतने घोड़े होते थे ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ उसी दिल्ली को दहली कहते हैं ॥ २१ ॥ ५ कहते हैं ६ सुन्दर ॥ २२ ॥ ७ दक्षिण दिशा ॥ २३ ॥ ८ पश्चिम

सवार हो तो वह दूसरी श्रेणी का मन्सब है और जात से आवे से भी कम सवार हो तो वह तीसरी श्रेणी का मन्सब है, इस प्रत्येक मन्सब के साथ घोड़े, हाथी, ऊँट नियत थे और प्रत्येक मन्सब के साथ बेतन (तनखा) भी नियत थी जिसमें विशेष कर परगने दिये जाते थे, इसका उक्त ग्रन्थकर्ता अबुलफजल ने एक नक्शा भी लिखा है परन्तु वह विस्तार के भय से यहाँ नहीं लिखा जा सकता। बादशाही समय में एक प्रकार के तोल का नाम भी दाम था, और वर्तमान समय में एक पैसे के पचासवें हिस्से को दाम कहते हैं अर्थात् पैसे के २५ दाम होते हैं परन्तु यह व्यवहार वाणिज्य में है बादशाही दाम तो एक रुपये के चालीस ही मानने चाहिये ॥

कहात ॥

पुर गजनी१सुहि जाबुल१पुरान, पुर काबुल२नूतन अब प्रधान॥२४॥  
 तारकोहिनाम मुलक सु७प्रतीत, बाला हिसार३१तहँ गढ बिगीत ॥  
 हे ता७सन नैर्कत४कंदहार८१, कादि रु८१खंधार८१हु तस  
 प्रकार ॥ २५ ॥

हँ८हिंसीम अमल किष बरुन ओर५३, दंकिखन३२दिस १८  
 इनसन सुनहु दोर ॥

सूबा अजमेर९१हु पुर२सनाम, गुजरात१०दसम१०पुनि सहँस  
 १०००ग्राम ॥ २६ ॥

अहमदआबादक१०१पुर२अधीन, जो मिलि सुरठ१गुज्जर२ज-  
 मीन१० ॥

मानत सुरठ११कति भिन्नमान, थप्पत बहु दु२हि गिनि दसम  
 १०थान ॥ २७ ॥

ढडो१११पुर१भक्खर२दुर्ग२ठानि, जो सिंधु११ग्यारहम११देस जानि  
 इत सूबा मालव१२पुर अवंति१२१, पुनिखानदेस१३मुख थान  
 पंति ॥ २८ ॥

बुरहानपुर१३१सु पुर प्रथम१बास, अब नव्य२धूलिया१३२द-  
 ग आस ॥

औरंगाबाद१४१हिं भिन्न अक्खि, सूचत कति तत्थ१३हि न-  
 गर सक्खि ॥ २९ ॥

सूबा बीजापुर१५१समन ओर१३, अरु भागनगर१६१बल द-  
 मन ओर११ ॥

॥ समनओर१दमनओर२अन्त्यानुप्रासः १ ॥

पुर नाम हैदराबाद१६१पाइ, सुहि भागनगर१६१अब जग

१नवीन॥२४॥२कहते हैं ॥ २५ ॥ ३ पश्चिम दिशा ४कैलाव ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥  
 नवीन धूलिया नगर ५है ॥ २९ ॥ ६ दक्षिण दिशा में ७ अग्निकोण ॥ ३० ॥



सुहाइ ॥ ३० ॥

कर्णाटि१७हु सूवा कति कहंत, सूचत पुर अरु अटि१७।१तहँ  
सुमंत ॥

थिरं खानदेस१३सन पुब्बथान, सूवा बरार१८जानहु सुजान ३१  
अचलपुर१८।१ \*पुरांतन दंग अत्थ, जग ख्यात नागपुर१८।२  
नव्य जत्थ ॥

इत पुब्ब१।१ इत्ताहावाद१९।१आहि, सोही प्रयाग१९।१ अघहर  
सदाहि ॥ ३२ ॥

जिहिँ उत्तरं१।७ सूवा अवधि२०।२ जानि, पुर आदि१ अयोध्या  
२०।१सुहि प्रमानि ॥

नृप गिनहु बंगला २०।१ मध्यरनैर, सुहि फैजावाद२०।२ हु रम्य  
सैर ॥ ३३ ॥

तहँ पुर लखनेऊ२०।२अब तृतीय३, कहियत लखनउर २०।३  
प्राकृतीय ॥

सूवा बिहार२१।१ पूरव१।१दिसा रु, चित गयपुर२१।२ पाटलि  
पुत्र२१।२ चारु ॥ ३४ ॥

तृतीय३कृतीय२ अन्त्यानुप्रास; ॥ १ ॥

दिस पुब्ब१।१हि सूवा बंगदेस२२, बरनत जहँ ढाका२२।१पुर बिसेस  
उडीसह२३उत्कल२३ निज दु३ नाम, जो सूवा पूरव १।१ जल  
धिजाम ॥ ३५ ॥

गढ १ बारह अट्टी २३।१ जहँ गिनात, पुर२ कटक २३।१ नाम  
तहँ धाम पात ॥

इनमैँ इक१कोउक गिनत अद्ध३, सूवा इम ए वाईस सद्ध२३।३६।  
सीमाभुव अप्पन वंदि साह, बंधे इम जय करि नैय निवाह

१पुराणा १नवीन २ पाप मिटानेवाला ॥३२॥ ३३ ॥ ३ प्राकृत भाषा जाननेवाले  
४ समुद्र से उत्पन्न अर्थात् समुद्र के किनारे ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ५ नीति

इत पुव्व११जीति आसामअंत, दब्बे प्रदेस सब बल दुंरंत ॥ ३७ ॥  
 दक्खिन२३कर्णाटक३लग दवाइ, निज किय बहु भूपति पयन नाइ  
 इत कंदहार३काबल३उपेत, दब्बिय दिस पच्छिम३१५जोर देता३८।  
 उत्तर ४१७ हिमाद्रि४ लग स्वबस आनि, प्रतप्यो सु अखिल सिर  
 जित प्रमानि ॥

अरु सासन बाहिर लखत आप, पायो इक१रानाँ वह प्रताप ॥ ३९ ॥  
 साहंस बल विनु दल खग साँहि, बाजी प्रानावाँधि गो निबाहि ॥  
 अब सुनहु राम२०।३४ प्रभु वृत्त एह, अकबर३७।१ सुत मोहित  
 जिम अछेह ॥ ४० ॥

नोरोजन सम सब नगरनारि, निजनिज घरबाहिर थितनिहारि ॥  
 स्व जनक सन छत्रैं जिहिँ सलेम३८।, प्रमदाँ वह पिकखी धारि प्रेम  
 भाखी अयाजतनया जु भूप, राची निज गुनश्वय२कांति३रूप ४ ॥  
 इहिँ पुव्व अँनूढा पिकख एह, सबविधि धारतहुव दृढ सनेह ॥ ४२ ॥  
 पै तिहिँ अयाज यह सुद्धि पाइ, स्वीकार न किय अनुचित सुनोइ  
 अरु व्याहि सेर अफगानअर्थ, सबविधि सुदाँय दिय बसु समर्थ ॥ ४३ ॥  
 सो तकि मुखहि रहिगो सलेम ३८।१, न सक्यो सफली करि  
 प्रीति नेम ॥

बनिताहु सलेम३८।१हिँ प्रिय विचारि, ही रँत तदपि हुव एह हारि  
 इम पुनि नोरोज१हिके अनेहैं, अखिनकरि मिलतहि यह१रु एह२  
 प्रछेन्न दुवगहि कडि विजैनपत्त, निकटहि कहूँ निष्कुट रमन रँत

१ दूर है अन्त जिसका ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ हुक्म के बाहर एक राणा प्र-  
 तापसिंह ही पाया सो खड्ग लेकर ३ दाव ४ जीवन पर्यंत ५ वृत्तान्त ॥ ४० ॥  
 ६ स्त्री को ॥ ४१ ॥ ७ अविवाहिता (कुमारी) ॥ ४२ ॥ ८ दायजा ॥ ४३ ॥  
 अपनी प्रीति के नियम को ९ सफल नहीं कर सका १० वह स्त्री भी ११ प्री-  
 ति युक्त थी ॥ ४४ ॥ नोरोजों के १२ समय में १३ नेत्रों से मिलकर अर्थात्  
 आंख से आंख मिलते ही १४ क्रान्ति १५ अकालंत में गये १६ घर के समीप का  
 याग १७ रमण करने में आसक्त होकर ॥ ४५ ॥

धरि रच्छक अनुचर उचित धाम, कामुक जुगर्मिलिगय तहँ प्रकाम  
बनिता सब तब नोरोजश्वार, अति तंग पहिरि आती इजार ॥ ४६ ॥  
तस बंध स्वस्व पति जरत ताल, कुंची ढिग रक्खत गमनकाल ॥  
पट अंतरंग श्वहं विवस पाइ, बहिरंग रतिलक शलहंगा रवनाइ ॥ ४७ ॥  
आयी घर बाहिर तिमहि एह, निकसी अयाजत नया सनेह ॥  
पै अब सलेम ३८१२ सन रमन प्रीत, वह रीति करी तिहिँ इम  
अतीत ॥ ४८ ॥

निष्कुट तरु साखा लुंबि नारि, तालित इजार वह दिय उतारि  
लाहि इष्ट बहुरि वपु तिम लैफांइ, लुंबी सुहि साखा करन लाइ ४९  
जिम पुंब्ब तिमहि तिहिँ सुहि इजार, पहिराइ कुमर दिय करत प्यार ॥  
अैसे प्रबंध मोघहि अधीस, संसय ह्वे प्रत्युत तियन सीस ॥ ५० ॥  
उधराइ बख्र लौ सखि इष्ट, दीसै न किमहु सीलोप दिष्ट ॥  
इम ताहि सुपिदिता सक्ति आनि, चाहतरह्यो हि नैन न पहिचानि ॥ ५१ ॥  
पै जोर जनक अकबर ३७१२ मताप, अल्पहु न सक्यो करि किमहु  
आप ॥

इतरहु करि हत नय बहु उदंत, इहिँ जनक कुपाय उ जियन  
अंत ॥ ५२ ॥

पहु भोज १९१२ हु अकबर ३७१२ सिकख पाइ, बुंदीपुर होयन  
चउ ४ बिताइ ॥

१ कामी २ विशेष कामना से. सघ ३ स्त्रियों ४ पैजामा ॥ ४६ ॥ उनके पैजामों  
के नाड़ों में ५ अपने अपने पति ताले लगा देते थे ६ वह बख्र भीतर रखकर ७  
ऊपर ८ यवन बख्र विशेष जो गले से पैरों तक लहंगे के आकार रहता है  
॥ ४७ ॥ ९ उस रीति को दूर करी ॥ ४८ ॥ १० बांग के एक वृक्ष की शाखा से  
काटकर ११ ताला जुड़े हुए उस पैजामे को उतार दिया १२ शरीर को पतला  
करके १३ हाथों में उस शाखा को पकड़कर लटकी ॥ ४९ ॥ १४ जैसा पहिले  
था तैसा १५ वृथा १६ उल्टा ॥ ५० ॥ १७ उसके शील में उपदेश नहीं दीखे १८  
छाने आसक्ति लाकर १९ नीति को नहीं पहिचान कर ॥ ५१ ॥ और भी अनी-  
ति के बहुत २० वृत्तान्त किये. जीवन पर्यंत पिता को २१ क्रोधित किया ॥ ५२ ॥  
२२ वर्ष ॥ ५३ ॥

जे विविध कृत्य किय तहँ जनेस, अग्रिम मयूख कहिहँ असेस ॥ ३ ॥  
 पुनिसिक्खअवधि गय \*इंद्रपत्थ, तनु छोरिय अकवर ३७।१तबहि तत्थ  
 प्रभुभाव अब्द इक १ घटि पचास ४९, भूमी जिहिं भोगी असह भास ॥  
 अब ससि रस सोलह १६६१सक अनेह, परलोक पत्त वपु उ-  
 जिहँ एह ॥

प्रभु सुनहु इहाँ मतभेद पाइ, दुव रीति लिखत संसयदिखाइ ॥ ५५ ॥  
 कति कहत तीन ३ अकवर ३७।१तनूज, पहिलो १ सलेम ३८।१तहँ  
 अजस पूज ॥

पररेज ३८।२ नाम दूजो २ प्रबीन, कछवाहिगर्भ जिहिं बास कीन ५६  
 तीजो ३ तनूज कहियत जुतास, अभिधाँ तस दानासाह ३८।३ आस  
 अब साह मरत आमैर ईस, सब पंच फोरि कछु लोभ सीस ॥ ५७ ॥  
 पररेज ३८।२ स्वसासुत धरन पट्ट, किय मंत्र स्व भुव बाढन कुबट्ट ॥  
 पररेज ३८।२ अनुज तब भोज १९।१।२ पेलि, थपिय सलेम ३८।१  
 पर मत उथेलि ॥ ५८ ॥

सुत इक १ सलेम ३८।१ हि कति कहंत, मग तजि पै इच्छत अ-  
 नय संत ॥

पुनि हे सलेम ३८।१ कै उभय शुत्त, जेठोतहँ खुसरो ३९।१ नीति  
 जुत्त ॥ ५९ ॥

ताकोहि नाम पररेज ३९।१ तत्थ, सिंसु अनुज खुरुम ३९।२ सुत  
 हो समत्थ ॥

\* इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) † स्वामिपन ॥ ५४ ॥ १ समय में २ शरीर छाँडकर ३  
 मन्देह ॥ ५५ ॥ ४ पुत्र ५ अपयश में प्रतिष्ठा पाया हुआ ६ आमैर के राजा  
 भगवानदास कछवाहा की पुत्री के गर्भ ॥ ५६ ॥ ७ नाम = हुआ ॥ ५७ ॥ ९  
 बहिन के पुत्र को १० कुमार्ग से उस छोटे \* पररेज को बुन्दी के राव भोज  
 ने ११ हठाकर ॥ ५८ ॥ १२ अनीति ॥ ५९ ॥ १३ बालक

\* अकवर के तीन पुत्रों में छोटे दो तो अकवर के समय में ही मर चुके थे, उसके देहान्त के समय  
 एक सखी ही बाकी या सो पिता के सिंहासन पर बैठा ॥

यातैं सलेम३८१की लाखि अनीति, पररेज ३९१ माँहिँ किय  
मान प्रीति ॥ ६० ॥

तातैं बैठारतहो सु ताहि, चहुवान भोज१९१२तव धर्मचाहि ॥  
अक्खिय न जनक१छत सुतरहिँ जानि, करिहैं सलाम हम  
स्वामि कानि ॥ ६१ ॥

पहु तबहि बघेलन करि सपीर, सब हुव बुंदीस१हुभोज१९१२सीर  
रामगढ१श्रीनगर३केहु राज, अरु दुवर नवाबरतीजो३अयाज३६२॥  
इम जवन तीन३नृपतीन३अज्ज, सह बल बुंदीपति ओर सज्ज ॥  
इम न हुव मानचिंतित अनीति, रक्खिय हड्ड६१नपति धर्मरीति ॥  
थिर गहिय थप्यो सुहि सलेम३८१, पै हो यह अघकर कुम-  
ग प्रेम ॥

जिहिँ हनन सेरअफगान जानि, पठये बहु घातक छल प्रमानि॥६४॥  
यह जानि सोहु बचि खिन अनेक, कढिकढिगो मारक बं-  
चि क्रेक ॥

बचियो परंतु कबलग बनाइ, जँहँ लक्खन दलपति रुडि जाइ ॥६५॥  
मारयो सु सेरअफगान मंद, छिन्नी तस जाया कामछंद ॥  
पुत्री अयाजकी जो सैपंक, निजगृह सलेम३८१हारी निसंक ॥६६॥  
धारि अप्प जहाँगीरा३८१भिधान, दिय नूरमदल३तिहिँ ना-  
म दान ॥

इहिँ जनक अयाज१सु कियबजीर, साले२हु बडे अधिकार सीर  
इम हैसलेम३८१दिल्ली अधीस, सठ रूडो जेठे१पुत्र सीस ॥

१ मानसिंह ने ॥ ६० ॥ २ पिता के होते हुए ॥ ६१ ॥ ३ ॥ ४ आर्य ४ इस  
कारण मानसिंह की विचारी हुई अनीति नहीं हो सकी ॥ ६३ ॥ ५ पाप कर-  
के ६ कुमार्ग में प्रेम करनेवाला ७ छल के प्रमाण से अर्थात् छल करके ॥ ६४ ॥  
मारनेवालों को ८ ठग कर ९ लाखों सेना का पति क्रोधित हो जावे तब कब  
तक बचे ॥ ६५ ॥ १० काम के वश होकर उसकी स्त्री को छीन ली ११ कलंक यु-  
क्त ॥ ६६ ॥ १२ जहाँगीर नाम रखकर १३ दिया ॥ ६७ ॥ बड़े पुत्र पर १४ क्रोधित

बैठारतहे ईहिँ इम विचारि, दिन्नौ खुसरो ३९।१ वह कैद डारि ॥ ६८ ॥  
 हत्थी शहयादि विहितोपहार १, सब नृपन निवेदे सबन सार ॥  
 बलि किय उत्तारन २ वसु विसेस, इम सब सचिवादिन किन्न एस  
 ॥ दोहा ॥

तदनंतर कछु दिवस तैंहँ, रहि हहु ६१ न अधिराज ॥

पुर बुंदिय लाहि सिक्ख पुनि, सो आयउ बल साज ॥ ७० ॥

गुन रस सोलह १ ६६३ सक लगत, पंचमि ५ मधु १ सित २ पाइ ॥

कुमर रत्न १ ६२ १ के कुमरकै, भयो कुमर जस भाइ ॥ ७१ ॥

सत्रुसल्ल १ ९४ १ तस नाम सुभ, भाख्यो भूपति भोज १ ९१ १ ॥

यह पैहँ सबतैं अधिक, अवनि १ धर्म २ जस ३ ओज ४ ॥ ७२ ॥

पाई भोज १ ९१ २ हु जे प्रजा, परिनाई जिम पुव्व ॥

सुनहु तिन्हहु स्वसुरन सहित, दिय जिनजिन दधि १ दुब्बर २ ॥ ७३ ॥

भूप व्याह पुव्वहु भनँ, अबहु प्रसूचन अत्य ॥

जथा अर्नूढ खवासि जन, सबै सुनहु क्रम सत्य ॥ ७४ ॥

कुलवर्द्धक १ अरु अल्पकुल २, पुत्रन हित माहिपाल ॥

दये थान जेजे उदित, सुनहु तेहु रिपुमाल ॥ ७५ ॥

नृप १ इतइत रानिन निंकर २, बहुरि खवासिन जात ३ ॥

कृत्य करे कछु दुष्करहुँ, उनविच जस अवदात ॥ ७६ ॥

सुरगृह १ सोध २ निपान ३ सुभ, उपबैन ४ आदि अनेक ॥

सती तियनपतिसह गर्भन ५, विदितँ सुनहु सविवेक ॥ ७७ ॥

इतिथी वंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणो पष्ठदशांशो बुन्दीशभो-

दृष्ट्या ? इसको तखत बैठते थे सो विचार ॥ ६८ ॥ २ उचित नजराना ३ न्याय-  
 छावर ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ४ चैत्र सुदि ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ५ सन्तान ६ दूर्वा (विवाह के  
 समय पर दही दोव देने की आख्या में रीति है) ॥ ७३ ॥ ७ विशेष सूचना ८  
 विना विवाही ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ९ समूह १० समूह ११ कठिन कार्य १२ उज्जल  
 ॥ ७६ ॥ १३ मन्दिर १४ महल १५ जलाशय १६ बाग १७ प्रसिद्ध १८ विचार  
 पूर्वक ॥ ७७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज

जचरित्रे उदयपुराधिपप्रतापसिंहवधत्यक्तायुधाकवरान्तिकराणाऽम  
रसिंहद्विगुणशस्त्रप्रेषणा १ प्राप्तलण्डनाधीशराइपेलीजबथाज्ञेङ्गले-  
ण्डदेशागतोण्डियाकम्पनीतिसंज्ञाधरवणिग्जनकृतसूचितशकसम-  
पार्यावर्तव्यापारप्रवर्तन २ दिल्लीशकालिकदम्माधिकारविवेचनपूर्वा-  
कवरसामयिकसार्द्धद्वाविंशतिप्रान्तपरिगणान ३ नवाहमहजहांगीरनू-  
रजहांप्रथमसमागमभणान ४ अकबरमरणानन्तरसुतमतभेददर्शनोत्त-  
रजहांगीरराउपसमासादन ५ कृतशेरफगानवधजहांगीरतत्त्वानूरजहां  
पत्नीकरण ६ बुंदीशभोजप्रपौत्रशत्रुशाल्यप्रादुर्भवन ७ भोजस्त्रीसन्त-  
त्यादितत्कृतस्थानसूचनमेकोनविंशो मयूखः ॥ १९ ॥

आदितो द्व्यधिकद्विशततमः ॥ २०२ ॥

प्रायोन्नजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

भोज १६१२ नृपतिकै सुत भये, सप्त ७ प्रमित अति सूर ॥

सुता तीन ३ प्रकटी सुगुन, प्रगुन धर्म १ कुल २ पूर ॥ १ ॥

पुत्र चारि ४ रानिन प्रसव, तीन ३ तथा दुहितौ ॥

के चरित्र में उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह के मरने से शस्त्र त्यागनेवाले  
अकबर के समीप राणा अमरसिंह का द्विगुण शस्त्र भेजना १ लंडन की रानी  
एलीजबथ की आज्ञा लिखवाकर इंग्लिस्थान से आये हुए व्यापारियों  
का सूचना कियेहुए सम्बत् में ईस्ट इंडिया कम्पनी के नाम से आर्यावर्त में  
व्यापार खोलना २ बादशाही समय के दाम और मुनसबों के विवेचन के  
साथ अकबर के समय के साढ़े बाईस सुबों की गणना करना ३ नोरोजों के  
उत्सव में जहांगीर और नूरजहां के प्रथम समागम का कथन ४ बादशाह अ-  
कबर के शरीर छोड़ने पर उसके पुत्रों के मत भेद दिखाने पश्चात् जहांगीर  
का बादशाह होना ५ बादशाह जहांगीर का शेर अफगान को मारकर उस  
की स्त्री नूरजहां को घरमें डालना ६ बुन्दी के राजा भोज के प्रपौत्र शत्रुशा-  
ल का जन्म होना ७ भोज के सन्तान तथा रानियें आदि स्त्रियों के अथवा उ-  
नके बनाए हुए स्थानों की सूचना करने का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ  
और आदि से दोसौ दो २०२ मयूख हुए ॥

१ प्रमाण २ विशेष गुणवान् ॥ १ ॥ ३ रानियों के प्रसव से ४ पुत्रियां

तीन३खवासिनकै तनय, विदितभये बल बाहु ॥ २ ॥  
 रतन१९२१हृदयनारायन१९२१रु, दृढबल केसवदास१९२३ ॥  
 रानिन प्रसव मनोहर१९१४हु, यह चतुष्क४प्रभु आस ॥ ३ ॥  
 सुता बड़ी सुभमति१६२१ सुही, कहियत रत्नकुमारि१९२१ ॥  
 महितकुमारि१९२१रतिम भानुमति१९२३, सुद्ध द्विरकुल अनुसारि  
 इत बलू१रु संकरर अतुल, बलि गोवर्द्धन३बीर ॥  
 तीन३खवासिनकै तनय, \*सनय भये जय सीर ॥ ५ ॥  
 जाया सप्तक७ भोज१९१२कै, बरनिय सुद्ध दुखवंस ॥  
 तस खवासि चउ४हुव तिमहि, अधिक सतीपन अंस ॥ ६ ॥  
 पहिली१ फुल्ललता१ रु पुनि, रूपलता२ अभिराम ॥  
 बलि कर्पूरलता ३ विदित, दिव्यलता ४उद्दाम ॥ ७ ॥  
 जिन अपत्य जे जे जनिय, कहनभयो तिन्ह काल ॥  
 प्रथित नाम छप्पय गिनहु, प्रथित राम२०३१४ भूपाल ॥ ८ ॥  
 ॥ षट्पात ॥

बल्लन चालुकवंस राजकुमारि१९११ जु पटरानिय,  
 सुत रयन१९२१रु सुमति१९२१ सुता सु जाठर तस जानिय ॥  
 क्रम तीजी३ जसकुमारि१९१३ जनै रठोरिजुगरहि जिम ॥  
 हृदयनारायन१९२१बहुरि महितकुमारि१९२१ सु अपत्य इम ॥  
 रानीद्वितीय२जो कूरमिय जाहि जसोदा१९१३ भनत जग ॥  
 सुत केसव१९२३भानुमति१९२३सुता संतति तस उभय२हि सुभग ॥  
 ॥ दोहा ॥

भाग्यवती१९१४चोथी४ भनिय, रामसुता रठोरि ॥  
 तनय मनोहर१९२४ प्रसव तस, जानहु इत क्रम जोरि ॥ १० ॥  
 फुल्ललता१सुत छवि फवत, बलू१कुमार इत बुद्ध ॥



रूपलता २ सुत संकर २ सु, रक्खन चोरन रुद्ध ॥ ११ ॥

गोवर्द्धन ३ तीजो ३ गंदित, सुत कर्पूरलता ३ सु ॥

जन्यौ महाभुज करन जय, अरि दुर्गन चढि आसु ॥ १२ ॥

॥ पद्धतिः ॥

रत्नेस १९२ कुमार हड्डन नरेस, उपयम नवद्व्याहो सुकुल एस  
सुत हृदय नरायन १९२ २ व्याह सत्त ७, पहु रैन १९२ १ बिबाहो अप्रमत्त  
अपनै मन पीछै कुमार एह, स्व बिबाह पंच ५ व्याहो सनेह ॥

व्याहो पुनि केसव १६२ ३ पंच व्याह, नृपरैन १६२ १ ठानि मह हड्ड ६१ नाह  
त च उम ४ मनोहर १९२ ४ संभरीक, उपयम दुव २ व्याहो रन अभीक  
आमैर कुमार जगतेस अर्थ, सुभमति १९२ १ सुता सु व्याहिय स-  
मर्थ ॥ १५ ॥

अनुजा तनुजा दुव २ मृत अनूढ, त्रिक ३ तुल्य बलू १ मुख त्रिक ३  
हु व्यूढ ॥

बलि सबन स्वसुरपुर १ नाम रत्न संस ३, अब सुनहु राम २० ३ ४ प्रभु  
कुलवंतंस ॥ १६ ॥

नृप भोज १९१ १ पुब्ब दिल्लीनिवास, कूरम निमात्रि बुल्लयो स-  
कास ॥

तहँ मान कहिय मम इक १ सुता सु, सुत रत्न १६२ १ हिं व्याहहु १  
आदि १ आसु ॥ १७ ॥

नृप कहिय जाइ बुंदी निकेत, पुनि दूत पठैहौ हित उपेत ॥

संबध करन उपहार सत्य, तब अप्प पठावहु सुजन तत्थ ॥ १८ ॥

यह कहि तब बुंदी भोज १९१ २ आइ, पुच्छयो इम रान सु दल  
पठाइ ॥

१ रोकमेवाला २ कहते हैं ३ शीघ्र ॥ १२ ॥ ४ विबाह ५ सावधान ॥ १३ ॥ १४ ॥  
६ निर्भय ॥ १५ ॥ राजा की पुत्रियें जो सुभमति की ७ छोटी बहिनें थीं मविना  
व्याही मर गई ८ विबाह १० कुल के सुकुट ॥ १६ ॥ ११ समीप ॥ १७ ॥ बुंदी  
के १२ स्थान में १३ सामग्री सहित ॥ १८ ॥ १४ पत्र

मम सुतहिं सुता निज देत मान, रुचि अप्पन कैसी लिखहु रान ॥  
पच्छी कहि पठई तब प्रताप, अगौं सु ताहि दूदा १९१।२२ आप  
१९१।२ ॥

आमैर मान १ जगतेस २ अत्थ, तब दिय हम पुच्छे क्यों न तत्थ २०  
हुव सु विधि जनकवस कहिय हड्ड ६१, अब अप्पाहिं पुच्छत न  
कहु अड्ड ॥

पुनि गन पत्र दिय इम पठाइ, लेहु ब तिन कपटिन यह लि  
खाइ ॥ २१ ॥

व्याहै न सुता जवनन बहोरि, चुकै न बचन कहूँ चित्त चोरि ॥  
कूरम १ लिखिदै सुहि तो कुमार, परिनावहु है जिम जस प्रसार २२  
पुनि यह हि कबंध २ न देहु पत्र, तिम भट्टी ३ सोढ ४ न लिखहु तत्र ॥  
सुहि नृप लिखाइ पठई सुबोध, रान सु प्रताप हठि करत रोध २३  
उनके अनुमत बिनु न हम ईस, हिंदुर वि बजत अब जे महीस ॥  
दुहिता तुम जवनन पुनि न दैन, भेजहु लिखि अकपट गिन  
हु भै न ॥ २४ ॥

नहिं तो सीसोद १ नके निकेत, हड्ड २ न मति है है व्याह हेत ॥  
अनखाइ सुनत यह महिप मान, किंल चिंतिय डारन साह कान ॥  
पंचन तैंहँ अखिखय है नृपाल, जाति सन चलत १ व्यवहार जाल ॥  
जातिसन रुकत २ तैंहँ इतर जोर, अल्पहु चलि सकत न न्याय  
ओर ॥ २६ ॥

दै अकवर ३ ७।१ हड्ड ६१ न जो हुदंड, खिल भूप तोहु पलटै अखंड ॥  
सिलगावहु क्यों दै गिरिन सीस, अनुमत लिखि भेजहु पिहि  
तैं ईस ॥ २७ ॥

भेजकर महाराणा से पूछा ? आपकी क्या रुचि है ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥  
२ फैलाव ॥ २२ ॥ ३ रोकते हैं ॥ २३ ॥ ४ सलाह बिना ५ जो हिन्दुवासरज  
व्रजते हैं ६ कपट रहित ॥ २४ ॥ ७ घर में ८ निश्चय ॥ २५ ॥ व्यवहार का ९  
समूह ॥ २६ ॥ १० बाकी के भूपति पर्वतों पर ११ अग्नि क्यों सिलगाने हो

अप्पन टरि को गति लहहिं अज्ज, किल परत जातिः सन जा-  
तिरुक्कज्ज ॥

सोढा १ कबंध २ भट्टी ३ असेस, इम जो लिखिदैहैं पिहित एस ॥ २८ ॥

अप्पहि टरि तोतो वजत अज्ज, करिहो कित व्याहन सिसुन कज्ज ।

यह सुनत मान हगै दूर आनि, पठयो दलै सुहि लिखि सुहि

प्रमानि ॥ २९ ॥

सु दिखाइ जोधपुर लेख सोहि, जिनसोंहु लिखायउ मत जितोहि

पहु पत्र गंग रानहु स्व पत्र, तकि धर्म पठायउ तत्रतत्र ॥ ३० ॥

इम सोढे १ भट्टिन २ नियम आनि, पुनि नृप सुत व्याहन लिय

प्रमानि ॥

नृप मान सुता बहु गुनविधान, जिहिं नाम रामशीला १९२ १ सु

जान ॥ ३१ ॥

सोरत्न १९२ १ प्रथम कर तास साहि, बुंदीसकुमर आयो विवाहि ॥

सीला १०२ १ हु यहहि दुजे २ सनाम, रामकुमरि १९२ १ तीजै ३ सु

अभिराम ॥ ३२ ॥

श्रुत चोथै ४ राहिवदेवि १६१ २ सोहि, अभिधा चतुष्क ४ इम जास जोहि

वरिकुमररत्न १९२ १ पहिले १ विवाह, बसुव्रातवितरिलाहिकितिलाह ॥

पुरबुंदिय दंपति २ किय प्रवस, प्रनमैं पूजपन पय साहि सेस ॥

तोमर नृसिंह तनया द्वितीय २, राजकुमरि १६२ २ नाम जुगुनगरीय ॥

सुहिसहजकुमरि १९२ २ अभिधा दुर्सार, व्याहा पुर पट्टनि जाइ वीर

तीज्जी ३ जु जावति १९२ ३ नाम तास, भोजाउति चालुककुल सुभास

दुहिता मिलाप्रकी सुगुन देह, आयो विवाहि तिहिं कुमर एह ॥

चोथी ४ कछवाही बहुरि चाहि, वरनाथ सुता आयो विवाहि ॥ ३६ ॥

अभिधा अमानकुमरि १९२ ४ सु अमठ, बुंदीपुर आई कुमर व्यूढ ॥

गुप्त १ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २ दूरदर्शिता (दूरदेशी) करके ३ पत्र ॥ २६ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

॥ ३२ ॥ ४ नाम ५ धन का समूह देकर ॥ ३३ ॥ ६ गुण में भारी ॥ ३४ ॥ ७

नाम ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ८ चतुर ९ व्याहकर ॥ ३७ ॥

पितृलक्ष्मणसद्वलदुर्नाम पात, सोलंखी तस तनुजा सुहात ॥ ३७ ॥  
 स्यामा १९२।५ लाडकुमरि १९२।५ नाम सीर, व्याही सु पंचमा ५ रत्न  
 १९२।१ वीर ॥

गोपाल स्वसा गंगा १९२।६ जुगोरि, बिबही सु कुमार छडी बहोरि ३८।  
 निजभट तो जुगियदास नाम, लघुतनया ताकी यह ललाम ॥  
 बुंदीपुरीहि हुव तस बिबाह, रूपय व्यय बहु किय किति राह ॥ ३९ ॥  
 स्यामा १९२।७ हि दहर मोहनसुता हु, वरिआनी सप्तम बिरचि व्याहु  
 सीसोद भीमसुत अजबसीह, लाहि देवकुमरि २९२।८ तनया सु  
 लीह ॥ ४० ॥

व्याहतहुव रत्न १९२।१ हिं मह बिसेस, अष्टम बिबाह वरि ताहि एस ॥  
 अचलेससुता नवमी ६ उदूढ, गदियत कुल १ नाम २ हु तस सगूढ ॥ ४१ ॥  
 ॥ दोहा ॥

पतारानको अनुज पटु, सगतसिंह तस नाम ॥

तस बहु सुत अचलेस तैंह, लाहिय सुता जु ललाम ॥ ४२ ॥

अभिधाकरि रंभावति १९२।९ सु, नवमी ९ आनि निकेत ॥

रत्न १९२।१ कुमार बिलस्यो बिभव, हड्ड ६ १ न कुल जस हेत ॥ ४३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

नंदन दूजो हृदय नरायन १९२।२, व्याह सप्त ७ व्याहयो धरनीधन ॥

आदिनाम कमला १९२।१ चंद्राउति, निपुन कुंभतनया पावन नुति ॥

कुल सीसोद कृष्णकन्याही, ब्रजकुमरी १९२।२ दूजै २ इहिं व्याही

कुल कबंध तीजी ३ अखैकुमरि १९२।३, बलि जिहिं अनुपम  
 सुता लई वरि ॥ ४५ ॥

गंगाउत दुल्लह सुत गायो, नाम भवानीसिंह जनायो ॥

तनुजा नाम जसोदा १९२।४ ताकी, भरचोथी ४ व्याहिय खानि भाकी ॥  
 रानाउति खुम्मान सुता रुचि, सो दोलतकुमरि १९२।५ पंचमी ५ सुचि  
 पुनि दलेल मज्झु निबडिपति, वाकी सुता छठी ६ रंभावति १९२।६  
 तिमचालुक बग्घ सुता सप्तमि ७, जदुकुमरि १९२।७ सुव्याही बघहित जमि

॥ ४८ ॥

बिंबही पंच ५ भोज १९१।२ पीछें वर, सुनहु तेहु आवी सब सँभर ॥  
 जादव धनपालकी सुता जिम, अष्टम ८ मह वरि इंदुमती १९१।८ इम  
 कृष्ण गोम कन्या कमलावति १९२।९, नवमी ९ वरि सो पुर जस उन्नति  
 प्रामारी गनपति सुता प्रभुत, दसमी १० अभिजनकुमरि १९२।१०  
 वरीदुत ॥ ५० ॥

चिर ग्यारही ११ सुजानकुमरि १९२।११ चहि, लौनकरन रङ्गोर  
 सुता लहि ॥

बल्लभोत धनराज सुता बलि, अमृतकुमरि १९२।१२ बारही १२  
 कलिअलि ॥ ५१ ॥

इम पहिलैं १ अरु जनक अनंतर २, बारह २२ इदय नरायन १९२।२  
 वरि वरं ॥

अप्रजहुव अंतिम चउ ४ इनमैं, तोकं जनिय सोलह १६ खिल ८ तिनमैं ५२  
 अठ ८ नमैं तेरह १३ हुव अंगज, सुता तीन ३ प्रकटी तस संगज ॥

जनत भई जो जो तिय जिहिं जिहिं, तुम प्रभु सुनहु जथा कसति हिंति हिं ५३  
 ॥ हरिगीतसू ॥

तैं हैं जैत्रसिंह १९३।१ बडो १ सुत रु जसवंत १९३।२ पंचम ५ जानिये,  
 चौथी ४ जसोदा १९२।४ द्वे २ हि सोदर ए जने पहिचानिये ॥

दूजो २ प्रिया ब्रजकुमरि १९२।२ सुत बलराम १९३।२ दूजो २ देखिये,

१ खान २ कान्ति की ॥ ४६ ॥ ३ पवित्र ४ मध्य ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ५ हे चष्टबाण ॥ ४९ ॥  
 ६ विशेष स्तुति योग्य ॥ ५० ॥ अमृत कुमरी रूपी ७ कली का भ्रमर ॥ ५१ ॥  
 ८ बिना सन्तान ९ बालक ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

तीजी३ बड़ी१ कमला१९३१ तनै लघु विजयराम१९३३ सु लेखिये  
 क्रय बालकृष्ण१९३४ चतुर्थ४ सुत शृंगारकुमारि१९३१ बड़ी जनी  
 जिम रहऊरि अखैकुमारि१९३३ तीजी३हु एह द्वयीं जनी ॥  
 तँहैं छह्द केसव१९३६ सोहि कृष्ण१९३६ दु२ नाम सप्तम७चंद  
 १९३७ त्यों ॥

पंचमी५ दोलतकुमारि१९२५ पतनी उभय२ जनिय अतंद्र त्यों ॥५५॥  
 कन्या अमानकुमारि१९३१२ जो इनकाहि सो अनुजा कही ॥  
 लहि दिष्ट तिम रंभावती१९२६ छठी६हु पुत्र द्वयीं२ लही ॥  
 इहिं गर्भ दोलतसिंह१९३८ अष्टम८ पुत्र नवम९ प्रयाग१९३९ भो ॥  
 भनिये ब सत्तमि७ चालुकी जदुकुमारि१९२१ सुत जुग२ भाग भो५६  
 तस दहम१० मान१९३१० अमान१९३११ एगारहम११ द्वै२ हुव ए  
 तथा ॥

जहोनि अष्टमि८ इंदुमति१९३८ त्रितयी३ जनी सुनिये जथा ॥  
 सुत बारहम१२ अमरेस१९३१२ अक्खय१९३१२ इतरहम१३ तीजी३  
 सुता ॥

जिहिं नाम अमृतकुमारि१९३३ यह हुव सोलही१६ सब संजुता५७  
 जसवंत१९३५ पंचम५ पुत्र जुत तनुजात अंतिम१११२१३ तीन३ही ॥  
 लहि दिष्टवल इन च्यारि४ आतन ऊढ अग्रजता लही ॥  
 नव९ के चले कुल जो भिंदा लहि अगं करन सनामहे ॥  
 रु अनूढ१ ऊढ२ सुता त्रयी३ न लिखी तहाँ उपराम है ॥५८॥

॥ पादाकुलकम् ॥

बदत किते जेठो१ बलराम १९३२ हिं, किते विजयराम१९३२  
 हिं चहि कामहिं ॥

बडो जैत्र१९३१ तस कुल हुव विधिवस, अब दुर्विधंइम भजत

१ दो सन्तान २ आलसी ॥५५॥ ३ छोटी चहिन ४ भाग्य ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५ विवाह  
 करके ६ विना सन्तान ७ भेद ८ निश्चलि है अर्थात् इन तीनों के विवाह कहाँ  
 हुए सो हमने नहीं जाना ॥ ५८ ॥ ९ दरिद्री ॥ ५९ ॥

थान अस ॥५९॥

केसवदास१९२।३ तृतीय३ कुमार सु, व्याह पंच५ व्याहो नृप दैवसु  
रूपकुमरि१९२।१ पहिली१ कुमरानी, जो कूरम खेमसुता जानी ६०

रसु१ बसु२ अन्त्यानुप्रासः ॥

रानाउति दूजी२ राजकुमरि१९२।२, बर खंडारि उदयदुहिता बरि  
सुता प्रताप की जु सीसोदनि, तीजी३ रामकुमरि१९२।३ बरि ज-  
स तँनि ॥६१॥

रूपकुमरि१९२।४ चोथी४ रहोरिय, पित्थलकी पुत्री गुनगोरिय ॥

मह पंचम५ गोरि किसोर कुमारि१९२।५ सत्तलसुता बरी हित  
अनुसरि ॥६२॥

अप्रज यहहि पंचमी५ इनमैं, चतुर पंच५ सुत हुव च्यारि४ नमैं ॥

जेठो रूपनरायन१९३।१ जानहु, पहिली१ सुत सहि कर्ण १९३।१  
प्रमानहु ॥६३॥

मुंदरदास१९३।२ स्याम१९३।३ तीजे३ सह, तनय जकुट२ दूजी२  
कै हुव तह ॥

अजबसिंह१९३।४ चोथी४ तीजी३ तिम, तरनिमल्ल१९३।५ पंचम५  
चोथी४ इम ॥६४॥

पहिली१ चउ४ न जनैं ए पंच५ हि, इक्क१ हु न हुव सुता कि अलचहि ॥  
पंच५ सुत नमैं चउ४ सुत अप्रज, बडे कर्ण १९३।१ कोहि चल्पो कुल  
ब्रँज ॥६५॥

बढन१ घटन२ सबकै हि नियति बस, तँहैं बुध व्हे जु न मोद१  
सोकर तस ॥

क्रम दुव२ व्याह मनोहर१९२।४ के किय, तँहैं प्रभुराम२०३।४ सुन

१ धन देकरा १०। घशरचित्तर कर १९१।२ उरसव १९२।३ १४ जोड़ा ५ सूर्यमल्ला ६४।६  
मानों निषेध चाहकर अर्थात् अब बस है ऐसा चाहकर ७ समूह १५।८ भाग्यच-  
रा ९, चतुर होता है उसको न तो धर्म होता है और न शोक होता है ॥६९॥

हु जिम जे किय ॥६६॥

सीसोदनि प्रथम सिंहसुता, जो गंगा १९२।१ \* अभिधान गुन जुता ॥  
जहव रामसुता स्याना १९२।२ जिम, यह दूजी रकुमरानी तस इम ६७  
सबल सिंह १९२।१ गोपाल सिंह १९३।२ सुव, गिरि दुव २ एहि मनोह-  
र १९२।४ कै हुव ॥

जानिय सु न प्रसव जास जनिय, भेद नाम अग्रिम भकिरन भनिय ६८  
तीन ३ बल्लू १ मुख ॥ भुजिष्या तनय, सनकुल व्याहे तेहु नृप सनय  
जिहिं जिहिं रानी संतति जोजो, सूचित किय पहिले कर्म सोसो ॥

॥ दोहा ॥

पुत्रन दिय जेजे पटा १, किय सहति जे कृत्य २ ॥

सुनहु राम २०३।४ प्रभु तेहु सब; संतति क्रम अनुमृत्य ॥ ७० ॥

हृदयनरायन १९२।२ कुमर हित, दै कोटा १ वरदंग ॥

जिम दूजी २ आवाँ जुतहि, सुप्रहु दये हितसंग ॥ ७१ ॥

कति चौमाँ दिय केसव १९२ हिं, कहत बडोद १ कितेक ॥

जंपत कति अप्पिय जुग २ हिं, इम संसेहु अनेक ॥ ७२ ॥

बंभोरी १ अरु डावगी २, अप्पि मनोहर १९२।४ अत्य ॥

तिमाहिं बल्लू १ आदिक त्रिक ३ हिं, समुचित दिय हित सत्य ॥

॥ पटपात ॥

रानी जेठो १ राजकुमरि १९२।१ बापी इक १ कीनी ॥

बुंदीपुर बड विदित चतुर लोकन इम चीनी ॥

पहिले १ कटले पास द्वार पच्छिम ३ सैन दक्खिन २ ॥

जुपे बल्लनोति जस सरसवाढत कवि सखिन ॥

\* नाम ॥ ६७ ॥ १ स्वर्ग रूप अथवा शरीर के समान ॥ अगले मयूख में ॥ ६८ ॥

॥ पासवान के पुत्र १ नीति पूर्वक २ क्रम से ॥ ६९ ॥ ३ नियों के साथ ४ ह  
रामसिंह २ अनुसार ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ३ संदेह ॥ ७२ ॥ ४ अर्थ ८ इयित ॥ ७३ ॥  
५ भावही १० पद्विचारी ११ से



प्रभुगृह१निपान२उपवन३पुनि सु रतन१९२१राज्यकरतहु रचहि  
द्वारावतीहु इक१ हरिसदन मंडत भह भावी सचहि ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

भोज १९११२ भुजिष्या जो भनिय, फुल्ललता१ गुन फार ॥

तिहि लघु भोभू तालको, किय सु बहा कासार ॥ ७५ ॥

बहु सहस्रन करि दम्भ व्यय, नियत फुल्लसर १ नाम ॥

जिहि सक नव सर अष्टि १६५९ जहँ, रचिय ताल अभिराम ॥ ७६ ॥

पुनि सहस्रन उच्छव पगहु, दम्भन खरचि उदार ॥

तस अप्पन१ जुत भोज १९११२ को, किय करि जग उपकार ॥ ७७ ॥

विरच्यो उपवन १ भोज १९११२ बुध, नवलकखा१ तस नाम ॥

अब जहँ १ ताल२ रु पुर्व१ इत, रामवाग१ अभिराम ॥ ७८ ॥

महलन बिच बहल महल १, फुल्लमहल २ छवि फीत ॥

तिनके तर गजसाल ३ तिम, पहुँ विरचे जस प्रीत ॥ ७९ ॥

संभरनूप तीजो ३ सचिव, कायस्थहु इक कीन ॥

अभिधाकरि जयमल्ल ३ बह, अचिरत हुकम अधीन ॥ ८० ॥

बालचंद नामक बुधहि, जाँमितनय हुव जास ॥

बालचंदपाँडा१ विदित, अबहु तंदंकित आस ॥ ८१ ॥

तिम पहिले गहिलोतनी, अर्जुन १८८१ पतनी अथ ॥

ताल १ रच्यो जो जयवतिय १८८१ श्रीहरिमंदिर सत्य ॥ ८२ ॥

ताँल काम पर नियत तब, किय माधव कायस्थ ॥

अबहु तंदंकित घट्टे इक १, तारागढ दिस तथ ॥ ८३ ॥

१ मंदिर २ जलाशय ३ योग ४ द्वारकामें ५ उत्तम ६ आगले समयमें होनेवाला ॥ ७४ ॥

७ पासवान ८ बुद्धों की समूह ९ बड़ा तलाव बनाना ॥ ७५ ॥ १० रूपये ११ निश्चय १२

सुन्दर ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ १३ चतुर १४ पूर्व दिशा में ॥ ७८ ॥ १५ राजाने ॥ ७९ ॥

१६ नाम १७ निरन्तर ॥ ८० ॥ १८ भावना १९ मुहल्ला २० उसके नाम से जाना जाता २१ है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ २२ तालाब के कामपर २३ घाट ॥ ८३ ॥

समय न है सुमिरन सब न, जो सेसंडु रहिजाइ ॥  
 सुमिरि सु माधव घट्ट १ सम; अगै कहियत आइ ॥ ८४ ॥  
 सक बसु नभ सोलह १६०८ समय, पंचसिपमाघ प्रकास ॥  
 भव तहँ भूपति भोज १९१२ को, अतुल अोजको आस ॥ ८५ ॥  
 नयन बेद नृप १६४२ सक नियत, मिलि सित तेरासि १३ मग ॥  
 जनक पट्ट बैठो सु जहँ, खँटि बिरुद गहि खग ॥ ८६ ॥  
 समय बेद रस अष्टि १६६४ सक, सुक चंडतिर्यय ४ स्वेत ॥  
 उज्झो वपु नृप भोज १९१२ अब, आपति उचित उपैत ॥ ८७ ॥  
 है जु चूलियारामहद, तासौं दक्खिन ३२ तत्थ ॥  
 कुमार रत्न १९२१ तस दाह किय, सतीन अष्टक ८ तत्थ ॥ ८८ ॥  
 रानी दूजो२ कूरमी१, निपुन जसोदा १९१२ नाम ॥  
 काँवंधी २ जो जसकुमारि १९१३ वह तीजो ३ अभिराम ॥ ८९ ॥  
 भाग्यवती १९१४ चौथो४ भनिय, रानी सुहि रडोरि३ ॥  
 पुनिलालकुमारि १९१५ पंचमी, जहँ भल्ली ४ हित जोरि ॥ ९० ॥  
 इन चउ ४ रानिन कुल उभय२, सोभित करि बिहसंत ॥  
 धव वपु कुशांप स्व अंधकरि, अगिँ न्हान किय अंत ॥ ९१ ॥  
 चवी जु भल्ली पंचमी, ५ तुलसीवाट तदीय ॥  
 सु अब रंगमंडप सखिध, पूजित समुक्ति पदीय ॥ ९२ ॥  
 आदि१ रु छट्ठी६ अन्तिमा७, रानी तीन३ जरी न ॥  
 जरी भुजिँया चउ४हि जिम, हुंती जदपि कुलहीन ॥ ९३ ॥  
 ॥ मनोहरम् ॥

फुल्ललता १ रूपलता २ ललितकपूरलता ३,

१ स्मरण नहीं होता है वह २ वाकी रहजाता है ॥ ८४ ॥ माघ ३ सुदि ४ जन्म ५  
 घर ॥ ८५ ॥ ६ यश उपार्जन करके ॥ ८६ ॥ ७ ज्येष्ठ सुदि ८ चौथ ९ भाग्य ॥ ८७ ॥  
 १० आठ सतिषों सहित ॥ ८८ ॥ ११ राठोड़ी ॥ ८९ ॥ ९० ॥ १२ पति के १३  
 मृतक शरीर को गोदी में धरकर १४ अग्नि स्नान किया ॥ ९१ ॥ १५ उसकी  
 १६ चरण चौकी को पूजते हैं ॥ ९२ ॥ १७ पासवानें ॥ ९३ ॥

दिव्यलता४ च्यारि४ हु भुजिष्या जरी जानिये ॥

दाह जैहँ कीनो तिहिँ ठाम पीछै राजा रैन१२११,

बाग जो बनायो छारबाग सु बखानिये ॥

दूजी२ तीजी३ जे भनी भुजिष्या तिनके हु तैनै,

संकर १ रु गोवर्दन ३ प्रथित प्रमानिये ॥

रत्न १९२१ नरनाहको चरित्र अब अैहँ तहाँ,

उत्तकी पूरी रजपूती पहिचानिये ॥ ९४ ॥

॥ दोहा ॥

अष्ट८ सतिन जुत अधिपको, कुमर सङ्गि सृतकर्म ॥

रवि१२ दिन संजम१नियम२रहि, भोजिँ द्विजन दिय भर्म ॥९५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठदशशौ बुन्दीशभोज-  
चरित्रे भोजसंततिपाणिपीडनतत्सन्तानवर्णन १ भोजतद्राज्ञीतत्पा  
श्ववर्तिनीनिर्मापितस्थानवर्णन २ भोजपरासूभवनतदष्टसहधर्मिणी  
सहगमनं विंशतितमो मयूखः ॥ २० ॥

आदितस्यधिकद्विशततमः ॥ २०३ ॥

१ रत्नसिंह ने २ पुत्र ३ विदित ॥ ९४ ॥ ४ भोजन कराके ५ स्वर्ण दिया ॥९५॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति भोज  
के चरित्र में भोज के सन्तानों का विवाह और उनके सन्तानों का वर्णन १  
भोज के और भोज की रानियों तथा पाशवानों के घनाए हुए स्थानों का वर्णन २  
भोज का देहान्त और उसके साथ आठ सतियां होने का बीसमां २०  
मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ तीन २०३ मयूख हुए ॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

दोहा-बरस ऊन चालीस ३९ बय, असित आदि १ आषाढ ॥

हड्ड६१न पति तैंहँ रत्न१९२।१ हुव, पाइ पट्ट गुन गाढ ॥ १ ॥

हृदयनरायन१९२।२ कुल हुव जु, हिरदाउत्तर१९।२० कहाइ ॥

चउबीसम २४ भेद सु चलयो, इम हड्ड६१न विच आइ ॥ २ ॥

केसव भोजपउत्त५।२१कहि, केसवदास१९२।३ कुलीन ॥

उदित पचीसम २५ भेद घँह, हुव हड्ड६१न अधर्मान ॥ ३ ॥

सूनु मनोहर१९२।४को सबल१९३।१, जहाँगीर३८।१छिगजाइ ॥

रक्खि लोभ आश्रितरह्यो, पटा उचित कछुपाइ ॥ ४ ॥

तापीछैं लुपिगो सु तिम, जनन मनोहर १९२।४ जात ॥

न चली संतति दुहुँशन के१९३।१, प्रतिरोधक विधि पात ॥५॥

न तो छवीसम २६ भेद नृप, हड्ड६१न यह होतोहि ॥

पै अब माधव१९३।२ बंस पर, जैंहँ अंकहु जोर२६हि ॥ ६ ॥

बैजनाथ सितैं बिदित, अनैल दिसरू छिग आहि ॥

बाग मनोहर१९२।४ को अबहु, तुम प्रभु जानहु ताहि ॥ ७ ॥

रायमल्ल१९१।३ सुत राम१९२।१जिहि, पहिलैं दूदा१९१।१ पास ॥

कछु दिन कछे सिसु कुमर, अंतर जनक उदास ॥ ८ ॥

बारह१२ हायन अब्द वय, इम दूदा१९१।१ छिग एस ॥

बाहिर रहि खल इक१ बरस, दोर्यो बुंदिय देस ॥ ९ ॥

मुव दूदा१९१।१ तव रहि कुमति, सिरीफखाँ छिग सोहि ॥

तस पंचन बनि मुख्य तैंहँ, दुष्ट बढ्यो कुलबोहि ॥ १० ॥

गो लैवे चरनादिगढ, सोहु सिरीफ प्रसंग ॥

वहु अवाच्यं बदि जवन जव, अरि१ हुव प्रत्युत अंग ॥ ११ ॥

१ कृष्णपंच ॥ १ ॥ २ ॥ २ भोजपोते ॥ ३ ॥ ४ ॥ ३ बंश ४ राकनेवाला ब्रह्मा  
ही पाया जाता है ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५ अग्निकोण में ॥ ७ ॥ ८ ॥ बारह ६ वर्ष पर्व  
त ७ बारह वर्ष की अवस्था से दूदा के पास रहकर ॥ ९ ॥ दूदा ८ मरा तब  
॥ १० ॥ शरीफखाँ के ९ संबंध से १० छोटे वचन ११ उलटा ॥ ११ ॥

वेतालः॥खिजिरैन१९२११कुमरसिरीफखान सु मिलत तिम लियमारि  
 रन भीरु गो भजि रामचंद्र१९२११हु आर्य बरि उतारि ॥  
 किय रीस बुंदिय सीस अकवर३७११ईस सुनि यह काम ॥  
 मृत जो नबाब तदीय मनुजन धीर दिय धन१ धामर॥१२॥  
 पठयो प्रयाग सिरीफसुत इहिं बहुरि मूबा अप्पि,  
 रहि तास पासहु रामचंद्र१९२११ थक्यो न रिपुपन थप्पि ॥  
 पुरकासिकाश्चरनादि२ सुख तजि रत्न१९२११ बुंदिय पत्त,  
 अपनाइबे लिय रामचंद्र१९२१११ सिरीफसुत२अनुमत्त॥१३॥  
 पुनि राजमंदिरकी विभूति सु लुट्टिलाइ प्रयाग,  
 दुवर बेर बुंदिय देस दोरि दयो स्ववंसहिं दाग ॥  
 अब रत्न१९२११ भूप हन्यो यहै बलि आत तीजी३ बेर ॥  
 कछु काल पुब्बहि रायमल्ल१९१३हु बास किय दिवकर१४  
 संगोद्व१ सहित पलहायथा२ पुर यो तदीय उतारि,  
 मग सुद्धि रक्खि रु रामचंद्र१९२११ लायो सु दोरत मारि ॥  
 कति ताहि भोज१९१२ हन्यो कहैं नृप हेरु अब रत्नेस,  
 बलि बुद्धिचंद्र१९२१३ तदीय भूत सु बुल्लयो सविसेस॥१५॥  
 सुत रायमल्ल१९१३ पितृव्यकां तीजो३ यहै सनमानि,  
 हय१ हथि२ दैरु कक्षो करी खल रामचंद्र१९२११हि हानि ॥  
 जिहिं बुद्धिचंद्र१९२१३हि वहाँ दयो पुरसारथल१ हित जोरि,  
 बलि जाइ कै १ताके हि कुल घर आइहैं२सु बहोरि॥१६॥  
 दस१० रायमल्ल१९१३ तनूज तिनविच पंचपकुल धरि दिष्ट,  
 उनमें बडो वह रामचंद्र१९२११ बज्यो दिवान अनिष्ट ॥  
 मुरि सत्रु भो कुलकोहि रत्न१९२११ सुतो लयो तिन मारि,

१रत्नसिंह ने २सुख विगाडकर ३स्वामि ४ उसके लोनों को ॥१२॥ ५ आदि ॥१५॥  
 ६ स्वर्ग गया ॥ १४॥ ७ उसके ८ खेवर रखकर ॥१५॥ ९ काके का ॥१६॥ १० पु-  
 त्र ११ कुल को धारण करनेवाले १२ बुन्दी के भूपति का अनिष्ट ॥

तस रामसिंह १९२।२ द्वितीय २ भ्रातहु टेक निर्गुन टारि ॥ १७ ॥  
 बुध तास भ्रात तृतीय ३ विक्खि सु बुद्धिचंद्र १९२।३ विसासि,  
 पट्टा दयो लिखि सारथल १ पुर रैन १९२।१ नृप गुनरासि ॥  
 इम अप्प भूपति व्है इहाँ सब राज्य स्वीयै सम्हारि,  
 बलि नैर दिल्लिय पत्त सद्धन साह चित्त बिचारि ॥ १८ ॥  
 जिहिं स्वीय नाम सलेमगढ १ किय जो सलेम ३८।१ सजोर,  
 अब वज्जि साह जहाँनगीर ३८।१ सु प्रबल न गिनत ओर ॥  
 पतनी अयाज सुता करी घर डारि जो अति प्रेम,  
 सो हरम नूरजहाँ १ कहाइ बडी बिमोहि सलेम ३८।१ ॥ १९ ॥  
 चउ ४ अब्द तो पति तास सेर हन्यो सु ज्ही दिय चाहि, ॥  
 न सक्यो सु मिलि रहि दूर दुखित नारि संक निवाहि ॥  
 इक १ कालपरतहि दिडि हरम सु संक तस तजि एह ॥  
 उरसो लगाइ रहयो अचानक दोरि नेह अछेह ॥ २० ॥  
 अति नम्रता करि पाय चुंबि प्रसन्न तिहिं करि आप ॥  
 लिय भर्तु माफ कराइ दुव २ दिस मंडि हिन संलाप ॥  
 सर तर्क सोलह १६६५ मान सक इम होइ तस बस साह ॥  
 बाजीगरी जलु सिक्ख बंदरकै तहुंक्ति निवाह ॥ २१ ॥  
 किन्नो वजीर १ अयाज १ तास पिता मुसाहब काम ॥  
 अरु भ्रात आसिफखान २ को किय दंडनार्यकै २ आर्य ॥  
 अनुजात तास द्वितीय २।३ को दिय ओर कलु अधिकार ३ ॥  
 भेज्यो महौबतखान ४ दे सूवा सम्हारन भार ४ ॥ २२ ॥  
 औसो वजीर भयो कूँती यह साह स्वसुर अयाज १ ॥

१। ७। १ देखकर २ अपने राज्य को ३ फिर ४ नगर ॥ १८ ॥ ५ अयाज की पुत्री नूरजहाँ  
 ६ विशेष मोहित करके ॥ १९ ॥ ७ लज्जा अर्थात् उसके पति शेरशाह को मा-  
 रा था इस लज्जा से चार वर्ष पर्यंत नूरजहाँ से नहीं मिल सका ॥ २० ॥ ८ अ-  
 पराध ९ स्नेह के वचन बोलकर १० प्रमाणवाले संवत् में ११ मानों १२ उसके कथन  
 का निर्वाह करके ॥ २१ ॥ १३ सेनापति १४ सब सेना का १५ छोटा भाई २२ १६ पण्डित

जिहि न्याय अदल जमाइलिय जस रक्खि अपजस लाज ॥  
 जगमें प्रनर्तन अदल\*बीजहु गिनत सु जहाँगीर २८॥१॥  
 पे नूरमहल<sup>१</sup>हि तास सूचत न्याय लंघन पीर ॥ २३ ॥  
 यहतो अयाज महा धुरंधुरकी अदालति<sup>†</sup>आहिं ॥  
 मृगराज<sup>१</sup>सों अजर बादमंडिय न्यायमग जिहिं माहिं ॥  
 अवरोध नूरजहाँ<sup>१</sup> गैरें लागि साह<sup>२</sup> हुव जमुं अस्त ॥  
 तोहू अयाज जमाइ राज्य करे सब रिपु त्रस्त ॥ २४ ॥  
 सुमरयो प्रजाहु न साह सब बिधि याहि जानि सहाय ॥  
 रहिबे दपो दुख काहुकै न समंप्पि समुचित राय ॥  
 नहि साह<sup>१</sup> नूरजहाँ<sup>२</sup> बिना कवहू सकयो रहि नैक ॥  
 चुगली गिनी हितकी भनी तउ आनि तापर चैक ॥ २५ ॥  
 नृप सूर जोधपुरेसकी तनयाहु नारि निकेत ॥  
 चिर तास बास अलंघि कहूँ अवकास उत दिय चेत ॥  
 जब नूरमहल<sup>१</sup>अगम्य<sup>२</sup>है रज आदि कारन जानि ॥  
 तोहू सकै न सु और<sup>२</sup>सों मिलि ख्यात प्रभुपन तानि ॥ २६ ॥  
 प्रच्छन्न तासन द्वै<sup>२</sup> घरी कहूँ क्योंहु अवसर पाइ ॥  
 जबहू सु संकित लंघि मासन और तिय ढिग जाइ ॥  
 इम तकि ओसर साह गो रठोरि<sup>२</sup>केहु अगार ॥  
 मन भीत तोहु टिकयो मुहूर्तहि मन्नि असहन भार ॥ २७ ॥  
 गहि काच भोजन भिन्न ताविच पेय<sup>३</sup> समुचित गेरि ॥  
 हसि नम्र मूचि भई सु हाजरि कौत्सयति मुख हेरि ॥

इन्साफ का\* कारण ॥ २३ ॥ †है ? जनाने में २ मानों ॥ २४ ॥ ३ स्मरण नहीं  
 किया उचित धन देकर ५ किसीने हित की बात कही वह भी चुगली (पिशुनता)  
 जानकर १ क्रोधित हुआ ॥ २५ ॥ ७ लुरासिह की व्यवहृत समय तक ८ रजस्वला  
 आदि कारणों से गमन करने योग्य नहीं रहै तब ॥ २६ ॥ १० कामदेव को ॥ २७ ॥  
 ११ पात्र १२ पीने का उचित पदार्थ डालकर १३ कटाक्षवाला मुख देखकर

सल हास\*नछहैं दै कहयो किम पात्र भिन्न असुख ॥  
 विहसी सु बुल्लिय रावरे प्रिय भिन्न पानहि बुद्ध ॥ २८ ॥  
 सुनि रुठि आयउ साहसो रु गँदै किते पुनि गोन ॥  
 भो रत्त नूतन नारिप्रति जिम बाल धारिय भोन ॥  
 दिन १ रत्ति २ की नहि सुखि दिखिय यों सखेम ३८१ अचेत ॥  
 सिखवैं जु नूरजिहाँ १ सुही विरचैं सु भीसमवैत ॥ २९ ॥  
 बैठै सभाहु अयाज प्रेरित क्योंहु जो कछु वेर ॥  
 कर तोहुं पिठि लग्योरहैं पटछन्न वा तियकर ॥  
 जब द्वैरहि अंग रहै जुरे तबही परैं जर्क ताहि ॥  
 यह रीति साह गही चही हु न नीति नैक उमाहि ॥ ३० ॥  
 इत भ्रात संकर २ को चमूषति रक्खि बुद्धिय अत्थ ॥  
 संबोधि पट्ट कुमार गोपियनाथ १९३१ को हित सत्थ ॥  
 इम रत्न १९२१ भूपति साह सेवन पत्त दिखिय अप्प ॥  
 देखी सु साह दसा असाहुं प्रभुत्व खोइ कुदप्प ॥ ३१ ॥  
 जबही सभा अवकास भो तब तत्थ हाजरि जाइ ॥  
 उपेदा १ निछावरि २ कै रहयो निजठाँ खरो नृप आइ ॥  
 कुसलत्व पूछि रु साह अक्खिय आत क्यों चित किन्न ॥  
 नृप किन्न विन्नति देत दुष्टन रोध अंतर दिन्न ॥ ३२ ॥  
 कछु अब्द भूष रहयो तहाँ इम ताहि सदन कज ॥  
 अवनीस अज्ज गये सबे तिम को रहैं सुरि अज्ज ॥

\* नासिका में सल डालनर १ हे चतुर आपको भिन्न पात्र ही  
 प्यारा है ॥ २८ ॥ कितने ही २ कहते हैं कि फिर कभी नहीं गया  
 ३ आसक्त ४ जितप्रकार धाय के घर में बालक रहे तिसप्रकार ५  
 डर के साथ वही कार्य करता था ॥ २९ ॥ ६ अयाज की प्रेरणा से ७  
 तो भी पीठ पर नूरजहाँ का हाथ लगा रहता था ८ चैन ॥ ३० ॥ ९ सेनापति  
 १० गया ११ आप १२ बादशाह की बुरी दशा देखी १३ प्रभुता गुमाकर १४  
 कुदप ॥ ३१ ॥ १५ नजर १६ देरी क्यों का ॥ ३२ ॥ १७ आर्य १८ आज वससे सुख



इत साहके स्वसुरत्न मोदित जोधपुरपति एह ॥

नृप सूर देह बिहातभो गिन तोहु जीवन नेह ॥ ३३ ॥

काबंघि गह्विय तास लैं गजसिंह पट्ट कुमार ॥

आयो सु पै तँहँ साह सेवन एह निज अनुसार ॥

इहिं रत्न१ कोँ गजसिंह२ कोँ गज खास इक१ इक१ अप्पि ॥

मन्थ्योँ स्वसालेक तोहु निज इक१ है विसेस समप्पि ॥ ३४ ॥

अंग्रेज २ अकबर३७१ बेर छप्पन अष्टि१६५६ संवत आइ ॥

करते भये क्रय१ बिक्रय२ दिक जे स्वसत्यं जमाइ ॥

अबलोँ सबै लखते भये पट्ट अज्ज मिच्छरन अन्न ॥

बिपरीत त्यों चलते लखे दुव२ काय१ मानसर२ बैन३ ॥ ३५ ॥

अब आइ दिखिय अह रस खट इंदु१६६८ संवत एहि ॥

उपदा निवेदि अनेक अद्भुत साह मन सु बिसेहि ॥

निज बुद्धितैं कलके रचे घटिकाँ१दि जंत्र अनेक ॥

के दूर देखन जंत्र दर्पन२ तुपक३ क्रीडन४ केक ॥ ३६ ॥

नाना प्रकार दुकूलै५ दर्पन भाजना६दि निवेदि ॥

भरि भेट नूरजिहाँ१ नवावर२ नृपा३दि सब मन भेदि ॥

करि त्यों वजीर ४ हु कोँ प्रसन्न निकासि अप्पन काम ॥

धन मुँल्ल दै लिखवाइ लिय कछु नैर सूरति१ धाम ॥ ३७ ॥

खाडी तँदुत्तर पास घोघा २ बंदर रु खंभात ३ ॥

विरचे अहमदाबाद४ जुत चउ४ ठाम कौठिन ब्राँतें ॥

सौराष्ट्र१तैं तापी२ नदी लग कोन नैर्ऋत४ सीन ॥

कर कौन रहै १ स्वसुरपन से २ सूरसिंह ३ जीने से स्नेह जानता दुँधा तो भी ॥ ३३ ॥ ४ राठोड़ों की गादी ५ साला ६ घोड़ा अधिक दिया ॥ ३४ ॥ अकबर के ७ समय में ८ मोल लेना ९ बेचना १० अपनी सत्यता जमाकर ११ आर्य और यवनों के १२ घर देखे १३ मल और वचन से ॥ ३५ ॥ १४ नजर १५ उन्होंने वादशाह के मन में प्रवेश किया १६ घड़ी आदि १७ दूरबीन ॥ ३६ ॥ १८ बख्ख १९ काच के पात्र २० मूल्य (कीमत) देकर ॥ ३७ ॥ २१ उसके उत्तर दिशा में २२ समूह

निज बासकौं इन पुढ्य यौं चउ४ ठाम डारिय नीम ॥ ३८ ॥  
 सोदागरी पट्ट पुत्र१ मित्र२ कलत्र३ संगि४न अत्थ ॥  
 अंग्रेज ए रहिवे लगे घर मंडि तब सैन अत्थ ॥  
 उपेदा अनेक प्रकार ओरहु अज्ज१मिच्छ२न अप्पि ॥  
 मन१बैन२धर्म३ अधर्म४ लौं सबके लये सब मप्पि ॥ ३९ ॥  
 बानिज्जके व्यवहारतैं बसु संचि लक्खन ज्ञात ॥  
 लाखि जेयें लंडनलौं रहे इतको उदंतैं लिखात ॥  
 पहिलैं हि अकंबर३७१ के अनंतर भौन१ इत खिन पाइ ॥  
 भेज्यो अयाज बजीर दक्खिन ३२ सेसैं जित्तन भाइ ॥ ४० ॥  
 सुत जगतसिंह मरयो जु तस सुत मुख्य जु महासीह३ ॥  
 वह स्वीय नैत्तिय संगलै तैंहें मान गो जय ईहें ॥  
 आसेर१गढ गत जित्ति जिहिं बुरहानपुर२ अपनाइ ॥  
 जैंहें मंजरा१ तापी१ धुंनी मिलि जात तैंहें पुनि आइ ॥ ४१ ॥  
 जिम सप्तपुटैं गिरिको प्रदेश१ रु धूलिकारगत जित्ति ॥  
 किय वाह वाह कहाइ यौं कछुवाह अप्पन कित्ति ॥  
 जबही मुहुम्मद १५१ नाम तुगलक ३ पंद्रहम १५ जवनेस ॥  
 दिल्ली उजारि लग्यो बसावन देवगढ २ सह देस ॥ ४२ ॥  
 अरु देवगढ १ अभिधान दिय आबाद दोलत आदि२ ॥  
 बसिवे लग्यो तिहिं राजधानिय रक्खि जो हठ वादि ॥  
 सैंकको चउदहमौं१४ संतक१००जो होत पूरन जत्थ ॥  
 तुगलक३मुहुम्मद साह१५१वहाँ बसिवो बिचारिय तत्थ ॥ ४३ ॥

॥ ३८ ॥ १ स्त्री २ साथी ३ तब से ४ यहाँ रहने लगे ५ नजराना ६  
 आर्य ७ यवनों को देकर ८ माप लिये ॥ ३९ ॥ ९ धन इकट्ठा करके  
 १० समूह ११ जीतने योग्य देखकर १२ वृत्तान्त १३ पीछे १४ मानसिंह को  
 १५ समय पाकर १६ बाकी के देश को ॥ ४० ॥ १७ अपने पोते को १८ विजय  
 की इच्छा से १९ तापी नदी ॥ ४१ ॥ २० सप्तपुड़ा पर्वत २१ कीर्ति ॥ ४२ ॥  
 देवगढ का २२ नाम दोलताबाद दिया २३ विक्रम के शक का ॥ ४३ ॥

बसि पै सकयो न गयो सु दिल्लिय लौ प्रजाहिं बहोरि ॥  
 कर प्राज्य भार प्रजा तंदोय सहे महा दुख कोरि ॥  
 वह देवगढ अपनाइवै प्रठयो सु मान पैउत्त ॥  
 जिहिं दुर्ग पत्तन जुद्ध मै न भयो यहें जय जुत्त ॥ ४४ ॥  
 अन्नादि आगम रोकि तिहिं चिरं बेढि न रह्यो एह ॥  
 दृढ जुद्धमें तैं मान नत्तिय स्वर्ग गो तजि देह ॥  
 सुनि काम आयउ स्वीय नत्तिय मान तैं अति सोचि ॥  
 असुंहीन तुल्य भयो तर्थापि सु साह दित आलोचि ॥ ४५ ॥  
 जितं जो१ नभो तिहिं त्योंहि तजि जितं थान२ आन जमाइ ।  
 अरही मरयो तिहिंसोक आकुल मान १ निज पुर आइ ॥  
 नैती तनै जयसिंह४ तब आभैर हुव नरनाह ॥  
 जुज्झारसिंह ३।२ पितृव्य जिहिं वैठो अलाय दुबाह ॥ ४६ ॥  
 ताकोहि बंस अलाय १ ईसरदा२दि द्रंगन तत्थ ॥  
 सु वजै दुर्नामन मानसिंहोत १ राजाउत २ सत्थ ॥  
 जुज्झार ३।२ को यह बंस जु महासिंह ३।१ को अनुजात ॥  
 भो भोज १९१।२ को दोहित्र सो रघुनाथ३।३तस लघुभ्रात ॥  
 इनको भतीज सु भूपद्वै जयसिंह ४।१ पुर आभैर ॥  
 निज साह सेवन एह आयउ सोहु दिल्लिय नैर ॥  
 गजसिंहसौ पहिलै गजा१दिक २ तत्थ अप्पिय ताहि ॥  
 यह वत्त आँदि १ तंदंत२ दृढ ६१।१ कबंध२ आगम आहि ॥ ४८ ॥

?हासिल के बहुत भार से २उसकी प्रजा ने इमानसिंह ने अपने पोते को भेजा  
 ॥ ४४ ॥ ४ आना ५ बहुत समय तक घेरा देकर ६ मानसिंह का पोता ७ मरे  
 हुए के समान होगया ८ तो भी ९ हित विचारकर ॥ ४५ ॥ १० विजय नहीं  
 हुआ उसको उसी प्रकार छोड़कर और ११ विजय कियेहुए स्थान में आण  
 जमाकर १२ शीघ्र ही १३ पोता का पुत्र १४ काका १५ वार ॥ ४६ ॥ १६ छो-  
 टा भाई ॥ ४७ ॥ १७ यह वार्ता पहिले की है १८ जिसपीछे १९ आना हुआ ॥ ४८ ॥

अंग्रेज २ कोठिन बांधियो इनसौहु उत्तर एह ॥  
 अब साह लघु सुत खुरम ३९१२ विरचित अनैय सुनहु अछेह ॥  
 खुसरो ३९१२ जु अग्रज कैदहो खल ताहि कछु बिधि खंडि ॥  
 मन बप्प गहिय लैन चाहि विरोध तासन मंडि ॥ ४९ ॥  
 जगतेस २ पुत्र रुमान १ नत्तिय काम आयउ जत्थ ॥  
 तजि नैर दिखिय भजिगो सु सहाय पावन तत्थ ॥  
 मिलि बप्प बैरिनसौ छली तिनकोहु बंट मनाइ ॥  
 लग्गो सु दिखिय देस दब्बन जोर तोर जनाइ ॥ ५० ॥  
 पठयो महोवतखान तापर साह वै दल पूर ॥  
 करि जुद्ध जातहि खुरम ३९१२ काँ सु भजाइ आयउ सूर ॥  
 जनके कहंत बजीर प्रेरित साह गो तिहिं जुद्ध ॥  
 वरनै किते सु नवाब गो तिहिं त्यों लखो जय बुद्ध ॥ ५१ ॥  
 बीजापुरादि अपार्च्य मिच्छन लै सहाय बहोरि ॥  
 दिल्लीस देस लग्यो सु लुट्टन नर्मदा लग दोरि ॥  
 इम होत दिस दिस विक्ख बिग्रह गर्व गोरहु आनि ॥  
 बदलेहि बारियदुर्ग बलि जवनेस अलसहिं जानि ॥ ५२ ॥  
 खिच्ची १३ हु ईस्वरदास सो लहि छिद जो गहि खग्न ॥  
 इतकाँ मऊ १ पुर पैठि गो पुनि लै स्वबीरन अग्न ॥  
 इम रत्न १९११सौं तब साह अक्खिय गोश्वारिय गंजि ॥  
 भिरि हड्ड ६१ जातहि लै मऊ १ इत दर्प खिच्ची १३ न भंजि ॥ ५३ ॥  
 मम बीर जात कुपुत्र पै तुम जाहु पुनि तिनसाँहि ॥

अंग्रेजों का दक्षिण में कोठियें बांधकर रहने की वार्ता इससे भी १ पीछे की है. खुरम की रची हुई २ अनीति को सुनो ३ भारकर ॥ ४९ ॥ ४ तहां ५ पिता के शत्रुओं से मिलकर ६ हिस्सा ॥ ५० ॥ कितने ही लोक कहते हैं कि बजीर की उपेक्षा से बादशाह ही उस मुझ में गया था ॥ ५१ ॥ ८ दक्षिण के यवनों से ९ गौड़ क्षत्रिय भी घमंड लाकर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

नृप बंधि? आनहु मारि? कै तिहिँ छोरियो सुभ नाहिँ ॥  
 इम सिक्ख लौ नृप आइ बुंदिय सजि अद? अनीक ॥  
 पंठयो सु बारिय दुर्गपैं वह पुजि बाहु प्रतीक ॥ ५४ ॥  
 तँहँ पुत्र कर्ण कबंध को जिहिँ नाम अंबिदित? ताहि ॥  
 जिम गोर जुगियदासको लघुपुत्र सुंदर? जाहि ॥  
 करिकैं चमूर्पति पिछ्यो दल गोर जितन कज्ज ॥  
 रठोर? गोर? उभै? गये बनि सुख्य दब्बन रज्ज ॥ ५५ ॥  
 जयभो न ह्यौ तँहँ होत संसर्य घोर? गोर? जुरे? कि ॥  
 मँन क्योंहु गोर? कबंध? के इत माँहि माँहि गुरे? कि ॥  
 प्रँतिमल्ल गोर बलिष्ठ बारिय त्यों सहेन परे? कि ॥  
 कछु छब्यौसौं जुरिकैं अचानक ए अधीर करे? कि ॥ ५६ ॥  
 विधि कोहु होहु परंतु बुंदिय चकैं आर्य विगारि ॥  
 मुरिकैं भज्योहि चमूप जुग? जुत भीरु गति मति मारि ॥  
 इत गोर गजिय दुर्ग बारिय रक्खि अप्पन आन ॥  
 सुनि हारि सो इत दुर्मर्ना हुव रत्न? १९२? तँ सुलतान ॥ ५७ ॥  
 इत आत भजि अनीकिनी पहु रत्न? १९२? त्यों अनखाई ॥  
 रठोर? गोर? उभै? दये निज देसतैं निकराइ ॥  
 रठोर कर्ण? प्रसन्नभो निज पुत्र कहन रैन? १९२? ॥  
 न परंतु जुगियदास? भो रिस आनि स्वसुरहु नैन ॥ ५८ ॥  
 चढिगो मऊ? पुर लैन भूपहु सजि दुद्धर चकैं ॥  
 वह कहि खिखिय? अप्पनो करि देस इहु? १९३? अंक ॥

आधी? सेना सजित करके? अङ्गों सहित खुज पूजकर ॥ ५४ ॥ जिसका नाम अनर्ही  
 मालूम है ४ सेनापति करके ५ भेजा ६ गौड़ों को ७ राज्य ॥ ५५ ॥ ८ सन्देश गौड़  
 और राठोड़ों के मन परस्पर लुड़े १० शत्रु ११ छल से युद्ध करके ॥ ५६ ॥ १२ बु-  
 न्दी की सेना १३ लुख बिगाड़ कर १४ उदास ॥ ५७ ॥ १५ सेना १६ राजा रत्नसिंह  
 ने क्रोध करके ॥ ५८ ॥ १७ चक्र (सेना) १८ हाडों का धर्य

थित नैर बुंदिय भ्रात संकर२\*दंडनायक थप्पि ॥  
 स्वकुमार गोपियनाथ१९३१कोँ तिम राज्य भार समप्पि ॥५१॥  
 जवनेसके दलमें मिल्यो नृप रत्न१६२११ हू हुत जाइ ॥  
 उततैं सु दिल्लिय+बाहिनी नृपतैं मिली मग आइ ॥  
 गजसिंह१ भूप कबंध त्यों जयसिंह२ क्रूरम गज्जि,  
 सह त्यों महावतखान३ मिच्छ अजीमवेग४हु सज्जि ॥६०॥  
 इत्यादि साह प्रबीर मिलतहि रत्न१९२११तैं हित आनि,  
 मन इक्क१ ठानि चले सबै गहिलौन खुरुम३९१२हिँ मानि ॥  
 इत नैर बुंदिय उर्फन्यों सठ गँब्ब१ जुब्बन२ साथ ॥  
 नरनाह रत्न१९२११ कुमार पट्टप नाम गोपियनाथ१९३१॥६१॥  
 दस इक्क१ व्याह दयो विबाहि जु भूप रत्न१९२११ उदार,  
 परदार संग रच्यो तथापि सु मार मत्त अपार ॥  
 चंदेरनी इक्क ब्रह्मनी अति रूप सोमित चाहि,  
 तरुनत्वं दर्प कुमार बुँल्लि भँजैं तिरोहित ताहि ॥ ६२ ॥  
 इक्क१ दैर अनेहँ दुरै कुकर्म तथा न संतैत एह,  
 गिनि धर्महीन कुमारकी निंदा बढी प्रतिगेह ॥  
 जब रत्न१६२११ बुंदिय नैर आयउ तत्थ तेहु द्विजाँत,  
 मिलि सर्व पुच्छत यों भये पुर इक्क चोर न मात ॥ ६३ ॥  
 ताको बँ हाइ करैं कहा हम रत्न१९२११याँ सुनि तत्थ ॥  
 सुतकोँ न जानि कह्यौ करो तुम जो बनेँ सु समत्थ ॥  
 जानैं स्व पुत्रहि चोर तो कारीधरैं हुत जाहि,  
 औसो यहै नृप जास सर्व प्रजा स्वसंतति आहि ॥ ६४ ॥

\*सेनापति ५९१। सेना १ साथ ॥१०॥ २ बडा ३ गर्व (घमंड) ४ जोवन के साथ ५ राजा  
 रत्नसिंह का ॥ ६१ ॥ ६ पराई स्त्री ७ तो भी ८ अपार कामदेव से मरत होकर  
 ९ ब्राह्मणी १० तरुणपन के ११ घमंड में १२ बुलाकर १३ सेवन करें १४ गुह  
 ॥ ६२ ॥ १५ समय १६ निरन्तर नहीं छिपता १७ ब्राह्मणों ने मिलके पूछा कि  
 ॥ ६३ ॥ १८ अब १९ शीघ्र कैद करदेता सब प्रजा २० अपने सन्तान के सदृश है

सुनि गुप्त चोर पुकार सो दैन अकिख समुचित दैन,  
गय साहके दलसंग दकिखन २।३ खेह ठंकत गैन ॥  
बुंदीस पट्ट कुमारसों अवसान जो हुय वत्त,  
सुनिये वै हे प्रभुराम २००।४ सूचन ठाम सोहु समत्थ ॥६५॥

॥ दोहा ॥

गोपीनाथ १९३।१ कुमार गुन, इतर सु जस अवदात ॥  
लंपटपन १हि कलंक २लागि, विदित मूढपन वात ॥ ६६ ॥  
क्रम उपयम आदिक कथन, अखिलहि तास उदंत ॥  
आयो अवसर सुनहु अव, समुक्ति जथातथ संत ॥६७॥  
गोपीनाथ १९३।१ प्रसंग गत, सब भ्रात १ रु संतान २ ॥  
नियंत इहाँ कहियत नतो, संभव रत्न १९२।१ वसान ॥६८॥

श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठराशो बुन्दीशरत्नसिं-  
हचरित्रे बुन्दीदेशधावकरामचन्द्रवधोत्तररत्नसिंहदिल्लीगमन १ नूर-  
जहांवशवर्तिजहांगीरास्तप्रायीभवननूरजहांजनकप्रधानामात्यायाज  
प्रशंसासादन २ योधपुरेश्वरशूरसिंहमरखोत्तरपट्टपुलंगजसिंहसिंहास  
नाक्रमण ३ विविधवस्तुनिवेदनप्रसन्नजहांगीरक्रीतसूरतिनगर १ घो-  
धावनन्दरखंभात ३ अहमदाबाद ४ प्रदेशाङ्गलपण्यगृहनिर्माणनिवसन ४

॥ ६४ ॥ उचित १ दण्ड देना कहकर २ आकाश को ३ अन्त में जो चार्ता हुई  
सो ४ अब हे प्रभु रामसिंह ५ सूचना करने के स्थान पर सब सुनो ॥ ६५ ॥  
६ उज्ज्वल ॥ ६६ ॥ ७ विवाह ८ उसका वृत्तान्त ९ हे सन्त (अष्ट) ॥ ६७ ॥  
१० निश्चय ११ रत्नसिंह के अन्त पर कहना सम्भव था ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के प्रपति रत्न-  
सिंह के चरित्र में बुन्दी के देश में दौड़नेवाले रामचन्द्र को सारकर रत्नसिंह  
का दिल्ली जाना १ नूरजहां के वश में होकर जहांगीर का अस्तप्राय होना  
और नूरजहां के पिता चर्जीर अयाज का प्रशंसा पाना २ जोधपुर के राजा  
सूरसिंह के देहान्त होने पर उल्लेख पादवी पुत्र राजसिंह का मरी वेदना ३ अ-  
नेक पदार्थ भेट करने से बादशाह जहांगीर को प्रसन्न करने सुगम देकर सूर-  
ति नगर, घोधावनन्दर, खंभात और अहमदाबाद में अंग्रेजों का कोठियां ब-

अमात्यप्रेषितकूर्मभानसिंहाशेरदुर्गखुरहानपुरादिप्रदेशविजयप्रशंसा-  
पात्रीभवन ५ स्वपौत्रमहासिंहमरणमृतप्रायामेरागतमानसिंहमरणो-  
त्तरतत्पौत्रजयसिंहभूपतीभवन ६ जहांगीरात्मजखुरमपितृप्रतीपदि-  
ल्लीनिष्क्रमणानन्तरपठानमोहोपतत्वां पराजयन ७ बारीदुर्गगौड़प्राती-  
प्यहेतुयवनेन्द्रादेशबुन्दीशरत्नसिंहनिजनेमसैन्यबारीदुर्गप्रस्थापनत-  
त्पराजयप्रत्यावर्तन ८ विजितभऊपुरशवरत्नसिंहखिखिनिष्कासनान-  
न्तरस्वपुत्रगोपीनाथायत्तीकृतबुन्दीद्वङ्गखुरमप्रस्थितबलसंमिलन ९ र-  
त्नसिंहपट्टपुत्रगोपीनाथदुराचरणविवहनतत्सहोदरसंततिशंसनसंधा-  
नमेकविंशो मयूखः ॥ २१ ॥ आदितश्चतुरत्तरद्विशततमः ॥ २०४ ॥  
प्रायोजनदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम मयूखहि रास्य २०१४ ब्रह्म, नरनै रत्न १९२११ बिवाह ॥

संतति क्रम तस अब सुनहु, रक्षै निज कुल राह ॥ १ ॥

कुमर च्यारिष्ठनृप रत्न १९२११ कै, खटबहु कतिन मत ख्यात ॥

प्रकटिय दुवर कन्या निपुन, अब कल निश्चय आत ॥ २ ॥

नाकर रहना ५ वजीर के भेजेहुए कछवाहा जानसिंह का आशेरगढ बुरहान-  
पुर आदि प्रदेशों को जीतकर प्रशंसा प्राप्त करना ५ अपने पोते महासिंह के  
मरने से मरण प्राय होकर आनैर में आयेहुए गानसिंह के मरने पर पोता के  
पुत्र जयसिंह का राजा होना ६ जहांगीर के पुत्र खुरम का पिता से विरुद्ध  
होकर दिल्ली से भागे पीछे पठान मोहोपतत्वां से पराजित होना ७ बारीगढ  
के गौड़ों की विरुद्धता के कारण बादशाह की आज्ञा से बुन्दी के राव रत्न-  
सिंह का आधी सेना को बारीगढ पर भेजने के अनन्तर उस सेना का परा-  
जित होकर पीछा आना ८ राव रत्नसिंह का भऊपुर से खीचियों को निका-  
लकर उसके बिने पीछे बुन्दी को अपने पुत्र गोपीनाथ के आधीन करके खुर-  
म पर भेजी हुई बादशाही सेना के आसित होना ९ रत्नसिंह के पाटवी पुत्र  
गोपीनाथ के दुष्टाचरण के साथ उसके विवाह और उसके आताओं के स-  
न्तान के कथन की प्रतियज्ञ का इकीसवां २१ मयूख समाप्त हुआ और आदि  
से दो सौ चार २०४ मयूख हुए ॥

१ सन्तान का ॥ १ ॥ २ कितनोंक के मत से ॥ २ ॥



गोपिनाथ १९३।१ माधव १९३।२ गंदित, नाम हरि१९३।३रू जग-  
नाथ१९३।४ ॥

बदनकुमरि१९३।१हरिकुमरि१९३।२बलि, सुता उभय२गुन सार्थ ॥३॥

बदनकुमरि१९३।१अलुजहिबदत, जनकतिअखय१९३।५सुजान१९६

बालहि मृत इम नहि विदित, दोउ२न गिनत निर्दान ॥ ४॥

नव ६ रानिन विच जिन जनित, ए छ६ कि अट्ट ८ अपत्य ॥

सु पै राम २०१।४ प्रभु क्रम सुनहु, मिथ्यापन अवमर्त्य ॥ ५ ॥

॥ पद्धतिः ॥

पहिलो १ तँहँ गोपीनाथ १९३।६ पूत, सीला १९२।१ कछवाही  
जो प्रसूत ॥

तीजो३ जांबवती१९२।३ कै तनूज, पट्ट दूजो२ माधव १९३।२  
प्राप्तपूज ॥ ६ ॥

या३कैहि चउम४जगनाथ१९३।४एह, सोदर दुव२आता ते सनेह ॥  
जिम चौथो४ रानी प्रसव जात, हरिसिंह१९३।३कुमर तीजो ३  
सुधात ॥ ७ ॥

जेठी१सुता बदनकुमरि१९३।१जोहि, है दूजी२रानी जनित सोहि ॥  
यह गिरिपुर राउल पुंज अंत्य, स्वकनी नृप व्याहिय रीति सत्य ॥  
जामाँहिं पुंजसनें पुत्र जात, गिरिधर तस नामहु कवि गिनात ॥

सो दूजो२ तोमरिंकी प्रसूति, यह बदनकुमरि १९३।१ पहिली१  
सैकति ॥ ९ ॥

तिम रानाउति रंभावती१९२।९जु, मंभर कलत्र नवमी९सतीजु ॥  
धुव तास प्रसवहुव अवधि धारि, कन्या यह दूजी २ हरिकु-  
मारि१९३।२ ॥ १० ॥

१ कहने हैं २ पुनि ॥ ३ ॥ २ छोटे भाई अद्वितने राहुप्य १ कारव ॥ ४ ॥ वसन्तान  
७ मिथ्यापन का अपमान करके अर्थात् कल सत्य सुनो ॥ ५ ॥ = पूजने योग्य  
॥ ६ ॥ ७ ॥ ९ डंगरपुर के राउल पुता के १० अर्थ ११ अपनी पुत्री को ॥ ८ ॥  
१२ पुत्र राउल से १३ सौति (सौत) ॥ ६ ॥ चहुवाण की १४ छोटी ॥ १० ॥

याकों हम भाखत मृत\*अनूह, बहु बीकानैरप कर्ण व्यूह ॥  
 सोतो न बनत तँहँ सूरसीहँ १, इत सत्रुसल्ल १९४१ बुंदिय २  
 अबीह ॥ ११ ॥

जिम दिल्लीरपति साहेजिहान ३९१२, समकालहुते ए३हे सुजान ॥  
 वह सूरसिंह १ सुत कर्ण २ आहि, सो भावसिंह १९५१ उंपकृत  
 सदाहि ॥ १२ ॥

सुत चउ४ तस अनुपम ३१ पद्मसीह ३२, इम केहरि ३३ मोहन  
 रन अबीह ॥

सो मोहन ३४ मृगरन कहँ रिसाइ, इक मिच्छ हन्यो मद जोर आइ १३  
 सो मिच्छ हन्यो जिहिँ पद्मसीह ३२, नानाँ न रतन १९२१ तस  
 अघ निरीह ॥

नृप चंद्राउत्तहु रत्न १ नाम, रामपुर भयो इक भूप राम २०१४ ॥ १४ ॥  
 वह तस कनीज जो पद्म ३१ आस, सो हमहु न जानत ख्याति तास  
 बुंदीस रत्न १९३१ चउ ४ सुत विवाह, सुनिये बैराम २०१४  
 प्रभु सह सराह ॥ १५ ॥

पट्टप जो गोपीनाथ १९३१ पुत, व्याह्यो एकादस ११ जस बहुत ॥  
 कुमरानीतँ अवा कुमारि १९३१, पहिली १ रानाउति हित प्रसारि १६  
 जगमाल रान तनयासु जाहि, बर उदयनैर आयो विवाहि ॥  
 सुहि दीपकुमारि १९३१ कहियत सुधाम, नृप ताको दूजो २ यहहु  
 नाम ॥ १७ ॥

\*विना विवाही मरी १ वधूतलोक बीकानेर के राजा कर्णसिंह को २ परनाई कहते हैं  
 ३ उस समय वहाँ सूरसिंह था ४ निर्भय ॥ ११ ॥ ५ एक समय में थे ६ दुआ ७ उपकारी  
 ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ८ रत्नसिंह उसका नाना नहीं होत क्ता ९ पाप की इच्छा नहीं १० रत्न  
 वाला १० हे राजा रामसिंह ॥ १४ ॥ ११ कन्या का पुत्र (दोहिता) १२ हुआ  
 ११ अथ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ महाराजा उदयसिंह के देहान्त होने पर महाराजा  
 प्रतापसिंह का छोटा भाई जगमाल उदयपुर की गद्दी पर बैठ गया था जिस  
 को मेवाड़ के उमरावों ने गद्दी से उतार कर प्रतापसिंह को राणा बनाया

सालहर अधिप पितृल सुताहु, व्याही मदनावति १६३।२ समह व्याहु ॥  
 चालुककुल संभव सुभ प्रचार, दूजी२ कुमरानी यह उदार ॥१८॥  
 चंद्राउति तीजी३ उचित चाहि, अभिधान बदनकुमरी १९३।३ उमाहि ॥  
 कन्या जु चंद सीसोदकेर, व्याहयो सु रामपुर लग्न वेर ॥१९॥  
 बलिभद्र जाहि चालुक बघेल, मेदिनि राजहु सुहि नाम मेल ॥  
 कन्या तदीय जु सदाकुमारि १९३।४, ध्रुव लालमति १९३।४ सु अभि-  
 धा दुरधारि ॥२०॥

बंधूगढ चौथी४ हित निबाहि, बुन्दीस कुमर लायो विबाहि ॥  
 कुल तोमर साईदासकेर, सुतिका जु रामकुमरी १९३।५ सुबेर ॥२१॥  
 सुहि पट्टिमदेवी १९३।५ नाम साहु, विवही पट्टनि पंचम५ विबाहु ॥  
 गोपालदास सोपुरं जु गोर, जसकर्ण सोहि जुग२ नाम जोर ॥२२॥  
 कहियत मदनावति १९३।६ तस कनीसु, बर आनी छट्टी६ बरि बनीसु ॥  
 जिम सप्तम७ बीकानैर जाइ, पट्ट रायसिंह दुहिताहु पाइ ॥ २३ ॥  
 अभिधान राजकुमारि १९३।७ सु अगूढ, बरनी घर आनी लग्न व्यूढ ॥  
 चिमनकुमारि १९३।८ अष्टम८ व्याह चाहि, स्व सुता दिय तोमर सब  
 ल साहि ॥२४॥

पट्टनि दुर तोमरिन व्याह पात, गुग्गेशु दोउ२न कति गिनात ॥  
 सेखाउत कूरम भीमसीह, इम बुल्लि मनोहरपुर अबीह ॥२५॥  
 अप्पन सुतासु तिहिं सह उछाह, व्याही नाथकुमारि १९३।९ नवम९  
 व्याह ॥  
 महँ सहँसमल्ल कूरम कनीसु, विवही कमला १९३।१० दसमी १० बनी  
 सु ॥२६॥

इतकारण जगनाल को यहां राखा लिखा है ॥ १७ ॥ १ उत्साह सहित २ ज-  
 न्म ॥ १८ ॥ ३ नाम ॥ १९ ॥ ४ दो नामवाली ॥ २० ॥ ५ अष्ट समय में ॥ २१ ॥  
 ६ साधु (अष्ट) ७ विवाही ॥ २२ ॥ ८ दुलहन को ९ लग्न पर विवाह क-  
 रके ॥ २४ ॥ २५ ॥ १० उत्सव से ॥ २६ ॥ २७ ॥

कछवाह कन्ह तनुजा कुलीन, करगहि मह एगारहस११ कीन ॥  
 वर अंतिम गोपीनाथ१९३१ व्याह, आनी सदाकुमरि१९३११सद  
 उछाह ॥ २७ ॥

षट्पात्

पहिली१ तीजी३ पितर गिनहु सीसोद१वंस गत ॥  
 दूजी२ चोथी४ दुहुँ२न महिष चालुक२ अन्वय१ मत ॥  
 पंचमि५ अष्टमि८ सुपहु जथा तोमर३ कुल जाई ॥  
 रमनि गोरि६१४रहोरि५७ पृथक इक१ इक१ कुल पाई ॥  
 कछवाह६ वंस अंतिम त्रिक३रु अंत्य ११ नरुकी गिनहु इत ॥  
 दसमी१०रु यहहि एकादसी११दोउ२न पिउहर नन विदित॥२८॥  
 ॥ दोहा ॥

अधिप रत्न१९२१२ सुत ज्येष्ठ १ इम, वरि एकादस११ व्याह ॥  
 सुत तेरह१३ अरु इक१ सुता, लाहे कुमर अर्य लाह ॥ २९ ॥  
 ॥ षट्पात् ॥

प्रथम१सनुसल्ल१९४१पुनि इंदसल्ल १९४२ सु द्वितीय२ इम ॥  
 बैरिसल्ल१९४३बल विदित तंदनु हुव राजसिंह१९४४ तिम ॥  
 मुहुकम१९४५ पंचम५ कुमर उदय१९४६छट्टो६ रन अद्रुत ॥  
 सूरसिंह१९४७ सप्तम७ रु स्यामसिंह१९४८ सु अष्टम सुत ॥  
 क्रम नवम९महासिंह१९४९सु कुमर दसम१०केसरी १९४१०दुजनंदम  
 जिम कनकसिंह१९४११नगराज१९४१२जहँ रामसिंह १९४१३  
 तहँ तेरहन१३ ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

क्रम सन ए हुव कुमरके, सुत तेरह१३ अति सूर ॥  
 सदाकुमरि१९४११हुव इक१सुता, पटुपन निजनिज पूर ॥ ३१ ॥

१ पिता २ वंश ३ भिन्न ४ प्रासिद्ध नहीं है ॥ २८ ॥ ५ अच्छे भाग्य के लाभ में ॥ २९ ॥ ६ जिसपीछे ७ दुष्टों को दण्ड देनेवाला ॥ ३० ॥ ८ चतुरपन ॥ ३१ ॥

## ॥ पादाकुलकम् ॥

सत्रुसल्ल१९४१पट्टप पहिलो१सुत, चोथो४राजसिंह१९४१४रन अच्युत  
कुलचाँलुक दूजी२कुमरानी, मदनावती१९३१२जने दुव२मानी॥३२॥  
इंद्रसल्ल१९४१२दूजो२बल आकरै, पंचम५मुहुकमसिंह१९४१५धर्म पर  
तोजी३बदनकुमरि१९३१३चंद्राउति, सोदर एदुव२जनै बहन श्रुति ३३  
बैरिसल्ल१९४१३तीजो३सोभित बल, उदयसिंह१९४१६छट्टो६जसउज्जल  
लालमती१९३१४चोथी४बाघेलिय, अवसर दुव२हि तनय जनि एलिय  
मूरसिंह१९४१७नामकसप्तम७सुत, जानहुदसम१०केसरी१९४११०संजुत  
छट्टो६मदनावती१९३१६गोरि छेम, दुव२सगर्भ एजनै अरिदम ॥ ३५ ॥

अष्टम८ स्यामसिंह१९४१८ बिधि अनुसरि, कन्या तस अनुजा  
सदाकुमरि१९४११ ॥

रामकुमरि १९३१५ तोमरि कुमरानिय, जुग२सुत१ सुता२ जने  
ए जानिय ॥ ३६ ॥

जु नवम ९ महासिंह १९४१९ तस जननी, नाथकुमरि १९३१९  
नवमी९जस जननी ॥

तसजननी जस जननी२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

एगारहम११ सु कनकसिंह१९४१११इम, जैं नगराज१९४११२  
बारहम१२क्रमजिम ॥ ३७ ॥

राजकुमरि१९३१७सत्तमी७स्व औरस, जुग२रछोरि जनै एअति जस ।

कछवाही कमला १९३११० दसमी१० क्रम, रामसिंह १९४११३  
इक१ तास तेरहम१३ ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

आदि१अष्टमी८अंतिमा११, त्रिक३कुमरानिन तत्य ॥

१ सोलंखी ॥ ३२ ॥ २बल की खान ३ वेद को धारण करनेवाले ॥ ३३ ॥ ३४ ॥  
४ समर्थ ५ शत्रुओं को दण्ड देनेवाले ॥ ३५ ॥ ६ छोटी बहिन ॥ ३६ ॥ ७ यश  
की ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

रहिय अहो संतति रहित, स्वस्व विफल विधि सत्थ ॥ ३९ ॥  
 आदि त्रिक ३ रु पंचम ५ नवम ९, पंच ५ सुतन कुल पात ॥  
 चोथे ४ को कछु दूर चलि, बलि खिल सब न विलात ॥ ४० ॥  
 कहियत गोपीनाथ १९३१ को, जो माधव १९३२ अनुजात ॥  
 परिनायो वह रत्न १९२१ पहु, व्याह नवक ९ विरूपात ॥ ४१ ॥  
 ॥ पादाकुलकम् ॥

तोमर कुल डुंगरकी तनुजा, गढ गुग्गैर अमरकी अनुजा ॥  
 केसरकुमारि १९३१ नाम जिहि कहिलिय, परन्यो कुमर माधव  
 १९३२ सु पहिलिय १ ॥ ४२ ॥  
 कुल कबंध अभिधा स्याम कुमरि १९३२, बर दूजी २ लिय  
 उदय सुता वरि ॥

अरु सीसोद स्याम दुहिता इम, तीजी ३ सबलकुमरि १९३३  
 व्याहो तिम ॥ ४३ ॥

तस सगोत्र संग्रामसुता तैंहँ, करगहि चोथी ४ राजवती १९३४ कैहँ ॥  
 जिम चालुक भगवंत जु जाई, पंचम ५ व्याह चंद्रवति १९३५ पाई ४४  
 इम प्रताप तनया रानाउत, भाग्यवती १९३६ छट्ठी ६ वरि भांनुति ॥  
 कल्याण कबंध कनी क्रमकरि, विहित सप्तमी ७ चंद्रवती १९३७ वरि  
 गोर जसराज दुहिता करगहि, राजवती १९३८ अष्टमि ८ सोपुर लाहि  
 अखय कबंध सुता जु बरअली, किय निज रापकुमरि १९३९  
 नवम ९ कली ॥ ४६ ॥

क्रम पंचमि ५ सप्तमि ७ कुमरानिय, जथा नवमि ९ अप्रज त्रय ३ जानिय ॥  
 हुवसंततिखिल छ ६ कैचउहह १४, सप्त ७ कुमरसत्त ७ हिकन्यासह १४७  
 जैंहँ मुकंद १९४१ मोहन १९४२ सुत जानहु, पुनि कन्ह १९४३ रु  
 जुजभार १९४४ प्रमानहु ॥

१ आश्चर्य है ॥ ३६ ॥ २ पाता है ३ वाकी ॥ ४० ॥ ४ छोटा भाई ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥  
 ५ स्तुति योग्य क्रांतिवाली ६ कन्या ॥ ४५ ॥ ७ श्रेष्ठ सखियोंवाली ॥ ४६ ॥  
 ८ बिना सन्तान ॥ ४७ ॥

सुत किसोर १९४१५ पंचम ५ छठो ६ सुत, जु हमतसिंह १९४१६ हठो  
१९४१६ दुः नाम जुत ॥ ४८ ॥

सुत संग्रामसिंह १९४१७ तँहँ सप्तम ७, कन्या सप्त ७ सु सुनहु जथा क्रम  
जे हरिकुमरि १९४१२ महाकुमरि १९४१२ हु जिम, रु कुसलकुमरि  
१९४१३ स्वरूपकुमरि १९४१४ इम ॥ ४९ ॥

अनुपमकुमरि १९४१५ पंचमी ५ इयँखहु, पुनि छठो १ सु सत्यभामा  
१९४१६ पहुँ ॥

कनी सप्तमी ७ हुवदीपकुमरि १९४१७, सबकी प्रसू सुनहु क्रम अ-  
नुसरि ॥ ५० ॥

जेठो १ जनिय कुमर जेठो १ जँहँ, तस अनुजा जेठो १ कुमरी तँहँ ॥  
सुत दूजो २ दूजो २ पंचमि ५ सह, त्रिक ३ यह जन्पौ वधू दूजो २ तहा ५१ ॥  
सुत तीजो ३ चोथो ४ छठो ६ सुता, जनि अष्टमी ८ हुव त्रितीक जुता  
तँहँ पंचम ५ सप्तम ७ तीजो ३ तिम, यह त्रिक ३ जनि सप्रज चोथो  
४ इय ॥ ५२ ॥

छम ६ कुमर रु सप्तमी ७ कनी छम, कुमरानी तीजो ३ प्रसूति क्रम ॥  
जनि छठो ६ सु कनी चोथो ४ जँनि, वधू छ ६ इम सप्रजा गई बनि ५३  
पहिले पंच ५ तनय हुव सप्रज, अंतिम सिसुहि मरे दुव २ अंज ॥  
जयसिंहा १ दि बुंछि व्याहहिँ जिम, यह कति सुता मरी कतिसिसु  
इम ॥ ५४ ॥

सो तीजो ३ हरिसिंह १९३१३ रत्न १९३१२ सुत, व्याह अष्ट ८ व्याहो  
जस संजुत ॥

उदय भन्यौ जु जोधपुर अधिपति, तस लघु सुत दलपतिकी सं-  
तति ॥ ५५ ॥

कन्या बड़ी नाम इंद्रकुमरि १९३१; व्याह प्रथम १ हरिसिंह १९३३  
लई बरि ॥

याहीकी अनुजा बसुधावर सत्रुसल्ल १९४१ व्याहहिं बय अनुसर ५६  
जिहिं सुत भावसिंह १९५१ हैं हैं जिम, अग्रज १ स्वसा बरी तस हरि  
१९३३ इम ॥

खंडेलापुर लहि सेखाउत, रांयसल्ल प्रंतप्यो बढि राउत ॥५७॥  
पटकि त्रास निर्वाण ८ कहि पहु, बलि कलिं सम्मुह भये बढि बहु  
अग्रज १ लवन करनके अगै, बढिबो चहि कररी गहि बगै ॥५८॥  
कहुं यह अनुज २ साहको जयकरि, अधिक पाइ मनसुब ढनि तस  
अरि ॥

निर्वाण १ न पुनि जित्ति वह नगर, खंडेला लिय आरि खग  
खर ॥ ५९ ॥

कतिक कहत पोपां कुंभारिय, पत्तन यह लैन ठब पारिय ॥  
मिलि निर्वाण ८ कहि प्रद्व मिस, यह पैठाइ दंयो राकाइस ॥६०॥  
कुमर सत्त ७ तसगिरिधरा १ दि क्रम, परसुराम ५ तिनमें हुव पंचम ५  
तस हुवनाम अग्रमति १९३१ २ तनया, सु हरि १९३३ बरी दूजे २ म-  
ह सनया ॥६१॥

कच्चर सुता नरूकी गहि कर, बरि तीजी ३ नरबद कुमरी १९३४  
बर ॥

कुंपाउत रठोर उदयकी, कनी चित्रमति १९३४ चोथी ४ संय की ६२  
पंचम ५ महु सद्दूल सुता पिय, बदनकुमरि १९३५ गंगाउंति व्याहिया  
जदव सहसपाला दुहिता जिम, ऊंढा छठ्ठी ६ महाकुमरि १९३६  
इम ॥६३॥

१ भूपति ॥ ५९ ॥ २ बहिन ॥ ५७ ॥ ३ युद्ध में ॥ ५८ ॥ ४ तीक्ष्ण ॥ ६६ ॥ ५ नगर वंशभागे  
के सिप से ७ आश्विन सुदि पूर्णिमा को ॥ ६० ॥ ८ नीति सहित ॥ ६१ ॥ ९  
हाथ, अर्थात् कर ग्रहण (विवाह) किया ॥ ६३ ॥ १० विवाही ॥ ६३ ॥



सुर्जन चालुक तनया वय सैन, सुंजानकुमरि १९३७ वरी मह  
सप्तम ७ ॥

मेरतिया जगमाल सुता मह, अष्टम ८ वरी उमेदकुमरि १९३८  
अह ॥ ६४ ॥

इनमें इन्द्रकुमरि १९३१ पहिली १ इम, तीजी ३ चोथी ४ पंचमी ५ हु  
तिन ॥

न लही संतति इन चउ ४ नारिन, चले प्रसव ग्यारह ११ खिल  
च्यारि ४ न ॥ ६५ ॥

तिनके तनय अठ ८ तनया त्रय ३, भये जथाक्रम सुनहु बीतभय ॥  
बडो १ कुमार सुजानसिंह १९४१ जु बलि, अनुजहु विजय १९४२  
अभय १९४३ रनसुम अलि ॥ ६६ ॥

चोथो ४ अजबसिंह १९४४ अरु पंचम ५, छम राजसिंह १९४५ रु  
जयसिंह १९४६ छम ६ ॥

परसुराम १९४७ सप्तम ७ अष्टम ८ पुनि, संवन अनुज समरेस  
१९४८ लेहु सुनि ॥ ६७ ॥

कनी अनंदकुमरि १९४१ महजकुमरि १९४२, इंद्रकुमरि १९४३  
ग्यारह ११ ए क्रमकरि ॥

प्रथम चतुर्थ ४ सुतसुता पहिलिय १, गर्भ स्वीय दूजी २ त्रिक ३ गहिलिय  
दूजो २ तीजो ३ रु कनी दूजी २, प्रसव तत्र य ३ हि सप्तमि ७ पूजी ॥

छडी ६ जनित कुमर पंचम ५ छम ६, अंतिम कुमर सप्तम ७ रु अष्टमा ६ ९।  
तीजी ३ सुता अष्टमी ८ औरस, तोक त्रय ३ हि अंतिम यह हुव तस ॥

कोहू कनी विवाही कोहू, सिसुहि मरी विदित न क्रम सोहू १७०।  
सुत तृतीय ३ पंचम ५ अरु सप्तम, सह अष्टम ८ अप्रज मृत चउ ४ सम ॥

चउ ४ सुत खिल तिनके वंस चले, बलि जगनाथ १९३४ व्या-

१ समान अवस्थावाली ॥ ६४ ॥ २ बाकी ॥ ६५ ॥ ३ छोटा भाई ४ युद्ध रूपी  
पुष्प का भ्रमर ॥ ६६ ॥ ५ समर्थ ॥ ६७ ॥ ६ ग्रहण किया ॥ ६८ ॥ ७  
८ किस कन्या को किससे विवाही

ह भनत भलो ॥ ७१ ॥

कुमरानी पहिली १ दीपकुमरि १९३१, कुल कबंधजगनाथ स्वसुरकरि  
परनी कुमर जाइ जुगगापुर, व्याह सुनहु दूजो २ जसबंधुर ॥ ७२ ॥  
छटो ६ स्वसुर रत्न १९३१ नृपको छम, जोगादास गोर दत संजम ॥  
बुंदी पटा लहि रु भर बज्जै, लज्ज गयैहु नैकहु न लज्जै ॥ ७३ ॥  
जाकै सुत गोपाल १ सु जिठो, कहियत सुंदरदास २ कनिठो २ ॥  
पठयो जो बारीगढ उप्पर, भातन सन आयो भजि जो भर ॥ ७४ ॥  
कुपि जु रत्न १९२१ देस सन कह्यो वैरहि जास स्वसुर हिय बह्यो  
हुतो स्वसालक जदपि कन्ह हर, सुपहु तदपि बुल्लयो न सु सुंदर ॥ ७५ ॥  
कानी तदीय गोरि अमरकुमरि १९३२, बर जगनाथ १९३४  
लाई दूजी २ बरि ॥

परसुराम सेखाउत पुत्रिय, केसर कुमरि १९३१ प्रिया तीजी ३ क्रिया ७६  
॥ दोहा ॥

सुंदर चालुककी सुता, इम गौरी १९३४ अभिधान ॥  
आनी बर जगनाथ १९३४ यह, बरि चोथो ४ सविधान ॥ ७७ ॥  
मार्गंधलोकन मूढता, यह जानी अधिराज ॥  
पत्नि न के प्रपिता १ पिता २, लिखत बदलि बिनुलाज ॥ ७८ ॥  
यातै स्वसुरन नाम यैह, जेजे न मिलै जत्य ॥  
तियन पितामह नाम ते, तुम प्रभु जानहु तत्य ॥ ७९ ॥  
लगि खोजन सु कैविहु लयो, जैहँ जैहँ निश्चय जानि ॥  
दिननो क्रम तैहँ तैहँ बदलि, अभिधाँ स्वसुरन आनि ॥ ८० ॥  
कुमरानि १ न रानिन कहै, जनकन नाम जितेक ॥

॥ ७० ॥ ७१ ॥ १ यश में उच्च ॥ ७२ ॥ २ समर्थ ३ चलायमान इन्द्रियोंवाला अ  
र्थात् व्यभिचारी ॥ ७३ ॥ ४ ज्येष्ठ ५ कनिष्ठ ६ भड़. यह शब्द यहां वक्रोक्ति में  
कहा गया है ॥ ७४ ॥ ७ से ८ अपना साला ९ कन्ह का पौता ॥ ७५ ॥ १० उस  
की पुत्री ॥ ७६ ॥ ११ नाम ॥ ७७ ॥ १२ बड़वा भाटों की मुखता १३ हे स्वासि १४  
स्त्रियों के ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ १५ अन्यकर्ता कवि सूर्यमल्ल ने १६ नाम ॥ ८० ॥ ८१ ॥

स्वसुर पिताके १ वे स्वसुर २, कहूँ कहूँ तिन विच केक ॥८१॥  
 सुत चोथो जगनाथ १९३।४ सो, व्याहो इम चउ ४ व्याह ॥  
 इनमें जेठी १ अप्रजा, लिय त्रिक ३ सुत त्रिक लाह ॥८२॥  
 कुमार बडो १ तैंहँ केसरी १९४।१, मध्यम २ के जुग २ नाम ॥  
 जु फतैसिंह १९४।२ जु जैत्र जिम, कुल तानक जस कामा ८३।  
 जगतसिंह १९४।३ तीजा ३ तनुज, अप्रज प्रथम १ रु एह ३ ॥  
 मध्यम कोहि कुल प्रसरि महि, लाहि रहिगो विधिलेह ८४।  
 गोपीनाथ १९३।१ प्रसंग गहि, अनुजनकेहु अपत्य १ ॥  
 पति २ न स्वसुर ३ न नाम पुनि, सह कुल ४ अखिखय सत्या ८५।  
 अनुजन व्याह १ अपत्य २ ए, अव १ रु रत्न १९२।१ अवसान २॥  
 किते भूत १ भावी २ किते, मन्त्रहु संभव मान ॥ ८६ ॥  
 अधिप जइपि सबतैं अधिक, निज सुत गोपीनाथ १९३।१ ॥  
 परिनामउ तेरह १३ प्रिया, सबय सबय १ वल २ साथ ८७।  
 तदपि सु लंपट पर तियन, बिलसे पिहित विलास ॥  
 तात रत्न १९२।१ सम डरत तिय, प्रकट न बुझै पास ॥८८॥  
 श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणो षष्ठदशौ बुन्दीशरत्नसिं-  
 हचरित्रे रत्नसिंहसूनुपाणिपीडनतत्सन्ततिवर्णनं द्वाविंशो मयूखः ॥२१॥  
 आदितः पञ्चोत्तरद्विशततमः ॥ २०५ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

॥ ८१ ॥ १ कुल को फैलानेवाला ॥ ८३ ॥ २ ब्रह्मा के लेख से ॥ ८४ ॥ ३ सन्तान ॥ ८५ ॥ ४ छोटे भाइयों के ५ रत्नसिंह के अन्त पर ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥  
 श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्न-  
 सिंह के चरित्र में रत्नसिंह के पुत्रों के विवाह और उनकी सन्तानों के वर्ण-  
 न का बाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पांच २०५ मयू-  
 ख हुए ॥

अमर रान पुव्वहि इतसु, अनसु उदैपुर आस ॥  
 करनसिंह १ पट्टप १ कुमर, तब गदिय लिय तास ॥ १ ॥  
 अडर सरैनपालक अनुज, भ्रात करन १ को भीम ॥  
 कहि हैं अवसर ताहुको, सरनदेन रनसीम ॥ २ ॥  
 इत दिल्ली दल जाइ अर, घोर पटकि रनघात ॥  
 खुरुम ३९।२ भजायो बहुरि खल, सह सहाय सकुचात ॥ ३ ॥  
 पहु तीन ३हि बुरहानपुर, जवहि रक्खि जवनेस ॥  
 दिल्लिय बुल्लयो जवनदल, समुझि विजय साविसेस ॥ ४ ॥  
 तब कूरम १ रडोर २ तिम, हड्ड ६२।३ रहिय असिहत ॥  
 पहु तीन ३हि बुरहानपुर, पलन डिग रनपत्थ ॥ ५ ॥

वेतालः ॥

बलसह महावत खान १ त्योंहि अजीमबेग २ बुलाइ,  
 भूपाल तीन ३हि साह ए रक्खे तहाँ जयभाइ ॥  
 कछुकाल तथ सवै रहे जय ठानि दिल्लिय कज्ज,  
 सब देस दक्खिनसो रसो सुनि सत्रु ते हुव सज्ज ॥ ६ ॥  
 इक १ को स्वमीपति १ खुरुम ३९।२ वह इक १ को स्वसासुत आहि  
 तिम भीर दक्खिन वीर यों समुझ्यो बलिष्ठहु ताहि ॥  
 किय मंत्र कुम्म १ कबंध २ तब पछोहि करन प्रयान,  
 बुंदीस सुनि बरजे उहाँ इन व्याज चितिय आन ॥ ७ ॥  
 दिन इक १ कुम्म १ कद्यो अहो किम जाइ वारिय दुग्ग,  
 भटरावरे सहदी भजे अब गौडकै हुव उग्ग ॥

१ प्राण रहित २ हुआ ॥ १ ॥ ३ चरण आये हुए की पालना करनेवाला राणा  
 कर्णसिंह का ४ छोटा भाई भीमसिंह ॥ २ ॥ ५ शीघ्र ॥ ३ ॥ ६ तीनों राजा  
 यों को ॥ ४ ॥ ७ खड्ग हाथ में लेकर ८ नगर के समीप ९ युद्ध में अर्जुन ॥ ५ ॥  
 १० सेना सहित ॥ ६ ॥ खुरम उक्त दोनों राजाओं में एक के ११ बहिन का प-  
 ति और दूसरे का १२ भानजा है १३ कछवाहा १४ राठोड़ १५ छल ॥ ७ ॥ १६ डम

निज देस लौकिक काकवाचक शब्दलै कटुनर्म ॥  
 सुनि यों कह्यौ गजसिंहक्यौ भयमैं बनें जय कर्म ॥ ८ ॥  
 सिसु बंचि हहुन संधं संधत जे सबै उडिजात ॥  
 बनि क्यौ परैं तिनतैं उहाँ जय प्रानसंसय बात ॥  
 चहुवानइअखिय चक्रमैं किय मुख्य गौडकबंध ॥  
 सठ भीरु तेहि भजे अचानक प्रानलै हतसंध ॥ ९ ॥  
 नेता करैं जु भलीशबुरीसु गिनै अधीनहु न्याय ॥  
 करि संग कातरको प्रवीरहु के बजैं प्रियंकाय ॥  
 हमतो गिनै भय जत्थहै दुंदिताहु मिच्छन दैन ॥  
 द्विय छत्रधारिश्न भै<sup>१२</sup> जु काक<sup>२</sup>नकैहु ता रिसहै न ॥ १० ॥  
 तुमशरे पितामहकी स्वसां बरिक्कैं लजे हस त्योंहु ॥  
 इन<sup>२</sup>के स्वसांपतिको कह्यो न बन्यौ बँ दुर्मन पाँहु ॥  
 पहिलैं मरे गिनि जे लरैं भट तेहु दै पप्रपिडि ॥  
 इह हेतु है कहु ज्यौ पतैं<sup>१</sup>जयमल्ल<sup>२</sup>मिछन ईडि ॥ ११ ॥  
 परभुनि भाइ सुवाइ पुत्रिन लाइ मिच्छन पास ॥  
 हमसोंहु बैभवमैं बडैं भय हौं गिनौं न सुहास ॥  
 गजैं बली अरि देवगढ तुमशरो इहाँ हनि तार्त ॥  
 इन<sup>२</sup>कोपितामह स्वां वज्यौ भय हौं न संसैद आत ॥ १२ ॥  
 रस<sup>१</sup>मैं गिन्यौ बिरसत्व<sup>२</sup>यों कटुनर्म होत रिसाइ ॥  
 भरि बैारिकोहु समुह हौं धरि यों कह्यो अघभाइ ॥  
 हम नीर हड्ड<sup>१</sup>न देखुके अवतो न संगपन व्हैहि ॥

१ काकुभाषा (वक्तोक्ति) में २ कटुई यसकरी की ॥ ८ ॥ ३ ठगकर ४ समुह ५  
 जेना में ६ प्रतिज्ञा छोडकर ७ आज्ञा करमेवाला (स्वामि) ८ कायर का ९ कायर  
 बजते हैं १० पुत्रिये ११ राजाओं को १२ भय ॥ १० ॥ दादा की १३ बहिन १४  
 अब १५ उदास १६ चित्तोड़ का किछादार राउत पत्ता १७ इष्टि (इच्छा)  
 ॥ ११ ॥ १८ पिता १९ कदवाहे का २० ह्वान २१ सभा में ॥ १२ ॥ २२ खोटी  
 हसी होने से २३ पानी का तासला (समुद्र नाम डिब्बे का है परन्तु यहां पा-

वदि यौं खिजे उठि बेग जे दिली चले चाढि व्हैरहि ॥ १३ ॥

बुंदीस चाहिय जाइ तिन समुझाइ रक्खन बत्त ॥

रिस कैं कह्यो तैंहें बंधुश्वीरन अप्प क्यौं अनुरत्त ॥

बजैं दुर्हथन तालि व्हौं उनकोहि वारि उतारि ॥

तुमको चढाइ गये उभैरजिहें दये पहु तारि ॥ १४ ॥

॥ उतारिहुतारिअन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

जैहो निहोरि मनाइये गिनिवे ततो हत जोर ॥

इम मन्निहैं डारि भोरु हड्डसहाय इच्छत ओर ॥

नृप अप्प द्वैरहि दये चमूपति देसतैंहु निकारि ॥

निज सालकैत्व गिन्यौं न यौं बहु क्यौं चढ्यो कुलवारि ॥ १५ ॥

सुनि बंधुश्वीरनकी यहै न गयो निहोरन सोहु ॥

दिली गये अनखाइ कुम्मकबंधरभूपति दोरहु ॥

तैरजे बजीर अयाज ते बरजे लये न बुलाइ ॥

उलंघि साह निदेस द्वैरहिहो कहाँ इत आइ ॥ १६ ॥

बुल्ले उभैरनहि रत्न१९२।१कौं हमरै बनी हितवत्त ॥

तिन्ह बुल्लिकै१हमको पठावहु तेहि कैरबहु तत्त ॥

सबमाहिं मुख्य पठाइ ओरहि देहु कैरतस संग ॥

भनि यौं सिटेहु जथा तथा दुवर व्हौं रहे मन भंग ॥ १७ ॥

अवधानतैं नृपरत्न१९२।१हु इत साह सीम सम्हारि ॥

रुपि अद्रि भैत७ पुरे समीप रह्यो सु इच्छत रारि ॥

इत नैर बुंदिय रत्न१९२।१ को जु कुमार पट्टप आइ ॥

व्यापाम बिद्या सो बहै सिमुकालतैंहि समाहि ॥ १८ ॥

नी के सम्बन्ध से तासला लिखामया है) भरकर ॥ १३ ॥ १ आप अनुरक्त क्यौं होते हो २ उनका तेज उतारकर ३ राजा ने निकाल दिये ॥ १४ ॥ ४ सालापन ५ नीर (तेज) ॥ १५ ॥ ६ क्रोध करके ७ धमकाए ८ बादशाह की आज्ञा को उलंघ करके ॥ १६ ॥ ९ तहां वही वद्वत है ॥ १७ ॥ १० सावधानता से ११ सतपुड़ा पर्वत (पिन्ध्याचल) के समीप १२ कसरत ॥ १८ ॥

जब आइ जुबन उप्फन्यौं याकेहु बाहुन जोर ॥  
 याकों सहै सु न वहाँ मिल्यो प्रतिमल्ल मल्लहु ओर ॥  
 करि अट्ट ८ निर्जट नालिकेर सरीर साखन संधि ॥  
 बलवान सो ततकाल भंजत एकता बलबंधि ॥ १९ ॥  
 दुवर साख साखिन चीरि बाहुन मध्य ग्राव दिवाइ ॥  
 जिहिके तजे करि स्वीय अंकित पै पिवाइ जिवाइ ॥  
 वर व्याह अष्टम ८ व्याहिवे तिय तोमरी १९३ ८ जु द्वितीय २ ॥  
 गय नैरपट्टनि प्रानगर्वित सक्ति सूचित स्वीय ॥ २० ॥  
 मग अंधुपै कहूँ चर्ममय नव ९ मुट्टि मित जलमाप ॥  
 वाकों सटेक छुराइ बैलन अँचिगो भरि आप ॥  
 पति कूपके वरज्योहु प्रत्युत हृद गो हंठि हृद ६१ ॥  
 प्रासंग छोरन नाँ बन्धौ पुनि आइ अप्पहि अड्ड ॥ २१ ॥  
 प्रासंग पायन हिड्ड दै तब संपिजावत पार ॥  
 कछुरीति जोर पश्यो भयो सु नृजान बाह्य कुमार ॥  
 व्याहो तँथाविधही बन्धौ पट्ट आइ गेह बहोरि ॥  
 तिम मारि मुट्टि बली दई कटि के जरत १२न तोरि ॥ २२ ॥  
 कंठारैवारदिक हिंस्र केहि हनै प्रहारि कटार ॥  
 बहती खुँरी बिच किन्न के हतबेग बाजि ३न बार ॥  
 जिनके सुन्यौ बल दैप तेहु कुमार बुल्लि रु जिति ॥

१ आठ नालिघरों की जटा दूर करके २ काँख, कुहँनी आदि शरीर की शाखाओं की सन्धि में रखकर ॥ १९ ॥ ३ धृत्तों की दो शाखा को चीरकर उनके बीच में ४ पत्थर दिवाकर ५ अपने नाम से जानेजावें ऐसे ६ पानी सींचकर ७ अपने पराक्रम की सूचना करता हुआ ॥ २० ॥ ८ मार्ग के कुए पर चमड़े का ९ नौ मूँठ के नाप को (चड़स के नाप की पूर्ण अवधि नवमूँठ की होती है) १० चड़स ११ पा-नी भरकर १२ उलटा १३ जूड़ा (बैल जूनने का काष्ठ) १४ आडा आकर ॥ २१ ॥ १५ जूड़े को पैरों के नीचे दबाकर १६ पालखी आदि में चलने योग्य होगया १७ उसी हालत में व्याहा १८ नैरोग्य १९ महिषों (भैंसों) की कसर तोड़ डाली ॥ २२ ॥ २० सिंह आदि २१ हिंसा करनेवाले २२ घोड़े को पूर्ण दौड़ में २३ घमंड

किय अद्वितीय बली भली चहुँ४ और अप्पन किति ॥ २३ ॥  
 गुन और वीर१ बदान्य२ तादिक जे लये बलगर्व ॥  
 स्मरनै दबाइ दये अनर्गल आत जुबन सर्व ॥  
 याके जथापि करे महीपति इकदस११ उपर्याम ॥  
 न तज्यो तथापि कुमार अप्पन पारदारिक नाम ॥ २४ ॥  
 जिहिं पुत्र तेरह१३ त्यों सुता इक१ यों चउहह१४ जात ॥  
 प्रछन्न तोहु नईनई परनारि संगति पात ॥  
 गुडवान जिति नरेस सुर्जन१९०१२ बाहुरयो जब गैल ॥  
 बहु ब्रात्य चेदिपुरी लखे द्विज बित्रई भरि बैल ॥ २५ ॥  
 सबही मिलै जिनके परिक्रम देसदेसन सुंदि ॥  
 बलि क्रैय१ क्रैय२ महाघे देसहुमै मिलै सुख बुदि ॥  
 उनमैहि सौ नृप विप्रबंधु कितेक बुंदिय आनि ॥  
 कर अह१ रक्खि दये बसाइ विसेस बानिज कानि ॥ २६ ॥  
 चरनाद्रितैं आनै तथा इनको कितेक चवंत,  
 हे पंचगौडन माँहि पै किय लोभ बानिज हंत ॥  
 अब मूढ एहु कहैं वसे हस बंग१७९१ देव१८०१२ अनेह,  
 इमहोहु पै न प्रमान सूचत अत्थ संसय एह ॥ २७ ॥  
 इक१ विप्रबंधु बंधू हुती तिनमाँहि सुन्दर अंग,  
 सम रूप१ जुबन२ द्वै२ परस्पर उज्झलो तस संग ॥  
 लखि विप्रबंधु बंधू वहै चंदेरी अतिलाग,  
 राच्यो तहाँ सबतैं विसेस कुमारको अनुराग ॥ २८ ॥  
 मिलिजात दोउ२न नैन१ त्यों मन२हू मिले रतिमाँहि,  
 अतिप्रान त्योंहि भजै कुमारहु छन्न नृप भय आँहि ॥

॥ २३ ॥ १ दातार १ कामदेव ने ३ आठ रहित ४ विवाह ५ पर स्त्री का ॥ २४ ॥  
 ६ संस्कार हीन ७ चन्देरी में ८ वनजारे ॥ २५ ॥ १ जिनके फिरने से देशदेशों  
 की १० खबर मिले ११ विकने की वस्तु १२ मोल लाने में १३ बड़ सुल्य की १४  
 अधम ब्राह्मणों की १५ व्यापार करनेवालों की ॥ २६ ॥ १६ कहते हैं १७ समय  
 ॥ २७ ॥ अधम ब्राह्मणों की १८ स्त्री १९ प्रीति ॥ २८ ॥ २० प्रीति में २१ बड़ा



सिंहकेकुमारकाब्राह्मणीसेआसक्तहोनाषष्ठराशि-त्रयोविंशमयूख(२४६५)

नृप रत्न१९२।१ छुंदिय आत बिपन लौलपो सु\*निदेस,  
चाहोसुही करि चोरको द्विज चैन रखवहु देस ॥ २९ ॥  
सु लपो निदेस कुमारहु सुनि आयुके अवसान,  
दठ तोहु दुर्व्यसनी तज्यो नन होत निज जस हानि ॥  
संकेत रंति बलिष्ठता मझमत्तता जुत सोइ,  
हुँलस्यो बिसैं जब गेह तासहु रिक्त बंधुन होइ ॥३०॥  
जो सर्व चेदिपुंरी द्विजातिन मन्निकैं तन मान,  
मृगराज एननमैं मनो बिलसैं बसैं बलवान ॥  
तक्केहि दाव धनैं द्विजातिन मोघ जे हव मानि,  
जिन जो तथापि तज्यो न उद्यम रत्न१९२।१ सासन जानि ॥३१॥  
बहुबेर छन्नरहे निसा सब बाग १ वारि २ न बेँ डि,  
मन पै चल्यो न रुके सबे बहुबैलज्यो इक मेँ डि ॥  
अति सावधान कुमार गो तिनसाँहिँसाँ कडि एह,  
न तज्यो परंतु कृतांत प्राधुन जाँ द्विजा संन नेह ॥३२॥  
परकामिनी १ व्यसनी जु है व्यसनी सु वहे मधुपान २,  
इम द्वैरहि दोष लगे कुमारहि गेरिबे छल आन ॥  
अतिपान मत्त कुमार सो सुनि गो तँदीय अगार,  
बिटै १ चेटै २ दूत ३ बिदूषका ४दिम सिक्ख दै तँहिँ वार ॥३३॥

बलवान\*आज्ञा ॥ २६ ॥ १ अन्त में २ रात्रि में ३ प्रसन्न होकर प्रवेश कर  
ता ४ घर खाली होता तब ॥ ३०॥ ५ चन्देरी के ब्राह्मणों को तृण समान जा-  
नकर ६ हरिणों में सिंह के समान ७ ब्राह्मणी ने बहुत दाव देखे परन्तु निष्फ-  
ल हुए ॥ ३१ ॥ ८ घर का ९ मेढी (बीच के अपनी कक्षा पर घूमनेवाले) बैल  
के साथ बाहिरवाले वृषभ फिर इसप्रकार फिर १० यमराज का ११ पाधुना  
१२ उस १३ ब्राह्मणी से ॥ ३२ ॥ १४ मद्य पीने का व्यसनी होकर ॥ ३३ ॥ १५  
अत्यन्त मद्य पीने से मस्त होकर १६ उस ब्राह्मणी के घर गया १७ सम्पूर्ण का-  
म कला में निपुण सखा को बिट कहते हैं और १८ नायक नायिका को सङ्केत कि-  
येहुए स्थान में मिलानेवाले चतुर सखा को वेद कहते हैं और १९ परस्पर नायक  
नायिका के सन्देश पहुंचानेवाले का नाम दूत है और २० कौतुक से नायक ना-  
यिका के प्रसन्न करने में समर्थ सखा का नाम विदूषक है ॥

पुनि पानकैं घर सुन्य सो गिनि है बिसेस प्रमत्त ॥  
 इक१ही रह्यो सब रति बिलसन बम्हनी अनुरत्त ॥ ३४ ॥  
 निद्रा निसीर्थसमैं फिरी अतिपानतैं बढिन्याय ॥  
 अब गेहस्वामिनकोँ फुरयो वहं छद्मघात उपाय ॥  
 लहि सुद्धि सोवनकी तिरोहित आइकैं तिन लार ॥  
 कछु रीति पैठि दयेहि मंचक बंधि दार१ कुमार२ ॥ ३५ ॥  
 कछु हे सहायक छन्न बाहिर ते गये भजि कूर ॥  
 सहसा सु जगतही उठयो सहमंच१ बंधन२ सूर ॥  
 लहिहू सके न कुमारके कर१ पै२ बिबंधन होन ॥  
 मचकाइ अंग न तोरि मंच सक्यो खरोरहि सो न ॥ ३६ ॥  
 इहिं छिद्रपै गतनिद्रपै करि गेहस्वामिन वार ॥  
 किय लार दार१ कुमार२ दोउ२न पार सौर कटार ॥  
 भुजजुद्ध मल्ल१न जितिकैं जिहिं सिंह२ केँ दिय भंजि ॥  
 गति दाव कोहु फुर्योन यौं सु लयो भिखारिन गंजि ॥ ३७ ॥  
 गजमार१ बीर२ रु सिद्धसस्त्र३ अभै४ बली५ दृढगंत६ ॥  
 परनारि संगहनैं सुनैं भरैं यौं अनेक प्रमत्त ॥  
 अति दुर्दसा करि मारि दोउ२न गेरि चत्वर आइ ॥  
 जन सर्व वा घरके जुरे भजिकैं दुरे कहूँ जाइ ॥ ३८ ॥  
 कति यौं कहंत हन्यौं यहै संकेत बेलैं कुमार ॥  
 कैसैहु होहु मर्यो सु बढैहि चोरके अनुकार ॥

१ फिर मद्य पाकर २ रात्रि ३ ब्राह्मणी से ॥ ३४ ॥ ४ आधी रात्रि में ५ छलघात का उपाय ६  
 गुप्त ७ मांचे पर ८ स्त्री और कुमार को बांध दिये ॥ ३५ ॥ ९ अचानक १० मंच  
 सहित ११ हाथ पैर दोनों नहीं बंध सके १२ बल पूर्वक ॥ ३६ ॥ १३ जागृत हु-  
 ए पर १४ घर के स्वामियों ने १५ छेदकर, अथवा तरवार और कटारी पार कर  
 दिये १६ बाहु युद्ध में १७ कितने ही सिंहां को १८ कोई दाव स्मरण नहीं हु-  
 आ ॥ ३७ ॥ १९ हाथियों को मारनेवाला २० शस्त्रों को सिद्ध किये हुए २१ दृ-  
 द शरीर २२ बीरों को २३ चौक में आकर डाला ॥ ३८ ॥ २४ सङ्केत किये हुए बाण  
 में मारा २५ बन्धा हुआ २६ चौर के सदृश मरा ॥

कुमार के मारे जाने पर सतियां होना] षष्टराशि-त्रयोविंशमयूख (२४१७)

पहिचानि ताकँहँ द्रंग दूत१न पौरलोक२न प्रात ॥

किय राजद्वार पुकारघल्लत छति१मत्थ२न घात ॥ ३९ ॥

नृप पुत्र माधवसिंह१९३।२ज्यौ हरिसिंह१९३।३ज्यौ जगनाथ१९३ ॥४॥

दहिया१रु गोर२प्रधानद्वै२सेनेस संकर३साथ ॥

क्रम अब्द नव९इक१मासवय पटु सनुसल्ल१९४।१कुमार ॥

लहि पौर१बर्गन जुत जोध२अमात्य३बर्गहु लार ॥ ४० ॥

महिपाल रत्न१९२।१दह्यो पिता जिहिँ छारउपवन मज्झ ॥

इन जाइ तत्थ दह्यो कुमारहिँ सादि सज्झ१असज्झ२ ॥

सीसोदनी जु प्रतिव्रता पहिली१बधू व्रत सत्थ ॥

अंबा१९३।१मरी सु कुमारसौँ दिनदोइ२पुव्वहि अत्थ ॥ ४१ ॥

इहिँ स्वामि भोजनके अनंतरँ सर्वदा लिय अन्न ॥

पतिदुक्ख१ जो बिर्मना२रही पतिके प्रसाद१प्रसन्न ॥

किय एकदाँ ज्वर आत लंघन एकवीस२१ कुमार ॥

अंबा१९३।१सतीहु करे इते२१तव अप्पव्रत अनुसार ॥ ४२ ॥

हत्थो जगम्मनितैँ कुमार यहै परयो कहँ दिहँ ॥

अंबा१९३।१परी चढि अँटुँ सुनि एह अप्प अनिष्ट ॥

धुर कुंचिका डुलि थान कोहु खुल्यो न तालैँक धार ॥

पटक्को कुमार कपाटपैँ तन्न अँसँ फेट प्रहार ॥ ४३ ॥

तोरायो किंवार गडे त्रि३ कंटक दाहिनैँ भुज तास ॥

अंबा१९३।१हु बाहु सही छुरी लय३ स्वामि दुक्ख उदास ॥

हुव सांत द्वै३दिन कांतिसौँ पहिलैँ वधू यह हाइ ॥

१ पुर के लोगों ने ॥ ३९ ॥ २ पुर के लोगों के समूह सहित ३ सचिव ॥ ४० ॥

४ छार थाग में ५ अमल्य ६ यहाँ ॥ ४१ ॥ ७ पीछे ८ उदास ९ प्रसन्नता में १०

एक समय ॥ ४२ ॥ ११ हाथी का नाम है १२ देखकर १३ छत पर चढ़कर गिरी

१४ अनिष्ट १५ एक समय कुंची गुमकर १६ ताला नहीं खुला देखकर १७ कन्धे

की टक्कर लगाई ॥ ४३ ॥ उस किंवाड़ के तीन कांटे दाहिने भुज में घुसगये १८

अम्बा नामक कुमरायी १९ पति से दो दिन पहिले मर गई ॥ ४४ ॥

जरती नती सब अगगवहै परती चितापर जाइ ॥ ४४ ॥  
 दूजी१॥१० चौथी४॥२पंचमी५॥३छठी६॥४सप्तमी७॥५आठ ॥  
 लागि प्रीतिबस नवमी९॥६तथा एकादसी११॥७ पतिलार ॥  
 ए॥सप्त७कुमरानी जरी इनसैं जु चौथी४ \* आहि ॥  
 ज्वर१॥ रेकरआदि असाध्य व्है चिरतैं प्रसी गद जाहि ॥४५॥  
 क्रम सीति सत्र जब लगये छ६ वैधू समेत कुमार ॥  
 सस्मून रक्षियय रोंकि यह तब घोर गद अनुसार ॥  
 चहिकैं भई मृततुल्य सो हग१फेरिश्वास१चढाइ२ ॥  
 छल तास जानि सके न स्त्री जन सोक दुस्सह जाइ ॥ ४६ ॥  
 मृत जानि पीछैं मुकलीं सु सुनाइ सवरथ माँहि ॥  
 निज बिप्र लौहिगये निचोला ढकी सके लाखि नाँहि ॥  
 पतनीं छ६जुत कुमार१९३॥१चिति धरि अग्निदेत प्रजारि ॥  
 सबनैं गई यह जानि सुचिय देहु चितिपर डारि ॥ ४७ ॥  
 बुली यहै पटको न यों करि न्हानि१आदि बिगान१ ॥  
 सुंगार२ ठाइ उमा३ पुजाइ चढाइ देहु सु जन ॥  
 तब द्विजन जीवत जानि तिहिं कथितंदि कृत्य कराइ ॥  
 पीछैं चढाइ चिता दई पय बंदि विस्मय पाइ ॥ ४८ ॥  
 उपयामै१क्रम चौथी४ वधू सहगोनैं दूजी२ एह ॥  
 पीछैंगई इम सप्तमी७ पुनि सद्धि स्वाधि रानेह ॥  
 पति१तात२ वंस पुजाइ पै चढि रोगग्रस्त चिता सु ॥  
 सहगोन अहुत सद्धि बाघेली४॥२॥७ बढी इम आसु ॥ ४९ ॥

\* है ॥ दस्त १ बहुत समय ने २ रांग ॥ ४५ ॥ ३ छः स्त्रियों सहित घरने के  
 समान होगई ॥ ४६ ॥ ५ सुरदे के रथ (सनेयी, तिरकटी) में सुलाकर ६ बत्त से  
 ढकीहुई ७ मरी हुई जानकर ॥ ४७ ॥ ८ स्नान आदि ९ देवी का पूजन कराकर  
 १० कहेहुए कार्य कराकर ॥ ४८ ॥ ११ विवाह के क्रम से यह चौथी थी और १२  
 सती (पतिव्रता) के क्रम से यह दूजी थी अर्थात् प्रथम नस्वर पर अम्बा नामक  
 कुमरानी और दूसरे नस्वर पर यह थी १३ पिता के १४ शीघ्र ॥ ४९ ॥

तासु१ आसुर अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इक१ स्वामि सोति छ६ संग लै कुमरानि गेदकस एह,  
वसती भई दिव जाइ बाढत अप्प किंति अछेह ॥

जन के कहैं वह बम्हनीहु दईसु तथहि जारि,  
कति यौ कहैं किय भिन्न दग्ध सु मंतुके अनुकारि ॥ ५० ॥

खट वेद सोलह१६४६ साक गोपियनाथ१९३१ उईव रूपात,  
दसइक११ कुमरानी उंदूह प्रजा चउह१४ पात ॥

अब हांत अब्द पचीस२५ मित बय दिष्टिके अनुसार,  
ससि बाजि अष्टि१६७१ समे सतीजन लै गये स्वैरगार ॥ ५१ ॥

अपकिंतिको मरिजो१ तथा तौरुपदै२ सुहु आस,  
हाकार१ हुव इम नैरबुंदिय२ दुर्जनालय१ हासर ॥

बिट१ चेटका२दि कुमारकोहु भज्यो सहायक ब्रांत,  
इक१ सौविर्दल रु दूतिका कितहु गये अकुलात ॥ ५२ ॥

किय सन्नुसल्ल१९४१ कुनार निजकर तातको मृत कर्म,  
विधि उक्त सद्धि दयेसु विप्रन भूमि१ गो२ पटै३ भैर्म४ ॥

ख तुरंग लोचन राम३२७० दिन बयमैहु अंहेति१ खगग२ ॥  
एतो सम्हारि उभै२ लग्यो बढिबे अजहै उदैग ॥ ५३ ॥

अवसोहि सत्रह१७ अंबदलो गहि रत्न१९२१ हड्ड१ अधीस,  
मरिहै बढ्यो लखि धर्मभारहिं मृत्युके सुत सीस ॥

परख्यो पितामह ज्यौ बढ्यो सुतपुत्र बाढन प्रीति,  
निरख्यो तऊ तिहिं अग्न१ धर्म२ रु विष्टि११ दै नृपनीति ॥ ५४ ॥

१ रोग से दुर्बल २ स्वर्ग में ३ क्षति ४ दिनने ही लोग कहने हैं कि ५ उस ब्राह्मणी को भी वहीं जला दी ६ अपराध के सदृश ॥ ५० ॥ ७ सन्वत् में = जन्म ८ विवाहकर १० सन्तान ११ भाग्य के १२ स्वर्ग ॥ ५१ ॥ १३ अपकीर्ति का १४ तरुण अवस्था में १५ लुया १६ शत्रुओं के घर में दुर्जा दुई १७ मखूह १८ एक नाजर ॥ ५२ ॥ १९ यत्र २० स्वयं २१ तीन हजार दो गौ सत्तर दिन की अवस्था में २२ दान २३ निरन्तर २४ वदय ॥ ५३ ॥ २५ वर्ष पवनत २६ पोना के मतान पर २७ पुत्र का पुत्र २८ धर्म को आगे और राजाओं की नीति को पीछे रखकर

॥ दोहा ॥

सक भू दय सोलह १६७१समा, भित जँहँ रत्न १९११कुमार ॥

गोपीनाथ १९३१२हु स्वर्गगय, सती सप्त ७ अनुसार ॥ ५५ ॥

उज्जल १ पंचमि ५ राधर अँह, प्रथित पितामह पास ॥

विदित दाह छारोपवन, अहँनको इम आँस ॥ ५६ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुपहु रत्न १९२१२ यह सुनत पत्र इम स्वपुर पठायउ ॥

जानतहे सब जँदपि मोहि क्यों नहिँ समुझायउ ॥

करि सुनकोँ द्रुत कैद इतहु आतो तँदनंतर ॥

तो अपजस होतो न नैन नीचे करंते नर ॥

पुर विप्र भजे बुलवाइ पुनि रहनदेहु कर माफ रचि ॥

इन सम निदेस लहिँ किय अखिल विधि लिपिसँन नन रहत बचि ॥

॥ दोहा ॥

दै सहाय जे हुव दुजन, सुतहिँ विगारन सूर ॥

तिन्ह देसहु बुलहु न तुम, देहु रहन अब दूर ॥ ५८ ॥

आतहि नृपको पत्र यह, वानिजैविप्र विसासि ॥

बुलि बसाये दंगँ बैलि, नीचन सबन निकासि ॥ ५९ ॥

भोज १९११२भुजिष्या जठर भव, भट संकर २१२ नृप आत ॥

सेनापति जिहिँ देस सुख, दिन्नोँ जस अवदाँत ॥ ६० ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदिय मुलक प्रबंध कियउ सेनापति संकर २१२ ॥

चोरी जिहिँ घर चोर रचि रु कहुँ बैसु १ बिस्तर ॥

१ सञ्चत में २ सात सतियों के साथ ३ वैशाख ४ दिन ५ विदित ६ छार वाग में ७ हुआ ॥ ५६ ॥ ८ तो भी ९ शीघ्र १० जिस ११ ब्रह्मा के लेख से ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १२ व्यापार करनेवाले ब्राह्मणों को १३ नगर में १४ फिर ॥ ५९ ॥ १५ पासवान के १६ उदर से जन्म १७ उज्जल ॥ ६० ॥  
१ = धन

भोज के पासवाभिचे संकरका सरना] पछराशि-त्रयोविंशमयूख (२४७१)

स्वामि कहैं ताहि सम धरैं तस घर नृपको धन ॥

पुनि चोरन प्रकटाइ प्रबल बहुगुन लौ अल्पन ॥

देसहिं असेस हुव सुख उदय निसैत रुके लस्कर बहुल ॥

कोऊ रुक्यो न ताको कलहै किय संकर २१ उच्छिन्न कुल ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

अति सुख बुंदिय देस अब, न जुरै अररं निकेत ॥

जोलौ यह संकर २१ जियत, हुव तोलौ सब हेत ॥ ६२ ॥

॥ पट्टात् ॥

नदि बनास तट निकट अधम चालुक नाथाउत ॥

उत्थरनां अभिधान वसत निर्बसथ भय विद्वंत ॥

नाम सिंह नाँच नर चोर चोरन हित चाहत ॥

मैना १ भिल्ल २ न मित्र ग्रंथ देसन अवगाँहत ॥

पत्तन अलोद चोरो प्रहुर होतहि दे रूपय हरखि ॥

प्रकटाइ चोर संकर २१ प्रबल किय प्रमान सुच्छन करैखि ॥ ६३ ॥

स्वामी चोरन सिंह पुब्ब ताकँडै सुनि प्रस्थित ॥

अड्डो भगविच आइ डुरयो पब्बर्यै दुर्ग स्थित ॥

अतिद्विग संकर २१ आत गूढ आरिय तुपकन गन ॥

इक १ गुटिका लागि अलिक परयो हड्ड ६१ सु अचेतन ॥

भोज १ ९१ २ सुत अनसुततकाल भो नाथाउत आइ सु निकट ॥

सिर तास कटि लैगो सदन बुंदिय धर आन्यौ विकट ॥ ६४ ॥

प्रस्थित १ गस्थित २ अन्त्यानुप्रासः ॥

१ घर का स्वामि कहै उतना २ उत्तके पास राजा का धन घर देता ३ प्रवेश करते हुए ४ बहुत चोर रुक गये ५ युद्ध में दकुल का नाश कर दिया ॥ ६१ ॥ ७ घर के किवाड़ नहीं जुड़े ॥ ६२ ॥ ८ नाप्रसंग १० भय से भागकर ११ चोरों को एकट्ठे करके देश का पाह लेता १२ बहुत १३ सूँढ़े लँचकर ॥ ६३ ॥ चोरों का स्वामि सिंह नामक उस शंकर को पहिले १४ गया हुआ सुनकर १५ पर्वतों के दुर्ग में छिपकर आड़ा बैठा १६ ललाट पर १७ मृतक १८ अपने घर १९ धन २० बिना मस्तक नयंकर ॥ ६४ ॥

## ॥ दोहा ॥

हाहारव सब देस हुव, सुनि संकर २११ अवसान ॥  
 जारयो धर बिनु सिर ज्वलन, विधि उदक बलवान ॥  
 संकर २११ आत निपार्त सुनि, सुपहु रत्न १९२११ किय सोक ॥  
 पठयो छंद लिखि भटन प्रति, उपालंभ निजओर्क ॥६६॥  
 तिम दक्षिखन गढ तोभरनि, सुरि न गिनत सुगलेस ॥  
 जानि प्रथम तहँ साध्य जय, चढन चहँ उत एस ॥६७॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वांशयो षष्ठदशशौ बुन्दीन्द  
 रत्नसिंहचरित्रे उदयपुरमहाराणाऽमरसिंहपञ्चत्वानन्तरकर्णसिंह-  
 पट्टसमासादन १, बुरहानपुरसोधपुरामेराधीशकृतकटुनर्मरत्नसिंहवि-  
 रोधोक्तनृपद्वयदिल्लीगमन २, बुन्दीशरत्नसिंहपट्टकुमारगोपीनाथव-  
 लप्रशंसापुरःसरव्यभिचारनिमित्तप्राप्तदुर्मरणात्सहधर्मिणीसप्तक-  
 सहितदहन ३, रावरत्नसिंहभुजिष्यात्मजभ्रातृशंकरचौराधिपसिंहक-  
 रमरणां त्रयोविंशो मयूखः ॥२३॥

आदितः पडुत्तरद्विदशततमो मयूखः ॥२०६॥

॥ प्रायो व्रजदशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

वारीगढ निजदल विजय, नभयो इम नरनाह ॥

१ अन्तर् २ अग्नि में ३ भाग्य ॥१५॥ ४ भाई शंकर का सरना सुनकर ५ पत्र ६ उमराओं  
 के नाम ७ ओलम्हा ८ अपने घर में ॥ १६ ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वांश के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्न-  
 सिंह के चरित्र में उदयपुर के महाराणा अमरसिंह के देहान्त होने पर कर्ण-  
 सिंह का पाट बैठना १ बुरहानपुर में कड़वी हसी करने के कारण जोधपुर  
 और आमैर के राजाओं से रत्नसिंह का विरोध होकर उक्त दोनों राजाओं  
 का दिल्ली जाना २ बुन्दी के भूपति रत्नसिंह के पाटवा कुमर गोपीनाथ के ब-  
 ल की प्रशंसा के अनन्तर व्यभिचार के दुराचार के कारण उसका दुर्दशा से  
 मारा जाकर सात सतियों के साथ दग्ध होना ३ राव रत्न के पादाघातिये  
 भाई शंकर का चौरों के पति सिंह के हाथ से मारे जाने का तर्क ४  
 २३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ छः २०६ मयूख हुए ॥



रत्नसिंहकातिष्मरनी गढपर चढना । पछराशि-चतुर्विंशत्युत्तर (२४७३)

कछु भुव दिल्ली बस करन, सज्जे अंदर सिपाह ॥१॥  
रहतं निकट गढ तिष्मरनि, जयहु साध्य तँहँ जानि ॥  
इककसमय चढिगो अधिप, तिहिँउप्पर बलतानि ॥२॥

षट्पात्

गढ जातहि गरदाई महिष तोपन रन मंडिय ॥  
गोलन गजब गिराइ खोम१ कपिसिर२ सिर खंडिय ॥  
कलह बीर उतकेहु रूपे अंदर रावन रुख ॥  
सहज ठानि गढ सिथल मिले निकटहि बढि सम्मुख ॥  
नृप बीर चढत अधिरोहिनिन उभय२ तुष्टिगय भर अतुल॥  
तीजी३हुती न बुंदीस तब बुल्लयो निज गज वपु विपुला६।  
॥ दोहा ॥

घटा सिरोमनि सघनघन१, रन अट्ठाँलक रूप ॥  
सबन तुंग प्राकार सन, भेरँयो सो गज भूप ॥४॥

॥ षट्पात् ॥

जानिपरत इत जोर वान१ बंदूक२ प्रँहरि बहु॥  
सँमिटि लरत अरि सूर प्रँहत करि दूर दये पहुँ ॥  
वारँन सन कछु वँरन उच्च रहिगो तिहिँ इकखत ॥  
भ्रात भुजिष्या प्रँभव हेरि निजजय विलंब हत ॥  
सहि छँत अनेक गोवर्धन३ सु गहि नट गति गज पिष्टि गय॥॥  
गिनि चढत समिटि पुनि सत्रुगन मंडिय तँहँ भर हेतिमँय॥५॥  
बाहिर सन बंदूक१ वान२ बाँना३दिक बुडत ॥

॥ १ ॥ १ सेना फैलाकर ॥ २ ॥ २ धरकर, चौम (बुरजें) और ३ कोट के कंगरे  
४ नीसरनियों पर चढ़े सो दोनों नीसरनियें अतोल ५ भार से तृटगई ६ बड़े  
शरीरवाले अपने हाथी को मंगवाया ॥ ३ ॥ युद्ध की ७ बुरज के रूप ८ जँचे  
कोट से ९ भिड़ाना ॥ ४ ॥ १० प्रहार करके ११ एकत्रित होकर १२ मारकर  
१३ राजा ने १४ हाथी से १५कोट कुछ ऊँचा रह गया सो देखकर १६पासवा-  
न से १७उत्तम भाई १८बाव १९सत्त्वों का भड़क लगाया ॥ ५ ॥ १०धनुष के बा-

बहु मृत घायल बनत अर्धर दुरिबे तिन उड्डत ॥

गोवर्धन३ बलगाढ भात भट अँचिअँचि ईम ॥

अँस लै रु उप्परहि निखिल प्रेरे मारुति निम ॥

उर बाम भिन्न गुटिका१ असह बिद्ध त्रि३सर उर मज्झ बलि ॥

इक१ सहि स्वसीस असहन उपल किय गोवर्धन चिलकलि ॥६॥

॥ दोहा ॥

भ्राताके सब प्रेष्ट भट, इम चढाइ निजँअँस ॥

गोवर्धन३ पहुँचाइ गढ, दये रँवसाहस दँस ॥ ७ ॥

तिन दुरि बैठे हिड्डँ तिन्ह, गहि असि कट्टि गिराइ ॥

रच्यो अमल गढ तिम्मरनि, फवि जय आन फिराइ ॥८॥

॥ षट्पात् ॥

रतन१९२११ जिति तिम्मरनि दई दिल्लीस दुहाई ॥

बारिय मँतुँ विसारि साह मन सु सुनि सुहाई ॥

जु इत भुँजिष्याजात भात गोवर्धन३ भूपहु ॥

किल्लापति तँहँ किन्न विरचि घायन उपाय बहु ॥

बढतो न आयु मारव्यबस ताही रँति स्वकाँय तजि ॥

नृप भोज१९११२ तनय गोवर्धन३ सु भो जँससेस स्वरोक भजि ॥९॥

॥ दोहा ॥

सबल१९३३ मनोहर१९३१४ अनुजसुत, तिँहिँ गढपति करि तत्थ ॥

पहु आयउ बुरहानपुर, सीम सिविर जससत्थ ॥ १० ॥

नैकै१ अग२तिम दक्खिनि३न, रह्यो सु रोधक रतन१९२१२ ॥

ए और बारूद के भरेहुए वाण १ नीचे २ हाथी पर ३ अपने कन्धे पर लेकर ४ सबको ५ हनुमान के ६ सदृश ७ पत्थर ८ युद्ध में आश्चर्य किया ॥ ५ ॥ ६ भाई के श्रेष्ठ वीरों को १० अपने कन्धे पर ११ अपने साहस स्त्री १२ कवच से ॥ ७ ॥ १३ नीचे ॥ ८ ॥ वारीगढ विजय नहीं हुआ उस १४ अपराध को १५ पासवानिया भाई १६ उनी राजा को १७ अपना शरीर छोड़कर १८ की-तिशेष हुआ अर्थात् मरकर देवताओं के स्थान (स्वर्ग) को गया ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ नीति करके और पर्वतों से ॥ ११ ॥

कछु इत प्रविसन खुरुम २९।२कों, जोलों न फुरयो जतन ॥११॥

पुर मऊ सु लाहि छिद्र पुनि, इत लिय खिचि १३न आइ ॥

हड्डवती हाकार १ हुव, परतट धाटिन पाइ ॥ १२ ॥

दै तब दिल्ली अरज दैल, चाहिय सिद्धख बहुवान ॥

अखिखय अब रोधक इहाँ, पठवहु अपर प्रधान ॥ १३ ॥

पुब्बहि इत सु अयाज पट्ट, सरयो स्वसुर तब मीर ॥

सालक निज किय तास सुत, आसिफखान बजीर ॥ १४ ॥

जामाताको जिहिं जियत, प्रकटायो न प्रेमाद ॥

जिहाँगीर ३८।१ वारा बज्यो, अंदल जास आबाद ॥ १५ ॥

॥ पट्पात ॥

आदिल सरत अयाज मच्छो हारव भुवमंडल ॥

जनकहिं रोयत न जन जिते रोये दग भरि जल ॥

पितामरन खिनपाइ हुरम दिल्लीसकी जु हुव ॥

अप्प हुकम अब एह भयदै लागी प्रेरन भुव ॥

अधिकार आदि बहुतन बदलि दासन निजन समप्पि दिय ॥

करिरहिय स्ववसं पति अरु कतिक कहत बजीरहु और किय ॥१६॥

हुरम चलावत हुकन देस दिसदिसन उपद्रव ॥

डैमर १ डकैती २ डौह ३ जुलम ४ सब मचिग बडे जब ॥

अधिय रतन १९२।१ लिपि अरज एह पहुँची जिहिं अवसर ॥

हुरम सु बहतहुतीहि अपर हाकिम पठयो और ॥

बुंदीस बुलि गढपति सबल १९३।१ रचि खाली सह तिमरनि ॥

हंदजुत सु देस दै हाकिमहिं तब हं किय हड्ड १ नंतरनि ॥ १७ ॥

१ चामल नदी के पैले किनारे २ धाड़ा यतियों को ॥ १२ ॥ ३ पत्र ४ शत्रुओं को रोकनेवालों को ५ अन्य ॥ १३ ॥ ६ बादशाह ने ७ अपने साले ॥ १४ ॥ ८ जमाई को ९ भूल १० न्याय ॥ १५ ॥ ११ न्याय करनेवाला १२ हाहाकार शब्द १३ पिता को नहीं रोवे जितने १४ समय १५ अचंकर ॥ १६ ॥ १६ उपद्रव १७ द्वेष १८ लिखी हुई अर्जी १९ अन्य २० शीघ्र २१ सीमा सहित २२ हाडों का सूर्य ॥ १७ ॥

## ॥ दोहा ॥

अब्द छ सत्त बिताइ इम, रहि दक्खिन पहु रत्न १९२॥१॥  
 जिति अधिक इक १ दुर्ग जैहँ, सब कियरुद्ध\* सपत्न ॥ १८ ॥  
 पुनि बुलाइ हाकिम अपर, अपि सु तिहि अधिकार ॥  
 आयो दिखिय अप्प इम, पायो सुजस अपार ॥ १९ ॥

## ॥ युग्मम् ॥

रन जयशकिय लिय तिमसरनि २, अरि कोउ न दिय आन ३ ॥  
 आसिफ सिखयो साह इम, मिलयो बढावत मान ॥ १० ॥  
 इक १ हत्थी हय खास इक १, पविन जटित इक १ पैद ॥  
 साह दये मिलतहि सभा, बहु सराहि कुलबट ॥ २१ ॥  
 कतिक मास तैहँ वासकरि, सदन सिक्ख लहि सूर ॥  
 आयउ बुंदिय रत्न १९२॥१ इम; प्रसंगायउ जस पूर ॥ २२ ॥  
 कुमर अरिहु कैर माफकरि, बिसवासे सब विप्र ॥  
 परतट खिचि १३ न हनन पर, छितिप बढ्यो सजि छिप्र ॥ २३ ॥

## ॥ हनुमत्फातः ॥

इत देस दक्खिन ३१२ एह, दुरि अब्द बहु प्रियदेह ॥  
 अब रत्न १९२॥१ के इत आत, भो खुसुन ३९१२ केहु प्रभात ॥ २४ ॥  
 बीजापुग १ दिक वीर, सह भागपुनर करि सीर ॥  
 पुनि हाँ जु हाकिम पत्त, मन वाहि गिनि लूनमत्त ॥ २५ ॥  
 आवाद १ दोलत आदि, गढगंज सब संपादि ॥  
 अतिभार परत अनेहँ, अवलंब गिनि गढ एह ॥ २६ ॥  
 बुरदानपुर दे वाम १, करि सज्जदलों जयकाम ॥  
 मरहठ भटहु मिलाइ, पथ सून्य अवसर पाइ ॥ २७ ॥

\*शत्रु ॥ २८ ॥ १ अन्य ॥ २९ ॥ अलिकन्या का गिलायाहुता ॥ २० ॥ रत्नियों का जहा  
 दूया १ निरपेय २ मार्ग ॥ २१ ॥ २२ ॥ कुमर के शत्रुओं का ५ हासिल माफ करके  
 ६ चामल के पैले किनारे ७ शीघ्र ॥ २३ ॥ २४ ॥ ८ स्तब्ध ९ युग के समान ॥ २५ ॥  
 १० दोलतावाद १ सम्पादन करके २ रत्नमय ३ आभार ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

महि बंट लोभ उमंग, अब लौ सहायक संग ॥

इम खुरम ३९।२ बनि बलवान, प्रभु दर्प किय प्रस्थान ॥२८॥

सुनि सोर यह इत साह, चतुरंग सजि जय चाह ॥

पहिलैं अटक नदि पार, प्रतिभास पाइ मुकार ॥२९॥

खड़ी महावतखान, पठयो सु जंग प्रधान ॥

तिहि सिंधुनदि परतीर, सूबा सम्हारि सधीर ॥३०॥

दुख दूरिकरि तिहिं देस, इम देत हुव सुख एस ॥

जो लौ न व्है अरं जत्य, तो लौ धनौ इक १ तत्य ॥३१॥

जैँ साह आन जमाइ, सु रह्यो अनिष्ट समाइ ॥

सुत आत सुनि अब सीन, भट संगदै बहु भीम ॥३२॥

सुतरोध कज्ज सधीर, पठयो अजीम प्रवीर ॥

रठोर १ कूरमशराज, बुल्ले उभैर अतिबाज ॥ ३३ ॥

कछु हेतु तिन लहि कज्ज, सेनाहि निजनिज सज्ज ॥

पठई चमूपति पास, उनको न आगम आस ॥३४॥

जब किन्न अरज अजीम, सुत सञ्चु प्रविसेत सीम ॥

रहितत्य नृप रतनेस १९२।१, दिय जो न प्रविसन देस ॥३५॥

आयो सु अब निज औनै, भुव सून्य अरि गिनि भै न ॥

लहि सर्व दाखिन ३।२ लार, अब आत चैक उदार ॥ ३६ ॥

प्रभुको जु हाकिम पास, जान्यो न कछु भय जास ॥

यातैं सु बुंदिय ईस, अब संगदेहु अधीस ॥ ३७ ॥

जिम खुरम ३६।२ गहि हंम जंग, आनै प्रकीर्ति अंग ॥

मुगलैदस तब करमान, पठयो सु लेखप्रधान ॥ ३८ ॥

नृपरत्न १९२।१ तो कैं न्याय, सब चहत लैन सहाय ॥

१ घमंड ॥२८॥ २ सेना ३ मास मास प्रति ॥२९॥ ३०॥ ४ आर ॥३१॥ अनिष्ट ५ मिटाकर ६ भयंकर ॥ ३२ ॥ ७ पुत्र को रोकने के कार्य ८ बहुत घोर बुलाए ॥ ३३ ॥ ९ कारण १० सेनापति के पास ११ उनका आना नहीं हुआ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ १२ अपने घर १३ सेना ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १४ कैद करके ॥ ३८ ॥

लाखि मुज्झ गदिय लज्ज, करनो व धुव यह कज्ज ॥ ३९ ॥

इततैं अजीम उपेत, बलैं आत मन समवेत ॥

तस संग जावहु तत्थ, सुत खुरुम ३९।२ इनहु १ समत्थ ॥ ४० ॥

कै बांधि भेजहु २ कूर, गहि बंग गंजि गरूर ॥

अरि तस सहायक और, जिनपैंहु डारहु जोर ॥ ४१ ॥

इतकौ मऊ १ सिर एह, अधिराज चढत अनेह ॥

मुगले ६ सको फरमान, पहुँच्यो सु प्रीति प्रधान ॥ ४२ ॥

वह इक्खि बांधिविचार, किय चित्त कृत्य प्रकार ॥

लिपि हुकम यह इत १ लब्ध, इत २ भूमि जावत अद्द १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१।३२।३३।३४।३५।३६।३७।३८।३९।४०।४१।४२।४३।४४।४५।४६।४७।४८।४९।५०।५१।५२।५३।५४।५५।५६।५७।५८।५९।६०।६१।६२।६३।६४।६५।६६।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७३।७४।७५।७६।७७।७८।७९।८०।८१।८२।८३।८४।८५।८६।८७।८८।८९।९०।९१।९२।९३।९४।९५।९६।९७।९८।९९।१००।

इहिहेतुं निज १ पर २ अज्ज, करतव्य उभय रहि कज्ज ॥

सजिस्वीय चैक्र असेस, करि मुख्य तैंहें कुमरेस ॥ ४४ ॥

कैलि खुरुम ३९।२ सदन कज्ज, लाखि उचित भुजधरि लज्ज ॥

जो अष्टि १६ सँम वय जुत्त, पट्ट सत्रुसल्ल १९४।१ पँउत्त ॥ ४५ ॥

फरमान मितैं सजिभोज, इत १ मुक्कल्यो अतिअोज ॥

जैंहें गोर जुगियदास १, अधिराज स्वसुर जु आस ॥ ४६ ॥

जिहिं रक्खि बलपति जंग, सुहु दिन्न सुतसुतैं संग ॥

तब रत्न १६२।१ अक्खिय ताहि अब परख गोरन आहि ॥ ४७ ॥

अब स्वसुर इहिं बैय आइ, जिन देहु बंस लजाइ ॥

सुत स्वीय सुंदरदास, पहिलैंहु लै जिय पास ॥ ४८ ॥

गुडवानसन भजिगोहि, जिनकरहु जैनकहु जोहि ॥

वनि पग्घ १ मुच्छ २ विहीन, दल ईस न बजहु जुदान ॥ ४९ ॥

यह सुनत मन्नि अनिष्ट, मन गोर किय अँघमिष्ट ॥

१ अघ २ निश्चय ॥ ३९ ॥ अजीम ३ सहित ४ सेना ५ साथ ६ समर्थ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ स-  
मय ॥ ४२ ॥ ८ कार्य ९ मिला ॥ ४३ ॥ १० कारण ११ करने योग्य १२ सेना  
॥ ४४ ॥ १३ युद्ध में १४ सौलह वर्ष १५ पोता ॥ ४५ ॥ १६ फरमान के माफिक ॥ ४६ ॥  
१७ पोता के साथ दिया ॥ ४७ ॥ १८ इस अवस्था में आकर १९ तुम्हारा पुत्र ॥ ४८ ॥  
२० पिता ॥ ४९ ॥ २१ बुरा मानकर २२ पाप से मन सीठा किया

जो प्रकट१ प्रीति जनाइ, लघुबैर \*अंतर२ लाइ ॥ ५० ॥  
 कह्यौ जु सांसाक कूर, तवतैहि स्वसुरहु सूर ॥  
 सो मुख्य सुतसुत संग, भो चहत प्रत्युत भंग ॥ ५१ ॥  
 लहि सर्व निजबल लार, कनि सत्रुसल्ल१९४१कुमार ॥  
 मिलि साहदल सन मग्ग, इक१ ठे वढे सब अग्ग ॥ ५२ ॥  
 सजि अल्प खिलबल संग, इत भूप जंग अभंग ॥  
 तनुजनु तृतीय३ द्वितीय२, हरिसिंह१९३१३माधव१९३१२हीया५३।  
 लाखि रहन स्वजनक लार, पहु संग लै नदि पार ॥  
 गय जयन खिञ्चि१३न गज्जि, सब ठाम साधक सज्जि ॥ ५४ ॥  
 मग सत्रुभट दुव२ मारि, पैर पास त्रास प्रसारि ॥  
 घेर्यो मऊ१ बलघोर, जिततित दयो अतिजोर ॥ ५५ ॥  
 जिम सून्य पगघर जानि, मन चोर लै निजमानि ॥  
 जबही धनी मिलिजाइ, कैसैं सु लव१हु टिकाइ ॥ ५६ ॥  
 पाँवि रूप गोलन पात, दव कल्प कल्प दिखात ॥  
 पछिताइ खिञ्चि१३न पंच, रहि नाँ सके रूपि रंच ॥ ५७ ॥  
 परिवेढ मध्य परंतु, भग क्यौ लहैं करि मंतु ॥  
 इम भूप समुह आइ, खैर अग्ग खग्ग चखाइ ॥ ५८ ॥  
 खिरि मुख्य सत्रह१७ खेत, सत उभय२०० भट सैमवेत ॥  
 नृप अनुज केसव१९२१३नाम, कैलि मुख्य आयउ काम ॥ ५९ ॥  
 सत१०० भट परे तस संग, इतकेहु जुजिभ अभाग ॥  
 बुंदीस अनुजनु बहुर, हृदयादि नामक१९२१२ हहु ॥ ६० ॥  
 सुहु सत्रुसल्ल१९४१२ सहाय, उत मुक्कलयो जय आय ॥

अमन में ॥ ५० ॥ सुख साले को निकाला उलटा नाश चाहता है ॥ ५१ ॥ अपर्णा  
 सेना ॥ चलकर ॥ ५२ ॥ १ बाकी छोड़ी सी सेना के साथ २ पुत्र ॥ ५३ ॥ १  
 अपने पिता के साथ ४ जीतने को ॥ ५४ ॥ ५ शत्रु के पास ॥ ५५ ॥ दक्षिण-  
 मी नहीं दिकता ॥ ५६ ॥ ७ यज्ञ रूप ॥ ५७ ॥ ८ घर में पड़कर ९ अपराध  
 करके १० तीक्ष्ण ॥ ५८ ॥ ११ साथ १२ जुड़ में ॥ ५९ ॥ १३ छोटे भाई ॥ ६० ॥

तनुजात छद्म सु तास, दलि सत्रु केसवदास १९३।६ ॥६१॥  
 सब अगग अति जव सिक्खि, दुरि दैवत अरि नृप इक्खि ॥  
 पहुँच्यो सु खिञ्चि १३ पास, दिय रोकि ईस्वरदास ॥ ६२ ॥  
 हनि छत्ति अरि डिग होत, पटक्यो सु तोमर प्रोत ॥  
 कति कहत तस यह तोल, सहिगो सु भजि संगोत्र ॥६३॥  
 बहु वदत हनि अरि बिंद, आयो सु जय जस इंद ॥  
 पुर यों मऊ १ जयपाइ, सब देस दुक्ख नसाइ ॥६४॥  
 सरिता अडोरिय सीम, भट थप्पि अप्पन भीम ॥  
 अनुजहुँ मनोहर १९२।४ अक्खि, रंछुक मऊ १ पुर रक्खि ॥६५॥  
 उत फेरि बुंदिय आन, दित अड ८ रहिय दिवान ॥  
 सुगले ६ स दलैं इत मत्त, प्रति खुरुम ३९।२ सम्मुह पत्त ॥६६॥  
 रिपु चक्रैं तहैं नियराई, हनिवेहि हड्ड ६१ न हाइ ॥  
 गहि स्वामिद्रोहहिं गोर, चहि छन्न निकसन चोर ॥ ६७ ॥  
 वैदि पुत्र कहन बैर, खल वंछि परवत्त खैर ॥  
 पुर खुरुम ३९।२ सन डव पाइ, लक्खैरि १ पिहितैं लिखाइ ॥६८॥  
 कैलि गोरैं जित्ति कुमार, दक्खी जु देव १८०।१ उदार ॥  
 पुनि जोहि गोशन पैलि, दम्मीर १८३।१ लिय कुलहेलि ॥ ६९ ॥  
 लक्खैरि सोहि लिखाइ, पलट्यो सु यह खिनपाई ॥  
 दल देस पुव पठाइ, मिसु १ नारि २ निस निकसाइ ॥ ७० ॥

१ पुत्र ॥ ६१ ॥ २ वेग ३ शत्रु को भाग कर विपता हुआ देखकर ॥ ६२ ॥ ४  
 आला ५ प्रवेश किया; अथवा भाले में पोंकर गिरा दिया ६ यह भाला सहन  
 करके ७ गोत्र सहित ॥ ६३ ॥ ८ कहते हैं ९ चेषन करके १० यह हुए यश के  
 साथ आया ॥ ६४ ॥ ११ नदी १२ छोटे भाई १३ रत्नक ॥ ६५ ॥ १४ यह बुन्दी  
 के राजा का उपपद है १५ सेना १६ प्राप्त हुआ ॥ ६६ ॥ १७ सेना को १८  
 जीप लेकर ॥ ६७ ॥ इससे पुत्र को बुन्दी के देश से निकाल दिया था इस बैर  
 को १९ कनकर २० शत्रु की सेना को २१ दुखलता २२ खाने लिखाकर ॥ ६८ ॥ २३ पु-  
 त्र ने २४ गोशों को जीतकर २५ कुल का खैर ॥ ६९ ॥ २६ समय पाकर ॥ ७० ॥



संकेत निस खिन सोह, भूपाल बलपति भोहु ॥

पुत्रादि निज सजि पास, दुत छन्न जोगियदास ॥ ७१ ॥

जवनेस सुतके जोर, गो बदलि स्वसुरहु गोर ॥

सो ताहि निस चलि मूल, घृत स्वामिदोहिन मूल ॥ ७२ ॥

गोपाल तस सुत गोर, अब खुरुम ३९१ गिनि जन ओर ॥

मिलि पुच्छि परदल मर्म, करिबे जनक मृत कर्म ॥ ७३ ॥

बहु अपि ताहि विसास, पठयो स्वनारिन पास ॥

सब खुरुम ३९१ रतिय १ सिसु २ संत, हे देवगढ इम हंत ॥ ७४ ॥

आवादंदोलत आदि, गोपाल १ गय छल छादि ॥

तब अर्जुन सुंदर २ तास, पहुँचयो स्व अग्रज १ पास ॥ ७५ ॥

भजि अब मिल्यो हिय भिन्न, दुदुकारि ज्येष्ठ १ सु दिन्न ॥

पै स्वामिदोहहि पाइ, हुव गोर अरि इम हाइ ॥ ७६ ॥

॥ चतुर्धर्मिः कलापकम् ॥

छँम तास सुत इनछोर, इच्छ १ जो रह्यो नृप १ ओर ॥

स्व कुटुंब निकसत सूर, पलट्यो न लहि जस पूर ॥ ७७ ॥

जानै मऊ १ पुर जाइ, सब वृत्त दिन्न सुनाइ ॥

उततैहु सुनि सु उदंत, महिपाल किय इम मंत ॥ ७८ ॥

पठयो करोलिय पल, तुम भेजि कह्य बल तत्र ॥

जासात स्वीय सुता १ ९४ १ जु, निर्वाहि तास नेता जु ॥ ७९ ॥

इहि पिहित कहुन आहु, जँदु लै करोलिय जाहु ॥

१ सेनापति २ वीर ॥ ७१ ॥ ३ शाहजादे के बल से ४ उसी राजा में शूल का रोग होकर मरा ॥ ७२ ॥ ५ शात्रु को सेना को ६ पिता का मृतकार्य करने के लिये ॥ ७३ ॥ ७ अपनी स्त्रियों के पाल भेजा ८ अष्ट ९ खेद है ॥ ७४ ॥ १० दो-लतावाद ११ छोटा भाई १२ अपने बड़े भाई के पास गया ॥ ७५ ॥ १३ धिक्कार देकर निकाल दिया ॥ ७६ ॥ १४ समर्थ १५ राजा की ओर रहा ॥ ७७ ॥ १६ वृत्तान्त १७ वह वृत्तान्त सुनकर ॥ ७८ ॥ १८ सम्यन्ध ॥ ७९ ॥ १९ जाने २० ई-आदय

\*दल इतहु निज+दल दिन्न, कुबिरोध गौडन किन्न ॥ ८० ॥

इक? दुष्ट मग अनुसारि, टरिजात बहु मन टारि ॥

‡कलि स्वामिदोह कुमाइ, हुव गौड अरिन सहाइ ॥ ८१ ॥

ताकि बेर §छुद्रहि तत्थ, माति घातदै सिसु मत्थ ॥

इहिँहेतु जदुभट आइ, जो लै कुमारहिँ जाइ ॥ ८२ ॥

सिसु कहितो तिन्ह सत्थ, तुमदेहु जावन तत्थ ॥

बलै सर्व अप्पि विसास, पटुरीति रक्खहु पास ॥ ८३ ॥

इतहु मऊ? निज आँहिँ, भै आत अब तुम माँहिँ ॥

हृदयादि १९२१२ स्वानुज हत्थ, तिम पत्र पहुँचत तत्थ ॥ ८४ ॥

पुनि आत जदुभट पास, किय सन्नुसल्ल १९४१२ निकास ॥

कहि निठि वह गुरु कानि, मन पिहित लज्जित मानि ॥ ८५ ॥

इम कुमर तिनजुत एह, गो स्वसुर जँदुनृप गेह ॥

जिम प्रकट व्याजँ जनाइ, सृगर्या गयो सु मनाइ ॥ ८६ ॥

सजि सावधान स्व सत्थ, जंपी अजीमहिँ जत्थ ॥

सुरि गौड़ बदलत मात्र, मन मलिन करत कुपात्र ॥ ८७ ॥

इत खुरुम ३९१२ बल अधिकात, प्रांतिदिवस बढतहि पात ॥

इहिँहेतु चलि कछु अगग, सुरिहिँ ब लाहि, जय मगग ॥ ८८ ॥

तुम भीर बाहकै तेग, बल सेस बुल्लहु बेग ॥

नृप अनुज कथन निदानै, मन मन्नि मिच्छ प्रमान ॥ ८९ ॥

सुहि पत्रदै निज सीरै, भट बहुरि बुल्लियाय भीरै ॥

जंपी जु नृप अनुजीत, सुहि मिच्छ मन्नि सुहात ॥ ९० ॥

सुरि किन्न कछुकछु मान, पथ अगग अगग प्रयान ॥

\* पत्र † अपनी सेना में ॥ ८० ॥ ‡ युद्ध में ॥ ८१ ॥ § तुच्छ १ पादबों के ॥ ८२ ॥ २ सेना ३ देकर ॥ ८३ ॥ ४ है ॥ ८४ ॥ मन में ५ द्विपीष्टई लज्जा मानकर बड़े लोगों की कानि से कठिनाई से निकलकर गया ॥ ८६ ॥ ६ करो-ली गया ७ छल ८ शिकार ॥ ८७ ॥ ९ कहीं ॥ ८८ ॥ १० प्रतिदिन ॥ ८९ ॥ ११ खन्न चलानेवाले १२ कारण ॥ ९० ॥ १३ शामिल १४ सहाय १५ छोटे भाईने ॥ ९० ॥

उत खुरम३९।२ चक्र उदार, लखि भजत लङ्गिय लार॥९१॥  
 सैरि घट वो दल सैल, गहि पिड्डि दब्बत गैल ॥

इम सैरपुर लग आत, लुंदीस चिंति सु१ बात॥९२॥

लकखैरि पत्तन लुद्ध, सुरि गौड अरिहुव सुद्ध ॥

अव सोहि केसव१९३।६ अत्थ, सनमानि दिय गजरसत्था॥९३॥

खिच्ची१३स जिहिं हनि खेत, किय किति बल समवेत ॥

अनुजात२ सुत छमद एह, नृप पूजि भुज अति नेह ॥९४॥

सुहि कृष्णा१९३।६ केसव१९३।६ सोहि, ईभराज खास अरोहि ॥

लकखैरि१।६ तिहिं लार, बहु दत्त बैभव२ वार ॥९५॥

जिम भात केसव१९२।३ जाम, सुहि कर्ण१९३।१ रूप१६३।१ सनाम

इहिं बुल्लि सहगर्ज१ इहं, नृप ग्रामदिय अर निह ॥९६॥

करि ताहि इत कंटकेस, दिय सिक्ख रक्खनदेस ॥

तिम राम१८९।४ रत्तिय लुल्लि, बलवंत१९१।१ भातहु बुल्लि ॥९७॥

इन्ह संगकरि बल एस, दुव२रक्खि रच्छक देस ॥

असवार१पत्ति२हु अल्प, करि संग नृप चडि कल्प ॥९८॥

भाता१भतीज२सु भाड, खिल लार लहि अनखौइ ॥

चल्लपो खुरम३९।२सिर चंड, खल कारन खगगन खंड ॥९९॥

इत सैरपुर तिहिं आत, पहुँच्यो सु होतहि प्रात ॥

अनुजार्त१निज रु अजीम२, सुनि पत्त सम्भुह सीम ॥ १०० ॥

मिलि स्वीय भट सिरमोर, आनंद सब सबओर ॥

पहुँ जाइ सिर्विरे पईह, दल द्वैरहि दुर्मनं दिह ॥ १०१ ॥

१ सेना ॥ ९१ ॥ पर्वतों के घाटे में सेना २ खली ॥ ९२ ॥ लाखैरी नगर का ३  
 लोभी ४ मूर्ख ॥ ९३ ॥ ९ सेना के साथ कीर्ति का ॥ ९४ ॥ ६ बड़े खासा हाथी  
 पर सवार होकर ७ बैभव का समूह दिया ॥ ९५ ॥ = हाथी सहित ९ इष्ट  
 ॥ ९६ ॥ १० सेनापति ॥ ९७ ॥ ११ सेना १२ पैदल १३ प्रलय करने को ॥ ९८ ॥ १४  
 बाकी १५ कोष करके ॥ ९९ ॥ १६ छोटा भाई ॥ १०० ॥ १७ प्रभु १८ डेरों में १९  
 प्रवेश हुआ २० उदास २१ देखा ॥ १०१ ॥

इहि अंतराय वजीर, बहु लौ सहायक वीर ॥  
 खल दमन आसफखान, पहुँच्योहि सर्व प्रधान ॥ १०२ ॥  
 मिलि नृपश्रीजीमशसमोद, करि सज्ज बल चहुँछकोद ॥  
 रहि रति प्रातहि रंग, जयआस चाहिय जंग ॥ १०३ ॥

॥ दोहा ॥

नियराये खुरुम३९।२हु निखिल, उततैं सत्वर आत ॥  
 होडैल पल्वल जुद्ध हुव, पंचमधुदिवस प्रभात ॥ १०४ ॥

॥ पट्टपात् ॥

उत्तर१दक्खिन२उभय२कटक उत्तर१दक्खिन२क्रम ॥  
 जुज्झे तोपन जाम१दुमह जयकाम अरिदम ॥  
 बलि उत्तर१ दल वांजि तैरल पटके विच तिकये ॥  
 मंगी फोजन मुलक१ विजय२न मिले कहुँ बिकैखे ॥  
 अयमर्द मचत बलि घोर असि चलत धार नर१ वाजि२ चैय ॥  
 उत्तर१ अनीकमैय नाहमैय गैय दक्खिन२ पय छुट्टिगय ॥ १०५ ॥

॥ दोहा ॥

जुग२ मरहठ रु त्रय३ जवन, परत मुख्य भट पंच५ ॥  
 सब भजे उत खुरुम३९।२ सह, रूपिसके न रहि रंच ॥ १०६ ॥  
 बहु ठामन सन मंगि बैल, किन्न खुरुम३९।२एकज ॥  
 इक मनसो किम अकुँरैं, तैंत मत बन रत तज ॥ १०७ ॥

शत्रु को १ दण्ड देने का ॥ १०२ ॥ २ चारों दिशा ॥ १०३ ॥ ३ नक्षीप लिंगे ४ शीघ्र. सेना  
 रूपी ५ छोटे तालाव में ६ नाव रूपी चढ़ कुछ हुआ अर्थात् शीघ्र चलते पार निकल  
 लगये "हौडः नौकाविशेषे, इति शब्दार्थनितानलिः" दिल्ली की और खुर्रम की  
 दोनों सेनाएं क्रम पूर्वक उत्तर और दक्षिण दिशा में गईं एक प्रहर १, शत्रु-  
 ओ को दण्ड देनेवाले १० चादशाही सेना के घोड़े ११ जवान. आंशी दूर फौज  
 से विजय और मुक्क मिलते नहीं नहीं १२ देने १३ कुछ १४ समूह. पादशाही  
 १५ सेना रूपी १६ नृमपति (सिंह) से दक्षिण रूपी १७ हाथी के पैर छूट गये  
 अर्थात् दक्षिण की सेना भगी ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १८ सेना १९ खड़े रहें २० तहाँ  
 अथवा तिनके ॥ १०७ ॥

आसफखान १ रु रैनर इत, खरे जित्ति रनखेत ॥

कतिदिन तहँ तकि अवधि कछु, बसे सुजस समवेत ॥२०८॥

सुरि भजेहु न दूर मग, लंघत हुब, कछु लज्ज ॥

ठहराये जय लोभ ठगि, सकल होन पुनि सज्ज ॥२०९॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वांशयणो षष्ठदराशौ बुन्दीन्द्र  
रत्नसिंहचरित्रे रत्नसिंहतिम्मरनिविजयन १, जहांगीरश्वसुरायाज  
मरणाद्वेलुकोप्रद्वसमयनूरजहांशासनानुसाराधिकारिपरिवर्तनखुर-  
हानपुराधिकारस्थरत्नसिंहदिल्लीगमनपुरःसरबुन्द्यागमन२, खुरमप्र-  
तिरोधार्जीमविनयानुसाररत्नसिंहाजीमान्तिकगमनार्थयवनेन्द्राज्ञा-  
वितरण३, खुरमप्रतिरोधकस्वपौत्रशत्रुशल्यप्रेषणानन्तररत्नसिंहस-  
ऊविजयन४, स्वपौत्रसंगतसेनापतीकृतस्वश्वसुरगोडयोगीदासप्रतीप-  
भवनश्रवणखुरमप्रतिरोधार्थरत्नसिंहगमन५, रत्नसिंहासफखानकृ-  
तसमरखुरमपलायनं नाम चतुर्विंशो मयूखः ॥२४॥

आदितः सप्तोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥२०७॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

१ रत्नसिंह २ यश के साथ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वांश के छठे राशि में बुन्दी के भूपाति रत्न-  
सिंह के चरित्र में रत्नसिंह का तिम्मरनि को विजय करना १ दिल्ली के बाद-  
शाह जहांगीर के श्वसुर अयाज के मरने के कारण देश में उपद्रव होकर नूर-  
जहां की आज्ञानुसार अधिकारियों की बदली होने के कारण रत्नसिंह का  
खुरहानपुर के स्वयं से दिल्ली छोड़कर बुन्दी आना २ खुरम को रोकने के कारण  
अजीम के विजय के अनुसार रत्नसिंह को अजीम के समीप जाने की बाद-  
शाह का आज्ञा देना ३ अपने पौत्र शत्रुशल्य को खुरम को रोकने के लिये  
भेजे पीछे रत्नसिंह का मऊ विजय करना ४ अपने पौत्र के साथ सेनापतिक-  
रके भेजे हुए अपने श्वसुर गोड योगीदास के पलटने की खबर सुनकर रत्न-  
सिंह का खुरम को रोकने के लिये जाना ५ रत्नसिंह और आसफखान से यु-  
द्ध करके खुरम के भागने के वर्णन का चौबीसवां २४ मयूख समाप्त हुआ औ-  
र आदि से दो सौ सात २०७ मयूख हुए ॥

थकत इत रय ठहरि थिर, दक्खिन १।२ दल लखि दाव ॥  
 दिन कहु कहुँक मिलान दिय, भ्रम हरत जय भाव ॥ १ ॥  
 इतहु देवगढको असह, जब पहुँच्यो अति जोर ॥  
 पग्यो त्रास बुरहानपुर, सूवा, जिततित रौर ॥ २ ॥  
 हाकिम जो पठयो हुरम, देस १ कालरतिहिँ देखि ॥  
 दल सहाय इच्छक दयो, लघु वजीर प्रति लेखि ॥ ३ ॥  
 आसफखान १हु बंघि वह, मंडि रतन १९।२१।२सन मंल ॥  
 अलप सत्य पत्त उभय २, तव दिल्ली नैय तंत्र ॥ ४ ॥  
 जव करि कुम्भ १कबंध २जुग २, उपात १वध बुलवाइ ॥  
 कहिय मिलहु निजनिज कटर्क, जँहँ अजीम तँहँ जाइ ॥ ५ ॥  
 रहिय रतन १९२।२बुरहानपुर, तोलों न सुन्यो त्रास ॥  
 पातँ सुहि सूवा इनहि, मिलिहँ दलन भिवांस ॥ ६ ॥  
 सूवापति सतकार सब, दुँदर नृपहिँ दिवाइ ॥  
 पठयो पुनि बुरहानपुर, साह हुकम दरसाइ ॥ ७ ॥  
 सहेँस उभय २०००दल दिन सहित, महिप अनुज इत मंगि ॥  
 कलाह अजीम सहायकिय, शेकन रिपु रन रंगि ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

जवहि रतन १९२।१नृप सजैव सज्जि हंकि य सूवा सिर ॥  
 उभय २मास गृहआइ थप्पि प्रकृतिन प्रबंध थिर ॥  
 बुल्लि करन १९३।१वलवंत १९१।१भुजन तिन्ह अपि राज्य भँर ॥  
 प्रभू प्रमुख पय प्रनामि मऊ १चेनाइ मनोहर १९२।४ ॥  
 निज अनुज हृदयनारायन १९२।१हिँ कैथित २०००हयन जुतरहन कहि  
 १ वेग धकने से २ मुकाम ॥ १ ॥ २ ॥ सेना से सहाय की ३ इच्छा करनेवाला  
 ॥ १ ॥ ४ प्राप्त हुए ५ नीति के आधीन रहकर ॥ ४ ॥ १ वेग (शीघ्रता) करके  
 ओलम्भा देकर ८ सेना में ॥ ५ ॥ ९ नाश करने को १० लुटेरों के घरों को ॥ १॥  
 ११ वर्षणा में नहीं आवे ऐसा ॥ ७ ॥ ८ ॥ १२ शीघ्रता से १३ राज्य के प्रधान पुरुष  
 १४ भार १५ माता १६ आदि के १७ ऊपर कहे हुए ॥

रत्नसिंहका बुरहानपुरमें सजना ] षष्ठराशि-पञ्चविंशमयुख (२४=७)

प्रस्थान करत बुरहानपुर\*स्वबल और बुल्लिय सबहि ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

स्वसुरालय सन पुनि सता १९४१, कुमार बुल्लि ततकाल ॥

सब सासक रक्खि सु सदन, प्रस्थित हुव भूपाल ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्रज १दल लखि अनुज २हुकम परिमित २००० रक्खे हय ॥

केसव १९३१ दतस छेम ६कुमर भनिय जनकहि तँह निर्भय ॥

न रहहु बहहु निदेस आत कूरम १कबंध २अब ॥

पिसुनन सन वचि पाय सोधिमग धरहु बोधि सब ॥

द्वारकादास १नामक बिदित सेखाउत कूरम सहित ॥

केसव १९३१ १इतीक कहि लहि कटक आनि मिलिय दबवत अहित

॥ दोहा ॥

पुतना सह बुरहानपुर, पत्तो पहु जैसपीन ॥

कुर्म द्वारकादास १ कहँ, कँटकईस तँह कीन ॥ १२ ॥

भेजि रायमल्लोत २३१९ भट, बुद्धिचंद्र १९२१३ वर बंधु ॥

रक्खयो गढपति तिमरनि, अरिगन गेरन अंधु ॥ १३ ॥

माधव १९३१ हरि १९३१३ केसव १९३१ ६ प्रमुख, सुनु १भतीजन सत्थ

सूबा सीम सम्हारि सब, तप्यो निरंकुस तत्थ ॥ १४ ॥

सासक करि हम्मीर १९०१ सुत, पूराउत्त १७१२३ प्रताप १९११२ ॥

पठयो पत्तन अलचपुर, सुनि उत डैमर सत्ताप ॥ १५ ॥

कहत किते आसेर यह १९११२, रक्खयो गढ अनुरूप ॥

रहिय अप्प बुरहानपुर, भू नैव दबवत भूप ॥ १६ ॥

\*अपनी सेना ॥ ९ ॥ १ सासरे से १ शत्रुशाल को १ आज्ञा करनेवाला घर में ३ गमन किया ॥ १० ॥ ४ पञ्च ५ हुकम माफिक १ आज्ञा धारण करो ७ युगलों से ८ खको समझ कर ६ शत्रुओं को दघाता हुआ ॥ ११ ॥ १० मेना सहित ११ पुष्ट यश से १२ कछवाहा १३ सेनापति ॥ १२ ॥ १४ छुए में ॥ १३ ॥ १५ आदि ॥ १४ ॥ १६ उप-द्रव ॥ ११ ॥ १७ नवीन भूमि दवाले के लिये ॥ १६ ॥

जंपहिं कति आसेर जब, उत द्यो अरिनि अधीन ॥

रक्खि तहां तिय १ सिसुर खुरुम ३९।२, कलह उपक्रम कीन ॥१७॥

पै दक्खिन १ बुरहानपुर २, उत्तर १ गढ आसेर २ ॥

परिबिच तापी १ सस ७ पुट २, फलमैं भासत फेर ॥१८॥

तत्थहु ठै संभव तदपि, अंतर दिल्लिय आन ॥

दक्खिन १ उत्तर २ अरि दु २ दिस, तिम न जन श्रुति तान ॥१९॥

॥ पट्पातु ॥

हाकिम पंठयो हुरम ताहि प्रतिमग्ग भेजि तिम ॥

इत अवहित हुव अप्प १ हेत्ति २ तुरकान १ महा हिम २ ॥

आसिफखान वजीर अक्खि सत्वर पहुँचन इत ॥

अटकन खुरुम ३९।२ हिं उक्त महिप पठये बल सम्मित ॥

रठोर १ साहदल मुख २ रहत चलात कुम्स १ चंदोल २ चढि ॥

अक्खिय सु चिंति जयसिंह १ अब पलाटन यह यह मंत्रपढि २०।

सुनहु साह १ सह सचिव २ अशुत दुव २००००० दल मम आश्रित

सादी पंचहि सहस ५००० अधिप गजसिंह २ तर्ग इत ॥

निर्घत मोहि नासोर १ थट ईसहिं अब थप्पहु ॥

मिर्त रठोरन महित सहित चंदोल २ समप्पहु ॥

जय गिनहु जुद्ध बहु चक्रवस हजरत इम बदलाहु हमहिं

करि सुहि कबंध दुर्मनं क्रिय सु सूरसुतहु टारि संक्रमाहि ॥ २१ ॥

१ कहते हैं युद्ध करने का विचार पूर्वक २ आरम्भ किया ॥ १७ ॥ ३ तापी नदी ४

सतपुड़ा पहाड़ बीच में पड़ता है इसकारण इसके होने में फरक दीखता है ॥ १८ ॥

५. ऐसी दन्तकथा नहीं है ॥ १९ ॥ ६ पीछा ७ सावधान ८ सूर्य ९ तुरकान

रूपी वरफ का १० शीघ्र ११ राठोड़ यादगाही सेना की हरोल में रहते हैं और

कलवाहे १२ चन्दोल में (पीछे) रहते हैं १३ इस रीति को ॥ २० ॥ १४ सवार १५

आधीन १६ निश्चय १७ आगे (हरोल में) सेनापति करके १८ राठोड़ थोड़े पूज्य हैं

जिनको १९ अधिक सेना के आधीन २० उदास २१ खुरसिंह का पुत्र सेना से

दलकर २२ चला ॥ २१ ॥



दोहा

साह पठाये सुत समुख, रहि तब मत अनुरूप ॥

अंगग? पिठि२ क्रम तजि\*अपन, भिन्नचले दुवर भूप ॥२२॥

षट्पात

रानअमर सुरतान करन१ अक्खिअ पहिले क्रम ॥

भ्रात अनुज तस भीम२ दुसह सूचिय परबल दम ॥

साह पटा लहि सोहु होहु कै१ तब तँहँ हाजरि ॥

कै२ पठयो होहु कहँ सरनि कै३ होहु तिथि सरि ॥

कै४ पिक्खि बंस अनुकूल क्रम होहु भीर निर्वल हटत ॥

पै अप्पि सरन खुरुम३९॥२हिं प्रथित करहिं कित्ति काटत१कटत

इम इक१ आहव अंत सरन यह रक्खि साहसुत ॥

जातहि कासी जुरहिं सुरहिं अभिमुख धारन धुत ॥

मरहिं कबंधन माहि कुम्म१ हड्डन विदुंत करि ॥

इहिं मयूख सुहि अधिक होहि प्रभु सुनहु रामहरि२०१४ ॥

जौहो हजूर तोतो१ जबहि पठयो वहहु स्व पुत्र पर ॥

हो दूर तोशहु अवसर हरखि भयो सरन सिर मरन भर ॥२४॥

दोहा

होहु कितहि यह भीमहरि, पै कुलधर्म प्रसंग ॥

रक्खि सरन खुरुम३९॥२हि खिरघो, अप्पन तिलतिल अंग ॥२५॥

वद उदंत अहँ अवहि, इक्क१ समरके अंत ॥

मिले अजीमहि इत उभय२, कुम्म१ कबंध२ कुंकता॥२६॥

आगे पीछे चलने का \* स्थान छोड़कर ॥ २२ ॥ उदयपुर के राणा कर्णसिंह का छोटा भाई भीमसिंह १ यशु की सेना का दखल देने वाला २ मार्ग में ४ अश्वत्था तीर्थ करने गया होवेगा ५ खुरम को शरण देकर ६ कीर्ति प्रसिद्ध करेगा ॥ २३ ॥ ७ सन्मुख दरवाजों में जाकर नरेगा ८ कछवाहों और हाडों को १० भगाकर ११ हे रावसिंह १२ जो बादशाह के हजूर में था तो ॥ २४ ॥ १३ भीमसिंह ॥ २५ ॥ १४ वृत्तान्त १५ एक युद्ध होने के पीछे १६ भूपति ॥ २६ ॥

पठये दल दोउरन प्रथम, जिन्हजिन्ह सिबिरन जाइ ॥

भूप मिले निजनिज भटन, सुनि१ पुनि कुसल सुनाइ ॥ २७ ॥

सीसोद३हु जो संग हो, तो अजीम मिलि ताहि ॥

निवसायो अप्पन निकट, सिबिर प्रबंध सराहि ॥ २८ ॥

महिपरत्न१९२१ अनुजहु मिलिय हृदयनरायन१९२१२६६१ ॥

नृप अवंति सूबा अनुंग, विविध मिले बल बड्ड ॥ २९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कुसरहु खुरुम ३९१२ खलन बहिकायो, उततैं सजि दक्खिन  
३१२ बल आयो ॥

आजि मच्यो संहसा दुहुँ२ औरन, हुव संकुल जिम सिंधुहिलोरन ३०॥  
उत्तर पवन चलयो तिहि अवसर, भरयो प्रथम लोलन गोलन भर ॥  
गिरनलगेनर१गंध२हय३भय४गन, फिरनलगे भेलन भुव अहि फन  
किरन लगे छल१चमर२केतन, खिरनलगे मनि१कनि२कि३खेतन  
धिरनलगे कातर चितत घर, चिरन लगे गिरि चमकि चराचर ॥ ३२ ॥  
तिरनलगे नभ१उदधि२गिद्धतिम, उभय२चक्र तहँ भिरनलगे इम ॥  
कछु अनेहँ कैलकल तोपन करि, बल बल बहुरि बडे जैव विस्तारि ३३

१ डेरों में जाकर ॥ २७ ॥ २ निवास कराया ३ लज्जन के ४ सूबाके सेवक ५  
बड़े बल से दोनों ओर ७ अचानक ८ युद्ध हुआ सो समुद्रों के हिलोलों के स-  
मान = भर गया ॥ ३० ॥ ९ चपल गोलों का झुड़ लगा जिससे १० हाथी, घोड़े  
११ ऊँटों का समूह गिरने लगा, पृथ्वी को भेलने में १२ शेषनाग फण किराने लगे  
“यहाँ अहि शब्द सामान्य सर्प का वाचक है परन्तु पृथ्वी को भेलने के योग  
से शेषनाग का ग्रहण है” ॥ ३१ ॥ छत्र चमर और १४ ध्वजा १३ गिरने लगे  
और युद्ध में मखियें बिखरने लगीं सो १५ मानों खेतों में १६ दांघियें (धान्य  
की मंजरी) बिखरती हैं १७ कायर लोग चिन्ता के घर में धिरने लगे चर और  
अचर चौक कर चीर होकर गिरने लगे ॥ ३२ ॥ इसप्रकार आकाश रूपी १८  
समुद्र को ग्रीध तिरने लगे इसप्रकार दोनों १९ सेना भिड़ने लगीं १९ कुछ  
समय तोपों का २१ कोलाहल करके फिर दोनों सेना ने २२ शीघ्रता करके बल  
(पराक्रम) फैलाया ॥ ३३ ॥

कुंतन सरसन असिइन संकुलि कैलि, बत्थन कहँ पाइक जुरत बलि ॥  
 इत१ के उत२ उत१ के पैठे इत२, मिलत भित्र चिरतैं बिछुरे मित ॥ ३४ ॥  
 मचकि कपाल कढनलगि मज्जा, लचकि गिरत सुनिरत भटलज्जा  
 अंत्रनजाल किरत कढि अण्गै, लंघि तंदपि समुखहि पगलग्गै ॥ ३५ ॥  
 उडत सीस१ रुँडे२हि बहु उडत, बिहमि कि कीर१ दसंगुल२ बुद्धत ॥  
 उत्तर१ अनिल इतसु अनुकूलहि, सम्मुद दिस२ खटकयो हिय मूलहि  
 हेति१ १ दत्थ२ इत१ कहि सफल हुव, मज्जी उत२ अवतो जियत२हु मुँव ॥  
 रन घन उडत मिच्छ१ मरहडे२, निजजिय पिधँ दक्षिण दल नडे ॥ ३७ ॥  
 रतन१ फेट बीजापुर२ रंज्यो, डमहि अजीम१ भागपुर२ भंज्यो ॥  
 अतिबल मुरत द्वे२हि दल अँसैं, प्रतिहँत खिलहु कोन घर पैसैं ॥ ३८ ॥  
 जिन्हँ बल खुरम३१ १२ बन्ध्याँस जिजोधँक, मगमग सुरेबिमुखगतिबोधँक  
 मंगी धारि समग्र सुरकानी, मनहु लखयो न खुरम३१ १२ कित भानी  
 स्वबली मुरत जान्यो न राहलुँव, हुलसि कुँम्भ बलाबिच जुज्झतहुव  
 अति भँर परत पिहँ बल इकरयो, समुक्ति सु सून्य प्रदँवहि सिक्खयो

१ आलों से २ तीरों से ३ तरवारों से ४ उस युद्ध को ५ भरकर कितने ही ६ पैदल बाहु युद्ध करने लगे. बहुत समय के बिछुड़े हुए ७ मित्र के समान मिलने लगे ॥ ३४ ॥ वीर आदि के समूहों के लूटने से ८ गृह (अस्थितार) निकलता है और नखकर गिरते हुए वीर लज्जा का स्वरण करते हैं आँतों का समूह निकल कर आगे ९ गिरता है १० तोभी उसको लंघकर वीरों के पैर सम्मुख ही उठने लगते हैं ॥ ३५ ॥ मस्तक गिरते हैं और बहुत से ११ बिना मस्तकवाले धड़ हैं सो मानों कीर हसकर १२ खरबूजों की वृष्टि करता है उत्तर की दिशा का १३ पवन दिल्ली की सेना के अनुकूल होकर खुरम की सेना के हृदय का शूल होकर चुभा ॥ ३३ ॥ १४ शस्त्रों के हाथ १५ जीते ही शून्य हुए १६ अपने जीव को प्यारा जाननेवाली दक्षिण की सेना भागी ॥ ३७ ॥ १७ नाश होने से बाकी रहे जिन्हों ने जाना कि अब किस घर में सुमंगे ॥ ३८ ॥ सज कर १८ बोझा बना था १९ बिना विचार भागे २० वह मांगी हुई धाड़ ॥ ३९ ॥ २२ खुरम ने अपनी २१ सेना को भगी हुई नहीं जानी इसकारण प्रसन्न होकर २३ कछवाहों की सेना में युद्ध करता रहा जब अत्यन्त २४ भार पड़ा तब २५ पीठ की सेना को देखी उस स्थान को शून्य देखकर वह भी २६ भागा ॥ ४० ॥

हो ढिग<sup>१</sup>कै कछुदर<sup>२</sup> पंताहर, संकट भीम सहायक संगर ॥  
 होहु कितहि पै तास सरन-हुव, स्वसत नसत नैसि त्रसत साहसुव<sup>३</sup>  
 लखत सरन खुरुम<sup>३</sup>१२ सु हियलायो, साह पटा सु न अधि-  
 क सुहायो ॥

तस दल अगैं भजि सु भीरु तिम, अप्पन मरन लई कासीइम  
 किते कहत सूवा प्रयाग को, भीमतंत्रहो खुरुम<sup>३</sup>१२ भागको ॥  
 सो तैंह जाइ भयो सरनागत, बाँहगदिय तिहिं होहु कितहु बंत<sup>४</sup>  
 ताहि उबारि मरन निश्चय तकि, थान पहुँचि मुररयो सु मनौ थकि ॥  
 धीर कतिक दै संग धीरधुर, पठयो खुरुम<sup>३</sup>१२ निकासि उदयपुर<sup>४</sup>  
 करै रान रक्खयो हु मास कति, भजिजैहँ दक्खिन तस्कर भति ॥  
 इत इहिं कहि भीम रन अंकुरि, मरन खेतं मिलतहि पच्छोमुरि<sup>४</sup>  
 पिठिलगे पहुँचत दिल्ली दल, परयो सिंह तिनपर ग्रंहरि प्रैतल ॥

पिक्खहु चाहि मरे सु रौम<sup>२</sup>०३१४ पहु, बहैं समुख न गिनैं अ-  
 ल्प<sup>५</sup> रु बहु<sup>२</sup> ॥४६॥

जावत सरन मरन कासी जब, सगताउत्त मान<sup>१</sup> यह सुनि सब ॥  
 धूलिमित्रं भीम<sup>२</sup>हि गति धारयो, बुँध तिहिं संगहि मरन बिचारयो ॥  
 उज्झि सबन दे जल मेवारहि, बंटन वेग भात सन भारहि ॥

१ महाराणा प्रतापसिंह का पौत्र समीप था अथवा दूर था परन्तु वह शी-  
 पोदिया भीमसिंह उस युद्ध के संकट में खुरम का सहायक हुआ ४वां दशाह  
 का पुत्र (खुरम) ३ भाग कर उसकी कारण से हुआ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ५ भीमसिंह  
 के आधीन था ६ यह वार्ता कैसे ही होओ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ७ महाराणा करण-  
 सिंह ने खुरम को कितने ही महीनों तक उदयपुर में अपने पास रक्खा = चो-  
 र की भांति भाग गया ९ भीमसिंह युद्ध में खड़ा होकर मरने योग्य १० का-  
 शी का क्षेत्र मिलत ही पीछा फिरा ॥ ४५ ॥ ११ हातल का प्रहार करके वह  
 सिंह दिल्ली की सेना पर गिरा १२ हे प्रभु रामसिंह देखो जो मरना बिचार लेता  
 है वह शत्रु के सम्मुख ही बहता है १३ थोड़ा और बहुत नहीं देखता ॥ ४६ ॥  
 १४ बालमित्र १५ उस चतुर मानसिंह ने ॥ ४७ ॥ १६ सब को छोड़ कर

\* विक्रमी संवत् १६७१ में महाराणा अमरसिंह के साथ बादशाह जहांगीर की सन्धि हुई तब शह

जा दिन भीम जुखो दिहली दल, पहुँचत तादिन तिहिँ नलगी  
पल ॥४८॥

प्रधानें उपक्रम मिलत महापटु, कछु कहि भिन्न मरन हितकी पटु  
सजि तिम मान १ भयो अग्रेसर, गोकुलदास २ सहित सजि  
संगर ॥ ४९ ॥

कासी मरन मोरि सब कँछी, सुरे चार भट दँक जिम मच्छी ।  
साह कटक भज्जत जानत सठ, हरखत पिठि लग्यो जितन  
हठ ॥ ५० ॥

तससिर मुरि सीसोद परयो तब, भरन हार मजैँ सु सहै सब ॥  
बढिगो प्रतिवत्त जलधि बिलोरत, मुरत १ न सुन्यो सुन्यो पँर  
मोरत २ ॥ ५१ ॥

अमि प्रसखो सीसोदन असो, कहँ सुकवि मारी गद कैसो ॥  
दिस पूरव सन प्रबिसि साह दल, किजौ भरन मारि अरि क-  
लकल ॥ ५२ ॥

बहो भीम अमि प्रलय भीमँ बिधि, नरखो मगलयो कासी निधि  
सु मुरि पंचपक्रोसी विच सम्मुह, सज्जन दैन लग्यो दुल्लहसुहा ॥ ५३ ॥

१ जिस दिन ॥४८॥ २ युद्ध के विचार पूर्वक ३ आरम्भ होते ही वह ४ अत्यन्त  
चतुर ५ अग्रणी दृष्टि ६ धोड़े ७ जल में जिस प्रकार मच्छी पीछी फिरै तिम  
प्रकार पीछे फिरै ॥५०॥ ८ लेना प्रति हल्लबुद्ध को मन्थनादृष्टि १० शत्रुओं को मो-  
ड़ता दृष्टि ॥५१॥ ११ महामारी (मरी) रोग के समान तरवार चलार्ह १२ कोलाहल  
२२ ॥ भीमसिंह का १ शत्रु २ अयंकर प्रलय की विधि में चला १५ दुर्लभ सुख ॥५३॥

जादा गुरम ने भीमसिंह को अपने साथ लेजाकर बादशाह से भीमसिंह को राजा के लिये के साथ बड़ा  
दरजा दिलवाया तभी से भीमसिंह बादशाही सेवा में रहता था इसकेलिये ऐसा प्रसिद्ध है कि सादजारा खु-  
रम की माता भीमसिंह के राखी बान्धती थी इसकेलिये भीमसिंह खुरम को मानजा कहता था इसीलिये  
से भीमसिंह बादशाही सेवा से निकलकर अपने मानजे खुरम का सहायक हुआ. इन युद्ध का उत्तम व-  
हतासी तवायियों के हथेली से बीरबिनोदनामक मेवाड़ के इतिहास में लिखा है जिसमें जोधपुर जामर आ-  
दि को मगाकर सहजादे पर्वत के समीप बादशाही सेना में भीमसिंह का माराजाना लिखा है. यह युद्ध वि-  
कनी संवत् १६८१ में काशी के समीप हुआ था ॥

उभय२ गोकुल१ रु मान२ पास इम, जय रन रमत चक्ररच्छक२  
जिम ॥

परत बज्रगति सरन मरनपन, कूरम१ हड्ड२ जवन३ किय कैनकन५४  
टिकत कबंध१ खरो इकदिस टरिं, कालि वह लाखत मत्त आसव  
करि ॥

सँय रँपमय चलत सीसोदन, गँय१ हँय२ नर३ न भरन लग्गे गन५५  
कहुँक रुंड लौ मुंड स्वीयँकर, है हियदिहि१ पहुँचि पूजै हर ॥

भूत दूतबनि बहुन भिरावत, खूवन अतिभट सिरन खिरावता५६  
परत भार लखि जियनपराधन, नँहो हड्ड६१ सु हृदयनरायन ॥

कुल कलंक कानि न कछु किन्नी; लौ प्रियप्रान दिसा इकलिनी५७  
अग्रज भयहु न कछु मन आन्यौ, प्रिय१ जिय अग्रिय१ नँक प्रमान्यौ

इत सीसोद भीम कइत अरि, कूरम१ हड्ड२ जवन३ कनकनकगि५८  
संकट पुर्व भजत जान्यौ सुहि, सम्मुह सुरत काल मान्यौ सुहि

इक चितोर करन निज उज्जल, बाहुरि भिरत बरन पिकरयो बल  
कोउक रह्यो अछुत भीमकँर, सब हुव जत्रकुत्र अग्रेसर ॥

समर खरो जयपाइ अमर सुर्व, दुजन अदिह हैति१ जजर हुव ॥६०॥  
छिज्जत कूरम१ जवन२ लोह छकि, छिति लोटत कति भजत मोहछकि

विजय निरसन घुराइ भीम बँलि, असह खेत ठहो जसउज्जलि ६१

१ अर्जुन और २ श्रीकृष्ण के समान; अथवा श्रीकृष्ण की रक्षा से अर्जुन युद्ध करे इसप्रकार युद्ध किया. कछवाहे और हाडों को ३ तितर वितर करदिये ॥ ५४ ॥ जोधपुर का राजा राठोड़ गजेंसिंह दलकर एक ओर खड़ा रहकर ४ युद्ध देवता रहा था ५ मध्य में मस्त होकर ६ हाथ ७ वेग सहित ८ हाथी ॥ ५५ ॥ ९ अपने हाथ से अपना ही मस्तक लेकर १० हृदय की दृष्टि से ॥ ५६ ॥ ११ जीने में तत्पर होकर १२ भागा १३ शंका ॥ ५७ ॥ १४ जीव को प्यारा और १५ नाक को अप्रिय माना ॥ ५८ ॥ १६ घेरा लगने से १७ पहिले ॥ ५९ ॥ १८ भीमसिंह के हाथ से कोई ही कहीं अछूता (घाय रहित) रहा १९ राणा अमरसिंह का पुत्र शत्रुओं से नहीं देखा जासके ऐसा; अथवा उस युद्ध में शत्रुओं को खड़ा नहीं देखार २० शस्त्रों से ॥ ६० ॥ २१ नगारे २२ फिर ॥ ६१ ॥

लोहछकि १ मोहछकि २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रतिभट और टिकत नहिँपाये, दिसइकखरे कबंध दिखाये ॥

इमहि भीम गजसिंहहिँ अकिखय, रन जयविरचि खेत मह रकिखय  
बंद तुम न जयमूचि बजावहु, यहहिँ दर्प तो सम्मुह आवहु ॥

भाखी सुनि गजसिंह मुज्झ भट, अप्रतिहत न रुकहिँ वट १ उव्वट २  
तुम करिविजय खेत रक्ख्यो तिम, उँचिन करन अवजाहु सिबिरि इम  
बजत बंद न रुकैँ मामक बल, फोरि देहु तब रुकैँ सर्वन फल ६४  
क्यों बचेहु अब मरन कुमावहु, जय १ जस २ रकिख सिबिर निज जावहु  
मानी भीम यह न तब मानी, रडोरन सन रारि रचानी ॥ ६५ ॥

एश्वर्यु भिन्न रहते वेश अक्षत २, हुव तिलातिल सीसोद हेति ३ हत ॥  
सिरतस द्वारधरयो हसि संकर, वस्यो त्रिदिव दुलाही अच्छरिवर ६६  
मुख अगँ सु भरयो भट मान १हु, उँवरयो सु गोकुल २ छत ३ वानहु  
जयलच्छी सीसोद १ लही जो, बहुरि जित्ति रडोर २ वही जो ॥ ६७ ॥

भीम अगं मान १हु तिलातिल ओ, खँगन खिन्न गोकुल २ सु खिलो भो  
रानाउत १ सगताउत २ जुग रन, परे धवीर निवाहि मित्रपन ॥ ६८ ॥  
भीम १ मान २ इम स्वर्ग वसे भैर, गोकुल बच्यो आयुबल गँवर ॥  
पहिलैँ दल साहको दल्यो परि, अब गजसिंह लयो जय उदरि ६९  
जु सुनि साह छंद हुकम भेजिजिम, उँपालंभ बुंदीसहिँ दिय इम ॥  
स्वीय अनुज न भजैँ जो सत्यैर, तो न सुरैँ ममदल रनैँ चत्वर ॥ ७० ॥

१ शत्रु २ राठोड़ ॥ ६२ ॥ ३ नगारा ४ जय की सूचना करनेवाला ५ बमंड है  
तो ६ अभंग मनवाले; अथवा रोकने से नहीं रुकनेवाले मेरे वीर नहीं रुकेंगे  
॥ ६७ ॥ ७ उचित कार्य (घावों का इलाज) करने के लिये ८ डेरों में ९ मेरी  
सेना में १० कान फोड़ डालो ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ११ शरीर से घायल १२ घाव र-  
हित १३ शस्त्रों से कटकर ॥ ६६ ॥ १४ मानसिंह भी भीमसिंह के मुख आगे  
गिरा १५ बचा १६ घायल होकर १७ जो जयलक्ष्मी शीपाद भीमसिंह ने ली  
थी वह १८ राठोड़ ने धारण की ॥ ६७ ॥ १९ मर्जों से क्षीण होकर २० बाकी  
रहा ॥ ६८ ॥ २१ वीर २२ गमन क्षीण आयु के चल से ॥ ६९ ॥ २३ पत्र २४  
ओलम्हा २५ तुम्हारा भाई २६ शीघ्र २७ बुद्ध क्षेत्र से ॥ ७० ॥

जो गजसिंह वीर न लहैं जय, मयै कुजस अप्पन रीढामय ॥  
जोध हृदयनारायन १९२१२ जैसे, अब कहूँ काम न भेजहु ऐसे ७१  
दल पठयो तिहिँ सुनि नृप बुंदिय, कुलाहि कलंकित अहो अनुज  
किय ॥

मोतै अब सु मिलैं न मंदमति, करहु रुख कोटा १ रु ग्रामकति ७२  
कुमरसता १९४१२हु हुकम लोपै किम, तास रक्खि दुन्नी १ आवाँ २  
तिम ॥

ग्रामक १ सह छिन्न्यो कोटा २ गृह, रखौ दुरि सु दुन्नी लजितरंढ ७३  
केसव १९३६कुमर हुतो पहुपासहि, याको सुत हुव किमहु उदासहि  
सु करि मंत्र निज नाम आतसन, सुरे दुहुँ २ न खट्टन बिसेस मन ७४  
॥ दोहा ॥

स्याम १९४१८ जु गोपीनाथ १९३१२ सुत १,

सुत केसव १९३६ को स्याम १९४१२ ॥

पहुँचि महावत खान पहुँ, रहे लोभ अविराम ॥ ७५ ॥

अटक पार दुव २ पतत इम, आता कुल मगभुलि ॥

अनुचित सुनि नृप रत्न १९२१२ यह, खिज्यो दुरदिस रिसखुलि ७६।

एह महावतखान इत, रन वीरन रिश्वार ॥

पंचसहस्र ५०० राउत प्रकर, लहैं छाहसंम लार ॥ ७७ ॥

जैथ किसोरहि बंधु जुग २, वयमै तिथि १५ तिथि १५ वर्ष ॥

रीझि महावत रक्खये, पिकखये लरत प्रकर ॥ ७८ ॥

खान अमानत नियत खलु, इत सूना अजमेर ॥

रजपूतहि ताकाँ रुचत, सगरसमर लखिमेर ॥ ७९ ॥

१ पीठ देने से ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ २ हठ ॥ ७३ ॥ ३ राजा के पास ४ किसी कार-  
ण से ५ सम्पादन करने को ॥ ७४ ॥ ६ विश्राम रहित लोभ से ॥ ७५ ॥ ७ ग-  
ये ॥ ७६ ॥ ८ वीरों को ९ परगह १० छाया के समान साथ रखता है ॥ ७७ ॥  
११ जहाँ १२ पन्द्रह पन्द्रह वर्ष की अवस्था में १३ विद्योपता ॥ ७८ ॥ १४ युद्ध  
में सिंह के समान स्मरण करके और इसी प्रकार देखके; अथवा सगरसिंहना-



संभर बंधु दयाल १९०१ सुत, जई अखैराजोत १९१५ ॥

जाइरह्यो भूपति १९१२ जहाँ, सुनि कुल अपजस स्रोत ॥ ८० ॥

सबल १९३१ मनोहर १९२४ अनुज सुत, बहु इत्यादि बहोरि ॥

रत्न १९२१ अनुज रंही करि रहे, जिततित श्रितही जोरि ॥ ८१ ॥

हड्डे ६१ भजत तो हमहु, भजहिं इम सबभाखि ॥

बिनु हुकमहु जुझन बडे, बंस विरुद रुचि राखि ॥ ८२ ॥

इति श्रीविंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वाषण्णे षष्ठराशौ बु-  
न्दीन्द्ररत्नसिंहचरिते शत्रुभीतिवारणार्थपवनेन्द्रजहाँगीररत्नसिंहबु-  
रहानपुरप्रेषणा १ यवनेन्द्राज्ञानुसारराष्ट्रकूटीयसेनाग्रगामिताधिका-  
रकूर्मप्राप्तिनिमित्तकभूपद्वयाग्राज्यापिताक्रमत्यजन २, समरपला-  
यितशरणागतखुरमरत्नकशैर्पोद्दभीमसिंहहड्डकूर्मयवनेशसैन्यविज-  
यानन्तरयोधपुराधीशगजसिंहप्रधनतनुत्यजन ३, रत्नसिंहसोदरहृद-  
यनारायणारण्यपलायनयवनेन्द्ररत्नसिंहोपालम्भप्रदानं पञ्चविंशो  
मयूखः ॥ २५ ॥

आदितोऽष्टोत्तरद्विशततमः ॥ २०८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

मक चहुवाण को युद्ध में सिंह के समान देखकर; अथवा युद्ध प्रति वीरता दे-  
खकर ॥ ७९ ॥ १ चहुवाण का ॥ ८० ॥ २ लज्जा करके जहाँ तहाँ ३ आश्रय ही  
है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

श्रीविंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वाषण्ण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्न-  
सिंह के चरित्र में बुरहानपुर के सुबे में शत्रुओं का अथ होने के कारण बाद-  
शाह जहाँगीर का रत्नसिंह को बुरहानपुर भेजना ? राठोड़ों का हरोल में  
चलने का अधिकार बादशाह की आज्ञा से कछवाहों को जिलजाले के कारण  
दोनों राजाओं का हरोल और चन्दोल का क्रम छोड़कर चलना २ युद्ध से भा-  
गेहुए खुरम को शरण रखकर शीषोदिया भीमसिंह का हाडा, कछवाहा औ-  
र बादशाही सेना को भगाकर जोधपुर के राजा गजसिंह के युद्ध में माराजा-  
ना ३ रत्नसिंह के भाई हृदयनारायण के युद्ध से भागजाने के कारण बाद-  
शाह का रत्नसिंह को उपालम्भ देने का पक्षीसर्वा २५ मयूख समाप्त हुआ औ-  
र आदि से दस सौ आठ २०८ मयूख हुए ॥

॥ दोहा ॥

इत जयसिंह<sup>१</sup> अजीम<sup>२</sup> इन्ह, समुर्पालब्धन साह ॥  
 लो हरोल<sup>३</sup> अधिकार लहु, रखे निज कुल राह ॥१॥  
 बिहित पटा<sup>४</sup> गज<sup>५</sup> बाजि<sup>६</sup> बसुं<sup>७</sup>, आयुध<sup>८</sup> भूसन<sup>९</sup> अपि ॥  
 गजसिंह सु अतिबल गिन्यौ, थानहरोल<sup>१०</sup> हि थपि ॥२॥  
 तबहि साह इक<sup>१</sup> पातुरिहु, निपुन अनार<sup>२</sup> नाम ॥  
 हुलासि दई गजसिंह हित, कसर्वटी रसकाम ॥ ३ ॥  
 प्रभनै कति सुहि खुरुम<sup>३९</sup> पुनि, जब हुव साहजिहान<sup>३९</sup> ॥  
 तब अपी पातुरि तिमहु, द्वापर<sup>४</sup> फुरत निदान ॥ ४ ॥  
 पै तस बस गजसिंह पहु, अब भावी बस एस ॥  
 जेठे<sup>१</sup> कुंमरहिं टारि जड़, दैलै लघु<sup>२</sup> हित देस ॥ ५ ॥

॥ उद्धारः ॥

रन इत खुरुम<sup>३९</sup> विदेव बहि, कलुदिन कैरन सरन हु कहि ॥  
 छलबल खल उदैपुर छोरि, दक्खिन<sup>३१</sup> गो हठी पुनि दोरि ॥६॥  
 इम आबादहोलत आदि<sup>१</sup>, बनिता<sup>१</sup> सुत<sup>२</sup>न मिलि जयवादि ॥  
 बीजापुर<sup>२</sup>हिं जाइ बहोरि, जय बंट भागनगर<sup>३</sup>हिं जोरि ॥ ७ ॥  
 नवनव बजत साह<sup>१</sup>नबाब सबमिलि लखल<sup>१०००००</sup> फोज हिसाब ॥  
 फैज<sup>१</sup> रु अमर चय<sup>२</sup> फैवि फुलि, दहमत आकबत<sup>३</sup> अबदुलि<sup>४</sup> ॥८॥  
 दरियाखान<sup>५</sup> कुतब<sup>६</sup> उदार, लिय तिम खां गुमान<sup>७</sup>हु तार ॥  
 अतैतकी मुहम्मद आदि<sup>८</sup>, सब मिलि मंत्र इक<sup>१</sup> मत सादि ॥९॥

१ बादशाह ने आलमभा देकर २ आगे चलने का अधिकार देकर ३ शीघ्र ॥ ४ धन ॥ ५ घन ॥ ६ वेश्या ७ चतुर ८ प्रसन्न होकर ९ कासरस की कसोटी ॥ १० ॥  
 १ कितने ही कहते हैं १० खुरुम शाहजहाँ का नाम धारण करके बादशाह हु  
 आ तब ११ दी १२ सन्देह होता है ॥ ४ ॥ १३ बड़े कुमर को छोड़कर छोटे  
 को मारवाड़ का देश देवेगा ॥ ५ ॥ १४ आगकर १५ उदयपुर में राणा कर्णसि-  
 ह के शरण में ॥ ६ ॥ १६ दोलताबाद १७ छी १८ जय कहकर १९ विजय  
 बंट से; अथवा विजय के मार्ग से ॥ ७ ॥ २० नवीन नवीन २१ फूलकर ॥ ८ ॥  
 २२ तकी शब्द है अन्त में और मुहम्मद है आदि में जिसके ऐसा अर्थात्

मरहट्टे१हु केहु मिलाइ, प्रतिभट देस बट सबपाइ ॥  
 खुरम३९।२हिं ठानि दुल्लह खेत, सबनिज जन्म बल समुपेत१०  
 मिलि तिन बिजन किय इम मंत्र, तब हुव हारि निजविधितंत्र  
 जुरि बुग्दानपुर१ अब जीति, परखहु पुंब्ब सबन प्रतीति ॥११॥  
 लहि आसेर२ पुनि अवलंब, करि बस सीम सत्रु कंदंब ॥  
 जिम जिम अग्न प्रबिसहिं जाइ, परभुव लाभ तिमतिम पाइ१२  
 इम अब दबि मालव अंत, क्रम करि होहु सब छितिकंत ॥  
 यह मत मनि खुरम३९।२उपेत, हंकि य दक्खिनी जय हेत १३  
 इक१बल द्वै२अनी बनवाइ, भेजिय प्रकट पथ इक भाइ ॥  
 स खुरम३९।२मुख्य असेस, जुरि दूजी२अनी जवनेस ॥ १४ ॥  
 उत्तर४।७ओर पिहित सु२ आइ, प्रबिसन सप्त०पुट गिरि१ भाइ ॥  
 लहि इहिं बास दोनिन लीन, दलउत अद३भेरि सु दीन ॥ १५ ॥  
 सो पहिली१अनी बनि सेर, घुमइत वित्थरी घनघेर ॥  
 उतरसन नैर ढिग तिहिं आइ, किय रन घोर पन प्रकटाइ ॥१६॥  
 इम बुरहानपुर रिपु आत, सुनितिन्ह रतन१९२।१इत१हुलसांत ॥  
 दलसंह खुलि दक्खिन द्वार, कढि नृप कल्पमव अनुकार ॥१७॥  
 स्व तुरग हंकि तोपन सीस, प्रहरिय वज्र असि पुहवीस ॥  
 हहु६।१न फैर दुव२दुवशोत, कनकन किन्न तोपन तोत ॥ १८ ॥  
 बढि रन अने रैन१६२।१यख्ये, जिततित दबि परदल जूय ॥  
 आरिय खग्नइम यह आकि, रिपु बहु संहरे रन रोकि ॥ १९ ॥

हम्मद तकी ये सब के नाथ हैं ॥ ९ ॥ १ जान (बरात) २ सेना सहित ॥ १० ॥  
 ३ एकान्त में सलाह को ४ विधि के वश से ५ प्रथम ॥ ११ ॥ ६ आधार ७ स-  
 मूह ॥ १२ ॥ ८ भूपति ९ सहित ॥ १३ ॥ १० सब ॥ १४ ॥ ११ गुप्त १२ सतपुड़ा  
 में प्रवेश किया १३ जोहों (खोदों अथवा खरलों) में ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७-प्रसन्न  
 होकर १८ सेना सहित १९ प्रलय के शिव के २० सदृश ॥ २० ॥ २१-वज्ररूपी  
 खड्ग का प्रहार किया २२ भूपति ने २० तोपों के फरेब को बिखेर दिया; अथ-  
 वा भालों से तोपों को बिखेर दी ॥ २२ ॥ २३ युद्ध के स्थान में २४ रतनसिंह  
 की सेना २५ शत्रु के समूह को ॥ २५ ॥

सिर१धर२हृत्प३पं४भुज५संघ, जिततित जानुं६कटि७उर८जंघ९  
 अविरत१०भरत सुभटन अंग, रन हुब द्वैश्वरी इकरंग ॥ २० ॥  
 सिखये सत्रु लखि अत्रसान, प्रतिमंग वेग भंडि प्रयान ॥  
 लोभित हड्डि६१पिठि लगाइ, परभट लैचले स्मृतिपाइ ॥ २१ ॥  
 अरि सब पिक्खि भूप इतेहि, जानत हैं जितेहि जितेहि ॥  
 दब्बत पिठि पहुँचत दूर, सजि इतकी अनी२अब सूर ॥ २२ ॥  
 पर्वत सप्त७पुट थितिपाइ, उत्तर४१७ओर सन तिन आइ ॥  
 करि अधिरोहिनिन मग कोट, चक्खिय नैक काहु न चोट ॥ २३ ॥  
 पुर बिच यौ अचानक पैठि, बैरिन रोकि रच्छक बैठि ॥  
 चढि अधिरोहिनीन चलाई, अंतरदुर्ग हू लियआइ ॥ २४ ॥  
 रच्छक रक्खिगो रतनेस१९२१२, आये काम तेहु असेसं ॥  
 पै इक१अट्ट तोपहिँ पाइ, भट कछु उब्बरे रन भाइ ॥ २५ ॥  
 दलपति द्वारकादिकदास१, कूरम पाइ तँहँ अवकास ॥  
 तिम वह भरि यहीसन तोप, क्रिय रन तास बल अतिकोप ॥ २६ ॥  
 इक न चढिसक्यो तिहिँ अट्ट, बढिबढि समुह हुब ब्रह्मैष्ट ॥  
 कछु हरपाल१८२१२ लाल१८४१कुलीन, तिम भट निम्न१८५१३  
 वंसिय तीन३ ॥ २७ ॥  
 चालुक बल्लनोतहु च्यारि४, सेसहु केके टेक सन्हारि ॥  
 वह करि इक१अट्ट अजेय, लखि इक१तोप बल जसलेय ॥ २८ ॥  
 दल इन द्वारकादिकदास, प्रेरित ए रहे भट पास ॥  
 अरिजन नाँ दये ढिग आन, परिजन अल्प कल्प प्रमान ॥ २९ ॥

१ समूह २ बुटने ३ निरन्तर ४ एकसा ॥ २० ॥ ५ अन्त में ६ उलट मार्ग में  
 ॥ २१ ॥ २२ ॥ ७ निसरनियों से कोट पर मार्ग करके ॥ २३ ॥ = भीतर का गड  
 (जीवरत्ना) लेखिया ॥ २४ ॥ ९ रत्नसिंह रच्छक रत्न मगर धर १० सब ११ बु-  
 रज पर ॥ २५ ॥ १२ द्वारकादाल १३ यहाँ से ही तोप लेकर ॥ २६ ॥ १४ धिक्क  
 स (घरवाद) ॥ २७ ॥ १५ कितनेक हठ करके १६ नहीं जीतने में आये ऐसी एक  
 बुरज करके ॥ २८ ॥ १७ सेवक १८ प्रलय ॥ २९ ॥

करम यों इन्हैं हलकारि, थंभिय बुरज सुरंज बिथारि ॥  
 बचि वह खोमै इकशजिम बाहु, खिल सब जित्ति जीवरखाहु ॥ ३० ॥  
 इम बुरहानपुर तिन आइ, जब लिय सिंह थोह जमाइ ॥  
 प्रभु जँहँ अद्भुत कोस प्रदेस, अरिदल करत बिद्वुत एस ॥ ३१ ॥  
 तँहँ सुनि सुद्धि लिय पुर तास, हुव तिम सोकशकछु कछु हास ॥  
 खगपति ज्यो मुरखो धरि खीज, तकि सब पुत्रशत्रातभतीज ॥ ३२ ॥  
 सब भटशब्धुस्वस्थसम्हारि, बिकलँन ज्यो परेहि बिसारि ॥  
 प्रतिमग आइ द्रुत महिपाल, दक्खिनशरद्वार जरि दल जाल ॥ ३३ ॥  
 पँर अधिरोहिनीहु न पास, किम अब कोट कति अवकास ॥  
 नाग जवानभ्रातसमान, धारत धूप कर बलधाम ॥ ३४ ॥  
 हथिय सोहि गोपूर हुल्लि, बहुबिधि डाकँदारन बुल्लि ॥  
 दरबँर तास फेट दिवाइ, अररन तोरि इम पथ पाइ ॥ ३५ ॥  
 आसँव मत्त सुहि हुवअग्ग, मदकँल खग्गकरि कियमग्ग ॥  
 भिदिगय लंब अररन भल्ल, हुव तउ तास अतिबल हल्ल ॥ ३६ ॥  
 बारन रचित अध्वँ प्रबिष्ट, अधिपति माँहिलिय बल्ल इष्ट ॥  
 भिरितँहँ इक गदाधरँ भक्त, श्रीहरि भक्ति गान प्रसक्त ॥ ३७ ॥  
 गोपूर दिगहि रहत जु गैल, चहि तब मिलन पाटँलचैल ॥  
 सत्वरँ आइ भूप समीप, आखिय जाहु द्रुत अर्वनीप ॥ ३८ ॥

१ उत्तम रजोगुण को फैलाकर २ बुरज ॥ ३० ॥ ३ भगता था ॥ ३१ ॥ ४ ख-  
 पर ५ गरुड़ के समान ॥ ३२ ॥ ६ घाव रहित (नलोहे) ७ घायलों को ८ छोड़  
 कर ९ शीघ्र ॥ ३३ ॥ १० परन्तु नीसरनी पास नहीं थी ११ जवानभाई नाम  
 के हाथी १२ सीधा खड्ग (खांडा) खंड में लियेहुए था ॥ ३४ ॥ १३ नगर के द्वा-  
 र पर बड़ाकर १४ छोटे घावों से क्रोध दिलानेवाले (साँदमार) को बुलाकर  
 १५ दंडबड़ (दौड़ाकर) फेट दिलाई १६ किवाड़ों को ॥ ३५ ॥ १७ मदमत्त १८  
 उस मदोन्मत्त हाथी ने तरवार से मार्ग करदिया १९ किवाड़ों के लंबे भागों  
 से ॥ ३६ ॥ हाथी के रचेहुए २० मार्ग से प्रवेश करके २१ सेना को २२ श्रीकृ-  
 ण का भक्त मिला ॥ ३७ ॥ २३ नगर के द्वार के समीप ही रहता था २४ भ-  
 गवां वस्त्र मिलना चाहकर २५ शीघ्र २६ हे राजा शीघ्र जाओ ॥ ३८ ॥

इम सुहिँ स्वप्न दिय हरि अज्ज, करि अरि कदन \* सद्धु कज्ज ॥  
 सब भट १ बंधु श्रो गिनौं बँ हमैहु, जिम सविसेस आन जमैहु ॥३९॥  
 सह जब सोहु सुनि नरनाह, विच पुर पिछि पदर बाह ॥  
 जुज्झत जात ब्रात बजार, काँलि किय कल्प खिन भ्रमंकार ॥४०॥  
 कइकइ सज्ज बढि उतकैहु, आवत दलत तावत एहु ॥  
 गोखन जाल नारिन ग्राम, पिक्खत कं पि दुग्ग प्रकाम ॥४१॥  
 हुव बहु रंगरेजन हट्ट, महि मनु फुट्टि जावक मट्ट ॥  
 रहि मग तँल १ पट २ सिँत रासि, भ्रम दिय इक्क लोहितं भासि ॥४२॥  
 परिपरि अंत्र मालिन पत्त, तनियत सोचि समधिकं तत्त ॥  
 पुहपन ओर रंग पिधौइ, उफनिय रंग रत्तहि आइ ॥४३॥  
 इम मग अन्न राँसि अनेक, इतउत लहत पल पन एक ॥  
 करिकरि चित्त बहु मनिकार, विक्खत लाल सब मनि बार ॥४४॥  
 धुपि पुर इक्क १ सोनितं धार, सुहि किय रक्तवस्त्र सिंगार ॥  
 कुदत लोहच्छकि हय केक, उलटत लंघि अट्ट अनेक ॥४५॥  
 जवन १ हु चक्खि हट्ट २ न जोर, घन रन मनि अंतं क घोर ॥  
 इन १ इम ते २ लयेहि अँहोरि, जिम दिय घायँ घायन जोरि ॥४६॥  
 जवन १ न चले लै मृप जोध २, कलंरव १ सेन २ हुव गतिकोध ॥

शत्रुओं का नाश करके कार्य \* साधन करो १ अब ॥ ३९ ॥ २ बेग सहित १  
 सीधे घोड़े वढ़ाए ४ समूह ५ मुट्ठ ६ प्रलय का सन्देह कर रहे वाला ॥ ४० ॥ ७  
 इनको तपाते हैं अथवा तब तक ये उनको मार डालते हैं ८ समूह ॥ ४१ ॥ ९ मा-  
 नों अलता (लालरङ्ग) के माटे फूटे हैं १० मार्ग में रुई और वस्त्र ११ खेत रङ्ग  
 के समूहवाले थे १२ सो लाल रङ्ग के शोभा देने लगे ॥ ४२ ॥ मालिनियों की  
 छावों में आते पड़ पड़ कर १३ अधिक प्रकाश फैलाते हैं १४ पुष्पों का अन्य  
 रंग ढककर १५ एक लाल रंग ही बढा ॥ ४३ ॥ १६ समूह (ढेर) अर्थात् अन्न की  
 राशियों पर मांस गिर गिर कर वे राशियाँ मांस की बनती हैं १७ आश्चर्य.  
 सब रंग की मणियों के समूह को लालरङ्ग मय (माणक) ही १८ देखते हैं ॥ ४४ ॥  
 १९ रक्त की धार से ॥ ४५ ॥ २० काल के सज्जन भयंकर २१ रोकलिये २२ घा-  
 व से घाव जोड़ दिये ॥ ४६ ॥ २३ कोलाहल

रत्नसिंहका खुरमसे युद्ध करना। पठराशि-षड्विंशमयूख (१५०१)

दुहुँरदिस होत खंड दुबाह, लिय अब मध्यगढ ढिग लाह ॥४७॥

माधव १९३।२ हरि १९३।३ नरिंद कुमार,

केसव १९३।६ अनुज२सुत जयकार ॥

चलि पहुँ अगग खगग चलात, दलि बहु सुलभ विजय दिखात ॥४८॥

प्रबिसन दुर्ग द्वार न पाइ; पर कंति बाहुरेहु मलाई ॥

अद्वत तिन्ह गयेहु मरे स, पदत कुँगाप द्वार प्रदेस ॥४९॥

इम सुत लेत नृपमुख वाह, रुकतहि जटित अरर न राह ॥

लखि अधिरोहिनी गढ लग्न, अनुगन अप्पि बाजिन बग्न ॥५०॥

केसव १९३।३ उमैरहि कुमार, हुव सब अगग पहुँचनहार ॥

प्ररत वाह देत नृपाल, कुमारन पिढि हुव ततकाल ॥५१॥

वीरहु बहु सगोत्र १ विगोत्र, प्रहरत तुपक १ तीर २ रु तोल ३ ॥

चढिचढि ठामठाम चलाई, छितिदिय मिच्छ लुत्थिन छाड़ ॥५२॥

मचि तँह तुमुल प्रहरन मार, हुव अवमर्द स्वयं अनुहार ॥

कटि उर १ जत्रु २ कंठ ३ कपाल ४, कंठि ५ कर ६ अंस ७ पय ८ तिहिकाल

भुव हुव पूर नरपल भीर, धुव हुव दूर परबल धीर ॥

इकदिस १ खुरम १ हठ अनुबादि, उतहि तकी मुहम्मद आदि ५४

मिलि अबदुल १ सहित गुमान २, इकदिस २ अंकुरे पगि पान ॥

इकदिस ३ सेसे अरि अवनीस, इकदिस ४ कुम्भनृप दलईस ॥५५॥

इकदिस सँथसह चढि अप्प, दलि किय दक्षिनिन हत दैप्प ॥

१ वीरों के हुकड़े ॥ ४७ ॥ २ राजा के कुमार ३ जय करनेवाले ४ राजा के आगे

॥ ४८ ॥ परंतु ५ कितने ही ६ भागकर ७ उन बुरजों के पास गये जो ही मरे

५ मुरदों से द्वार के प्रदेश को पाटते हैं ॥ ४९ ॥ ९ किवाड़ जुड़ने से १० नीस-

रणी ११ सेवकों को घोड़ों की बागें सौंपकर ॥५०॥५१॥ १२ भाल १३ स्तेछों

की लोथों से ॥ ५२ ॥ १४ अयंकर १५ शस्त्रों को १६ युद्ध १७ प्रलय के समान

१८ कत्था और काँख की सन्धि को जनु कहते हैं (कण्ठ के नीचे का भाग

जिसका लोक में हांसली की दड़ी कहते हैं) १९ कमर २० कत्था ॥ ५२ ॥ २१

मनुष्यों के मांस से ॥ ५४ ॥ २२ खड़ेहुए २३ पराक्रम में प्राप्त होकर २४ बाकी

के ५ राजा २६ कछवाहों का राजा ॥५५॥ २७ साथ सहित २८ आप (रत्नसिंह) २९ दर्प

तैंहँ हरिसिंह १९३।३ दै त्रय ३ तीर, बेधिय खुरुम ३१।२ अतिबल वीर  
 पकारिय साहसुत पुनि पूगि, अरि १ तम २ मध्यहरि १ रवि २ ऊगि ॥  
 बंधिय तसहि पगध बिछोरि, संगहि केसव १९३।६हु दुर्त दोरि ॥५७॥  
 अंबुधि १ बैरिसल्ल २ बिसिं उब्बैं, पर जु तकीमुहुम्मद पुब्ब २ ॥  
 लघु खरसख धाय लगाइ, जो गहि जेरकिय इहिं जाइ ॥५८॥  
 अधिपति थप्पि कुमर २ न अंस, दुवर अरि करि बिबंधन १ दंस  
 इम खुरुम १ रु मुहुम्मद आदि २, ब्यायुध करि उभै २ हि बिबादि  
 इन कहैं रहन सनियैम अखिख, रच्छक द्विसत २०० सुभटन रक्खि  
 किले खिले गंजि १ दलि २ इतके रु, महिपति अगग रुपि जिम मेर  
 असि अबदुल्ल १ सहित गुमान, पहुँ लिय छिन्न दोउ २ न प्रान ॥  
 तिम मरहठ दुवर हनि तत्थ, संतुव १ रामधन २ सैंहसत्थ ॥६१॥  
 दिसदुवर जिति किय द्रैहबट, थप्पिय तत्थ निज भट थैं ॥  
 इम गहि द्वै २ रु चउ ४ हनि एस, हंकत हुत सकुचिय सेस ॥६२॥  
 सहबल पंत इत १ नृप सज्ज, क्रूरम वीर उतर कृतकैज्ज ॥  
 दुवर दिससौहि अब गरदाई, अरि गन मध्य खिल लिय आइ  
 दोहा—कथितं स्वभट इक १ अट्टकरि, अजित हुते इक ओर ॥  
 इक १ नौली करि ते अबहु, रहे रचन रन रोरें ॥६४॥  
 जीवरखा खिले त्रिशदिस जिन्ह, जित्यो प्रविसि सजोर ॥  
 पहुँ सेनानी कुम्भ पटु, असह टिक्यो इक १ ओर ॥६५॥

॥ ५९ ॥ शत्रुओं रूपी १ अन्धेरे में हरिसिंह रूपी सूर्य उदय होकर २ शीघ्र  
 ॥ ५७ ॥ ३ समुद्र में ४ प्रवेश किया ५ चढ़वाग्नि के समान ६ प्रथम मुहम्मद  
 और पर (अन्त) में तकी अर्थात् मुहम्मदतकी ७ तीक्ष्ण शस्त्रों से छोटे घाव  
 लगाकर ॥ ५८ ॥ ८ कन्धा धापकर ९ दोनों शत्रुओं के बंधन और १० कवच  
 काटदिये ११ बिना शस्त्र शस्त्र करके दोनों को बाजित किये ॥ ५९ ॥ १२ निय-  
 म सहित रहना कहकर १३ निश्चय १४ वाकी के ॥ ६० ॥ १५ साथ सहित  
 ॥ ६१ ॥ १६ विध्वंस १७ समूह ॥ ६२ ॥ १८ कृतकार्य १९ घेरकर ॥ ६३ ॥ २०  
 कहेहुए २१ एक वुरज पर २२ एक तोप से २३ भयंकर ॥ ६४ ॥ २४ सब २५  
 बुंदी के राजा का सेनापति २६ चतुर कछवाहा ॥ ६५ ॥



तत्थ न होती तोप तो, देते रहन न दुष्ट ॥

पै हुब करि तस बल प्रधन, ए अल्पहि जस पुष्ट ॥६६॥

पहुँच्यो इत जित्तत सुपहुँ, जुगर दिस अमल जमाइ ॥

देखि स्वबस तीजी३ दिस रु, अब चौथी४ लिय आइ ॥६७॥

तीजी३दिस-पहुँसेनपति, दुसह द्वारकादास ॥

बुरज रक्खि यह तोपबल, अधिपहि दिय उछास ॥६८॥

इत१ सेनानी कुम्म अरु, इत२सहबल अधिराज ॥

खिल अराति लै बिच निखिल, बढिदब्बे अतिबाज ॥६९॥

॥ षट्पात् ॥

भागनगर भूमीस१ सहित बीजापुर साँसक२ ॥

जहँ इत्यादिक जवन निरखि हड्ड६१न निज नाँसक ॥

खिल असु दरियाखान१ आकबत२ कुतबखान३ इम ॥

फैजबखस४ बिनुफैज अमर चप५ दिगत तमाँ इम ॥

ए मुख्य मिच्छ पंच५हि असुनै दक्खिनपति समुझत दुलभ ॥

भुजभुज दुकूल फेरतभये नैजन बह प्रसारि नभ ॥७०॥

मदनावतारः ॥

पिक्खि यह भूप निज१ रोकि पैर२ पुच्छये ॥

देहु जियदान तिनएहि उत्तर दये ॥

कहिय नृप प्रान इक१ लै२ रु सव१ दै२ कढहु,

बहुरि जिन सज्जि इत काल कोप न बढहु ॥७१॥

१ युद्ध में ॥ ६६ ॥ २ अष्ट राजा ३ अधिकार ॥ ६७ ॥ ४ राजा का सेनापति  
५ प्रसन्नता ॥ ६८ ॥ ६ सेनापति कछुवाहा ७ सेना सहित ८ स्वामि (रत्नसि-  
ह) ९ याकी के १० सव शत्रुओं को बीच में लेकर ११ शीघ्रता से दयाये ॥१६॥  
१२ भूपति १३ हाकिम १४ हाडों को अपने नाश करनेवाले देखकर १५ याकी  
के प्राण सहित १६ बिना जय १७ लोभ छोडकर १८ प्राणों को १९ प्रत्येक म-  
नुष्यों ने अपने अपने हाथी में चढ़ लेकर फेरा "युद्ध में वस्त्र जंघा करके दि-  
खाना आश्रित होने का चिन्ह है" २० भालों से चढ़ बान्धकर आकाश में  
फैलाये ॥ ७० ॥ अपने लोकों को रोककर २१ शत्रुओं से पूछा ॥ ७१ ॥

इज्जत१ रु प्रान२ जुग२ देहु तिन उच्चरिय,  
कोल पुनि सुनहु तुम१सो बै हम२ जो करिय ॥

प्रधन दिल्लीस दल काम जँहँ जँहँ पँरै,  
लखत टरिजाँहिं हम नाँहिं हड्ड१न लरैं ॥७२॥

रावरे पीतछवि केतु जित जित रहैं,  
सोहि दिस छोरि मुरिजात सखहु सँहैं ॥

तुम१ रु हम२ बीच है रब१ कुराँ२ पंज५ तन३,  
पुस्तदँरपुस्त लिखिदेहु यह नेकपन ॥७३॥

द्वारपथ पिहितं नृप कहिं तब ते दये,  
सस्त्र१ पट२ प्रान३ सह सर्व गेहन गये ॥

जोहु सविसेस प्रभुराँम२०१४ सुनिलेहु जिम,  
अपकँवि सँम्र रविमँल्ल१७४ छवि काव्य इम ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

अदः अटक इम अरिनको, पुरबाहिर तिम पेलि ॥

दंग प्रबिसि दलैः दलै दलयो, खगग दुरोदँर खेलि ॥ ७५ ॥

प्रातहि जित्यो रनप्रथम१, कति भजाइ१ कति कट्टि२ ॥

पुनि पायो संध्या समय, दूजो२जय अरि दँट्टि ॥ ७६ ॥

जीवरखा प्रबिसैत जबहि, भीमँ मचत रन भीर ॥

तकीमुहुम्मद आदि१तिम, पकरयो खुरुम२ प्रवीर ॥ ७७ ॥

दुव२मिच्छ रु मरइहु दुव२, खंडखंडै करि खेत ॥

जवन पंच५कहोजियत, इज्जत१काल२उपेत ॥ ७८ ॥

१ नियम २ अज्ञ ३ युद्ध में ॥ ७२ ॥ ४ पीले रंग की ५ ध्वजा "बुन्दीवालों की ध्वजा पीले रंग की है ६ यह यावनी भाषा का ईश्वर वाची शब्द है" ७ कुरान ८ पञ्जा (हाथ से वचन देना) ९ पीढ़ी दर पीढ़ी के लिये ॥ ७३ ॥ १० छाने ११ हे स्वामि रामसिंह १२ आपके कवि १३ सभासद १४ सूर्यमल्ल का काव्य सुनो ॥ ७४ ॥ १५ आधी १६ सेना से १७ खज्जों का जूवा (हारजीत) ॥ ७५ ॥ १८ दबाकर ॥ ७६ ॥ १९ प्रवेश करते ही २० भयंकर ॥ ७७ ॥ २१ टुकड़े टुकड़े ॥ ७८ ॥

कुम्भ द्वारकादासकरि, सेनानी तिन्हसंग ॥

इम छन्नै कहै अखिल, जिम मन्नै भयजंग ॥ ७९ ॥

अरि चउसत ४०० खिला उब्बरे, तिन पंचपन जुत तत्थ ॥

निकसे पिहित निसीधमै, सैनन शनियति खलसत्थ ॥ ८० ॥

जीवरखाकी रुद्ध जैव, खिरकी पिहित खुलाइ ॥

कहै कुम्भ सहाय करि, भासन निजन खुलाइ ॥ ८१ ॥

सतचउ ४०० पंचकपमुख्य सह, सेखाउत स्वसंग ॥

लैगो कहुविधि कोटलग, पुरजन टारि प्रसंग ॥ ८२ ॥

स्वसंग १ प्रसंग २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दुव २ निथेनी दै दु २ दिस, चाढे तिन सवन चढाइ ॥

गहिरे तिमिर उतारि गृह, पठये दुरन पढाइ ॥ ८३ ॥

इतिथी वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वांश पष्ठद्वाराशौ बुन्दीशर-  
त्नसिंहचरित्रे शैर्षोद्दिभाससिंहप्रधनहननयवनेन्द्रयोधपुराधीशगजासिं-  
हसेनाग्रगामिताधिकारप्रत्यर्पण १, उदयपुरराणाकर्णसिंहशरणांकि-  
यत्कालोपितखुरमदक्षिणजनपदगमन २, बुरहानपुरसमरविजयि-  
रावरत्नसिंहखुरमचन्दीकरण ३, बुरहानपुरगुप्तनिष्कासितपञ्चय-  
वनरत्नसिंहजीवदानवितरणं पञ्चिंशो मयूखः ॥ २६ ॥

॥ ७९ ॥ १ आधी रात्रि में २ शरण आने और ३ नियम कर लेने के बल से; अ-  
थवा भाग्य के बल से ॥ ८० ॥ वन्ध खिड़की को ४ शीघ्र खुलाकर ५ छाने  
॥ ८१ ॥ १ नगर के लोकों का मिलना बचाकर ॥ ८२ ॥ बहुत ७ अन्धेरे घर  
में उतारकर ८ छिपना सिखाकर भेजो ॥ ८३ ॥

आवशभास्कर महाचम्पू के पूर्वांश के छठे-राशि में बुन्दी के भूपति रत्न-  
सिंह के चरित्र में युद्ध में शैर्षोद्दिभाससिंह को मारने के कारण बादशाह  
का जोधपुर के राजा नजसिंह को हरोल में चलने का अधिकार पीछा देना  
१ खुरम का उदयपुर के राणा कर्णसिंह के शरण में कुछ दिन रुककर दक्षिण  
में जाना २ बुरहानपुर के युद्ध में विजय करके राव रत्नसिंह को खुरम का  
फैद करना ३ राव रत्नसिंह का पांच यवनों को जीवदान देकर बुरहानपुर से  
जाने निहालकर जीवदान देने का छयाँसवाँ २६ मयूख समाप्त हुआ और आ

आदितो नवोत्तरद्विशततमः ॥ २०९ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतामिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कूरम इम बाहुरि कह्यो, जतन अमोघे जनेसै ॥

दिय तिनलखि जु करार दैल, अच्छै रक्खहु एस ॥ १ ॥

जीवरखाके जिततहि, रतन१९२१ चिंति दुख रंच ॥

पहिले१खेत सम्हारि पर, पठये भट सतपंच ५०० ॥ २ ॥

॥ मदनावतारः ॥

अरर खुलवाइ खिनपाइ तिन जाइ उत,

दीपिका संग सह रंग वह हेरि दुत ॥

छित्वर१रु मान२मुख तान४९ मित भानछँत१ ॥

गंग१सुरतान२मुख द्वै रु सत२०२प्रानंगत२ ॥ ३ ॥

कुर्णप रंखवार तँहँ जामिकैन सज्जकरि,

ध्यान१ छँत२वान सब उक्त नरजान धरि ॥

सूर अरि घायलहु रच्छकन सौंपिसव,

अप्पनै लै रु इम पँत पुर तेहु अब ॥ ४ ॥

बैद्य मत उचित उपकार सबको बन्यो,

भूरि पुर घायलन सोहि साधन भन्यो ॥

तिमहि बिसवासि खुरुम१मुहुम्मदतकी२,

होन तिन्ह स्वस्थपँन हानि नैकहु नकी ॥ ५ ॥

द्वारकादास१कँहँ द्रंगी करउर२दयो,

दि से दो सौ २०९ नव मयूख हुए ॥

१ खाली नहीं जावे ऐसा २ हे राजा ३ पत्र ॥ १ ॥ ४ विजय करते ही ॥ २ ॥

५ किवाड़ ६ समय पाकर ७ चिरागों के साथ ८ युद्ध भूमि को ९ आदि १०

चेत सहित ॥ ३ ॥ ११ मुरदों के रखवाले १२ पहरायतों को १३ चेतवाले १४ घायलों

को १५ पालखियों में धर कर १६ शत्रु के घायलों को भी १७ पुर में गया ॥ ४ ॥

१८ हलाज १९ बहुत २० नैरोग्य होने में ॥ ५ ॥ २१ नगर.

पुत्र हरिसिंह<sup>१</sup>दित कापरनि<sup>२</sup> अप्पयो ॥  
 मैत्रि सुत माधव<sup>३</sup>हिं दंग कोटा<sup>४</sup>सु दिय,  
 केसव<sup>५</sup>हिं हाँहु खट<sup>६</sup>ग्राम<sup>७</sup> वखसीस क्रिय ॥ ६ ॥  
 भूखन<sup>८</sup>रु सख<sup>९</sup>गज<sup>१०</sup>ग्राम<sup>११</sup>हय<sup>१२</sup>रीभ भरि,  
 कृत्य निजनिज उचित अप्पि सब तुष्टकरि ॥  
 द्योत इम वित्ति जुग<sup>१३</sup>जाम<sup>१४</sup> निस प्रातहुव,  
 भोजि जन दे<sup>१५</sup>हि सुधवाइ पुनि रंग<sup>१६</sup>धुव ॥ ७ ॥  
 भक्त गदिकाधर जु नैर प्रविसत भनी ॥  
 वैरिगन जीति सुद्विरीति निहचैवनी ॥  
 गायक<sup>१७</sup> सु भक्त गिनि बुद्धि सनमानि बहु ॥  
 दास जगदीसको पास रक्खयो सु पहु ॥ ८ ॥  
 देस<sup>१८</sup> निज दंग ताको<sup>१९</sup> वरोदा<sup>२०</sup> दया,  
 लख<sup>२१</sup>१००००० सुदा वितरि स्वीच तैतिमें लयो ॥  
 सोहु सकुटुंब बुदीहि तव सेक<sup>२२</sup>म्पों,  
 जास इग बास तवतें वरोदा<sup>२३</sup> जम्पों ॥ ९ ॥  
 सुनि सु सासन सेता<sup>२४</sup>११ कुमर अभिमतें करयो ॥  
 दंग बुन्दीहु तिम बुद्धि वह आदर्यो ॥  
 पाइ जय रत्न<sup>२५</sup>११ इत लै सु बुरहानपुर ॥  
 पकरि जवनेस सुत किति बाढी पंचुर ॥ १० ॥  
 किन्न उल्लाघ वह औरर तेंजक केंगी,  
 आंग गत भल्ल भयव्याधि तस उर्या ॥  
 निसलि क्रिय म्वन्ध लख<sup>२६</sup>११ म म्वन्धलनकी<sup>२७</sup> ॥

१ मन्मान कतके ॥ २ ॥ अने अने ३ काने के वनिन दो ४ महर ५ सुद भू-  
 नि को ॥ ७ ॥ ६ आकृष्ण के भात में गमर में प्रवेश काने समय काली भी व  
 इस गानेवाले को ॥ ८ ॥ ७ अने देश में लाय अपने ८ देवर लामोरे पंक्ति  
 में लिया १० चला ॥ ९ ॥ ११ आशुमान १२ यंसीष्ट १३ जादर दिया १४ च-  
 हुत ॥ १० ॥ १५ वैरोन्य किया १६ लिया १७ सोइनेवाले १८ अर्या को

नाम काराहिधरि कोहु बाधा नकी ॥ ११ ॥  
 रच्छकन मुख्य तँहँ कुमुर हरि१९३।३ रक्खयो,  
 दुक्ख न लँहँ दुवरहि अधिप इम अक्खयो ॥  
 एहु हुव स्वस्थ तव भिन्न रक्खे उभयर,  
 बीर हरि१ इत रु उत थप्पि रच्छक विजयर ॥ १२ ॥  
 पत्रदिय साह ईहिँ राह रनलाहप्रति,  
 वाह जयलाह सुनि चाह मिलिबेहि अति ॥  
 आहु आहूत करि तंत्र निर्भय उतँ,  
 त्यौँ बै भेजहु मुम्मदतकी१सह सुतँ ॥ १३ ॥  
 यह छँद१रु संग तिन्ह लैन सय्यद उभयर ॥  
 मुक्कलिय सुद्धि सब बुद्धि हित बुद्धिमय,  
 आइ तिन अप्पि फरमान यह उच्चरिय ॥  
 कीलितन देहु जे रुद्ध काराँ करिय ॥ १४ ॥  
 रैन१९२।१सुनि बैन सुख अँनँ तिन्ह रक्खये,  
 तव मुहुम्मद१ तर्कापै निर्गडँ नक्खये ॥  
 खुरुम२ पेलँव लख्यो आइ नरनाह इत,  
 हेतु पुच्छत कह्यो विजँन कछु सुनन हित ॥ १५ ॥  
 सबन करि दूर तव खुरुम३९।२पुच्छयो सु पहु,  
 लेतँहग लेत परिपाय बुल्ल्यो सु लँहु ॥  
 हरि१९३।३कुमर दास जिम मोहि रक्खँ हहा,  
 कैदविच कैद बाबा कहाँ मै कहा ॥ १६ ॥  
 व्यजनँ१दुरवात२ भरवात१ हुक्का२ वनँ,

१ नाम मात्र को कैद में रखकर २ पीड़ा नहीं की ॥ ११ ॥ १२ ॥ ३ रत्नसिंह को  
 ४ बुलाने से ५ अथ ६ पुत्र सहित ॥ १३ ॥ ७ पत्र ८ खबर लेने को भेजे, उन  
 ९ कैदियों को १० जेलखाने में कैद किये हैं ॥ १४ ॥ सुख के ११ घर में १२ बे  
 डियाँ १३ दुर्बल १४ दुर्बल होने का कारण पूछने पर खुरुम ने कहा कि एकान  
 सुनो ॥ १५ ॥ १५ नेत्र मिलते ही १६ शीघ्र ॥ १६ ॥ १७ पढ़ा करवाता है

हाँ कैरौं जो न नासौं टिपोरे हनैं ॥

पूँपली सद्य खैबो न अवसर परहु,

कोहु अटकैं न तिहि सर्व बदली करहु ॥ १७ ॥

मैं कहिय तीन३ तंव तीर भुज बिद्ध मम,

सेस गढ़ लेस कछु यौं न छँम पुब्ब सम ॥

तोहु दृग निरिस करि मोहि तरजैं तथा,

सोहु नहि कोहु सुनि जोहु बरजैं जथा ॥ १८ ॥

अरजइक१ एह दूजी२ बँ सुनिये अहो ॥

मोहि भेजोहु मति कूटँ व्याधित कहो ॥

रावरे सरन मम प्रान बावा रह्यो ॥

सोहि उत जात बचिहै न परिहै सहयो ॥ १९ ॥

सदय३ सुनि भूप दिय सीस३ सय१ सहसरन३ ॥

रंजतमय स्वल्प भर रक्खि बेरी चरन ॥

बांधि उपनाह भुज१ पाय२ बपु३ घाय विधि ॥

व्याज ज्वर१ बोधि१ नृप अप्पि तिहि प्रान निधि ॥ २० ॥

रेचन३हु दै रु असमर्थ तिम रक्खयो ॥

अप्प सुत माधव१९३२हि रहन तँहँ अक्खयो ॥

पास तस ओर भट वृद्ध थप्पे प्रथित ॥

सूचि सुत१ सुभट२ सब करहु याको कैथित ॥ २१ ॥

कुमर हरिसिंह१९३३खिजि सत्यजुत दूरकिय ॥

कानिसैन सय्यद२न बुल्लि हित पूर किय ॥

१ हाँ नहीं कहें तो २ नासिका पर ३ रोटी ४ गरम उसको कोई नहीं ५ रोकता है ॥ १७ ॥ ६ रोग ७ समर्थ ८ पहिले के समान ॥ १८ ॥ ९ अब १० झूठा रोगी बताओ ॥ १९ ॥ ११ दया सहित राजा ने मस्तक पर १२ हाथ दिया १३ शरण के साथ १४ बाँदी की १५ थोड़े भारवाली चेडी १६ पट्टी (घाव का उपचार) ज्वर का १७ मिष्ट १८ समझाकर राजा ने उसको प्राण लपी धन दिया १९ जुलाव देकर २० प्रसिद्ध २१ कहना ॥ २१ ॥ २२ अदब से

जंपि अबही मुहुम्मदतकी१ जाइहै,  
 खुरुम२ गंदखिन्न उल्लौघ हुत आइहै ॥ २२ ॥  
 सुनि सु जवनन कहिय हमहु इकखैं सही ॥  
 मनि गद भूढ करि लैहिं तुमरी कही ॥  
 जोहु दिखवाइ रखवाइ तिन्ह भाई जिम ॥  
 तीन३ अहै मान महमान दुवर रक्खि तिम ॥ २३ ॥  
 तूणा लै आहुं कहि साह नहि हद तकी ॥  
 तवहि तिन संग पठयो मुहुम्मदतकी ॥  
 कहि बेरी तदनुं खुरुम३९१२ निर्वंधकिय ॥  
 कुमर माधव१९३१२ तिम सु बिगत दुख गंध किय ॥ २४ ॥  
 तात सांसर्न सनहु अधिक आदर तनै ॥  
 बैठिबे तास अब खासगद्दी१ वनै ॥  
 सयन पल्लयंक२ छुरकर्म३ भूखन४ बसन ॥  
 समय अनुसार है सैद्य अभिमत असन६ ॥ २५ ॥  
 हे११ तिविनु ओर सब इष्ट संपन्न व्है ॥  
 विविध खिलिवत्तै छुमं भूप भय छन्न व्है ॥  
 मोहि१० इम साहसुत चित्त माधव१९३१२ कुमर ॥  
 स्वामि पन सद्धि तस काम हुव अघसर ॥ २६ ॥  
 बडन कोटा विभव बीज तबको बंधो ॥  
 अक्खिहैं काल आगामि सुहु उगयो ॥

१ कहा २ रोग से दुर्बल है सो ३ आराम होने पर शीघ्र आवेगा ॥ २२ ॥ ४ भा-  
 र्द के समान रखकर; अथवा जिस प्रकार उनको रक्षा तिस प्रकार रख कर  
 ५ दिन ॥ २३ ॥ ६ शीघ्र ७ जिस पीछे ॥ २४ ॥ पिता की ८ आज्ञा से भी ९  
 पर्यङ्क (शय्या) १० हजामत बनवाना ११ तुरत का पका हुआ १२ इच्छानुसार  
 भोजन ॥ २५ ॥ १३ शस्त्र बिना १४ प्राप्त १५ हसी खेल १६ समर्थ १७  
 मोहित करके ॥ २६ ॥ १८ कोटा के पडने का बीज उस समय बोपा गया जि-  
 सका जगना २० आगे के समय में २१ कहें



कैद पुरलोक जानै खुरम३९।२ है करयो ॥  
 पै न सुख१ दुख२ को बोध जान्यो परयो ॥२७॥  
 साह उत कुपि मंग्यो खुरम३९।२ सय्यदन ॥  
 कहियतिन है सु गंदप्रस्त जैसे कदन ॥  
 पुनिहु फरमान बुरहानपुर दै रु पहु,  
 बुल्लयो खुरम३९।२ जुत हुत उपालंभि बहु ॥ २८ ॥  
 बट्टमैं जो न मरिजाइ औसो बनै,  
 तबहि लौ आहु न बिलंब भिसकरि तनै ॥  
 वंचि दल साहमत ताससुतसौं बदिय,  
 देखि तुहि अत्थं काराहुं रहिवे न दिय ॥ २९ ॥  
 साहसुत तबहु करजोरि मंग्यो सरन,  
 चाहि इक प्रान नहिजान बंदे चरन ॥  
 उंचित सब बुल्लि तब रैन१९२।१ किय मंत्र इम,  
 कहहु कुलधर्म सह साध्यविधि है व किम ॥ ३० ॥  
 विहित जो लौ खुरम३९।२संग जैवो बनै,  
 है कुपित साह तो चाहि निहचै हनै१ ॥  
 सरनगत दे जु निज धर्मसौं अपसरै२,  
 पुत्रहु न साहकै और जान्यो परै३ ॥ ३१ ॥  
 एह जो काल लहि पट्ट लहिहै१ अहो,  
 क्यों न तो स्वीर्य आसान बहिहै२ कहो ॥  
 भजि जैहैहु हैहै ततो भीरको३,  
 सत्रु सब टारि मरहहु इहिं सीरको ॥ ३२ ॥

॥ २७ ॥ १ रोगी २ मरने योग्य ३ उरहना देकर ॥ २८ ॥ ४ मार्ग में ५ यहां  
 ६ कैद में भी ॥ २९ ॥ ७ प्राण की चाहना करदे नहीं जाने के लिये चरणों  
 में नमस्कार किया ॥ ३० ॥ अपने धर्म से बचलायमान होवें तो भी ॥ ३१ ॥  
 १० समय पाकर ११ अपना उपकार क्यों नहीं १२ धारण करेगा ॥ ३२ ॥

तोहु अैं तवहु विक्खिलै हैं बली,  
 जानपावै न सब सौंहि यह उज्जली ॥  
 भ्रात१ काका२ रु सुत३ गोत्र४ असगोत्र५ भट,  
 कहतहुव घोरंगद व्याज यह अप्रकट ॥ ३३ ॥  
 अप्पनै साहभट जेहु विस्वस्त अति,  
 ते न कहिहै रु लहिहै न लखि सेस तति ॥  
 भाखि अतथाहु कुलधर्म१ धरिवो भन्यो,  
 बहुरि तस पिठिलिगि अर्थ२ अैंवो वन्यो ॥ ३४ ॥  
 काम३ तसपिठि विधि एह सम्मत करहु,  
 देरकरि जाहु तव विधन डारैं डरहु ॥  
 आसु कामांध इम साह मरिवो इतहु,  
 करहु प्रस्थान पहु खुरुम३९१२ न डिगैं कितहु ॥ ३५ ॥  
 रत्न१९११ सुहि मन्नि बल अैंध३ तैंहैं रक्खयो,  
 बुल्लि बलि वीर विस्वस्त इम अैंकखयो ॥  
 बुद्धिचंद्र१९३३ रु पता१९११ एहु आये बली,  
 भूप प्रस्थान खिन रीति सूचैं भली ॥ ३६ ॥  
 सुनहु माधव१९३२१रु हरि२९३३२ पुत्र केसव१९३६३सदित  
 द्वारकादास ४ सेनेस अर्दन अहित ॥  
 सूर सहगोल १ असगोत्र २ इत्यादिसब,  
 सो गुनो मोहुसन आनि अवधान अव ॥ ३७ ॥  
 आन जिनदेहु बुरदानपुर सीम अरि,  
 सर्व सुवाहि रक्खहु सुखी मारि मरि ॥

१ भयंकर रोग २ इम छल को प्रसिद्ध नहीं करके ॥ ३३ ॥ ३ विश्वासवाले  
 बाकी की ४ पंक्ति ५ झूठ बोलकर भी कुल धर्म धारण करना कहा ॥ ३४ ॥ ६  
 शीघ्र ७ काम में अंध हैं इसकारण ॥ ३५ ॥ ८ सेना ९ कहा राजा के चलने  
 के १० समय ॥ ३६ ॥ शत्रुओं को ११ दण्ड देनेवाले १२ मुक्त से १३ सावधान  
 नी ॥ ३७ ॥ १४ मत आने दो

जान जिनदेहु यह खुरम३९।० कठि प्रानजिम ॥  
 एहि दुव२ चत्त सबवत्त सुभहोन इम ॥३८॥  
 सोहि समुझाइ नरनाह तब संक्रमिय ॥  
 कज्ज यह सद्धि जवनेससन भेट किय ॥  
 क्यों न आन्यों खुरम३९।२ साह पुच्छिय कहो ॥  
 अरजकिय रैन१९।२।२ मरतो सु मगमैं अहो ॥३९॥  
 छिप्रै वह अप्प सुनि होहि बपुँछोरिहै ॥  
 बैद्य विधिठ्याधि उपचार सब बोरि है ॥  
 खान आसफ कहिय आय जैहैं खुरम ॥  
 व्है रहिय हाल वह सीतहत जाति सुम ॥ ४० ॥  
 जित्ति दुव जुद्ध हुव रत्न आगम जहाँ ॥  
 त्यों उपालम्भ को क्योंहु संभव तहाँ ॥  
 तोहु अरि मुकरव गहि गाढ जय तानिकै ॥  
 आन निज रक्खि अब छुवत पय आनिकै ॥ ४१ ॥  
 साह प्रभु चाह विचि ताह नरनाहसों ॥  
 व्है कि सिर वाह जुत लाह खिन लाहसों ॥  
 कुम्म रठोर मुख भूप तंत्रै न किते ॥  
 आन नृप रैन के दैन चरनहु किते ॥ ४२ ॥  
 साह हसि मंदै कहि वाह इह गाहै सुनि ॥  
 प्रीति वह किन्न बखसीस तह रीति पुनि ॥  
 द्विरद तह कोहमुख जंग नामक दयो ॥  
 अरुव दिलियार ईरान असि अप्पियो ॥ ४३ ॥  
 मंजु सिरपेच तिम पंचि जुग बँजमय ॥

१ मतजाने दो ॥ ३८ ॥ २ चला ॥ ३९ ॥ ३ शीघ्र ४ आप ५ मरेगा ६ रोग ७ ह-  
 लाज. सरदी का माराहुआ दचमेली का पुष्प होवै जैसा ९ ओलम्भा देने का  
 १० आदि ११ आधीन नहीं है १२ मुस्करा कर १३ इस जगह १४ हीरों की  
 जड़ी हुई

आमलकनाम मुकुतान कुंडल उभय ॥

बेरु लिय हार बलि ज्योति गुन फारं जुरि ॥

बेरु लिय इकर १ मनि मुट्टि खंजर ८ बहुरि ॥ ४४ ॥

खास पोसाक ९ फोलादमय चर्म १० खर ॥

तार नकार तिम रूपदरसन ११ खर ॥

परगना सत्त ७ दिय टुंक १ टोडा २ प्रमुख ॥

रामपुर ३ मालपुर ४ च्यारि ४ दिस बाम १ खर ॥ ४५ ॥

चेचत ५ १ रु जीरपुर ६ १ खर आबाद ७ ३ चहि ॥

दीन ए तीन ३ सुपीन दक्खिन २ दिसहि ॥

अप्प कर थप्पि नृप अंस इम उच्चरिय ॥

काहुनै रैन १९२ १ तव अँनै जघ नाँकरिय ॥ ४६ ॥

सुज्जन १९० १ १ हु पुब्बं गुडवान १ जित्तो समर ॥

गंजि सूरति १ लयो भोज १९१ १ २ अहमदनगर ॥

तोहु नन तेहु आरुढ हुव तो तुँला ॥

सत्रुगहि जित्ति लिय रारि जुगर संकुला ॥ ४७ ॥

साह सालकै सचिव त्योहि जस साहयो ॥

बिरुद निज अज्ज बुंदीस निबहिँयो ॥

भोज १९१ १ २ सुज्जन १९० १ १ सनँहु कित्ति पाई भली ॥

बीर को साहके काम असो बली ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

१ मोतियों के २ कर्णभूषण ३ शरीर पर पहिना सुखों का ४ सखुह. ये ऊपर कह  
हुए और एक ५ मखियों की जड़ी हुई सूठवाला खंजर ये दोनों लिये ॥ ४० ॥  
६ ढाल ७ उत्तम ८ चाँदी का नगरा जो रूप के ९ देखने में १० अत्युत्तम ११ आ-  
दि १२ बुन्दी से बाई और ॥ ४१ ॥ १३ वन से पुष्ट. अपने हाथ से राजा का  
१४ कन्धा थापकर कहा १५ तेरा घर ४२ ॥ १६ पहिले १७ तेरे बराबर वे भी  
नहीं हुए १८ सङ्कुलित (अवकाश रहित युद्ध करके) ॥ ४३ ॥ १९ साला अ-  
र्थात् नूरजहां का भाई सचिव था उसने भी यश किया २० ग्रहण किया २१  
नियाहा २२ से भी २३ कीर्ति ॥ ४४ ॥

रत्नसिंहको सिंधुपार जानेका कहना] षष्ठराशि-सप्तविंशमयूख (१५१७)

सिक्ख नृपहिँ इमदिय सिबिर, साह बिरचि बखसीस ॥

सब सभाहु सूचिय सुजस, अहो पराक्रम ईस ॥ ४९ ॥

सिवप्रसाद कुंभी कियउ, भूप जवनपति भेट ॥

सम्मुह नन रन रहिसकै, फोज अरिन जिहिँ फेट ॥ ५० ॥

संभर इम आयोसिबिर, संसद पाइ सराह ॥

जय उद्धरि लायो सु जिम, बसुमति आदिवराह ॥ ५१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिंधु सरितपरै पुहवि हुतो इत खानमहावत ॥

रजपूतन रिझवार कलह जयकार कहावत ॥

तासौ इकगढ तत्थ जेर न भयो बहु जुझत ॥

कैलावीस१ कहूँ कथित सु पै अपरै२ हि कहूँ सुझत ॥

तैंह गोपीनाथ१९३१ केसव१९३६ तनय दुवरहि स्याम१९४८

१९४१ बुल्ले विदित ॥

पछै न जाइ जे रत्न१९२११ पहु सहताँ सद्धु बुल्लि इत ॥ ५२ ॥

सुनत महावत सोहि दयो अरजीदल दिल्लिय ॥

इत अफगानन असह प्रचुरै जिततित बलै पिछियै ॥

दुगम लैन यह दुर्ग प्रथित बुंदीस पठावहु ॥

हम जुंगर जोर हजूर ओर अवनिहु अपनावहु ॥

आसफ बजीर अरजी सु अरै पहुँचि निवेदिय साहप्रति ॥

अरु कहिय रत्न१९२११ भेजहु उहाँ गढ जय यहहि अमोघगति ५३

॥ गीतिः ॥

१ डेरों में २ आश्चर्य युक्त ॥ ४९ ॥ ३ हाथी ४ बादशाह के ॥ ५० ॥ ५ च-  
हुषाण ६ सभा में ७ निकालकर ८ पृथ्वी को ९ आदि वराह अवतार  
लावे थे इसप्रकार ॥ ५१ ॥ १० सिन्धुनदी की ११ पार की भूमि में १२ युद्ध में  
१३ कहीं-उसका नाम कलवीस कहते हैं १४ कहीं दूसरा ही नाम दीखता है  
१५ साथ ॥ ५२ ॥ १६ पत्र १७ बहुत १८ सेना १९ भेजी २० प्रसिद्ध २१ दोनों के बल से  
२२ भूमि २३ शीघ्र ॥ ५३ ॥

जंपिय साह नृपहिं जिम, सिंधुधुनी पार जाइ संभर वै ॥  
 तुम १ महावत २ मिलि तिम, इक १ दुर्गम दुर्ग जिति आहु इहाँ ॥ ५१ ॥  
 भूपं कहिय वसुं व्ययभो १, अंबदनमें मैं प्रवास रहि आयो २ ॥  
 जिम रावरो विजय भो ३, दोही पकरे ४ न सीम उतदब्बे ५ ॥ ५५ ॥  
 तदपि पठावहु जिततित जैहों रु निदेसवस परिहु जैहों ॥  
 इक १ पै सिंधु उतरि इत, जैबो हमरे सु जियत मरि जैबो ५६  
 सत्त ७ किय कोल सुज्जन १९० १, अकबर ३७ १ तिनमें यहहु  
 लिखि अप्पी ॥

जपैं जु कोहु सुज्जन, सोहि न प्रभुके विधेय साहससो ॥ ५७ ॥  
 यहहि वजीर १ हिं अकखो, पट्टे आसफखान मन्त्रिलिनी पै ॥  
 समुझाइ लेख सैदखी, कही दुहु २ न तोहु साह जाहु कही ॥ ५८ ॥  
 तव निजधर्महि तैकिय, न जावन १ रु मंडि रन २ नृपतो ॥  
 प्रत्युत यह फल पकिय, सदाहि तन १ मन २ धन ३ सन सेवनको ५९  
 बुल्लि सचिव केसव बलि, जो मथुरादास बनिक तैनुजन्मा ॥  
 कहिय रचहिं बूंदी कैलि, सजि तू संभारि जाइ पुर सबही ॥ ६० ॥  
 सुतसुत बीर सता १९४ १ कौं, स्वसुरालय कहूँ पठाइ कछु मिससौं ॥  
 तैकन देहु न ताकौं, मेरो सैकुटुंब भावि रन मरिबो ॥ ६१ ॥

सताकौं १ नताकौं २ अन्त्यानुपासः ॥ १ ॥

बलि सुज्जपोलि बाहिर, बरयो नगर तास बैरन जु बनायो ॥

जामैं कछु खिले जाहिर, पूरन वह करहु बेग सह पैरिखा ॥ ६२ ॥

१ अटक नदी के पार २ हे चहुबाण ॥ ५४ ॥ ३ घन खरच हुआ ४ वर्षों  
 में ५ परदेश ॥ ५५ ॥ ६ तो भी ७ आज्ञा के आधीन ८ परन्तु ९ अटक नदी  
 उत्तर कर जाना ॥ ५६ ॥ १० कर्तव्य अथवा उचित ॥ ५७ ॥ ११ चतुर १२ साजी  
 ॥ ५८ ॥ १३ देखा १४ उल्टा ॥ ५९ ॥ १५ पुत्र १६ युद्ध १७ सामग्री ॥ ६० ॥ १८ पुत्र  
 के पुत्र बीर शत्रुशाल को १९ सासरे २० देखने अत दो २१ कुटुम्ब सहित २२  
 आगे होनेवाले युद्ध में ॥ ६१ ॥ २३ खरजपोल २४ कोट २५ बाकी २६ खाई स  
 हित ॥ ६२ ॥

रत्नसिंह को पीड़ा बुरहानपुर भेजना ] पठराखि-सप्तविंशमधूख (२५।६)

कालिं बत्त बिदित न करहु, बिलौबि कछुकाल आत मैं बुंदी ॥  
तब केसव चतुरतरहु, कंजर्ज कथित देस आइ सब किन्ना ॥६३॥  
इत भूप महावतको, आह्वान बिचारि पत्र पठयो यों ॥

मित्र तुमहुं हम मतको, निश्चय जानत बुलात सु न नीकी ॥६४॥  
बर मरन १ आइबेर सों, सोहैं तिहिं सुनि प्रसन्नहोहु सखे ॥

बहुरि पछिताइबेसों, पलपल मति छिज्जिछिज्जि दुख पैहो ॥६५॥  
पहुं पुनि स्याम १९४।८।१९४।१ उभय २ प्रति, कुपुत्रकहि पत्र  
कोप लिपि पठयो ॥

मृत तुम जियतहु दुर्मति, लंघि अटक र्योंहि मोहि करन लगे ॥६६॥

अब बुंदीहु न अहो, कुटुंब १ संबंधि २ जाति ३ दूर करे ॥

ब्रौत्यहि आयु बितैहो, गौहिले कुलधर्म पुच्छि क्यौंनगये ॥६७॥

तबद्वैरही पछिताये, निधमहु सुमिर्यो सु बंचि दलै नृपको ॥

ग्रंथि किं बनिक ठगाये, कहतभये हैंद नबावप्रति कुलकी ॥६८॥

सुमिरि महावत सोही, दिल्ली विन्नतिपत्र दिष दूजो २ ॥

जबहो दुर्गम जोही, सोगढ अब सुगम भूपहिं न भैजो ॥६९॥

तब साहस साह तज्यो, कछुदिन दे सिक्ख गेहकी नृपको ॥

सुनि अरिगन बहुरि सजो, पठयो रैन १९२।१ बुरहानपुर पच्छो ॥७०॥

आतखिन साह अविखय, पहुँ जातहि हनहु अब खुरुम ३९।२ पापी

पुनिहु जथा पैरपदिखय, न करै हल्ला रु भीतपन निबहैं ॥७१॥

१ युद्ध की वार्ता प्रसिद्ध मत करना २ कुछ चिलम्ब करके ३ बहुत चतुर ४  
कहेहुए कार्य ॥६३॥ ५ महावतखों को ६ बुलाना ७ हमारे मत का अर्थात् एक  
सलाहवाले ॥६४॥ ८ हे मित्र ॥६५॥ ९ राजा १० अटक नदी को लांघक-  
र मुक्त को भी तुम्हारे सयान करनेलगे ॥६६॥ ११ संस्कारहीन होकर १२  
हे पागल ॥६७॥ १३ अटक नदी उतरने का सुर्जन का किया हुआ नियम १४  
स्मरण किया १५ पत्र १६ जानों गाँठ का ठगाया हुआ बनिया होये तैसे ललित  
होगये १७ मर्यादा ॥६८॥ १८ अर्जी ॥६९॥ १९ इत ॥७०॥ २० आते समय ११ हे  
राजा २२ शत्रु २३ कायरपन ॥७१॥

विजेन बजीरहु बुल्लयो, इक १ सुंत यह कहिदेहु तुम पातैं ॥  
 भरि कोप साह भुल्लयो, भैगिनी भाखैं सुही हुकम सदै ॥ ७२ ॥  
 यह सुनि बुंदी आयो, सँमुचित सद्धि रु प्रसू पयन प्रनम्पो ॥  
 पुर बरन अखिल १ पायो, तारागढ सर्व संचय २ तथाही ॥ ७३ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणो षष्ठ ६ राशौ बु-  
 न्दीशरत्नसिंहचरित्रे बन्दिखुरमदत्तदुःखकुमारहरिसिंहनिवारका-  
 रत्नसिंहकुमारमाधवसिंहरक्षककरणा १, गदव्याजस्वशरगारक्षितप-  
 वनेन्द्रयाचितखुरमाप्रदात्तरत्नसिंहतदसुरक्षणा २, कुमारमाधवसिंह  
 कृतबन्दिखुरमसुखवितरणा भाविकोटावृद्धिबीजवपनप्रख्यापन ३, प-  
 वनेन्द्रपुनःपुनर्याचितगुड्मिषाप्रदत्तखुरमरत्नाथबुरहानपुरस्थापितने-  
 मसैन्यरत्नसिंहदिल्लीगमन ४, बुरहानपुरविजयिरत्नसिंहयवनेन्द्रपारि-  
 तोषिकपट १ पट २ समासादन ५, ज्ञातकरतोयापरप्रान्तविजयार्था-  
 ज्ञाऽस्वीकाराऽप्रसन्नत्वविमृष्टतदुल्लङ्घनधर्महानरत्नसिंहसमरांगणानि-  
 धननिश्चयन ६, सूचितकरतोयोल्लङ्घनधर्महानिरत्नसिंहस्वसुहृन्महा

१ एकान्त में २ बादशाह के यह एक ही पुत्र इस है कारण ३  
 मेरी बहिन (नूरजहाँ) ॥ ७२ ॥ ४ उचित ५ माता के चरणों में नमस्कार  
 किया ६ शहरपनाह सम्पूर्ण पाया ॥ ७३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वाध्याय के छठे राशि में बुन्दी के सूपति रत्न-  
 सिंह के चरित्र में कैद में खुरम को दुःख देने के कारण कुमार हरिसिंह को  
 दूर करके रत्नसिंह का कुमार माधवसिंह को रक्षक नियत करना १ रोग के  
 भिष से अपनी शरण में रखेहुए खुरम को बादशाह के मांगने पर भी नहीं  
 देकर रत्नसिंह का खुरम के प्राण बचाना २ कुमार माधवसिंह का कैदी खुर-  
 म को सुख देने के कारण आगे आनेवाले समय में कोटा की वृद्धि का बीज  
 बोने की सूचना करना ३ खुरम को बादशाह के बारम्बार मांगने पर भी रोग के भि-  
 ष से नहीं देकर आधी सेना उसके यज्ञ के लिये बुरहानपुर में रखकर रत्नसिंह का  
 दिल्ली जाना ४ बुरहानपुर की जीत के कारण रत्नसिंह का बादशाह से खि-  
 लत और परगने पाना ५ अटक नदी के पार के प्रान्त विजय करने को जाने  
 की आज्ञा नहीं मानने के कारण बादशाह की अप्रसन्नता देखकर और अटक  
 नदी के उल्लंघन करने में धर्म की हानि जानकर रत्नसिंह का युद्ध करने



वतखानान्तिकपत्रप्रेषणानन्तरदर्शितदुर्जयस्थलविजयमहावतखान  
यवनेन्दान्तिकरत्नसिंहाप्रेषणविजयप्रार्थनापत्रनिवेदन७, महावतखा  
नप्रार्थनापत्रपठनत्यक्तकरतोयापरप्रान्तरत्नसिंहप्रस्थापनहठयवनेन्द्र  
जहांगीरखुरमघातशिक्षाप्रदानपुरःसरखुरहानपुरप्रतिप्रस्थापन ८, बु  
रहानपुरगमनान्तरसमयरत्नसिंहबुन्द्यागमनं सप्तविंशो मयूखः॥२७॥

आदितो दशोत्तरद्विशततमः ॥२१०॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

आयत जो प्रभु राम २०१४ यह, पुरबुंदिय प्राकार ॥

तिम सु बनायो रत्न १९२१ तव, दृढ अट्ठक चउ४ द्वार ॥ १ ॥

खिल दुव२दिस रहि खातिका, सो दुव२दिस हुव सिद्ध ॥

अर्घ्य रचित प्रासाद इत, इकखे वैभव ईद ॥ २ ॥

दक्खिनदिस बुंदी बढी, अदि त्रि३दिस ढिग आत ॥

कहत ताहि जुन्नी किम सु, जान्यो हेतु न जात ॥ ३ ॥

ब्रध्नपोलि १ भैरवबल २, अंतर जुन्नी आहि ॥

सोडु बढाई नृप समर १८१७, समय उक्त नैयसाहि ॥ ४ ॥

तासहु मध्यप्रदेस तिम, गिनियत मैनेन ग्राम ॥

भारे जाने का मत दृढ करना ६ रत्नसिंह का अपने मित्र महावतखां को अ-  
ट्ठक नदी उल्लंघन करने से धर्म हानि होने का पत्र भेजने पर महावतखां का  
दुर्जय स्थल को जय करलेना दिग्वाकर रत्नसिंह को नहीं भेजने के विषय में  
बादशाह की सेवा में निवेदन पत्र भेजना ७ महावतखां की अरजी पढ़ने से  
रत्नसिंह को अट्ठक पार भेजने का हठ छोड़कर बादशाह जहांगीर का खुर-  
म को मारडालने की शिक्षा देने के साथ पीछा बुरहानपुर भेजना ८ बुरहानपुर  
जाने समय रत्नसिंह का बुन्दी आने का सत्साईसवां २७ मयूख समाप्त हुआ  
और आदि से दो सौ २१० दश मयूख हुए ॥

१ बडा २ हे प्रभु रामसिंह ३ कोट ४ बुरजें ॥ १ ॥ ५ बाकी ६ खाई ७ तैयार ८  
आपका रचाहुआ महल ९ बडा ॥ २ ॥ १० जूनी बुन्दी कहते हैं ११ इसका-  
कारण नहीं जाना ॥ ३ ॥ १२ खुरजपोल १३ भैरु दरवाजा के बीच में, जूनी  
बुन्दी १४ है १५ नीति ग्रहण करके ॥ ४ ॥ १६ मैनों का प्राचीन ग्राम

नृप सु पुरानी१ खिल नई२, रची स्वकुल अभिराम ॥ ५ ॥  
 आयो पहिलै१ याहितै, मुखपथान यह१ मानि ॥  
 पट्टनि१ करउर२ आदिपुर, कियअधान इहिँ कानि ॥ ६ ॥  
 बुंदी वेष्टित अब बरन, अधिप रैन१९२१२ कृत एह ॥  
 बहुरि बढे बाहिर बसे, उपपुर भावि अनेह ॥ ७ ॥  
 निजपुर बुंदी रैन१९२१२ नृप, इम दिछो सैन आइ ॥  
 सज्ज लाखे उपहार सब, जिततित बिहित जमाइ ॥ ८ ॥  
 स्वकृत दंग प्राकार सिर१, तारागढ सिर२ तोप ॥  
 सामग्री कोसैन सकल, इक्खी धारत ओप ॥ ९ ॥  
 केसव सचिव सराहकरि, अरु तस थप्पलि अस ॥  
 सिक्ख प्रमित निबरयो सदन, इम हड्ड६१न अवतंस ॥ १० ॥  
 सता१९४१अमुखें सुतकेसुतहुँ, न कढे सबहि निहारि ॥  
 उँपालांभि कछु लाइ उर, रक्खे गिनि नन रारि ॥ ११ ॥  
 भो तैति बाहिर अनुज भजि, हृदयनरायन१९२१२ हड्ड ॥  
 सिटयोरहत दुन्नी सु तो, अंखिँरपा लहि अड्ड ॥ १२ ॥  
 तव बुल्लयो अति वीर तस, जेठो अंगजै जैत१९३१२ ॥  
 अनुजै थान वह आदरयो, बली अतुल वानैत ॥ १३ ॥  
 पुरबुंदिय रक्खे प्रथम, वीर करन१९३१२बलवंत१९२१२ ॥  
 अब सु जैत१९३१२ तीजो३इहाँ, रक्खनँ मुलक रहंत ॥ १४ ॥  
 रैन१९२१ सुपहु निजराज्यको, भुज तीन३न धरिभार ॥

१ हे राजा वह पुरानी बुन्दी है २वाकी नई है ३ सुन्दर ॥ ५ ॥ ४ इसकी शंका से  
 ॥ ६ ॥ ५ घरे हुए ६ कोट ७ आगे आनेवाले समय में ॥ ७ ॥ ८ से ९ सामग्री  
 १० उचित ॥ ८ ॥ ११ अपने बनाए हुए १२ नगर के १३ कोट पर १४ खजाना में १५  
 शोभा ॥ ९ ॥ १६ कन्वा १७ सीख के माफिक १८ घर में निवास किया १९ मु-  
 कुट ॥ १० ॥ शत्रुशाल २० आदि २१ पोते के नहीं निकालने से २२ ओलम्हा  
 दकर ॥ ११ ॥ २३ पंक्ति बाहिर २४ लज्जा ॥ १२ ॥ २५ पुत्र २६ छोटे भाई के स्थान  
 में २७ युद्ध से नहीं भगने की प्रातज्ञा का चिन्ह रखनेवाला ॥ १३ ॥ २८ देश की  
 रक्षा करने को ॥ १४ ॥

\*सासक रक्खयो सबनसिर, कुमर सतां १९४। १ जयकार १ १५।  
इंदसल्ल १९४। २ ताको अनुज, बुंदिय थपि बलेसैं ॥  
बैरिसल्ल १९४। ३ दंगदंग बलि, पठयो दबन प्रदेस ॥ १६ ॥

॥हरिगीतम्॥

पलटयो न जो रनछोर १ गोर सु दुंकरनैर पठाइकैं ॥  
महराज १ चाखुक मालपुर २ पठयो जथोचित पाइकैं ॥  
टोडा १ पुरी अधिकार अप्पिय बैनिक टोडरमल्ल २ कौं ॥  
दिय रामपुर १ अधिकार तिम कछवाह दुर्जनसल्ल २ कौं ॥ १७ ॥  
रघु १ भूत्य चेचत २ रक्खि सैसन १ सैसर भार समप्पिकैं ॥  
धिर देस रक्खन वीर हे तिन्ह त्यों समस्तन थपिकैं ॥  
बुरहानपुर इत सुकल्यो स्व निदेस पत्रहु बेगही ॥  
निज दंडनायक द्वारकादिकदास कूरमतैं कही ॥ १८ ॥  
माधव १ ९३। २। १ कुमार भतीज केसव १ ९३। ६। २ अन्यतर १ मिलावाइकैं ॥  
प्रच्छन्न खुरम ३ ९। २ हिं कछिदेहु निसीथें ओसर पाइकैं ॥  
जानैं न कोहु स्वकी भजन १ अरु दंगजन २ न सुनैं जथा ॥  
रचि त्यों प्रबंध निकासि रक्खहु साह संतति सर्वथा ॥ १९ ॥  
लकखैरि अप्पन रक्खि १ सुत हरिसिंह १ ९३। ३ पै हितलाइकैं २ ॥  
आसान बुंदियके वच्यो ३ इम लेख लेहु लिखाइकैं ॥  
बुरहानपुर यह पत्र विदेखत द्वारकादिकदास १ जो ॥  
नृप पुत्र माधव १ ९३। २। २ तैं मिल्यो नृप इष्ट अक्खि निकास जो २०  
मिलि निरसलाक उमै २ कह्यो तिहिं साह सासन मारिवो १ ॥

\* आज्ञा देनेवाला (हुकुमत करनेवाला) १ राजशुशाख २ जय करनेवाला ॥ १५ ॥ ३  
सेनापति ४ नैणवानगर ॥ १६ ॥ ५ बनिया ॥ १७ ॥ ६ नाम विशेष ७ सेनापति  
८ द्वारकादास ॥ १८ ॥ ९ दोनों में निर्धारित मलाह मिलाकर १० आधी  
रात्री को ११ समय पाकर १२ अपने सेवक भी नहीं जानसकें १३ नगर के लोग  
१४ बादशाह की खन्तान को ॥ १९ ॥ १५ देखते ही ॥ २० ॥ १६ एकान्त में मि-  
लकर १७ बादशाह की आज्ञा इसको मारने की है

नृपकै अभीष्ट तऊ तुम्हैं कछुरीति गुप्त निकासिबो॥  
 हमरो कहयो सुभ मन्नि जो हरिसिंह१९३॥ तैं रिस सहरो१॥  
 आसान हहु६१ नैं उब्वरयो कर अप्पे लेख यहै करो॥२१॥  
 लक्ष्मैरि हहु६१ नकी पुरी नहिं गौड़ भोसन सो लहैं३॥  
 रतनेस१९२॥ अब लिय देस इहिं लिपि तेहु दत्त बने रहैं४॥  
 तब तुम निकास लहो१ तथा हमतैहु तुष्ट नरेसहै२॥  
 बलि पट्ट पाइ हमैं बढावहु तो कृपा सु विसेसहै॥२२॥  
 अवनिसप्रति तब लेखसुहि करि अंत वत्त लिखी यहै॥  
 कछु भार नाहि मदीय चित्तहु मंगिबो इक तो कहैं॥  
 अति नम्र माधव१९३॥ मोहि मालिक सर्वथागिनि आदरयो॥  
 काराहुमैं मम चैन जिहिं मन१ वैन२ कायं३ नतैं करयो॥२३॥  
 मैहि भाग याहि विसेस दे सब सुखके सनमानिहो॥  
 आसान एह द्वितीय२ बाबा ज्यान मोसिर आनिहो॥  
 इम खुरुम३९॥ निज लिपि पत्र अप्पिय दारकादिक दासको॥  
 विचदै कुराँ१ रँब२ सौहैं॥ कै विरच्यो विसेस विसासको॥२४॥  
 कछु व्याधिके मिस सुख माधव१९३॥ आदि दूर सबै करे॥  
 समुझाइ रँछक अन्य सँसुचित धीमनाइ तहाँ धरे॥  
 जिनको विसासि निसीथें सँसुत कुँम्म१ माधव२ जाइकैं॥  
 सो खुरुम २९॥ कहि दयो विमैग लिखी सबै सुमिराँइकैं२५॥  
 गिनि जन्म नव सुत साहको सु बहोरि बीजापुर गयो॥  
 इत तास रँछक वर्गको खिजि व्याज बंधन अप्पयो॥

१ मिटाओ २ आप ॥ २१ ॥ ३ मुक्त से ४ लेख ५ दान ६ प्रसन्न ॥ २२ ॥ ७ राजा के प्रति-मेरे कैद में भी १० शरीर से नम्र होकर ॥ २३ ॥ १ भूमि का भाग २ सब में सुख्य करके सन्मान करोगे ३ कुरान ४ ईश्वर के ५ सौजन्य ॥ २४ ॥ १ रोग के मित से २ पहरायतों को ३ उचित ४ समुझाकर ५ आधी रात्रि २१ सलाह २२ कछवाहा दारकादास और कुमार माधवसिंह २३ बिना २४ स्मरण कराकर ॥ २५ ॥ पहरायतों को क्रोध करके २६ झूठी कैद में किये

यादशाहकाखुरमकोनिकालनेकीखबरसंगाना]पछराशि-अष्टाविंशमयूख(२५२६)

मनमें मनाइ\*चमूप कूरम लोकाख्यापन मोघही ॥  
 सबसांसना किय कैदकी तिन त्यों प्रसन्न सु पैसही ॥ २६ ॥  
 अरजी लिखी नृपकों इतैं कहि छन्न गो सुत साहको ॥  
 लिपि सोहि दिल्लिय भेजि जाहिर मोद संहारि लाहको ॥  
 तब दै सता१६४१भुजभार रच्छक राज्यके सनमानि त्यों ॥  
 जिन्हरखिख बुंदिय अप्प हंकि य गंम्य दखिखन३२जानि त्यों ॥ २७ ॥  
 ततकाल जातहि ख्यातिमें दुव२कुम्म१माधव३र्तर्जये ॥  
 वसुं दंड दै१वसुंधा उतारि२ रु पास आगम बर्जये३ ॥  
 बिसवासि अंतर१है२हि बाहिर२दिठिकै३द दयो बली ॥  
 भुव पुव्व जाँमिक कैद हे तिनकीहु ख्यात लई भली ॥ २८ ॥  
 नहि मंतुं केसव१९३६पै निहारि सु दंडनायक निर्मयो ॥  
 भजिगो स्वयंगर्ज सो इतैं सुनि साह अमरखमें भयो ॥  
 बैलि वेहि सय्यद२मुकले अतयाँ१तथा२मु विचारिबे ॥  
 पुनि भूप ते सहमान रखिय मंतुं निश्चय पारिबे ॥ २९ ॥  
 वसुंहीन जाँमिक१कुम्म२माधव३कैद तोहु न विस्वसे ॥  
 बहु दै प्रजाहित छन्न लोभ रु ह्वाँ उमै२चिरैलोँ बसे ॥  
 बहुकालमें तिनकों मिल्यो कछु भेद यों दुव२बातको ॥  
 पैहु तो प्रसन्न प्रजाकह्यो लरतोरह्यो यह प्रातको ॥ ३० ॥  
 इहिं कुम्म राति अरौति पंचक५मुख्य कहिदयो१ अहो ॥

\* सेनापति † प्रसिद्ध १ आज्ञा ॥ २६ ॥ २ लिखावट ४ लाभ का मोद ३ मिटाकर ५ जाने योग्य ॥ २७ ॥ ६ तुरन्त ७ प्रसिद्धि में (लोगों को दिखाने के लिये) ८ धमकाए ९ धन का १० भूमि ११ पास आना चन्ध किया १२ नजर कैद १३ पहरायत ॥ २८ ॥ १४ अपराध १५ सेनापति बनाया १६ अपना पुत्र भाग गया सो सुनकर १७ क्रोध में १८ फिर १९ वे दोनों शय्यद जो खुरम को लेने के लिये पहिले भेजे गये थे २० झूठ और सत्य विचारने के लिये २१ अपराध निश्चय करने को ॥ २९ ॥ २२ धनहीन २३ पहरायत २४ विश्वास नहीं कि या २५ बहुत समय पर्यंत रहे २६ राजा तो ॥ ३० ॥ द्वारकादास कछवाहे ने पांचों २७ शब्दों को

निकसाइ खुरुम२९।२दयो तथा अबरपै इहाँ नृपतो न हो ॥  
 इक कुम्म१अक्खिय काहु काहु मिल्यो कुमार२हु उच्चरयो ॥  
 परं द्वैरहिबेर चम्मूको परं कट्ठिबो निहचैपरयो ॥ ३१ ॥  
 उनतैहु अक्खिय साह आवत सुद्धिलै सब ओरतै ॥  
 जो होइ कहनहार तो तिहिं बंधिआनहु जोरतै ॥  
 सैपंच५००साँदि१रु अट्ठसै८००पादाति२दोउ२न संगहे ॥  
 गहि बास बाहिर१पुनि पदाति बिसे जथा क्रम दंगहे ॥ ३२ ॥  
 तिन्ह सज्जि सय्यद रँति कूरमपै क्रमे सँहसा तथा ॥  
 जिहिं क्योँहुँ जानिलई सु सज्जहि स्वल्प सत्थ मिल्यो जथा ॥  
 तरवारि भारि भिरे अचानक लोक विस्मयमै तँच्यो ॥  
 महि रुंड१ मुंड२न पट्टि त्यों अवमर्द इक्क१घरी मच्यो ॥ ३३ ॥  
 पहु सो इतै सुनि द्वार रुद्धकराइ निजभट पिल्लये ॥  
 हरिसिंह१९३।३ केसव१९३।६ संग व्है सबठाम कूरम ठिल्लये ॥  
 पुरद्वारप्रति सत.पंच५०० पंच५०० सिपाह सज्ज पठाइकै ॥  
 अरु द्वार अंतर दुर्गके सु खरो रहयो हुत आइकै ॥ ३४ ॥  
 औबे लग्यो स्व कुमार माधव१९३।२ सो न आनदयो इतै ॥  
 भैर कुम्म१ सय्यद२ यों भिरे तँहँ लुत्थ बत्थ जितैतितै ॥  
 पहुँचै न जोलगि हरि१६३।३रुकेसव१९३।६ मिच्छतोलगि प्राँनमै ॥  
 कछवाहकोँ लागि लाह लौलिय संकरैँ घमसाँनमै ॥  
 जँहँ स्वल्प सत्थहु द्वारकादिकदास दुस्सह जुँज्भयो ॥  
 विनुँमत्थ भारत खगग लिखि गिरिजा१ गिरीस२हिं बुज्भयो ॥

१इसी प्रकार१किसी किसी ने२परन्तु४सेनापति५शत्रुओं को निकालना ॥ ३१ ॥  
 ६ खयर ७ सवार ८ घुसे ९ नगर में ॥ ३२ ॥ १० रात्रि में ११ कछवाहा द्वार-  
 कादास पर चले १२ अचानक १३ किसी प्रकार १४ तपा १५ युद्ध ॥ ३३ ॥ १६  
 द्वार बन्ध कराकर १७ भेजे ॥ ३४ ॥ १८ भट (वीर) १९ बल में २० युद्ध में  
 ॥ ३५ ॥ २१ द्वारकादास २२ लड़ा २३ विना मस्तक लड़ता देखकर २४ पा-  
 र्वती ने शिव से पूछा

कछवाह बंसहि \*चारु भट दुवरभेद ॥ सेख १ ॥ नरु २ कुली ॥  
 तैं आदि १ ॥ ईस कह्यो यहै जिहि रुंड कर ॥ असि यौ तुली ॥ ३६ ॥  
 जवनीन हत्थ यनीन कंकन हीन कीन चमूप ज्यौ ॥  
 रिपु गंत रंत खैं द्रवैं हरियार होरिय रूपज्यौ ॥  
 जस रक्खि बिनुसिर द्वारकादिकदास १ कछुखिन जुद्यो ॥  
 तरवारि आरि घनैन पारि सु रारि तिलतिल तुद्यो ॥ ३७ ॥  
 ताको भतीजहु मान २ खंड बिहंड श्वेतपरयो तथा ॥  
 परि संग बीर छतीस ३६ ओरहु उब्बरे जसकी प्रथा ॥  
 पहुँचै न दैरहि कुमार जोलग संगलै भट पानके ॥  
 कछवाह तोलग दैरहि है सहस्रस्थ गोचर कानके ॥ ३८ ॥  
 सुनि एह भूपहु वृद्ध बै भट रक्खि दै सत २०० संगमै ॥  
 बलि अप्प जीवरखा बिस्यो जरि द्वार वा छलजंगमै ॥  
 सब सेस सूरहु मुक्कले हरि १ केसवारदि सहायपै ॥  
 घैमसान घोर मच्यो लख्यो तिन घाय लगगत घायपै ॥ ३९ ॥  
 दलि कुम्भ १ अंतरदुर्गदिस गँहिलैन माधवर वे मुरे ॥  
 इतनै बढे पहिले कढे भट पति पहुँचत अँकुरे ॥  
 चढि अँट अंतरदुर्गके नरनाई वाह कहैं चढ़ै ॥  
 श्रुति अक्खि होत समीप सँदन चंद्रहास बहैं सहैं ॥  
 कहि कोहि नेजैन बद्ध ह्वैं रनमाहताब उदैकरी ॥

कछवाहों में \* सुन्दर दो भेद हैं एक † सेखाउत ‡ दूसरा नरु का जिनमें  
 § शिव ने कहा कि यह सेखाउत है ॥ खड्ग ॥ ३६ ॥ १ सेनापति ने २ गात  
 (शरीर) ३ रक्त ४ फाग ५ कुछ समय ॥ ३७ ॥ ६ प्रसिद्धि से ७ पराक्रम के ८  
 साथ सहित कर्ण गोचर हुआ अर्थात् उसका नास काका से जानने योग्य रहा  
 और शरीर से मारा गया ॥ ३८ ॥ ९ वृद्ध आबस्थावाले १० जीवरखा में घुसा  
 ११ बाकी के १२ युद्ध ॥ ३९ ॥ १३ जीवरखा की ओर १४ माधवसिंह को पकड़ने  
 के लिये १५ पैदल १६ खड़े हुए १७ बुरज १८ भीतर के गढ़ (जीवरखा) की १९  
 राजा २० कानों में २१ शब्द २२ खड्ग ॥ ४० ॥ २३ बाँसों पर बांधकर

इम दुर्गशपिक्खि प्रकास द्रंगरहु हो सु जिततित उग्घरी ॥  
 गढतैं नरेस निदेस निक्खसि वीर जे पहिलैं गये ॥  
 लघु पहुँचि तिन अरिक्कुम्मशकटि कुमारखँधौं सुरते लये ॥११॥  
 मिलि दह्दहशमिच्छरन जुद्धमें पुनि जुद्ध यौं सहसौं मच्यो ॥  
 बुरहानपुर तिहिं रँत्ति पुरजन धामधौंम बिस्यो बच्यो ॥  
 चहुँ४ओर बेग बढावती दुहुँ२ओर तेग भलीचली ॥  
 बरवीर धीर सदाजई जिम छीर१नीर२मिले बली ॥ ४२ ॥  
 वहि खग टोप१तनुत्र२वाँहुल३बहि अल्लरिलौं बजैं ॥  
 भिदिजात लाघव तंति सँव्वन पंति पैठन भौ भजैं ॥  
 पय१पिंडिका२नैलकील३सँक्थि३कटीर५तुँद६कटे परैं ॥  
 उर७कंठ८दह९कफोनि१०भुज११तिम अंस१२मरतक१३उत्तरै१४  
 पीछे सहाय चलयो सु सत्य मिल्यो इते विच पानसौं ॥  
 इम ए१जुर सब इक्कवहै मन बे२सुरे तव मानसौं ॥  
 सामंत१८कुँलभव केसव१८९।२।१६हरिसिंह१९३।३।२ केसव  
 १९३।६।३ संगही ॥  
 बलभद्र४चालुक बल्लनोत इतेनकी बढिकैं बही ॥ ४४ ॥  
 कौलि संहरे सतपंच५०० अरि सततीन३०० भीतभये कडे ॥  
 चहि हूर सूर उभैहि सय्यद खँग धारनपैं चडे ॥  
 सतपंच५०० सौंदिन संधैं बाहिर हो सु रत्ति रह्यो सज्यो ॥  
 सो प्रात स्वामिनकों हँनैं सुनि भोनैं पढैंति लो भज्यो ॥४५॥

१ राजा की आज्ञा से २ शीघ्र ३ कुमार माधवसिंह की ओर ॥४१॥ ४ अखानक  
 ५ उस रात्रि में ६ पुर के लोक ७ घर घर में बाग करके ८ वच ८ चीर (द्रुम)  
 ॥ ४२ ॥ ९ कवच १० दस्ताना ११ शीघ्र १२ साधन में १३ कान्ति धारण करती  
 है १४ पीछी १५ नली की हड्डी १६ जंघा, कमर और १७ पैर १८ कुहनी १९  
 कन्धा ॥ ४३ ॥ २० पराक्रम से २१ कुलवाला २२ बालगोत्र ॥ ४४ ॥ २३ युद्ध में  
 २४ यावनी भाषा का अक्षर यात्री अक्षर है २५ खत्र २६ सवारों का २७ समूह  
 २८ आने स्वामियों को मारेष्टु सुनकर २९ घर का ३० मार्ग लिया ॥ ४५ ॥



राजा के सुभदों का सैयदों से युद्ध] पष्ठराशि-अष्टाविंशमयूख (२५२९)

सततीन ३०० रिपु निस इक १ जौम रहंत हड्ड ६१ न संहरे ॥  
प्रतिकूल विग्रहमूल त्यों सतदोइ २०० घायनसों परे ॥  
इतके इते २०० हि मरे प्रवीर इते २०० हि घायल उबरे ॥  
खिल खेत दुर्जय भूपके सुत १ बंधुर बीर ३ रहे खरे ॥ ४६ ॥  
बहु दीपिका मह सोधि रंग उठाइ घायल बाहुरे ॥  
जिन्ह भूप लौ गढमैं बहोरि कपाट तोरन के जुरे ॥  
पुनि प्रात खिन उतकेहु घायल इकठाम पठाइकैं ॥  
उपचार सासनतैं करयो सबकै हकीमन आइकैं ॥ ४७ ॥  
बलि तथ साह सिपाहहे तिन्ह द्वार प्रातहि बुल्लये ॥  
भाखी सुनौ सब मोधि सद्यपद क्यौ मरे भ्रम भुल्लये ॥  
आन्योंन ज्योफरमान १ त्यों हमसों न आसय उच्चरयो २  
किस माहिमाहि विरोध नाहक मारि कूरमको करयो ॥ ४८ ॥  
भनते निजासंघ मोहि तो तिन्ह संग ताकैं भेजतो ॥  
रनमैं मरे सठ रक्खि क्यौ तनमैंहि आवनको मंतो ॥  
पठये सुनैं हम सुदिलैं सुतो लही सब पुच्छये ॥  
अधिकार लौ खिजे मैहु आतहि दिठिकैं उभैर दये ॥ ४९ ॥  
निहयैं बिना न बिसेस है दमनै जथातथ जानिकैं ॥  
आकृत स्वीय जनावते स गु मोहि नैंकहु आनिकैं ॥  
उन्हसंग तो कछवाह १ माधव २ द्वैरहि मैं करतो अहो ॥  
कछु होइ जो तुमसों कही तिस मोहि तो समहू कहो ॥ ५० ॥  
सबकोहि मालिक सौंहै नहि कौनि रक्खहु न्यायमैं ॥  
अपराध अप्पन उहै सु सूचहु काजसिद्धि उपायमैं ॥

१ एक प्रहर रात बाकी रहते २ बाकी ॥ ४६ ॥ ३ चिरागों के प्रकाश से ४ युद्ध  
श्रमि को ५ बाहर के द्वार के ६ प्रभात समय ७ इलाज ८ आज्ञा से ॥ ४७ ॥  
९ फिर १० निरर्थक ११ कछवाहे द्वारकादास को ॥ ४८ ॥ १२ अपना आशय  
१३ उस द्वारकादास को १४ विचार १५ खबर ॥ ४९ ॥ १६ दुष्ट १७ चेष्टा  
(इसारा) अथवा अभिप्राय ॥ ५० ॥ १८ सौगन १९ भय अथवा अहं

सुनि यों अचानक पैठि पतन कुम्भको उन संहार्यो ॥  
 इतकोहु सत्थ सहायदै तिहिं यों मर्यो<sup>१</sup> कछु उब्बरयो ॥ ५१ ॥  
 पहिचानि सय्यद<sup>२</sup> खेत खोजत सोकमैं सबही परे ॥  
 मन होत संसय मोहि पै<sup>३</sup> न जनाइ यों सठ क्यों मरे ॥  
 अति अंधकार<sup>४</sup> हु रंति मैं बलि जुद्ध<sup>५</sup> यों न लखे उमै<sup>६</sup> ॥  
 समुझे न अप्पन साह सासन लाइ कुम्भ हन्यो सुभै ॥ ५२ ॥  
 रुचि मोरि याहि समैं सबै जन साहसों बिमनारहैं ॥  
 कहिहैं सु अग्रिम अंसु पै इतको उदंत इहाँ कहैं ॥  
 सुनि साहके सबही सिपाहन भूप आंगस नां भन्यो ॥  
 तिम जिति जुग<sup>७</sup> रन<sup>८</sup> सत्रु पकरन<sup>९</sup> आदितस जसही तन्यो ॥ ५३ ॥  
 कहि अप्पसों न दई<sup>१०</sup> तथा हमसों कही न<sup>११</sup> यहै कही ॥  
 लागि गूढ साधन दंभ मूढन जोकरी गति सोलही ॥  
 प्रतिकूल केक बके प्रेमा तिनको बिसासहु त्यो तज्यो ॥  
 सब सेस मुकालि स्वस्वथान बिधान प्रेतनको सज्यो ॥ ५४ ॥  
 कछवाह<sup>१२</sup> आदि जराइ<sup>१३</sup> सय्यद<sup>१४</sup> आदि मिच्छ गडाइकैं<sup>१५</sup> ॥  
 पैरिपांथे घायल जे हुते घर ते दये पहुँचाइकैं ॥  
 सामंत<sup>१६</sup> १७<sup>१७</sup> नत्ति<sup>१८</sup> यें केसव<sup>१९</sup> १८<sup>१८</sup> रु बलभद्र<sup>२०</sup> मातुल बंसजो  
 पहुँ रीभि दोउ<sup>२१</sup> नको दये गज<sup>२२</sup> गाव<sup>२३</sup> रुपात प्रसंस जो ॥ ५५ ॥  
 दैल<sup>२४</sup> साहपुत्र निकासिबे लिखि पुँव बुंदियैतें दयो ॥  
 स्व तनूज<sup>२५</sup> माधव<sup>२६</sup> १९<sup>२६</sup> पास हो लखि देसकाल सु पै लयो ॥  
 तिहिं भजि जावत साहको सुत दैगयो लिखि सो<sup>२७</sup> तथा ॥

१ पुर में ॥ ५१ ॥ २ सन्देह ३ परन्तु ४ रात्रि में ५ इसकारण ६ सन्देह में अथवा वह भय है ॥ ५२ ॥ ७ उदास ८ अगले मयूख में ९ वृत्तान्त १० अपराध ११ फैलाया ॥ ५३ ॥ १२ जिनको इस बात का यथार्थ ज्ञान था वे प्रतिकूल बोले उनका १३ विश्वास १४ अपने अपने घर १५ सृतक कार्य ॥ ५४ ॥ १६ शत्रुओं के १७ पोता १८ मामा का १९ राजा ने ॥ ५५ ॥ २० पत्र २१ पहिले २२ वह पत्र अपने पुत्र माधवसिंह के पास था सो

रतनसिंह पर बादशाहका कोप करना] घष्टराशि-अष्टाविंशमयूख (२५३१)

\*अतिगूढ रक्षिष्य पास अप्पन जो न रूपाति परैं जथा ॥५६॥  
 दिल्लीहु यों अरजी लिखी हमकोँ स्वसासन नाँ दयो ॥  
 भिरि रैति कुम्हहिँ मारि सय्यद द्वंद्व २ नष्ट इहाँ भयो ॥  
 सुनि साह १ कुप्पिय तौहुसौँ बलि सो न नूरजिहाँ २ सही ॥  
 दुवर अप्पनैँ पठये दलै गिनि टेकै एक यहै गही ॥ ५७ ॥  
 अब खुरुम ३ ९ २ कहुनहार मारक मारि रैन १ ९ २ १ न उब्वरैँ ॥  
 कलि चंड भेजहु दंड हजरत जो निदेस यहैकरैँ ॥  
 बुंदी उतारि १ रु मारि हहु ६ १ न २ रैन १ ९ २ १ लावहिँ बंधिकैँ ३  
 सुन होइ तो तिहिँ ॥ मारि आवहिँ ४ आन अप्पन संधिकैँ ५ ५ ८  
 बलि व्है प्रसन्न हजूरसौँ सुनि सोहिँ मो मिलिबो बनैँ ॥  
 बाहिकाइ जिमजिम देत बेगम भाव तिमतिम सो भनैँ ॥  
 सब पै मुरे मन यासमैँ सचिवादि हे निजसाहसौँ ॥  
 जिनकोँ न बेगम स्वीयजानत वेहु तै न उछाहसौँ ॥ ५९ ॥  
 इतसौँ महावतखान १ आइ प्रबधसौँ तहँ उत्तरयो ॥  
 यह साह फंद गिरयो न प्रेत्युत तौहिँ गेरनकोँ अरयो ॥  
 सूबा अमानतखाँ १ रहैँ अजमेरकेर सम्हारिकैँ ॥  
 तजि ओरकोँ बिसवास त्यों धियँ ताहिँ अप्पन धारिकैँ ॥ ६० ॥  
 कहि बेग बेगम साहसौँ फरमान तापर मुक्कल्यो ॥  
 सहसा निरसा छलि स्वीय सय्यद द्वंद्व २ हहु ६ १ न ज्यों दल्यो ॥  
 तिम तू बली सकुटुंब रैन १ ९ २ १ हि मारिकैँ १ गहिकैँ २ तथा ॥  
 पुर १ देस २ छिन्नि असेस रक्खहु सेस सौसनकी प्रथा ॥

\*प्रसिद्ध नहीं होवे इसप्रकार रक्खा ॥ ५६ ॥ १ आपने आज्ञा नहीं दीररात्रि के समय में ३ दोनों नाश हुए ४ उन संयुद्धों पर ही क्रोध किया ५ मारे ६ नूरजहाँ ने हठ किया ॥ ५७ ॥ ७ मारनेवालों को मारकर ८ रतनसिंह ९ युद्ध में १० सेना ११ उस रतनसिंह को ॥ ५८ ॥ १२ आपका मुँह से मिलना तभी होवेगा १३ वजीर आदि के मन बादशाह से मुड़े हुए थे १४ अपना नहीं जानता था ॥ ५९ ॥ १५ उलटा १६ बादशाह की १७ बुद्धि में ॥ ६० ॥ १८ रात्रि में १९ सब २० बाकी २१ आज्ञा की प्रसिद्धि ॥ ६१ ॥

दुत जित्ति हड्डवती स्वबाहुन आहु जाहु न देरसों ॥  
 सुनि यों अमानतखान सजि रु उप्परयो अजमेरसों ॥  
 रजपूत पास बिसेस रक्खहिँ जो महावतखान ज्यों ॥  
 पहिलैं चढयो वह लैन बुंदिय बैन हैन प्रमान ज्यों ॥ ६२ ॥  
 पुरपर्णावाट समीप आइ सु दै मिलान निसा परयो ॥  
 करि प्रात अग्र अनीन प्रस्थित मध्य गोन स्वयं करयो ॥  
 हठमैं बढयो सु चढयो करी तबही अमानत हंकयो ॥  
 भटवर्ग को दुहुँ२ ओर पंतिन बंधिँ मुजरा भयो ॥ ६३ ॥  
 इहिँ पास अक्खयराज १८९१२ नत्तिय हो जु भूपति १९११ सोइतैं ॥  
 करि सिक्ख अग्न बढयो कह्यो तब निच्छ जावत तू कितैं ॥  
 सुनि यों दयालु १९०१२ तनै कह्यो अब स्वामि मारन सिक्खहैं ॥  
 बुंदीसु हड्ड ६१२ की प्रसू तस लज्ज जावत बिकिंखहैं ॥ ६४ ॥  
 तुम जो चढो सजि ओरठाँ हम है हरोल भरैं तहाँ ॥  
 रजपूत यों सब नाँरहैं जननीहि स्वीय भिलैं जहाँ ॥  
 सीसोद १ कूरम २ रड्डर ३ ग्रामार ४ जहव ५ संभरी ६ ॥  
 प्रतिहार ७ चालुक ८ गौड़ ९ मुख सबकैहि रीति यहै परी ॥ ६५ ॥  
 सब वंस संगहि रावरेजुहि सत्यहै सु करो सही ॥  
 क्रमतैं अमानत पुच्छये सबनैहि सत्य यहै कही ॥  
 पच्छी वहीर' मुराइ तब अजमेर गो ततकालपै ॥  
 प्रति साह सोहि लिखी लगैं नन बुंदि सम्मुह हालपै ॥ ६६ ॥  
 इत ए महावत कैदतैं कडि साह १ बेगम २ उब्बरे ॥  
 पर तोहु तास प्रबंधमाँहि स्वतंत्रता तजिकैं परे ॥  
 सुनि यों अमानत पत्रकलु कहि नाँ सक्यो सु सबै सही ॥

१ अपनी भुजा से २ चला ॥ ६१ ॥ ३ पानडवा नामक पुर ४ सुकाम ५ ग  
 दहाधी पर ॥ ६३ ॥ ७ पोता ८ दयालदास के पुत्र ने ९ माता १० देखेंगे ॥ ६४  
 ॥ ६५ ॥ ११ आगे जानेवाली मार बरदारी को पीछे फेर कर १२  
 ॥ ६६ ॥ १३ महावतखाँ की

राजा का दुर्भिक्ष में दान देना] षष्ठराशि-अष्टाविंशमयूख (२५३३)

अकुलाइ साह बिहस्त भो असि गंधनोल् १ जथा अहीर ॥ ६७ ॥

इत पत्त बुंदिय बीर भूपति १९१ १ सत्रुसल्ल १९४ १ सु आदरयो ॥

पर राह रोधक वाह दै कछु लाह अहंतिमें करयो ॥

प्रपितामही मत ग्राम पंचक ५ जाहि दैनलग्यो जहा ॥

करि नाहि ते न लये कछो मम बंदगीहु इती कहा ॥ ६८ ॥

नवताड़ १ मालहरा २ रु तारज ३ अल्प एहि दये नहैं ॥

रु रहैं जितैंतित तोहु संकट जानि हाजरि ह्यौ रहैं ॥

बदि एह भूपति १९१ १ तुष्टं वहै नवताड़ जाइ रहयो बली ॥

कछु अब्द वहाँ करिवासं कीगति खास दिस दिस सुकली ॥ ६९ ॥

नवताड़ वाग १ रुश्मापिका २ जिहिं द्वैरहि नूतन निर्मये ॥

भौवी दुकालहु रंक जासैन प्राँवान बचे भये ॥

पहु रत्न १९२ १ को चउ ४ अब्दपै अवसान हाँपन आइहै ॥

करि अहु सोलह १६८८ साँक सुहि दुर्भिक्ष घोर कहाइहै ॥ ७० ॥

पंद्रह १५ मनासन मान बनिकन नीवि धान्य गहयो परयो ॥

सुहि स्वीय ग्राम विचारि भूपति १९१ १ दानवीर संसुद्धयो ॥

द्विज १ आदि रंकन बुल्लिकैं वह धान्य वंदि सबैदयो ॥

लिखवाइ दम्भन ग्रामपंचक ५ धान्यरैवामिनहु लयो ॥ ७१ ॥

नवताड़ १ सुख इत पंच निर्वैसथ अग्न सुर्जन १९० १ अप्पये ॥

उस महावतखाँ के प्रबन्ध में १ व्याकुल जिसप्रकार २ छुछुंदर को ३ सर्प पकड़ कर होवै तिसप्रकार “इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध है कि सर्प छुछुंदरी (गन्धमुखी) को पकड़कर छोड़ने से अन्धा होजाता है और खाने से मरजाता है” ॥ ६७ ॥ ४ पहुंचकर ५ शत्रुओं के मार्ग को रोकने में ६ प्रशंसा करके ७ दान ८ पड़दा-दी की सलाह से ॥ ६८ ॥ ९ ग्राम का नाम है १० प्रसन्न होकर ॥ ६९ ॥ ११ वा-चडी १२ नवीन बनाए १३ आनेवाले दुर्भिक्ष में १४ जिससे १५ जीकर १६ अन्त का १७ वर्ष १८ सम्बत् ॥ ७० ॥ १९ तोल विशेष “बारह मन की एक माँगी और सौ माँगी का एक गणाला होता है” २० दिना व्याज का बनिसे का मूल धन २१ निकाला २२ रूपयों में २३ धान्य के स्वामियों ने ॥ ७१ ॥ २४ आदि २५ ग्राम

थिति\*दम्भ पूरनहोनतौ तँहँ धान्यवानिज थप्पये ॥  
 वरज्योहु रत्न१९२।१ प्रसू कह्यो तुम कर्ण१ विक्रम२नौवनौ ॥  
 भाखीहै भूपति१९१।१ दानवीरन नाम अप्पहुँ यौ भनौ ॥ ७२ ॥  
 भावी उदंत यहै तथा अब वर्तमान सुनौ भयो ॥  
 गिरिकैं महावतखान फंद सु साह१ ज्यौ पकस्यो गयो ॥  
 छोर्योहु बेगम२ जुत ज्यौ निजजोर निर्भय व्है छमो ॥  
 सबवत्त सो सुनिहौ वै अग्रिम अंसु ओसर संक्रमी ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

जबहि महावतखान जिम, आयो दिखिय एह ॥  
 बंधिसाह जिम अप्प बचि, अर्जिय सुँजस अछेह ॥ ७४ ॥  
 कारनसह अग्रिस किंरन, रीति सु पै प्रभुराम२०१।४ ॥  
 स्त्रीय सुकवि सूचित सुनहु, ध्वस्त जवन पति धाम ॥ ७५ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यशो षष्ठ ६ राशौ बु-  
 न्दीशरत्नसिंहचरिते बुन्दीप्राकारखातिकादिनिर्मितिकथन १, द-  
 त्तबुरहानपुगगननपूर्वरानानीस्वसूनुपत्ररत्नसिंहवन्दिखुरमप्रदावण  
 २, ज्ञातवन्दिस्वसुतप्रपत्न्यायनप्रकुपितयवनेन्द्रजहांगीरप्रस्थापितस-  
 व्यदजकुटबुन्दीसेनापतिद्वारकादासवधोत्तरतन्मरण ३, एतदपराध-

\* रूपये † व्यापार १ रत्नसिंह की माता ने २ आप भी उनका नाम  
 लेती हो ॥ ७२ ॥ ३ यह वृत्तान्त आगे होनेवाला है ४ समर्थ ५ अर्थ ६  
 अगले मयूख में ७ समय पर चली हुई वार्ता को ॥ ७३ ॥ ८ यश सम्पादन कि-  
 या ॥ ७४ ॥ ९ अगले मयूख में १० विध्वंस ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वावर्ण के छठे राशि में बुन्दी के भूपति रत्न-  
 सिंह के चरित्र में बुन्दी के शहर पनाह और खाई आदि के बनने का कथन।  
 राजा का बुरहानपुर जाने से प्रथम सेनापति और अपने पुत्र के नाम पत्रा-  
 लिकर खुरम को कैद में भगाना २ अपने पुत्र के कैद में भागजाने की, शहर  
 में प्रकुपित यादशाह जहांगीर के भेजेष्टण दो शय्यदों का बुन्दी के सेनापति  
 द्वारकादास को मारकर माराजाना ३ इस अपराध से निर्दोष होने की रत्न-  
 सिंह की अर्जी पढ़ने से कोप को छोड़नेवाले बादशाह को फिर प्रकुपित कर

॥ जहाँगीरकानूरजहाँकेकहेमुजबचलना ॥ ५ ॥ राशि एकोनत्रिंशमयूख (२५३१)

निर्दोषीभावविषयरत्नसिंहप्रार्थनापत्रपठनापनीतकौपयवनेन्द्रपुनरु-  
द्धतप्रकोपनिमित्तनूरजहाँकृतससैन्याजमेराधिकृतबुन्दीप्रस्थापन ४,  
स्वजननीराजधानीनिर्लज्जताऽनिरीक्षकहड्डोदयसिंहात्मजप्रबुद्धाधि-  
कृताखानतखानाजमेरप्रतिगमन ५, महावतखानकृतयवनेन्द्रजहाँ-  
गीरनूरजहाँजकुटबन्दीकरण ६, एतद्वन्दीकरणसकारणवर्णनप्र-  
तिज्ञानमष्टाविंशो मयूखः ॥ २८ ॥

आदित एकादशोत्तरद्विशततमः ॥ २११ ॥

प्रायोद्वज्जदेशीयप्राकृताभिधितभाषा ॥

॥ बैतालीयम् ॥

जब मृत्यु भयो अर्थाजको, तस तनया तब स्वामि तोरसौं ॥

लंगर दढ तोरि लाजको, बेगम हाकिम सर्वपै बनी ॥ १ ॥

अपने बस सर्वदा वहै, गिनि जवनेस जिहानगीर ३८१ काँ ॥

राख्यो निज तंत्र जो रहै, अप्पै ताकैहँ काम औरको ॥ २ ॥

सुभट १ सचिव २ केहि संहरे १, साकिनि जिहिँ भरि कान साहके ॥

कति दंडे २ कैद कौ करे ३, कछिदये सरबस्व लौ किते ४ ॥ ३ ॥

निज सासन सद्धि जे नये, उनकाँ इस अधिकार अप्पये ॥

बोही जिम संकैर दये, सेसहु देस असेस संकये ॥ ४ ॥

॥ अधिरुचिरा ॥

नायाँ खुरुम ३९।२ तबहिरिस करि निजपतिहिँ मनाइ यहहि दठ प्रीत

दुरम दुव रहि सय्यद भेजतहुव पुत्रहिँ इनन बुलाइ प्रतीत ॥

के नूरजहाँ का अजमेर के हाकिम को सेना सहित बुन्दी पर भेजना ४ अपनी  
माता रूपी राजधानी की निर्लज्जता नहीं देखनेवाले हाडा दयालदास के पुत्र  
के समझाने से ख्वादार अमानतखान का पीछा अजमेर जाना ५ महावत-  
खान का बादशाह जहाँगीर और नूरजहाँ को कैद करना ६ इस कैद करने  
के कारण सहित वर्णन करने की प्रतिज्ञा का अठाईसवाँ २८ मयूख समाप्त हु-  
आ और आदि से दो सौ ग्यारह २११ मयूख हुए ॥

१ पुत्री ॥ १ ॥ २ अपने वश में रचाहुआ ॥ २ ॥ ३ प्राण लेनेवाला ॥ ३ ॥ ४

नष्ट हुए ५ दिये ६ कठिनाई में ॥ ४ ॥ ७ नहीं आया

सुनि अपनैँ \* पठये दत्त सय्यद रैन १२२। १२ सिरहु यह अब अति रुष्ट।  
 सासनमें न रहत सुहि साक्षत पाक्षत निजेन विरचि बसु पुष्टा ॥  
 याहीनैँ निज आत जु आसफ करि दूर सु किय ओर बजीर ॥  
 ओरहु किय पुव्वहु कति आखहि सचिवपन न किय आसफ सीर  
 आसफ विहित ततो जहँ अक्खिय सचिव अपर कृत गिनहु  
 सुसर्व ॥

पै इम नूरजिहान प्रसभपर प्रकट कियउ निज सासन पर्व ॥६॥  
 जिहि हेतुहि बुरहानपुरहु सब साह भटन हुव सय्यद संग ॥  
 इच्छेहि नन हुरमहिं जिततित अब भनहिं करहु हरि डाकिनि  
 भंग ॥

याहीनैँ सु महावत गढ वह लौ न सकयो तापर हठ लागि ॥  
 ताकीं तरफ पिसुनपनैँ तनि तनि आनिय साह हृदय रिस आगि ॥१॥  
 हुरम पठाइ अपर तहँ हाकंस हँकारयो सु महावत हाइ ॥  
 हुकम विवमैँ दिल्ली हुव हाजरि एहहु साधु तवाहि दुत आइ ॥  
 राज्य असेसैँ लखयो विपरीतहि जँथ न आसिफखान बजीर ॥  
 साह हुकुम प्राननलग साधक विमन सुन्धो बुंदी नृपवीर ॥८॥  
 पठयो तहँपि महावत खिनपर देखन साह हृदय निजदास ॥  
 ताड़ितकरि जवनेस कुपित तिहिं बांधि तवाहि कैरा दिय वास ॥  
 सो सुनि अलह महावन संकित हठि बुल्लयोहु गयो न हजूर ॥  
 प्रैयुत वह जवनेसहिं पकरन देखन लागि जतन छिग १ दूर १  
 सय्यद मरन प्रथम इहिं संकैमि करि नैय लाखि स्वामी प्रतिकूल ॥

अपने अपेक्षित सय्यदों को नष्ट सुनकरों कांथिन मांजा मे १ अपने लोकों का  
 रथन से ॥५॥ ३ अचिन ४ जडा ५ अन्वदह पर ७ अपने आला करने के राजपथ ॥१॥  
 ८ अति अरुण से ९ नदी वाहने १० उन डाकिनी का नाक करो ११ सुगंध  
 करके ॥ ७ ॥ १२ महावनवां को नदी में निकाल दिया १३ प्रथम के साथी  
 १४ अष्ट १५ दीप्त १६ समूची १७ जहाँ १८ दहास ॥ ८ ॥ १९ नीली २० सजग प  
 २१ अज्ञान में रहता २२ उदा ॥ ९ ॥ २३ चतुर् २४ नीति २५ पिद



जहाँगीर के भंजियों का बखेड़ा] षष्ठांश-एकौनविंशत्युख (२५३७)

जवनेसहि१ पकरयो कहूँ जावत महिला२ वहहु सकल दुख मूल॥  
कोऊ किमहु सके न कहूँ कहि असौ बिरचि प्रबंध उदार॥  
कहि पुरतें जावत कहूँ क्रीड़न कोपन दुव२हि गहे अघकारा॥१०॥  
बाहुज पंचहजार५००० हुकमवस बिकिख तदपि कुल हड्ड६१  
बिसास ॥

उभय२हि स्याम१९४।८ १९४।१ बुलाइ रु उभय२हि पति१ प-  
तनी२ रकिखय तिन्हपास ॥  
दै अति लास तरजि इन दोउ२न तिन्ह दोउ२न भूखन लिय तोरि ॥  
हड्ड६१न सिविर धरे साह१हुगम२जिम जन रंक अनादर जोरि ॥११॥  
अप्प वचन करि जतिन महावत तजिदिय साह१बहुरि पछिताइ ॥  
बिन्नतिकरि साहहु हाहा बदि छमसंन दुरम२हु लिय सु छुराइ ॥  
बलि कछु समय महावतके बस न लागत दाव रहिय जवनेस ॥  
दिय तब खान अमानत वह दलें प्रतियग करि अजमेर प्रवेस ॥१२॥  
इम किय लेख तखत तुमरो अब हड्ड६१न लिय हजगत प्रभुहोइ ॥  
बुंदी१लैन चहत तुम ए बलि दिछी२लैन कहत मिलि दोइ ॥  
मित्र विदितें जग रैन१नहावत२जुरि जुग२ ठैदैं बहुरि अजेय ॥  
सब बाहुज बदलो मंग मोसैन स्व कैंटक इत पठवहु चहि श्रेय ॥१३॥  
दिय जब मुररि अमानत यह देख तब हुव साह महावत तंत्र ॥  
जातैं कछु न सक्यो करि जतनहु मन निजंगोइ हुगमकृत मंत्र ॥  
करत परंतु जिते स्वामि१कैंथित केसव२कैन जितक सहाय ॥  
दावलागत जवनेस बदलि द्रुत किय अतिकोप वचन१मन२काय३  
भरन चकित भजि तबहि महावत बैसु अधिकार समृद्धि विहाइ ॥

१ स्त्री (नूरजहाँ) २ खेलने को ३ पापी ॥१०॥ ४ क्षत्रिय ५ देखकर ६ इन दोनों  
हाडाओं ने ७ उन जहाँगीर और नूरजहाँ के ८ डेरों में ॥११॥ ९ आपके वचन  
का १० उल्लेख से ११ पत्र ॥१२॥ १२ स्वामि होकर १३ प्रसिद्ध १४ रत्नसिंह  
१५ क्षत्रिय १६ शुभ से १७ अपनी सेना ॥१३॥ १८ पत्र १९ महावतलों के आ-  
धीन में २० छिपाई २१ हुगम की सेनाह का २२ कहेहुए ॥ १४ ॥ २३ धन २४  
ओहदा

स्वजनन सहित सु पै भय संकित इतउत जियन फिरयो अकुलाइ  
आसफखान १ हुरमको अग्रज जत्थे हुतों वह पुब्ब बजीर ॥  
तस अवलंब महावत २ टिकि तैंहें धारनमान धरयो कछु धीर ॥ १५ ॥  
दिपि इत साह स्वतंत्र स्वदंपति २ इज्जत लुट्टन बैर उधारि ॥

स्याम १ ९४ ८ जु गोपीनाथ १ ९३ १२ कुमार सुत मिस कछु लिय  
सु दगांबल मारि ॥

स्याम १ ९४ १ सु सुनि केसव १ ९३ ६ सुत भजि सठ आयो दुरि  
लकखैरि अंगार ॥

नृप परखन पठये जवनेसहु चैंवि बुरहानपुरहि इम चार ॥ १६ ॥  
हम दंपति २ भूखन लुटकहुव केसव २ ९३ सुत यह स्याम १ ९४ १  
कुपुत्र ॥

यातैं रत्न १ ९२ १ हनउ उत आतहि अघ निज धोवहु अत्र १ अमुत्रै  
तास जनैक केसव १ ९३ ६ पुच्छयो तव निज बलनौयक रत्न १ ९३ १  
नरेस ॥

अकिखय स्याम १ ९४ १ करिय वह अनुचित आयउ हुकुम ल-  
खहु अब एस ॥ १७ ॥

केसव १ ९३ ६ कहिय सुत सु इक १ दलि कैलि अप्पन सब  
प्रभु होहिं अमंतु ॥

मत बिनु लांघि अटक पुब्बहि मृत तिहिं को अधम गिनैं कुलतंतु ॥  
जित तित दुग्हु तैं न जियत जिहिं साह अतुल आगंस अनुसार  
क्यों न हनहिं अप्पन तिहिं सु कहहु भूपति टरत स्वसिरें सबभार  
नृप सुनि तंदपि लिखी सुत निकसि रु जाहु दजीर १ महावत २ जत्थ ॥

१ नूरजहां का बड़ा भाई २ जहां ॥ १५ ॥ ३ जोड़ा सहित ४ लाखेरी के स्थान  
में ५ परीक्षा करने को ६ कहकर ७ हलकारे को ॥ १६ ॥ ८ हम स्त्री पुरुषों को  
९ लूटनेवाला इस लोक और १० परलोक के पाप ११ पिता १२ सेनापति ॥ १७ ॥  
१३ युद्ध में मारकर १४ अपराध रहित १५ अटक नदी लांघकर पाहिले ही मरे  
हुए के समान है १६ अपराध के अनुसार १७ अपने मस्तक का ॥ १८ ॥ १८ तो भी

बलि दिप\*छदन+सता१९४१२ प्रति बुंदिय स्याम१९४१२हिं  
हनहु हुतहि सजि सत्य ॥

निज बस बनत कहहु दुरि निकसन जानि न हनहु अचानक जाइ ॥

जैत१९३१२ करन१९३१२ बलवंत १९३१२ अनुज १९४१२ जुत

जबहि सता१९४१२ चढिगो सु जनाइ ॥१९॥

तदपि सु स्याम१९४१२ निडर न भज्यो तैंहें खगगन खंड भयो

भिरि खेत ॥

इम नृपस्तन१९२१२ अमंतु समुक्ति इत साह१ मुंदित हुव हुरुम२ समेत ॥

पै जवनेस अमित लोलुपन कछु गैद प्रकटि मरयो तिंहिंकाल ॥

संवत वेद उरग अष्टि२६८४ समय समुक्ते सबहि टरयो हिय साल २०

बीजापुर पंचन तव विन्रति दै रु खुरुम३९१२ बुल्लयो निजदेस ॥

भूपहु स्व लिपिछदन तैंहें भेजिय आवहु सैजव समय हुव एस ॥

दरकुंचन खुरुम३९१२हु सुनि दिल्लिय आइ तखत बैठो तव एह ॥

साहजिहांन३९१२ स्वनामलहिरुसबनृप१ रुनवाव२ बुलाइ सनेह ॥२१॥

उपदा१ गहि करवाइ निछावरि२ बिहित विसासि चहे सब वीर ॥

पट्टुं करि खानमहावत१ बलपति आसफखान१ कियो सु वजीर ॥

बीजापुर सन पुनि सुत१ वेगम२ स्वीय कुटुंब सु बुल्लि समस्त ॥

अप्पन आन फिराइ तप्यो इम धीरेख मंल सठन करि ध्वस्त ॥२२॥

अस दारा४०१२ रु सुजा४०१२ ओरंग४०३ मुरादवखस४०१२ सह

चउ४हि कुमार ॥

तीन३ किंमोर चतुर्थ४ पृथुर्के तिम सबहि मुदित बैभव अनुसार ॥

समुक्तेन सैरनि पितामहकी सुनि सज्जित सत्त७हि प्रकृति सम्हारि

अकबरपुर सु बहुरि चढि आयउ बटि खिन तत्थहु रहन विचारि२३

\* पत्र १ शत्रुशाल को लिखा ॥ १६ ॥ १ निरपराधी २ प्रसन्न हुआ ३ रोग

॥ २० ॥ ४ पत्र ५ शत्रु ॥ २१ ॥ ६ नजराना ७ चतुर ८ सेनापति ९ मन्त्री १० नाश

॥ २२ ॥ ११ युवा अवस्थावाले १२ बालक १३ मार्ग १४ अपने दादा अकबर का १५

राज्य के प्रधान अंग १६ आगरा ॥ २३ ॥

आसफखान सचिव प्रति अक्खिय आये नृप आहत असेस ॥  
 हड्डवतीस तथा पति हड्ड६१न राजा आत न क्यो रतनेस १९३१ ॥  
 सचिव कहिय सीमा थित संभर बिरचि अभय आछान बहोरि ॥  
 पातहि द्रुत अहैं सुहि किय पुनि जब नृप हुव प्रस्थित बल जोरि ३४  
 चवि माधव १९३१ हरिसिंह १९३३ रहन चुप द्वै २ हि तनय  
 पठये निजदेस ॥

सचिव बनिक केसव सोमानी उत प्रतिनिधि किय अर्पनि असेस  
 अनुज तनय केसव १९३६ जुत अप्पन सब संभवं समुचित बलसंग  
 पहु रैन १९३१ हु पहुँच्यो अकबर इम अवाहित निजअंग १ रु उपअंग २  
 मिठापुगहि रह्यो दिन दस १० मित हड्ड६१ अधिष्ठ न गयो सु हजूर ॥  
 हुव संसंघ लिखवाइ छंदन हम कीलि तज्यो सु नवहैं किम क्रूर ॥  
 अक्खिय साह सु सुनि प्रति आसफ अवाकिय छिगहु सैमाज न आत  
 आसफ गंग वकीलहि अक्खिय बदवखंत न किम नृपहि बुलात २६  
 तापहैं कहत बनी तव सत्वर गोबध बहु लाखियत तिहिं गैल ॥  
 होते कोल सत्त ७ तउ नां हम वधहिं खर लाखते गो १ बेल २ ॥  
 सुनि सुहि साह अरज आसफसन नृप गोचर दिय बधिक निवारि ॥  
 गंगहिं रीझ बखसि तव नृप गय साह समार्ज प्रै नति अनुसारि २७  
 कहिय तहाँ नृप प्रति अनुकूलहि पै करि १ हैरि २ मंगिय प्रतिकूल  
 कूरमै संतति १ पुच्छि जथाक्रम माधव १९३१ कुमार २ चहिय सुख मूल  
 अवहि करी १ हाजरि नृप अक्खिय मनवसै कितहु हैरी २ उनमत्त ॥  
 सेखाउत १ सिसु माधव २ मुरिहि गखिय सु लाखन विभव लाहिरत

१ बुलाये हुए २ हाडोती का पति ३ निमन्त्रणा (बुलावा) ॥ २४ ॥ ४ कहकर ५ पुत्रों को  
 ६ स्थानापन्न (कायम मुकाम) ७ साथ खुश पर ८ आगे में ९ साथधान ॥ २५ ॥  
 १० सन्देह ११ पत्र १२ कैद करके छोड़ा था १३ सभा में १४ हक मनगीव (भाग्यही-  
 न) ॥ २६ ॥ १५ शीघ्र १६ राजा के देखते हुए १७ गौओं को शारनेवालों को  
 रोक दिये १८ सभा में १९ विशेष नज़रता के साथ ॥ २७ ॥ २० परन्तु २१ हरिसिं-  
 ह को विरुद्ध होकर भांगा २२ कछवाहा द्वारकादाल की सन्तान २३ स्वतंत्र हो-  
 कर २४ हरिसिंह उन्मत्त होकर न मालूम कहाँ रहता है ॥ २८ ॥

रत्नसिंह पर खुरमका कृपा करना] पष्टराशि-एकोनत्रिंशमयूख (२५४१)

अप्पहि दिय सासन पहिलैं इम दाँय अधिक माधव १९३।२  
कहैं देहु ॥

कोटा मुख्य परगनाँ नवक९हिं इम लहि लाखन रख्यो तिन्ह एहु॥  
अधिपहु किय उपदा१ उत्तारन२साह अरज३सु सुनि अक्खिय साह॥

इभ अबलाहु१ बुलाहु२ सुत उभय२ गत नन गिनियत रीअ

१ गुनाह२ ॥ २९ ॥

वारन लाहु बढिय अनुंगन बलि बार न लाहु जवहि बुंदीस ॥

पीलु तब सु आन्यों इभपाँलन श्रुति ताँलन चालन धुतसीस ॥

साह कहिय उपदा गज १ साँटि२ रू रक्खहु देहु इमहिं यह २

रेन१९२।१ ॥

सुहि नृप करत भनिय पुनि सिंसुमम वारन सत्तरि७० लंघन बैन३०

द्विरद जंकपो सु रहत खिल दुबरदिन लंघन अठरु सट्टि६८ लगाइ

सूचिय साह परयो अब सिंधुर जान्यों वेल भोजहु अब जाइ ॥

किय नृप अरज समय रन सम करि इभ यह लाखहु खरो प्रभु अजै ॥

तोपन फेर बनत सुँहिबिधि तब सु इभ लग्यो घुम्नन उठि

सज्जि ॥ ३१ ॥

असो गज लिय साह परखि इम बलि कहुँ संसंद समय विसेस ॥

कुमर मुराद४०।४ जनक दहीकच अचत पकरि हुकम किय एस ॥

आपने पहिले १ आज्ञा दी थी २ दायभाग (बन्ध) ३ नजराना ४ न्यौझावर ५ हाथी को और उन दोनों पुत्रों को बुलायो क्योंकि हम गयेहुए समय की प्रसन्नता और अपराधों को नहीं गिनते ॥ २९ ॥ ६ हाथी को लाओ ७ सेवकों को कहा ८ देरी मत करो ९ हाथी १० महावतों ने ११ ताड़ वृक्ष के पत्तों के समान कानों को हिलाता हुआ १२ मस्तक हिलाता (धुनता) हुआ १३ नजराना करना तो रहने दो और उसके १४ एवज में यह हाथी हम को देदो १५ बालक के समान कहा १६ हाथी के १७ निराहार रहने को वचन ॥ ३० ॥ १८ वह हाथी पड़ाहुआ है और लंघन में दो दिन चाकी हैं १९ हाथी को २० भोजन कराओ २१ आज २२ उसी प्रकार २३ वह हाथी घूमने लगगया ॥३१॥ २४ सभा के २५ पिता की डाढी के मोल

स्वजनक मंतु कबहु न करहु सिसुरोधक लाखहु डिगहि यह  
रैन १९२।१ ॥

सिखयो मोहि१ सिखेहैं तोहि२ सु आनत दंडि कुपुलन अैन।३१  
सहजहि साह कहिय यह सुतसन भय मन तदपि लहिय कहु  
भूप ॥

मित्र स्वकीय बजीर१ महावत२ रहिय इस सु निर्भय अनुरूप ॥  
महिप बहोरि कहिय तिन मित्रन अतिवय अब जननी सम अहि॥  
द्वारावति करिहै हरि दरसन जांत मग न अटकै कहूँ जाहि ॥३३॥  
सुल्कहु दै न सु अैन बिसम१ समरपाइ मुरहिँ रनछोर प्रसाद ॥  
यह सासन सूत्रा अधिकारिन देहु लिखाइ अहमदाबाद ॥  
सुहिकरि अरज जवनप्रति सचिवन महिपहिँ लिखित दयोफरमान  
अकबरपुर बहुदिन रहि नृप इस संबविधि तुष्ट कियउ सुलतान ॥  
सु पुनि बजीर१ चमूपति२सम्मत पहु बुंदिय आयउ खिन पाइ ॥

वासवसंल्ल १९४।२।१ सता१९४।१।२ बलवंत १९१।१।३ रु जैत्र

१९३।१।४कनक१९३।१।५प्रनमिर्प मग जाइ ॥

प्राबिसि नरेस समुख निज पत्तन परि सिर प्रनत प्रंसू मुख पाय ॥  
थप्पन निजकुलभव बैभव थिर अप्पन अखिल निरखि वष १  
आप२ ॥ ३५ ॥

सिख प्रेमित रहि तहँ दस १० आमनै वय खिल तनु लखि  
बिरधि विभाग ॥

१ अपने पिता का २ अपराध ३ रोकनेवाला "जहाँगीर की आज्ञा से शाहजा  
को कैद किया था इसकारण रत्नसिंह को रोकनेवाला कहा है" ४ घर में ५  
५ पुत्र से ६ अपने मित्र ७ अपने स्वरूप के अनुसार ८ अत्यन्त बृद्ध ९ मो  
माता है ॥ ३३ ॥ १० कर (राहदारी) ११ मार्ग में जाने और आने का १२ प्रस  
जता १३ आगरा में १४ प्रसन्न ॥ ३४ ॥ १५ समय पाकर १६ इन्द्रशाल १७  
शाल १८ नमस्कार किया १९ माता २० आदि के चरित्रों में नमस्कार कि  
२१ अपने कुलवालों के २२ सब २३ खरच ॥ ३५ ॥ २४ सीख के माफिक  
दस महीने २५ शरीर की बाकी अवस्था देखकर

राजा का माधवदासको कोटा आदि देना]षट्पराशि-एकोनविंशमयूख (२५४३)

नृप दिय तत्थ मही सुत१\*नत्ति२न रक्खि अधिक माधव  
१९३१२ दिसा राग ॥

साह हुकम माधव१९३१२ हित समुक्ति सु बिभव दियउ तिहि  
सबन विसेस ॥

पुव्वहि दिय कोटा१रनैजयपर पुनि वसुमय अव अठ्ठप्रदेस ॥३६॥

खर्जुरी १ परांडकखेटक २ केथोनि ३ रु आवा ४ कनवास ५ ॥

मधुकरणद्विदिग्घोद७रहल८मिलि अष्टक८यह ग्रामक सह आस

चपल गेइंद१हैइंद२ रु चामर३ससन४बसन५भूखन६धन७ सत्थ ॥

कोटासहित परगनाक्रमकरि इम नव९दिय सुतमाधव१९३१२अत्थ ॥

जाँववती १९२१३ माधव १९३१२ जननी जब पाइ स्वसुत डिग  
रहन प्रसंग ॥

नानत१आदि वीरतट निर्वसथ पंच५लिखित लिय पट्ट स्वसंग ॥

प्रसंग१स्वसंग२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

रैन१९२११मरन पीछे यह रानी पुरकोटाहि रही सुतपास ॥

पुत्रहि के सचिवन लैछे पुनि याके ग्राम तबहि उत आस ॥ ३८ ॥

माधव १९३१२ सुत पीछे सु प्रसू मृत गिरि दुव हय सासि १७२७  
सक सुतगेह ॥

कोटा बंस तबतैं लहि कारन अबलग निर्वसथ पंचक५एह ॥

सत्त७हि पुव्व कहे माधव सुत२६१२२तिनमैं पंचक५ हे कुल तीन ॥

हइन भेद छवीस तीनहुव माधानी कुल पंच प्रमान ॥ ३९ ॥

रीभू मिली हरि१९३१३ को कापरनि१ रु पिप्पलदा२अव दि-

\* पोता को १ प्रीति १ पहिले २ बुद्ध विजय करने पर ३ धन सहित

॥ ११ ॥ ४ परखखेडा ५ हाथी ६ घोड़ा ७ चन्द्राचिन्ह (ओरछल) ८ अर्थ ॥ ३७ ॥

९ अपने पुत्र के साथ १० नाबता नाबक ग्राम आदि ११ चामल नदी के इस

किनारे १२ ग्राम १३ लोहे (हासिल लिया) १४ कोटा के राज्य में हैं ॥ ३८ ॥

१५ माता १६ पुत्र के घर में १७ कोटा के आधीन ये पांचों १८ ग्राम १९ कुल

को फैलानेवाले ॥ ३९ ॥

य महिपाल ॥

सारसला २ रु मऊ १ हृद सतक ७९ साह अधिक नगिनै जिम साल ॥

निवसथ नव ९हि हरि १९३३हि ए दिय नृप ते बलि भिन्नहि

भिन्नबताइ ॥

इक १ कापरनि परगना जुत वह प्रथम दर्ई सु रही खिन पाइ ॥ ४० ॥

अठ्ठ ८ कहे पहिलै हरि १९३३ अंगज चउ ४ कुलधर तिनके कु-

ल च्यारि ४ ॥

हरिके २ ७ २३ बजि सु भिदा हुव हड्ड ६१ न सत्ता बीस म २७ क्रम

अनुसारि ॥

दिय नृप कुछ बालूहेरा १ दिक जगनाथ १९३१ ४ हिं मित बट जंड जानि ॥

त्रय ३ मुत केसव १९४१ आदि कहे तस तैं मध्यम २ सु रह्यो कुल

तानि ४१ ॥

जैत्र १९४१ २ तथा फतमल्ल १९४१ २ विदित जुग २ जस अभिधा

तस कुल जस जुत ॥

हड्ड ६१ न कुल अठ्ठा बीस म २ ८ हुव प्रथित भिदा जगनाथ पउत्तर २ ८ २४ १४

इम पुत्र १ न वसुधा बट अपिपय बलि दिय नत्ति २ न व्याहि विभाग ॥

अग्रिम किरन सुपै कहिहैं अब रक्खहु खिलहिं सुनन अनुराग ४२

बासवसल्ल १९४१ २ १ सता १९४१ १ २ वलवंत १९४१ १ ३ रु जैत्र

१९३१ १ ४ करन १९३१ १ ५ केसव १९३१ ६ प्रति जत्ये ॥

स्याम १९४१ १ हन्यो सु सुमिरि सकुचे सब मिलतहिं नाइ त्रैपा

करि मत्य ॥

सब उरलाइ कहिय हसि केसव १९३१ ६ मन्नहु मोहि न स्याम १९४१

समान ॥

१ किर ॥ ४० ॥ २ पुत्र ३ भेद ४ अल्प वन्द ५ मूर्ख जानकर ६ वंश को बढ़ाने वाला ॥ ४१ ॥ ७ नाम ८ प्रसिद्ध भेद ९ पौत्रों को १० अगले मयूख में ११ प्रीति ॥ ४२ ॥ १२ जहां १३ लज्जा करके मस्तक नमाया



रत्नसिंह की आताका द्वारकायात्रा करना ]षष्ठराशि-एकोनविंशमयूख (२५४५)

उभयश्मरे सु टरघो दुख अप्पन हे खल\* ब्रात्य विरचि पथ हान ॥४३॥  
नृप तिम बंदि मही सुत १ नत्ति २ न रहि दस १० मास स्वपत्तन  
रैन १९२१ ॥

बुरहानपुर १ गमन सासन बलि अप्पिय साह लाखहु जित अैन ॥  
जननी पयन प्रनमि अप्पिय जब मग सह सुख जावन फरमान ॥  
संगकिय उभटसेर १६२१ पता १६११ सुत द्वारावति देखन धरि ध्यान ४४  
रखि स्वपुर पंच ५ दि ते रच्छक लौंसिसु भाव १९५१ सता  
१९४१ सुत लार ॥

पहु बुरहानपुरहि तब पहुँचिय पथ पैतना परि प्रथित प्रसार ॥  
इत नृप माइ गई द्वारावति मिति रस बसु सोलह १६८६ सक माँहि  
जे जनपद जन संग भये जिन्ह निजनिज बसु खरचन दिय नाँहि ॥४५॥  
द्वारावति पहिले प्रभुमंदिर प्रारंभिय सुर्जन १६०१ छितिपाल ॥  
वह पुरन करवाइ यहै अब क्रमि तहँ पत्त प्रतिष्ठित काल ॥  
लख इक १ रु तेतीस ३३ सहस १३३००० लग लहि अवसर  
दम्भन व्यय लाइ ॥

आदि त्रिलोक तदनु सुंदर १ यह रक्खिय नाम प्रभुहि पधराइ ॥४६॥  
इम रनछोर परसि मुरि आवत सो मग मरिग पता १९११ सुत  
सेर १९२१ ॥

बुद्धिय चंद्र १९२१ पता १९११ हुमरे बलि इत दक्खिन बनि जम आहेर  
सारथल १ रु हिंडोलिय शतिन्ह सुत जेठे दुव रहि धनीहुव जत्य ॥  
आई पुर नृप रैन १९२१ प्रैस इत अर्जित १ पुण्य २ धितैरि १ बहु अर्थ २  
जे रनयंभ लंही प्रतिमा जुग २ इक १ खिल रहिय सु पै अभिराम ॥

\* संस्कार हीन ॥ ४३ ॥ † अपने नगर में ‡ द्वारका ॥ ४४ ॥ १ श-  
मुशाल के पुत्र भावसिंह को साथ लिया. २ सेना ३ प्रसिद्ध ४ देश के मनुष्य  
५ धन ॥ ४५ ॥ ६ चलकर ७ गई ८ प्रतिष्ठा होने के समय ९ जिसपीछे ॥ ४६ ॥  
१० यमराज रूपी शिकारी बना ११ माता १२ सम्पादन १३ दान १४ यहां ॥ ४७ ॥  
१५ मूर्तियां १६ बाकी

रचि मंदिर २ वाराँ पधराई श्री कल्यान स राजसनाम ॥  
 प्रभु मूगति कोउक पधराई रचि मंदिर ३ गोपालपुराहु ॥  
 खटपुर निकट अबहु वह पिक्खहु जब पहु सिंह हनन उतजाहु ॥  
 बापी इक १ पुब्बाहि वनवाई रैन १९२ १ प्रैसू बुंदियपुर रम्य ॥  
 विरचिय तिमहि मऊ ग्रामनू बिच गोपाना दूजी २ जलगम्य ॥  
 केसव १९२ ३ पुरचौमाँ उपवन १ किय नृपमाता इक १ रुचिर नवीन ॥  
 मंदिर त्रय ३ बापी द्वय २ मंजुल करि इक १ बेलै सु जस जग कीन ॥ ४९ ॥  
 तिय १ सुत २ साह बुलाये इत तब गो संगहि गोपाल सु गोर ॥  
 लक्खैरी न दई चिंति सु लीँपि अप्पिय आन अधिक तिहिँ ओर ॥  
 संभर सुत बुल्लयो हरिसिंह १९३ ३ सु पठयो नहि भयजानि नृपाल ॥  
 तातैं नव्य परगनाँ सत्त ७ हि करि रिस साह लये ततकाल ॥ ५० ॥  
 रायहरि १ हु बुल्लि सु रानाउत भीमतनय उँपकृत नन भुल्लि ॥  
 द्रंग द्रये समुचित टोडा १ दिक् ताहि वडे नृप आदर तुल्लि ॥  
 सत्त ७ हि सचिव हुकम यह सुनतहि बुंदीपुर लिय नृपहु बुलाइ ॥  
 इक गोर सु रनछोर १ कटयो वह खट ६ दिन लरि करि अरि बहु खाइ  
 साहजिहान ३ ९ १ खिजत पुनि यह सुनि आसफ १ सहित महा वतँ २ आनि  
 कहिय इतरै हेलनै नृपसिर किम मन हजरत ग्रथुँत लिय मानि ॥  
 भेज्यो न हरि १ ३ ९ ३ जवनपति भाखत उन अक्खिय मूढ सु उनमत्त  
 जनकैहुकोँ न कुपुल गिनै जहँ वदहु कितीक गिनै खिल वत्त ॥ ५२ ॥  
 ज्यान १ रु माल २ वडप्पन ३ भू ४ जुत सो सब गिनत हजूर सहाय ॥  
 वहुरि विहितै उपकार विचारहु निरखहु जुलम हुँरमकृत न्याय ॥  
 इम नृपतैं रिस टारि दईउत तदपि परगनाँ सत्त ७ उतारि ॥

१ हे प्रभु रामसिंह ॥ ४८ ॥ २ रत्नसिंह की माता ने ३ बाग ॥ ४९ ॥ ४ लि-  
 खावट ५ नवीन ॥ ५० ॥ ६ रायसिंह को ७ सीसोंदिया भीमसिंह के पुत्र का  
 उपकार नहीं मूलकर ८ उचित ९ जोधपुर जयपुर आदि बड़े राजाओं के समान  
 आदर करके ॥ ५१ ॥ १० महावतखाँ ११ और १२ अपराध १३ बलदा १४  
 पिता को भी ॥ ५२ ॥ १५ उचित अथवा क्रियेष्ट १६ नरजहाँ का किया हुआ

दिय टोडादि चउ४हि\*सीसोदहिं टोंक†प्रमुख‡कतिमत कति टारि  
 ५पुरउजिम्ह रु इत रान उदग्रपुर लिय तिनदिनन करन परलोक ॥  
 तब जगंतस तनय जेठो तस इन हुं लहि गहिप निज ओक ॥  
 इतनूपरैन१९२।१विभनतउअवाहितैहायनदुव२३किखन३।२रहिहहु६१  
 तिम्मरनि१रु आसेर१अवनि तिम वीर अपर थप्पिय बयवहु॥५४॥  
 दिछी सीम बढावत, लय३दिस आंटे अति बल खट्टिय जसं अप्प ॥  
 दब्बिय कछु पूरव१तिम दकिखन२दलि पच्छिम३ सहावाधि दप्प ॥  
 लौ अरिगाम१इत१सु वरदा१लग इत२इक१टारि दोलत आबाद ॥  
 सह इलपुर२रोजा२रु असाई२संकमि किय गोदा२जय साद ॥५५॥  
 पुंजर तट धूलिक१नासिकपुर२अंबक३दुर्ग अवधि तनि त्रास ॥  
 पूरव१गति गोदा१तट तट पुनि सुरि नंदेरि रह्यो दुव२मास ॥  
 वसुधा इम तापी१गोदा२विच इक दोलत आबाद१हिं उजिम्ह ॥  
 कहूँ दब्बिय १ कहूँ जित्ति मैनाति किय २ जितंतित कॅमित अमित  
 बल जुजिम्ह ॥ ५६ ॥

सुलिखि करार कढेजवनन सनरैन१९२।१तबहु समुचितहितरकिख  
 हतमद किय पच्छिम१मरहहु२रु सैसै दु२दिस१सेस२हु जय सकिख  
 किय नंदेरि सनहु चढि निकटहि कालीवाइ, बहोरि मुकाम ॥  
 तत्थ हु रहिय धुंनी गोदातट धैरनीधव तानितं पट धाम ॥ ५७ ॥  
 विकिख दुकाल परयो तिहिं बँच्छर अंतिके अर्धैन जनन दिय अन्न

\* शशिषोदिया रायसिंह को † टोंक आदि ‡ कितनों ही के मत से  
 तो टोंक आदि दिये और कितनों ही के मत से टोंक को छोड़कर ॥ ५१ ॥  
 § शरीर छोड़कर "यहां पुर शब्द शरीर वाचक है" ? कर्णसिंह २ राजा ३ अ-  
 पने घर में ४ लदास ५ सावधान ६ वर्ष ७ दक्षिण में रहा ८ बृद्ध अवस्थावाले  
 ने ॥ ५४ ॥ ९. फिरकर १० यश सम्पादन किया ११ पर्वत का नाम है १२ जय  
 का घर; अथवा जय का शब्द किया ॥ ५५ ॥ १३ गोदावरी नदी के किनारे कि-  
 नारे १४ तापी नदी और गोदावरी के बीच में १५ दोलताबाद को छोड़कर १६  
 नज़र १७ फिरकर ॥ ५६ ॥ १८ उचित १९ बाक़ी का २० गोदावरी नदी २१ भूपति  
 २२ डेरें तानकर ॥ ५७ ॥ २३ देखकर २४ वर्ष में २५ समीप के २६ निर्धन लोगों को

केसव सचिव बलहु बैसु चप करि सब रक्खिय सवरीति प्रसन्न  
तैंहं ज्वर हुव नृपकै एकंतर आयु अवाधि वनि विधि बलवान् ॥  
अगहनैसितदसमी १० वपु उज्ज्वल तीजे शबौर तृतीयक तान ५८

॥ वैतालीयम् ॥

सक सर दुव तर्क भू १६२५ समा, ऋतु पाउस ३ हुव जन्म रैन १९२१ को  
पुनि चउ खट अष्टि १६६४ का प्रसा, ग्रीष्म २ मै नृपता तथा गही ५९  
गज अहि रस भू १६८८ समा गये, अब हेमंत ५ शरीर उज्ज्वल ॥  
वर्ष त्रिंशुत सठि बै भये, इम गोदातट स्वर्ग जो यहै ॥ ६० ॥  
क्रम व्याहनके जथा कही, रानी नव ९ नरनाह रैन १६२१ कै ॥  
रानी दुव २ जीवती रही, तब तिनमें दूजी १९२१ रू तीसरी १९२१ ॥ ६१ ॥  
सीला १९२१ दिक सेस ७ सुंदरी, महिपतिसें पहिलैं सबै मरी ॥  
जैहं दूजी २ संगही जरी, रानी राजकुमारि १९२१ तोमरी ॥ ६२ ॥  
ऊढा बुंदी हुती उभै २, जिनमें दूजी २ तोमरी १९२१ जरी ॥  
चित्त मरन जास नाँ चुभै, जो तीजी ३ किम चालुकी १९२१ जरी ॥ ६३ ॥  
माधव १९३१ जगनाथ १९३१ माइ सो, कोटा जाइ रही तनूजकै ॥  
जगनाथ १९३१ हु संग जाइ सो, अंग्रजके ढिगही रह्यो उहाँ ॥ ६४ ॥  
सुतकोसुत सत्रुसल्ल १९४१ सो, सबबुंदी मृतकर्म सदिकैं ॥  
मानी रन रंगमल्ल सो, भूपतिभो दानी दधीचसो ॥ ६५ ॥

॥ गीतिः ॥

नवैठान् अघैर किय नव, सिर तिनके रत्न दोलत २ समज्या ॥  
रत्न निवास ३ उपरिभव, ताके सिर रत्नमहल ४ विरचिय त्यों ॥ ६६ ॥  
नारीकुंजर ४ नामक, अब सोही रत्नमहल ४ विदित इहाँ ॥  
अरु तससिर अभिरामक, जु रत्नमन्दिर ५ दसगुंलक जानौ ॥ ६७ ॥

१ धन के समूह से सेना को २ शरीर छोड़ा ३ मंगलवार ४ तीसरे प्रहर ॥ ६८ ॥  
५ प्रमाण ॥ ६९ ॥ ६ सम्बत् ७ शरीर छोड़ा ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ८ विवाहिता  
॥ ६३ ॥ ९ पुत्र के १० बड़े भाई के साथ ॥ ७४ ॥ ११ पोता ॥ ७५ ॥ १२ नीचे  
१३ सभा ॥ ७६ ॥ १४ सुन्दर १५ खरबूजे के आकार

अंतदपुरं जुर सवती, ताकेसिर रत्नमंडप ६ रच्यो त्यों ॥

चारु रतन १९२१ जस चवती, खट ६ मद्वलन तिय है इहाँ रूपाती १६८१

सवती १ चवती २ अन्त्यानुप्रासः ॥

राजतं विहितं मनोरम, परिखा १ प्राकार २ है ३ हि निजपुरकै ॥

छार १ रतन २ मुख दे छै, उँपवन जुग ३ थान रतन १९२१ रचित इते १६९१

इतिथी वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यगो पष्ठ ६ राशो वुन्दीश-  
रत्नसिंहचरित्रे महावतखाननिष्कासनार्थनूरजहां जहां पितामराधिकारि  
गमनानन्तरदिल्ल्यागतनदावतखाननूरजहां जहां गीरवन्दीकरणा, र-  
क्षितात्ममहावतखाननूरजहां जहां गीरकाशगानिःसागणा, काशगा  
रखालंकाशदानहटोपर्यप्रसन्नयवनेन्द्रसेनाप्रस्थापनइयामसिंहवधा-  
नन्तररत्नसिंहोपरिप्रसन्नताप्रकटन, जहां गीररखानन्तरवीजापुर-  
दिल्ल्यागतधृतशाहजहां नामधेयशुभसिद्धीन्दीभवन, दत्तमहावतखां  
सेनानीत्वासफखांमन्त्रित्वाधिकागंदेहोसमाहृतसकलभुभुजंगानंत  
रावरत्नसिंहसनाकारणा, यवनेन्द्रयाचितहरिसिंहमाधवसिंहकुमार

द्वयदत्तसमयातिक्रमणोत्तरलोखितस्वप्नसुद्वारकायात्मानुकूलज्ञापत्र-  
रत्नसिंहबुन्दयागमन, विभक्तस्वपुत्रपौत्रभूभागद्वारकाप्रस्थापितस्व-  
मातृकसमाक्रान्तदक्षिणाराष्ट्रयवनेन्द्रराज्यविस्तारण, स्मृतभीमसिं-  
हसेवयवनेन्द्रशाहजहांशैर्षोद्वारायसिंहटोडाराज्यप्रदानपुरःसरमहाम-  
हाराजसमत्वापादन, उदयपुरमहाराणाकर्णसिंहमरणोत्तरराणाजग-  
तसिंहपट्टप्रापण, दक्षिणदेशयवनेन्द्रराज्यविस्तारकबुन्दीशरावरत्न  
सिंहकालीवापीनामस्थलतनुत्यजन, रत्नसिंहसमयनिर्मितस्थानग-  
णानमेकोनत्रिंशो मयूखः ॥ २९ ॥

आदितो द्वादशोत्तरशततमः ॥ २१२ ॥

बुन्दीशरत्नसिंहसमकालीनाधिकारपूर्वायणे पष्ठो राशिः ॥

इति श्रीमदखिलमहीभून्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलि-  
न्दमुखरितचरणचिन्हिताऽऽरातिचूड बुन्दीपूर्विल्लासिनीविलासि-चाहु-  
वाण-चूडामणि-भारतीभागधेयहृष्टोपटंकिसहाराजाधिराज-रावराजे-

देकर अपनी माता का द्वारका की यात्रा के अनुकूल फरमान लिखवाकर र-  
त्नसिंह का बुन्दी आना ६ रत्नसिंह का अपने पुत्र और पौत्रों को बन्ध देकर  
माता को द्वारका भेजने के पीछे दक्षिण में जाकर बादशाह के राज्य का  
विस्तार करना ७ भीमसिंह की सेवा को स्मरण करके बादशाह शाहजहां  
का शीषोदिया रायसिंह को टोडा का राज्य देकर बड़े राजाओं के समान ब-  
नाना ८ उदयपुर के महाराणा कर्णसिंह के शरीर छोड़ने पर राणा जगतसिं-  
ह का पाठ बैठना ९ दक्षिण और पश्चिम दिशा में बादशाह के राज्य बढ़ाने-  
वाले बुन्दी के राव रत्नसिंह का कालीवाई नामक स्थान पर शरीर छोड़ना १०  
रत्नसिंह के समय में बननेवाले स्थानों की गणना का उन्तीसवां मयूख स-  
माप्त हुआ और आदि से दो सौ बारह २१२ मयूख हुआ ॥

श्रीमान् सत्र राजाओं के मुकुटों में रत्नेहुए मोंगरे के पुष्प सम्बन्धी मकरन्द  
(गुणरस) रूप मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण से चिन्ह युक्त  
किंच हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुन्दीपुरी रूपी श्री के विलासि, चहूवाणों  
के शिरोमणि, सरस्वती है दाघभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवा-  
ले (पूर्ण विद्वान्) हाडा पदवीवाले महाराजाधिराज महाराचराजेंद्र श्रीरा-

न्द्रश्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञप्तगीर्वाणगिरादिषड्भाषावेशमुभूभुजङ्गका-  
 षपाऽक्षपारकर्णधारवीरमूर्ति-चकि-चरणारविन्दचञ्चरीकचारुचम-  
 त्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजमिश्रणासुकविसूर्यमल्ल  
 विहितवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वाश्रयणो रावर्तनसिंह १९२। चरित्र-  
 समयसमानाऽधिकरणाकोदन्तवर्णनं पष्ठो राशिस्समाप्तः ॥ ६ ॥

॥ समाप्तमिदं पूर्वायणम् ॥

इतिश्री नीतिपुण-बुद्धिविशारद-सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपराय  
 ण-धर्ममूर्ति-वीर-वदान्य-सोदावारदठ-चारणकुलावतंस-शाहपुराप्र-  
 तोलीपात्र-सुयोग्यपितुरऽवनाडसिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याशृङ्गरनाम  
 जनन्याः प्राप्तप्रसव-पालन-वात्ताशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितेराऽऽज्ञाकारि  
 भिराऽऽत्मजैः केसरीसिंह-किशोरसिंह-जोरावरसिंहैर्विगतभावाऽऽ  
 धिना कवि-कोविदनिजमातुलंकविराजश्यामलदासाऽऽप्तकाव्यशि-  
 क्षेण, सन्तोषाऽऽदिसहृणसपन्न-विद्वच्छिरोमणि-परमवैष्णव-रामानु  
 जमम्पदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽवहयगुरोराऽऽसादितसंस्कृ-

मासं देवकी आज्ञा से, संस्कृत आदि छः भाषा, रूपी गणिकाओं के पति का-  
 व्यरूपी समुद्र के कैवर्त (लेवटिने) वीरमूर्ति विष्णुभगवान् के चरणारविन्द के  
 अमर मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले चारण गण के सूर्य चण्डीदान के पुत्र मि-  
 श्रण (मीशण) जात्रा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचेहुए वंश भास्कर महाचम्पू के  
 पूर्वायणमें चण्डीके श्रुपति रत्नसिंहके समय के समान है अधिकार जिसका ऐसे  
 वृत्तांत के वर्णनका छठा राशि समाप्त होकर इस ग्रन्थ का पूर्वायण समाप्त हुआ ॥

श्रीगुन नीतिपुण-बुद्धिविशारद-वज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण  
 धर्ममूर्ति वीर उदार सोदा वारदठ जात्रा के चारण कुल के सुकुट शाहपुरा  
 के पालनपति सुयोग्य पिता ओनाटसिंह के पुत्र ने, पंडिता सखारवाई नाम  
 माना से पाया है जन्म पालन और बालपन का शिक्षा ग्रहण, श्रेष्ठ शिक्षा  
 पाये हुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह किशोरसिंह जोरावरसिंह से भिद्यगडे  
 है जानेवाले समय में जानेवाली मन की विन्ता जिस है, पंडित कवि अपने  
 मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्य शिक्षा जिसने, सन्तोष आदि  
 गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परम वैष्णव रामानुज मम्पदायि श्रीम-  
 त् जाचार्य सीताराम नामक गुरु से पाई है संस्कृत विद्या जिसने, प्रपंच से

तविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणात्त-शाहपुराधिपराजाधिराजो-  
पटङ्गिनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवकर-रविकुलशिरोरत्न-रघुवंशीय-गुहि-  
लोत्त-मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीश-सज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न-महा-  
राणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारि-महाराणाफतैसिंहवर्म, भा-  
नुवंशभूपणा-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप-जोधपुरेश-राजराजेश्व-  
रमहाराजयशवंतसिंहवर्मभ्यो लब्धाऽतीवदान-मान-स्वर्णरचितपाद-  
भूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथातदुत्तराधिकारितत्तुल्येप्रीतिपुरुःसरप्रति-  
पालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलपि-  
तुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्तैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवा-  
सिना कविवरद्वारहठकृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां  
पष्ठो राशिः, तत्र ग्रन्थस्येदं पूर्वायणं समाप्तिमगमत् ॥

पैदा हुए रघुवंशीय राणात्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाह-  
रसिंह वर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशीय गुहिल रा-  
जा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गु-  
णों की समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठने  
वाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकु-  
ट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराज जसवंत-  
सिंह वर्मा से पाया है दान बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण  
आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक पा-  
लना करनेवाले मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिल गया है  
पढ़ी हुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मि-  
त्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे श्रेष्ठ कविवा-  
रहठ कृष्णसिंह की रची हुई उदधिमन्थनी नाम टीका में छठा राशि समाप्त  
हुआ और इस ग्रंथ का पूर्वायण भी समाप्त हुआ ॥



॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ शत्रुशाल्य१९४१ चरित्रप्रारंभ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ औपच्छंदसिकम् ॥

\*सूचितं सक १६८८ रत्न१९२१ संभरी सो,  
कालीबाइ विहातभो तनूँकों ॥

संगहि हो भावकेसरी१९५१सो, करतभयो सिसु वै परेतकज्जै ॥१॥  
चित करि गोदातटी चिताकों, सुभट सनाभि१सगोत्र२आदि संगी॥  
तब सब विधि सद्धि दाहि ताकों, अठ्ठ८सँमा बयही लही बडाई१२  
सूनु सता१९४१कों तहाँ प्रसंसी,  
लखि भाव१६५१हिं नृप संग लैगयो हो ॥

बालवयहु अस्थिपाल बंसी, सबन धुरंधरभावमैं सराह्यो॥३॥  
सोमानी तत्थ संभरीको, केसवदास अमात्य मंत्रकर्ता ॥

नृपको सब प्रेतकर्म नीको, भाऊ१९५१करकरवाइ भैंद्र भास्यो४  
सक बसु अहि अष्टि१६८८ अंबद सोहू,  
भौ अतिमिर्त दुकाल खानि भैंको ॥

तँह केसव मंत्रि मुख्य तोहू, दलं निजमाँहिं सुकालही दिखायो॥५॥  
॥ दोहा ॥

बालक हाँयन अठ्ठ८ बय, भाऊ१९५१ कुभर अभंग ॥

सता१९४१ तनय सद्धयो सुमति, सकलकृत्य विधिसंग॥६॥

\* कहे हुए संवत् में चहुवाण रत्नसिंह ने कालीबाव नामक स्थान पर शरीर छोडा ? भावसिंह साथ था जिसने बालक अवस्था में ही २ प्रेत कार्य किया॥१॥  
बुद्धि पूर्वक गोदावरी नदी के किनारे पर चिंता करके ३ सपिंड भाई ४ वर्ष ॥ २ ॥ ५ शत्रुशाल को पुत्र प्रशंसावाला वहाँ था ॥ ३ ॥ ६ मंगल ॥ ४ ॥  
सौलह सौ अठ्ठासी के प्रमाणवाले ७ संवत् में ८ अत्यंत दुर्भिन्न हुआ ६ सय की खानि १० अपनी सेना में ॥ ५ ॥ ११ वर्ष ॥ ६ ॥

## ॥ पटपात ॥

सब सिसुहृत्थ सधाइ सचिव केसव सोमानिय ॥  
 भाव१९५१ कुम्भर\*निजभोन जबहि पठयो जो मानिय ॥  
 सब बल भटन बिसासि लाखन न दयो दुकाल लैव ॥  
 अधिक बंटी बैसु१ अन्न२ सुदित रखे सब भानव ॥  
 इहि नाम अपर२ लहि हेतु यह दलथंभन हुव जगविदित ॥  
 नृपसौहु अधिक सूबा निखिल जिहि सम्हारि लिय पुब्वजित  
 पुनि दिहिय लिखि पत्र अरज पठई केसव यह ॥  
 अधिप.रैन१९२१ गृह अधिप सता१९४१ अब रहिय सुतासह ॥  
 हमहिं सिक्ख जो होइ जाइ बुन्दी लिवाइ जिहिं ॥  
 हजरत आइ हजूर चरन चुबै अवसर इहिं ॥  
 सुनि साह गिनि सु पटुतम सचिव अवहित समुक्ति प्रबंध उत  
 दिय देस सिक्ख बुंदिय दलहिं जब वह आयउ सबनजुत ॥८॥  
 आतहि केसव एह सचिव बुन्दियपुर बलसह ॥  
 सरल सता१९४१ अवनोस मिल्यो हिय लाइ अमित मंह ॥  
 सुमति कहिय तब सचिव हृदय१९२१ बाबा हकारहुं ॥  
 त्रैपा अधिक अव.तदपि विहित सँदन मन्नहु बह ॥  
 सुनि सोहि हृदयनारायन१९२१हु जानि न निखिप जात जन ॥  
 पठई कहाइ क्यों हठ परहु नैकम मन सुत नैकसन ॥९॥  
 नृपजननी इत नियत सुनत सुत मरन असह सहि ॥

\* अपने घर (बुंदी) १ लेशमात्र २ धन ३ मनुष्य ४ कारण पाकर उस अमात्य  
 का दूसरा नाम ५ स्व ॥ ७ ॥ १ सो उस सहित अर्थात् उस शत्रुशाल सहित  
 हमको सीख होवे तो ७ अत्यन्त चतुर ८ सावधान ॥ ८ ॥ ९ सेना सहित १०  
 उत्सव से ११ बाबा हृदयनारायन को बुलाओ १२ लज्जा १३ उचित १४ सा-  
 धन करने के लिये १५ निर्लज्ज १६ नासिका, भीमसिंह श्रीपोदिया से युद्ध में  
 भागजाने के कारण हृदयनारायन को नकटा की पदवी मिली थी १७ पुत्र को  
 नासिका से अर्थात् पुत्र नासिका युक्त है और मैं नासिका हीन हूँ ॥ ९ ॥

असन रहित चउ४ अँद रंच पय करि जीवत रहि ॥  
 मरिहैं भावी समय सु तो दुव नव सौलह १६९२ सक ॥  
 पै तस खिल दुव २ पुत्र अवहि पाहुन किय अंतक ॥  
 सूच्योजु हृदयनारायन १९२।२ सु बुन्दी नायउ लज्जवस ॥  
 वपु तजत भयो छिप्रहु बहुरि तिमहि मनोहर १९२।३ अनुज तस १२०।  
 मऊनगर तव महिप सचिवबानिज केसव सुत १ ॥  
 केसव १९२।३ सुत तिम करन १९३।१ दुव रहि हाकिम पठये हुँत ॥  
 वीर अखिल बलि बुल्लि संता १९४।१ सूचिय यह सासन ॥  
 रैसा विभजि प्रभु रैन १९२।१ सवन अप्पिय प्रभुतासन ॥  
 सबही सम्हारि निजनिज सदन आवहु स्वत्व जमाइ सव ॥  
 दिखिय प्रयान वनिहैं द्रुतहि करिहो कज विलांवि कव ॥ ११ ॥  
 विभजि रैन १९२।१ नृप जवाहि दायभागिन वंसुधा दिय ॥  
 निज नैतो तव नव ९हि बंट पहिले क्रम व्याहिय ॥  
 संता १९४।१ व्याह हुव सत्त ७ इंदसल्ला १९४।२ दि अनुज इम ॥  
 महासिंह १९४।१ लग समहैं तरुन व्याहे संभव तिम ॥  
 विरचहि विवाह भावी बहुरि म्याम १९४।८ रहित अँद ८ हि सहज  
 सबकेहि भूत १ भावी २ सुनहु बदियत व्याह १ अपत्य २ रँज ॥ १२ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

भिच्छुक वधिक जोधपुर भो उदय भूप,

१ भोजन किये बिना २ वर्ष ३ थोड़े से दूध से ४ आगे आनेवाले समय में ५  
 आकी के दोनों पुत्रों को ६ सम्राज ने पाहुने किये अर्थात् मरगवे ७ नहीं  
 आया ८ क्षीप्र ही ९ उसी प्रकार उसका छोटा भाई मनोहरदास मरा ॥ १० ॥  
 १० क्षीप्र ११ क्षुभ के दंड करके १२ घर में अपना अपना अधिकार जमा कर आ-  
 यो ॥ ११ ॥ १३ विभाग करके १४ दायभाग पानेवाले भाइयों (रत्नसिंह के पुत्रों)  
 को १५ गते १६ उत्तमव संहित १७ पहिले हुए और आगे होंवेंगे सो कहते हैं सो  
 पुत्रों १८ संस्तान का चलना अर्थात् बढ़ना ॥ १२ ॥ १९ भिच्छुक लोगों को मार  
 नवाला

जाको सुत तीजो३ नृप दलपति नाम जास ॥  
 जाको बंस मालवमें पावत प्रभुत्व भई,  
 तनया कनिष्ठा स्यामकुमरि१९४१ सनामा तास ॥  
 भावसिंह१९५१ जेठो१ जनि पीछें जो सपुत्रा भई,  
 आनी सता१९४१ मानी कुमरानी यह जेठो१ आस ॥  
 छत्री यह ताहीकी बनाई छबिछाजैं भूप,  
 जामैं रवि राजें रूप बारह१२ बिभा बिभास ॥ १३ ॥  
 दुर्गदुहिता जो प्रेमकुमरि१९४१ सनाम दूजी२,  
 चंद्राउंति व्याही जाइ रामपुर सत्रुशाल१९४१ ॥  
 भाऊ१९५१ सौं कनिष्ठ सुत दूजो२ भीम१९५१ ताकै भयो ॥  
 द्वैरही पति पहिलैं मरी ए जरी द्वैरही बाल ॥  
 तेजसुत सिंहकी सुता सो तीजो३ सीसोदनी ॥  
 व्याहो राजकुमरि१९४१ प्रतापगढ लग्नकाल ॥  
 कर्मवती१९५१ नाम एक१ कन्या भई ताकै पीछें,  
 व्याहो जसवंत जाहि जोधपुरको नृपाल ॥ १४ ॥  
 चोथी४ नित्यकुमरि१९४१ नरुकी चंद्रभालुसुता,  
 व्याही जो कँकोर ताकै तीजो३ तनै भगवंत१९५३ ॥  
 सूरजकुमरि१९४१ सुभकुमरि१९४१ दुर्नाम सो पै,  
 सोलंखिनी पंचमी५ बिबाहो कुमरानी कंत ॥  
 नाहरखाँ नैनपुरवारैकोँ स्वकन्या यह,  
 दुर्गापुर आइकैं सता१९४१ कोँ दई बिलसंत ॥  
 अद्वितीय याहीको पतिव्रत जगत जान्यौं,  
 याहीपै सता१९४१ की कृपा निवही अर्धधियंत ॥ १५ ॥  
 आनंदकुमरि१९४१ नाम छही६ कुमरानी अैसें,

१ मालवा देश में राज्य करता है २ दुई श्वारह स्तुति हैं ३ कान्ति का विशेष प्रकार ॥ १३ ॥ ४ दुर्गदास की पुत्री व छोटा ॥ १४ ॥ ५ ककोड़ ६ प्रिय अधवा पति २ नैणवा १० मृत्यु पर्यन्त ॥ १५ ॥

तुलसीबहादुरकी कन्या सो करोली जाइ ॥

व्याहो सत्रुसाल १९४१ ताके प्रकटे अपर्य पंच५,

कमनकुमारि १९५२ जेठी १ कन्या तिनमें गिनाइ ॥

रानजगतेसके कुमार जेठे राजसिंह,

पीछें यह कन्याहू विवाही बिधि लग्न पाइ ॥

तीन ३ सुत द्वै २ सुता सता १९४१ नैं ए कुमारपन,

पाये तोके पंच५हि जे भूत १ अबभावी भाइ ॥ १६ ॥

वाही जादवी ६ कै सुत कन्यासो अनुज च्यारि ४,

भारत १९५४ स भूपति १९५५ रु भूपालक १६५६ नाम तीन ३।

चोथो ४ ईश्वरीहरि १९५७ कनी पुनि समर जेठी १,

पंच५ही प्रजा ए छठी ६ पतनी प्रसव लीन ॥

रानी जा कमाउत चालुक्य हरिकर्णसुता,

नाम हरकुमारि १९४७ विवाहि दुलही नवीन ॥

आनी सप्तमी ७ यह सता १९४१ नैं कुमरानी जाकै,

कन्या तीन ३ जानी भई मध्या २ तिनमें बचीन ॥ १७ ॥

तीन ३ नमें जेठी १ रामकुमारि १९५३ कनी सो पीछें,

बंधूगढ बाघेले अनोपकाँ दई विवाहि ॥

कल्याणादिकुमारि १९५४ मरी सिसु बय द्वितीय २,

तीजी ३ गंगा १९५५ पीछें रानाँ जयसिंहकाँ विवाहि ॥

जाके पुत्र रानाँ अमरेस भो उदंत जाको,

भूप बुधसिंह १९४१ के चरित्रमें उदित आहि ॥

सात ७ कुमरानी ए कुमार सता १९४१ आनी आनि,

है ब नव ९ रानी सुनिलेहु पै प्रसंगसाहि ॥ १८ ॥

दिल्लीहोइ आतहि विवाही जगतेसरान,

अप्प अनुजा जो चंद्रकुमारि १९४८ तदीयनाभ ॥

ईडरअधीस पुंज कर्मध्वजपुत्री फूल,  
कुमरि१९४।९ विवाही रानी नवमी९सु गुनग्राम ॥  
कल्याणादिकुमरि१९४।१० कबंध रामकन्या दसमी१०,  
विवाही भयो गोठराही उपयाम ॥

कन्याएक तामैं लाडकुमरि१९५।६ भई सो मरी,  
सिसुहि संता१९४।१२ के एहि तेरह१३ प्रजा ललाम ॥ १९ ॥  
राजकुमरि१९४।११ सौ फूलकुमरि१९४।११ दुर्नामवारी,  
एगारही११ रानी व्याही मल्लनासी रठारि ॥

लहोरी ईडरेची व्याही बारही१२ बहोरि जांको,  
लच्छी१९४।१२ नाम रानी नारायनकी सुता सो सूरि ॥

तेरही१३ प्रमारि रानी केसवसुता सो राम,  
कुमरि१९४।१३ सनाम व्याही कामना कविन पूरि ॥

विठ्ठलकेभात सिवरामकीसुता त्यों गोरि,  
व्याही पन्नकुमरि१९४।१४ चउदही१४ दे भर्म भूरि ॥ २० ॥

पंदही१५ विवाही रयासकुमरि१९४।१५ सनाम मेघ,  
चुंढाउतपुती पुरु वेद्यम सुता१९४।१ पधारि ॥

सदजकुमारि१९४।१६ सदाकुमरि१९४।१६ दुर्नाम कछी,  
नीवरी१कै गर्गशटर सोलह१६ विवाही नारि ॥

मानकीसुता सौ एही सोलह१६ संता१९४।१नैं बरी,  
भूत१ संत७ भावी२ नव३ लीजिये श्रवन धारि ॥

तेरह१३ अपत्य भये तिनमें प्रथम पंच५,

भूत१ अष्ट८ भावी पट्ट लौनसमे बीच पारि ॥ २१ ॥

भाऊ१९५।१ भीमसिंह१९५।२ भगवंतसिंह१९५।३ भारत१९५।४ रया,  
भूपति१९५।५ भूपाल१९५।६ ईश्वरीहरि१९५।७ तनय सात ॥

१ पुंजा नामक राठोड़ का पुत्री २ गुर्गा का समूह ३ पुर का नाम है ४ विवाह  
५ सन्तान ६ सुन्दर ॥ १६ ॥ ७ छोटी ८ यष्टन स्वर्ग देकर ॥ २० ॥ ९ पुर का नाम  
है ॥ २१ ॥ २२ ॥

तीन३हि कनिष्ठ मरे बालहि रु जेठे च्यारि४,  
 सप्रज भये पै रह्यो भीम१९५।२हीको कुल ख्याता॥  
 कन्या च्यारि४ कथित बिबाही सिसु द्वै२ ही मरी,  
 चौथी४ अरु छट्ठी६ बहुतासौं इहाँ भावी बात ॥  
 भ्राता अष्ट८इंद्रसल्ल१९४।२ आदिक सता१९४।१के व्याहे,  
 भूत१ भावी२ ते अब प्रजासहित भाखेजांत ॥२२॥  
 दूजे२ निजनाती इंद्रसाल१९४।२हिं रतन१९२।१दये,  
 मुख्य अनघोरा१ टीपरी२ त्यों कर्कशोद२ थान ॥  
 याके भूत१ भावी२ सब व्याह दस१० जानौं पुत्र,  
 बारह१२ कनी चउ४ भये पुनि समैप्रमान ॥  
 सीसोदनी जेठी१ कुमरानी नगराजसुता,  
 नाम रूपकुमरि१९४।१ बिबाही सो सहबिधान ॥  
 भानकुमरि१९५।१ त्यों चंद्रकुमरि१९५।२ सुता द्वै२ ताकै,  
 सबनसौं जेठी सूचियत हे सुजान ॥२३॥  
 दूजी२ तिम चालुक कमाउत कनक कनी,  
 नाम हरिकुमरि१९४।२ बिबाही इंद्रसल्ल१९४।२ वीर ॥  
 तीन३ सुत जेठो१ गजसिंह१९५।१ रु अमान१९५।६ छट्ठी६,  
 अष्टम८ गुमान१९५।८ ए भये तस गुनगहीर ॥  
 बेनीदासपुत्री उनियाराकी नरुकी दीप  
 कुमरि१९४।३ सु तीजी३ जाकै नवमौं९ करन धीर ॥  
 नाथाउति चौथी४ कृष्णकुमरि१९४।४ दयालुसुता,  
 दूजो२ कृष्ण१९५।२ तीजो३ रनछोर१९५।३ सुत जाके सीर ॥२४॥  
 रठूरि जुन्याकी कल्यानरायपुत्री,  
 पंचमी५ सो स्यामकुमरि१९४।५ बहोरि वरी इंद्रसल्ल१९४।२ ॥

द्वै२ही सुत ताकै पुरुषोत्तम१६५।४ चतुर्थ४,  
 अनंदसिंह१९५।५ पंचम ए प्रकटे प्रसूतिकाल ॥  
 सेखाउति छट्ठी६ इंद्रकुमारि१९४।६ बिहारीसुता,  
 सप्तम७कुसलसिंह१९५।७इक१हि तदीय बाल ॥  
 राजाउति सप्तमी७किसोरकुमरी१९४।७ त्यों पुत्र,  
 बारहम१२रामसिंह१९५।१२इक१हि लिखायो भाल ॥ २५ ॥  
 सुरतकुमारि१९४।८ नामं त्योंही निधिपालसुता,  
 जादवी बिवाहो व्याह अष्टम८ करोलीदंग ॥  
 जादव बहादुर सुता जसकुमारि१९४।९ व्याह,  
 नव९ बिवाहो सर मथुरा अतिउमंग ॥  
 द्वै२सुत रु द्वै२ सुता अपत्य चउ४ ताकै भये,  
 नाहर१९५।१०दसम१०एगारहम११पहार१९५।११ संग ॥  
 आनंदकुमारि१९५।३तीजी३चोथी४जमुना१९५।४त्यों भये,  
 ए चउ४अपत्य ताकै भाखे नाँहि क्रमभंग ॥ २६ ॥  
 नाम रुक्मकुमारि१९४।१०बिवाहो जो दसम१०व्याह,  
 राजाउति सोह देवकरन सुता सुजान ॥  
 इंद्रसाल१९४।२ए दस१० बिवाहो तियमाँहिँ बधू,  
 अप्रज उभै२रु भई अष्ट८ हि प्रसूतिमान ॥  
 सोलह१६अपत्यनमै आदि१।२अंत१५।१६द्वै२द्वै२कनी,  
 केती१ऊठ२केति१न अनूढपन छोरयो प्रान ॥  
 दूजो१कृष्ण१९५।२चोथो४पुरुषोत्तम१९५।४नवम९कर्ण१९५।९,  
 नाहर१९५।१०दसम१०चवारि४ अप्रज सुतन थान ॥ २७ ॥  
 सेस गजसिंह१९५।१ रनछोर१६५।३ रु अनंदसिंह१९५।५ ॥  
 छट्ठी६ अमानसिंह१९५।६सु सप्तम७ कुसल१९५।७नाम ॥  
 अष्टम८ गुमान१९५।८एगारहम११ पहारसिंह१९५।११,



सबसौ अनुज रह्यो वारहमं१२पुत्र राम१९५॥१२ ॥  
 चाले इन अष्टन के अन्वय बहुरि भावी,  
 संकुचन१ बर्द्धन२वनेँ सो विधि तल काम ॥  
 बाजे इन्हवँसी इंद्रसालउत्त२९॥२५ हड्ड६१नमै,  
 एकऊनतीसम२९भिंदा सो लखिये ललाम ॥ २८ ॥  
 पीछै इंद्रसाल१९४२ रह्यो भीर दथी ग्राम ठाम,  
 इंद्रगढ द्रंग निजनामसौँ नयो बसाइ ॥  
 याको लघु नाती अमरेश१९६॥२भयो भावी जानै,  
 गोरै गंजि कीनो गढ खातोली अमल जाइ ॥  
 इंद्रगढ१ खातोली२ उभै२ ही मुख्यथान यातै,  
 इंद्रसाल१९४२अन्वयमै सबसौँ जुदे जनाइ ॥  
 तीजे३निजनाती बैरीसाल१९४३हिँ अधिप रैन१६२१,  
 बलवैनि१अंबथनि२मुख्य दिय भू बटाइ ॥ २९ ॥  
 याके भूत१भावी२नव६व्याह तिनमाँहिँ बधू,  
 तीन३भई सप्रज छ६ अप्रज नियति जोर ॥  
 जेठा१तँहँ केसरकुमारि१९४१बलभद्रसुता,  
 भोजाउति चालुकीवरी दुलह बंधि मोरै ॥  
 दूजी२सारदूलसुता चालुकी दयालुकुमारि१६४२,  
 भो गोविंद१९५१जेठा१ सुत जाके तनु आयु दोर ॥  
 चंद्राउति तीजी३ चित्रकुमारि१९४३ अचलसुता,  
 रड्डारि चोथो४हरकुमारि१९४४ सुनौँ ब ओर ॥ ३० ॥  
 पंचम५ विबाह अचलेससुता सीसोदनी सो,  
 अनोपकुमारि१९४५सनाम बरी बैरीसाल१६४३ ॥  
 जाके चंद्रकुमारि१९५१सुता सहित दूजो२सुत,

मानी कुलतानी भयो नामकोरि जो गोपाल १९५२ ॥

छट्ठी ६ स्यामकुमरि १९४१ नरुकी जैतकन्या बरी,  
सीसोदनी सत्यभामा १९४१ सप्तमी ७ विहित काल ॥

उदलजा अष्टमी ८ मघाकुमरि १९४१ चंडाउति,  
नवमी ९ प्रमारी बीरकुमरि १९४१ मराली चाल ॥ ३१ ॥

राघवसुता सो जाके तनया मघाकुमरि १९५२,  
व्याह नव ९ तोहू तैं तीन ३ कै प्रजा ए च्यारि ४ ॥

जेठो १ सुत द्वै २ सुता तऊ त्रय ३ सिमहि मरे,  
सो गोपालसिंह १९५२ रह्यो एक १ ही कुलप्रसारि ॥

बैरीसाल उत्त ३० १२६ ताके कुलके कहाये भयो,  
हड्ड १ नमैं भेद यह तीस ३० प्रमान धारि ॥

स्वामीद्रोह पापकरि विपदाविगारी ऐसी,  
राजसिंह १९४१ संतति सुनौ अब लुपनहारि ॥ ३२ ॥

पाटव प्रगल्भ जानि सोदर सता १९४१ को याहि,  
रैन १९२१ भूप बखस्यो हरीगढ बिदित धाम ॥

व्याहयो पंच ५ व्याह यह तिनमैं सदाकुमरि १९४१ दूजो २,  
कूरमीकै भो सुत त्रय ३ सुनौ व नाम ॥

जेठो १ बिष्णुसिंह १९५१ मधुसिंह १९५२ दूजो २ तीजो ३ पत्ता १९५३,  
अप्रज मरयो सु ३ द्वै २ हि जेठे रहे कुलकाम ॥

पुत्र बिष्णुसिंह १९५१ कै भो पापी बलभद्र १९६१ अनिरुद्ध १९६१,  
के समै जो हाइ स्वामीसौं मुरयो हराम ॥ ३३ ॥

पुत्र मधुसिंह १९५२ कै भो अनुपमसिंह १९६१ जोही,  
खैबरके खेत पश्यो भूप बुधसिंह १९७१ भीर ॥

ताकै नाती तीन ३ हि बखामैं प्रभुसंग रहे,

१ कुल का विस्तार करनेवाली २ उदयसिंह की पुत्री ३ हंस के समान गति वाली ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ४ चतुर ५ बुद्धिमान् ६ बिना संतान मरा ॥ ३३ ॥ ७ अफगानिस्तान में प्रवेश करने के हिमालय पर्वत के घाटे के युद्ध में ८ आपत्ति में

दोल १९७।१ सुत नाहिर १९८।१ उमेद १९८।२ खुसाल १९८।३ वीर ॥

मध्यम उमेद १९८।२ यह भूपति उमेद १९८।५ संग,

बुन्दी पहिले रन रह्यो त्यों लही गोलापीर ॥

इनको रह्यो न वंस संख्यामैं लयो न यातैं,

कहिहु दिखायो कछु कलना समास सीर ॥३४॥

पंचम ५ पैउत मुहुकम १९४।५ को मदिप रैन १९२।१,

दुगांपुरी दीनी जो बै जाहिर दुधारी दंग ॥

सोहू गिनि अल्प लोभी सेइकैं सुजा ४०।३ को आयो,

ताहि तब दीनों सता १९४।१ करउर ताकि तंग ॥

याके भूत १ भावी २ सप्त ७ ज्याह पै जनी चउ ४मैं,

वारह १२ अपत्य सुत अठ ८ चउ ४ कन्या संग ॥

पुत्री दुव २ व्याही त्यों अरी दुव २ अनूठ ताही,

पुत्र ८ नमैं प्रसरे छ ६ के कुल ह जितजंग ॥३५॥

प्रथम विवाह व्याहयो मुहुकम १९४।५ सिंह सुता,

पूर्णमति १९४।१ नाम उनियारेकी नरूकी जाहि ॥

जोरावर १९५।१ जेठो १ सुत पंचम ५ कनकसिंह १९५।५,

छठो ६ सगतेस १९५।६ इन तीन ३ न प्रसू सो आहि ॥

नाथाउल चालुक दयालुदासपुत्री नाम,

कल्याणदिकुमरि १९४।२ लई सो वर दूजी २ व्याहि ॥

सप्तम ७ तनूज जगमोहन १९५।७ रु कन्या दोइ,

प्रकटी त्रयी ३ यह तदीय गर्भ अवगाहि ॥३६॥

इंद्रसाल १९४।२ साली नाथकुमरि १९४।३ सनाम बरी,

तीजे ३ व्याह चालुक कमाउत कनकगेह ॥

चौथे ४ व्याह अंगजा कबंधज अनंदवारी,

१ एक प्रकार की पेट की पीड़ा ॥ ३४ ॥ २ पोता ३ अब ४ युद्ध जीतनेवाले यह रामसिंह का विशेषण है ॥ ३५ ॥ ५ इन तीनों की माता है ६ पुत्र ७ व्याह लेकर ॥ ३६ ॥

कर्मवति१९४१४ नाम परन्यौँ तिय नियतनेह ॥

गोवर्द्धन कूरमकनी त्यों व्याह पंचम५ राजाउति,

व्याहयो फूलकुमरि१९४१५ सुलग्न लेह ॥

तनय गरीब१९५१२ दूजो२ तीजो३ जसवंत१९५१३ कृष्णा१९५१८,

अष्टम८ रु तीजी३ सुता च्यारि४ नकी माता एह ॥३७॥

पट्टिमादिदेवी१९४१६ नाम रानाउति छट्ठी६ बरी,

तनय कल्यान१९५१४ चौथो४ चौथी४ सत्यभामा१९५१४ तासा

सप्तमी७ बिवाही लाडकुमरि१९४१७ कबंधकन्या,

एह७ अरु तीजी३ चौथी४ ए त्रय३ अतोक आस ॥

कन्या लाडकुमरि१९५११ निधाना१९५१२ गतनामा १९५१३ तीजी३,

पुत्रनमैं द्वै२ अतोक कृष्णा१९५१८ रु गरीबदास१९५१२ ॥

बंस खट्ठके जे बजे मुहुकमसिंहउत्त३१२७,

भेद इकंतीसम३१ सो हड्ड६१ नमैं धारैं भांस ॥३८॥

रैन१९२११ नृप छट्ठी६ स्वीय नाती जो उदयसिंह१९४१६,

ताकैंह विवाहिदयो गोहट्टक१ आदि थान ॥

संतति भई न तास सोही लै निदान ताके,

व्याहहु कहे न जानि व्यर्थ बनतो बितान ॥

नाती सूर१९४१७ सप्तम७ को लोहि हित नगर दीनों,

दीनों स्याम१९४१८ अष्टम८ को थानथान जलदान ॥

सूर१९४१७ के सुता इक१ सो बिभोली बिवाही रहे,

असुत उभै२ ही यों न भाखे इन्ह व्याह मान ॥३९॥

नवम९ पउत महासिंह१९४१९ हिं पितामहनैं,

जजाउर दीनों हरपालपोते५१२ पच्छे पारि ॥

व्याहयो भूत१ भावी२ व्याह अष्टम८ यहैहु तहाँ,

१ निश्चय ही स्नेह करके ॥ ३७ ॥ २ बिना चालक सुई अर्थात् इसके सन्तान न  
हो दुआ ३ क्रान्ति ॥ ३८ ॥ ४ पोता ५ कारण ६ विस्तार ॥ ३९ ॥

सस्सू१६३।९ कुल१ नाम२ नाथकुमारि१६४।१ सु जेठो१ नारि ॥  
 चंद्राउति दूजी२ व्याहो बदनकुमारि१६४।२ जामैं,  
 तीजो३ सुत लालसिंह१९५।३ जनम्यो रनजितारि ॥  
 भोजाउत उदय चुलुक्यसुता तीजी३ जिहिं,  
 बदनकुमारि१९४।३ तोक प्रचप जनै गर्भ धारि ॥४०॥  
 जेठो१ मान१९५।१ चौथो४ जय१९५।४ द्वै२ सुत त्रि३ कन्या तैंहैं,  
 मान१ कृष्ण२ अजब३ कुमारि१९५।१-१९५।२-१९५।३ क्र-  
 मतैं ए नाम ॥

रठ्ठरी१९४।४ चौथी४ गोरि पंचमी५ महाकुमारि१९४।५,  
 हठीसिंह१९५।५ पंचम५ तनै जिहिं जठर जामैं ॥

छठी६ नाथकुमारि१९४।६ नरुकी जाकै चौथी४ सुता,  
 अन्वयकुमारि१९५।४ असैं संप्रम७हूँ उपयाम ॥

कुंपाउति नाम रूपकुमारि१९४।७ बरी सो सुता,  
 स्यामवारी जानै प्रजा जुगन्हि लही ललाम ॥४१॥

क्रमतैं द्वितीय२ सुत ताकै भौ कनकसिंह१९५।२,  
 पंचमी५ सुता सो ब्रजकुमारि१९५।५ बखानीजात ॥

अष्टमी८ अचलसुता कुंपाउतिही बरी सु,  
 अखयकुमारि१९४।८ जरिहैं जो पति के निपात ॥

एह८ अरु जेठो१ चौथी४ अप्रज बधू ए तीन३,  
 पंचकै प्रजा दस१० सुता५ सुत५ सम गिनात ॥

मानकुमरी१९५।१ मुख सुता त्रय३ वदत व्याही कहत,  
 कितेक व्याही पंच५हि बिदित बात ॥४२॥

कनक१९५।२ द्वितीय२ लालसिंह१९५।३ सु तृतीय३ सुत,  
 अप्रज उमैरही ए सता१९४।१कै संग आये काम ॥

मान १९५१ जयसिंह १९५१४ हठीसिंह १९५५ इन तीन इनके  
वंस जे बढे ते महासिंह उत्त ३१२८ धारै नाम ॥

बत्तीसम ३२ भेद प्रकटानों एह हड्ड ६१ नमै,  
पैतीस ३५ हि हड्ड ६१ नके हेलि अधिप राम २०३१४ ॥

केसरी १९४१० कनक १९४११ नगराज १९४१२ रामसिंह  
१९४१३ च्यारि ४,

गोपीनाथ १९३१२ तनय मरे सिसु बिबिहि बाम ॥ ४३ ॥

पट्टिमादिदेवी १९३५ राजकुमारि १९३५ दुर्नामवारी,  
पंचमी ५ जो व्याही प्रिया पट्टनि नगर जाइ ॥

ताही कुमरानी तोमरीमै सुत स्याम १९४८,  
तनया सदाकुमारि १९४१ नाम पाइ ॥

प्रकटभई सो बयपातहि पितामहनै,  
रान जगतेसकौ प्रथासौ दई परिनाइ ॥

असै गोपीनाथ १९३१ के तनूज १ तनूजा २ ए दस १०,  
व्याहे रैन १९२१ सत्तन ७ को बंटहु दये बटाइ ॥ ४४ ॥

रैन १९२१ जब बुंदीसुत तीन इन विभाग दये,  
असै तबही दै सत्त ७ नत्तिन विभाग एस ॥

पीछै जाइ दक्खिन जई हू जुग २ अब्दपीछै,  
कालीवाइ ग्रामपरयो गोदाके तटीप्रदेस ॥

उचित काइ अहुहायन बै भाऊ १९५१ हाथ,  
केसव सचिव न दिखायो हौं दुकाललेस ॥

साह सिक्ख पाइ दलथंभन कहाइ पीछै,

बुंदी आइ कीनों सज्ज संक्रम सता १९४१ नरेस ॥ ४५ ॥

बुंदी दल आउतही हाकिम अपरं जात,  
दक्खिनके मिच्छ १ मरहठ २ पुनि पैनै होइ ॥

खुरमसे ३९।२ खेड़ायत अबहि वनै ए ताके,  
 थान मेरुमालाविच लोदीखाँ जिहाँन १ फोड़ ॥  
 दिल्लीपति लोदीपुबहलोल २७ पहिलैं भों ताको,  
 इब्राहीम २९ नातों हन्यौ बाबर ३० प्रमादी जोड़ ॥  
 विक्रमके साक ससि अठ सर भू १५८१ में लई,  
 मुगलन दिल्ली खरे खगगन खलन खोड़ ॥ ४६ ॥  
 राज्य करि पीढी तीन ३ तबके निरंत भये,  
 दिल्लीतैं पठान अफगानलोदी सत्वहीन ॥  
 ओरओर छाये मुगलन ६ के प्रतापआगैं,  
 खिनखिन खीन भूति दिनदिन भाँसे दीन ॥  
 नीतिअंध खुरम ३९।२ पितासों प्रतिकूल भयो,  
 होत साह सोही राह सोहीगहि अंध तीन ॥  
 लोदीखाँ जिहाँन १ सुत च्यारि ४ न सहित सज्यो,  
 दक्खिन सहायसों पंताकिनी प्रकर घीन ॥ ४७ ॥  
 जवन कढे जे नृप रैन १९२।१ तैं करार करि,  
 तेहू ततकाल बल बुंदीकों गयो बिचारि ॥  
 लोभ लागि के भये सहायक पठान संग,  
 के रहे निकेत मूलमंत्र दै रचन रारि ॥  
 ओरहु अनेक मरहठ मुख तैसी ताकि,  
 पुँब उंपकार अपनैको मन जोर पारि ॥  
 ठाँठाँ लूटि दावन लगे यौ मुगलेस थानाँ,  
 धोरीखाँ जिहाँन अफगानकों निमित्त धारि ॥ ४८ ॥  
 च्यारि ४ हि अनी करि पठानके सुतहु च्यारि ४,

१ युद्ध करनेवाला २ मेरु माला यह पृथ्वी का विशेषण है ३ जिहाँनखाँ लोदी  
 ॥ ४६ ॥ ४ नियुक्त ५ पराक्रम हीन ६ क्षण क्षण में विभूति का नाश होकर ७  
 दीखे ८ विरुद्ध ९ मार्ग १० सेना और परगह ११ पुष्ट ॥ ४७ ॥ १२ कितने ही  
 घर में रहे १३ आदि १४ पहला उपकार देखकर १५ ठाम ठाम (जगह जगह)  
 १६ कारण ॥ ४८ ॥

जनकनिदेस<sup>१</sup> दक्खिनीन उपदेस<sup>२</sup> जोर ॥  
 स्वामि होनलागे बुंरहानपुर<sup>३</sup> सूवा सीम,  
 वारिधिमें बाँड़वलो अटिअटि ओरओर ॥  
 भिन्नभिन्न भ्राता जे मचाइ भय मग्गमग्ग,  
 अग्गअग्ग अवधि अवंतीरलो रचाइ रोरे ॥  
 डमर<sup>४</sup> डकेती<sup>५</sup> में पुरोगति परतभये,  
 कीलित करतभये दक्खिनदिसाकी कौर ॥ ४९ ॥  
 समय जिहानगीर<sup>६</sup> ३८।<sup>७</sup> केहुसों बिसेस बढि,  
 दावा करि दिल्लीपै यों दक्खिनीन डारयो दोहै ॥  
 आसफ<sup>८</sup> अमात्य दंडनायक महावतरसे,  
 सुनिसुनि साहजहाँ<sup>९</sup> ३९।<sup>१०</sup> सहित मिलामें मोह ॥  
 केही प्रतिमल्ल भट भेजे सुर सज्जकरि,  
 लोहँचाखिंचाखि ५ सुर पै न फल दीनो लोह ॥  
 बुंदीपति सो सुनि सता<sup>११</sup> १९४।<sup>१२</sup> हु इत सेना सजि,  
 तार्विन बिचारयो दिल्लीजावन जुराइ जोहै ॥ ५० ॥  
 केसव<sup>१३</sup> अमात्य भ्राता इंद्रसाल<sup>१४</sup> १९४।<sup>१५</sup> बैरीसाल<sup>१६</sup> १९४।<sup>१७</sup>  
 काका जिम जैत<sup>१८</sup> १९३।<sup>१९</sup> सवला<sup>२०</sup> १९३।<sup>२१</sup> दिक् लौ संग एस ॥  
 राजसिंह<sup>२२</sup> १९४।<sup>२३</sup> सुहुकम<sup>२४</sup> १९४।<sup>२५</sup> उदय<sup>२६</sup> १९४।<sup>२७</sup> मूर<sup>२८</sup> १९४।<sup>२९</sup> आदि,  
 देस निज भ्राता राखे अनुज बली बिसेस ॥  
 भाभव<sup>३०</sup> १९३।<sup>३१</sup> बुलायो जो न आयो कहुव्यो<sup>३२</sup> ज करि,  
 भिन्नपन भायो सो बिहँयो तब संभरेस ॥  
 सवल सुहायो रजोगुन छक छायो अँसैं,

<sup>१</sup> समुद्र में <sup>२</sup> बड़वाग्नि के सदृश <sup>३</sup> भय, उपद्रव और <sup>४</sup> डकैती में अग्रणी हो-  
 कर दक्षिण दिशा को गयी ॥ ४९ ॥ <sup>५</sup> कैलाव वा द्रोह <sup>६</sup> सेनापति <sup>७</sup> मुका-  
 बिला करनेवाले <sup>८</sup> शत्रुओं के शस्त्र चक्र चक्र कर पीछे मुड़े परन्तु इनके शस्त्रों  
 ने फल नहीं दिया <sup>९</sup> उस समय <sup>१०</sup> योद्धा इकट्ठे करके ॥ ५० ॥ <sup>११</sup> रक्षा करने  
 वाले <sup>१२</sup> मिस करके <sup>१३</sup> छोड़ा अर्थात् बुन्दी के राजा ने उसका त्याग किया



आयो आप दिल्ली सता १९४१ बुंदीपुरी बंसुधेत ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

इम पैतो दिल्लीय असह, सता १९४१ बहुप्रद १ सूर २ ॥

सहि उचित मिलि साहसन, पायो आदर पूर ॥ ५२ ॥

द्विरद जहाँगीर ३८१ हि दयो, पहिलै स्तन १९२१ नृपाल ॥

सिवप्रसाद दिय साह सुहि, हथी हड्ड ६१ हि हाल ॥ ५३ ॥

अर्बादिक इतरहु उचित, नृपहि अपि जवनेस ॥

सादर तँ रक्खिय सता १९४१, वसु जल बादर बेस ॥ ५४ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशाल्यचरिते अवाप्तराज्यशत्रुशाल्यस्य दक्षिणदेशाद्बुन्द्या  
गमन १, ससहोदरशत्रुशाल्यपाणिपीडनपुरःसरसन्ततिकथन २,  
प्राप्तबुन्दीराज्यदिल्लीगतशत्रुशाल्यस्य यवनेशपारितोषिकप्रापणं प्रथ-  
मो मयूखः ॥ १ ॥

आदितस्त्रयोदशोत्तरदिशततमो मयूखः ॥ २१३ ॥

प्रायोन्नजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पुन्बहि अष्टम ८ रैन १९२१ पहु, सता १९४१ कुमर संबंध ॥

कियउ उदैपुर प्रीति करि, समकुल ख्यापितसंध ॥ १ ॥

बुन्दीसन दिल्ली बहुरि, चढत सता १९४१ नृप चाहि ॥

तवहि कहाई रान तुम, बहिनी जाहुं निवाहि ॥ २ ॥

१ भूपति ॥ ५१ ॥ २ प्राप्त हुआ ३ दानी ॥ ५२ ॥ ४ हाथी ॥ ५ घोड़ा आ-  
दि ६ धन रूपी जल से ७ बादल (मेघ) से विशेष होकर ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल का राजा होकर दक्षिण से बुन्दी आना ( श  
त्रुशाल और शत्रुशाल के भाइयों के विवाह और सन्तान आदि का कथन २  
बुन्दी का राज्य पाकर दिल्ली गये हुए शत्रुशाल का बादशाह से खिलत पाने  
का प्रथम मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१३ मयूख हुए ॥

८ प्रभु रत्नसिंह ने ९ प्रशिद्ध प्रतिज्ञावाले ॥ १ ॥ २ ॥

भोजि स्वजन बुंदी भनंत, त्वरा रान जगतेस ॥

कहिय सता१९४११ दिल्ली क्रमन, आगत पहिलैं एस ॥ ३ ॥

तातैं मिलि जवनेस तकैं, समय विधेय सधाइ ॥

व्याहन ओहों तुम बहिनि, अर पछो मैं आइ ॥ ४ ॥

पत्तो इम कहि बहू६१ पहु, दिल्लीनामक द्रंग ॥

लंचा१ दै बखसीस२ लिय, सब संमुचित हित संग ॥ ५ ॥

दुईस दक्खिन देसकी, पत्ती तबहु पुकार ॥

लोदीखानं जिहान लँघु, हुकम चलावनहार ॥ ६ ॥

साह कहिय तब संभरहिं, जाहु सता१९४११ बरजोर ॥

जैनपद दक्खिन करहु जय, इहिं खिन मुख्य न ओर ॥ ७ ॥

सासन यह केसव१सचिव, जैत१९३११ पितृव्यक जानि ॥

संसकैं करि आसफ सचिव, आरजकराई आनि ॥ ८ ॥

॥ राजसवतिका ॥

जुरि दलथंभैन१ जैत१२६१२न जब आसफखान प्रबोधि बजोर ॥

इम अवसरं विव्रति करवाई संगहि ठानि महावत सीर ॥

नत्तीको संबंध रत्न१९२११ नृष उदयनगर पुर्वाहि कृत आस ॥

काल होत चिर रान त्वरा किय जानहु निकट लग्न अवजास

यातैं भूप व्याहि हुँत आवहिं सब निदेस सदाहि धरि सीस ॥

दुव२हिं अप्प इम सिक्ख दिवावहु मास कलुक गृह जान महीस ॥

आसफ१सचिव चमूप महावत २ जंषियं इम दोउ२न तब जाइ ॥

हजरत सिक्ख सता१९४११कैं व्याहन पहिलैं देहु लग्न डिग पाइ१०

१ शीघ्रता २ शत्रुशाल ने कहा कि दिल्ली का जाना पहिले आगया है इसका  
रण ॥ ३ ॥ ३ पर्यन्त; अथवा देखकर ४ उचित ५ शीघ्र ॥ ४ ॥ ६ नजराना ७  
वचिन ॥ ४ ॥ ८ शीघ्र ॥ ११ चहुवाण को १० देश ११ इस समय ॥ ७ ॥ १२ आसफखान  
से मिल कर; अथवा वाकफ करके ॥ ८ ॥ १३ केशवदास सोमानी का उपपद  
है १४ समय पर १५ महावतवां का सामिल करके आरज कराई कि रत्नसिंह  
ने पोते का १६ है १७ शीघ्रतर ॥ २ ॥ १८ शीघ्र १९ कहा २० शत्रुशाल को ॥ १० ॥

लोदियोंसे बुद्धको शत्रुशाल का सजना]सप्तमराशि-द्वितीयमयूख (२५७१)

हैं किन और लग्न इहिं\*हायन साह कहिय आनहु तिन्ह सुद्धि ॥  
विन्नति किय गणकन इहिं बच्छर व्याहन लग्न चतुष्टय ४ बुद्धि ॥  
अकिखय साह सु सुनि द्रुतआइ रु विरचहु दूजे २ लग्न विवाह ॥  
खानजिहांन जित्ति पहिलैं खल नृपहिं विधेय निदेस निवाह ॥ ११ ॥  
तोपन बिनु सब लूट लहहु तुम तनहु नवै जस पुहवि प्रतान ॥  
आतहिबेर सिक्ख हम अप्पाहिं व्याह भूपसदहु सविधान ॥  
केसव १ जैत २ हुकम सो स्वीकरि नृपहिं निवेदि चित्त दिय नीति ॥  
सुनि यह सुनुसल्ल १९४१ पहु सजिय बल निज वीर १ बारन २ रु बीति  
बुल्लि मऊ सन करन १९३१ पितृव्यक भोज १९१२ तनय केसव  
१९२३ सुत भीर ॥

बुल्लिय तिम हरिसिंह १९३१ पितृव्यक बुंदीसन इतरहु ए वीर ॥  
बुद्धिचंद्र १९२३ सुत कृष्ण १९३१ समरबुध तिम दयालु १९०१ सुत  
भूपति १९१२ तत्थ ॥

पर दयालु १९२१ बलवंत १९११ तनै पुनि सुर्जन १९०१ अनुज राम  
१८९३ कुल सत्थ ॥ १३ ॥

सुर्जन १८८१ अनुज भीम १८८२ कुलउद्रव सूर सनाभि हठी  
१९२१ रन संत ॥

पूरन १८८३ हर हम्मीर १९११ वंस पुनि जो सुत स्याम १९३१ पिता  
जसवंत १९२१ ॥

भजनेरी पति सारन १८६१ कुलभव केसव १८९२ सुत पितृल  
१९०१ जयकाज ॥

एह सगोत्र १ संपिंड २ सेस इम रन इतिमुख बुल्ले रनराज ॥ १४ ॥  
विदित गोरे रनछोर १ आदि बलि बुंदीसन असगोत्र बुलाइ ॥

\* इस वर्ष में † ज्योतिषियों ने ‡ इस वर्ष में चार लग्न हैं ॥ ११ ॥ १ कैलाश  
२ नवीन ३ हाथी ४ घोड़े ॥ १२ ॥ ५ काका ६ अन्य भी ७ बुद्ध में चतुर ८ द-  
सरा दयालसिंह ॥ १३ ॥ ९ इत्यादि ॥ १४ ॥ १० गोढ़

रक्खे ईतर देस सुख रक्खउ भट रच्छक समुचित हित भाइ ॥  
 नृपउच्छाह बढावत बैल निज साहहु स्वबल अयुत १०००० दिप संग  
 प्रथित सज्जि इन सबन चल्पो पहु उफनत दक्खिन बिजय उमंग १५  
 आसपास गढगढन त्रास अति पथ संगत भूपन हिय पारि ॥  
 सरिता लंघिनर्मदा सत्वर रचिय सता १९४। १ लोदिन प्रति रारि ॥  
 खानजिहान सुनत सुत खगगन सम्मुह जुरयो सबन सह सज्जि ॥  
 दारुन कलह मच्यो तँहँ दुव २ दिस बँव १ पटह २ काहल ३ बल  
 सज्जि ॥ १६ ॥

डोलि अवनि डुंगर डगमगिय भागिय भँग १ समहितभाव ॥  
 लचि आलुकै तालुकै भर लगिय चंडी २ चित्तहु जगिय चौव ॥  
 नच्चहिँ कलहबिसारद नारद ३ महती तन्निन कोन मिलाइ ॥  
 लखहिँ प्रेत ४ डाकिनि ५ वेताल ६ रु जोगिनि ७ वीर ८ जातु ९ गन जाइ १०  
 बनि कुरूप १ पररूप २ बहूरद ३ थनमुख ४ न्हस्व ५ दिग्घ ६ कूस ७ थूल ८ ॥  
 बहु गावहिँ १ कति बाघ बजावहिँ २ कति लावहिँ ३ तंडव अनुकूल ॥  
 अयुततीन ३०००० दल पिकिख सता १९४। १ इत टक्कर दैन गाहिय  
 रन टेक ॥

उत पुण्या १ बीजापुर २ आदिक अँज १ रु जवनरूपे बनि एका १८  
 जे उत संग लगे बनि जनैय रु वर वह खानजिहान बनाइ,  
 तनय चतुष्क ४ समेत सुपै तँहँ इच्छत हुव दुलही भुव आइ ॥

१ अन्य २ उचित ३ बाँदशाह ने भी अपनी सेना को ४ प्रसिद्ध ॥ १५ ॥ २ मार्ग में आये हु-  
 ए राजाओं के ६ शीघ्र ७ नकारा ८ डाल ९ बाघ विशेष ॥ १६ ॥ १० शिव के  
 ११ समाधिभाव १२ शेषनाग झुककर उसके १३ मस्तक पर १४ उदसाह १५ नखी  
 (मजराफ) अर्थात् नारद ने महती नामक बीणा के तारों से नखी मिलाकर  
 नाच किया १६ बाघन वीर १७ राजस ॥ १७ ॥ १८ कुरूप से लेकर थूल पर्यं  
 त वेताल आदि के नाम हैं १९ आर्य ॥ १८ ॥ उस खानजिहान को दुलहा  
 बनाकर उधरवाले २० जानेवाले (वराती) होकर साथ लगे वह चार पुत्रों  
 सहित भूमि को दुलहिन बनाकर चाहने लगा परंतु उस समय यह दुलहिन

पै दुलही सु चहत अप्पन पति जब दिल्लीपति साह जिहान२९।२,  
भय धरि चित्त सता१९४।१से भूपन इक्खे नहि महि उपपति  
आन ॥ १९ ॥

वर करि जार तदपि दुल्लह बनि इम जुद्यो लोदी अफगान,  
संग लये बलवान सहायक दक्खिनक सब बिजयनिदान ॥  
जुग२दिस तोपन जुजिक्त पहर जुग२बलि बाजिन कररी गहि बग्ग  
पहुँच्यो अरिन अनीक सता१९४।१ पहु अप्प तथापि सबन स-  
न अग्ग ॥ २० ॥

प्रहरन सर१ तोमर२ असि३ पट्टिसं४ संख्य असंख्य चले दुव२सेन  
इक१ मुहूर्त अवमर्द मच्यो इम वेश न बढे इत तिम उत ए२न ॥  
जे बीजापुर आदि जवन जब कढत रतन१२९।१मन विरचि करार  
पीवल लखि बुन्दीस पताकन वे हुव भिन्न बचन अनुसार ॥ २१ ॥  
कहिपठई नृपतै हयहंकहु जिन संकहु हमकोँ अरि जानि ॥  
खलन गंजि खर खग्ग चलावहु हमदिस बढिआवहु नहि आनि ॥  
अयुत१०००० साहबल निजबल द्विअयुत२०००० हंकि तवहि  
भटतीसहंजार३००००,  
प्रबिस्पोमूर सता१९४।१ पैर पृतना भीम पटकि लोदिन सिर  
भार ॥ २२ ॥

चले नचत संगहि डाकिनि१ चैय बलि के ताल देत बेताल२,  
जोगिनि३ गात वजात बीर४ जहँ भनत वाह दुर्गा१ \*ससिभाल२  
चंद्रहास हड्ड६१न कर चल्लिय वैरिन उरसल्लिय प्रतिवीर,

शाहजहां को ही पति चाहती थी क्योंकि शत्रुशाल जैसे राजाओं का भय  
करने अन्य उपपति को नहीं देखती थी ॥ १६ ॥ १ कारण ॥ २० ॥ २ कटारी  
३ उम युद्ध में ४ दो घड़ी तक भयंकर युद्ध हुआ ५ पीले रंग की ध्वजाओं को  
देखकर रत्नसिंह से तिये हुए पहिले नियम के अनुसार जुदे होगये ॥ १ ॥  
६ शत्रुओं की ७ सेना में ॥ २२ ॥ ८ समूह ९ शिव के दा.पाख (अकस्मान्  
आकाश में दीखनेवाले भूत विशेष) १० शिव

बड़े त्रयहि रनछोर१ गोरबलि नृपति२ रु हरि३ काका नौसीर२३  
कटक अद३ लखि सिथिल प्रसभ करि बल दल३ खिल उत  
केहु वडाइ

खानजिहानकेहु सुत चउ४ खिजि अग्ग ५ये जुज्झन अकुलाइ ॥  
जवन कोलवाहिर हैं तिन जुत हनुमंत१ स्याम प्रमुख मरहठ,  
वहै सहाय लोदिनसह हंकिष अतिबल दिगिभ धुजावत अट्ट८ २३  
जहैं प्रभुराम२०३१४ उभय२ दिसतैं जुरि मच्यो असह अनुपम  
अवमर्द ॥

इततैं जिम दक्खिन अपनावहिं क्रमि उतरतैं जिम देन कपर्द ॥  
मिल तन सूरन दुद१ सिंता२ मित प्रहरिय प्रहरन प्रचुर प्रहार  
समर जुरे जे कृतित सिवादिक विलसे निजनिज उचित बहाराअ  
संकर१ सघन सूरसिर संचत साधक हुव चंडी२ हु सहाय,  
महती सारिन भुल्लि पिसुन३ मुनि केवल विहसि शुकावत काप  
प्रेत१ दास डाकिनि५ दासी पुनि दासनप्रति बेताल६ दुराई ॥  
जोगिनि७ वीर८ जातु९ कँ९न पलं जहैं जो जिहिं इष्ट देत ए  
हि जाइ ॥ २६ ॥

कौंड१ कुंत२ कासू३ करवाँलक४ कटार५ रु खंजर६ छुरिका७दि ॥  
बाहन१ साँदिरनि२ साँदि३न बाहत बहु जाँदिन वादि१न प्रतिवादि२  
कहत दुरदिस भरहर कर कंहुँ उतरन अह निठिन किष अज ॥

१ गोद २ अग्रणी (स्व से आगे) ॥ २३ ॥ ३ दिशा के हाथियों को ॥ २४ ॥ ४  
शिव को ५ दुग्ध में शकर मिले तिस प्रकार मिलकर बहुत शस्त्रों का प्रहार  
किया ॥ २५ ॥ महादेव अपने हाथी से ६ महती नामक वीणा के बंद को मल  
कर ७ नारदमुनि (नारद का स्वभाव हथर-बधर चुगली करने का होने का  
कारण उसको यहाँ 'पिशुन मुनि' लिखा है) ८ मस्तक ९ माँल ॥ २६ ॥ १०  
वाणा ११ भाला १२ बरछा १३ खट्वा १४ घोड़ों के सवार १५ हाथियों के सवार  
१६ उस दिन कहते हैं कि दिन के उतरने पर भार को ढरनेवाला (संघा) काय  
और हाथ से शरीर को १७ खुजली मिटाने का कार्य आर्यों ने कठिनाई से  
किया ॥ २७ ॥

तिमहि मिलत मिलन मित तकितकि सकिसकि जयसदन गन  
सज ॥ २७ ॥

कति बपुहेति बिसत हिय बिकसित चिन्हित जिम रामानुजचक्र ।  
जड़जन दुसह दुकाल परै जिम तकि उपधान्य पूषिकाशतक्र ॥  
जहँजहँ घात पात निज जानत मिलि भौहन चुंवत उठि मुच्छ ॥  
अप्पहि धन्य भान्नि लखि अच्छरि तक्रत जिन्ह जिय प्रिय तिन्ह  
तुच्छ ॥ २८ ॥

कहुँपर हेतिछिन्नि निज सिर कर गहि लंचाकहि जजंत गिरीस  
सिर निज कहुँ तिलतिल लखि सूचत सैन करि न अक्खय मम  
सीस ॥

जिततित रुंडै१फटत बहु जवन२न मुंड१कटत मरहइ२न मानि ॥  
सब भर धरि लोदीसुत निजसिर अगँ चउ१हि बढे धकँ३आनि॥  
जंतमाँहिँ मिलिजात इच्छुँ जिम तिम अवमद घोर हुव तत्थ ॥  
इम दिल्ली१दक्खिन२जुरि असइन सद्धतहुव निज१पर२असुँ सत्थ ।  
जहँ हरि१वीर मुख्य अरिसुत जुगे२मारि अधिक भूपहिँ दिय मोद  
हुव२असिघाय काय सहि दोउ२न बिहसि सहज मन गिनिय बि-  
नोद ॥ ३० ॥

तीजो३सुत नरनाह सता२जहँ असि हनि किय उँपवीत उतार ॥  
कौसू तिम रनछोर३ बीरकिय पटु चौथे४लोदी सुत पार ॥

१ शरीर में शस्त्र २ घुसकर ३ जिसप्रकार रामानुज संप्रदाय वालों के तम सु-  
द्रा में सुदर्शन चक्र का चिन्ह होता है तिसप्रकार चिन्ह युक्त होते हैं ४ जैसे  
मूर्ख लोग असह दुर्भिक्ष पड़ने पर सावां मलीचा आदि अड़क धान्य की ५  
रोटी और ६ छाछ को देखते हैं तैसे वीर लोगों ने शत्रुओं को देखे ७ अ-  
प्सरा ॥ २८ ॥ कहीं पर ८ शस्त्र से कटेहुए अपने मस्तक को हाथ में लेकर  
९ नजराना करके १० शिव की पूजा करते हैं ११ इसारा करके कहता है कि  
मेरा मस्तक अच्छय नहीं है १२ बिना मस्तक का धड़ १३ क्रोध करके ॥ २९ ॥  
१४ इच्छु (गन्ना) १५ प्राण १६ खड्ग के घाव ॥ ३० ॥ १७ जनेऊ के आकार शरीर  
को काटकर १८ बल्ली

करन १६१० सरहठ स्याम २ कहैं हठीसिंह १ मास्यो हनुमंत २,  
 पूराउत २८। १४ जसवंत १ कियो पटु अमन २ कगीम ३ जवन जुग २ अंत ॥  
 अरि बलबीर परत ए अट्ट ८ हि जियन भज्यो सिटि खानजिहान ॥  
 सोहि भजत डरि सत्रु भजे सब अतिबल पिठि लगे चहुवान ॥  
 सिबिरहु लै न सके अरि सत्वर छिपत भये जिततित हठ छेरि ॥  
 लुटि सवन सिविरन बैभव लिय हहु ६१ न पति लहि विजय बहो-  
 रि ॥ ३२ ॥

तीन ३ प्रहार लगे नृप १९४। ११ के तनु तोमैर इक १ इक १ असि  
 इक १ तीर ॥  
 पंच घाय हरिसिंह १९३। ३२ लहिय पर पंसुलि गत असि दुवर  
 दिय पीर ॥  
 करन १९३। २३ लहे चउ ४ घाय सुसह कछु पंच ५ गोर रनछोर ४  
 प्रहार ॥

हठीसिंह १९२। १५ दुवर छत लहि हहु ६१ नवंसहिं बिसद चटायउ  
 बौर ॥ ३३ ॥

बुद्धिचंद्र १६२। ३ सुनकृष्ण १६३। १६ लह्यो बपु इक १ असि घाय  
 असह अतिअंस ॥

तनय मनोहर १९२। ४ को जु सबल १९३। १७ तस दुवर सर जनु  
 लगे भिदि दंस ॥

भजनेरी पुरपति पित्तल १९०। १८ भुज इक १ लग्यो असि बाहु  
 ल बहि ॥

जसवंत १९२। १९ जु हिंडोलीपति जस कंठ वेधि इक १ सर गय  
 कहि ॥ ३४ ॥

॥ ३१ ॥ १ डेरा भी सीघ्र नहीं लेसके ॥ ३२ ॥ २ भाला ३ घाव ४ नीर (उज्ज्वलता)  
 ॥ ३३ ॥ ५ कन्धे पर ६ शरीर और कन्धे की संधि (हसली की हड्डी) पर ७ क-  
 चक कटकर ८ दस्ताना कटकर ॥ ३४ ॥



पंच लहे छत जैत्र १९३।१।१० पितृव्यक तोमर असह लग्यो इक १  
तत्थ ॥

अनुज इंद्र १९४।१।११ अरि १९४।३।१२ सल्लदुहु २न इस सहिय ए-  
क १ दुव २ छत क्रमसत्थ ॥

सूर सचिव केसव १२ सोमानी अष्ट ८ प्रहार लहे निज अंग ॥  
इतिमुख हुव चउसत ४०० घायल इस भट कहियत अब जै अंसु-  
भंग ॥ ३५ ॥

परयो दयालु १९०।१ तनय वह भूपति १९१।१ अर्जुन १८८।१ अ-  
क्खयराज १८९।१ पउत्त १६।१२ ॥

सेखाउत्त कुम्भ बहु संहारि जोध अमान २ परयो जसजुत्त ॥

भीर ३ परयो जहवकुलभासक अरिसासक नृप सालक एह ॥

भीम ४ हिनाम कबंध घनै भट गेरि अराति गय सुरगह ॥ ३६ ॥

रामसिंह ५ सीसोद महारन बसु हुव खंडनखंड बिखंड ॥

गोहिल स्याम ६ संखुला गिरिधर ७ दहिया मान ८ चंड परदंड ॥

बीर जवन सुबहान ९ बहादुर १० परे नूर ११ सहतीन ३ पठान ॥

सब इतिमुख बुन्दीस सहायक त्रिसत रु सडि २६० अरे जयदान ३७

परत छतन उतके सत पंच ५ रु मरत त्रिसत ३०० अष्टक ८ मुख्यादि

खानजिहान भज्यो जिय लै खल सभय पराजयफल संपादि ॥

गयो दुरि सु लोदी कोलागढ जितति इतर सहायक जूह ॥

सवन सिबिर लुटे पहु संभर देखिदेखि द्रुत पहुँचि दुरूह ॥ ३८ ॥

रैन १९२।१ भूप बुरहानदंग रन मंडि कोल कहे जे मिच्छ ॥

उन्हि टारि लुटे वसु इतरन बसुपर रहियन लोभ अनिच्छ ॥

सिबिरसेस सेवन लुटे सब तँहँ बुन्दीस चखावत तेग ॥

गहिय लूट सत्रह जुतसत ११७ गज बाजी सरदंग दुव २२५ वरवेग ३९

मंजुल तोप त्रिसठि ६३ अयोधय जोर जवर सत्तरि ७० जंबूर ॥  
 सब सिबिरन इतिमुख सामग्री सबहि गहिय बुन्दीपति सूर ॥  
 गिनि लोदी प्रविश्यो कीलागढ द्रुत सुहु जाइ लयो गरदाइ ॥  
 त्रय ३ दिन १ रत्ति २ सतत दै तोपन लोपनगढ लगिगय हठजाइ ॥ ४० ॥  
 नद्यो डरि कछु खिल तीजी ३ निस जानि प्रलय खिन खानजिहान ॥  
 नृपसह भट पहुँचत निश्चिनि सक्तो न रहि जिम असु अवसान ॥  
 उपहारहु कछु लौ न सक्यो यह हेति १ द्रविन २ मुख गढहि विहाइ  
 संधि चोर जग्गत जिम स्वामी इम कढिगो जिमतिम अकुलाइ ४१  
 विजय निसान झुकाइ सता १९४१ बुध कीलागढहु स्ववस इम  
 किन्न ॥

कढि न सके कति सत्रु सहायक लसि हसि लेहु लाइ उर लित्र  
 पर तिहिँ दुर्ग न रक्खे ते पर बल न गहै जहँ तत्थ वसाइ ॥  
 निज सुभटन मिलि हठन निहोरत प्रत्यागमन कियउ खिन  
 पाइ ॥ ४२ ॥

अयुत १०००० साहदल बिच जो उत्तम मरत १ बचत जान्यो महि-  
 पाल ॥

कीलागढ दुर्गाधिप तिहिँ करि सेन अयुत १०००० तहँ धरि अ-  
 रिसाल ॥

इम अरिसाल १९४१ प्रथम १ जय उदरि हनि बहु अरि गय  
 साहहजूर ॥

मिलत अंस थप्पलि मुगलेसहु सो सराहि लायो उर सूर ॥ ४३ ॥  
 जंपिय नृप लोदी सुत जेठे २ हरि १३३ काका जो प्रथम हनै ना  
 तो जवनेस गिनहु निहचै तुम विजय रावरो कबहु बनै न ॥

१ लोहे की २ निरन्तर ॥ ३९ ॥ ३ निसरनियों से ४ प्राण के अन्त में ५ शस्त्र  
 और धन आदि ॥ ४१ ॥ ६ शोभायमान होकर ७ परन्तु उन शत्रुओं को उस  
 गढ में नहीं रक्खे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

खुशमका हरिसिंहको लाखका पट्टादेना] सप्तमराशि-द्वितीयमयूख(२५७२)

बड़े दुव<sup>२</sup>हि लोदीसुत बहूत छोटे<sup>२</sup> हने मैं<sup>१</sup> रुनछोर<sup>२</sup>,  
खानजिहान भज्यो रन तजि खल इहिं जय<sup>१</sup>हेतु हैरी<sup>१</sup>९३३  
हि न ओर ॥ ४४ ॥

तखतनसीन हुकम बस बत्ती प्रभु इन्ह सहज इतर निरपेक्ष,  
स्वामी दृढ परखहु दै सासन अब न होहु तब गहन अवेक्ष ॥  
तिम नृपसंग साहभट हे तिन सुहि जयबीज कह्यो हरिसीह<sup>१</sup>९३ ॥  
नृपतिन सह यह बहुरि निवेदिय यह जस लिय काकाहि अंबीह ॥  
इहिं जय रीझ जोहि प्रभुके उर हरि<sup>१</sup>९३३ कहँ बखसहु सो-  
हि हजूर,

असहन जदपि साहदिय हो यह पहु संकोच तदपि परिपूर ॥  
स्वस्थ भयोहरि<sup>१</sup>९३३ जब घायनसन संसद बुझि तबहि तिहिं साह,  
दम्म लख<sup>१</sup>००००० मित आय पटा दिय लिखि गुग्गैर<sup>१</sup> मुख्य  
पुर लाह ॥ ४६ ॥

दम्म त्रिलख<sup>३</sup>००००० पटा कति मित दिय पै पत्तन गुग्गैर<sup>१</sup> प्रधान ॥  
सह गज<sup>१</sup> अपि हजारी<sup>१</sup>००० सुन सुबरमन्निय खास सभासद मान ॥  
अरु बुरहानपुर सु किय आगस माफ कराइ सुपै महिपाल ॥  
उपदा<sup>१</sup> भिन्न भिन्न उत्तारन रहरि<sup>१</sup>९३३ पँहँ तसहु सधाये हाल ॥ ४७ ॥  
विजपरीझ सुहि समुझि साह बलि बिनु लूटन दिय नृपहिं बिसेस ॥  
तदपि निवारि लूटमैं तोपन पीलु<sup>१</sup> तुरंग<sup>२</sup> मुख सब किय पेस ॥  
सिंधुर सकल इकसत सलह<sup>१</sup>१० प्रथित सँप्ति सत द्वै रु पचास<sup>२</sup>२५ ॥  
आयत मुख्य पटा लय अष्टक बर जंबूर पचास रु बीस ७० ॥ ४८ ॥  
भनियत तीन<sup>३</sup> रजतमय मेरी<sup>१</sup> अरु त्रिलख<sup>३</sup>००००० मुद्रा कहु अग

१ इस जय का कारण हरिसिंह ही है ॥ ४४ ॥ २ इच्छा रहित ३ वस्तु का दे-  
खना अर्थात् परीक्षा ४ निर्भय ५ सभा में बुलाया ६ रुपये ७ आमद अर्थात्  
लाख रुपये सालाना आमदनी का पट्टा दिया ८ लाभ ॥ ४६ ॥ ९ अपराध १०  
नजराना ११ न्योछावर ॥ ४७ ॥ १२ हाथी १३ प्रसिद्ध १४ घोड़े १५ बड़े फैलाववाले  
आद डेरे ॥ ४८ ॥ १६ चांदी के १७ नज़ारे (नोबत)

असि<sup>१</sup>बंदूक<sup>२</sup>आदि बहु आयुध<sup>३</sup>अंकं चमर<sup>४</sup>ध्वज<sup>५</sup>छत्र<sup>६</sup>उदग्ग<sup>७</sup> ॥  
 इत्यादिक नृपकै सब आये अरिसिविरन लुंठित उपहार ॥  
 नालीजंत्र त्रिसष्टि<sup>८</sup>३दये नन साह लये सासन अनुसार ॥ ४९ ॥  
 आसफ<sup>९</sup>सहित महावत<sup>१०</sup>अक्खिख नृपहिं जदपि इम बहुत निहोसि ॥  
 हरि<sup>११</sup>९३३कैहँ रीभ दिवावहु कपो हठि जोकिंनलेहुतुमहिंसवजोरि ॥  
 तदपि नरेस न लुब्ध भयो तँहँ देसहु काका अर्थ दिवाइ ॥  
 बलि करि सिक्ख समागत बुंदिय पहिले इम दक्खिन जयपाइ ॥  
 पुनि तँहँ सचिव रानके प्राघुन व्याहन चढन त्वरा करि वेहि ॥  
 पुर बुंदिय आये तिनतै पहु जुत हित मिलि प्रसुद्धित किय जेहि ॥  
 व्याहन चढन सचिव केसव बुध किय आरंभ अनेक प्रकार ॥  
 उचितन उचित निमंत्रन अपि रु बुल्ले सब सह महव्यवहार ॥ ५१ ॥  
 हड्डवती सत्ता<sup>१२</sup>९४१दुल्लह हुव अर्चि गनेस<sup>१३</sup>भातृगन<sup>१४</sup>आदि ॥  
 मंगल वस्तु<sup>१५</sup>सकंकन<sup>१६</sup>मिथित सयं बंधिष जयजस संपादि ॥  
 उफनंतछकमनसिंज द्युति आकृति भूप जई गय<sup>१७</sup>हंय<sup>१८</sup>मंय<sup>१९</sup>भीर ॥  
 सब असगोत्र<sup>२०</sup>सगोत्र<sup>२१</sup>सनाभि<sup>२२</sup>न बीरने सजि जथाक्रम बीर ॥ ५२ ॥  
 ॥

भूपति<sup>२३</sup>९२१आदिकटे रन जे भट सुत तिनकेसबविधि सनमानि  
 बलि अप्पन जयकार प्रबीरन आदर अधिक जथाक्रम आनि ॥ ५३ ॥  
 सबयं जिते भूखन<sup>२४</sup>प्रहरन<sup>२५</sup>सम कुंकुम बसन<sup>२६</sup>दुलह अनुकैर ॥  
 जन्ये बने नृपसंग चले जुरि अन्य घने बयवृद्ध उदार ॥  
 गज<sup>२७</sup>बांसंत<sup>२८</sup>सकट<sup>२९</sup>श्वेसंग<sup>३०</sup>गन संभूर्त करि लक्खन धन संग ॥

१राज्य चिन्ह<sup>३१</sup>उदग्र<sup>३२</sup>तोपें ॥ ४९ ॥ ४लोभी नहीं हुआ<sup>३३</sup>आया ॥ ५० ॥ ५पाहुने  
 प्रसन्न किये ८ उत्सव सहित ॥ ५१ ॥ ९ कंकण डोरडा से मिलीहुई १०हाथ क  
 बांधा ११कामदेव की सी क्रान्ति १२ऊट ॥ ५२ ॥ १३अपने समान अवस्थावालों  
 को भूषण, शस्त्र, केसरिया वस्त्र दुल्लह के १४ सदृश दिये १५ बराती १६ ऊट १७  
 खच्चर १८भरकर

• शत्रुशाल का व्याहनेको उदयपुर जाना] सप्तमराशि-द्वितीयमयूख (२५८?)

बुंदीपति किय कुंच विवाहन चढि मारीच लसत चतुरंग ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

अनुज१पितृव्यक२बंधु३इम, गुन.सगुत्त१ असगुत्त२ ॥

संग चले सामंत सब, अर्जन सुजस अछुत्त ॥ ५५ ॥

रक्खन जैनपद कति रहे, स्वामिकथन अनुसार ॥

गढगढ भय डारत गये, बट्ट बरातिन बार ॥ ५६ ॥

सद्धि उचित बुंदीहि सब, रुचि कोटा अनुरत्त ॥

माधव१९३२काका कछुक मिस, पच्छो गेहहि पत्त ॥ ५७ ॥

पहुंच्यो. पहु इत, उदयपुर, वरसत धन धन बिंदु ॥

अर्थिन करत प्रसन्न इम, उत्पलंगन जिम इंदु ॥ ५८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे शत्रुशल्यस्योदयपुरपाणिग्रहणात्पूर्वं यवने-  
शाज्ञया दक्षिणदेशमासाद्य समरे लोदीखानजहाननामानं विजित्य  
यवनेन्द्रजयसंपादन१, राजादिबुन्दीवीराणां क्षतमरणासादनानन्तरं  
शत्रुसामग्रीलूटनभणन २, एतद्विजयाच्छत्रुशल्यस्य स्वपितृव्यहरि-  
सिंहार्थं यवनेन्द्राल्लक्षायमितदेशदांपन३, दिल्लीदङ्गादबुन्द्यागतशत्रु-  
शल्यस्य करग्रहणार्थमुदयपुरगमनवर्णनं द्वितीयो मयूखः ॥ २ ॥

१ मुख्य हाथी पर सवार होकर सेना सहित शोभायमान हुआ ॥५४॥ अछुता  
यश २ संपादन करने को चले ॥५५॥ ३ देश की रक्षा करने के लिये ४ समूह  
॥ ५६ ॥ ५ गया ॥ १७ ॥ ६ रात्रिविकासि कमलों को चन्द्रमा प्रसन्न करता है  
तिसप्रकार धन रूपी बिन्दु से पाचकों को प्रसन्न करता हुआ उदयपुर पहुंचा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल का उदयपुर विवाह करने के पूर्व बादशाह  
की आज्ञानुसार दक्षिण देश में जाकर लोदीखानजहान से युद्ध करके बाद-  
शाह का विजय करना १ राजा आदि बुन्दी के वीरों के घायल होने और मा-  
रेजाने के अनन्तर शत्रु की सामग्री लूटने का कथन २ इस विजय के कारण  
शत्रुशाल का अपने काका हरिसिंह को बादशाह से लाख रुपये का पट्टा दि-  
लाना ३ दिल्ली से पीछे बुन्दी आकर शत्रुशाल का विवाह करने के अर्थ उद-

आदितश्चतुर्दशोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥ २१४

॥ प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उतरतजाइ बरात इम, सद्धिय समुचित सद्य ॥

पहुँचन तोरन लग्नपर, आरंभिय अनवैद्य ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदीअधिप बरात पत्त जिहिँ लग्न उदैपुर ॥

वाहीदिन दुव२ ओर धरनिपति धरि दुल्लह धुर ॥

आये तिनप्रति एह सता १९४१७ पठई कहि सत्तम ॥

गज १वा हय२चढि गमन करहिँ तोरन कैसे क्रम ॥

दंभीन तवहि तिन दुल्लहन चढि बाजिन चलिहँ चविय ॥

अप्पहि गइंद छत्र न अवनि जोगं हयहि इहिँ खिन जविय ॥

सता १९४११ यहहि गिनि सत्य क्रमन हय सज्ज कराये ॥

उतके दुल्लह उच्च इभन छल करि चढि आये ॥

जान्यौ छल नृप जदपि बाँह तजि न गज बइठो ॥

पहुँचत मुख्य प्रतोलिँ दुल्लह हय थित इक१ दिठो ॥

हरिदासनाम कवि बारहँठ बचन बान दिय तहँ विदित ॥

मपुर जाने के वर्णन का दूसरा मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१४ मयूख हुए ॥

१ उचित कार्य २ तुरन्त ३ पाप रहित अर्थात् पुण्य कार्यों का आरंभ किया ॥ १ ॥ जिस लग्न पर बुंदी का राजा विवाह करने को गया उसी लग्न पर अन्य दो राजा विवाहने को आये उनसे ४ अत्यन्त पूज्य राजा शत्रुशाल ने कहलाया कि तोरण पर हाथी वा घोड़ों पर सवार होकर ५ किस रीति से चलेंगे १ घोड़ों पर चढ़कर चलना कहा ७ अपने हाथी पृथ्वी में छिपे हुए नहीं हैं इसकारण इस समय ८ वेगवान् घोड़ों पर चढ़कर चलना ही उचित है ॥ २ ॥ ९ ऊँचे हाथियों पर १० घोड़े को छोड़कर हाथी पर नहीं चढ़ा ११ द्वार (तोरण पोळ) १२ संदायच शाखा के हरिदास नामक चारण ने (सामान्य रीति से चारण मात्र को पारहठ कहते हैं इसी कारण हरिदास संदायच

गज उचित द्वार हय चढि गमन हहुद१न समन प्रसाद हित ॥ ३ ॥  
 सोहु असह सहि सुपहु कृत्य संहिय तुरंग करि ॥  
 वर सब उत्तरि बहुरि बरे निजनिज ओसर वरि ॥  
 ठाम जथोचित ठानि स्वसुर प्रासाद रीति सब ॥  
 अप्प अप्प पटअयन अय३हि वर ऊढ गये तब ॥  
 नृप दिय निदेस बुंदियनगर अप्पन१ अरु बंधुन२ अखिल ॥  
 इम सेस जिते भेजहु इहाँ कम इम दम्म दुलकख२००००० किल ॥ ४ ॥  
 पुर इम हुकम पठाइ बिहित करि नित्य जथाविधि ॥  
 दब्बनचहि खिल दुलह निखिल खुल्लिय अलका निधि ॥  
 जिते रान जगतेस सुकवि पटुपन संनमानिय ॥  
 भूसित इक१ इक१ भेजि दये तिन्ह घर गज१ दानिय ॥  
 पोसाक२ खास भूखन३ प्रगुन अरु संगहि मुद्रा अयुत१००००॥  
 हे बिदित जिते तिन्ह हित हुलांसि जब पठये अति मानजुत ॥ ५ ॥  
 द्वार द्विंद नृप दैन गहत किल कृपन कदार्पह ॥  
 दियेउ रति हरिदास उपालंभ जु सनर्म वह ॥  
 तसगृह खास तुरंग१ सता१९४१ पठयो भूखनसम ॥  
 ओरन सन दल३ अग्घ सिचय२ भूखन३ दूखन सम ॥  
 मुद्रा हजारपंच५००० हि प्रमित भेजि तदनु ओरन भवन ॥  
 समुचित पठाइ बुंदिय सुपहु किति लियसु बंटहि कवन ॥ ६ ॥  
 किय संभर संतकार इमसु लिय सबन सुआदर ॥  
 दुखित इक१ हरिदास बंडे लूम सु करिहै वर ॥

को बारहठ लिखा है) ॥ ३ ॥ अपने अपने १ डेरों में २ विवाहे हुए ॥ ४ ॥ ३  
 उचित ४ सम्पूर्ण ५ कुवेर की पुरी की ६ समृद्धि ॥ ५ ॥ ७ द्वार का हाथी,  
 अर्थात् तोरण का हाथी देने के कारण निश्चय ही कृपण राजा ८ किसी लाभ में आ-  
 ग्रह करते हैं इसी कारण हँसी पूर्वक ९ ओलम्भा दिया १० आधा आदर और  
 वस्त्र ११ जिस पीछे ॥ ६ ॥ शत्रुशाल को दिये हुए घोड़े को १३ पुंछ १२ काट  
 कर

बहुरि तास गल बंधि भिन्न मिट्टीमय भाजन ॥  
 दलअंतर तारिदिय संपट १ दम्मा २ दि समाजन ॥  
 सुनि नृप लिवाय जे देय सब देखि उचित ओरन दये ॥  
 खिल त्याग लेय सुनि कवि निखिल भागधेय मोदित भये ॥७॥  
 बदिष भूप मम बाजि दयो तजि जिहिं करि दुर्दस ॥  
 सो आवहिं ममसीम ततो मुख असित ठानि तंस ॥  
 चक्रीवान चढाइ बुरीगति खलहिं विडासैं ॥  
 अंकहिं तो अवकास मूढ रंकहिं जो मारौ ॥  
 हमरै न द्विद कछु दैनहो हय दिन्नों इम ताहि हम ॥  
 कटुबैन कुटिल तिम रंति कहि किन्न अबहु यह नीचक्रम ॥८॥  
 उपालंभ सुनि एह दयो रानहु हरिदासहिं ॥  
 संढायचहु सिटाइ पुनि न जिम स्वमद प्रकासहिं ॥  
 बुंदीपतिढिग बुल्लि स्वीय कविजन इत सादर ॥  
 अखिखय बढि सबअगग बित्त बरसहु बनि बादर ॥  
 दम्मन जितेक पुब्बहु दये बहुरि न दिय जिमकोहुबढि ॥  
 इहिंरीति त्याग बंटहु असह पुनिपुनि मंगहु लेहु पढि ॥ ९ ॥  
 गर्जआरूढन गर्व बिगारि जिम न सुख बतावहिं ॥  
 बहुरि विवाहक बरन सकल अप्पन सुमिरावहिं ॥  
 बिरचहु ऐसी वत्त हुव जु अत्र १ न अन्यत्र २ हु ॥  
 रोम सुनत उबभरहिं सिटाहिं आधुनिकेन संत्रहु ॥  
 साँवल १६६।२ नगेस १६७।१ मिश्रन स्वकवि बंदी दोलतराम १ बलि

उसके गले में मिट्टी का फूटा पात्र (गर्ग) बांधकर सेना में चर और रूपये आदि सामग्री सहित ताड़ दिया २ सच अपना अपना बंट लेकर ॥७॥ ४ काला मुख करके गंध पर चढ़ाकर उस दुष्ट को निकाटुंगा ६ अवकाश हुआ तो उसको चिन्ह युक्त (कलंकित) करके उस मूर्ख को ७ रात्रि में ॥ ८ ॥ अलंभा ॥ ९ ॥ हाथी पर चढ़कर तोरण बांधनेवाले दुलहों का गर्व मिटाकर सुख नहीं बता सकें जैसे १० इस समय के ११ यज्ञ अथवा उत्सव दान ॥ १० ॥



सुनि प्रभुनिदेस इहिं मुख सबन किय प्रारंभन दान कलि ॥ १० ॥  
 इम \*ग्रंथति आरंभ भयो सबतैं बढि भासत ॥  
 मिलि कवि चारनमुख्य प्रकट जस अधिक प्रकासत ॥  
 \*कछु मेवारेकविहु गंठि अंतर छल साग्रह ॥  
 बलजें आई इम सबन अरज भूपहिं पठई यह ॥  
 कविमात्र सिरहि उपकार किय सगताउत गोकुल सुमति ॥  
 तसहस्य त्याग बंटहु ततो अल्पहु लौ व्यय है न अति ॥ ११ ॥  
 सता१९४१ अरज सुहि सुनत अनखि पठयो यह उत्तर ॥  
 होहु विगारनहार त्याग जेजे बंदान्यतर ॥  
 तेते छत्र १ रु तुम २हु मुख्य गोकुल ३सम्मत मिलि ॥  
 कोरि विघ्न किन करहु गरुव वितरन जै हैं मिलि ॥  
 हमरे न गजहु हरिदासहित हय मम दुर्दस तबहि हुव ॥  
 कै रान चहि रु इम जस करत धन जामिन घर रक्खि धुव ॥ १२ ॥  
 सिक्ख कविन यह सूचि दई संभर दिन दुल्लह ॥  
 स्वसुरालय गय समय महामह मचत महामह ॥  
 सपनमहल सोपान चढ्यो बावन ५२ अनुक्रम चहि ॥  
 दिय तहैं बावन ५२ द्विरद रसिक गजकेतु तुलौ रहि ॥  
 नारीन निक्कर वादन १ नटन २ जहैं हे गान ३ जितेक जुरि ॥  
 ते बंदिदये इम सब तिनहिं बहुल निर्दक १ दम्भ २हु बहुरि ॥ १३ ॥  
 न लाखि होत निर्वाह थान जिनजिन गज थप्पिय ॥

\*दान १ आग्रह सहित २ द्वार पर आकर ॥ ११ ॥ ३ अधिक दानी होवे सो हमारे त्याग को विगाड़ो ४ कोड़ ५ बड़ा दान ६ बुरी दशा, धन का ७ प्रतिभू (जमानत देनेवाला), घर में ८ निश्चय ही रखकर ॥ १२ ॥ ९ बड़ा उत्सव होकर कह १० बड़ा तेजस्वी सगय पर स्वसुर के घर पर गया ?? शयन करने के महल की सीढ़ियों १२ कर्ण की बराबरी करके १३ स्त्रियों का समूह वाय बजाने और नाचनेवाला और गातेवाला जितना वहाँ था उसको १४ बहुत मोहर और बहुत रूपों के साथ हाथी बांट दिये ॥ १३ ॥

मंगियं जिनजिन मुल्ल अधिक तिन्हतिन्ह प्रभु अप्पिय ॥  
 दुरे महल खिल दुलह सिटत प्रातहि श्रद्धासम ॥  
 रान बसहि धरि रिथं तित्थं बनि तित्थ कृपनतम ॥  
 बुंदीस सुजस दब्बे विमन रंच दिनन पाये रहन ॥  
 इहिं बीच लिखे पहुँचे अखिल सेस द्विरद सब देससन ॥१४॥  
 बीकापुर १ इक्क १ बर पर २ सु भट्टी जैसलपुर २ ॥  
 कतिक ख्यात इम करत धरत कति इतर नाम धुर ॥  
 बर इक्क १ हु कति वदत बरनं त्रिक ३ कतिक बतावत ॥  
 किमहु होहु अत कोहु जोहु मति मग्ग न जावत ॥  
 गृह निज परंतु जे सब गये दुर्मनपन धारत दुलह ॥  
 संभरअधीस रहि इक १ सता १९४ १ मंडिय अतुलित दानमह १५ ॥  
 बुंदीपति चिर बहुरि उदयपत्तन रहि इक्कल १ ॥  
 अखिल त्याग उपहार बंधि तँहँ निचय वित्तवल ॥  
 इमभूरति नवअष्टि १६९ दये मैगल दिन दुल्लह ॥  
 इक गुन सर ५३१ मित इभन मुल्ल अप्पिय उद्वह मह ॥  
 अप्पिय मतंग सतसत्त ७०० इम सहँस इक्क १००० वाजी सु गत ॥

याकी के दोनों दुलहे अपनी श्रद्धा सहित लज्जित होकर १ छिपगये सो वे  
 अत्यन्त कृपण दुलहे राणा के रेखिय (धन) को धारण करके अर्थात् महाराणा के  
 दिये हुए धन को लेकर वसे और रेखियने में स्त्री के रज के समान होगये; अ  
 थवा स्त्री की रजयुक्त योनि के समान अदर्शनीय (नहीं देखने योग्य) होगये "यहाँ  
 एक तीर्थ शब्द स्त्री का रज वाचक और दूसरा तीर्थ शब्द दर्शन वाचक तथा  
 योनिवाचक है, जिसमें शब्दार्थचिंतामणि का प्रमाण है यथा "तीर्थम्-नारीरज-  
 सि । दर्शने । योनौ" इसके उपरान्त सामान्य क्षेत्र का नाम भी तीर्थ है जि-  
 ससे यह अर्थ भी होसक्ता है कि उस क्षेत्र में वे नारीरज के समान अदर्शनी-  
 य होगये एक दुलहा बीकानेर का और दूसरा दुलहा जैसलमेर का भादी था  
 ४ कितने ही अन्य नाम कहते हैं और कितने ही लोग एक बर और कितने  
 ही तीन बर कहते हैं सो किसी प्रकार होओ और कोई बात सत्य हो परंतु  
 ५ उदास ॥ १५ ॥ ६ धन के समूह के बल से ७ मूर्तिमान् हाथी ८ विवाह के

शत्रुशालका बहुत स्याग देना] सप्तमराशि-तृतीयमयूख : (२५८७)

मुत्तीन द्विसत २०० कुंडल जमल २ स्वर्णकैटक जुग २ पंचसत ५००  
पंचसहस्र ५०० सिरुपाव करभ आदिक औरहु कति ॥

इम बितैरन उपहार रक्खि इतरन बितरन रति ॥

खिल रूपय त्रयलक्ष ३००००० अखिल खटलक्ष ६०००००  
जुरे इम ॥

किय निहाल जाचकन जलौद चातक १ कैकिशन जिम ॥

बंटतहि छोरि सचिवन बहुरि आयउ बुद्धिय अपन इत ॥

उत स्वापतेय बिदुन उभलि मेघ सचिव बरखे अमित ॥ ७ ॥

उदयनैर आश्रइन पीलु इक १ दिगु ग्राम १ प्रति ॥

हुव जँह पावनहार अधिक तँह अधिक अधिक अति ॥

सिंधुर मोतीसर १ न मिले खट नृप जसजामिन ॥

लहे उभय २ राउल २ न बिद इक १ मित दम्मा मि ३ न ॥

वारहठ १ बिप्र बंदी ३ बहुल हेलोसह गजबंध हुव ॥

इम कहत लोक पावत अवहु भैर १ रजत २ तिहिदंग भुवा १ ८ ॥

अज १ न भये तिन्ह अपन भये तिन्ह अपन गज २ न भर ॥

लघु मंगन दुँव लग बंधि अंगन लिय गैवर ॥

जाचक जाचकजनहु धनी हस्थिन हुव धामन ॥

भरे द्रविन जिनभोन कोन कहि कहि धनकामन ॥

जन रान अन्न जीवत जिते अरखहि दुल्लह इक १ यह ॥

वत्सव में हाथियों की कीमत की ? मोतियों के जोड़े २ स्वर्ण के कड़ों के जोड़े ॥ १३ ॥ ३ जूट ४ इसप्रकार दान की सामग्री रखकर दूसरों की दान में प्रीति नहीं रखली अर्थात् इतना दान देने की अन्धा किसी में नहीं रही ५ मयूरों को ७ धन की ॥ १७ ॥ ८ उदयपुर के आश्रित चारणों को प्रति ग्राम एक एक हाथी दिया ९ मोतीसरो (चारणों के याचक विशेषों) को छः हाथी मिले १० ढोलियों को हाथी मिला चारण, ब्राह्मण, भाट ११ खेल से ही गजबंध होगये १२ स्वर्ण १३ चाँदी उस नगर की भूमि में अब भी पाते हैं ॥ १८ ॥ जिनके घरों में कभी बंकरा भी नहीं रहा तिनके घरों में हाथियों के समूह होगये १४ छोटे याचक ढोली पर्यन्त १५ हाथी १६ धन से

जान्यौ सता१९४१हि दांतार जिहिं महविच गृहगृह किन्न मह१६  
 नृप सचिवन तँहँ नियत त्याग बंटिय छमास६तक ॥  
 इतबुंदियपहु अप्प भूति बिलसिय जसभासक ॥  
 इक्क१हि गहि गल आँट दम्म सहजहि छलकख६०००००दिय ॥  
 सो किम व्यय संकुचहिं प्रचुर कौतुक१ हंगाम२ प्रिय ॥  
 जगतेसरानबाहिनीहु जिम चंद्रकुमरि१९४१८ रानी चतुर ॥  
 निज रमन इष्ट सादिय नियत पायउ सुजस कुटुंब१पुर२ ॥  
 पट्ट लहि रु यह प्रथम१ बरी अष्टम८ रानी बर ॥  
 व्याही नवमी९ बहुरि उक्त रानी गढ ईडर ॥  
 स्यामलनामक सहर इक्क जँहँ तँहँ सिवआलय ॥  
 परंपरा तँहँ पिक्खि हड्ड६१ सततीन३०० दये हय ॥  
 तिम नृप बिसेस त्यागहु वितरि बुन्दीपुर आयउ विदित ॥  
 खिल सत्त० इमहि बरिहै निखिल जिम अवसर तिम सत्रुजित२१  
 पातुरि इत जोधपुर अधिपं गजसिंह पुब्ब वह ॥  
 नाम अनाराँ नारि साहसन लहिय रीभसह ॥  
 बस तस इम सुकबंधसदा रक्खहिं सिर सासन ॥  
 जननि स्वसुत जसवंत तत्थ पठयो लघुतासन ॥  
 अक्खिय पदत्र तस तिहिं उठत अगग धरहु कहि दास इत ॥  
 जो मंगि कहै तो जोधपुर तू लघुसुत मंगहु त्वरित ॥२२॥  
 नम्र जाइ तस निलय जननि प्रेरित जसवंतहु ॥  
 पातुरिअगग पदत्र लहत खिन जाइ धरे लहु ॥  
 मतिमति कहि तिहिं कुमर अधिक लालित लायो उर ॥

१ उस उत्सव में घर घर में उत्सव कर दिया ॥१९॥ २ उत्सव प्रिय ॥ २० ॥३॥  
 माताने अपने पुत्र यशवंतसिंह को वहाँ शीघ्र भेजा और कहा कि वह गणिका उठे  
 तब ३ जूतियाँ हाथ में लेकर उसके आगे रख देना और कहना कि मैं आपका  
 दास हूँ उस समय वह कहै कि मांग, तो तू लघु पुत्र है सो शीघ्र ही जोधपुर  
 मांगना ॥ २३ ॥ ४ घर ५ उस समय शीघ्र उसके आगे जूतियाँ जाकर घी  
 ६ लाइ करके

जोधपुरके राजा जसवंतसिंहका राजा होना] सप्तमंशितृतीयमयूख (२५८९)

मंगि कहत लिय मंगि प्रसू सिखयो सु जोधपुर ॥

पातुरि सुवत्त गजसिंह प्रति सूचि कहिय मम एह सुत ॥  
लिखवाइदेहु कहि साह लग जोधपुरहि इहि पट्ट जुत ॥२३॥

अंगज जेठो१ अमर वीर बिनु मंतु बिचारत ॥

पातुरि सासन प्रबल धुवहिं करियो इत धारत ॥

रहोरन अधिराज रंच प्रतिपति मूढ रहि ॥

दुख्यो कलि१ कंदर्प२ चित्त रत पट्ट अभीष्ट चाहि ॥

बुल्लयो स्वपुल जसवंत बुध पट्ट कनिष्ठहु पाइहै ॥

हमरे अभाव एहहि हुलास चामर१ छत्र२ चलाइहै ॥२४॥

प्रमदासन इस प्रमद दै रु पत्तो जब दिखिय ॥

हजरतकेहु हजूर करन जोरि सु विभ्रति किय ॥

अंगज जेठो१ अमर लइहु नागोर अप्प लिपि ॥

जोधपुरहिं जसवंत२देस जुत पाइ रहहु दिपि ॥

ओरहु बिसेस कति हेतु इह मिलत मनि सुलतान सुहि ॥

प्रतिलोम पिखिख अंगज१ अनुज२ जुग२ ठाँ करिदिय लेख जुहि २५

कछुहु वीरमनि कुमार अमर जनकहिं नन अखिय ॥

साहलिपिहु धरि सीस रहत नागोरहि गखिय ॥

इम पट्टप जसवंत जनक सम्मत हुव अनुजहु ॥

बडीसुता संबंध प्रच्छे वह वरिय सता१९४१२ पट्ट ॥

क्रम जो तृतीय३रानी कहिय सिंह सुता सीसोदनिय ॥

कर्मवति१९५१२तास जेठो१कनी करग्राहेन तहँ नियत किय ॥२६॥

नृपपतनी नाम करि कथित तीजी३राजकुमरि१९४१३ ॥

१ माता के सीसने अनुनार ॥ २३ ॥ बडा पुत्र अमरसिंह बिना अपराध थाता  
भी २ निश्चय ही ३राठाडोंका राजा उसकी प्रवृत्ति में; अथवा उस अमरसिंह  
के बडप्पन में अर्ख रहकर ४ कामदेव के युद्ध में दबकर ५ छोटा ही पावेगा  
॥ २४ ॥ ६ बादशाह की हजूर में हाथ जोड़कर अर्ज की ७ आपके लेख से ८  
प्रकाशित होकर ९ उलटापन ॥ २५ ॥ १० पिता की सलाह से छोटा होगया  
११ पीछे १२ विवाह १३ निश्चय ॥ २६ ॥

तनया पहिली शतास बिंद जसवंत लई वरि ॥

बदत किते किय व्याह महिपपन लहि कबंधमनि ॥

कुमरपनहि कंति कहत वरी दुलही सु दुलह बनि ॥

सक बिदित तत्थ निश्चय सहित कहिय तत्थ लिपि प्रकट करि  
खिल जे उदंत बिचबिच अखिल भासि निकट भवदिन्न भरि ॥२७॥

पुढा १ पर २ नहि नियत बिदित जान्यो जिन्ह बत्तन ॥

तिन्ह संभव होइ तिम मिलत समुझहु श्रोता मन ॥

बरसन अंतर बत्त जदपि हम जोरिदई जहँ ॥

लेहु सुनत अनुलोम शतजहु प्रतिलोम २ भाव तहँ ॥

कहुँ कथन सिंह अवलोक १ क्रम भेक फाल २ क्रम कहुँ भनि

॥२८॥

उदयनैर सन आत सिखव दै नृप प्रबोधसह ॥

निज काका हरि १६३।३ नाम अरहि दिल्लो पठयो वह ॥

तिम सिखयो मद तजहु भजहु जवनेस नम्र भति ॥

इम न रहहु उनमत्त गहहु प्रमुपास दासगति ॥

गुगुरै रहैं जिम स्वीयगृह जिम न लहैं खिन पिमुनजन ॥

जल १ दुंदु २ मिलत इक १ होइ जिम मिलि तिम सद्वहुराव मन ॥२९॥

पहिलै बुरहानपुर रोपे जिहँ भुज बेधे रन ॥

बलि पकरयो भरि बत्थ बेधि तस पैगघ निबंधन ॥

१ दुलह ॥२७॥ इन बातों में पटिले कौन हुई और पीछे कौन हुई यह क्रम नहीं जाना  
सो जहां जिसका सम्भव होवे तहां तैसा आनामन समझ लेवें इन वार्ताओं में  
वर्षों का अन्तर है तो भी हमने जोड़ दी है परंतु वहां २ पाहली पहिले और पिछ-  
ली पीछे कही गई है जिसमें ३ उलटा क्रम नहीं है इन में कहीं कहीं तो सिंहावलोक-  
न (सिंह अपने सारे हुए भक्ष्य को आगे चलते समय पीछा फिरकर देवता  
है) क्रम से और कहीं कहीं भेक फाल (बैठक कोई छलांग छोटी और कोई  
मोटी भरता है) के क्रम से कही है ॥ २८ ॥ ४ शीघ्र ५ नम्रता की रीति में  
६ समय ७ जुगल ॥ २९ ॥ ८ बाण से शाहजहां के भुज को बेधा था और उ-  
सी शाहजहां की ९ पगड़ी के १० बंधन से बांधा था

हरिसिंहका शिकार में सिंहको मारना। सप्तमराशि-तृतीयमयूख(१५९१)

दिय कैद हु भय दुसह प्रनत किंकर बिधि प्रेरिय ॥  
सौहि खुरुम३९।२अब साह हुं वरु ओगुन१गुन२हेरिय ॥  
हीते न होतु लोदिन हनन पाते किम गुगुर पर ॥  
न बढे प्रवीरपनसौहि नर प्रभु देखत सेवन प्रचुर ॥ ३० ॥  
इम प्रबोधि हरि १९३।३एह भूप दिल्लियपुरभोजिय ॥  
जिहि उदत तह जाइ कछु न सिछा सुभिरन किय ॥  
इक समय आखेट हन्यो असिकारि मइह हरि१९३।३ ॥  
सु असि दिखावन साह कहिय मन रीक दैनकरि ॥  
कहि सु कृपान गहि सुष्टि कर दिय तदय करि साहदिस ॥  
सुगलेस हरि१९३।३सु मदभक्तमन रक्खयो तबहु पचाइ रिस।३१।  
दिल्लिय गय बुंदीस जवन पति तबहु भेजि जन ॥  
सो माधव१९३।२बल सहित क्रीतिकहि बुल्लयो कोसन ॥  
बल धरि सु फरमान अरज माधव१९३।२पठई यह ॥  
प्रभुके अंतुल प्रसाद लखो बेभव नै दुर्लह ॥  
पुहवी प्रधान नवपरगना१नियम धाम कोटा२नगर ॥  
गज३बाजि४चमर५गढ६कोस७गन विविध मिले सब वस्तुवर।३२।  
बुंदीसन कहि सहित अनुग बंधिय नव आलय ॥  
पातें करियन उचित चर्य उपहार सबै चर्य ॥  
परिगह१सुभट२प्रधान३थान नूतन इम थप्पहि ॥  
आदर१बसु२अधिकार३सवन अधिकार समप्पहि ॥  
करि देस अभय धरि रच्छकन सीमा स्ववस जमाइ सब ॥  
सदनहिं सन्हारि चुवन चरन औहो पासहिं दास अब ॥ ३३ ॥

॥ अष्टपात् ॥

१ नम्र करके २ चाकर की रीति से प्रेरणा की ३ बहुत चाकरी देखते हैं ॥ ३० ॥  
४ शिक्का ५ शिकार में हरिसिंह ने खड्ग से सिंह को मारा ॥ ३१ ॥ ६ आपकी  
अधिक प्रसन्नता से ॥ ३२ ॥ ७ सेवक ने नवीन घर बनाया है ८ संग्राह्य सा-  
मग्री का ९ संचय करके १० परगह सहित ॥ ३३ ॥

नृपकाका अधिनम्र अरज माधव१९३।२ पठाइ यह ॥  
 अबलग निबसि अंगार स्वीय जन धरि सन्धारि सह ॥  
 उदयनैर विधि ऊढ अधिपबुंदी जब आयउ ॥  
 माधव१९३।२ दै फरमान बहुरि तब साह बुलायउ ॥  
 संगहि तस रैन१९२।१ सुव सज्जि निज सर्व गर्वमति ॥  
 पहुँच्यो दिल्लिय मनत सिक्ख भंगी न सता१९४।१ प्रति ॥  
 सुनतहि तदीय आगम सभा हजरत बुल्लयो हितसहित ॥  
 सेवन स्वकीय पहिलो सुमिरि उर लायो कर ऐँचि इत३४  
 ॥ पट्पातु ॥

उपालंभ कहु अप्पि पास चिर करि आगमपर ॥  
 दियउ खास दीवान सतत अप्पन छिग ओसर ॥  
 सक दुव नव नृप१६९२ समय आत नृप रैन१९२।१ प्रसू इता ॥  
 दिय बुंदिय तजि देह हेरि जिहिँ जियत सर्वहित ॥  
 नृप सन्नुसल्ल१६४।१ विधि करि नियत प्रेतकरम साखिय प्रथित  
 दिय द्विजन पुरट१ गो२ छिति३ प्रमुख करि अमेय व्यय  
 श्रुतिकथित ॥ ३५ ॥

बल्लनोति अन्नविनु रतन१९२।१ पीछे चउ४ समरहि ॥  
 अलप दुग्ध आहार नत सु तापस दुँकर बहि ॥  
 अँवद त्रि वसु ८३ लाँहि आयु सद्धि सब विधि सबकै सिँव  
 इमसक उक्त अनेह देह परिहरि पैत्ती दिव ॥

महिपाल भरत प्रपितामही धरि संजैम१ अँवधान२ धुव ॥  
महिदेव१ जाति२ पुरजन३ प्रमुख भोजि अखिल किय कित्तभुव।३६।

१ अत्यन्त नम्रता से २ घर पर रहकर ३ विधि पूर्वक विवाह करके ४ रत्न-  
 सिंह का पुत्र ॥ ३४ ॥ ५ समय (अवज्ञाश) ६ विदित ७ स्वर्ण ८ वेद के कथ-  
 नानुसार अप्रमाण खर्च करके ॥ ३५ ॥ ९ बाल्योति १० कठिन ११ वर्ष १२  
 कल्याण १३ कहे छुप समय में शरीर छोड़कर १४ स्वर्ग में १५ गई १६ इन्द्रियों  
 को रोककर १७ सावधान हुआ १८ ब्राह्मणों और अपनी जातिवाले पुर के  
 लोगों सहित सबको भोजन कराके



छल महल १ पुनि छितिप रचन बुंदिय आरंभिय ॥

केसवमंदिर १ \* कमन पुरी पट्टनि प्रारंभिय ॥

पृथुल १ तुंगर प्रासाद उभय २ अद्भुत अपुब्ब इम ॥

वनतभये अतिवेग लगेलकखन जिनमें जिम ॥

नृपरचित थान ईतगहु निखिल पुनि सूचहिं अवसानपर ॥

सब वत्तमैहि संनसौ सता १ ९४ १ बधिय धुरंधर कित्तिबर १ ३७ ॥

माधव १ ९३ १ २ दिखिय सुदित सहित जगनाथ २ ९३ १ ४ सहोदर

अनुज तास दिन इकक १ साह पुच्छयो लहि ओसर ॥

जंपहुं रे जंगनाथ १ ९३ १ ४ दुहुं रन माता इकक १ कि दुव २ ॥

हो यह इक १ दंगहीन समुक्ति सुहि प्रदनरैन १ ९२ १ सुव ॥

अखिय हजूर मम अखि इक १ गदैविसफोटैक फुटिगय ॥

सुनि साह अखि फुटिय श्रुतिहु सुन पूछयो पुनि कहूं समय ३८

इत लोदी अफगान समर भरिपरत चउधहि सुत ॥

कीलागढ तजि चकित जियहि लैगो साध्वसै जुत ॥

जिहिं अवसर अव जानि जोर पकरयो पुनि जुटन ॥

बल अर्धभ्र बल बंधि लग्यो दिखिय धर लुटन ॥

गयपैठि बहुरि कीलागढहु जंपत इमहु कितेक जन ॥

बहि सुतन वैर बालन चढ्यो पैड़पैड़ मंडत प्रधन ॥ ३९ ॥

दखियन जन इम दुखित पुनिहु दिखिय पुकारिय ॥

बललोदी अव बहत दैमिजु हड्ड ६ २ न दुखकारिय ॥

उनहिं पठावहु अवहु साह निजकज्ज सुधारन ॥

वेहि चहतरेन अंडरै मरन १ अलसन अरि मारन ॥

॥ ३९ ॥ \* सुंदर १ बड़ा २ ऊँचा-३ महल ४ और भी ५ सब ६ अचुशाल के अन्त समय पर कहेंगे ॥ ३७ ॥ ७ सगा आई ८ समय पाकर ९ कहा १० एक नेत्र से काला था १२ माना (चंचक) के ११ रोग से ॥ ३८ ॥ १३ भय सहित १४ बहुत सेना से बल परांधकर ॥ ३९ ॥ १५ देड देकर १६ धिक्कार देकर निकाला १७ निर्भय

सुनि साह बुल्लि माधव१९३१ सुमति\*अंसन थप्पि सराहिंअर ॥  
 दै ताहि रीअ१ सह स्वीयदल२पिल्लयो खानजिहानपर ॥४०॥  
 स्वीय जनक दिय सत्त७ रीअि रैन१९२१हिं जयकारन ॥  
 तवहि परगनां तेहु बहुरि छिन्नत किय बार न ॥  
 सुत हरि१९३३ बुल्लयो साह सां न पठयो जिम संभर ॥  
 आगसं सिर धरि एह धनी बनि छिन्निलई धर ॥  
 तामांहिं तीन३दक्खिनतरफ कहे परगनां नाम क्रम ॥  
 जीरपुर१खैर आबाद२जहँ तीजो३चैचत३आढ्यंतम ॥ ४१ ॥  
 ए त्रय३माधव१९३१अर्थ प्रथित चोथो४खलजीपुर४ ॥  
 चउहि अप्पि हित चाहि आनि विरुदं उछाह उर ॥  
 बखसि खास गज१बाजि२कटक अयुत१००००हि सहायकरि ॥  
 मनहु राम हनुमान इम सु पठयो दट्टन अरि ॥  
 बुंदीस सता१९४१ तैसैं विजय लूटहु विनुतोपन लहैं ॥  
 जातहि इतोक माधव१९३१ जहाँ कृपा दुरदिस अंतर कहैं ॥४२॥  
 रैन १९२१ सुतहु रनरसिक सज्जि अप्पन वैरूथ सब ॥  
 साह अयुत१००००दल सहित तानि मुच्छन हंक्रिय तब ॥  
 बीजापुरडिग१बदत कति रु तासों उत्तर१कति ॥  
 कति रेवा परकूल२तुली सूचनं फोजन तैति ॥  
 कछुकाल तोप संग्राम करि निडर रंच देरहु न किय ॥  
 तिहिं खिन उठाइ माधव१९३१तुरग कररी बग्नन बीच किय ॥४३॥  
 नकिय१चकिय२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥  
 उडत तरत्तर१ अमित सीस जिततित आसि संक्रम ॥  
 मुंमन गिनहु निज समय मुमन चटकत२गुलाबसम ॥

\* कथा थापकर १ शीघ्र ३ भेजा ॥ ४० ॥ १ अपराध २ अत्यन्त धनवान् ॥४१॥  
 ॥ ३ प्रसिद्ध ४ उत्साह वर्धिनी स्तुति से ५ सेना ॥ ४२ ॥ ६ सेना सजकर ७  
 सन्मुख होकर लुड़ी ८ पंक्ति ९ घोड़े की वाग को करड़ी करना दौड़ाने  
 का सूचक है ॥ ४३ ॥ १० खड्ग चलने से ११ श्रेष्ठ मनवालों के मन

माधवसिंहका दक्षिण विजय करना] सप्तमेराशि-तृतीयमयूख (२५९५)

कर१पय२ पल्लव१किरन तरुन लोहित किंसलय२तति ॥

गुटिका१अलिङ्गन गुंजि कुंसुम१लोचन२विकसे कति ॥

गज१छिन्नभिन्न१मानहु गिरि२न सुम किंसुम२चल वात सह ॥

केतन१रसाल२पिक१यट२करि किय माधव१९३१माधव कलह ॥

आयो उलटत उदधि इक्क१ वीरहु अरि अहुन ॥

जो खल खानजिहान हन्यो निर्दय बढि दहु६१न ॥

परि दुश्गोर भट प्रचुर लुत्थिपर लुत्थि बिलगिय ॥

पलरासिन लहि पंति भूख पिसितासिन भागिय ॥

दुस्सह भजाइ दक्खिनदलन बलन विजै बहि चलन चहि ॥

पहुँच्यो हजूर माधव१६३१प्रथित लोदीसिर१सह किंति२लहि१४५॥

मुनसुव दिय सुगलेस दहु६१कहैं तीनहजारी ३००० ॥

इभ१हय२भूखन३अपि किन्न अधिक सु अधिकारी ॥

सेवन हरि१९३१३मद्वयो न रौंधि उनमत्त भाव रस ॥

गढ तस ले गुंगोर बखति किन्नौ माधव१९३१वस ॥

रंचक सिटाइ आदररहित दहुवती पुनि आइ हरि१९३१३ ॥

बुंदीस उपातांभित वस्यो कापरनि सु निजवास करि ॥ ४६ ॥

दिल्लोपुर बहुदिवस रह्यो माधव सेवन रत ॥

प्रतिदिन अधिक प्रसन्न साह रक्खिय नतिसंगत ॥

सुता विवाहन सिक्ख पाइ कोटा आयउ पुनि ॥

जयसिंहहिं जामात चहि रु लुल्लयो उपदा चुनि ॥

अपने उस समय में सुलाव के गुप्प फूलने के समान फूले २ कलियों की पं-  
क्त के समान १ रक्त में हाथ, पैर और अंगुलियों गिरती हैं २ वन्दक की गो-  
लियां रूपी ४ अनारों का समूह ५ पुष्पों रूपी नेत्र फूले, कटे हुए हाथी हैं सां ही  
पवन से लटायमान ६ केमला (हाक के फूल) हैं ७ ध्वजा रूपी आम और ८ बंटा  
रूपी कायल करके माधवसिंह ने ६ उस युद्ध को वसंत ऋतु के समान कर-  
दिया ॥ ४४ ॥ १० मांस के समूह को लेकर ११ मांसभोजियों की भूख भागी  
॥ ४५ ॥ १२ पागलपन में रंगा हुआ रहा ॥ ४६ ॥ १३ सेवा में प्रीति करके

बनि दुलह कुम्भ पत्तो तबहि मंडि बिबिध अन्नरूप मह ॥  
 दिन्नी बिबाहि तनया त्रिदित सहि समय बिधि प्रीति सह ॥ ४७ ॥  
 प्रभु कविकुल परपुरुष मान १६७१ अभिधान सुद्धमति ॥  
 महमानी तह मंडि असन चउ४ बिध भावित अति ॥  
 निखिल बरात निमंत्रि सहित जाचकर जन संघन ॥  
 सह भट ३ माधव १९३१ सहित सकल भाजे पटुतासन ॥  
 तिनसौहि वृत्ति माधव १९३१ तदनु लगि प्रसभा रिस करि लई ॥  
 अरु सौहि दई महियारियन भूप सुनहु यह जिम भई ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

बुदी पहिलैं बारहठ, सूचिय कवि सामोर ॥  
 संतति तिन्ह हुव नष्ट सब, जब उदक बिधि जोर ॥ ४९ ॥  
 तबहि उदैपुरवास तजि, जात जोधपुर जानि ॥  
 नृपको लहि सम्मत निपुन, कुमरहु करि गुरु कानि ॥ ५० ॥  
 सावरतैं बुल्ले सुकवि, क्रमि सम्मुह हुवर कोस ॥  
 ईस्वर १६५१ बुन्दी आनिकैं, तिम रक्खे निज तोस ॥ ५१ ॥  
 कुमर भोज १९३१ सह बुल्लि कवि, पुनि कासी खिन पाइ ॥  
 अधिपवृत्ति दिय ईस्वर १६५१ हिं, सुर्जन १९०१ उचित सुहाइ ५२ ॥  
 परसुराम १६६१ सवैल १६६१ प्रमुख, तिनके पंचपतनूज ॥  
 तैं चउत्य ४ खंधिल १६६१ ४ तिमसु, पुनि माधव १९३१ कृतपूज ५३ ॥  
 निठि निठि कोटानगर, जिमतिमको हुंव जान ॥  
 तिन्ह दै निजकुलवृत्ति तैं, माधव १९३१ तिम किय मान ५४ ॥  
 जयसिंह हिं तिनके तनुज, महमानी दिय मान १६७१ ॥  
 पुनि माधव १९३१ जिम खैरपन, नृप हुव गर्वनिदान ॥ ५५ ॥  
 बुन्दीसन नृप भिन्न बजि, मान १६७१ रोधकिय सुद्ध ॥

॥ ४७ ॥ १ समूह २ हठ करके ॥ ४८ ॥ ३ आनेवाले समय के कर्म फल से ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ४ चलकर ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५ छोटे पन से ६ राजा का गर्व ही कारण हुआ ॥ ५५ ॥ ७ मूर्ख ॥ ५६ ॥

आत रुक्यो न लवान१ यह, सता१९४११ डिग२हु मन सुद॥५६॥

सता१९४११ समन भूपहु सुन्यो, इम खिजि वृत्ति उतारि ॥

अप्पी कवि महियाःरियन, मान१६७११ मान सठ भारि॥५७॥

लघु निवसंथ इक१ मोलखी, इनके रक्खि अधीन ॥

छिन्नि इतर सब किय छमहु, मिश्रन तलु जल मीन॥५८॥

हिंडोली जिम ताल हुव, बनिक् प्रधान विधेय ॥

कहिमत सब अग्रिम किरन, सह विस्तर यह श्रेय ॥५९॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीवसु-  
धावरशत्रुशल्यचरित्रे शत्रुशल्यस्योदयपुरविवाहानेहसि हयमारुह्य तो-  
रणावन्दनाद्वरिदासचारणस्य शत्रुशल्योपालम्भप्रदान१, उक्तहेतोरि-  
तरचारणार्थकरिदायकशत्रुशल्यप्रताडयस्य दुर्दशां विधाय हरिदास-  
स्य शत्रुशल्यसेनायां तदश्वमोचन२, शत्रुशल्यस्य चारणादियाचका-  
र्थसप्तशतकरिसहितसहस्रमिताश्वयुतत्रिंशदयुतदानकरणा३, अनारां-  
नामवारांगनाप्रसादाङ्गजसिंहकनिष्ठात्नजयशवंतसिंहयोधपुरराज्या-  
सादन४, कथापूर्वापरापरिज्ञानहेतुकसमयानिश्चयसूचन५, बुन्दीपति  
शत्रुशल्यपितृव्यहरिसिंहोन्मत्तताभणान ६, समेककरदक्षिणदेशस्थ

१ पोलपात पता उतारकर ॥ ५७ ॥ २ आग ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में शत्रुशाल के उदयपुर विवाह करने के समय घोड़े पर  
आरुढ़ होकर तोरण बांधने के कारण हरिदास चारण का शत्रुशाल को उपा-  
लंभ देना १ उपरोक्त कारण से अन्य चारणों को हाथी देनेवाले शत्रुशाल के  
दिधे हुए घोड़े की दुर्दशा करके हरिदास का उस घोड़े को पीछा शत्रुशाल  
की सेना में छोड़ना २ शत्रुशाल का चारण आदि याचकों को सात सौ हाथी  
और एक हजार घोड़ों सहित तीन लाख रुपयों का त्याग देना ३ जोधपुर  
में अनारां नामक पातुरी की प्रसन्नता के कारण राजा गजसिंह के छोटे पुत्र  
यशवंतसिंह को जोधपुर का राज्य मिलना ४ कथा के पूर्वापर नहीं जानने  
के कारण समय के निश्चय नहीं होने की सूचना करना ५ बुन्दी के पति शत्रु-  
शाल के काका हरिसिंह की उन्मत्तता का कथन ६ रत्नसिंह के छोटे पुत्र ना-  
थसिंह को दक्षिण में खानजहान को युद्ध में जीतने के कारण बादशाह ज-

खानजहानविजयाच्छाहजहांयवनेन्द्रस्य रत्नसिंहकनिष्ठात्मजमाधव  
सिंहार्थसहस्रत्रयमिताश्वाधिपत्यप्रदान७, कोटाप्रतोर्लापात्रत्वस्य मि  
श्रणाशाखीयचारणापरित्यागान्महियारियाशाखीयचारणासादनं त  
तीयो मयूखः ॥ ३ ॥

आदितः पंचदशोत्तरद्विशततमः ॥ २१५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

॥ दोहा ॥

प्रभु तुमरे कुल परपुरुष, नृप मानिक्य सनाम ॥

क्रम चौथो४ इहिनाम करि, धुव हुव संभरधाम ॥१॥

नगरकोट गो जब नृपति, व्याहन चरम बिवाह ॥

शेरनि सुकामन धाम सब, बितरे सुजस बिवाह ॥२॥

हम कुल तब परपुरुष हुव, चंडकोटि मति चंड ॥

बाद छद् भाखा मिश्र बदि, दिय बादिन जिन दंड ॥३॥

मिश्रन दजोर नाम महि, जिनको ते जँहँ जाइ ॥

सुकवि रहे मानिक्य सन, पटालय१ पुर पाइ ॥४॥

कवि तिनके कुलमें करन१५३१, पीछे हुव मतिपूर ॥

निबसे जे भरुसों नियत, दिस नैर्ऋत४ कछु दूर ॥५॥

करन१५३१पुत्र हुव दोल१५५१ कवि, तिनकै हुंगर१५५ तत्थ ॥

विजयसूर१५६१ तिनके विदित, सूर१ सूरि२ गुन तत्थ ॥

जिन लहि कबहु दुःकाल जब, अर्बुद जनपद आई ॥

बँटी कह व्याही बहिनि, भाँम समुद्र सुमाइ ॥ ७ ॥

सुरामत जिहिं भाम सठ, मतिबिनु संसक निमित्त ॥

हांगीर का तीन हजार मनसब देना ७ कोटा के पोछपात पन की वृत्ति मीशब  
शाखा के चारणों से छूटकर महियारिया शाखा के चारणों को मिलने के  
का तीसरा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१५ मयूख हुए ॥

॥१॥ १ अन्तिम बिवाह २ मार्ग के सुकामों के ॥२॥३॥४॥ ३ मारवाड़ से ॥५॥ ४ पंडित  
॥६॥ ५ देश में ६ बाटी शाखा के चारण ७ बहिनीई ॥७॥ ८ एक खरगोस के कारण

कुंदीके ईश्वरकविकी संततिका वर्णन ] सप्तमराशि-चतुर्थमयूख (२१६६)

विजयसूर१५६।१ हनि सत्रु वनि, वंधिय अपजस वित्त ॥८॥

जरत संग तिनकी जुवति, पूरन गर्भ प्रवीन ॥

दौरि पिष्टि सिसु कहि द्रुत, देय ननंदहि दीन ॥ ९ ॥

हुव तिनको इस पिष्टहव१५७।१, धरा विदित अभिधान ॥

जिम सुकुंभनृप कोटि१०००००००जिन, सुररितजी तून मान ॥१०॥

तिनहिं गोरं दिय अवज१०००००००००तव, वच्छराज वरवार ॥

वाधनवार१ सहित बलि, सासन सप्तक७ सीर ॥ ११ ॥

तिनके हुव ग्रह सूर१५८।१तिम, सुत तिनके महसूर१५९।१ ॥

अंगज तिन्ह आनंद१६०।१ इम, प्रथित भक्ति गुन पूर ॥ १२ ॥

कर्मानंद१६१।१सनाम कवि, सुत तिनके सुभसक्त ॥

वैष्ण१तनय२ए हुव२विदित, भये मुख्य हरिमक्त ॥ १३ ॥

कर्मानंद१६१।१तनूज कवि, धरिय लुंव१६२।१ अभिधान ॥

तिन्ह बुझिय चित्तेर तव, रायमल जब रान ॥ १४ ॥

सासन उंटोलाव१ सह, देय तिनहिं सब दत्त ॥

करि हित रखे लुंव१६२।१कवि, रायमल अनुरत्त ॥ १५ ॥

लुंव१६३।१सुकवि चउ४ सुत लहे, प्रष्ट सुनाम१६३।१प्रगाथ ॥

तदनुज वामन१६३।२नाम तिम, रायमल१६३।३अरु नाथ१६३।४ ॥

सुत हुव तीन३सुनाम१६३।१कै, माधव१६४।१भानु१६४।२सुमंत्र ॥

अरु तीजो३गोइंद१६४।३इम, लय३हि रान परतंत्र ॥ १७ ॥

तनु अपज माधव१६४।१तजत, अपि भानु१६४।२तिन थान ॥

प्रथित रान संग्राम पहु, मन्ने अति सनमान ॥ १८ ॥

जकखमूल जब रनरहे, महिपरेन१ रविमल२ ॥

॥ ८ ॥ १ पीठ फाड़कर २ ननंद को दिया ॥ ९ ॥ ३ पीठवा (पृष्ठवच) ४ नाम  
१ महाराजा कुम्भा के छोड़ रुपयों के दान को २ सुरइकर लुण के समान छोड़  
दिया ७ अजमेर के गोड़ राजा बछराज ने ८ सासन (उदक) ॥ ११ ॥ १२ ॥  
१ समर्थ २० पिता ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

उत हुव विक्रम१ भूप इत, सुरतान२सु बुधसल्ल ॥ १९ ॥  
 विक्रम अखिलय कवि१ बुध२न, करहु मदग्रज किति ॥  
 मरिय मारि रविमल्ल१८८। मृध, जिम सब हड्डि१न जिति ॥ २० ॥  
 कविता तिमतिम सबन किय, मनिय कछु न कवि भानु१६४२ ॥  
 तिनपर विक्रम रुद्धि तव, किय दग कोप कृसानु ॥ २१ ॥  
 जिहिं तिनतैं सब ग्राम जुत, उंटोलाव१ उतारि ॥  
 असनहिं रक्खिय रिद्धि इक१, निजढिग गमन निवारि ॥ २२ ॥  
 हठिदासी सुत रान हुव, विक्रम हनि वनवीर ॥  
 नाये कवि तासहु निकट, सो रिद्धिहि गिनि सीर ॥ २३ ॥  
 जबहि उदय हुव रान जिहिं, हठन सुकवि हकारि ॥  
 सत्य कहहु अखिलय सुपै, न कवि कहिय निरधारि ॥ २४ ॥  
 लाई छितिहु दैबेलग्यो, इमहि प्रताप उदार ॥  
 क्रम दोहु२न हठ लंघि कवि, सोहु न किय स्वीकार ॥ २५ ॥  
 सच्ची वरान दै सपथ, पुनि जब कहिय प्रताप ॥  
 कहि जिम हुव तिम तवहु कवि, इलां गत न लिय आप ॥ २६ ॥  
 तिम निकसत मेवारतैं, तजि दिन्नौं तिन देह ॥  
 मन्तहु नृप यह अप्पमत, अब बहुसम्मत एह ॥ २७ ॥  
 मिथन अप्रज भानु१९४२मृत, उदैपुरहि विधि अंत ॥  
 तब ईस्वर१६५१गोइंद१६४३सुत, मुख्य भये दगमंत ॥ २८ ॥  
 जिनतैं साहस१सपथ२जुत, पता नृपहु लाहि पट्ट ॥  
 किय निदेस सच्ची कहन, बढहु जथातथवट्ट ॥ २९ ॥  
 ईस्वर१६५१तब जिम हुव अखिल, इत१उत२मृत उदंत ॥

१ बुद्धि के शाल ॥ १९ ॥ २ मेरे बड़े आई कीर्ति करो ३ युद्ध में ॥ २० ॥ ४ नेत्र ५ अग्नि ॥ २१ ॥  
 ६ ठीठ नामक ग्राम ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ७ गई हुई सृष्टि नहीं ली ॥ २६ ॥  
 ८ राजा राक्षसिह यह अपरोक्त वृत्तान्त थोड़े लोगों की सम्मति वाला है और  
 इससे आगे का वृत्तान्त बहुत लोगों की सम्मति का है ॥ २७ ॥ २८ ॥ ८ सत्यता  
 के मार्ग से ॥ २९ ॥



शुद्धीके मिश्रण पाळपातों को ग्राम देना] सप्तमराशि-चतुर्थमयूख (२१०१)

वरन्यों तहँ कविता विरचि, आधिप रैन छल्ल अंत ॥ ३० ॥

तदनु सुकवि वह वास तजि, किय मरु गम्य प्रकार ॥

सासन उटोलाव १ सह, देतहु न लिय उदार ॥ ३१ ॥

पैट हुतो जब जोधपुर, नास उदय नरनाह ॥

तव कवि ईस्वर १६५१ चिति तहँ, रहनलगे मरुराह ॥ ३२ ॥

कुमार भोज १९११ यह श्रवनकरि, कासी नृपहिँ कहाइ ॥

सासन लाहि जुळे सुकवि, गह्वे सपथ गहाइ ॥ ३३ ॥

सावरपुर पहुँचे सचिव, बुंदिय ओर बहोरि ॥

आनै ईस्वर १६५१ अग्य अति, जथा उचित हित जोरि ३४॥

नगर वरोदाके निकट, दक्खिन दिस गिरिद्वार ॥

कुमार समुख तहँ जाइ कवि, लायो सादर लार ॥ ३५ ॥

कस्यो वहरि तिन्ह संगकरि, कासीनगर कुमार ॥

सुर्जन १९०१ तहँ आदरसहित, आनिय सुकवि अंगार ॥ ३६ ॥

सूचित विधि सन करि सुपहु, तिम ईस्वर १६५१ कवि तथ्य ॥

दह ६१ नके किय बारहठ, अप्पि वृत्ति सह अथ ॥ ३७ ॥

नेग वज्रत वृत्ति जु निचत, गुरु तामै दुवर ग्राम ॥

अप्पिय वण्डनखेट १ अरु, भीमखेट २ अभिराम ॥ ३८ ॥

जव पट्टनि १ बस आय जे, अब लक्खैरि २ अधीन ॥

ऐसे निवसथ अप्पये, खट ६ करि दारिद खीन ॥ ३९ ॥

तिनमै सुरुष लवान १ तिम, देवाखेट २ दुपट्ट ३ ॥

पपट ४ वक्र ५ रु रामपुर ६, वस्ससे खट ६ जसवट्ट ॥ ४० ॥

केसवकवि सामोर कहँ, सनरसिंह १८११७ नरनाह ॥

प्रथम वरोदाघांत जे, दिय खट ६ ग्राम दुवाह ॥ ४१ ॥

तिन्हकुल कोहु गहा न तव, भिन्नदि रक्खिय भूप ॥

सुर्जन १९०१ जे खट ६ ईस्वर १६५१ हिँ, अप्पे तव अनुरूप ४२

॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥  
३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

तैंहँ कच्छोला१ सुरुप तिम, रोसुंदा२ हरिना३ रु ॥  
 दोडुंदा४ गिंदोलि५ दिय, चंपकखेट६ हु चारु ॥४३॥  
 कवि ईस्वर१६५१२ सकुटुंब क्रिय, वास अजस्र लवान ॥  
 इत हरिना कहूँ आगमन, बस तिन अटन विधान ॥४४॥  
 कवि ईस्वर१६५१२ कै नियति करि, पंच५ विदित हुव पुत ॥  
 परसुराम१६६१२ साँवल१६६१२ प्रथित, स्याम१६६१३ सुगुन  
 संजुत ॥ ४५ ॥

तिम खंधिल१६६१४ चोथो४ तनय, सबलघु पंचम५ मूर ॥  
 सहँसमल्ल१६६१५ अभिधान सो, पन रन अचलन पूर ॥४६॥  
 प्रकट बसाँपउ सहँसपुर, निबसथ जिनजिननाम ॥  
 जु अब रावरे भट्टजन, रहि भोगत प्रभुराम२०३१४ ॥४७॥  
 सहँसमल्ल१६६१२ पतनी सती, कहियत लालकुमारि१६६११॥  
 जो अपज पतिसह जरी, अतुल दुपकख उधारि ॥४८॥  
 परसुराम१६६१२ हुव पुत्रजुत, पट नगराज१७६१२हिँ पाइ ॥  
 साँवल१६६१२ सुत, भूपाल१६७१२ सुहि, भगवतदास१६७१२  
 सुभाइ ॥ ४९ ॥

सुत तीजे३ सुत स्याम१६७१३कै, कर्मचंद्र १६७१२ पटुकर्म ॥  
 चोथे४खंधिल१६६१४कै चतुर, मान१६७१२दलन अरिमर्म५०  
 ईस्वर१६५१२कै हुव सचिव इक, बनिक राम वसु बित्त ॥  
 दोडुंदा कवि तिहिँ दयो, चहि सासन बस चित्त ॥५१॥  
 कन्या हुव इक१ रामकै, सो हम्मीर१९०१२ सुथान ॥  
 द्विडोली व्याहीहुती, भनि समीप सुखभान ॥५२॥  
 दोडुंदा पाउसदिनन, कबहु न जाइ कनी सु ॥  
 आई घर रथतैं उतरि, स्वचरन पंक सैनी सु ॥५३॥

॥४२॥४३॥ १ निरन्तर लवान नायक ग्राम में रहे और इधर हरणा नामक ग्राम  
 में भी कभी कभी आते रहे ॥४४॥ २ भाग्य से ॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥ ३ शत्रु-  
 यों का भर्म दलनेवाला ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ४ कीचड़ में भीगे हुए चरणों से

माधवसिंहका ईश्वरकविके पुत्र को कोटा ले जाना] सप्तमराशि-चतुर्थमयूख (२६०३)

सस्मृ प्रति मंगिय सलिल, अंघ्रि न धोवन अक्खि ॥

बुल्लो वह तव बप्पकै, संचित धन जग सँक्खि ॥ ५४ ॥

कहि तासौं व्यय करि कछुक, बिगचि तालमय बीच ॥

नावचढी आवहु निलय, कबहु न लगौं कीच ॥ ५५ ॥

इहिँ अक्खिय तातहिँ यहै, तिहिँ जल संभव तुल्लि ॥

रचिय रामसागर सर सु, खरच खजानाँ खुल्लि ॥ ५६ ॥

हम्मं १९०१ कहिय मम द्रंग हृद, तुमरो है किम ताल ॥

कहिय बनिक तुमरो सु किम, हम चाहत जसहाल ॥ ५७ ॥

इत दोहुंदा सीम इम, मही रुकै जलमाँहि ॥

सो हमरी जानहु सदा, निज हृद हमरी नाँहि ॥ ५८ ॥

बनिकराम यह लिखि विदित, पुनि ईश्वर १६५ मत पाइ ॥

रुचिर रामसागर रच्यो, नव कासौर खनाइ ॥ ५९ ॥

कवि ईश्वर १६५।१ वपुहान किय, परसुराम १६६।१ लिय पट्ट ॥

रक्खिय सोदर नृप रतन १९२।१, बहिय दुगम कुल वट्ट ॥ ६० ॥

दक्खिनतैं जब आइ द्रुत, बुंदी माधव १६३।२ बार ॥

लोभी पुनि जावन लग्यो, सो कोटा लहि सोर ॥ ६१ ॥

परसुराम १६६।१ सन तव प्रनर्त, अक्खिय माधव १९३।२ एह ॥

संग देहु इक १६३।१ सुत २, गिनि स्वकीय मम गेह ॥ ६२ ॥

जंपिय कवि हम अल्पजन, तुम कुल प्रचुर प्रतान ॥

हाकिम कित है बारहठ, मित १ कवि २ बहु १ जजमान २ ॥ ६३ ॥

तदपि प्रसभ माधव १९३।२ तन्यो, कवि तव करि तस कानि ॥

अक्खिय खंधिल १६६।४ जाहु उत, माधव १९३।२ कवि हिय मानि ॥

माधव १९३।२ तब सुत मान १६७।१ ए२, मितहु चित्त मिलाइ ॥

विरसहु इम कबहु न बनै, जमहु अभय तँहँ जाइ ॥ ६५ ॥

आई १ पैर धोने को जल मांगा २ जगत साक्षी है ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

॥ ५८ ॥ नवीन ३ तालाव खुदवाया ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ४ विशेष नम्रता से

॥ ६२ ॥ ५ बहुत विस्तार वाले ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६ मित्र ॥ ६५ ॥

अकिखय खंधिल १६६४ अग्रज १हिं, माहिपवंस सबमाहिं ॥  
 मेटहु जो न बिभाग सम, यह तो स्वीकृत आहिं ॥ ६६ ॥  
 इम खंधिल १६६४ अरु मान १६७१ए, उभयरपिता १ सुत २ आनि ॥ ६७ ॥

मित मासन अंतर अवधि, दिय खंधिल १६६४ तजि देह ॥  
 किय तसथान सु मान १६७१ कवि, सुत माधव १६३१ अतिनेहा ६५  
 पै पहिलै चउ४ परगनाँ, खत बखसीस लिखाइ ॥  
 त्रय हजार ३००० सुनसव तखत, पुनि गुग्गोर १ सु पाइ ॥ ६६ ॥  
 बारनै १ हय २ भूखन ३ बसन ४, पंचम ५ प्रतिप्रसाद ५ ॥  
 आतहि कोटा पाइ इम, बढ्यो अहम्मति बाद ॥ ७० ॥  
 कन्या निज दिय कूरमहि, मिश्रन कवि तँहँ मान १६७१ ॥  
 जाचक १ स्वकरू बरात ३ जन, भोजे सब रुचि भान ॥ ७१ ॥  
 तदनंतर अप्पहिं अतुल, माधव १९३१ मन्नि महीस ॥  
 बुंदी १ जैपुर २ प्रतिम बनि, समयभर ओटयो सील ॥ ७२ ॥  
 कवि मान १६७१ हिं माधव १९३१ कहिय, ममकुल वृत्ति स्पमानि  
 इतरन लेहु न देहु अब, अधिपति कविपन आनि ॥ ७३ ॥  
 सफर भये तुम सिंधुके, जिन अब बुंदिय १ जाहु ॥  
 बरजि लवान २हु निज ब्रजन, लेहु विभव सुख लाहु ॥ ७४ ॥  
 हम भूपति १ तुम बारहठ २, उज्जहु अंगन आस ॥  
 अकिखय कवि सुनतहि अनखि, गर्वहु जिन लहु प्रास ॥ ७५ ॥  
 बुन्दीसम कवहु न बढहु, जिन गर्वहु मद जोर ॥  
 स्वीकृत तुम कुल कृति सन, अंसु रक्खन तजि ओर ॥ ७६ ॥  
 पुरबुन्दी १ रु लवान २पै, रुकिहे गमन न रंच ॥  
 अन्नदकाँ कहि दै अधिप, बिनु नृप पदहु अवंच ॥ ७७ ॥

॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ १ हाथी ॥ ७० ॥ ७१ ॥ २ बुन्दी और जयपुर  
 के सदृश यनकर गर्व का भार अस्तक पर ३ केली ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ४ और  
 की आश छोड़ो ॥ ७५ ॥ ५ प्राण ॥ ७६ ॥ ६ स्पष्ट (नहीं ठग कर) ॥ ७७ ॥

बुन्दीके पोछपात माहियारिया चारण होना]सप्तमराशि-चतुर्थमयूख(२३०६)

प्रति ओसर तुमकौहु पुनि, बुन्दीगमन विधेय ॥

गम्य रोध<sup>१</sup> अपजस<sup>२</sup> गहत, गमन<sup>३</sup> बहत जस<sup>२</sup> गेय।७८।

यह सुनतहि माधव<sup>११३।२</sup> अनखि, तहँ कविवृत्ति उतारि ॥

छिन्नि त्रि<sup>३</sup>सासन मुख्य छिति, मान<sup>१६७।१</sup>मानपन मारि<sup>७९</sup>

मित कर ग्राम जु मोलखी<sup>१</sup>, सो तस रक्खि सदाहि ॥

अक्खिय कवि सबठाँ अटहु, अब तुम रोध न आहि ।८०।

मिश्रन कुल कवि मान<sup>१६७।१</sup>तै, निजकुलवृत्ति निवारि

दिय कवि लखमीदासकौ, चहि सासन बसु<sup>८</sup>च्यारि ॥८१॥

माधानि<sup>१६।२२</sup>न सन तब मिटे, नियत मिश्रनन नैग ॥

अरु पाये माहियारयन, विधि उदकै लहि वेग ॥ ८२ ॥

इम मिश्रन<sup>१</sup> माहियारयन, बढिगो तबहि विरोध ॥

तामै व्याहि कनीन त्रिक<sup>३</sup>, बहुरि लयो सुखबोध ॥ ८३ ॥

पहिलै रहि बुरहानपुर, सेयोखुमु<sup>३९।२</sup> बिसेस ॥

अब कोटा हुव भिन्न इम, वाको फल मिलि एस ॥ ८४ ॥

निबसथ ए पंचपहि नियत, इतके चम्पलि वार ॥

पाये तिम माधव<sup>१९३।२</sup> प्रसू, स्वक जीवन अनुसार ॥८५॥

जबहि मरी माधव<sup>१९३।२</sup> जननि, उहु सत्रह <sup>१७२७</sup>सक अंत ॥

आये तबहु न ग्राम इत, यह हुव ताम उदंत ॥ ८६ ॥

नृप भाऊ<sup>१९५।१</sup> सन जिनदिनन, रुष्ट हुतो ओरंग<sup>४०।३</sup>

कोटापति तब राम<sup>१८८।३</sup> कछु, सखिय हुकम प्रसंग ॥८७॥

इस रहि पंचपहि ग्राम इत, आगत<sup>१</sup> पुनि गत<sup>२</sup> आहि ॥

अवसर पर सब अक्खिहै, वर्णन नियम निवाहि ॥ ८८ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-

१ जाने योग्य को रोककर ॥७८॥७९॥८०॥८१॥ २ आनेवाले समय के शुभ फल से ॥८२॥८३॥८४॥ ३ चम्बल नदी के इधर ॥८५॥ ४ तहां ५ वृत्तांत ॥८६॥८७॥८८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के प्रपति शत्रुशाल के चरित्र में कोटा के पोछपात पत्र की वृत्ति मोक्ष शाखा के चा-

सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे कोटाप्रतोलीपात्रत्वस्य मिश्रणाशाखीयचार  
णापरित्यागान्महियारियाशाखीयचारणासादनेन ग्रन्थकर्तुः सक्षिप्त-  
वंशवर्णन १ ग्रन्थकर्तुर्दौडुंदानामग्रामान्तिकरामसागरतडागनिर्माण  
वर्णन २, कोटाराज्यस्य बुन्दीजयपुरराज्यसमत्वासादनकथन ३,  
ग्रन्थकर्तृकार्याणां भाविसमययातायातत्वंकथनप्रतिज्ञानं चतुर्थ  
मयूखः ॥ ४ ॥

आदितः षोडशोत्तरद्विशततमः ॥ २१६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इन दिवसन प्रभु राम २०३१४ इत, समय १ अर्ध २ अनुसार ॥

अंगरेज लोकन इहाँ, बढ्यो बहुल व्यापार ॥ १ ॥

रंगराजनामक रहैं, विजयनगर वसुधेस ॥

तोफा किम बहु भेट तस, व्यापारिन सविसेस ॥ २ ॥

बल्लारी १ पुरतैं विदित, उत्तर १ दिस जो आहि ॥

अन्न १ गुंडी २ तैं हु इम, जंपहिं दक्खिन २ जाहि ॥ ३ ॥

धारवार १ पुरतैं जु ध्रुव, थिर प्राची १ दिस थान ॥

जो मूटीगढ २ तैं हु जिम, पच्छिम २ ओर प्रमान ॥ ४ ॥

वातैं पच्छिम २ सँह्य अँग, तसपर २ सागर तथ्य ॥

गिनिचत ढिग गोवा नगर, पोर्तुगेजजन पर्थ ॥ ५ ॥

नदी तुंगभद्रा निकट, दक्खिन २ तट यह द्रंग ॥

रणों से छूटकर महियारिया शाखा के चारणों को मिलने के कारण ग्रन्थकर्ता  
(सूर्यमल्ल) के वंश का संक्षेप वर्णन १ ग्रन्थकर्ता के दौडुंदा नामक ग्राम के स-  
मीप रामसागर नामक तालाब के रचने का वर्णन २ बुन्दी और जैपुर के स-  
मान कोटा के राज्य के होने का कथन ३ ग्रन्थकर्ता के कामों का आने और  
जाने का भविष्यत् काल में कथन करने के वर्णन का चतुर्थ ४ मयूख समाप्त  
हुआ और आदि से दो सौ २१६ सौलह मयूख हुए ॥

१ समय के मूल्य के अनुसार ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ २ पर्वत का नाम है ३ पर्वत  
४ मार्ग ॥ ५

अन्नौगुंडी वामरअव, यहहु गिनहु तस अंग ॥ ६ ॥

प्रथम नदी विच रक्खि पुर, इन दोउरन हो एक ॥

नाम जास विद्यानगर, विद्यावढन विवेक ॥७॥

कोस दसक१०विस्तर कथित, बसि जिहिं दंग विरक्त ॥

आचारिज माधव उदित, भये विदित हरिभक्त ॥ ८ ॥

संप्रदाय पहिलो१ सगुन, इनकरि प्रकटयो अत्थ ॥

अधिपतिके मंत्री हुए, प्रथम हुते रहि पत्थ ॥ ९ ॥

अगग बसायउ दंग यह, बीरवक्र नरनाह ॥

नाम जास विद्यानगर, रक्खिय सफल सराह ॥ १० ॥

प्राकृतवानी नाम परि, विज्ञानयर बन्पौ सु ॥

विजयनयर देशीयविच, भावितबहुन भन्पौ सु ॥ ११ ॥

अगग जहाँके अधिपनै, फोजसहित फीरोज ८१॥

जित्यो दक्खिन साह जुरि, आहव विस्तरि ओज ॥१२॥

अव जिहिंपुर हो उक्त वह, रंगराज नरराज ॥

पालतहो निज राज्यपद, समुचित लहि सब साज ॥१३॥

बस्तु अंगरेजन बहुत, सखि भेट तस सज्ज ॥

लिखित हुकम नृपसों लयो, कोठी विरचन कज्ज ॥१४॥

रंगराज नरराजसों, लहि इम सासनलेख ॥

कारोमंडल कूल विच, रसा परखि रुचि रेख ॥ १५ ॥

### पादाकुलकम्

जिहिं पूरब१ मूटी१ गढजानहु, पच्छिम१ धारवार२ पहिचानहु

जिहिं दक्खिन १ बल्लारी१पुर जिम, उत्तर २ दिस अन्नौगुंडी२

इम ॥ १६ ॥

तैटिनि तुंगभद्रा दक्खिनतट, विजय नगर जो विजय बुधन भट ॥

जाको नृप हो रंगराज जहँ, जिहिं करि तुष्ट अंगरेजन तहँ ॥१७॥

॥६॥॥॥ १ सगुण ॥१॥१०॥११॥१२॥ १३ ॥ १४ ॥ ॥१५॥१६॥ २ नदी ॥ १७ ॥

कारोमंडलतट सतंत्र किय, कोठी गढ सम रचन मंत्र किय ॥  
 अक्खिय रंगराज अंग्रेजन, सो विरचहु मम नाम चिन्हसन ॥१८॥  
 इन अक्खिय कोठी १ हम अंकित, सहर २ रचहिँ तुमनाम असं-  
 कित ॥

आये जे पुरबतट कहि इस, तँहँ गढप्रतिम रचिय कोठी १ तिमा ॥१९॥  
 फोर्टसेंटजार्ज १ सु अभिधा फबि, छमन रचिय वह हट्ट दुर्ग छबि ॥  
 ध्रुव तँहँ रंगराज अभिधा धरि, रचनलगे पुर कलित कोल  
 करि ॥ २० ॥

सक सर अंक अष्टि १६९५ सम्मित सम, कतिकन मत रस अंक  
 अष्टि १६९६ क्रम ॥

अंग्रेजेन तँहँ रचि कोठी वह, विरचिय नगर सिंधुतट सुखबद ॥२१॥  
 दक्खिन १ पुर चुंगलपट्ट २ विदित, उत्तर १ पल्लीकाट २ भील इत ॥  
 इन्ह पुर १ भील २ दुहुँ २न के अंतर, विरच्यो नगर अपुव्व छटावर  
 विजय नगर दक्खिन धर वाचहि, रोहित तुरग कोन २ तासौ रहि  
 ललित पुव्वसागर तट लहियत, कारोमंडलनाम सु कहियत ॥२३॥  
 पल्लीकाट १ रु चुंगलपट्ट २, दिस जासौ उत्तर १ दक्खिन २ दुव २ ॥  
 तिन्ह विचकारोमंडल अंतर, कोठी १ पुर २ विरचे क्रय जस कर ॥२४॥  
 अक्खहिँ गढहिँ फोर्ट अंग्रेजन, सेंटजार्जगढ १ हट्ट २ नामसन ॥  
 किय व्यापारिन मंत्र असंकित, कोठी किय नृपनाम अनंकित २५  
 अब नृपनाम रचै पुर यातै, विहित कोल नहि बचन बिधातै ॥  
 इस तिहिँ पुर अभिधा विचारि उर, रक्खन लग्गे रंगराजपुर ॥२६॥  
 तँहँ नृप रंगराजके मंत्रिय, जानि नृपहिँ प्रतिमा प्रमत्त जिय ॥

॥ १८ ॥ १९ ॥ १ समथौ ने २ विदित ॥ २० ॥ ३ सुख प्राप्त करके ॥ २१ ॥ २२ ॥ ४  
 रुका, हुआ ५ अग्नि कोण ॥ २३ ॥ ६ भील लेकर ॥ २४ ॥ ७ अंगरेज लोग गढ  
 को फोर्ट कहते हैं इसकारण मदरासके गढका नाम फोर्टसेंटजार्ज है और कलकत्ते  
 के गढ का नाम फोर्टसेंटविलियम है ८ कोठी पर राजा का नाम नहीं रक्खा  
 ॥ २१ ॥ ९ उचित १० बचन का नाश नहीं करते ११ नाम ॥ २६ ॥ १२ मूर्तिमान्



सामरदानर दुवर उपाय अनुसरि, कहिय कहहु पुर जैनक  
नाम करि ॥ २७ ॥

छितिपति रामर ०३१४ अनेह पाइ छम, अंग्रेजन जान्यो फल उद्यम ॥  
गढ सोपुर १ सचिवन करि ज्यो गय, ज्यो तिन्ह कपटभये नर-  
उर २ जय ॥ २८ ॥

तिम नयपटु भल्ला जालम तव, कही सबन नमि रीझ १ खीज २ सब  
हुव अंग्रेज कुसल जव हाकिम, तस नती लिय बट तीजो ३ तिम  
इम प्रमत्त चिरतै हुव अधिपति, महि दै सचिवन चहत भोगमति ॥  
इम ठग रंगराजके सचिवहु, लंचा १ बट २ लिपिपत्र अपि लहु ३०  
प्रभुमै कहू न प्रभुत्व प्रमानत, जिम करिहौ सु होहि यह जानत ॥  
चीनापानिज जैनक नाम चहि, किय पुर फुट चीनापट्टन कहि ३१  
अंगरेज मन चहत हुते यह, स्वामी १ सचिव २ विरोध मचै सह ॥  
यातै सचिव कथित अब धार्यो, नृपको हुकम समूल निवार्यो ॥  
मंदराज १ चीनापट्टन २ महि, लहि सु दुर्नाम बस्यो तव खिन लहि ॥  
भूप्राची सागरतट भंडल, महीबिदित वह कारो भंडल ॥ ३३ ॥

सो तैह रंगराज सासनसन, उक्त रचिय कोठी अंग्रेजन ॥  
कोठी हुव पुवहु तैह केही, आनि उचित न हुती पर एही ॥ ३४ ॥  
सेंटजार्ज अभिधान रक्खि सो, अब बिरची रन उचित अक्खि सो ॥  
पुर मंदराज १ चीनापुरपट्टन २, धरि दुवर्नाम बसायो अति धन ॥ ३५ ॥  
व्यापारिन तासौ क्रय १ विक्रय २, अधिक बढ्यो फल भागधेय अय ॥  
वाहिसमय दिल्ली हु आइ अर, साहजिदान ३९१२ तुष्ट करि अवसर

१ रंगराज के पिता के नाम से नगर रचा ॥ २७ ॥ हे भूपति रामसिंह २ समय  
पाकर उन समर्थ अंगरेजों ने. ३ जिस प्रकार सचिवों के कारण सोपुरगढ गया  
और उन्हीं के कपट से नरवर विजय हुआ (ये दोनों दृष्टान्त हैं) ॥ २८ ॥ ४  
जालिमसिंह के पोते ने ॥ २९ ॥ ५ बहुत समय से ६ नजराना और ७ बट  
(विभाग) की, लिखावट देकर ८ शीघ्र ॥ ३० ॥ ९ रंगराज के पिता का नाम  
१० प्रसिद्ध ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ११ भाग्य १२ आगामि काल के  
शुभ कर्मों से १३ शीघ्र ॥ ३६ ॥

लेख निदेस तदीय तथा लाहि, चित्त कपोचित बंगदेस चहि ॥  
 नदीशरु पुर २ जँहँहुगली नामक, आइ तहाँ लेखिं भुव अभिरामक  
 तिहिँ प्रदेस नाना कोठिन तनि, व्यापारिन बहुलाभ गयो बनि ॥  
 अकबर ३७१ साह समय ए आये, छितिपर सनैसनै इम छाये ॥ ३८ ॥  
 सक कति कहत व्योम ससि सत्रह १७१०, इम किय मंदराज  
 कोठी वह ॥

हुव तिहिँ पुब्वहि बंग बलेस्वर, इम ग्रंथन मत १ लिपि २ कह्यु अंतर ३९  
 इत गोपालदास चंपाउत, जाचक पुब्व बचाये हितजुत ॥  
 तससुत सूर भये बहु तिनमैं, ख्यात प्रवीर बलूजाखिनमें ॥ ४० ॥  
 अमरकुमरदिग रहतहुतो यह, तसकरगन अज १ हुड २ घेरे तह ॥  
 बलू चढयो न अमर तँहँ बुल्लयो, तुम चढि भीर क्यौन असितुल्लयो ॥  
 बलू कह्यो है दुख गो १ बिप्र २ न, छिति ३ कै जातचढै भट छिप्र न ॥  
 स्वामी तब समुझहु हम हेलन, ओरहि बहु अज १ हुड २ उब्वेलन ॥ ४२ ॥  
 गदिय कुमर हम संकट साग्रह, साह पटा तजिकै मरिहौ सह ॥  
 अज १ हुड २ मोरि न आनत यातैं, बिरस भयो औसी बढिबातैं ॥ ४३ ॥  
 भई जोधपुर १ कति यह भाखैं, लाहि नागोर २ किते अभिलाखैं ॥  
 बिरस परंतु होत इम रस बढि, चंपाउत तजि पटा गयो चढि ॥ ४४ ॥  
 पत्तो बीर बलू सु उदैपुर, अग्घ कियउ जगतेस लाइ उर ॥  
 रान कहिय कहू रुपि रू रचैं रन, जिहिँ रवि देत सूरपन सौ जन ॥ ४५ ॥  
 बीर बलू बुल्लयो इक १ बारहु, रवि हमरो बीरत्व बिगारहु ॥  
 रविदिस यह तवतैं रदरावन, अर्धकाल लागि छारै उडावन ॥ ४६ ॥  
 इम सु तदनु दिल्लीपुर आयो, पटाबिसेस साहसन पायो ॥  
 पहिलैं कवि मति कुरन न पाई, इहाँ कही यह यौ स्मृति आई ॥ ४७ ॥

१ मोल लेन से उचित बंगाल को जानकर ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ २ धंगाला ॥ ३९ ॥ ४० ॥

३ चोरों के समूह ने बकरे और ४ भेड़ ॥ ४१ ॥ ५ अपराध ६ बचानेवाले  
 ॥ ४२ ॥ ७ आग्रह सहित ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ८ रावण के समान इठ रत्न-  
 चाला ९ अर्घ्य देने के समय सूर्य के सम्मुख भस्मी उड़ाने लगा ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

पुव्व१अपर२सवकोहि न पावत, उल्लटि१पलटि२वतैं इम आवत ॥  
 अधिप सता १९४११ हु सुता दूजी इत, कमनकुमारि १९५१२रक्खि  
 वय अंकित ॥ ४८ ॥  
 राजसिंह जगतेसरान हुव, धीदां बरन वर सु बुल्लयो धुव ॥  
 कमनकुमारि १९५१२ दिय ताहि लग्नक्रम, रचि सब संवय उचित  
 मनोरम ॥ ४९ ॥  
 जिहि अनुजा कल्याण कुमरि१९५१३ जिम, आयु अल्प करि सि-  
 सुहि मरी इम ॥  
 कन्या तस अनुजा रामकुमारि १९५१४, क्रम वय लहत यहहु सं-  
 भव करि ॥ ५० ॥  
 बंधू नृप चालुक्य बधेला, बुल्लि अनोपसिंह सुभवेला ॥  
 परिनाई चोथी४ हु सुता पहु, वितरि अखिल अखिलन समुचित बहु  
 अल्पहि हुव व्याह्न इन्ह अंतर, दु२कनी दिय जस छाइदिगंतर ॥  
 अमरसिंह गजसिंह तनै इत, जिम नागोर लह्यो तव अरि जितो५२॥  
 जुव्वन वय उद्धतपन जाकै, तदपि जनकसासन सिर ताकै ॥  
 तातैं लहि नागोरहु तुष्टहि, जिमतिम कियउ जवनपति जुष्टहि५३॥  
 तदपि जोधपुर देविन आढ्यंतम, कित नागोर तास क्रम कमकम ॥  
 इम जसवंत साह अधिकारी, किय लंचा पूरन बधिकारी ॥ ५४ ॥  
 अमर कबहु दीवान न आयो, व्याधि कछुक बहु दिनन दवायो ॥  
 नाम सलामतखान तवहि नमि, किय छल विन्नति साह गाह क्रमि  
 अमर रोगभिसु हमहिं डुलावत, अप्प अंगद दीवान न आवत ॥  
 कहिय साह जा एह सत्यक्रम, दम्म लेहु तासों दकै दम ॥ ५६ ॥

॥ ४८ ॥ १ पुत्री को देकर बरने के लिये २ निश्चय ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥  
 ३ प्रसन्न ४ भीति-युक्त किया ॥ ५३ ॥ ५ धन से ६ अत्यन्त धनवान् ७ कम  
 से कम ॥ ५४ ॥ ८ अपने स्थान (जगह) पर जाकर बादशाह से विनंती कीं  
 ॥ ५५ ॥ ९ नैरोग्य है तो भी सभा में नहीं आता ॥ ५६ ॥

सुनि यह \*पति पठाइ सलामत, तिम मंगे दम दम्न दिनन तत ॥  
 रोज तलब दैदै अमरसहु, लहि हठ न दिय दंडमैं लेसहु ॥ ५७ ॥  
 तदनु कबहु उल्लास होइ तैंहैं, पत्तो अमर असंक साहपैंहैं ॥  
 मिच्छ मीरबखसी जु सलामत, ताकैंहैं मुख्य प्रकाष्ठ मिल्यो तत ॥  
 अकिखय तिहिं दै दम्न जाहु इत, हठजिन करहु गँवार मरनहित ॥  
 सुनत गँवारबचन अमरसहु, लै पट्टिस कंचुक गोपित लहु ॥ ५९ ॥  
 छर्म करि पार सलामत छतिय, घोर सजोर कुलाहल धतिय ॥  
 माँहिं गयो इम मारि सलामत, बिकरुयो रुहिर कटारहिं वामत ६० ॥  
 भैचकि सभा निरायुध भूपन, प्रदुत हुव गिनि काल निरूपन ॥  
 जनताता इक१हु न लखो जिय, अंदर दुरन साह नछो इम ॥ ६१ ॥  
 बलज रुकाइ संधिला बट्ट सु, आतुर पहुँचि सिरोगृह अट्ट सु ॥  
 टिकि उपपर जे भैर निज टारै, पकरन१मारन२ताहि प्रचारै ॥ ६२ ॥  
 हँसे सुभट कहि सिंह नख न हम, नहिं तिम दह नाम१सूकर२सम  
 जानहु सेस जीह रन जनिबो, व्है किम अब गहिबो१कै हनिबो२ ॥  
 डरविनु साह कुपित ओठन डसि, उपपरसन दुव२तव डारे असि ॥  
 अर्जुन१गोर अमरसालक इक१, संग्रहि अपर२द्वितीय साहसिक ॥  
 समुख चलै द्वै२ही असि सायुध, जत्रकुत्र जन इतर निरायुध ॥  
 अमर कहिय इक१पैं दुव२आवहु, गंजि असिन मम सीस गिरावहु  
 साहहु मूढ अंध अनुसारी, करैं खलन ऐसे अधिकारी ॥

सलामतखां ने \*पैदल भेजकरा दंड के रुपये ॥ ५७ ॥ १ नैरोग्य होकर २ मुख्य द्वार  
 (डोढी) पर ॥ ५९ ॥ ३ वागे (जामे) में ४ छिपी हुई कटारी लेकर शीघ्र ॥ ६१ ॥ उस  
 समर्थ ने उस कटार से रुधिर टपकाता हुआ देखा ॥ ६० ॥ ५ भाग ॥ ६१ ॥ ७  
 सुरंग के (गुप्त) मार्ग का द्वार रुकाकर ८ ऊपर के महल की छत पर चला गया  
 ६ भट ॥ ६२ ॥ उन सुभटों ने इसकर कहा कि न तो सिंह के समान हमारे  
 नख हैं और न सूअर के समान डाढ़ा और तुंड हैं फिर बचन युद्ध से कैसे प-  
 कड़ा जावे और मारा जावे ॥ ६३ ॥ यह सुनकर बादशाह ने ऊपर से दो ख-  
 त्र डाले जिनमें से एक तो १० अमरसिंह का साला अर्जुन गौड़ था उसने लि-  
 या और दूसरा किसी साहसी ने लिया ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

वैवो दंड बुरो न कहे हम, तदपि अवाच्य अहो विस्मयतम ॥६६॥  
 अटयो अमर संसर्ग इम अक्खत, गिठि उभैरहि दिठिबिच रक्खत ॥  
 अमरातकै सभा अकुलाई, मनु होरी हरियार मचाई ॥ ६७ ॥  
 अबलाजनहु उच्च आवासन, प्रचुर सुन्यो कलकल चहुँ पासन ॥  
 साहसुता१हु व्यग्र कति सूचत, मन्निरही अमरहिँ पतिपन मत ६८  
 कहत बजीरसुता२संगत कति, अपर कितेक कहत मिथ्या अति  
 पटुँ मनुजन निश्चय यह है पर, जिमतिम जड़न सूचियत अवसर ६९  
 अक्खिय साल गोर अर्जुन इम, करहु भाम मोमँ संसय किम ॥  
 अमर तदपि सब गंजि सभा वह, गोरहिँ लखि सालकपन साग्रह ॥  
 अक्खिय तुम मम समुख न आवहु, तरि जिन मंतुँ भामसिर लावहु  
 अर्जुन कहिय अहो संसय इत, है को खल संबद्ध हननहित ॥७१॥  
 चाहि तुमहिँ गृहलग पहुँचैहो, लाभसमय अपजस किम लैहो ॥  
 तदपि अमर मन्त्री न बत तस, सूचिय नन प्रतप्य अव साहस ॥७२॥  
 रहि इम पिठि चरन मम रक्खहु, चरन संगु जानहु तिहिँ चक्खहु ॥  
 सालक भोकरि सौह ओट इम, तव अमरहु विस्वास मन्नि तिम ॥  
 साहसभा सब कहि नारिनसम, भुजकटार पारिजिततित भ्रम ॥  
 कठनलग्यो खिरकी विक्रम क्रम, सालक जानि सत्यपथ संगम ॥  
 अधम गोर विस्वास दयो इम, स्वीय स्वसा करिहो विधवा किम।  
 विश्रब्धहु कलुकलु इम बैनन, लखि खिरकी बाहिर असु लैनन ॥  
 मस्तक करि प्रविश्यो खिरकी में, धरत जदपि अवहितपनधी में ॥

१ सभा में अमरसिंह इसप्रकार कहता हुआ फिरा और दोनों के रिष्ट (खड्गों) को दृष्टि में रक्खा २ अमरसिंह के भय से ॥ ६७ ॥ ३ छिपों ने भी ४ जंघे महलों से ५ बहुत कोलाहल सुना ६ आसक्त अथवा व्याकुल होकर अमरसिंह को पति मानती थी ॥ ६८ ॥ ७ चतुर ८ मनुष्य ॥ ६९ ॥ ९ हे बहिन के पति ॥७०॥ हे बहिनोई लड़कर मेरे मस्तक पर १० अपराधमतलाओ ॥७१॥११ अब भरोसा नहीं है ॥ ७२ ॥७३॥ १२ पद विस्वास से (पैंड देने के क्रम से) अपनी बहिन को विधवा क्योंकर कहेंगा १३ विस्वास करके ॥७४॥ १४ बुद्धि में सावधान

पय इक१ अमर कटन न पायो, चौर गोर तहँ जोर चलायो ॥ ७६ ॥  
कट्टिय भाम चरन अधकारी, कट्टी श्रुति तस फैंकि कटारी ॥

बीर अमर बाहिर जकि बैठो, प्रगत श्रवन अर्जुन उत पैठो ॥ ७७ ॥  
कुहँक गोर अमरहिँ अचरन करि, कैलुखी बिरहित इक१ करन करि ॥  
पच्छोजाई साह प्रति प्रनम्यौ, निरायुधहु अमरसुँ इत न नम्यौ ॥ ७८ ॥

चरन करि१ करन करि२ प्रनम्यौ१ ननम्यौ२ अन्त्यानुप्रासौ२ ॥

मिलि सो बहून सायुधन मारयो, कनकट गोर बुधन दुदुकारयो ॥

निजन कुमार कुँगाप इत आनिय, किय प्रारंभ जरन कुमरानिय ॥

यह सुनि वत्त बलू१ चंपाउत, जो निजबंधु नाम भाऊ२ जुत ॥

अमर भीर खिरकी लग आयो, प्रान बिहीन कुमर तहँ पायो ८०

दुव२हि पट निज फैंकि साह दिस, रारि मचाइ रचाइ काल रिस ॥

कुमर बैर मंगै सु दैहु कहि, तोरन पर जुज्जे भँरजातहि ॥ ८१ ॥

कुमरानीप्रति जरन कहाई, बाचिक इक१ हमरो तुम बाई ॥

यह लैजाइ कहहु पतिअगँ, अक्खिय हमहिँ क्रोधमति अगँ ८२

पतिअगँ१ मतिअगँ२ अन्त्यानुप्रासः ॥ ११ ॥

अब तुम जो न छुरावहु हुड१अज२, गहिँ असि तो दलिहो कब  
गुंडगज ॥

साहपटा तजि तुम रचि संगर, स्वामिसहाय लज्ज धरि लंगर ॥ ८३ ॥

ममसहाय धारन चढि मरिहो, कब तब सफल दर्प यह करिहो ॥

आनिबनी सुहि वत्त अमर अब कबतँ दर्प हुतो सु गयो कब ८४

पन धारण करता था तो भी ॥ ७६ ॥ उस पापी ने वहनोई का चरण काट

डाला और अमरसिंह ने कटारी फैंककर अर्जुन गौड़ का कान काट डाला

॥ ७७ ॥ १ जालसाज २ वह पापी एक कान से हीन होकर ॥ ७८ ॥ ३ अपने

लोगों ने सुर्दा कुमर को ॥ ७९ ॥ ४ वह ४ भट बाहर के द्वार पर जाकर

लड़े ॥ ८१ ॥ ५ हे बाई हमारा एक वचन पति के आगे जाकर कहना ॥ ८२ ॥

६ इस समय भेद और बकरे नहीं छुड़ाओगे तो पाखरों सहित हाथियों को

कय मारोगे ७ युद्ध ॥ ८३ ॥ ८ घमंड ॥ ८४ ॥

तुनसम हम सब साहपटा तजि, भीर आइ तुम मरनथान भजि॥  
कंकनहीन बहुल बीबिन करि, धव जस मनि कै डंक अनुल  
धरि ॥ ८५ ॥

पयचर्वक गोरहु जो पाते, हुत तस सुनपन संफल दिखाते ॥  
सहकरि हम इम मरत इहाँ अब, सति पति प्रति मति१ गति२सू-  
चहु सब ॥ ८६ ॥

जे औसैं समुझाइ सतीजन, करत अँजज१ मिच्छ२न मन कन  
कन ॥

बहु हनि बीर बिरचि घायल बहु, लरि मरि कुमर सभापहुँचे लहु  
॥ दोहा ॥

तिहिँकालहु प्रभुराम२०३।४ तुम, पिकखहु इम रजपूत ॥

वचन गँवार न सहि बहुन, पारि परघो गर्जपूत ॥ ८८ ॥

आँट वचनकी धरि इमहि, बलू१ कबंधहु बीर ॥

परघो पारि बहु पुब्बके, स्वाभि लोन करि सीर ॥

सु निज बंधु भाऊ१सहित, सह सज्जित निज सत्थ ॥

बढि भिरत खिलखिल बलू१, तिलतिल कट्टिय तत्थ ॥ ९० ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशल्यचरिते सेण्टजार्जनामदुर्ग चीनापट्टननामनगरं च नि-  
र्माय विजयनगरसमीपे बङ्गदेशे चाङ्गलजननिवसन १, घोधपुरार्धा-  
शात्मजामरसिंहरुष्टचाम्पाउत्तबल्लारूपस्योदयपुरगमनपूर्वकदिल्लीग

\* पति के यश रूपी मणि की अनुल ? जोभा धारण करके ॥ ८५ ॥ २ चरण  
के चलानेवाले गोड़ का पाते तो ३ उसका कुत्तापन ४ साथ करके ५ हे सती  
॥ ८६ ॥ ६ आर्य और म्लेच्छों को ७ शीघ्र ॥ ८७ ॥ ८ गजसिंह का पुत्र  
॥ ८८ ॥ ९० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशल के चरित्र में सेण्टजार्ज नामक गढ़ और चीनापट्टन नामक शहर ब-  
नाकर अंगरेजों का विजयनगर के समीप और बंगाले में रहना ? जोधपुर  
के कुंवर अमरसिंह से रुष्ट होकर बलू नामक चांपावत का उदयपुर होकर

मन १, सलामतखांनिधनयवनेन्द्रसभाभयापादकराष्टकूटकुमारामर  
सिंहस्य स्वश्यालकार्जुनगौड़करचरणकर्त्तनानन्तरतत्कर्त्तामुत्कृष्टप  
वीरतया पञ्चत्वासादन ३, कुमारभगसिंहवैरवालोनहेतुचाम्पाउत्तव-  
ल्लवाख्यस्य वीरतया मरणं पञ्चमो मयूखः ॥ ५ ॥

आदितः सप्तदशोत्तरद्विशततमः ॥ २१७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लोदीखानजिहान लौ, दक्खिन भीर दुगंत ॥

दिल्ली भुव दब्बत दल्यो, सो माधव १९३१रन संत ॥ १ ॥

जाके संगी सेस जे, दक्खिनअधिप दुवाह ॥

जिनपर साहजिहान ३९१२इत, सजि चले अब साह ॥ २ ॥

नृपशनवावरलहि सत्थि निज, अकबर ३७११नत्ती एह ॥

लोदी पक्खन लुंछिं बे, गो दक्खिन गिनि गेह ॥ ३ ॥

संगहि हे माधव १९३१सता १९४१, जयसिंह १६ जसवंत २ ॥

बुंदेला बरसिंह ३ बलि, सूर ४ कबंध सुमंत ॥ ४ ॥

॥ पद्यात् ॥

लिपि पठई सुगलेस पहुँचि दक्खिन सञ्चुन प्रति ॥

लोदी संगति लागि देस लुट्टिय तुम दुर्मति ॥

चोरन चोरन चाह दोन गृहपति जग्गनहद ॥

अब किन सम्मुह आहु मोहि अपनौ दिखाहु मद ॥

उनके न रह्यो अवलंब अब जिहि मिस सब सम्मुह जुरै ॥

दिल्ली जाना २ सलामतखां को मारकर बादशाह की सभा में भय डालनेवा-  
ले कुंवर अमरसिंह राठौड़ का अपने साले अर्जुन गौड़ के साथ चरण कटे पी-  
छे अर्जुन का कान काटकर नीरमा से भागजाना ३ कुमार अमरसिंह का च-  
र लेने के कारण चतुर्चापावत का चौरता के साथ भारेजाने का पांचवाँ मयूख  
मनास हुआ और आदि से २१० मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ वीर ॥ २ ॥ १ पंख उखाड़ने के लिये ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॥ १ आधार



लोदी सु मरत टरिवो हि लखि मन व्यवाहित घरघर सुरैं ॥ ५ ॥

॥ पद्धतिः ॥

थकिवैठ इम अरि थानथान, सुहि सानुकूल समुक्त सुजान ॥  
दिल्लीस बिहरि बकिखनप्रदेस, बढि जत्रकुत्र किय अरि बिसेस ॥ ६ ॥  
भिरि असहवेढि गढ भिन्नभिन्न, भैर दुसह केहि किय छिन्नभिन्न  
पहिलैं गयो सु आसेर १ पाइ, बिचके प्रदेस २ बसके बनाइ ॥ ७ ॥  
जय करि तिम अहमदनगर ३ जिति, प्रथम १ हि प्रयान किय  
विजय किति ॥

इम खानदेस निज जंत्र आनि, पच्छिम सहाचल ४ हद प्रमानि ॥ ८ ॥  
अब दुलभ दोलताबाद ५ आइ, घेरयो गढ गोलन गैजर घाइ ॥  
सुत १ नारि २ कुमरपन जत्य साह, रखे चिर निर्भय सरन राह ॥ ९ ॥  
बीजापुर सम जाको बिसास, इहि खुरुम ३ १ २ लही जैं जिय न आस  
दुर्ग सु हो दुर्गम पै सुदिष्ट, याकै सहाय हुव फलन इष्ट ॥ १० ॥  
यह बिदित मर्म हो निवसिअग, मिलिजात फलहि अनुकूल मग  
गढविच इस संकट किम हु गेरि, हड्डे ६ १ स सता १९४१ दिक्  
पास हेरि ॥ ११ ॥

लिय असै संकट सनुलोक, अप्पन वचैं न जिम तजिहु ओक ॥  
बुरदानपुर जु हुव कोल बैन, हड्डे ६ १ न पति हाकिम रहत रैन  
१९२१ ॥ १२ ॥

पुहवीस सता १९४१ सुभिरन सुपाइ, बासी गढके कहे बचाइ ॥  
तिन मन्त्री उत १ जिय दिय सता १९४१ हि, जयबीज गिन्यो इत २  
साह जाहि ॥ १३ ॥

अतिजस मनाइ भूपति दुश्ओर, जित्यो वह दुर्गहु खग्न जौर ॥  
इत तंत्र दोलताबाद ५ आनि, जयहेतु सता १९४१ कैह साह जानि

१ छिपकर ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ भट (वीर) ३ आसेर जह ॥ ९ ॥ ४ बेग ॥ ८ ॥ ५ नि-  
रन्तर प्रहार से १ घाव करके अथवा मारकर ॥ ९ ॥ ७ अष्ट भाग्य से ॥ १० ॥  
॥ ११ ॥ ८ घर ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ ९ जय का कारण

इम भेट दयो पहिले अनेह, नृप रत्न १९२।१ जहांगीर ३८।१ हि सनेह  
 सो सिव प्रसाद गज खास साह, बुंदीसहिं बखस्यो सह सराह ॥  
 या द्विरद १ माहिं हे गुण अनेक, कम तास संग दिय बस्तु केक ॥  
 पोसाक २ खास भूखन ३ उपेत, यह ४ हेति ५ दये जयहेतु हेत १६।  
 दाखिनप्रदेस इम कति दबाइ, अकबरपुर प्रबिस्यो साह आइ ॥  
 करि सिक्ख नृपहु अप्पन निकाय, कमि आयो बुंदिय सु रवि  
 काय ॥ १७ ॥

निकाय १ चिकाय २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १८ ॥

पूर्वा १ पर २ वत्तन क्रम न पात, इम बदलि कथानक बहुत आत ॥  
 जैह हम सक निश्चय लिखहि जानि, मेधावी तैह कम लेहु मानि १८  
 अंबर वसु सोलह १६८० सक अनेह, उपज्यो पटु भाऊ १९५।१  
 कुमार एह ॥

अब सक ख सून्य अत्यष्टि १७०० अंत, याकै हु कुमार हुव मह  
 अनंत ॥ १९ ॥

जेठीकुमरानी जनित जोहि, संज्ञा करि पृथ्वीसिंह १९६।१ सोहि ॥  
 नती यह जनमत सुनि नरेस, बुन्दीस सता १९५।१ दिय वसु बि  
 सेस ॥ २० ॥

दौहित्र जनम सुनि उदयदंग, जगतेस रान जैह अतिउमंग ॥  
 करि रीभ उतहु किय महप्रकास, मरिगो सु कुमार पुनिरहि दु  
 मास ॥ २१ ॥

क्रम करि तबलौ भाऊ १९५।१ कुमार, ऊढां कुमरानी त्रय ३ उदार ॥  
 धनकुमरि १९५।१ बडी १ तैह गुननिधान, जगतेसरानतनया सुजान  
 हरिसिंहसुता दूजी २ बहोरि, जो पुर प्रतापगढ गंठि जोरि ॥

१ समय ॥ १९ ॥ २ सहित ॥ १९ ॥ १७ ॥ ३ पहिली पिछली यात का क्रम  
 नहीं पाकर इसप्रकार कथा ४ बुद्धिमान् वहां क्रम मान लेवें ॥ १८ ॥ ५ वरसव  
 ॥ १६ ॥ ६ नाम ॥ २० ॥ २१ ॥ ७ विवाहिता ॥ २२ ॥

राजाके कुमरके संबंधको बुंदेलोंका आना] सप्तराशि-चष्ठमयूख (२६।९)

निजपतनी भाउलदेवि १९५।२ नाम, कुमरानी आनी वरि प्रकाम  
बडगुज्जरि तीजीइलग्नवेर, कन्या जु भूप फतमल्लकेर ॥

हरकुमारि १५९।३ नाम हद निपुन नारि, परनी सु राजपुग्गढ प-  
धारि ॥ २४ ॥

इत दिनन कुमर संबंध एक, बुंदेलन विरचन किय बिबेक ॥

भूपति बुंदेलहु खुसुम ३९।२ भीर, पहिले हुव टारन परन पार ॥

जिहिं वहे व साह साहेजिहान ३९।२, मनें स्व सहायक अधिक मान  
सीसोद १ भीमसुत रायसीह, बुंदेल २ भूप तिम रन अवीह ॥ २६ ॥

बैठतहि पट्ट दोउरन बुलाइ, भूपाल बनाये उचित भाइ ॥

कछु लहि कुजोग बुंदेलवंस, पुव्याहि सु हीन हुव हत प्रसंस ॥ २७ ॥

बुंदेलभूप वरसिंह दार, वहि अब सु सुइकुल करन सीर ॥

अपनें निहारि कन्या अनीक, वसुधेस वरहिं तनि मह तितीक ॥

बुंदीसकुमर कतिकन बताइ, जंपिय यह सगपन बनिहुजाइ ॥

तो आहि कनी तुमरे जितीक, वसुधेस वरहिं तनि मह तितीक २९

वरसिंह सुसंगत समुझि बात, भेजे पुर बुंदिय सचिव १ भ्रात २ ॥

संबंध उचित उपहार सत्य, आये फल चाहत तेहु अत्य ॥ ३० ॥

आदर १ सह डेरा २ तिन्ह दिवाइ, माघुन सनमानें मोद पाइ ॥

बनि सुनि सता १६४।१ हु सगपन विचार, करि बिजन मंल संग-

त कुमार ॥ ३१ ॥

नटि जान अकिख तिहिं सह निदान, पठई कहि न करत सुत

प्रमान ॥

याकै विवाह त्रिक ३ पुव्व आस, तिनमैं हि तुष्ट अधिकन उदास

बुंदेलन जानिय लोभवेन, स्वीकरि हे सुनतहि उचित अैन ॥

पठई कहि पातैं बुल्लि पास, पुनि करहु सभा आसय प्रकास ॥ ३३ ॥

१ विशेष कामना से ॥ २३ ॥ २४ ॥ २ विचार ॥ २५ ॥ ३ निर्भय ॥ २६ ॥ २ ॥

४ कन्याओं की सेना ॥ २७ ॥ ५ उत्सव करके उनने ही राजाओं को विवाहमें

॥ २८ ॥ ६ साधुपादने=कुंवर के साथ एकान्त में सलाह करके ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

रचि संसद बुल्ले तब नरेस, बैठारे सब मिलिहित बिसेस ॥

प्राधुनन कहिय सिंधुर १ पचास ५०, इक्कोटि १०००००००

द्रम्म २ पुनि देय आस ॥ ३४ ॥

सत १०० हरिक ३ बहुगुन १ अर्घ २ सुद्ध, बज्राकर हम भुव ज-  
नित बुद्ध ॥

पुनि सीम विदित दुव २ परगनाँ ४ हु, बसुँ आढ्य पाइ रीकहि  
बैनाहु ॥ ३५ ॥

अनुचर १२ मिथुन २ सत १०० सत १०० सुसेव, दुर्गुनाँ सब दा-  
यज लेहु देव ॥

नृप कहिय कुमार व्याहन निरास, स्वीकार नतो सगपन बिसास-  
पुनि कहिय मिलावन जन्मपत्र, तमकपो हरि १९३३ काका सु-  
सुनि तत्र ॥

अपनाँ कुलसंकर तउ उदार, गिनियत जगसुद्धहि गहिरवार ॥ ३७ ॥

हम कुलहु करन तुम सम चहंत, मुरि अब घर जावहु हे महंत ॥

संकर तथापि वंदेलसूर, औसी सहै न दूर २ रु अदूर २ ॥ ३८ ॥

असि अँचि अँचि तिन कहिय एह, गिनियत कुल सुद्धहि द-  
म्म १८३१ गेह ॥

नृप आनि डोड हरराज नारि, बंसहि यह तासौं दिप बिथारि ॥ ३९ ॥

ते इग अवाच्य कहि पकरि तेग, वंदेल मुरे प्रतिमग्ग बेग ॥

वरसिंह कुद्ध हुव सुनि सुवत्त, दिल्लीसहिँ जिहिँ इम अरज दत्ता ॥ ४० ॥

जिम मान बढायो मम दजूर, पायो तथाहि अपमान पूर ॥

जिम जोहि वरनसंकर जनाइ, दहुदहन दुहुकारयो असह हाँड ॥ ४१ ॥

अब औचि गु सगपन करहु अप्प, देखहु कै हम कुल सुद्धि दप्ये ॥

पाठ्यां ने कहा कि १ हाथी ॥ ३४ ॥ २ कामता ३ हरि का लान ४ धन से ५

धनवान् होकर ६ दुलह ७ प्रसन्न होवेगा ॥ ३५ ॥ ७ सेवकों का जोड़ा ॥ ३६ ॥

८ क्षत्रियों का वंश विशेष ॥ ३७ ॥ १८ ॥ २ डारिया ॥ ३९ ॥ ४० ॥ १० खेद

का चरित्र ॥ ४१ ॥ ११ दर्प ॥ ४२ ॥

सुनि साह कहिय इत १ उतर २ समान, हमतैं न होइ दुवश्पच्छ हान  
बलि देन उपासं बहु विसेस, आनत सता १९४११ संकोच एस ॥

गिनि सुहि निदेस बरसिंह गज्जि, सेना समस्त दुवश्पुत २००००  
सज्जि ॥ ४३ ॥

बुंदेलबीर तिम पकरि तेग, बुन्दीपर आयउ बज्जबेग ॥

सुनतहि न देर किय इत सता १९४११ हु, बल सज्जि सुदित आ-  
जाबुबाहु ॥ ४४ ॥

मारुत जव बाजिन बीच मेलि, आरिय असि सीमा डिगहि झेलि ॥

वज्जिय सब सखन निसित बाढ, गन श्री भज्जियत जतन गाढ  
बल कटत लुथिलुथिन बिलगि, जोगिन समाधि सिवसहित जगि  
ताल १ प्रेत २ डाकिनि ३ विलास, राचे रचि जोगिनि ४ नीर ५ गस ४६  
पत कितेक बहु दुर्दिन जुद्ध, वहमत दुर् जाम वह कलाह बुद्ध ॥

डिबडि दुर् ओर बहु भरत बीर, भयकर भई अवमर्ह भार ॥ ४७ ॥

यै उदय भयउ बुन्दीस ओर, इतकेहि अस्त्र जिम लहिय जोर ॥

हाहू कर गुटिका लागि कपाल, बरसिंह परयो गजतैं जिहाल ४८

सतपंच ५०० परे इत १ उतर २ सिपाह, बुंदेल भजे खिल मोरिबाह ॥

घायल दुर् ओर खटसत ६०० घुमात, बुन्दीस लह्यो जय जस वि-  
भात ॥ ४९ ॥

जो सबल १९३१११ मनोहर १९१४ तनय जत्य, तोमर प्रताप २

हरि ४ भल्ल तत्य ॥

ए सैंटि तीन ३ सामंत अत्य, संभर सता १९४११ सु जय लिय सं-

मत्य ॥ ५० ॥

जयसिंह इत सु कूरम जनेस, आमेर विभव बिलसत असेस ॥

शत्रुशाल को आलंभा देते संकोच १ लाते हैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ २ तीखे बाढ  
॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ३ पीड़ाकारी युद्ध में ॥ ४७ ॥ ४ भाग्य ५ गोली ॥ ४८ ॥ ६ बाहन  
॥ ४९ ॥ ७ बदले में देकर ॥ ५० ॥

राच्यो ब्रजभाखा काव्य रंग, सुचि १ रस विसेस अतिसय प्रसंग ॥  
सासन तस इक द्विज धारि सीस, किय सत्तसई ७००१ दोहा क-  
वीस ॥

अभिधान बिहारी सु कवि एह, सनमान्यौ माथुर अतिसनेह ॥५३॥  
दोहा १ प्रति इक १ इक १ महुर दीन, कवि १ नृप २ जस निजनिज  
विदित कीन ॥

द्विजग्रंथ अबहु यह अर्थ १ दीप, पै छंद १ सव्द २ मैलन ३ प्रतीप ॥५३॥  
जिहिं विप्र बिहारी बंसजात, कवि बालकृष्ण प्रभु अन्न पात ॥  
जिम बिस्वनाथ द्विज इत सुजान, धरि सत्रुसल्य चरितौ अभिधान ॥  
बुंदीस काव्य संस्कृत बनाइ, पटु आदिकविनबिच नाम पाइ ॥  
श्रवन सु कराइ पाये समथ, सासन चउ ४ रूपय लक्ख १०००००  
सथ ॥ ५५ ॥

इत जनक मरत लहि पट्ट एस, जसवंत जोधपुर हुव जनेस ॥  
काहू कवि किय जिहिं प्रीतिकाम, नव भाखा भूखन ३ ग्रंथ नाम ॥५६॥  
बहु जत्थ अलंकारन बिबेक, अिसो रच्यो सु लघु ग्रंथ एक ॥  
जसवंत नृपहु करि श्रवन जाहि, सासन १ गज २ वसु ३ दिय गुन सराहि ॥  
लच्छन १ मुख न मिलत सब ललाम, नृप १ कवि २ जुग २ पायो  
तदपि नाम ॥

महिपाल सता १९४१ इत सबन मान्य, बरखै बसु बिंदुन अति  
बदान्य ॥ ५८ ॥

बुध १ कवि २ जन दुर्विध भाव बोरि, निज रीझ दये लक्खन निहोरि ॥  
पुहवीस करै सहजहु प्रयान, धरि संग लक्ख १००००० दम्जन  
निधान ॥ ५९ ॥

सकटन जे संभृत बहुतबेर, दिय मंगनमात्रन न किय देर ॥

१ शृंगार रस ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ छंद और शब्दों के मिलाप में २ विरुद्ध है ॥ ५३ ॥ ३  
शत्रुशाल्य चरित्र नामक ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ४ राजा ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५ दात्री ॥ ५८ ॥  
६ दरिद्र भाव मिटाकर ॥ ५९ ॥

द्विज १ सूरिन सत्रह १७, ग्राम दत्त, पंद्रह १५ लहि चारन २ हुव  
सुपत्त ॥ ६० ॥

इकबीस २१ दये भट्टन ३ उदार, लखन पट १ भूखन २ रीझ लार ॥  
कवि चारन देवहिँ दम्भ १ कोरि १०००००००, बखसी सह सासन २  
गज ३ बहोरि ॥ ६१ ॥

देवहु निज जाचक बुल्लि द्वार, सब रीझ दिय सु किय जस प्रसार ॥  
अहिफेन फलन जल कहि अर्क, देवहिँ नृप पायो जस उदक ॥ ६२ ॥  
तदपि न बिरुदायो देव ताहि, सबरीति नृपति आदर सदाहि ॥

अनुगँत्व कबहु नृप करि अतुल्य, कवितैं सु लह्यो निज बिरुद कुल्य  
असो अलुब्ध कवि देव एह, नृपजन सब जाको चहत नेह ॥

दिय जाहि सता १९४१ जो उक्त दान, सब दिय सु जाचकन जिहिँ  
सुजान ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

याहीतैं महियारियन, एह भयो अवतंस ॥

करी १ कोटि २ सासन ३ बरिस, बिरुद लहत तसवंस ॥ ६५ ॥

अब लिय सत्र महियारियन, यहहि बिरुद अपनाइ ॥

तजै बडाई कोन तँहँ, अनायास जँहँ आई ॥ ६६ ॥

॥ ६० ॥ \* देवा १ नाम महियारिया चारण को ॥ ६१ ॥ रतिजारे के डोडा का अर्क नि-  
काल कर १ भविष्यत् काल में यश करने के लिये ॥ ६२ ॥ ४ सेवकपन ५ अ-  
पने वंश से उत्पन्न हुआ बिरुद लिया ॥ ६३ ॥ ६ इसी कारण से महियारिया  
चारणों में सुकुट हुआ जिससे महियारिये छस्तिचरीस कोडवरीस कहला-  
ते हैं ॥ ६४ ॥ ७ बिना परिश्रम किये ही जो बडाई मिल जावे उसको कौन छोडें ॥ ६५ ॥

\* बुन्दी के राव शत्रुशालने महयू ग्राम के महियारिया शाखा के चारण देवा की जूतियें (उपानत्)  
अपने हाथ से उठाकर देवा के आगे रखी उस समय देवा ने निम्न लिखित यह दोहा कहा सो इस स-  
मय भी राजपूताना में बहुत प्रसिद्ध है ॥

॥ दोहा ॥

पाणाँ गह पैजार, सुकवि अग धरतां सता ॥

हिक हिक बार हजार, पह सूमाँ माथै पड़ी ॥ १ ॥

इस दोहे में पह शब्द (पह) अर्थात् प्रभु शब्द का अपभ्रंश है ॥

आरंभिय जवनेस इत, लंघि अटक भुव लैन ॥

अर्जुन जवन बुद्धे अखिल, इकखन कावल अैन ॥ ६७ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
वसुधावरशत्रुशल्पचरित्रे दक्षिणप्रस्थितयवनेन्द्रशाहजहांकृतलोदी-  
पलायन १, सुतासंबन्धकरणाककटुवचनहेतुकबुन्देलहडवाहुज-  
विरोधसमरहड्डविजयन २, भाषाभूषणविहारीसप्तशतीनिर्माणव-  
र्णनतद्योग्यायोग्यत्वग्रन्थकर्तृसंमतिकथन ३, महियारियाशाखीय  
चारणदेवाकृताप्रतिमसेवानिर्मिततच्छाखीयचारणार्थशत्रुशल्पप्रत-  
द्विस्तवरीसक्रोडवरीसविरुद्धप्राप्तिवर्णनं षष्ठो मयूखः ॥ ६ ॥

आदितोऽष्टादशोत्तरद्विशततमो मयूखः ॥ २१ = ॥

प्राये नजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अटकपार दिल्ली अमल, इकसूबा सिर आहि ॥

कावल १ अटक २ दुर्नाम करि, जग जन जंपत जाहि ॥ १ ॥

कावलवासी निकट करि, उतके अरि अफगान ॥

अवसर अवसर उफनै, दब्बन धरनि निदान ॥ २ ॥

कलाबास अभिधान करि, जाहिर इक गढ जत्थ ॥

१ आर्य २ घर ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति शु-  
शाल के चरित्र में बादशाह काहजहां का दक्षिण में जाकर लोदियों को भ-  
गाना १ पुत्री का संबंध करने में कटु वचनों के कारण बुंदेला और हाडा ज-  
त्रियों में विरोध होकर युद्ध में हाडों का विजय होना २ विहारीसतसई और  
भाषाभूषण दोनों ग्रंथों के बचने का वर्णन और उक्त दोनों ग्रंथों के योग्य  
अयोग्य होने में ग्रन्थकर्ता की समझ ३ राव शत्रुशाल का महियारिया शाखा  
के चारण देवा की अतुल्य देवा और महियारिया चारणों को हस्तवरीस  
क्रोडवरीस का विरुद्ध मिलने के वर्णन का छठा मयूख समाप्त हुआ और आदि  
से १८ मयूख हुए ॥

२ कहते हैं ॥ १ ॥ २ ॥



शाहजहाँ का काबुल पर चढ़ाई करना ] सप्तमराशि-सप्तममयूख (२४२५)

सो कबहुक इन्ह १ अनुसरैं, है कबहुक तिन्ह रहत ॥ ३ ॥

किते कहत उतकोहि यह, जितहिँ अब जवनेस ॥

किमहु होहु पै काबलिन, दब्बो कछुक प्रदेस ॥ ४ ॥

तस पुकार सुनतहि तमकि, अब बल सजि अमान ॥

करन पराजित काबलिन, हंकि य साहजिदान ३९१२ ॥ ५ ॥

॥ मदनाबतारः ॥

भूपगन सर्व आहूत हाजिर भयो,

गैद बिकल सूर अभिधान नृप नाँ गयो ॥

रोग परतंत्र बीकानयर अप्प रहि,

सजि जिहिँ पट्टधर कर्ण पठयो सुतहि ॥ ६ ॥

साह दरकुंच अनुसार हुव भूप सव,

अटकपर जात पछितात विभैना हु अब ॥

भूप बुंदीस जब गो तबहि दर्प भरि,

कुप्पि इस साह तरज्जो उपाखंभ करि ॥ ७ ॥

मारि बरसिंह १ तब पास गतँ मित्र मम,

सुद्धमति बुद्ध हुव तूहु किम सत्रुसम ॥

हहु ६ १ नृप कहिय वह आत मो धर हन्यो,

तासघर जाइ नहि नैक रन मै तन्यो ॥ ८ ॥

बंधु तस बैन कटु गेह मम बुल्लये,

गाढ अपराध तव मूढ कहैगये ॥

तोहु हरिसिंह १९३३ काका हि किम बाद तिम,

कटुक मम बैन सुनि तेहु मरते न किम ॥ ९ ॥

कूर हरि १९३३ टारि इस नम्र हुव जोरि कर,

॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १ बुलाये हुए २ रोग से बिकल होकर बीकानेर का राजा  
खुरसिंह नहीं गया ॥ ६ ॥ अटक नदी के उल्लंघन करने से आये हुए राजा अप-  
ना धर्म हानि समझते थे तिस कारण ३ उदास हुए ॥ ७ ॥ ४ तेरे पास ग-  
ये हुए मेरे मित्र बरसिंह बुंदेल को तुमने मार डाला ५ वह मेरे घर पर चढ़ कर  
आया तब मैंने मारा है ६ मूर्ख हरिसिंह के बिना

तोहु बुंदेल कटु भाखि हुव सन्नतर ॥

जे न कुल सुद्ध इमं शरि बढिजावती ॥

तोहु गिनतेहि मम हानि प्रभु तावती ॥ १० ॥

देस मम लुट्टि वह आत मारन दल्यो,

चित्र तव ताहि कित जाइ हनिबो चलयो ॥

भूपअरजी सुं कछु साह मन्नी भली,

बैन कटु पात मरि जात समुझयो बली ॥ ११ ॥

पै ब इम नित्य दरकुंच चलि प्रातही,

अधिप करि मंत्र सब संभ अकुलातही ॥

कहिय बुन्दीस तुम छन्न इत कोप है,

एह तव सीस मम भार आरोप वहै ॥ १२ ॥

भीत होहु न तदपि इष्ट करिहै भली,

छोनि लहि धर्म बिगराई जीवै छली ॥

धर्म रहि भूमि सब जात प्रानहु धरै,

मेटि जिहिं रक्खि भुवकोन जीवत मरै ॥ १३ ॥

पै ब पंजाबलग आँट कछु पारि हैं,

बिन्नति हु सर्व कर जोरि विसतारि हैं ॥

प्रेष्ठ करि मोहि मग रोहि पछिताइहैं,

होहु प्रभुकोहु सचिवत्व हम पाइहैं ॥ १४ ॥

जहव१ रु गोर२ बाघेल३ बडगुज्जर४न,

सोहि सम्मत कहाँ होहु कोऊ सरन ॥

भोज्य गुन जुत हग छुतँ हम नाँ भजै,

लांघि नदि सिंधु लहि मिच्छपन क्यों लजै ॥ १५ ॥

१ आपतक मरी ही हानि मानी जाती ॥ १० ॥ २ तब उसके मारने में क्या आश्चर्य है  
आ ॥ ११ ॥ ३ सन्ध्या समय ॥ १२ ॥ ४ भूमि लेकर ॥ १३ ॥ ५ मुझ को आगे कर  
के ६ मार्ग रोक कर ॥ १४ ॥ ७ यवनों के देखेहुए भोजन को भी हम नहीं खा-  
ते हैं तब अदक तदी लांघकर यवन होकर कैसे लजेंगे ॥ १५ ॥

हैं न बलवान तुमतुल्य लघुथान हम,  
 कर्म निजधर्म रहिजाइ करिये सु क्रम ॥  
 कुम्भ जयसिंह १ रठोर जसवंत २ क्रमि,  
 छमन किय अरज अपराध इक १ लेहु छमि ॥ १६ ॥  
 रंच हम धर्म नदि सिंधु लंघिन रहैं,  
 क्यों न तो नाम करि याहि अटकहु सहैं ॥  
 धारि हित सिंधुतट वार रहि धर्ममैं,  
 मरन परजंत हम सज्ज प्रभुक्रममैं ॥ १७ ॥  
 होइ संदेह तो स्वामि परखो हमैं,  
 देहु तब दंड जब एहु मिथ्या जमैं ॥  
 कोपकरि साह सुनि एह पच्छी कही,  
 मोरसह गोन तजि कोन भजिहै मही ॥ १८ ॥  
 होत इम वत्त गय लंघि पंजाव हद,  
 नाम तिन्ह सुनहु प्रभुराम २० ३१४ जिम पंचनद ॥  
 जो सतद्रु १ सु सतलंज २ जिम जानिये,  
 जो बिपासा २ सु व्यासा २ हु तिम जानिये ॥ १९ ॥  
 जिमजानिये १ तिमजानिये २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥  
 नाम ऐरावती ३ सोहि रावी ३ नदी,  
 चंद्रभागा ४ सु चिन्हाव ४ बहुख्यो बदी ॥  
 जो बितस्ता ५ सु भेलम ५ हु ए पंच ५ जहैं,  
 ते सबै लंघि जवनेस गय अगग तहैं ॥ २० ॥  
 वत्त तब मंत्रमय एह भूपन बदी,  
 नाव चढि साह जब सिंधु लंघैं नदी ॥  
 पार लहिहैं न तब वार रहिहैं परे,

१ समर्थो ने ॥ १६ ॥ यदि इस सिंधु नदी के उतरने की रोक नहीं है तो इस-  
 को २ अटक क्यों कहते हैं ॥ १७ ॥ ३ साथ जाना छोड़कर भूमि को कौन भोगेगा  
 ॥ १८ ॥ ४ नदियों के नाम हैं ॥ १९ ॥ २० ॥ ५ इस किनारे

अखिखैं दास इत खास रच्छक खरे ॥ २१ ॥  
 केक माधव १९३।२ प्रमुख मंत्रबाहिर कढे,  
 बंधि पिसुनत्व उत बत रूपापन बढे ॥  
 दोह कछु जानि कछुमानि दिलीस हू,  
 रक्खि कछु प्रीति? कछु रीति किय रीस २६ ॥ २२ ॥  
 सिंधुतटवार कछुकाल रक्खे सिबिर,  
 चलन तसपार दिय हुकम अब ठहै न चिर ॥  
 बुल्लि सुहि प्रात सबठाँ नकौबावली,  
 धारि अवधान अविलंबहित धावली ॥ २३ ॥  
 भूमिपति सूर गदपूर तवही भयो,  
 पट्सुत पास देला बैग पहुँचन दयो ॥  
 कुमार तब सिक्ख लै दैन भूपन कहिय,  
 लैनहो देस तिम तास सम्मत लाहिय ॥ २४ ॥  
 तिहिँ कहिय इष्ट जैबो हि दठ तानिकै,  
 पुत्रपन हीन न दिखाइ जिम पानिकै ॥  
 कुमार मत एह लखि सर्व नृप कानिकै,  
 याहिकुल बिरुदबच साँनसित आनिकै ॥ २५ ॥  
 कहिय तुमकोहु जैबोहि सम्मत कुमार,  
 बहुरि तव बंस पहुँकेहि दुव धर्मपर ॥  
 कर्ण हम तोहि अब अगग पातैं करै,  
 एह अवलंब लाहि धर्म करि उब्बरै ॥ २६ ॥  
 सौँह करि भूप इक १ होइ बुल्ले सबहि,  
 वाहि कहि हैं अखिल किति तुमरीहि कहि ॥  
 अप्प जै होइ करि जाहु यह नाम इत ,

॥ २१ ॥ २२ ॥ १ डेरे रछड़ीदारों की पंक्ति अभावधान होकर चिलंब नहीं करने के कारण  
 १ दौड़ ॥ २१ ॥ १ पत्रा ॥ २४ ॥ १ यश के वचन रूपी अस्त्र पर तीक्ष्ण करके ॥ २५ ॥ २६ ॥

अप्प रहि भार हम बंटी करिहैं उचित ॥ २७ ॥  
 सोहि सुनि हड्ड १ कछवाह २ रठोर ३ सन,  
 करन हरिसौहैं करि सौहैं अप्पे करन ॥  
 हड्डवति १ देस सरुदेस २ हुंढाहर ३ हु,  
 कहिय हम पिठि तुम जाइ समुचित करहु ॥ २८ ॥  
 कर्ण तरुनत्वमद सोहि मत स्वीकग्यो,  
 कानि १ विसवास २ धर गोन घरही करयो ॥  
 सौर हुव धर्मधरि कर्णनृप सूरसुत,  
 अज्ज इत रक्खि सुनि बप्प दुख पत्त उत ॥ २९ ॥  
 भूप रहि सेस यह व्याज करते भये,  
 भारकछु पटकि सल अगग कछु भेजये ॥  
 साह लंघिय अटक माधवा १९३१२ दिक सहित,  
 ओर नृप अगग न गये गिनैं ते अहित ॥ ३० ॥  
 स्याम १९४१३ हिंडोलि ईस और जसवंत सुत १९२११,  
 अभय १९११३ हरिसिंह १९३१३को पुत्र तीजो ३ हु उत ॥  
 छन्न कोटस सन एहि मिलि द्वैरहि छदैं,  
 माधव १९३१२ हिं गुप्त लिखिदेत हुव पाप मद ॥ ३१ ॥  
 गैलवित्र तत्र तिन्हपत्र पकरेगये,  
 भीत हुवर जानि भजि देस आवतभये ॥  
 कुमरपति भूपदिय पत्र तव एह कहि,  
 द्रोह करि दुष्ट आये हनो ए दुरबहि ॥ ३२ ॥  
 देखि नृप पत्र भाऊ १९५११ कुमरकोप दवैं,  
 स्याम १९३११ वह टुकड़ा जाइ होम्यौ सजव ॥  
 सो अभैसिंह १९४१३ तवनो बच्यो काकसम,

॥२७॥ १ कर्णसिंह ने विष्णु की सोगन करके सबका वचन दिया और सबने  
 कर्णसिंह को वचन दिये ॥ २८ ॥ २ युवा अवस्था के मद में ॥ २६ ॥ ३ जंत  
 ॥ ३० ॥ ४ पत्र ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ५ अग्नि ॥

कुमर भगवंत १९५३ मारयो सु पुनि कालक्रम ॥ ३३ ॥  
 लाइ उर स्नाम १९३१ सुत रुक्म अंगद १९४१ लयो,  
 द्रंग हिंडोलि तस तंत्र रहिवेदयो ॥  
 जो कलावीस गढ साह इत जितिलिय,  
 कलहं जय सखि तँहँ माधव १९३२हु किति लिय ॥ ३४ ॥  
 रीझि जवनेस कोटेस बल पिक्खिख रन,  
 कुप्पि बुंदीसप्रति लुप्पि वचनादिकन ॥  
 परगनाँ मुख्य बाराँ १ मऊर छिन्निलिय,  
 द्वैरहि लखि माधव १९३२ हिं तत्थ सुलतान दिय ॥ ३५ ॥  
 साक गुन व्योम हय इंदु १७०३ बिक्रम समय,  
 ग्राम इम ताम चउ इंदु सत १४०० छुट्टिगय ॥  
 भूप सुनि एह घर पत्र भेजतभयो,  
 देस जुग २ माधव १९३२हिं साह अपनों दयो ॥ ३६ ॥  
 सचिव सब लेह बुलवाइ निज नैर सुत,  
 देहु तजि द्वैरहि कांटेस वस जानि दुत ॥  
 कियसु आदेस अनुसार भाऊ १९५१ कुमर,  
 नैर दुवरठाम हुवसज्ज कोटेसनर ॥ ३७ ॥  
 अटक सूवाहि रहि साह चउ४ अब्द इत,  
 जो अभय देस करि सेस अरि दबि जित ॥  
 सप्त नभ अद्रि इक १७०७ अब्द मित होत सक,  
 आइ पच्छो सु जवनेस लंघ्यो अटक ॥ ३८ ॥  
 ताम नृप अज्ज हाजरि रहे वारतट,  
 पंथ नियराइ सब जाइ प्रनमैं प्रकट ॥  
 राजगन पिठि सजि सेन निज निज रही,  
 कछुन नयराह तँहँ साह इनसों कही ॥ ३९ ॥

बादशाहका आर्यराजाओंको ओलंभा] सप्तमराशि-सप्तममयुख(२६३१)

गेह इम स्वीय सुलतान दिल्ली गयो,  
भूपगन तत्य सह सत्य हाजरि भयो ॥  
कुपि तब साह दम दम्भ सबकै करे,  
इष्टविधि कोहु मिलि थान जिन्ह उब्बरे ॥ ४० ॥  
अत्य मतभेद प्रभु राम२०३४ बहु इक्खये,  
गदत कति परगनाँ सबन कछु कछु गये ॥  
कतिक तिन्ह अधिक१सम२न्यून३गत भूकहैं,  
रुप्पय हि खिलन कति कहत पहुँचै रहैं ॥ ४१ ॥  
होहु कछु खिलन गत भुम्भि जानैं न हम,  
कहत सब बुद्धि अनुकूल इकमूल क्रम ॥  
दै सबन सिक्ख जयसिंह१डिग बुद्धि द्रुत,  
पूर रिस करि कहिय मानकुल तू प्रनुत ॥ ४२ ॥  
ज्ञान करि मान नदि सिंधु तरि क्यों गयो,  
भोन रहि अन्धुदय क्यों तवही भयो ॥  
बुद्धि जसवंत तिमही-उपालंभ बदि,  
निपट खिजि कहिय लंघी न तैं सिंधु नदि ॥ ४३ ॥  
कोहु लखि हेतु हम माफ अगुन करयो,  
अधिक अपराध पर अल्प दम उद्धरयो ॥  
जो अबहु हानि कछु काम पर जानिहौं,  
तानिहो त्रास करि हो नतो कानिहौं ॥ ४४ ॥  
भूप बुंदीस सिर रीस २द्विगुनीभई,  
देस प्रति सिक्ख इम दंडि सबको दई ॥ ४५ ॥  
जोहि बढि गंग बीकानयर भूप जव,  
तनुज पहुँचयो तदनु सूर हुव सांत तव ॥ ४५ ॥

१ दंडके रूपये ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ विशेष स्तुति योग्य ॥ ४२ ॥ ३ धन जन की बुद्धि  
॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४ सूरसिंह मरगया

भूमि तस लेत सँभवेत सब भूमिपति,  
 प्रनत हुव साह सचिवेस<sup>१</sup> सेनेस<sup>२</sup>प्रति ॥  
 ० सिक्ख हे दूर इस तेहु मंगि न सके,  
 बप्प गढ़े घार सुनि अप्प पुनि अकवके ॥ ४६ ॥  
 गेहु अब तेहु हमरेहि पठये गये,  
 भाग्यबस सांत तह तात तिनके भये ॥  
 देत तिन्ह दंड हमको सु बटिदीजिये ॥  
 करि अरज एह आसान उत कीजिये ॥ ४७ ॥  
 साह तब निट्टि तिनके कहै स्वीकरी,  
 अवनि सबकीहु तिनतँहि नहि उत्तरी ॥  
 कर्णसिर जोहु हित जतन सबनँ करे,  
 पंचपु गुन तोहु दमँ दम्म दैनँपरे ॥ ४८ ॥  
 पै सु घरही रह्यो मिच्छभय पाइकँ,  
 आवत न बैठि गद्दीहु अकुलाइकँ ॥  
 सिक्खकरि भूप आयै सदन सर्वही,  
 लेखबस व्याधि दिल्लोहि माधव<sup>१</sup>९३२लही ॥ ४९ ॥  
 अदि नभ सत्त ससि<sup>१</sup>७०७ साक घर आइकँ,  
 पिंडँ माधव<sup>१</sup>९३२तज्यो अंत खिन पाइकँ ॥  
 तास जेठे मुकुंडा<sup>१</sup>९४१भिधानी तनै,  
 बीर कांटेस बनि इक्क<sup>१</sup> किन्नोँ अनै ॥ ५० ॥  
 कामबस नारि अबली सु मैनी<sup>१</sup> करी,  
 दूर करि लज्ज रति कज्ज मति आदरी ॥  
 सोहु विस्मै न प्रभु राम<sup>२</sup>०३१४ कलिके समय,

१ बीकानेर खालसे करने पर सब राजा सामिल होकर अरजाज हुए २ पिता  
 का घोर रोग सुनकर ३ चढ़ाये ॥ ४६ ॥ ४ नाज ॥ ४७ ॥ ५ दंड के रुपये ॥ ४८ ॥  
 ६ घर ॥ ४९ ॥ ७ कौटा के राव माधोसिंह ने शरीर छोड़ा ८ मुकुंद नामक ९  
 अगम्य (अतीति) ॥ ५० ॥ १० मैने (चांडाल विशेष) की स्त्री को



बादशाहका पुत्रों को तीन दिशाओं में भेजना] सप्तमराशिसप्तममयूख २६३३)

मिच्छपन नारिसन होत रत प्रेममय ॥ ५१ ॥

मिच्छकहैं अप्पि तनयाहु हैं मिच्छही,  
कोनकुल नीच तनया जु अपनै कही ॥

व्याहि तनयाहि संबंधि मिच्छन बनै,  
तत्थ किम धर्म मैनीन करि भैं तनै ॥ ५२ ॥

साह घर आत इत देस प्रायागसन,  
सोद करि कुमर दारा ४०।१ हु आयो मिलन ॥

भीम १९५।२ बुंदीस सुत तत्थ गतपान भो,  
हो जु दारा ४०।१ सु भटन्तास बपु हान भो ॥ ५३ ॥

अब्द सुनि व्याम हय इंदु १७०७ सक वत्त यह,  
राम हुव पोसवदि तीज ३ सबके असह ॥

सोहि बुन्दीहु दिन सत्त ७ पाछैं सुनी,  
वत्त सुनि अग्ग निसतारि चैंविहैं चुनी ॥ ५४ ॥

या १७०७ हिसक साह लखुनीन ३ सुत काला अहि,  
तीन ३ दिम लाह करि नाह पठयो तवहि ॥

सोहु मधुगम २०३।४ क्रम १ नाम २ जुत लेहु सुनि,  
पात फल वण जिन्ह दप्प रुकि अप्प पुनि ॥ ५५ ॥

सुनुदजो २ सुजा ४०२ पुज ११ दिस प्रेसयो,  
देस अधिकार सब प्राच्य १ तासों दयो ॥

पुल औरंग ४०।३ तीजो ३ सु दाक्षिण २ पती,  
सुकलयो अप्पि अधिकार दाहनमती ॥ ५६ ॥

देस प्राचीचप ३ चोथे ४ सुराद ४०।४ दिहैं दयो,  
राजपति मुख १ दारा ४०।१ सुदिग रक्खवो ॥

अधिक बढि बुद्धि १ छल २ पाप औरंग ४०।३ के,  
जाइ आवाच्य २ दिय दक्षिणिन जंगके ॥ ५७ ॥

॥ ५१ ॥ १ म्लेच्छ का पुत्री दत्तर २ मय ॥ ५२ ॥ ३ प्रयाग से ॥ ५३ ॥ ४ कर्दमा ॥ ५४ ॥

॥ ५५ ॥ १ पुन दिशा का ॥ ५६ ॥ २ पश्चिम दिशा का ३ दक्षिण दिशा के ॥ ५७ ॥

द्वंग ओरंगआवादः बहु दाम करि,  
निर्मयो तत्थ ओरंग४०।३ निजनाम करि ॥  
देस तापीशरु गोदावरीर पूत दुवर,  
है दुहूर ओर तिन्ह बाच यह नैर हुव ॥५८॥  
॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

उत्तरः तापीर आहिं, दिसदक्खिनर गोदावरीर ॥  
मंडल जो इनमाहिं, खानदेस सो भाखियत ॥५९॥  
अग्नि कोन पुरर एह, दुर्ग दोलताबादतै ॥  
अति ढिग आढ्य अछेह, बहुरि सुनहु जैसै बन्ध्याँ ॥६०॥  
हुत लहि जनक निदेस, साहकुमर ओरंग४०।३सो ॥  
विरच्यो नगर सुवेस, उत ओरंगाबाद इम ॥६१॥  
नृपको इत वह नाग, सिवप्रसाद मिलि विधि मरयो ॥  
या गजमै अनुगग, सबको हो साहन सहित ॥६२॥  
प्रतिमा तस महिपाल, पुर बुन्दी थप्पिय प्रथित ॥  
सो बाजार विसाल, नियत सिंह चैत्वर निचित ॥६३॥  
इत कहूँ समर उदंत, हुकम सता१९४।१को सखि हद ॥  
भूप कुमर भगवंतः१९५।३, अभय१९४।३ हन्याँ हरिः१९३।३पुत्र वह ॥  
पीछै सासन पाइ, अधिप कुमर भगवंतः१९५।३ यह ॥  
जय कर दक्खिन जाइ, रह्यो सुभट ओरंग४०।३को ॥६५॥  
जगहि सता१९४।१ नृप जाइ, किय सहाय ओरंग४०।३को ॥  
जन कति इमहु जनाइ, तत्थ रह्यो भगवंतः१९५।३ तव ॥६६॥  
आसि करि हनत मैइंद, भुज पेठे तस नख उभयर ॥  
इम बहु गामः गइंदर, सता१९४।१ सुतहिं दिय साहसुत ॥६७॥  
दारा४०।१ हुकम दिवाइ, पहु सुत दूजोर भीमः१९५।२ पुनि ॥

१ पवित्र ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ २ अग्नि कोण ३ धनवान् ॥ ६० ॥ ११ ॥ ४ हाथी ॥ ६२ ॥  
५ प्रसिद्ध ६ मित्रचौक में बनी हुई है ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ७ खड्ग से  
सिंह को मारते समय ८ हाथी ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

छम बुलाइ हित छाड़, निज आश्रित रख्यो निपुन ॥६८॥  
 यह अति पुब उदंत, जब दारा४०१ निज जनकसौं ॥  
 लियउ प्रयाग लसंत, भीम१९५१२ रह्यो तब तास भट ॥६९॥  
 निहित रामगढ१ नाम पुनि सिंगावद२ परगनाँ ॥  
 ए उभय२हि अभिराम, दारा४०१ तँहँ भीम१९५१२हिँ दयो७०  
 अटकपार सन एह, पुर जब आयो जवनपति ॥  
 दिल्लीतव तजिदेह, भीम१९५१२ कुमार सुरपुर भज्यो ॥७१॥  
 बच्यो याहिको बंस, औरनके बिनसे अखिल ॥  
 यह हड्ड६१न अवतंस, सह विस्तर इत सूचियत ॥७२॥  
 बंस रहे वय बाल, जिहिँ सुत कृष्ण१९६१२ प्रयाग१९६१२ जुग२  
 कर्यो अनुज२ सिसु काल, रन सप्रज अग्रज१२रह्यो ॥७३॥  
 भीम१९५१२ मरन सुनि भौन, जिमकुमरानी चउ४ जरिय ॥  
 हाहा बुंदिय होन, कहियत सब अग्रिम कैरन ॥७४॥  
 इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी-  
 वसुधावरशत्रुशाल्यचारित्रे अफगानिस्तानविजयशाहजहांप्रयागसमय  
 करतोयोल्लङ्घनार्यराजास्वीकरणा १, करतोयापरतटसहगामिमाध-  
 वसिंहार्थशाहजहांबुन्दीगज्याच्छिन्नवारांमऊप्रान्तप्रदान२, काबुल-  
 प्रयागतयवनेन्द्रस्य करतोयानुल्लङ्घकार्यराजदमन३, विक्रमनगराधि-  
 पसरजासिंहमरणो पट्टाधिकृतकर्णसिंहयवनेन्द्रदण्डसंप्रापण ४, दि-  
 १ शोभायमान ॥ ५९ ॥ २ सुन्दर ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ३ सुकुट ॥ ७२ ॥ ४ संतान  
 सहित ॥ ७३ ॥ ५ अगले मयूख में कहते हैं ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के प्रपति  
 शत्रुशाल के चरित्र में अफगानिस्तान विजय करने को शाहजहां के जाते स-  
 मय अटक नदी उल्लंघन करने को आर्य राजाओं का अस्वीकार करना ? को-  
 टा के अधीन माधवसिंह को अटक पार बादशाह के साथ जाने के कारण  
 शाहजहां का बुन्दी के राज्य से वारां और मऊ के परगने खालसे करके को-  
 टा के आधीन करना ? बादशाह का काबुल से पीछा आकर अटक नदी न-  
 हीं लांघनेवाले आर्य राजाओं को दंड देना ? बीकानेर के राजा सरजासिंह

ह्रीदङ्गकोटाप्रत्यागतमाधवसिंहतनुत्यजनः, शाहजहाँस्वात्मजपुत्रः  
कृष्णकृपान्तवितरणा, राजपुत्रभीमसिंहमरणा सप्तमो मयूखः ॥१॥

आदित एकोनविंशत्युत्तरद्विशततमः ॥ २१९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती निश्चितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

क्रिय विवाह भाऊ १९५११ कुमार, सब बाह् १२ विधिसत्य ॥

तासचरित कहिहैं तिते, कृष्ण १९६१२ कुलहु तिम तत्या ॥

अब प्रसंग संगत इहाँ, बरनत भीम १९५१२ विवाह ॥

कुमरानी खट ६ जिहैं कुमार, रुचिर बर्ग विधिराह ॥२॥

भोजाउत बत्तभद्रकी, कनी अनोपकुमारि १९५१२ ॥

प्रथम १ नरायनपुर पगनि, निपुन चालुकी नारि ॥३॥

सेखाउत दूजी २ सुमत, अमाकुमरि १९५१२ अभिधान ॥

कन्हसुता व्याही कुमा, सुतदुवर जास सुजान ॥४॥

खीनाँपुर जुझारखाँ, बैलन चालुक बास ॥

कनी बडी १ देउलकुमरि १९५१३, तीजी ३ व्याहियतास ॥५॥

जिम सर मथुग जादवी, चौथी ४ बरिय विचारि ॥

सुता बहादुरकी सुपै, कथित अनोपकुमारि १९५१४ ॥६॥

दुबलानाँ चालुक दई, जिम राउत जगतेस ॥

कनी सोहु देउलकुमरि १९५१७, उपर्यम पंचम ५ एस ॥७॥

रामसुता रंभावती १९५१६, व्याहिय छडे ६ व्याह ॥

कै १ मगताउति १ही सुकै १, राजाउति २ भ्रम राह ॥८॥

का देहान्त होने पर कर्णमित्र का गद्दी बैठकर बादशाह से दंडित होना ४ च  
हुवाण माधवसिंह का दिल्ली में कोटे आकर शरीर छाँड़ना ५ बादशाह शाह  
जहाँ का अपने पुत्रों को भिन्न भिन्न सूबे देना ६ राजा के पुत्र भीमसिंह के म  
रने का सातवाँ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २१६ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ प्रसंग के साथ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ १ बालगोत सोलंखी ॥ ५ ॥ ३ कही हु  
ई ॥ ६ ॥ ४ विवाह ॥ ७ ॥ ८ ॥

ऊठा ए खट६ भीम१९५२ इम, हित वय दुल्लह होइ ॥

भई पंच५ अप्रज भये, दूजीकें सुत दोइ२ ॥ ९ ॥

दारा४०११ नैं यह तिन दिनन, साह कथन अनुसार ॥

नृपसों कहि रख्यो निकट, कोविंद भीम१९५२कुमार।१०।

॥ मनोहरम् ॥

सासनसों दारा४०११ जब पाइकें प्रयाग सूवा,  
जायकछु हायन रह्यो सो तैंहैं जानिये ॥

सूवा निजमाँदिसों वहाँ रामगढ१ सिंगावाट२,  
परगनाँ द्वेइही दये भीम१९५२हि प्रमानिये ॥

गंगातट दखिखन वहाँ प्रसंगम पै दारागंज,  
दारा४०११ जो बसायो देख्यो विदित बखानिये ॥

अटकतैं दिल्ली सुनि तात निज आयो दारा४०११,  
दिल्लीहू उहाँ भो भीम मृत्यु उर आनिये ॥ ११ ॥

॥ रुचिरा ॥

संवत समय नयन वसु सोलह१६८२ भीम१९५२ कुनर जनु  
लेत भयो ॥

अद्रि गगन सत्रह१७०७संवत इम दिल्ली तव तजि देह गयो ॥  
पोस १० असित २ तिथि तीज ३ समे पर भीम १९५२ परत

अति हानि भई ॥

दिन सप्तम७तासों दसमी१०पर गढ बुंदिय यह बत गई ॥ १२ ॥  
कुमरानी छट्ठा६पहिलैं कछु मंदनिर्यति लहि रोग मरी ॥

पंच५दि खिल तिनमें चउ४पतनी जरन तैंदुपवन जाइ जरी ॥  
अमर कुमार १९५२ दूजी २ सेखाउति पोतक कृष्ण १९६१

प्रयाग १९६१ प्रसू ॥

अतिसाहस निऊय लागि पढ़हु उद्विग सह हुत करन असू ॥ १३ ॥

विवाहिता ॥ ९ ॥ २ चतुर ॥ १० ॥ २ संगम पर ॥ ११ ॥ १२ ॥ ४ मंदभाग्य  
धार याग में २ भाउक ७ प्राण होन करन को ॥ १३ ॥

सो सत्वर निज स्वसुर सता१९४१के रोकत अति हठ निठि रही  
पुर कापरनि रची जिहिं बापिय मंजुल अबलग विदित मही ॥

कृष्ण १९६१२ बच्यो तनिबे प्रभुको कुल मिलि गैद सिमुहि प्र-  
याग १९६१२ मर्यो ॥

प्रभुमत विनु अनुजात जु पंचम ५ भ्रात सु मुहुकम१९४५ लोभ  
भर्यो ॥ १४ ॥

पासहि रक्खि जनक दारा४०१२ पुनि दिस त्रय शंखिल सुत त्रय शिं दई  
तकि मुहुकम१९४५ पहिलैं दिल्ली तब लैन पटा दढ आस लई ॥

अग्रजके अनुमत विनु आवत सुनि पावत दिल्लीस मुही ॥

पिसुनै१कुपुत्र२जनाइ रु प्रत्युत गिनि अनुचित अपकिति गुंही१५  
साह ढिग सु बुल्ल्यो हु न सादर कछुक पटाहु न दैन कह्यो ॥

तब मुहुकम १९५५ प्राची १ पतिकों तकि रुठि सुजा ४०१२ ढिग  
जाइरह्यो ॥

पहु यह सुनंत सता१९४१खिजि तापर लिखत दुधारिय छिन्नलई ॥  
लोभित इंद्रगढेसहु दिछिय दूजे२अनुजहु दिठि दई ॥ १६ ॥

अलप पटा दिष ताहि जवन इम भोगि अचिर तिहिं विरत भयो ॥  
सुत गजसिंह१९५१हिं रक्खि तहाँसन लाजि अप्पन गृह आइ लयो

उपआलंभ दयो नृप१अनुज२हिं किम विनु सासन भ्रमन करयो  
अवनि१तथापि कितीक लही अरु धन२जस३पद हु कितोक धरयो१७

मूढ अनुज तब जिम हुव मुहुकम१९४५तूहु लुभाइ न होहु तथा ॥  
सह जस१लाभ२चढहु आदरसन पिक्खहु निज कुल धर्म प्रथा ॥

मान बढाइ मिलैं विनुमंगिय१मंगिय२सो न घटाइ मिलैं ॥  
जे जग जनम न उच्च बढैं जिन्ह खंडन जस हिय सुमन खिलैं १८

१ शीघ्र २ रोग ३ छोटा भाई ॥ १४ ॥ ४ बड़े भाई की सलाह बिना ५ चुगल  
खोर ६ उल्टा ७ अपकीर्ति गुथी ॥ १५ ॥ १६ ॥ ८ विरक्त ९ आलंभा ॥ १७ ॥  
१० खाटवां (सम्पादन) ११ हृदय रूपी पुष्प ॥ १८ ॥

\*वासवसंल्ल१९४।२हिं समुभाइ रु पुब्ब जथा पय लाइ लयो ॥  
 सुजा४०।२मिलि इत मुहुकम१९४।५कैहँ देय पटा कछु कहुदियो,  
 रहिलैं ताजमहल इतैं अतिप्रिय मंजु जवनपति हुरम मरी ॥  
 ।हजिहान३९।२अतुल दुख सोचि रुधी जग जसतसरहन धरी १६  
 अकबरपुर जमुनातट वाकैहँ देस उचित दफनाइ दई ॥  
 कोटिन दम्म खरच तापर करि ललित मुकविरा कितिलई ॥  
 उपल विविध अतिअर्घ चिराइ रु जिहिं आलय सब जेहिजरे ॥  
 पसु१फल२फूल३छाता४हुम५पच्छिय६इम सब उपलन कौरि करे २०  
 पटुनम चित्र करहु गैजरदपर रुचिर कमलकरि चित्र रचैं,  
 तदपि न नैक धरे छवि तिनकी मन जिन्ह कैंतपन चित्र मचैं ॥  
 इक१इक१अल्प कुसुमबिच अद्भुत सत्तरि७० सकल जैराव सज्यो  
 नखहु घिस्यो जिनपैं अटकैं नहिं तिमइक१बनितिन भेद तज्यो ॥२१॥  
 मंडप तस खट रस ससि१६६कर मित उच्छ्रित मनहु अकास अरैं  
 व्यासहु तास छ वेद४६ करन बनि प्रतिदिस जास प्रकास परैं ॥

॥

वेगमकबर रुचिर ताके बिच बहुधन उपलन जटित बनी ॥२२॥  
 चउ४ कोनन मोनार वनैं चउ४ उच्छ्रित अंतर मग्न अहो ॥  
 जर्ता खिन प्रभु मैहु चढ्यो जैहँ क्यौं न टिक्यो हटतैहु कहो ॥  
 आयत चउ४ द्वारनपर आयत वर्ण जवनलिपि जटित वनैं ॥  
 बहु जलजंत्र१कुसुमबाटों२वर खचित वितैदि१प्रैनाल२खनैं ॥२३॥  
 श्रमित जनन सबकतु जैहँ प्रविसत माधव१ऋतु सरवस्व मिलैं,  
 अलि१खग२गन गुंजन१कूजन२इत खिनखिन जित तित कुसुम३खिलैं  
 ॥ इन्द्रयाल ॥ १६ ॥ १ पापाण ॥ चद्र मूल्य १ पत्थरों को २ खोदकर ॥ २० ॥ ३ हाथी  
 दांत पर ४ सत्यपन में आश्रय होता है ५ जड़ाव ॥ २१ ॥ ६ ऊंचा ७ विस्तार  
 ॥ २१ ॥ ग्रन्थकर्ता कहता है कि दलीप यात्रा के समय में भी उस पर चढ़ा था  
 ९ चौड़े १० फारसी के बड़े अक्षरों में ११ चतुर्थे बने हुए हैं १२ नावियों खुदी  
 हुई हैं ॥ २३ ॥ १३ वसंत ऋतु

महकि सुगंध१ मंदर२ हिम मारुत हिय१ संगहि श्रम२ सबन हौ॥  
जासन रुचिर अंगार अखिल जग प्रथित न ओरहु जानिपै॥२४॥  
सत्रह१ ७ लख त्रि३ कोटि३ १ ७०००००० लगे सब रूपय जिहि  
सिर लिखित रहै ॥

जिहिं सिल्पी सु रच्यो तस फल जहँ कट्टिय करतस साह कहै॥  
तैसो अदय हुतो हाहा तब गीदर सुत ओरंग४०।३ गह्यो ॥  
जो बितथहि तो सोहु अदय जिहिं बितथ कथन श्रम विफल  
बह्यो ॥ २५ ॥

असौ हुरममुकबिरां अद्वय२ ललित विरचि जस साह लयो ॥  
जाकहँ ताज हुरम रोजा जग भनत इमसु तिहिं काल भयो ॥  
इत बुन्दी१ पट्टनि२ दुव२ पुर इम रुचिर सता१ ९४।१ प्रासाद रवे  
अद्वय एहु उभय२ सम अधिपन आयत१ उच्छित२ जटित२ जवे  
प्रभुपद छत्रमहल१ बुन्दीपुर जटित सितोपल तुंग जथा ॥  
गंजत जो पारद सित रुचिगुन परिचित सारद जलद प्रथा ॥  
सब गुन१ उच्च२ पृथुल३ दृढ४ जासम सौध द्वितीय२ न जात सुन्यो  
सूत्र१ दिसा२ साधित जो सिल्पिन चतुरन चित्रविचित्र चुन्यो ॥२७॥  
याकै सिर हाटकमय उत्तम दिव्य जटित मनि छत्र१ दयो ॥  
पाद सुबुद्ध१ ९७।१ समय कोटापति गंजि सबन लौ भीम१ ९५।३ गयो  
यह रचि छत्रमहल१ बुन्दी इम पट्टनिपुर प्रासाद२ प्रथा ॥  
सबसन तुंग चढाइ रच्यो सुभजगइक१ हिम गिरि सिखर जथा २८  
चन्मलि वामतट सु जाके चर्य पंच५ निवर्तन पीठ परयो ॥

१ मकान ॥ २४ ॥ जिस कारीगर ने उसको बनाया था उसके हाथ कटवा डाले  
तभी उसके पुत्र औरंगजेब ने उस गीदड़ को कैद किया २ जो यह बात सूठ  
है तो वह निर्दय है कि जिसने यह झूठ कहने का वृथा श्रम किया है ॥२५॥ ३ बो  
ले और जंवे ॥ २६ ॥ ४ श्वेत पत्थर का जड़ा हुआ जो ५ पारे की श्वेत क्रांति के  
गुणको दवाता है और शरद ऋतु के बादल का परिचय कराता है १  
महल ॥ २७ ॥ ७ स्वर्ण का ॥ २८ ॥ ८ समूह ९ बीस मांस का एक



बुंदी के केशव भगवान् के मंदिर का वर्णन] सप्तमराशि-अष्टममयूख (१६४१)

जिंहिं\*उच्छ्रय बाहिर वह जा सन धरनि समाहित द्विशुन धरयो ॥  
इकसत १०० कर चर्मेलि हृद अंतर गाढ निचित छिति मग्न गयो  
‡पीठक मध्य विभाग महा पृथु ठाम बिहित प्रासाद ठयो ॥२९॥  
सब भुवके दुवर्षविध प्रासादन उच्छ्रित हुव प्रासाद वहै ॥  
जोजन चउ४ दूरहु जो मनुजन रम्य सविध सम दिष्टि रहै ॥  
सुवरनछल १ कलसरदुवर्षोभित बहु धन उपलै विचित्र बन्धो ॥  
प्रभु केसव जामैं पधराये तँहँ व्ययसह मह अतुल तन्धो ॥३०॥  
पट्टनि तँहँ जितोक परनाँ सो सब तत्थ लगाइ सदा ॥  
राज्य प्रताप अधिक तँहँ रक्खिय उदित बिभव सब राज्य सदा ॥  
तँहँ भेरीबादन १ प्रतिजाम २ रु रंजन गायन २ मिथुन २ रहै ॥  
घटिका जंत्र ३ घटी १ प्रतिघोसक ४ जकुट लकुट प्रतिहार  
५ लहै ॥ ३१ ॥  
समयसमय सेवन बहु सेवक ६ तखत ७ रु चामर ७ छत्र ८ तर्ती ॥  
प्रभु अवसर बाहिर पधरावै सह गज १० सादिय पंचसती ५०० ॥११॥  
भूखन १२ ससन १३ बसन १४ नवनव भांति समयसमय मह  
१५ बहुल बढै ॥  
केसव कोसैं बचै सु रहै वसु १६ चित वसु बलि जुहि भेट चढै ॥३२॥  
मंदिर विघनबिनासक जन १८ सुख मासिकसैं दिय तिन्हहु मही  
राजबिभव प्रभुकेँ इम रक्खि रु आयउ पुर अरि अनिलेँ अही  
बुंदीतँहु रहत खिल वासर च्यारि ४ घरी हय डाक चढयो ॥

निवर्तन होता है ऐसे पांच निवर्तन अर्थात् सौ १०० वाँस का जिसका  
पीठा (चवूतरा) है. बाहिर \* ऊंचा है उससे दुगुनी भूमि है नींव (बुनियाद)  
‡ उस पीठ (चवूतरे) के मध्यभाग में बड़ा मोटा ॥ २९ ॥ १ ऊंचा २ पत्थर  
॥ ३० ॥ ३ आधीन ४ नोवत का बजना ५ प्रहर प्रहर प्रति ६ जोड़ा अर्थात्  
दो द्वारपाल ७ छड़ी लिये रहते हैं ॥ ३१ ॥ ८ पंक्ति ९ नैवेद्य वा पद  
१० नदीन नदीन भांति के ११ खजाने में ॥ ३२ ॥ १२ शबुओं रूपी पवन क

संध्या पट्टनि सज्जि सिधारत विघ्नन पारतभक्ति बढयो ॥ ३३ ॥  
 इम प्रासाद उभय२रचि अद्भुत लोभी नृप जसलुट्टिलयो ॥  
 इकदिन सब \*संसद लहि अवसर भाऊ १९५१ प्रति इम भनतभयो ॥  
 पलितधरत अब हम रन प्राघुन मह अहं चाहत नियति अजा ॥  
 तूहु तरुन सुत १ सिसु मरिगो तब प्रभु इम दैहैं बहुरि प्रजा ॥ ३४ ॥  
 त्योंहु नियतिप्रतिकूल मिलैं तहैं भीम १९५१ तनय लहि अंक भलैं  
 व्याहन सिसु गंगा १९५१ तव बहिनी फल यह जो नहिं हमहिं फलैं ॥  
 बिकखहु तो जव जाँमि उचित वय करि महतो यह देहु कुलैं ॥  
 अनुजा लाडकुमरि १९५१ न बची इम तस भर तव सिर नाहिं तुलैं ॥  
 भाऊ १९५१ कुमर प्रनत सुनि भाखिय प्रभु मतमैं नहि भेदपरैं ॥  
 अधिप सता १९४१ सकुटुंब कलि ४ हु इम कृत १ जुग बुंदिप  
 बिलासि करैं ॥

ग्रामअयुत १०००० लगते बुंदीगढ जहैं सत चउदह १४०० जवन लये ॥  
 कौतुक १ रीभरहगाम शतदपि क्रम दिनदिन नृप धन अधिक दये ३६  
 इत औरंग ४०१ बसाइ नगर वह कछु बढि दक्खिन अमल कस्यो ॥  
 भागनगर १ बीजापुर २ भटगन रोकि बढन रन अहु अरयो ॥  
 साहजिहान ३९१ जिती भुव सज्जिय यह जब तासहु अगग चलयो ॥  
 बेगहि तब दक्खिन २३ दल वीरन दिल्लिय दल हुत आइ दलयो ॥ ३७ ॥  
 इत अतिवीर सितारा ३ के अरि पच्छिम ३१५ सन मरहट्ट परे ॥  
 जितहि बढे तित आइजुरे जिन कन कन प्रतिभट मुगल करे ॥  
 सोम जितीक लई निज दब्बि सु लहि अब अधिकहु लैनलगे ॥  
 तोपप्रमुख उपहार सबै तनि गढ गढ निज सजि गैने लगे ॥ ३८ ॥  
 पीनेवाला सर्प ॥ ३३ ॥ \* सभा में † श्वेत चालों को धारण करनेवाले ‡ पु-  
 ङ्ग के पाहुने ? प्रतिदिन २ भाग्य की ३ अनुत्पत्ति (मोक्ष) चाहते हैं अर्थात् प्र-  
 तिदिन यही चाहते हैं कि हमारी मोक्ष होवे ४ संतान ॥ ३४ ॥ ५ और जो  
 भाग्य विपरीत मिले तो ६ भीमसिंह के पुत्र को गोद ७ शीघ्र ८ बहिनी ९  
 ॥ ३९ ॥ कलियुग में इसप्रकार ९ सत्य युग करता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १० तोप  
 आदि ११ आकाश में लगे यह अत्यंत उद्धत के लिये कहायत है ॥ ३८ ॥

शत्रुशालकाबुन्दीमेंसबकोमनवांछितदेना]सप्तमराशि-अष्टममयूख(२६४३)

भाननगर१ पूर्व१ भयकारक बीजापुर२ जर्म ओर२ बली ॥  
 पच्छिम३ असह सितारा३ पत्तन चउ४दिस तीन३न तेग चली ॥  
 बढत बढयो ओरंग४०।३ सु पै अब घटत अंतंत्र सिखाइ घनों ॥  
 गंठिहुके जु गुमाइछुक्यो गढ पाइ न हाइ प्रबीरपनों ॥३९॥  
 तबहि सिटाइ दयो दल तातहि भूमिवढात विपत्ति भिरी ॥  
 बुंदीभूप पठावहु तो बलि फैलतपावहु आन फिरी ॥  
 वह दुर्मन भुव तस लौ अप्पहु कोटापतिबस जदहि करी ॥  
 अप्पनअर्थ सदा यह साधत धी तस अप्पन कानि धरी ॥४०॥  
 सो करि तुष्ट सता१९४।१ नृप संभर प्रभु इत भेजहु भीर परी ॥  
 पत्र सु वंचि बुलाइ सता१९४।१ पुनि कछु जवनेसहु प्रीति करी ॥  
 नाम गजादि गनेसकरी१ जिन तुरग२ विदित रहबाद तथा ॥  
 वस्त्र३ रु भूखन४ सरत्र५ सबै बर जे दिय दुर्लभ उचित जथा ॥  
 तदपि महीं न दई रंचहुं तिम कथन१ मुगल सह किति२कह्यो ॥  
 अबकी बेर सता१९४।१ जय आनहु लघु तव जानहु देस लह्यो ॥  
 इम कहि सिक्ख दई तब अधिपहु लौ बल बुंदिय सिक्ख लाई ॥  
 जनपद आइ संजे रन जोधन भिरन प्रबोधन रीक भई ॥४२॥  
 वंदि अयुत१००००रूपपयतँहँविप्र१न लहि खिन कवि२जन बुल्लिलये  
 तिनहित इकसत तीस१३०तुरंग१रु दम्म२सहँस चउबीस२४०००दये  
 सतत्रय३ ००बाजि१ रु दम्म२ सहँस सुर३३००० जो धन जोध३न  
 अप्पि जथा ॥

दु अयुत २००००दम्म सचिव मुख दास४न पननारि५न वसुंस-  
 हँस ८००० मैथा ॥४३॥

छसहँस६००० दम्म गायक६न दिय छैम इतर७न पंचक५ सहँ-

१ दक्षिण दिशा २स्वतंत्रता घटने पर बहुत सिटाया ॥ ३९ ॥ ३ पिता को पत्र  
 लिखा ॥ ४० ॥ ४गणेशमज ॥ ४१ ॥ ५ शीघ्र ६ सेना ७ देश में ॥४२॥ ८ समय  
 पाकर. सचिव ६ आदि सेवकों को १० वेश्याओं को ११ प्रसिद्ध ॥ ४३ ॥ १२  
 उस समर्थ ने

हंस ५००० अहो ॥

बरख्यो धन सावनधनके विधि निर्धन रंकहु लखन नहो ॥  
 इम करि रीझ प्रबिसि प्रभु आलय पीतंबर १ पय प्रनत पश्यो ॥  
 पूजन ठानि प्रसाद लह्यो पुनि धी कुलदेविय २ दरस धर्यो ॥४४॥  
 आसापूरनि २ पूजि उमा वह जासहु पाइ प्रसाद जहाँ ॥  
 लाये कृष्ण १९६।१ कुमार ललाटहिँ स्व अलिक अच्छत शति-  
 लकर तहाँ ॥

सोहि सबन तब पट्टकुमर सुवै पट्टकुमर यह समुक्तिपरी ॥  
 भाऊ १६५।१ कुमार सुही मन भाइ रुखुव तस सिरनिज पगध धरी ४५  
 यह लखि होइ प्रसन्न सता १९४।१ इम अधर महल नमि इष्ट उभै  
 दक्खिन २।३ चढन विचारिय दुद्धर दूर करन आरंग ४०।३ दुँ २ भै ॥  
 सक नवनभ सत्रह १७०९ विक्रम सम ईन १ सित १ माधव २ तीज ३ अखै  
 परसुधरन जिहिँ दिन अवतारि प्रभु खिजि किय छत्रन बंस सखै ॥  
 जाहिदिवस चंडासि जनमि जब वानतनय जुग २ काल बन्यो ॥  
 जाहिदिवस समरेस १८१।७ कुमार जब तिम लहि बुंदिय सुजस तन्यो  
 जाहिदिवस ताके सुत जैत्र १८२।३ हु कोटा निबसन सिद्धि करी ॥  
 जाहिदिवस यह ग्रंथ रचन जिम धी कवि इहिँ आरंभ धरी ॥४७॥  
 जाहिदिवस नरनाह सता १९४।१ जव कुंच सु दक्खिन २।३ ओर कर्यो  
 पट्टकुमर भाऊ १९५।१ ढिग नयपटु धीर चतुष्क ४ कहैं सु धर्यो ॥  
 वासवसल्ल १९४।२।१ अनुज धरि बुंदिय तिम रुकमंगद १९५  
 १।२ स्याम १९४।२ तनै ॥

॥ ४४ ॥ १ ललाट में २ पाटवी कुंवर का पुत्र ॥ ४५ ॥ ३ नीचे के मह-  
 ल में ४ दोनों भय अर्थात् भूमि जाने का और हारने की लज्जा का ५ राजा  
 १ वैशाख सुदी तीज अर्थात् अक्षय तृतीया के दिन, जिस दिन परशुराम ने  
 अवतार लेकर ७ क्षत्रियों के वंश को क्षय सहित किया था ॥ ४६ ॥ ८ च-  
 हुवाण ९ कुमार समरसिंह ने १० जिस दिन कवि सूर्यमल्ल ने इस ग्रंथ (वंश-  
 भास्कर) की रचने की बुद्धि की ॥ ४७ ॥ ११ शीघ्रता से

शत्रुशालका औरंगजेबके पास जाना ] सप्तमराशि-अष्टममयुख(२३४५)

मुकल १८४१४ वंस अनुज माधव १९३१२ को आसकरन १९३१३  
तिम प्रहृत अनै ॥ ४८ ॥

केसव १९२१२ कुल सुखसिंह १९४१४ उचित कहि धुर भट  
ए चउ४ गेह धरे ॥

सूचित दिन संतत नृप संक्रमि क्रम सम दक्षिखन १३ कुंच करे ॥  
व्यूह १ विधान सरनि ध्वजिनी बहि रति सु सिबिर २ विधान रही  
पहुँच्यो इम औरंग नगर पहु गढगढ सत्रुन भीति गही ॥ ४९ ॥

आइ सुमुख लै जाइ मुदित अति साह कुमार जयलाह सज्यो ॥  
जिम नृप कहिय तिमहि हित जानि रुतकि नयपुब्ब प्रमाद तज्यो ॥

भागनगर १ बीजापुर भूपन दुवशदिस नृप इम पत्र दये ॥

तुम १ हम २ वचन हुतो सु अविदित न लिखि जुहि इज्जत १  
ज्यान २ लये ॥ ५० ॥

वयमद करि औरंग ४०१३ उतैं बढि लुब्ध कुसंग अनर्थ लह्यो ॥

गढ गंजे चिरकेहु गुमावत बालिसपन हठ विफल बह्यो ॥

तुम अब पुब्बहि सीम रह्यो तिम हद पर जानहु हमहु दटे ॥

क्यों इत १ उत २ सुभटन विफलहि कालि करि अनुचित सब  
लखहिं कटे ॥ ५१ ॥

दुव २ जवनेस लखि सु इतको दल भूपति प्रति इम लखत भये ॥

न हमहिं दोस सता १९४१२ नृप नैंकहु दिस त्रय ३ बढि पय सुगल दये

पूरव १ तिम दक्षिखन २ अरु पच्छिम ३ ग्रामहि इक दुव नैंहिं ग्रहे ॥

गढ पहिले दब्ये अपनैं गिनि चित्त अधिक हमरेहु चहे ॥ ५२ ॥

इत इक १ अज १ जवन २ दुव २ हम इत दिल्ली प्रति त्रय ३ इक १ दिपैं

वचन मिलि सु हम त्रिकैं ३ हि निबाहत लेस न जिम कहूँ भेद लिपैं

२ अनीति को १ मिटानेवाला ॥ ४८ ॥ ३ व्यूह की रचना से ४ मार्ग में ५ सेना  
चलकर ६ रात्री में डेरा रचकर रहा ॥ ४९ ॥ ७ अप्रसिद्ध ॥ ५० ॥ ८ मुखपन  
९ युद्ध करके ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ १० सोभायमान ११ तीनों

रैन१९२।१ नृपति आसान जु सुमिरत तुमसन नन मन हितहिं तजै ॥  
 हम२सह सपथ मिले मरहठ१न भुवहित त्रिक३एक१त्व भजै ॥५३॥  
 हम१तुम२मेल सुनै मरहठ३हु तो छल रिपु इम हमहिं तकै ॥  
 दिष्ट सफल समुदित तिनके दिन समुक्ति सु भिन्नहुं न रहिसकै ॥  
 तकि दिल्ली अरिपन हम तीन३न प्रथितन भेदहु जानिपरयो ॥  
 किम तुम१ हम२हिं तुम१हिं हम२ हित करि कालि तनि वच-  
 न निबाह करयो ॥ ५४ ॥

मरहठहु अपनै सुनि मेलहि ततखिन हमसन मेल तजै ॥  
 यातैं करि गढगढ रन इक३इक१तोहु इम न हम उतहु लजै ॥  
 साहहु ठानि कुमरपन सपथ रु कलिं हम अखिल सहाय करे ॥  
 सिसु१बेगम२अपनै हम आश्रय धुव दोलत आबाद धरे ॥५५॥  
 दैन हमहिं कहतो बटि देसहि जे१हम२एस१हि साहजहाँ३१।३।२  
 कित दैबो सुने गिनि उपकार२हु तक्रत ए१अरि हम२हिं तहाँ ॥  
 साह१ कपट सपथन विसवासन इम ओरंग४०।३।हु तसहि तनै ॥  
 रक्खि सरन हम जिहिं असुं रक्खिय अरि गिनि चहत सुहनन अने  
 अगग पितर हमरे रन आलुल कहुत रैन१९२।१ जु कोल करयो  
 तुम सह रन टरिवो दहता बिच धुवकव इतर२न टरन धरयो ॥  
 यातैं तुम निज दल करि गढ इक१ कै दुव२लहि जय भिन्न करो  
 गंजे हम सिर सँटि जिते गढ धक जितने सब लैन धरो ॥५७॥  
 इत१ मरहठ२ गिनै तुमको अरि रीति सु तुम१ उत२ गिनतरहो ॥  
 तुम विसवास प्रमत्त रहैं तँहैं चितहु हमहिं न हनन चहो ॥  
 साहकुमर न तजै जो साहस तुम१ हम२ बचि खिल लरहिं ततो ॥  
 देहु न दोस दलतखिल पर दल निजनिज पन मन मिटहिं नतो ॥४८॥  
 महिपति अप्प तृतीय३ कुमारहु हमहिं लाखत भगवंत१९५।३हनै ॥

१ सौगंद ॥ ५३ ॥ २ भाग्य के फल से उनके दिनका उदय है ॥ ५४ ॥ ३ युद्ध  
 में ॥ ५५ ॥ ४ प्राण ५ युद्ध को मथनेवाले ॥ ५६ ॥ ६ मस्तक के बदले में ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

शत्रुशालसेदक्षिणकेराजाओंकावर्तलाप]सप्तमराशि-अष्टममयूख (२६४७)

कै१ जानैं न जुदो तुमसन कै१ बैरिय बैरिय गिनि सु बनैं ॥  
मह दल बंचि दयो नृप उत्तर भावित सब तुम उचित भनी ॥  
हैं सुत समुझाइ सुतो दृढ अब टरि टारहिं अप्प अनी ॥ ५९ ॥  
पै मम चक्र जुदो करि पानिप लारि कछु जो कछु दुर्ग लहैं ॥

य दिखाइ मरन१ मारन२ बिनु रन मरि१ मारि२न बचन रहैं ॥  
उचित हमहिं लारिबो संगहि इम इक्खत निजनिज टरहिं अनी ॥  
जुरि हम१तुम२इतरनसन जुझहिं धर जित लारि मरि देहु धनी ६०  
तिम दोलत आबाद लयो तब गढ जन सबकछु कहि गली ॥

अप्प बचाइ निकासे ते अब अधिकहिं इच्छत भूप भली ॥  
मूढ दु२दिस यह मति हुव गढगढ विचविच मारन१मरन२बुरी ॥  
भूपहु सुत उद्धत भगवंत१९५॥३हिं दृढ करि बोधिय बतदु२री ६१॥  
इम चउ पंच दिवस रहि अधिपहु कुमर बिजन लहि मंत्र करयो ॥  
ओरंग४०॥३हु लखि नृप आलंबन क्रमकरि सब तस तंत्र कर्यो ॥

मंत्रकरयो१ तंत्रकरयो२ अन्त्यानुप्रासः १॥

दक्खिन२॥३ देस सुदित१ अरु दुर्मन२ भूपहिं इम सुनि भीर भयो ॥  
आहव साज निचय साजि अवसर लहि जिमतिम अवधान लयो ६२  
॥ दोहा ॥

सता१९४१ सिविर रजनीसमय, आयो तैंहँ अवरंग ४०॥३ ॥

अक्खिय अब दादा उचित, जानि जितावहु जंग ॥ ६३ ॥

कहिय भूप जइताहि किय, हृद लंघत तुम हाइ ॥

रेखैं कुट्टत कोन रस, जैंहँ पन्नग भजिजाइ ॥ ६४ ॥

तदपि अज सुलतानको, पुहवी अतुल प्रताप ॥

जथा सकति हमरे जतन, अरि गन गंजहु आप ॥ ६५ ॥

१ पत्र बांचकर २ यह प्राप्त वार्ता तुमने उचित ही कही है ॥ ५९ ॥ ३ मेरी सेना  
४ पराक्रम करके ॥ ६० ॥ ५ छिपी हुई वार्ता को जनाई ॥ ६१ ॥ ६ एकान्त में  
लेकर ७ युद्ध के साज ८ समुच्चय ९ सावधान ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ १० सर्प निकल गये  
पीछे लकीर कूटने से क्या लाभ है ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥

सिंविरसमागम हेतु मन, उपदा गज१ हय२ आदि ॥

माहिंमाहिं लिय दिय मिलत, सह हित मह संबादि ॥ ६६ ॥

इम दक्खिन२३ जातहि अधिप, जुग२ दिस आसय जानि ॥

सज्जे रन उपहार सब, पर दल प्रसंभ प्रमानि ॥ ६७ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
वसुधावरशत्रुशाल्यचरित्रे अकवरपुस्ताजगञ्जनिर्माणातद्रचनावर्णन  
१, बुन्दीपुरच्छत्रप्रासादपट्टनमहलमन्दिरनिर्माणभणान२, औरंगजेव  
दलागमनेन साहजहांनिदेशात्ससैन्यशत्रुशाल्यस्य दक्षिणस्यामौरंग-  
जेवान्तिकगमनवर्णनमष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥

आदितो विंशाधिकद्विशततमो मयूखः ॥ २२० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सज्जे दल संभर सता१९४१, बज्जे सूचक बंब ॥

भर१ छज्जे भज्जे अभर३, लज्जे अलस३ विलंब ॥ १ ॥

सिलह१ सख२ भूखन३ बसन४, गज५ हय६रुप्पय७ग्राम ॥

बल इत१उत२ हुँत बंटियत, आदर गुन अभिशम ॥ २ ॥

भहनावत सानन भगत, हेति मनहुँ तर्पहेलि ॥

मन गहिलीधँट भट सुदित, किधौ सबय सिमु केलि ॥ ३ ॥

१ नजराना १ उत्साह के वचन कहकर ॥ ६६ ॥ ३ हठ.

शत्रुशालके चरित्र में आगरे में ताजगंज के बनने की कथा और उसकी र-  
चना का वर्णन १ बुन्दी में छत्र महल और पाटण के महल मंदिर बनने का  
वर्णन २ औरंगजेव के पत्र भेजने पर बादशाह, शाहजहां की आज्ञानुसार बु-  
न्दी के राव शत्रुशाल का सेना सहित दक्षिण में औरंगजेव के पास जाने के  
वर्णन का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बीस २२०  
मयूख हुए ॥

४ युद्ध की सूचना के नगारे बजे ५ भड़ (वीर) शोभायमान हुए ६ कायर भा-  
गे और देरी करनेवाले आलसी लजे ॥ १ ॥ ७ शीघ्र ८ सुन्दर ॥ २ ॥ ९ मानों  
श्रीराम के सूर्य के समान शस्त्र चमकते हैं १० पागल स्त्री के कलश के समान



जब डारी अवरंग ४०।३ जुरि, अदिन मत्थै अग्नि ॥  
 सो व सिलग्गी सोरसम, जोर बिलग्गी जग्नि ॥ ४ ॥  
 ध्रुव जिततित टामंक ध्वनि, हुव इत १ हित अनुहार ॥  
 हेंवर १ नर २ छाये हुलसि, पक्खर १ कवच २ प्रसार ॥ ५ ॥  
 जोरी बैलन बहु जकुट २, चोरी गेलन चाल ॥  
 नाली कति हंकिय निहुर, काली तति जिम काल ॥ ६ ॥

॥ अन्त्यानुप्रासिनीशेला ॥

भूप सता १६४।१ अवरंग ४०।३ भीर सज्जे दल संगर,  
 वज्जे भेरिन असह ब्रात धमकात धरा १ धर २ ॥  
 पिढि गजन केतन प्रलंब उडि छापो अंबर ॥  
 बुल्लि नकीवन क्रम विसेल संक्रम किय सत्वर ॥ ७ ॥  
 सिव १ आदिक कुतुकी समाज सब न्याँति समोसर,  
 सावन छल्लो सरित सेन दिपि हल्लो दुहर ॥  
 उद्धत बल अँचत अमान लंबे अँय लंगर,  
 पय अँडे डारत पयान बँडे गज वित्थर ॥ ८ ॥  
 मँदठरनाँ सरनाँ मनोँकि भरनाँ गिरि भंगर,  
 भद्रक १ मँद्रक २ मृग ३ अभिन्न ४ कुल १ खेत २ प्रथाँकर ॥

॥ ३ ॥ ४ ॥ १ नकारों के शब्द २ सदृश ३ बोड़े ॥ ५ ॥ ४ जोड़ा ५ तोपें ६ देवी  
 की पंक्ति ॥ ६ ॥ शत्रुशाल ने औरंगजेब की सहाय के लिये ७ युद्ध पर सेना  
 सभी वहाँ नहीं सहने योग्य पर्वतों को धुजानेवाले नौचतों के ८ समूह वजे  
 और हाथियों की पीठ पर १० लंबी ९ ध्वजाओं ने उड़कर ११ आकाश को  
 ढकदिया १२ शीघ्र चले ॥ ७ ॥ उस समय शिव आदि तमाशा देखनेवालों के  
 १३ समाज (समूह) को निडता दिया और सावण मास की छलती हुई नदी के  
 समान कठिनाई से धर्मशा की जावे ऐसी सेना शोभायमान होकर चली. उद्धत  
 चलवाले (नहीं माननेवाले) १४ हाथी लोहे के अतोल लंबे लंगर खींचने लगे  
 और वे मस्त हाथी घमंड के पैँड देकर विस्तार से चले ॥ ८ ॥ १५ उन हाथियों  
 के मद का गिरना है सो मानों झाड़ीवाले पर्वतों का भरना है १६ भद्रजाति  
 के १७ मद्र जाति के, मृग जाति के और संकर जाति के हाथी अपने कुल और  
 खेत को १८ प्रसिद्ध करके

उलटावत ऊरध उठात पन्नगगति पुंस्वर ॥

ईसा दंतन लसत अच्छ बर हाटक वंगर ॥९॥

हिमकर१ दिनकर२ मिलित व्है कि प्रतिमास अमा३० पर।

तनित चलावत करन तालसम पच्छ खगेस्वर ॥

स्थाम घटा पाउससमै कि वक्र१ विज्जु २ बरबर ॥

इभै१न घटा भल्ली अनेक इम हल्ली उक्करै ॥१०॥

प्रोथै२ वालिहक१ पारसीक२ कांबोज३ प्रथाकर,

खुरासान४ ताजिक५ तुखार६ भाड़ेज७ छटाभर ॥

जवन बनायुज ८ खेत जात चमकात चरा१चर२ ॥

क्रमि जलउप्पर किलकिला कि प्रसरै दल उप्पर ॥ ११ ॥

चक्र हयच्छट झुकि बहत कोदंड हसीकर,

पच्छे छुवत उठातपाय दगि भू बैसंदर ॥

ससि१ खुर१ तम२ खुरतार२ संग बिहरै जनु विज्वर ॥

क्रम नलकोल१न नैलकिनी२न घनपन मृग घत्वरै ॥ १२ ॥

पुडै जुग२ पिंडक प्रगोलै मृदु चक्र मनोहर,

उर आयतविष्टर विडंवि धारन दब्बै धर ॥

करन जुग२ल लघुपन कलीन केतक निदाकर,

१सूंड के अग्रभाग को ऊपर करके सर्प के फण के समान उलटाते हैं १लंबे दांतों में  
अष्ट सुवर्ण के धंगड़ सोभा पाते हैं ॥१॥ सांमानों प्रति महीने अग्रावास्या पर वर्ष  
और चन्द्रमा सामिल होते हैं और गरुड़ की पांखों के समान तनेहुप कानों को  
हिलाते हैं किना वर्षा ऋतु में कालीघटा में वक्र (बुगला) और विजली बराबर दा-  
खती हैं ३इस प्रकार की हाथियों की उत्तम घटा (सेना) ४उत्कर (हाथ पग हिला  
कर) अर्थात् पगों और सूंडों को हिलाकर चली ॥१॥ वालिहक आदि देशों में  
उत्पन्न होनेवाले ५घोड़े ६पानी पर किलकिला पची चले जैसे सेना पर फैलते  
हैं ॥ ११ ॥ सेना में गर्दन झुकाकर ७ धनुष की ८ हसी करते हुए च-  
लते हैं भूमि को स्पर्श करते ही पग पीछा ऐसा उठाते हैं जैसा ९ अग्नि से  
जलकर उठावे, चंद्रमा रूपी खुरों के साथ खुरताल रूपी राहु १० धिगत उवर  
(बिना पीड़ा) होकर बिहार करता है चलने में ११ नलियें और १२ जंघाओं की अ-  
धिकता से मृगों में १३ घुसते हैं ॥१२॥ जिन घोड़ों के दोनों १४ विशेष गोल पुंठ  
कोमल सुंदर चाक के समान हैं, जिन घोड़ों की १५ छाती १६ बाजोट की नक

सहनाइन चहुँन समान सुरि प्रोथे मनोहर ॥ १३ ॥

बत्थ न माइ नमाइ बंक कसते धनु कंधर,  
यालैन जूरा१ बिसिख२ ओप प्रतिबंध१ ज्यकार२ पर ॥

जवनी१ शालिग्राम२ जानि अंखी१ छंद२ अंतर,  
गो१धि२ सु नत जिम सुनत१ गोधि२ पन्नगदल पदर॥१४॥

थान१ उठे बपु२ चरन१ थंभ२ चल बालंधि१ चामर२,  
लेत कुसा छेकत मलंगि द्वैद्वै बरछी धर ॥

पलट१ उलट२ सफरीप्रमान मृगडान मनोहर,  
बिस्मय जव नटके बटौ१न कुलटादग केकर२ ॥ १५ ॥

गहि बत्थन पीछें गिरात अवननी जवनी अर,  
मुकुर विंव दिन चलन मान परिछो १ उडिबो१ पर ॥

जिन्ह पिकखत प्राकार जात न गिनै ब्राता नर,

ल करनेवाली है और वे दौड़ने में भूमि को दबाते हैं, जिनके दोनों कान छो-  
टेपन में केतकी की कली की निन्दा करते हैं जिनके सुंदर २ फुरण (नासि-  
का) सहनाई के १ मुख के समान मुड़े हुए हैं ॥ १३ ॥ जिनके धनुष के समान  
नमे हुए कंधे बाथ में नहीं आते हैं और उन कंधों रूपी धनुष में १ केसवाली  
का ४ जुड़ा (केशों का समूह) है सो ही ५ तीर की ६ उपमा के समान है.  
और ७ जेरबंध है सो ही ८ प्रत्यंघा है ९ उजाली ( नेत्रों के ऊपर का चछा )  
के भीतर नेत्र हैं सो मानों पड़दे के भीतर शालिग्राम है, उन घोड़ों के श्रेष्ठ  
नमे हुए ११ ललाट १० गोह (गोहिली) सर्प के नमे हुए ललाटके समान है औ-  
र सेना में सीधे चलनेवाले हैं (गोह भी सीधा चलनेवाला सर्प है) ॥ १४ ॥  
जिनके संधि की गांठों (छुटनों आदि) के अंग उठे हुए, थंभ के समान चरख;  
और चमरके समान हिलता हुआ १२वालछा (पूंछा) है. १३ जिनकी बाग उठाते ही  
दो दो बरछी भूमिको जो फांद जाते हैं १४ अच्छी के समान उल पलट करनेवा-  
ले और लंबे दौड़ने में सुंदर मृग, जिनके बिस्मय (आश्चर्य) करानेवाले वेग के  
समान न तो १५ नट का छोकरा और न कुलटा के नेत्रों के १६ अपांग (कटाक्ष)  
हैं ॥ १५ ॥ भूमि रूपी कनात को बाथों में भरकर शीघ्र पीछे गिराते हैं, उन  
का शत्रुओं पर उड़कर गिरना १७ काच विंव के समान और सूर्य किरणों के  
समान है, जिन घोड़ों को देखते मनुष्य कोट को अपना रक्षक नहीं समझते

जे द्रापक दुम सुमन जाल बहिंफाल बरव्वर ॥ १६ ॥  
 बैरीबाधक विविध बंस साधक भट संगर,  
 सज्ज सयन चउंठ भेद सखपर भेद प्रथापर ॥  
 इकपतनीव्रत जे अभंग रन व्याह वैन वर,  
 कति अछरि न चहैं कलत्र गिनि निज सङ्गतवर ॥ १७ ॥  
 के हरिपद? हरपद? कितेक इच्छे कुल उद्गर,  
 भाखैं सत्य? असत्य? भंजि मनके मकराँकर ॥  
 सज्ज्यो कबहु न स्वामिलौन जिनके परि जाँठि,  
 सुमनकली? नासीर? सीर भर भोग अलीभर ॥ १८ ॥  
 चालुक? तोमर? चाहवान? प्रतिहार? प्रथाधर,  
 के करम? जदबद कबंध ७ सीसोद ८ पुरस्सर ॥  
 सैंगर ९ दाधिम १० सकवाल ११ परमार १२ परंपर,  
 चावोरे १३ दहिये १४ चलाक मोहित १५ बडगुजर १६ ॥ १७ ॥  
 मोहित १७ बिंदु १८ रु मंक्रवान १९ कुल गोर प्रभाकर,  
 लुलक २० जाव २१ प्रभावलौन उफनाव अतित्वर ॥  
 इत्यादिक बाहुजैर उदार बलबाहुज विम्वर,  
 मरद किते बहुभेद मिच्छ? पहु भेद उभैर पर ॥ २० ॥

रेकांदकर चखने में वृत्तों की भरावर हो कर उनके गुणों की सुगंधि लेने हैं ॥ १६ ॥  
 शत्रुओं के नाना थंशों को पटानेवाले और गुल को साधनेवाले और जो  
 ने ३ शायों में ४ मुक्त, अनुक्त, मुक्तामुक्त और पंचमुक्त इन चार प्रकार के  
 शत्रु खजाने के भेदों में प्रसिद्ध हैं, कितने ही और अपनी स्त्री को अपने साथ  
 ३ जानेवाली (मनो होनेवाली) जानकर ५, पंचराशियों को स्त्री बनाकर  
 नहीं चाहते हैं ॥ १७ ॥ उन शायों में कितने ही निष्णु के और कितने ही शिव के  
 पदवाले और उत्तम कुल का उच्चार करनेवाले हैं जो शत्रु को मिटाकर सब  
 पोखनेवाले और मन के २ समुद्र के ८ तिनके पेट में पड़कर कभी व्यापारी  
 लौन पावन (हजम) नहीं हुआ, जो श्रेष्ठ मनवाले कर्तों के अंगर भार के मो-  
 गने में मोरी और भय के ३ पागे रहनेवाले ॥ १८ ॥ १० अथवा ११ चाप्रिम जो  
 अपनी सुजा से उत्पन्न हुए पक्ष को किलानेवाले ॥ २० ॥

लागि आली नाली प्रलीव काली कदनाकर,  
 लालीमुख लोहित लुभाइ चाली रन चत्वर ॥  
 गढलोपन गोपन गिरिंद ओपी अग्रेसर,  
 जनु हली डाकिनी जमाति असहन आडंबर ॥ २१ ॥  
 हरि१ गज२ अहि३ मकरा४दि हिंस्र आनन भय आकर,  
 जुते वृखगन विविध जोट पथ अँचत पदर ॥  
 पीलुन टल्ले पिठि पाइ सरके बलि ओसर,  
 चरखन अवनि प्रसात चक्र निकसात घने नर ॥ २२ ॥  
 इम चल्ली तोपन अनेक मिलि पंति मनोहर,  
 मरदठनसिर प्रथम मंडि सीमाहित संगर ॥  
 नासिक१पुर तिनको निराइ बेछ्यो बल विस्तर,  
 सूचत जँदै रावनस्वसा सु बनि विहँ लयो वर ॥ २३ ॥  
 तँहँ लारि तोपन दिवस तीन३ जित्यो नृप सत्वर ॥  
 मरदठे रनबहुत गारि पुर पाइ वहे अँर ॥  
 विंठयो गढ अँवकर२ वहोरि सजि तोपन संगर ॥  
 लग्गी गोलान असह लाय जग्गी धमगँजर ॥ २४ ॥  
 तँहँ बाहिर रन प्रलय तार विस्तरि कँलु बीसर ॥  
 निश्रेनिन देहें नरिंद पिछें<sup>१</sup> भट उप्पर ॥  
 प्रचुर वन्यो गढके प्रवेश केलि एस भयंकर ॥  
 कैपिसीसन पहुँचत कलाप अरि बाहिर१ अंदर२ ॥ २५ ॥  
 खगन खंडविखंड खेरि किय खेत सँवाकर ॥

१ लक्ष्मी तोपों की पंक्ति लगी जो २ कालिका के समान देनाश करने की खान  
 थी. लाल मुखवाली रुधिर का लोभ करके युद्ध के ४ वर्षों में चली ॥ २१ ॥  
 सिंह आदि हिंसा करनेवालों के मुखवाली भय की खान ५ हाथियों के दल्ले  
 पाकर ॥ २२ ॥ ३ सर्पाप लोभ जहाँ रावण की बहिन (शुषेणवा) ने ७ जकटी  
 होकर घर लिया था वहाँ ॥ २३ ॥ ८ जीघ ९ जीघ १० निरंजर पतन ॥ २४ ॥  
 ११ कुछ दिन १२ अंज १३ युद्ध १४ कांगरी के मत्तप ॥ २५ ॥ १५ सुदों की खान

गिरैं सुभटतजि कंगुरेन कटि सिर १ कटि २ पै ३ कर ४ ॥  
 नट जैसैं तिहरी निघात धरि गैने छुवैं धर,  
 लंका जातु १ न विविध लून बंका जिम बंदर २ ॥ २६ ॥  
 कटि कंगुर कंगुर किरंतै इम भट अग्रेसर,  
 उत १ के कटि इत २ अधर आत इत १ के उत २ अंदर ॥  
 विदित सता १९४१ के नव ९ प्रवीर तैंहें जुज्जे सत्वर,  
 दुवर २ हड्डे ६१ कछवाह दोइ २ सोलंखि स्वभू सर ५ ॥ २७ ॥  
 हड्डे ६१ तैंहें हरजस १९३।३।१ पहार १९५।४।२ बड्डे जस बिल्ल  
 बनि तिलतिल सामंत १८७।१ बंस जस किय उज्जगर ॥  
 सूर अजब १ आनंदसिंह २ कूरम किर्तीकर ॥  
 ए दुवर कट्टे जस उबारि आमेर अनंस्वर ॥ २८ ॥  
 नवल १ तथा हरि २ चंद्रभानु ३ नाथाउत निडुर ॥  
 खेमाउत सदूल ४ खंड वपु किन्न बरब्बर ॥  
 बदन ५ कमाउत निसित बाढ लग्गो लज लंगर ॥  
 ए पंच ५ हि चालुक असंक आलुक भर उदर ॥ २९ ॥  
 अस्त्रन भिदिभिदि अंग अंग बनि नाकबँधुवर ॥  
 बुन्दी भूपति मुख्य वीर धारन तुट्टे धर ॥  
 इमहू घायल भट अनेक अर्जन १ अग्रेसर ॥  
 निडर मरत मारत नरेस दब्ब्यो गढ दुस्तर ॥ ३० ॥  
 रनविजई ओरंग ४०।३ रक्खि धुव दब्बिगई धर ॥  
 नासिक १ सम गड्डे निसान ज्यंबक २ गढ सत्वर ॥  
 इम पच्छिम ३ दिस जित्ति आप धर सँहा तरैं धर ॥  
 पूरव १ दिस तिम किय प्रयान सह चक्र नरेस्वर ॥ ३१ ॥

१ तिहरी कुलाट २ आकाश ३ राजसों का ४ काटकर ॥ २६ ॥ ५ गिरते  
 नीचे आते हैं ॥ २७ ॥ ७ कैलाकर ८ प्रसिद्ध ९ कीर्ति करके १० आमेर के  
 को बचाकर अमर किया ॥ २८ ॥ ११ शेषनाग का भार उतारकर ॥ २९ ॥  
 अप्सराओं के पति ॥ ३० ॥ ११ सख्याचल एक पर्वत का नाम है ॥ ३१ ॥

दब्यन अब इत विदर३ दुर्ग वैढ्यो जुहि बिदर ॥  
 वज्रै जुहि ग्रंथन विदर्भ३ इम देसी अकखर ॥  
 जहँ सिलपीजन रूप जस्त मृदु मंजि प्रथा पर ॥  
 करि हुका१ कैचोल२कादि दै क्रीत दिसावर ॥ ३२ ॥  
 जेहु कहावै विदरजात तपकाल सिंसिरतर ॥  
 सो गढ़ वेढ्यो सन्नसल्ल१९४१२ बुन्दी वसुधावर ॥  
 मृध तोपन धमचक्र मंडि सम चक्र पुरस्सर ॥  
 गढ़के जवनन गंजि गंजि किन्नै भयकातर ॥ ३३ ॥  
 पृथुल कुंतू बारूद पूरि वसुधा१ वरनंतर ॥  
 अग्नि लगाई इक और अति घोर उपवहर ॥  
 उडि उतको डुत कोट अंस पथ भो कछु पदर ॥  
 लै तिहि मग ओरंग४०१३ लार नृप पैठो निडुर ॥ ३४ ॥  
 खगगन सेस विसैस खंडि करि दुर्ग वहै कर ॥  
 भंडे हजरतके झुकाइ जय तीजे३ जितैर ॥  
 धरि थाना तिहिदुर्ग धाम धीरन बानीधर ॥  
 कल्ल्यानी४ उप्पर कुपाइ अब लाइ चमू अरै ॥ ३५ ॥  
 सुपहु सता१६४१२अवरंग४०१३संग सज्ज्यो हृद संगर ॥  
 दिवस किते तोपन दरार पटकी किल्लापर ॥  
 सनैसनै बढि बल समीप पढि फल जय पीवैर ॥  
 अनी उभय२उभय२हि अनीक बटि भार बरबवर ॥ ३६ ॥  
 आरुहि चले ओर ओर निश्चेनिन दै नर ॥

गढ़ का नाम है, संस्कृत में जिसका नाम विदर्भ है उसका देश भाषा में बिदर हुआ  
 प्रसिद्धरूपे और जस्त के हुके और कटोरे आदि ॥ ३२ ॥ ग्रीष्मकाल में  
 अत्यंत ठंडे होते हैं १ मृपाति ६ युद्ध ७ सेना के आगे ॥ ३३ ॥ ९ बडे १०  
 पों (पीपों) में बारूद भरकर ११ भूमि और कोट की संधि में १२ एकान्त  
 भयंकर अग्नि लगाई ॥ ३४ ॥ १३ जीतनेवाले १४ युद्ध से नहीं भागने के वि-  
 द्ध रखनेवाले ॥ ३५ ॥ १५ शीघ्र १६ मोटा ॥ ३६ ॥

कपिसीसन पहुँचत कराल मचि कतल महाभर ॥  
 तेगन मञ्जरी तुष्टितुष्टि इत१उत२के ओसर ॥  
 उलटि उलटि गढतँ अचेत धर१सीस२गिरे धर ॥ ३७ ॥  
 तत्थहु दड्ड६१ नरेस तेग बल बेग चली वर ॥  
 विविध पठाये बहि बहि अरिलोक अनस्वर,  
 कतिकन बह सुमिराइ कोल टारी जम टकर ॥  
 पायो जय चौथे४ प्रघात कल्ल्यानी४ लै कर ॥ ३८ ॥  
 धीर रच्यो गढ धामिनी५ सु पंचम५ रन पहर ॥  
 अधिरोहिनि पहिलै अरोहि बुंदी वसुधावर ॥  
 दद भारी तरवारि दड्ड६१ घनमारी घस्मर ॥  
 जिते जवन त्रातवै जोध तिन्ह रक्खि दिगंतर ॥ ३९ ॥  
 खिल मिच्छहु खगन खपाइ दुग्ग सु लिय दुहर ॥  
 इम इक१हायन अंतराय दड्डा६१ सुर्जन१२०११ हर,  
 पंच५ समर पुर१दुर्ग२पंच५निजबल जित्यो नर ॥  
 कहत गोलकुंडा६हु केक सजि छेद संगर ॥ ४० ॥  
 जित्यो गढ धरनीभुजंग परअंग कटापर ॥  
 कतिक कहैं सुलतान संग सजि आयो संभर ॥  
 गढ दोलत आवाद गजि धन खिन्न धनीधर ॥  
 जयहि गोलकुंडाहु जिति जोधन परयो जर् ॥ ४१ ॥  
 अब इम पच्छे मुरारि आइ अवरंग४०पुरी अर ॥  
 दखल सुन्यो बलि विजित देस पच्छिम३छदि पक्खर ॥  
 राजा तँहँ अवरंग४०१रक्खि निज पत्तन निहर ॥  
 आइव जित्यो अत्य अप्प तँहँ पत्त अतित्वर ॥ ४२ ॥  
 सछ१ सिलोच्चय१ निकट सीम मंजुल नदि१मंजर२,

१ कोट के कांगरी के समीप ॥ ३७ ॥ २ नाश नहीं होनेवाले लोक (स्वर्ग) में भेज  
 ॥ ३८ ॥ ३ नासरनी पर ४ चट्टन मानेवाला ॥ ३९ ॥ ५ रचा करने के योग्य थे  
 धनकोषधन के अन्तर से ॥ ४० ॥ राजा ॥ ४१ ॥ ६ धन ॥ ४२ ॥ सहायक पर्वत के समीप



राजिंकाँ मऊ बारां बिना दूसरे परगने देना] सप्तमराशि-नवममयूख (२६५७)

जुरत जहाँ अवमर्द उग्र सख्यो यह संभर ॥  
सोदर तँहँ निज राजसिंह १९४१ सुतो अरि संगर ॥  
पंचपुसुभट इतर हु पटैत धरथंभ परे धर ॥ ४३ ॥  
जिम यह छटोईसमर जित्ति किय कित्ति कलाकर ॥  
आसेर ७हु अकखँ अनेक पुनि गो १ सु लयो २पर ॥  
दक्खिन २ धर इम बहुत दब्बि निज तंल नरेस्वर ॥  
थिर सासक अवरंग ४०१३ थप्पि सुरि अप्प महीबर ॥ ४४ ॥  
तुला १ पुरटै उज्जौनि तुल्लि करि दान प्रभाकर ॥  
आपो दिह्लिय घसत अन्न वल्ल १ तेज २ बिँकस्वर ॥  
हिय लायो साहेजिहान ३९१२ बदि मैँ अब बिँज्वर ॥  
इतरदेस १ गज २ बाजि ३ अप्पि प्रतिरीक करी पर ॥ ४५ ॥  
न दये तिन द्वैरही निकेत बाराँ १ रु मऊ २ बर ॥  
माधव १९३१२ सुत भोगैँ सुकुंद १९४१२ धुव जो इतकी धर ॥  
इतर दये सुनिये असेस प्रभु राम २०३१४ दैयां पर ॥  
इभ नव धन १ दिलदार २ अस्व पोसाक ३ प्रभाकर ॥ ४६ ॥  
पंचकोटि ५००००००० दँस्मन प्रमान जिम अप्प्यो जेवर ४ ॥  
इम त्रिक ३ पंचक ५ क्रम दु २ ओर वसु ८ सेस दये बर ॥  
दिस उत्तर ४ त्रिक ३ टुंक १ दंग धन मालपुरा २ धर ॥  
कहियत तीजो ३ केकरी ३ सु अप्प्यो नृपकोँ अर ॥ ४७ ॥  
प्रथित परगनाँ सुनहु पंच ५ ए दक्खिन २ अंतर ॥  
हथनीगढ गढ हिंगुलाज २ केथोलि ३ धँनाकर ॥  
पानगढ ४ रु भैंसोद ५ पंच ५ घल्ले बुन्दीधर ॥  
ही गतभुव उम्मेद हाइ न दई सु छलानिर ॥ ४८ ॥

और मंजरा नदी की सीमा में १ युद्ध ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ २ स्वर्ण की तुला ३ विकाश करनेवा  
खा ४ खेद रहित ॥ ४५ ॥ ५ परम दयावान् ६ जातिवाली ॥ ४६ ॥ ७ रूप्यों के  
प्रमाणवाला = शीघ्र ॥ ४७ ॥ ९ प्रसिद्ध १० धन की खानि १ गई हुई भूमि 'मऊ  
और बारां' मिलने की उम्मेद थी ॥ ४८ ॥

एहि परगनाँ बखसि अठ्ठ८ सनमान्यौं संभर ॥  
 आमिल थप्पे टुंक१ आदि सबैँ अग्रेसर ॥  
 हाकिम जोलौं हिंगुलाज२ पहुँचे न समैपर ॥  
 अखयसेन१ खिच्चिय१३ अराँति तौलौं कपटीतर ॥४९॥  
 साह अमल उठत सबेग घुसि बैठो ज्यौं घर ॥  
 सारथल२हु हत भीमसिंह३ पैठो कुहनापर ॥  
 गोर जु दुल्लह३ मंगरोल ३ इत बैठो अंदर ॥  
 चोरत धन लखि इक्क१ चोर ओरहु चोरैँ अर ॥५०॥  
 तिम तीन३न ए थान तीन३ दब्बे बनि दुँदर ॥  
 पहु संभर इत रीझ पाइ कुलहड्ड६१ दिवाकर ॥  
 सक दस सत्रह१७१० पाइ सिकख घुमडत आयो घर ॥  
 राजकुमार भाऊ१९५१ पुरोग वर जे बसुधावर ॥५१॥  
 अब रहि आपहि दुरदिन द्रंग तब सज्ज्यो निहुर ॥  
 मृत१ घायल२ कुल अधिप मानि बखस्यो वसु विस्तर ॥

॥

नहिँ मावत सह बल नरिंद उफन्यौं धर१ अंबर ॥५२॥

॥ पटपात ॥

तारागढसन तोप उभय२ नरनाह उतारिय ॥  
 नाम धूरिधानी१ रु करक विज्जुलि२ हलकारिय ॥  
 लघुँहि जाइ गढहिंगुलाज बेढयो दल विस्तर ॥  
 दिन चउ४ तोप दगाइ पंथ पंचम५करि पहर ॥

श्रेढिँ लगाइ चढिगो सु पहु अरि वह हनि खिच्चिय१३ अखय१॥  
 बल तस बिलोरि छसहँस बलिय६००० जो गढ१ लिय स-  
 ह कित्ति२ जय३ ॥५३॥

१ चहुवाण शत्रुशाल का सन्मान किया २ शत्रु ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ३ कठिनाई से  
 धर्षणा किये जावें ऐसे. राजकुमार भाऊ को ४ आगे जाने से राजा ने मना  
 किया ॥५१॥ ५ धन का विस्तार ६ बड़ा ॥५२॥ ७ शीघ्र निसेनी ८ मथकर ॥५३॥

माधव१९३।१ निजभट जकखमूल पति जो रन पारथ ॥  
 तस बंधुव नामन प्रतीत तैंहँ होइ कृतारथ ॥  
 सह बारह१२ भट सूर भये तिलातिल गढमैं भट ॥  
 सुहि माधव१९३।१ तैंहँ सुपहु किन्न गढपति रन उत्कट ॥  
 गिनि अखय सेन१घरं भीमगढ२पुनि सु जाइ जित्यो प्रधन ॥  
 हनि तास अनुज सुहुकम२कुहँक जिति गढ सु थपिय स्वजन५४  
 पूराउत१७३।१ प्रताप१९१।१ लिख्यो सासक हिंडोलिय ॥  
 नाम गंग१९१।५ तस अनुज परयो पंचम५ जुज्झन प्रिय ॥  
 एह रायथल अधिप सहित एकादस११ सादिन ॥  
 गिरयो भीमगढ गहत बह्वि बहु बल प्रतिवादिन ॥  
 तिम रायसिंह१ रठोर तैंहँ जुज्झ अनुज रविमल्ल जुत ॥  
 मह१जल२चढाइ पुर मेरता परे सहित तिथि१५भट प्रनुत ॥५५॥  
 इम हथेनीगढ१आदि प्रांत खिलौ चउ४सम्हारि पहु ॥  
 धरि तैंहँ रच्छक धीर बदलि बिस्वस्त वीर बहु ॥  
 तदनु सारथल२तिमहि गंजि भूपतिहनि गोलन ॥  
 खिच्ची१३भीम३हिं खंडि रुचिर जित्यो तीजो३ रन ॥  
 तिम बंधु रायमल्लोत२३।१९तैंहँ जथा प्रथम थपे सजय ॥  
 तिलातिल स्वबंधु तुट्यो सु तग भट हरदाउत३४।३०बीतभय ॥५६॥

॥ दोहा ॥

रस गुन३६ भट जुत रन रह्यो, खेत सारथल३ ख्यात ॥  
 पुर दुन्नीसं प्रयाग१९४।१को, यह चोथो४अनुजांत ॥ ५७ ॥  
 सुपहु जिति इम सारथल३, रायमल्ल१९१।३ कुल रक्खि ॥  
 मंगरोल४गोरन मिलन, आयो जुज्झहु अक्खि ॥ ५८ ॥  
 भकखरोत सीसोद भट, साहबसिंह सनाम ॥

१ युद्ध में अर्जुन २ तीव्र ३ युद्ध ४ छली ॥ ५४ ॥ ५ सवारों से ॥ ५५ ॥ ६ वि-  
 शेष स्तुति योग्य ॥ ५६ ॥ ७ बाकी के ८ भरोसा के ॥ ५७ ॥ ९ दृष्टी नामक  
 आगर का पति १० छोटा भाई ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ११ आकरोत वंश का चत्रिय

तास कुमार दुवर्बीर तँहँ, कालि करि आये काम ॥ ५९ ॥

सुनहु राम२०३।४प्रभु नाम सन, जेठो१कुमर जवान ॥

अनुज२कृष्ण२द्वै२ही अडर, थिर सोये रनथान ॥ ६० ॥

साँदी तेरह१३ सत्थके, सोये कुमरन संग ॥

दुल्लहसाहि४ मु गोर दलि, जित्यो भूप सु जंग ॥ ६१ ॥

जई परगनाँ तासजुत, जिति चउम४रन जोहु ॥

मंगरोल४अप्प्यो महिप, साहबसिंहहि साँहु ॥ ६२ ॥

सिवसत्रह१७११ सम लगत सक, पहु इम इक१प्रयान ॥

ग्रामक जुत चउ४जिति गढ, आयो पुर चहुवान ॥ ६३ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीप्र-  
सुधावरशत्रुशाल्यचरित्रे दक्षिणादिक्वाशादुर्गविजयिदिल्ल्यागतशत्रु-  
शाल्यस्य शाहजहाँयवनेन्द्रान्नूतनप्रान्तसहितसत्कृतिप्रापणा १, नव-  
लब्धप्रान्तविजयानन्तरशत्रुशाल्यबुन्दीप्रत्यागमनवर्णनं नवमो मयू-  
खः ॥ ९ ॥

आदित एकविंशाधिकद्विशततमः ॥

प्रायोद्वजदेशीयाप्राकृतीभिश्चितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अबलग दिल्लिय आदरघो, जो पति साहजिहान३९।२ ॥

पै अब सुनिये राम२०३।४प्रभु, अहो समय अवसान ॥ १ ॥

तीजे३सुत अवरंग४०।३तँहँ, अति मदमति बद आई ॥

जनक कीलि लिय पट्ट जिम, जोर प्रभुत्व जमाइ ॥ २ ॥

१ युद्ध करके ॥ ५९ ॥ ६० ॥ २ सवार ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के आपति  
शत्रुशाल के चरित्र में दक्षिण में पाँच गढ़ विजय करके शत्रुशाल का दिल्ली  
जाकर बादशाह शाहजहाँ से नवीन परगने और सत्कार पाला १ नये पाये  
हुए परगनों को विजय करके शत्रुशाल का पीछा बुन्दी आने के वर्णन का नव-  
मा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२१ मयूख हुए ॥

३ अन्त समय ॥ १ ॥ ४ पिता को कैद करके ॥ २ ॥ ३ ॥

जिम जेठे दारा४०।१हिँ दलि, अरु सुजा४०।२हिँ मरवाइ ॥

गद्दी अनुज मुराद४०।४ गहि, पाई अवसर पाइ ॥ ३ ॥

सो कहियत धारहु श्रवन, सभ्यन सह नरनाह ॥

जिहिँ रन प्रभुकुल मूल जिम, लहिय सता१९४।१दिँवलाह ॥४॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

जिणसमय दिल्लीस साहजिदान३९।२ मूत्रकृच्छ्रनामक महातंक  
रो प्रकोष थियो ॥

जिकणारी पीड़ारे परतंत्र होइ आपरा अधिकाररै ऊपर बडापुत्र  
दारा४०।१नूँ रहणदियो ॥

जिकी बात प्राची२रा अधीस दूजा२ कुमार सुजासाह४०।१ रा  
उरमैं न माई ॥

अर अनामय पूछणरो व्याजकरि पिता१नूँ बडा१ भाई२ समेत  
मारि साहहोगारो संकल्प करि दिल्लीमाथै आपरी चतुरंग चमूचलाई।

तिको मंत्र उपवहर भी चारलोकाँरा चतुरप्रणाँथी चोड़ै आयो  
थको पहलीही इसो घाट घड़ता तीजा३साहजादा अरंगजेव४०।३  
रै सहायक बणियो ॥

जिकण महापातक माथै लेर आधी३ पातसाहीरो लोभ दे प्र-  
तीची३रा पति आपरा अनुज मुरादसाह४०।४नूँ मिलाइ पाउसरी  
कादंबिनीरै अनुकार आपरो अनीक तणियो ॥

अठी दूजैसाहजादै सुजासाह४०।२भी पहलीरी सूचनारै समा-  
न दिल्लीरै अभिमुख प्रयाण कीधो ॥

जैरें बुंदीहूँ हाडोतीरै अधीस सत्रुसाल१९४।१भी वचावणारी वि-

१ सभासदों सहित २ स्वर्ग का लाभ ३ महाभयंकर रोग का ४ पूर्व दिशा का  
पति ५ आराम पूछने का मिस्र करके ॥ ५ ॥ ६ एकांत की सलाह ७ हलकारों के  
८ पश्चिम दिशा का हाकिम ९ वर्षों की मेघमाला के १० सट्टा ११ सेना कै-  
बाई १२ सन्मुख १३ गमन किया ॥ ६ ॥

चारि आपरा पंचम अनुज मुहुकमसिंह १९४ नूँ हित पत्रलिखाइ  
गारीति दीधो ॥ ६ ॥

अब सुजासाह ४०।२रै समीप रहियाँ भाई तू बुन्दीरी वसुधा  
विभाग परलोकमैं पावसी ॥

अर अबही प्राचीशरा अधीसकपटी दूजार साहजादानूँ छोड़ि  
आयाँ म्हारा आसंघरै अनुहार पिताराघरमैं खटावसी ॥

जिको पत्र पढताँही हड्डा ६१ धिराजरै पंचम अनुज मुहुकमसिंह  
१९४।५ आपरा अधीस अग्रजरा आँदिसरै अनुसार अब भावीरा म  
रोसामैं भ्रम देखि प्राचीरापति सुजासाह ४०।२ नूँ तजि आपर देस  
आइ अनुगतभाव दिखाइ संभरसिरोमणि सत्रुसाल १९४।१ रा  
गाँमैं प्रणाम कीधो ॥

जरै राजा रत्न १६२।१रा बडा कुमार गोपीनाथ १९३।१रै पट्टप  
त्र नरेस सत्रुसाल १९४।१भी आपरा अनुजनूँ ग्रामता समेत पहली  
रा दुर्गापुररो प्रतिनिधि इणारा अग्रज इंद्रसाल ५६४।२रै अंतिक  
आलोचि करउर दंगदीधो ॥ ७ ॥

अठी दूजारसाहजादानूँ आपरैऊपर चलायो जाणि तिकणनूँ पा  
छो फेरणरैकाज कुमार दारासाह ४०।१रो कुमार सलेमसाह ४१।१  
विदा कियो ॥

तिकणरैसाथ कछवाह जयसिंह १ गोड़ अनिरुद्धसिंह २ नवा  
दलेलखान ३ तीनही मुख्य सामंत देर आपरो उद्धत अनीक दियो  
तीनही सामंताँ सलेम ४१।१रैसाथ साम्हें जाइ बागारसीरै समी  
प कुमाररा काकानूँ कोरँडो लोह चखायो ॥

जिणथी पहलाही प्रघातमैं परम्मुख होइ दूजोरकुमार दूजो  
रो प्रहार भी न खायो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

साह सुजा४०।२ गंजे समर, सामंताँ३ रसलेम४१।१ ॥  
 मदविगा पाछो सेलिहयो, जिम्हग रेंदविगा जेम ॥ ९ ॥  
 पिता१पितामह२ थी प्रणत, लिखि संलेम४१।१ जयलाह ॥  
 कलह जई सतकारिया, पटा दिवाइ सिपाह ॥ १० ॥  
 पंचलाख५००००० मुद्रा पटा, लौ जयसिंघ१दलेल२ ॥  
 लीधो गौड़ दुलाख२०००००लगै, खगगारगा जय खेल ॥ ११ ॥

॥ सचरगागद्यम् ॥

इणरीति आपरा और भी विसेसबीराँनूँ बधाइ काकारा द्वारो  
 बाड़ होइ सेनासमेत सलेम४१।१उठैही आडो रहियो ॥  
 अर काकैभी पुलियार होइ प्राची१रौ परिकर इकठोकरि फेर  
 । दिल्लीपर चलावगा दृढभाव गहियो ॥

इणवातरे हाके पहलीही सितारा१ बीजापुर२ भागनगर३ प्रमुख  
 केखणारा २ अधीसाँनूँ विजयरा फलमैं विभागी बणाइ दक्खिगा  
 पच्छिम ३ रा अधीस दो २ ही साहजादा मिळिया तिके दूजा २  
 प्रजेरै अनुकार साँचै संकल्प दिल्लीरा दायाद होइ साम्हौँ चलाया ॥  
 अर दिल्लीसभी घणाँसाहसथी आपरा जावणमैं आडो होइ चलायो  
 सदा बडा १ कुमार दारा ४०।१ नूँ साम्हें पूगणरो निदेस देर वि-  
 कीधो जतरे तापी१ नूँ लाँघिनमंदा २ नदीरै नजीक आया ॥ १२ ॥  
 साह कहियो म्हाँराअनामयरो उद्देस करि आवै तिकौँनूँ साम्हें  
 । इ हूँही समुझाइ पाछा मोड़िआऊँ ॥

तिकौँभी तातरो निदेस सनमानि दारा ४०।१ कहियो पितारा  
 धारणमैं हूँभी पाटरोपुत्र १ प्रतिष्ठा नूँ पाऊँ ॥

जैरै पातसाह दारा ४०।१ रै साथ जोधपुररो अधीस राठोड़ जस-  
 न१च्यारि४ही अनुजौंसहित कोटारोअधीस हाडो६१मुकुंद१९४।१२

सर्प २ बिना दांतवाला ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ ३ भागकर ४ पूर्व दिशा की पर  
 ५ सदृश दंदायत ॥ १२ ॥ १३ आराम पुछने का अपिता की आज्ञा का जयः

मालवदेसरा पच्छिम ३ प्रांतरो पुहवीसै रतळामनगररो बसा-  
 वण्णहार राठोड़ रत्नसिंह ३ बिस्वासघातकरि आपरो भाभे अमरेस  
 रा चरणारो छेदणहार गौड़ नरेस अर्जुनसिंह ४ राणाउतराजा राय-  
 सिंह ५ नवाब कांसिमखान १ करीमखान २ प्रमुख आपरा मुख्य  
 सामंत सहायक करि बडा बरूथरै साथ जूझणारा साहसी कुमार  
 दारा ४०१ साहनू औरंग ४०३ मुराद ४०४ रै साम्हें बिदा कीधो ॥  
 अरै इणारा कुमार सलेम ४११ नू पहलीसूचिया सहायकांसमेत  
 प्राची १ रै पंथ सुजासाह ४०२ आडोरहण दीधो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

अर्जुन १ रयण २ मुकुंद ३ ए, सोवण संगर सीम ॥

क्रमिया ए राखण कंवर, कासिमखान १ करीम २ ॥ १४ ॥

रायसीह १ जसवंतर रण, जायें तजिकडिजाण ॥

ले दारा ४०१ क्रमिया लंगस, फोजा संगस उफाण ॥ १५ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी पातसाहीपर जादा भार पड़तो जाणि साहनै कोटेसरे बारा  
 १ राखि मऊर उतारि तिकणरै एवज माधाणी २६।२२ मुकुंद १९४।१  
 नू ओर परगणां देर दारा ४१।१ रै साथ जावणरो हुकम दियो ॥

अब बुन्दीसरो बुलावो बिचारि मऊररो फरमाण लिखाइ पह-  
 लीही बुन्दी भेजि हांडाँ ६१रा हैंस सता १९४।१ नू बखसीस कियो ॥

नरेसभी फरमाण आताँही जाइ मऊर गरदाइ भगडो जमाइ  
 कोटेसरा राखिया मऊरा फोजदार खीची १३ नगराजनू उचित आ-  
 तेंक देर बारें काढियो ॥

अर एकादस ११ अब्दरा गया मऊरपुरमै परगणांसहित पाछे  
 अमल जमाइ प्रतीप दीठो तिको ही गहियो १ र वाढियो २ ॥ १६ ॥

१ भूपति २ बहिनोई अमरसिंह का पैर काटनेवाला ३ आदि ४ सेना के साथ  
 ५ और ॥ १३ ॥ ६ चले ॥ १४ ॥ ७ निकल जाना ८ लम्बे चले ९ क्रोध  
 १० सूर्य ११ भय १२ बिह्व ॥ १६ ॥



## ॥ दोहा ॥

सक चउदह सत्रह १७१४समा, लागीं इम जय लेर ॥

मारि खळां लीधी मऊ२, दळां पराभव देर ॥१७॥

कीधी थान बिनायकै, राडि बळां नरराज ॥

सो खीची१३ हणियो सतै१९१४१, बणियो तीतरबाज ॥१८॥

## ॥ सचरणागद्यम् ॥

पहली अकबर३७११ अवसाणासमयरे समीप रीछवारा राठोड़  
पूप भोज१९१२रै पगां पड़िया तिक्रै अब मऊ१ बारां२ छूटांकेडै  
पाछा प्रतीप थिया ॥

जिकांमाथै हाडैनरेस मऊ२थी राजकुमार भाऊ१९५१ भेजियो

जिकणा जातांही राठोड़ द्रहबट्टांकरि काढिदिया ॥

इगारीति रीछवा१ बकाणी२सूधीजनकरी आणा जमाइ कुमा-  
र भावसिंघ१९५१ पाछो मऊ आयो ॥

जठै आपरो अकंटक अमल जमाइ नरेसभी बुन्दी आइ विज-  
यरो सुजस १ सत्रवां २ समेत दिसादिसा डुंलायो ॥ १९ ॥

अठां साहरै समाधी हुवांकेडै दारा४०१साहनै अधिकाररो का-  
मभी छोडिदीधो तोभी तीन३ही भायांरो तखतमाथै चलावणां जा-  
णि प्राची१में पुत्रनू भेजि आवाची२कू आवता दो२ही पुत्रानू समु-  
झावणा साम्है जावता पातसाहनू पेलि तिगारो बंडो१पुत्र साहसरै  
सहाय पहली कहिया कटकरै साथ दरकूचां दक्खिणा२रै अभिसु-  
ख चलायो ॥

तिकणा अवंती पुरीरै परै पंच५कोसरै प्रमाण पूगिबीरांरी बासठि-  
हजार६२००० सेनारै साथ मेळ पायो ॥

जठै दौ२हीफौजौ रैदूजहीदिवसकालिकोपतोपारोघोरधर्मसाणराचियो

१ पराजय ॥ १७ ॥ १८ ॥ २ अन्त समय ३ बिरुद्ध ४ बरवाद ५ अमाया ॥१९॥

६ आराम ७ पूर्व दिशा में ८ दक्षिण ९ मना करके १० सन्मुख ११ उजैन १२  
युद्ध हुआ

अर बीचबीच वैँडीरा वैँहड़ा बज्रवेग बानैत बीराँरै सस्त्राँरो सं-  
पात माचियो ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

असीसहँस ६०००० सेना अठी१, सहँस उंठी२ बासठि ६२००० ॥

भड़ाँ१ ओपियाँ भीरवाँ२, नीर गया मुख नठि ॥ २१ ॥

जिणा दक्खिणा २ धररो जरे, अरि हूँतो अवरंग ४०।३ ॥

सोभी लै अब सीरमै, जुड़णा चलायो जंग ॥ २२ ॥

त्रय३ भीडू दक्खिणा २ तणा, बदिया पहलै बाद ॥

धुर चोथो ४ पच्छिमधणा, मेळे अनुज सुराद ४०।४ ॥ २३ ॥

प्रथम गजर तोपाँ पड़े, गोळा बजर गुड़ाण ॥

मचियो जिणादिन माझियाँ, घोर प्रळै घमसाणा ॥ २४ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

जिणासमय दोह्री फोजाँरा हिलोळा समुद्रै समाणा प्रमाणाँमै आया।

अर तोपाँरी गाजहूँ सेसरासीसाँ१ समेत मकराँकर मेखळा मही  
२ रै मचोळा लगाया ॥

दिकपाळाँ१ रा गाढसमेत दिग्गजाँ२रा मद छूटि आठूँही अने-  
कपँ चकितपणाँका चीकार करणलागा ॥

अर रज १ धूम २ रा बितानमैँ मारतंडश मयूखँ अंतर्धानबिद्यारो  
अभ्यास धरणाँलागा ॥ २५ ॥

दो२ ही तरफ गोळाँरी गजरहूँ ओट आवै जिताही घोडाँ१ सिपा-  
हाँ२ समेत हाथियाँ३ रा गोळें उडणाँलागा ॥

अर इळाँ१ आकासरै२ हारावळीरूप बिघ्नकारी डूंगराँरा डोहै-  
णाहार बिघ्नविहीणा पगिरिँभ जुड़णाँलागा ॥

१ पागल स्त्री के २ कलश के समान ३ वानाबंध (युद्ध से नहीं भागने की प्रति-  
ज्ञा का चिन्ह रखनेवाले ४ प्रहार ॥ २० ॥ ५ कायरों का ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥  
६ समुद्र की मेखलावाली ७ दिग्गज ८ सूर्य के ९ किरण छिपने लगे ॥ २५ ॥ १०  
समुद्र ११ भूमि १२ हार की पंक्ति के सदृश १३ मथनेवाले १४ शरीर से शरीर मिलाकर

जिणसभैं महामारीरे मंडाणा नरांगो नास देखि कोईक कच्चा-  
मंत्ररादेणाहार आहवरा अमेध सामंतर मूचिया घोड़ै चढणरी हूं स  
धारि दारासाह ४०।१ हाथीरूप तखतहूं हेठो उतरियो ॥

जैरै पैलारा प्रबल प्रहारहूं पड़ियो १ कै पुलियार हुवो २ जाणो  
साहसी सेनारा सिपाहां मतैमतै मार्गलागणारो आरंभ करियो ॥२६॥

दिल्लीरा दलमैं दरोळ देखतांही साहजादारी सेना बडेजोर ब-  
धीथकी आगैं आइ उछाहरै उफाणा महाप्रळे मचायो ॥

जठैघणारा कचरघाणामैं आपरा अनीकरा पदद्वरा प्रवाहमैं प-  
ड़ियो नवाब कासिमखान १ समेत कुमार दारासाह ४०।१।२ भी  
ठहरण नपायो ॥

जठैतो बडावडा अमीरांग आपाणा प्रहारपहलीही पड़तादेखि  
राठोड़राजा जसवंतसिंह १ राणावतराजा रायसिंह २ प्रमुख किता  
ही आर्थ १ जवनांररा ओघ दारा ४०।१ रो साथ छोडि दार २ रो  
साथ करण आपआपरे अगार चालिया ॥

अर च्यारि ४ही भायांसमेत माधाणी १६।२२ हाडो ६ १ मुकुंदसिं-  
ह १९४।१।१ गोड़अर्जुनसिंह २ राठोड़रत्नसिंह ३ जिसडा जोधार का-  
लीरा कलस रणागळियार होइ हाथियारै माये हाथकरता साथि-  
यारै सुरतारो साणलगावता साहजादांरे समीप हालिया ॥ २७ ॥

घणां घोड़ां १ भड़ांरो घाणकाढि बूंदी १ कोटार दोरही ऊज-  
ळादिखाइ हाडां ६ १ रा वंसनू वीजांमैं वधतो वताइ लाजरूप लंगर  
रा खंचिया पैलारा प्रतिमल्ल मदांलागा मइंद माधाणी १६।२२ मुकुं  
दसिंह १९४।१ मोहणासिंह १९४।२ कन्हीराम १९४।३ जूझारसिंह  
१९४।४ च्यारि ४ही भाई पैलानू जयसंसय जणाइ खागांरा खेल्हमैं  
खंडविहंड होइ विमाणावैठा नारियारै साथ गलवाहं कीधां सुरलो-

क पूगा जिकाँनूँ इन्द्रादिक \*अमरां बधाइ आघालीधा ॥  
 तिकाँ सुधारूप सोधुरा छाकियाँ नंदनवनरै निवास सुधर्मा स-  
 भामैं बैठि सुररैसाथ बिलास कीधा ॥

अठी पाँचमों ५ भाई किसोरसिंघ १९४१ केही हाथियानूँ हठाइ  
 बरबीर बैरियानूँ अग्रजाँ १ रा तथा आपरा साथी बणाइ धरारो  
 कँवाड़ होण करवाँळ १ रूप कैंकचाँ २ मैं अंगरा फाचरा उडाइ सेलाँ  
 १ रा सालाँ २ करि पाछो जुड़ाइ खेतपड़ियो ॥

अर आपरी आऊरेबळ ऊबरिया अंगनूँ कँवाड़पणाँ मैं गाढो क-  
 रणा कलंब १ रूप काँटाँ २ मैं जड़ियो ॥ २८ ॥

गौड़राजा अर्जुनसिंघ २ बैरियाँ रा थाट बिरोळि बैड़ा गजाँ रै च-  
 चर चंद्रहास चलाइ सैंकड़ाँ सूरानूँ साथी करि महारुद्री माळामैं  
 आपरा मुंडरो मेरु चढाइ रुंडथको भी धारामैं तिलतिल पळचराँ  
 री पाँती पुँडळन राखि इष्टलोक पूगियो ॥

इणारीति रतळामरैराजा राठोड़ रत्नसिंह ३ सारथी १ समेत तर-  
 णी २ नूँ तमासै लगाइ केही गजदंता १ सहित सुंडादंड २ सूनाँ करि  
 दीठा दोयँणाँ रै सोणित भद्रकाळीरो खप्पर भराइ बीर बेताळानूँ  
 गूदरी गाळा जिमाइ बिनाँमाथै भी साहजादाँ २ नूँ संकाइ लोहछ-  
 क घूमता गजाँ घड़ामैं सूरसज्जासूतै इच्छारै अनुसार परलोक  
 लियो ॥

उठी हाडाँ ६ १ रा अधिराज नरेस सत्रुशाल १९४१ रो तीजो ३ कु-  
 मार भगवंतसिंघ १९४३ ओरंग ४० ३ आगैं केही पैलापटैतानूँ पो-  
 ढाइ प्रेत १ गोधा २ दिके पलचराँनूँ धपाइ चंडीरा चसकमैं आपरो अ-  
 सैं आसव पूरि च्यारि ४ तरवारि लागाँ जीवतोही खेत रहियो ॥

\* देवता † मद्य १ देव सभा २ खड्ग रूपी ३ करोतों में ४ घाण ॥ २८ ॥ १ उ-  
 ढाकर ६ खड्ग ७ मांस भक्षण करनेवालों की ८ शरीर ९ सूर्य को १० शत्रुओं  
 के ११ मज्जा १२ रक्त रूपी मद्य

अर दोरही तरफ हजाराँही सिपाह मरिया १ तथा घायल २ करि-  
या तिकाँमें दिल्लीरा दळरै भागवे अठारो घायल बंधुपणास दावमें  
पड़ियो थको दूजेरदिन एक १ भा जीवतो न लहियो ॥२९॥

॥ दोहा ॥

ऊतरियो गजलूँ अठै, दारा ४०१ चूके दाव ॥

तदि ऊतरियो तखतलूँ, भोळो स्वमति भ्रमाव ॥३०॥

गज तजताँ पुलिया गिण, स्वामी १ कासिमर संग ॥

दळ भग्गो दिल्लीसरो, जाणो परबळ जंग ॥३१॥

भागताँ दलभाजिया, दारा १ कासिमर दोरहि ॥

पुलिया टोडा १ जोधपुर २, आदि घणाँ भड़ ओहि ॥३२॥

सचरणागद्यम् ॥

जठै इणारीति हाडाँ ६११ गोडाँ २ राठोडाँ ३ आप आपरा लूणा उ-  
जाकिया ॥

अर हजाराँ बैरियाँनूँ वसुधामाथै बिछाइ ढालाँ समेत केही गज  
राज ढालिया ॥

सातूँ ७ही सायंत खास बाढ़ानूँ तोड़ि गजाँरा गोळमें जावता ज-  
किया ॥

अर ओरभी सीसोदिया राउत जगरूप ८ जिसा केही अच्छूती अ-  
खीरा बाँद उठेही पूगताँ पड़िया लोह छकिया ॥३३॥

बीजाँरा बरूथमें जिकाँरा संबधी जाणिया तिकेतो दिल्लीरा द-  
ळरा घायल जावता रहिया ॥

ओर हजाराँही खेत सोधणारै समय सचेत १ अचेत २ प्राणधारी  
पाया तिके सर्वही ओरंग ४०३रा आदेसरूप अनळमें दहिया ॥

॥२६॥३०॥१ भागा हुआ जानकर ॥२१॥२ आश्चर्य ॥३२॥३ निजानों समेत ४ गिरे ॥३३॥

॥ इस युद्ध में शहापुरा का राजा शीरोदिया सुजाणरिह पांच पुत्रों सहित दाराशिकोह के पक्ष में बड़ी  
वीरता के साथ काम आया था परन्तु विदित होता है कि प्रत्यकर्ता को बड़ इतिहास नहीं मिला.

आपरा घायलोंरा जीवणरा जतन कराइ दक्खिणारा सहायस-  
हित दोरही साहजादा अवतीरै उपकंठ केही सुकाम किया ॥

अर आपरा भडांनूँ लाखांरी रीझ देर केही परायंरनूँ पल-  
टावणारा कुकाम किया ॥ ३४ ॥

इणारीति ओरंग४०।३ रा भागरै जोर सोरंगसाहरा भडाँ तजियो ॥

अर तिकोभी यो बिसाळापुरीरो कजियो जीति आगरामाथै आ-  
वणारा आरंभमें सहियो ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

उज्जैणी रण जीति इम, बीराँ मन विकसाइ ॥

उमैर आत रहिया उठै, छकऊपर धक छाई ॥ ३६ ॥

सक चउदह सत्रह १७१४ समै, उज्जैणी रण एहि ॥

हुंवां हजारों मरण हद, मचि असिधारां मेह ॥ ३७ ॥

सचरणगद्यम् ॥

अठौ नबाब कासिमखान १ दारासाह४०।२।२रै साथ दरकुंवा

लाखैरैरै दैरै कछि आगरे आयो ॥

अर साहरी हजूर आपभी बणियो उदंत सारोही सुणायो ॥

जिके बज्रपातजिसडाँ बचन सुणाताँही पातसाहरा मनमें भी पा

तसाही करणारी आधी आस रही ॥

जठे दारा४०।२नूँ उपाँलंभदेर पछतावारै प्रमाण सोकरा समुद्रमें

मग्न मुगलैस इणारीति कही ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

पुत घणों में पैलियो, जूझण तूँ मति जाइ ॥

हूँ मोड़े आऊँ हमै, सुत दोरही समुझाइ ॥ ३९ ॥

१ उज्जैन के समीप ॥ ३४ ॥ उज्जैन का २ युद्ध ३ सभा ॥ ३५ ॥ ४ उरसाह ५ क्रोध ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ६ मार्ग ७ वृत्तान्त ८ वज्र पड़े ९ जैसा १० ओलम्हा ११ मना किया १२ पीछा करकर ॥ ३९ ॥

मूरख कथन न मानियो, लसियो मूँठ लजाइ ॥

तानूँ ख न दियो तखत, दोरनूँ रखत दिखाइ ॥ ४० ॥

दारा४०।१ चुप रहियो दुमन, सिर नमाइं अतिसोच ॥

सतो१९४।१ बुलावशा साहरै, उरथायो आलोच ॥ ४१ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

साहजादोनो पाउसकाळ माळवमैही कीधो ॥

तिकाँ समाँसरै अंतर थोढ़ड़ा थोढ़ड़ा कूच करि आपआपराअ-

नीकानूँ आगे आवणारो आदेस दीधो ॥

दिंलीसभी राजा१ नवाबर रहिया तिकानूँ बुलावशारा फरमा-

शा दिया ॥

अर बडा सतकारै साथ बुलाइ साराही आगेरे एकत्र किया

॥ दोहा ॥

बुन्दीरा फरमाणविच, इम लखियो आदाव ॥

भूप सता१९४।१ थाँरै भुजाँ, अब म्हाँरै घर आँगे ॥ ४३ ॥

मुँगाँ किता दीधी मऊ१. इण फरैमाण अधीन ॥

पंच५ मास अंतर पड़े, बेळी अधिक वधी न ॥ ४४ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

नरेस कहियो पहली मऊ१रो फरमाण आयो जरैही म्हेतो जा-

शिर्लाधी अब साहरै म्हारामाथासुं काम पड़ियो ॥

अर इणसंकटसुं भी विसेस अब किसो काम रहियो जिणरो

रीझमाथै बळे वाराँरो देवो तेवड़ियो ॥

दक्खिणामैं साह१रै तथा इणरा तीजा३ कुपुत्र२रै साथ केही जु-  
द जीनि केही पुर१ दुर्ग२ दावि पचहत्तरिलाख ७५०००००रो मुल-

१ शोभायमान हुआ २ खुदा ने ॥ ४० ॥ ३ हुआ ४ विचार ॥ ४१ ॥ ५ वर्षा  
फलु के संक्षेप होने से पीछे अर्थात् वर्षा मिटे पीछे ६ सेनाओं को ७ आज्ञा ८  
इकट्ठा किये ॥ ४२ ॥ ९ बड़प्पन १० शोभा ॥ ४३ ॥ ११ कितने ही कहते हैं १२  
फर्मान के साथ १३ समय ॥ ४४ ॥ १४ विचारा

क दिली देहे पदकिरी ॥

तोभी छोटा परमणी योग्योरही दीधा पसाविनाअपराधमउ  
बारों लीचा तिकीरा पाछादेणरो संकोचभी न अटकिरा ॥ २१ ॥

अव आपरेउपरसहासंकट मानि एकदीधा तो परमेश्वर दया  
रमी देसीही परंतु आपसमें दिलीसभी इसो व्याकुल थिया ॥

जिकसाविनाहो अरज पुगियापदकी मउरों परमणी निवार  
दियो ॥

इणमादेसरे अनंतर ओर किल्लादार भंजि तिकशारे भुजाहि  
गुलाजगढरो भार तुलायो ॥

अर मोकळ१८८१२ वंररा अवतंस भाई माघोदारा१९३१२न  
डवेग खासरको दे र हजर बुलायो ॥ २५ ॥

॥ वांहा ॥

तिम निजकर कीधो तिलक, भाऊ१९५१२ अंगज मान ॥

पहुतीधो भूपाळपद, लाह सबळ अरिसाल१९४१२ ॥ २६ ॥

कर जोडे भाऊ१९५१२ कैवर, नटियो साच निभाट ॥

सादि कठ तोभी सते१९४१२, पाखो धरियो पाट ॥ २७ ॥

सकळ राजधानी सरस, भार उदार भळाड ॥

कहियो कुळ सारणी कैवर, चलखो नम न चलाड ॥ २८ ॥

सुर्मन१९०१२ परिकर सेत सह, देखो नयण दयाळ ॥

नताजप१२ अपजस१२ लदे, चुको जे कुळनाज ॥ २९ ॥

सितु गंगा१९५१२ धारी स्वसा, एक१२ तजे आमेर ॥

कम इमे देणी कैवर, वर१२ वप१२ कुळ३२ वर४२ वेण ॥ ३० ॥

राजा दे उम राजरो, भाऊ१९५१२रे सिर भार ॥

मन निदये धरियो मरणा, करणा घणां उपकार ॥ ३१ ॥

१ पुण्ड ॥ ३२ ॥ २ पुन के ललाट में उर ॥ ३ बाजना २ भंडन करके २ वारा  
समर ॥ ३३ ॥ ४ इम के सामने २ जगुया के समर ॥ ३४ ॥ ५  
॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥



बय बीरां सह बोळिया, केसर कुंड हुंकलै ॥

वळे तरुणा भंड वरजिया, मंडे साहस मूळ ॥५२॥

कहियो बय थारो कटै, सम म्हारो तँदि मूर ॥

कुल चील्हा ऊजळ करो, जाणो मरणा जरूर ॥५३॥

क्रम चौथो४ भारत१९५।४ कँवर, नटताँ रुकियो नीठि ॥

मुँणियो भारत नाम मम, दीधो किणा गुणा दीठि ॥५४॥

माइ१ जनक२ आता३ मिळणा, अतरा अंतर अंत ॥

अतिजवँ तीजो३ आवियो, भूप कँवर भगवंत१९५।३ ॥५५॥

सीखकरे अवरंगसूँ, इराखिणा बुन्दी आई ॥

पयलग्गो प्रणामे पितरँ२, मिळियो इतर मनाइ ॥५६॥

इति श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशाल्यचरित्रे यवनेन्द्रशाहजहांसूनुचतुष्कस्य मिथोविरो-  
धवृद्धिहेतुतातबन्दीकरणपूर्वकदिल्लीपट्टाधिगमाभिषेकानकशालप्रश्न  
व्याजदिल्लीगमन१, वाराणस्यन्तिकसलीमशाहाहवयवनेन्द्रापत्यसु-  
जाप्रदवशा२, दक्षिणदेशादिल्लप्रागच्छदौरङ्गजेबपुरादवक्साग्रोज्जयि-  
नीसमीपयुद्धदाराशिकोहप्रपलायन३, यवनेन्द्रपुनर्दत्तमऊप्रान्ताधिका-  
रसमासादनानन्तरपञ्चत्वाभिलाषुकदिल्लीयियासुबुन्दीन्द्रारावशत्रुश-  
ल्यस्य स्वसूनुभावसिंहनृपीकरणां दशमो मयूखः ॥१०॥

१ बुजोये २ वस्त्र ३ फिर ४ हठ । ५२ ॥ ५ तब ६ मार्ग ॥ ५३ ॥ ७ कहा ॥ ५४ ॥

८ यन्त्र वेग से ॥ ५५ ॥ ९ इस समय १० पिता ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में बादशाह शाहजहां के चारों पुत्रों में विरोध बढ़कर पि-  
ता को कैद करके दिल्ली का पाट लेने के अभिप्राय से आराम पूछने के मिस  
दिल्ली जाना ? काशी के समीप सलीमशाह के युद्ध में शाहजहांदा सुजा का  
भागना २ दक्षिण से दिल्ली आते हुए औरंगजेब और मुरादाबख्स से वज्र-  
न के समीप युद्ध करके दाराशिकोह का भागना ३ बादशाह के पीछे दिये हु-  
ए मऊ के परगने में अमल करके मरने के अभिप्राय से दिल्ली जाने के विचा-  
र से बुन्दी के राव शत्रुशाल का अपने पुत्र भाऊ को राजा बनाने का दशवर्ष

अ॥दितो द्वाविंशत्युत्तरद्विशततमः ॥२२२॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

समवयरा सुहडाँ सहित, बोळे कुंकुमबास १ ॥

पग रणालंगर पहरिया २, भूखेगा ३ उडुगगा भास ॥१॥

केसकळप तजियो सकळ, भजियो कजियो भूप ॥

बजियो इगा १ गुण ब्रह्मवय, सजियो तरुण सरूप ॥ २ ॥

कहियो पहु कोटेसरा, सुत चउ४ लग्गा सार ॥

ऊवरियो पंचम ५ अनड, भरियो जय १ जस २ भार ॥ ३ ॥

अव दर्शां रण आपगां, पडियाँ सुजस प्रकास ॥

प्रकटे बूंदी पट्ट पण, न कटे नास विनास ॥ ४ ॥

॥ पट्टपात ॥

सगाँगाँकै खुरसागा १ खाँगधाराँ २ खणगाँकै ॥

रगाँगाँकै रगाराग ३ भलम ४ पाखर ५ भगाँगाँकै ॥

१० मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२२ मयूख हुए ॥

अपनी बराबर उमरवाले १ सुभटों सहित ३ केसर में वस्त्र २ डबोये और पैरों में युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा के लंगर पहिने और ४ तारों की भाँति चमकते हुए (जड़ाऊ) भूषण पहिने ॥ १ ॥ ५ केशों में रंग करना बिलकुल छोड़ दिया 'क्योंकि मरते समय शरीर से नील के रंग का स्पर्श होना आर्य धर्म के विरुद्ध है' और उस राजा शत्रुशाल ने ६ युद्ध का सेवन किया और इस (वीरता के) गुण से विदित होकर तरुण पुरुष के समान सजा ॥ २ ॥ राजा शत्रुशाल ने कहा कि कोटा के पति के चार पुत्र ७ तलवारों लगे अर्थात् अभी काम आये हैं और पाँचवाँ पुत्र ९ अनश्र होकर जय और यश के भार से भरा हुआ ८ बचा है ॥ ३ ॥ इसकारण अब कोटेवालों से अपने वीर युद्ध में शत्रु ने मारे जायें तब यश का प्रकाश होकर बूंदी का पाटवी पन प्रकट होगा और इसप्रकार विनाश होने से ही नासिका नहीं कटेगी नहीं तो नकटा पन है ॥ ४ ॥ १० यह शब्द सान के शब्द का अनुकरण है इसीप्रकार खणगाँकै रगाँगाँकै आदि प्रत्येक पदार्थ के भिन्न भिन्न अनुकरण हैं १ तलवारों की धारा २ शीप

चण्णों के भड़ चिहुर ६ छोजि कातर छण्णों के ॥  
 टण्णों के टामें ७ भमर ८ फौलां भण्णों के ॥  
 ठण्णों के घंट ९ गंदलां ठहे गण्णों के पळवर १० गयण्णों ॥  
 हण्णों के हीस हैगाम हय ११ जय कण्णों के बंदिजण १२ ॥ ५ ॥  
 गयराजां १ गुडं ग्रहण रहण पाखर हयराजां २ ॥  
 पांजां छलि दळ ३ प्रघण संघण वरसाल समाजां ॥  
 तां व अलाजां ४ तरस सरस रण चांव सलाजां ५ ॥  
 वणें न रोजां वहिर गहिर तोपां घण गाजां ६ ॥  
 दुजां दुख काजां करण बाजां ७ जयबोधक वयण ॥  
 साजां सुरेस चढियो सतो १९ १० राजामणि बीजो रंयण ११ १२ ॥ ६ ॥  
 गज १ ठण्णियां घण घाह २ बाह ३ जणियां बांदाळक २ ॥  
 तण्णियां कैरभ १ तिमोस २ चरम ३ भण्णियां चउ ४ चालक २ ॥

(सिलह) वारों के १ चिहुर (केश) खड़े हुए 'यहां चिहुर शब्द सामान्य केशों का वाचक है परंतु भड़ शब्द के योग से सूझों के बालों का ग्रहण है जिसका अर्थ है कि वीरों की सूझों के बाल खड़े हुए' तथा वीरों को रोमांच हुए "रोमांच भय से भी होता है और उत्साह से भी होता है" सो यहां उत्साह से रोमांच जानो २ कायर जलते हैं ३ नंगारा ४ हाथियों पर ५ हाथियों के समूह में लगाये हुए वारघट ६ मांसभोजा ७ आकाश में ८ घोड़ों के समूह में घोड़ों का दिनदिनाना और भाद लोगों का 'जयन्तो' ऐसा शब्द हुआ ॥ ५ ॥ ९ गजराजों पर हाथियों की सिलह को और घोड़ों पर पाखरों को रखकर सेना १० पाज (मर्यादा) पर ११ छलकर अर्थात् मर्यादा छोड़कर १२ बर्षा ऋतु के मेघ के समाज से (समान) १३ दरवाजे से बाहिर हुई १४ उस सेना के ताप से १५ निर्लेजों को १६ कंप और १७ लज्जावालों को युद्ध का १८ बहुत १९ उत्साह हुआ २० तलवारें म्यानो के २१ बाहिर हुई २२ तोपों की बहुत गंभीर गर्जना हुई दूसरों के २३ कठिनाई से तर्कना में आचै ऐ-से कार्यों का वाचों से और वचनों से जय का बोध हुआ इंद्र के समान २४ सामग्री से अन्य राजाओं का मौलिमणि दूसरा २५ रत्नसिंह रूपी वह शत्रुशाल चढा ॥ ६ ॥ अब यहां हाडा जजियों की सेना का समुद्र के रूपकालंकार से वर्णन करने हैं कि इस सेना में हाथी हैं सो तो बड़े बड़े २७ मगर २८ हुए और २९ घोंडे हैं सो ही समुद्र पर चलनेवाले ३० बढ़ल हुए फैले हुए ३० जंत ही ३१ तिमिंगिल हुए, और वहां ३२ कालें ही चारों पैरों से ३३ जल को छाननेवाले कच्छ-

मणियाँ? रयगाँ? अमोल रोपे अणियाँ? मोती? रखें॥  
 सोही धणियाँ? सीप? मिले असिबर? फणियाँ? मुख॥  
 हृद धरम? सीम? गणियाँ रहण वणियाँ मेळ? सुवेळ? बाधे॥  
 खणियाँ? न होइ नाडाँ? खटै ऊफणियाँ हाडाँ? उदधि? ॥७॥

॥ उल्लासः ॥

मँह मह सुगंध? चिक्कसर मळण, जीतण तप अहमह जुई॥  
 जँह मँह विवाह लाडाँ जुड़ण, हाडाँ? धर गँहमह हुई ॥८॥

॥ दोहा ॥

हाडाँ ६? धर गहमह हुई, जाडाँ बिरुंद लुभाण ॥  
 गाडाँ भरि जाडाँ गळाँ, खाडाँ तुरक खपाण ॥ ९ ॥  
 पंचम? राणी अति प्रिया, सूरजकँवरि? ९४।५ सनाम ॥  
 निज बाँसक कहियो निसाँ, इम साँसक अभिराम ॥ १० ॥  
 करणों सो अबही कियो, मरणों वेसँ महीप ॥  
 दिल्ली मग मोनूँ दहे, दीजै पग कुलदीप ॥ ११ ॥  
 जीतै रण पैला जैरै, सुरपुर बसण समीहँ ॥

प कहीगई. वीरों के आश्रुषणों में जो मणियाँ हैं वेही असूत्य ? रत्न २ बाणों की अनियाँ (नौकें) ही जहाँ मोतियों की ३ आंति हुई, उस सेना के धरा (सेनापति) उन मोतियों को उत्पन्न करनेवाली सीप रूप हुए और अष्ट तलवार समुद्र में रहनेवाले मुख्य ४ सर्प हुई. वीरों के धर्म की सीमा ही समुद्र की सीमा अर्थात् मर्यादा और वीरों का उस सेना में मिलना ही अष्ट तरंगों का बहना हुआ, ऐसे हाडाँ रूपी समुद्र के बहने में अन्य ५ खाँदे हुए नाडे समता में नहीं ६ खटा (टहर) सकते ॥ ७ ॥ ७ नीठी नीठी सुगंधिवाला ८ चून का मालिस (उबटन) कराके यवनों का तप जीतने के लिये ९ में आगे मैं आगे कहती हुई वह सेना १० जुड़ी ११ जहाँपर विवाह के १२ उत्सव में दुलह जुड़े इसप्रकार हाडाँ की धरा (भूमि) में १३ अत्यन्त भीड़ हुई ॥ ८ ॥ १४ दुलहों के १५ यश पर लुभाये हुए बड़ी गर्दनवाले तुकों को छकड़े भरकर खड्डों में नष्ट करने के लिये हाडाँ की धरा में अत्यन्त भीड़ हुई ॥ ९ ॥ १६ रात्रि के समय अपने बारे में कहा १७ पति से १८ सुंदर ॥ १० ॥ मरने का १९ बनाव (लिबास) अब ही करलिया ॥ ११ ॥ २० अष्ट इच्छा से स्वर्ग में वास करो

किन्तु सेवा बलमी कही, दासीविगा नउठ दीह ॥ १२ ॥  
 सुखीयो केवच जीवगा? मरण? ते सखा होहि दास्य ॥  
 हे अजयन उलटोदुवा, सोपगा छुटे साय ॥ १३ ॥  
 इस पदमी हावू? १२०१२ अन्तुज, मिचा दहे गेपाळ १८२ ॥  
 विगासंभव मरियो बळे, मोने कुजमसिवाज ॥ १४ ॥  
 नाहि बळगादीधी नथी, वामे घरा घरा वाज ॥  
 सोभी सुखि पळतामियो, सोनगिरी? जसराज ॥ १५ ॥  
 पिंडपदगा जिगाभी मिचा, भावी प्रथम मेली न ॥  
 हे समुचित भावां दुवा, मही विफळ जे मो न ॥ १६ ॥  
 कदक सज कीनी कमण, सो इन नय समुजाड ॥  
 कनिष्ठतम कमिवा कौनर, हुन पुगावरा भाड ॥ १७ ॥  
 सो न उदक मजद १२१२ सन, सिमिन्द चरगा? १८२२ ॥  
 भासित २ तपा १२ कंदप अद १३, सदियो इन नहुवागा ॥ १८ ॥  
 पालन १ पुने प्रथम, वेद प्रभुजस वाद ॥  
 कुळदेवी? सचित कोर, पापी उजव २ प्रसाद ॥ १९ ॥  
 वेद भिज मुन जगा बळे, सज चक सिपाड ॥  
 पाव दिवो हय पागडे, मोय कियो रसा नाड ॥ २० ॥

घमंके जड़ी पाखराँ थाट घोड़ाँ, भमंके झड़ी पाखराँ आगि सोड़ाँ  
 ठहके कड़ी कंकटाँ ठारं ठाई, डहके भड़ाँ बंकड़ाँ घोरं डाई ॥ २२ ॥  
 तुलीढालाँ रुड़ी घली कालाँपोँ, अली जोटं जूड़ी हली ज्वाळ तोपाँ  
 कहे एम दोठाँ प्रळे नेमं कोपाँ, लगीं टेक गोळाँ दगो अद्रि लोपाँ ॥ २३ ॥  
 इसो रूप कीधाँ जिके त्रास आणौँ, जिके आगि लीधाँ गढाँ त्रास जाणै  
 गर्जौं घणाँ घोरं घूँ घोर गाजै, विलागा किनाँ डूंगराँ बज्ज बाजै ॥ २४ ॥  
 जथा कै कंडकै छटा १ मेघ २ जोड़ाँ, मचै सिंधु कै मथं पल्लवै घमोड़ाँ ॥  
 बमं झाल जे फाडियाँ काल बाँका, प्रळे जीतरो चिन्ह धारै पताका ॥ २५ ॥  
 कंरी १ सिंह २ बाराह ३ रै तुंडै केती, लसै ग्राह ४ चक्रो ५ मुखी वाह लेती ॥  
 लगाँ नागैणी जागणी नौद लोपै, अंगाँ दागणी लागणी भाग  
 ओपै ॥ २६ ॥

हुवै गैल चोड़ा जठै सैल हूँता, हलै बैल जोटाँ घणाँ बैल हूँता ॥  
 ठही चोट दे झंझरी कोट ठाँगाँ, छैकी पान जं अट्टरै वट्ट छाणौ ॥ २७ ॥  
 टळै ढील लागाँ घणाँ फौल टळाँ, इठै नीठि पाँडक १ हलाँ हमलाँ ॥

पाखरें बज्जों जिनके १ झोड़ से (टकर से) अग्नि चमक कर गिरने लगी ३  
 कवचों की कड़ियाँ २ टहक (वज्र) कर ४ निरंतर बाध ५ हुआ ७ घाघड़ी  
 अर्थात् संयंकर घात जाननेवाले बाँके वीर ६ चौके (सचेन हुए) ॥ २२ ॥ ९ काल  
 की उपमा घला हुआ (दिया जाने योग्य) सुंदर ८ सेना का बड़ा झंडा ल-  
 ढा हुआ और १० बैलों की जोड़ियाँ जुपी हुई ज्वाला के समान तोपों की  
 पंक्ति चली ॥ २३ ॥ ११ मेघ की गर्जना के समान आनों पर्वतों से १२ लगकर ब-  
 ज्ज बोलता है अथवा भेव में विजली १३ कड़कती है ॥ २४ ॥ १४ समुद्र के १५ म-  
 थने में १६ पर्वत के घोर शब्द होते हैं १७ उगलती हैं १८ सुख १९ ध्वजा ॥ २५ ॥  
 २० हाथी के २१ मृगर के २२ मुखवाली २३ शोभायमान २४ सर्पों के मुख की  
 प्रशंसा लेती हुई २५ जामकी (अग्नि लगाने का तोड़ा) २६ जाग्रित होने वा-  
 ली २७ पर्वतों को जलानेवाली २८ शोभित ॥ २६ ॥ २९ मार्ग ३० पर्वत ३१ घु-  
 घमों की जोड़ियों से चलनेवाली तोपें बहुत बैलों से चली ३२ चोट देकर को-  
 ट को जर्जर श्रुत (ढीला) कराती हैं ३३ छाकी हुई ३४ बुजों के ३५ मार्ग ॥ २७ ॥  
 ३६ हाथियों के जोड़ों से ३७ पैदलों के

तिकाँग्रग हेरबं१ के छैलै रतूटै, छकायाँ सुरा३रोधरै खैलं छूटै ॥२८॥  
 चढी नाँळियाँ बाहूँ राहूँ चल्लीं, हलाड़े धजाँ के गजाँ पंति हल्ली ॥  
 लसै आँल१ जंगाल२ सिंदूर३ सुंडा, इळाँमै धसै धाँवरा पाव उंडा ॥२९॥  
 उठावै कराँ पोगराँ दे उछाळा, किनाँ लागणाँ राग पैंनाग काळा ॥  
 चले कर्णताँळाँ१ उँलाळाँ चलावै, धरे काळ भाँ अंदि पंखाळ धावै३०  
 ठणोँ भेद१ मंदोँ२ मृगाँ३ बंस ठावा, छटा फैलै हालै किनाँ सैल छाँवा  
 खँदी साथ जेता करै दुर्ग खोळा, मही१रै अँही२ साथ देता मचोळा ॥  
 धराँरूप खंबी कराँ धूप धारै, नराँ एक१ एको१ हजारोँ निवारै ॥  
 करंता पेटाँ डोँगा पँबे करींज्युँ, करंता थँटाँ प्राणुँ भैकेँ हरीज्युँ ॥३२॥  
 रचै लौर गुँजार रोलंबै रीजी, भंगाणाँ भडाँ रोधँ ओ लंबँ भाजी ॥  
 अँरानाँ हसै डूंगराँ रैखाँ आँटे, छदी जे कराँ सीकराँ गैण छाँटे ॥३३॥  
 डंगाँ घीसता साँकळाँ सूतडोरा, धरा थूँ खणुँ ज्युँ बणुँ खेत धोराँ ॥  
 भला जूँहवै बेरियाँ वँधूँह भेदी, बिजै मित्र जे चित्र संग्राम बेदी ॥३४॥

उनके आगे १ गणेश का नाम कहकर (निर्विघ्नता से चलने के लिये गणेश का नाम लिया जाता है) २ वकरे लूटते हैं पलिदान होता है और मध्य से परिपूर्ण करने पर रुकने का दुःख छूटता है अर्थात् चलती हैं ॥२८॥ ३ तोपें ४ रंग विशेष ५ रंग विशेष ६ पृथ्वी में ७ दौड़ने के पैर गहरे छुसते हैं ॥२९॥ सुंड का अग्रभाग ९ मानों गिरनारी रांग पर काळा सर्प १० ताड़ वृक्ष के पत्रों के समान कानों को ११ उछाल कर १२ क्रांति १३ पाँखोंवाले पर्वत दौड़ते हैं ॥३०॥ १४ सज्जित हुए १५ वहाँ भेद, मंद, मृग, ये हाथियों की जाति विशेष हैं १६ शोभा फैलाकर १७ मानों पर्वतों के वज्र चलते हैं जिन जिन गढ़ों से १८ झिड़ते हैं उन उन गढ़ों को १९ ढीला करते हैं २० शेषनाग सहित ॥३१॥ २१ पर्वतों रूपी लंबा सीधा खड्ग सुंड में धारण करके २२ मिटाते हैं २३ हाथी के कानों के आगे मदधारा बहने का पटा कहते हैं २४ मद २५ पर्वत के २६ झरना के समान २७ समूह को २८ प्राणों का भय २९ सिंह के समान करते हैं ॥३२॥ ३० साथ ३१ शब्द ३२ अमरों की ३३ पंक्ति वीरों की ३५ रोक को ३४ अगानेवाले और ३५ लंबे दौड़नेवाले ३७ क्रोधित होकर ३८ पर्वतों को धूल करने के लिये ३९ सुंड के जल कणों से आकाश को छाँटते हैं ॥३३॥ ४० पैरों से ४१ खेत सींचने का जल बहने के मार्ग की भान्ति भूमि को खोदते हैं ४२ समूह ४३ सेना की रचना को भेदन करने वाली, विजय के मित्र और ४४ युद्ध के चक्रवर्ती ॥३४॥

इसा रंगभूँ द्रंगरा अट्ट ऊँचा, सिंटावै जिकाँदोठें पंखी समूँचा ॥  
 उदैहाँटकी बंगड़ाँ दंतर्इसा, सुहावै लियोँ आँर शरीका ससीरसा ॥  
 कसे रेसमी लाल कंठाँ कलावाँर, किनाँबेदिपाराहुँदेभाँराकाँवा  
 सिरीसीसँ कुंभा मणी हेम साँऊ, जथा नारि बँतो जचोळीजडाऊ  
 उभैर घंट भासाँ दुरपासाँ आरोहै, ससीर सूरर रैं बीच ज्युँ मेरु साँहै  
 रशाँके तिकाँ घोर रूडी रंचाई, ठाँके किनाँ भल्लरी ठोर ठाई ३७  
 नैखी जाँणि भूलाँ जरीतास नाँहाँ, मिली तामसी श्राजसीर वृत्तिमाँहाँ  
 प्रकासै किता लंब दंडाँ प्रताका, भल्लै डूंगराँ सीस ज्युँ तालं भाँका  
 मिले पीठि छत्री मनाँ केक मोहै, सिरे जाणि प्रासादरै गोखँ सोहै  
 किताँ पीठि होदा लसे चित्रकारी, उघाड़ै जिके तुंगँ सोभा अँटारि  
 बडे नाँद भेरी किताँ पीठि बाँजै, लखंताँ घटा स्यामरी गाँज लाँजै ॥  
 डिगाया डगाँ जे मगाँ डाकँदाराँ, लगा चंड बेतंड यूँ दंड लाराँ ॥४०॥  
 बयो लूमभूमाँ हुवा सज्ज वाजी, तुखारी श्रुगंसागर भाड़े जस्ताजी  
 किता खेत कंबोज ५ बालहीक ६ कच्छी ७,  
 उडै फाँल लौ लौ फिरै डाँल अच्छी ॥४१॥  
 धटी ८ जंगली ९ बंगली १० वेग धाराँ,  
 अरब्वी ११ इराकी १२ र रूमी १३ अपाराँ ॥  
 लगा पाखराँ १४ साज लूमाँ लडीसँ, प्रैडीनाँ चलै ज्युँ नटी पट्टीसँ ॥

१ युद्ध भूमि रूपी २ नगर का ३ ऊँची बुजै ४ लज्जित होवें ५ नीचे ६ सर्वत्र  
 ७ सुवर्ण के ८ बंगडों से ९ लंबे दांतों में लगे हुए हैं सो १० मंगल ग्रह और  
 ११ पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान शोभायमान होते हैं ॥ २५ ॥ १२ हाथी  
 के कंठ में महावत के पैर रहने का रस्सा है सो मानों राहु ने १४ सूर्य को १५  
 गोलकुंडा लगाकर १३ घेरा है १६ हाथी के मस्तक का भूषण १७ सुन्दर १८  
 स्त्री के कुर्चों पर ॥ ३९ ॥ १९ चढ़ाये (लगाये) ॥ ३७ ॥ २० डालीं, उत्तम पर्वतों  
 पर ताड़ वृक्ष की शोभा के समान २१ प्रकाशित होता है ॥ ३८ ॥ २३ महल के  
 २२ मस्तक पर २४ झरोखा २५ ऊँचेपन में २६ छत की शोभा ॥ ३९ ॥ २७ नोयत  
 के शब्द २८ छोटे घाव लगाकर क्रोध दिलानेवालों (साँटमारों) ने मार्गों में  
 डिगाये इस प्रकार भयंकर हाथी सेना के साथ लगे ॥ ४० ॥ २६ अंग ३० रीति  
 ॥ ४१ ॥ ३१ उड़ने में ॥ ४२ ॥



मिले मोहराँ चो४हराँ पँति मोती, कळा कर्त्तरी जीतपावै कनोती ॥  
 दिपैभाल बैठा तवाँ जेब देता, लसै गल्लकी ग्राव१ भा नैखार लेता  
 चुमै चित्त नासाँ मुड़े बँक चाँडा, गयाँ संकड़ेपंथ छेके छ६ गाडा ॥  
 कबी लेहँ जे राचिया रेहँ कूदे, सजे डोंगा लंबा सृगाँ मागा सँदे ॥  
 कसंता बिजैमंड कोदंड कंधाँ, बणावै वृथा वेरैरै जेरँवंधाँ ॥  
 सँटा पालजाळी लटाळी सुहावै, प्रियानागवाळी लखे दाग पावै ॥४५॥

करै हँलुरा कँलुरा नाद कंठाँ,  
 ग्रंथीला मणी भालरा१लूम२ गंठाँ ३ ॥

सचोड़ा उराँ माँकड़ा आसणाँटाँ, मँडे पीठ मँचाँ जिसा गाँत मोटाँ  
 जिकाँ गोळ पीड़ा उँभैरचाक जोड़े, तिकाँ चामैरी लूम१भा लूम२तोड़े  
 तळोटाँ१खुराँ१थंभ१पावाँ२तराँजै, सको पिंड१प्रासाद२आधार साँजै  
 जड़ बज्र नाळाँ झड़े फूल ज्वाळाँ, मनोँ मेघ सँद्योत खद्योतँ माळाँ  
 धुजावै धराँ दाबि दे काळ धक्का, पड़े काच जंघु आवजावाँ पळका४८  
 फटे कोट चोडा जिकाँ चोट फेटाँ, चँळे सीमँहूँ कुडयँपट्टी चँपेटाँ ॥  
 नचे बेगमँ अखिँ ताराँ न मावै, गजाँ डाँगाँ लागीँ बयानैँ गमावै ४६

१ कतरणी अथवा केलकी से २ कान ३ ललाट ४ ललाट की दबीहुई हड्डी से  
 ५ शोभा देते हैं वन घोड़ों के नेत्र ६ गंडकी नदीके पत्थर (शालिग्राम) की शो-  
 भा लेते हैं ॥ ४३ ॥ ७ बाँके मुड़े हुए ननासिका के मुख (फुरने) चित्त पर लुभते  
 हैं ८ लंगाम के १० चाटने में रंगे हुए ११ काड़ (परिखा; खाई) को कूदते हैं १२  
 दौड़ने में लंबाई सजकर सृगों के मान को १३ काटते हैं ॥ ४४ ॥ १४ विजय  
 की शोभा १५ धनुष १६ शरीर के १७ जेरबंध वृथा बनाते हैं; अर्थात् बिना  
 जेरबंध ही जिनके कंधे झुके रहते हैं १८ गर्दन के बालों की १९ केशवाली २०  
 लटावाली सुहाती है २१ जिसको देखकर सर्पिणी जलती है ॥ ४५ ॥ २२ कंठ  
 भूषण २३ अवाच्य शब्द करते हैं २४ गुथे हुए २५ भालरीवाले २६ बालछा (पूँछ)  
 २७ पीठतंग २८ रचे २९ माँचा (पिलंग) ३० शरीर में ॥ ४६ ॥ ३१ चमर के  
 गुच्छे की शोभा को ३२ पूँछ (बालछा) ३३ पैर के नीचे का भाग अर्थात् फर  
 से नीचे और घुटना से ऊपर का भाग ३४ सदृश है सो शरीर रूपी महल की  
 नींव को ३५ सजते हैं ॥ ४७ ॥ ३६ चमक सहित ३७ जुगनू की ३८ पंक्ति ॥ ४८ ॥  
 ३९ जलायमान होती है ४० सीमा (नींव) सहित ४१ (दीवार) पट्टी की दौड़ में  
 ४२ चपट लगने से ४३ नेत्रों में ४४ नेत्रों की पुतली ४५ मस्त हुए हाथियों को ४६  
 साई में गुमाते हैं ॥ ४९ ॥

मुड़े तार कच्चे किनाँ बर मच्छी, अटैफार जे पंचपही धार अच्छी ॥  
 गिणीजै पटोमैं किनाँ तोपगोळा, टळावै टळै बांगरे नागटोळा ५०  
 धरै केक सौभा अटै चक्र धावाँ, फिरै पाँन१पाँणी२अजे ज्यौं फिरावाँ  
 पड़े बक्र बीची कितौं नांगपेचाँ, मिलै आथसूँ भी समैसाथ मेचाँ ५१  
 लैसे रीति नाना खुराँ अंक लागाँ, बणावै धरा चित्र नाना बिभागाँ  
 हसावै भड़ाँ ताँखड़ाँ लंघि हाथी, उडै पाय ज्यूँ ताव दँ भै ईलाथी ५२  
 छुवता भैलै ओभैलै आप छाया, जिके अंबु १ अप्पित्त १ के बायु  
 ३ जाया ॥

उडंता मृगाँ४कंध कोदंड आखौं, त्रि३बैरागी३ उरै होइकै बैर ताखौं ॥  
 नचै थुंग थेई रचै भेद न्यारा, मिडैवै खलाँ हँदलाँ वेग भारा ॥  
 सजीलाँ भड़ाँ प्राण जोड़े सुहावे, वहै भूपै होदौं कटाराँ बुहावे ५४  
 खगाँ जीतखाँ धाँवसँ दाँव खेलै, मलंगे तड़ाँ माँकड़ाँ पीठ मेलै ॥  
 धाँखाँ जोमँ माता ईसै रूप घोड़ा, चलै थँदू अँडाँ घलै बँदू चोड़ा ५५

१ जल में मच्छी फिरै उस प्रकार २ फिरते हैं ३ समूह. घोड़े की धौरित रेचित  
 आदि पाँचों गतियों से ४ अत्यन्त दौड़ने में ५ हाथियों के समूह को ॥५०॥  
 गोलकुंडा की दौड़ में दौड़कर कितने ही घोड़े शोभा धारण करते हैं सो  
 उनकी बराबरी करने के कारण पवन और पाँणी२अथ भी उडन मार्ग में फिरा  
 ते हैं टटेदी. ९ लहर से १० सर्प की गति के समान ११ धन से भी १२ समय के  
 साथ १३ मौका मिलता है ॥५१॥ १४ शोभायमान १५ चिन्ह १६ आश्चर्य कारक  
 अनेक प्रकार के विभाग १७ चल वीरों की १८ अग्नि की ताप से जलें इस प्रकार  
 १९ पृथ्वी से पैर उठाते हैं ॥ ५२ ॥ २० रान का स्पर्श होने से जलते हैं और  
 अपनी ही छाया से २१ चमकते हैं के घोड़े जल २२ अग्नि और पवन से २३ उत्पन्न  
 हुए हैं २४ धनुष २५ वरण (कोट) संबंधी गढ़ को; या तीन कोटवाली खाई को  
 फांदकर २६ इस पार होकर बैर लेते हैं २७ भेदन करावे २८ घोड़ों की सेना २९ वेग  
 के समूह ३० समूह हुए वीरों को ३१ प्राणों के बराबर सुहाते हैं ३२ रूप लेकर ३३  
 हाथियों के होदों में कटाराँ के वार करवाते हैं ॥५४॥ वे घोड़े ३४ पक्षियों को  
 जीतनेवाले ३५ दौड़ने में ३६ पेच खेलते हैं ३७ बाँसों तक फांदकर ३८ लंगूरों (काले  
 सुख के वन्दरों) को पीछे रखते हैं ३९ अत्यन्त ४० बल वा घमंड से ४१ पुष्ट  
 ४२ इस प्रकार के ४३ समूह ४४ घमंडी ४५ मार्ग ॥ ५५ ॥

खुराँ ने उराँ १ पाखराँ २ नोद खुल्लै, तिकाँ बाँहरी इंदरै चाह तुल्लै ॥  
जिसा अँब १ वै सोहया पर्व जाणे, तिसा जोहँ २ आरौहयाँ मूँछ ताणे  
तसै अँज पूरे १ तिके फोज लाडों २, गऊँ ३ बिग्र ४ भीडू दया ५  
लाज ६ गाडा ॥

बली ७ दीन बंधू ८ धरै वंसवानाँ ९, अँकूपार गंभीर १० ॥ रोळै अँरानाँ ११ ॥  
दिपै १२ मेयँ राधेयँ सर्वस्व दानी १३, महाकष्ट भीमाँ गवै भूप मानी १४ ॥  
हुवाँ प्राँयाँ सँसै नथी अँठू हेरै १५, फँगीदीठ पैलाँ अँयाँ पीठ फेरै ॥  
सदा एक १ राँखी गँती १५ धर्मसेवी १६, खँरा जुद्ध सिंधू बिजैनाव  
खँवी १७ ॥

हठी जेन भागै १८ न भागाँ प्रहारे १९, धराँ लंगराँ संगैराँ पाव धारै २०  
अजोरैराँ नराँ लेण अँटा उधारा २१, सजोरैराँ दया देण बाँटा सुधारा २२  
महा स्वामि धर्म २३ लियाँ हाथ माथा २४, गवै देसदेसाँ जिकाँ पौथ  
गाँथा २५ ॥ ६० ॥

उराँ धारि बंदूक २६ मोती उतारै, सराँ २७ मारि जाता खगाँ गैगाँ सरै

१ घोड़ों के चरण ध्रुवण २ शब्द ३ उन घोड़ों पर सवारि करने की इंद्र को भी हच्छा होता है ४ घोड़े ५ समय अथवा युद्ध ६ जोध (वीर) ७ चढ़नेवाले ॥ ५५ ॥ = शों-आयमान ९ मराक्रम के पूरे १० सेना के दुल्लह ११ वंश के चिन्ह को धारण करने वाले १२ गम्भीरता के समुद्र १३ युद्ध में १४ निरंकुश ॥ ५७ ॥ १५ शोभा देते हैं १६ क्राज्जि में १७ कर्ण के बड़े कष्ट में भीमसेन के समान अंगवाले १८ प्राणों का संदेह होने पर भी झूठ नहीं बोलते १९ सर्प के सजान हाँपनेवाले २० शत्रुओं की २१ सेना की ॥ ५८ ॥ २२ एक स्त्री का २३ नियम रखनेवाले २४ धर्म की सेवा करनेवाले २५ सच्चा २६ युद्ध रूपी समुद्र में २७ चलानेवाले २८ युद्धों में पर्वतों रूपी लंगरों को धारण करनेवाले २९ निर्वल मनुष्यों का उधारा ३० बैर लेनेवाले और बलवानों को जारकर ३१ ओछ (सुधार पूर्वक) पद दिला-नेवाले ३२ स्वामी के कार्य का सुधार करनेवाले और सरने के लिये अपना माथा हाथ में रखनेवाले ३३ अर्जुन के समान ३४ कथा ॥ ६० ॥ ३५ आकाश में जाते हुए पाक्षियों को बंधन करते हैं.

बली तोमर<sup>१</sup> २८ दावके चाव बांधै, समग्रौं गुणौं खगगरा मग-  
साधै ॥ ६१ ॥

लगे लाह कासू ३० क्रिया बाह लीधौं, कटारी ३१ छुरी २ साँकड़े  
सिद्ध कीधौं ॥

महावीर पाड़ै पछाड़ै मइंदौं ३३, गहे दंत रोकै मँदाळौं गइंदौं ॥ ६२ ॥  
सजे ओपैरा टोपै १ सोभा सिखाळो, जिकै भीड़ियाँ दँसै २ नागोद ३  
जाळी ४ ॥

सबाहुत्र<sup>५</sup> पऊरुत्र<sup>६</sup> जंघात्र<sup>७</sup> संगी, चहै बंसवीलैहा रहै एकश्रंगी ॥ ६३ ॥  
लैसै सँक्रजोड़ै इसो चँक्र लीधो, कहे थानसूँ भूप प्रस्थान कीधो ॥

जठै रोकियो पुत्र चौथो ४ जिकोभी, तजे प्राण्यौं साहुवो संग तोभी  
भड़ाँ ले अठी हँलियो साथ भाऊ १ ९५ १,

पितारो बडो भक्त सीमा पुगाऊ ॥

क्रमे चंपैवाड़ी कँनै आदि १ केरां,

दिपा जैवती १ ८ ८ १ ताळ १ भूपाळ डेश ॥ ६५ ॥

उठै फोजरीहौं जरी दीठि<sup>३</sup> आताँ, बणाई किता सूचकाँ छबवाँतां ॥

जणाई जिकाँ बाठलो १ १४ १ सेर १ ६ ३ २ जायो,

अजे नाहयाँणाँ तणो नाँहिँ आयो ॥ ६६ ॥

कथासो सुणी १ नाँ सुणी भूप कीधी, दुजिंदौं १ कविंदौं २ मँडाँ ३ रीकँदीधी

१ भालों के २ उत्साह ३ बघाते हैं अथवा बांधते हैं ४ सब गुणों से ५  
खड्ग के मार्ग (पैतरे) साधते हैं ॥ ६१ ॥ ६ लाभ ७ चर्खी के ८ चलाने की  
क्रिया को लिये हुए ९ सिंहों को १० मदवाले ११ हाथियों को ॥ ६२ ॥ १२  
शोभावाले १३ शिरघ्राण सभते हैं १४ अधिक १५ कवच १६ पेटी १७ पड़त-  
ला १८ दस्वाना १९ घुटनों का कवच २० जंघा का कवच २१ वंश का मार्ग  
चाहते हैं २२ शोभायमान २३ इन्द्र की बराबरी में २४ सेना २५ प्राण की आ-  
श छोड़कर ॥ ६३ ॥ २६ चला २७ चलकर २८ स्थान का नाम है २९ समीप ३० प्रथम  
के ॥ ६४ ॥ ३१ वहाँ पर सेना की हाजरी ३२ दृष्टि में आते ही ३३ जानकारी क-  
रनेवालों ने ३४ छल की बातें ३५ थाणा ग्राम का पति ॥ ६५ ॥ ३६ अष्ट द्वा-  
रियों को ३७ अष्ट कवियों को ३८ वीरों को ३९ दान दिया-

शत्रुशालका भाऊको पीछा भोजना ] सप्तमराशि-एकादशमयूख(२६८५)

कियो सिंह१८९।१ कासार२ विश्राम बीजो३,  
जठेही हरीदास धूगो कबी जो ॥ ६७ ॥

मत्रीजो१ कबीजो२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

कैनेँ भूपरै बैशाँ ऐहो कहायो, अबै हूँ खैराखूहर्हा होख़ा आयो ॥

दियो खासहाथी१ मिले तास दानी, गजी२ साथ हालै सदा सो गुमानी  
सुखी कीरती छाँकवालै सवादी, बिनाँ नारि हालै नथी कील बादी  
करी१ गैल तो एक दीधी करेणू२, बल्ले डाँकदाराँ सजे लंब बैशाँ६९  
गजी१ साथ गै२ पौत डरे पुगायो, इळानाम राकेसँ जोड़ै उगायो

सतै१९४।१ कीध विश्राम तीजा३ सिद्धानै३,  
जठै रीक बूँठो बल्ले इंद्र जाणै ॥ ७० ॥

भजे वास चौथो४ नदी मेरु४ भै३ डै, नैराँनाह सूनौ नखाँ दंग नैडै ॥

क्रमे पंचमौ५ वास नीबोद५ कीधो, बल्लौ पौत वंसी६ छवो६ जाइ दीधो  
उठै थंभि३ वोर दीहँ लाखाँ उँडाऊ,

दठौलै भटां भेजियो दंग भाऊ१९५।१ ॥

जिकी वात भाऊ१९५।१ घखी नीच जाणी,

पितारै अँतै नीठिँ सोही प्रमाणी ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

१ सिंह तलाव पर दूनरा सुकाम किया वहाँ पर सँढायच शाखा का हरिदास नामक चारण पधुँचा जिलने शत्रुशाल की मान हानि करके शत्रुशाल के दिये हुए घाँड़े की उदयपुर में दुर्दशा की थी ॥ ६७ ॥ २ पास ३ वचन ४ ऐसा ५ गधे पर चढ़ने के लिये ही आया हूँ ६ आगे हथनी होने पर चलनेवाला ॥ ६८ ॥ उस कीर्ति की ७ लुसि के ८ स्वाद लेनेवाले ने यह सुना कि ९ द हठ से बंधा हुआ हाथी हथनी के साथ बिना नहीं चलता १० हाथी के साथ ११ हथनी १२ सारदारों ने १३ लम्बे भाले सजकर ॥ ६९ ॥ १४ हाथी १५ पात्र (चारण) के डेरे पुगाया १६ पृथ्वी पर चन्द्रमा के बराबर उज्ज्वल नाम किया १७ वर्षा की ॥ ७० ॥ १८ चौथा सुकाम किया १९ मेरु नदी के समीप २० भूपति २१ नामका नगर के समीप २२ पड़ाव ॥ ७१ ॥ २३ दहरा २४ दिन तक २५ उड़ानवाला भाऊ को बुन्दी २६ नगर में भेजा २७ पिता की सलाह से २८ कठिनाई से २९ प्रमाण करी ॥ ७२ ॥

वारण१ हय२ भूखण३ बैसण४, सतै११४११ करे बखसीस  
 भाऊ१९५११ घाछा भेजियो, नीठिहठां अवनीस ॥ ७३ ॥  
 भाऊ१९५११ साथे भेजिया, भड़ौ अरथ भूपाळ ॥  
 साठि६० तुरग सिरुपाव सत१०० दीधा दस१० दंतौळ ॥ ७४ ॥  
 भेजे इम अणियां भँवर, जेठी१ कँवर जनेस ॥  
 वंसी६हूँ चढियो बळे, धन चय देण धनेस ॥ ७५ ॥  
 क्रमियो नहँ भारत१९५१४ कँवर, पाछो प्रसर्भ प्रकास ॥  
 कहियो छोडे साथ किम, दुलभ पितारो दास ॥ ७६ ॥  
 बीठळ१९३११ सो नायो बळे, थाणै पुर जिणथान ॥  
 सूची सो खळ सूचकाँ, कीधी भूप न कान ॥ ७७ ॥  
 आप करे दरकूच इम, मथुरा जाइ महीप ॥  
 पर्व माघ११ सित१ पूरणा१५, दान किया कुळदीप ॥ ७८ ॥  
 मुंडण१ न्हावण२ श्राद्ध३ मुख, साधे पूरव सूर ॥  
 बखसे धन कीधा बळे, दुजराजाँ दुख दूर ॥ ७९ ॥  
 तारतुळा१ हाँटकतुळार, एक१ एक१ दै आप ॥  
 सुरभी आठ समेत सत१०८, दीधी दीन हुँराप ॥ ८० ॥  
 कनक१ कोस साँगाँ२ सजे, रजत१ खुगाँ२ अभिराम ॥  
 इम गोर्गण दीधो अधिप निर्यत उवारणो नाम ॥ ८१ ॥  
 हुई कटकै अब हाजरी, मथुरा नयै मुकाम ॥  
 सब कुँसुभ१ केसर२ बसण, तुले बराती तैम ॥ ८२ ॥

१ हाथी २ वज्र ॥ ७३ ॥ ३ हाथी ॥ ७४ ॥ ४ सेना के अग्रभाग का रक्षिक ५  
 ग्राम का नाम है ६ धन का समूह देने में ७ कुवेर ॥ ७५ ॥ ८ हठ करके ॥ ७६ ॥  
 ९ दृष्ट ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ १० उत्तम ब्राह्मणों के ॥ ७९ ॥ ११ चाँदी की तुला १२  
 स्वर्ण की तुला १३ गौर १४ दुर्लभ ॥ ८० ॥ साँजे के साँग और १५ चाँदी के  
 खुर १६ सुन्दर १७ गौरों का समूह १८ निश्चय ही १९ अपना नाम या की रखने  
 के लिये ॥ ८१ ॥ २० सेना की २१ नगर २२ कुसुमा के रंग में २३ तहाँ ॥ ८२ ॥

कहियो नृप आपण सकळ, वीर वरातीवेस ॥

एक दुलह<sup>१</sup> बाणियो अठै, सोहै पूरण सेस ॥ ८३ ॥

कथन हास साँचो करण, वीराँ दै जस बोल ॥

भूप भाट समुचित भैगो, दुलह बाणियो दोल<sup>२</sup> ॥ ८४ ॥

वरसो दुलही<sup>३</sup> दिवबधूर मन जिण आणि मरोडै ॥

वर कंकण<sup>४</sup> वर बंधियो, माथै धरियो मोडै<sup>५</sup> ॥ ८५ ॥

हुकम दीध तिगानूँ हसे, हालण आप हरोलै ॥

विणमाथै जूझण बळे, बंदी वदियो बोल ॥ ८६ ॥

मेचक<sup>६</sup> २ फागुण<sup>७</sup> १२ पंचमी<sup>८</sup>, चढे अडर चहुवाण ॥

आयो पट्टेण आगरै, परदळ दंडेण पाँण ॥ ८७ ॥

इति श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी-  
वसुधावरशत्रुशल्यचरित्रे यवनेन्द्रशाहजहाँनिदेशाद्वाराशिकोदप्रक्ष-  
वर्तितयोरंगजेवसमरार्थबुन्दीशशत्रुशल्यस्यबुन्दीनगरादकवरपुरगम-  
नमेकादशो मयूखः ॥ ११ ॥

आदितस्त्रयोविंशत्यधिकद्विशततमः ॥ २२३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुपहु सता<sup>१</sup> १९४१ आगम सुनत, हरखिय साहजिहान<sup>२</sup> १९२ ॥

१ पीढ़ ॥ ८३ ॥ २ उचित ३ कहकर ४ दोला नामक भाट को ॥ ८४ ॥ ५ अन्त-  
रा को दुलही करने का घमंड ६ उस दुलह ने ७ अष्ट कंकण डोरड़ा हाथ के  
बाँधा ८ विवाह करने का मुकूट ॥ ८५ ॥ ९ चलने का १० अपने आगे ॥ ८६ ॥  
११ कुष्माण्ण १२ पत्तन (नगर) १३ दवाने को १४ बल से ॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में बादशाह शाहजहाँ की आज्ञानुसार दाराशिकोह के  
पक्ष में होकर औरंगजेब से युद्ध करने के लिये बुन्दी के राय शत्रुशाल का बु-  
दी से प्रयाण करके आगरा जाने का ग्यारहवाँ ११ मयूख सप्ताह द्वाआ और  
आदि से २२३ मयूख हुए ॥

बूंदीपति बुल्लयो बिरचि, दूजे २ दिन दीवान ॥ १ ॥

मुगलदसता १९४१ जातहि मिल्यो, लेत नयन उर लाइ ॥

सुत१की वय२की सदन३की, दर्ई सरम बिरुदाइ ॥ २ ॥

सप्तहजारी ७००० मनसब १ रु, सह सिंधुर २ हय ३ सख ४ ॥

प्रीत दये दस १० परगना ५, बिबिध आभरन ६ बख्त्र ७ ॥ ३ ॥

गजपहाड़ १ गज १ अरु अरब २, फतेजंग २ जवफात ॥

पहु सुनिये दस १० परगनन, अभिधा समर अभीत ॥ ४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

तहँ आगर १ सागर २ छवडाँ ३ तिम, इत सिरोंम्ह ४ सारंगपुर ५ हु इम ॥

भेलसा ६ रु बालाभेटा ७ दिक, सत्त ७ दये निजसीम प्रसाँदिक ॥ ५ ॥

इत बाराँ १८ रु बरोद २ १ आढर्यतम, संगहि खेराबाद ३ १ ० रीम्ह सम

जगतसिंह १ ९५१ कोटा बिलसँ जिन्ह, यह त्रय ३ दिय तासों उतारि इन्ह

अनुजंनु त्रय ३ रु मुकुंद १ ९४१ अवंतियँ, दपितप्रान रन साहअ-

रथ दिय ॥

जगतसिंह १ ९५१ ताके तनूज जँहँ, कोटापति भोगत तीन ३ नकँहँ

ता सनलै रु सता १ ९४१ हिँ दये त्रय ३, भो इम साह ग्रस्यो संकटभय

पै मुकुंद १ ९४१ माधव १ ९३२ सेवौपर, सुमिरन आनि तथाभित सत्वर १ ८

ओर त्रय ३ हिँ तेसे इहिँ अप्पिय, थिर कोटाहु कृपाविच थप्पिय ॥

त्रय ३ हिँ छिन्नि बाराँ १ मुखँ तासों, संभर पटलिखे सुखँमासों ॥ ९ ॥

पहु दस १० पाइ परगनाँ जंपित, अमलकरन पठयो निदेसइत ॥

भुजवला तँथ अमलकिय भाऊ १ ९५१, यह उदँत कछु गिनहु अगाऊ

महिपहिँ दै इम रीम्ह मुदित मन, जानि बहुरि सुत १ भात २ भतीजन

१ सभा में बुलाया ॥ १ ॥ २ घर की ३ स्तुति करके ॥ २ ॥ ४ हाथी सहित ॥ ३ ॥

५ पहाड़ गज नामक हाथी ६ घोड़ा ७ बेग का समूह ८ हे प्रभु ९ नाम ॥ ४ ॥ १०

प्रसन्नता से ॥ ५ ॥ ११ अत्यन्त धनवान् ॥ ५ ॥ १२ छोटे आई को १३ उज्जैन

१४ प्यारे प्राण ॥ ७ ॥ १५ चाकरी पर १६ शीघ्र ॥ ८ ॥ १७ आदि १८ चहुवाण (श-

त्रुशाल) के पट्टे में १९ परम शोभा से ॥ ९ ॥ २० तहाँ २१ वृत्तान्त ॥ १० ॥



बादशाहका हाडोंको बलसीस देना] सप्तमराशि-द्वादशमयुख (२१८९)

पूछि नामश्रवण२इच्छ१इच्छ१प्रति, अप्पन लग्गो खिलत अर्घ्यअंति१२  
अप्पिय प्रथम१ कुमार भगवंत१९५३हिं, इहिं सु लयो न मन्नि नै-  
यमंतहिं ॥

पूछत कारन भूप पयंपिय, इहिं ओरंग४०३कुमर स्वामीकिय १२  
तातैं दंत रावरो लेत न, बैरी यह इतके समवेतन ॥

मुगलदकहिय ओरंग४०३हमारो, नृपसुत कहि तूही किम न्यारो  
भूपहु साह सैनकरि भाखिय, लेहु खिलत प्रभुमत अभिलाखिय  
तदपि खिलत न लयो भगवंत१९५३१२ सु, अक्खिय हम लौहैं इ-  
तके असु ॥ १४ ॥

साहहु तब हसि कुमर सराहो, चिह्नन निप न लिपन जल चाहो  
दूजो२ खिलत२ दयो सुख मोदित, हुलसि कुमर चोथे४भारत  
१९५३१२ हित ॥ १५ ॥

खल स्वामी किय साहसुजा खल, साह कुपित इमं आनि भृकुटि  
सल ॥

कहि दुस्सह हेलैन मुहुकम१९४५३ कंहैं, तीजो३ खिलत३रिसाइ  
दयो तंहैं ॥ १६ ॥

साकोसुत जेठो१ जोरावर१९५३१४, दयो खिलत४ चोथो ४ तिहिं  
सादर ॥

याको अनुज काथित छहोदक्रम, सगतसिंह१९५६५ जगमोहन  
१९५३१६ सप्तम७ ॥ १७ ॥

पंचम५छह६खिलत तिन्हं पावत, इतदगवैरिसल्ल१९४३सुत आवत  
जेठो१ वह गोपाल१९५३१७ बुल्लि जहैं, ताहि खिलत७ सप्तम अ-  
ट्यो तंहैं ॥ १८ ॥

१ बहुत मूल्य के ॥ ११ ॥ २ नीतिवाल् ३ राजा ने कहा ॥ १२ ॥ ४ दान ५ हथर  
के साथ [इनके] शत्रु हैं ६ हे राजपुत्र ॥ १३ ॥ ७ प्राण ॥ १४ ॥ ८ चिकने घड़े  
पर ॥ १५ ॥ ९ शाहजहाँ के द्वितीय पुत्र का नाम है १० इसकारण ११ अपराध  
॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

इंद्रसल्ल१९४२ सुत दुव२हग आये, बलिं इनछोर१९५३८ गुमान  
१९५८९ बुलाये ॥

तीजो३अरु अष्टम८क्रममें तिन, अष्टम नवम९खिलत८९पाये इन्१९  
सुत दूजो२मधु१९५३१०राजसिंह१९४१४सन, \* \* \*

सता१६४१अनुज छहो६ अरु सप्तम७, उदय१९४६११ मूर१९४१  
७१२ आँवहय वर विक्रम ॥ २० ॥

एगारहम११ बारहम१२इनकों, खिलत१११२दये संमुचित लखि  
खिनकों ॥

महासिंह१६४१९१३ नमि नवम९ नृपानुज, भट लिय खिलत१३  
तेरहम१३ अतिभुज ॥ २१ ॥

ताहीके तनयहु जेठे१३३त्रय, मान१९५१११४रु कनक १९५२१५  
लाल१९५३१६ विक्रममय ॥

चहुदहम१४ पंद्रहम१५ खिलत१४१५ चदि, सह सोलहम१६मिले  
इन्ह३ संगहि ॥ २२ ॥

इक१भगवंत१९५३११न लिय तिनमें अरु, सूचिय हम इंतके सैल१  
नखरु२ ॥

तदनु समीप बुलाइ सता१९४१ तैंहँ, कटि तस धरि निज खास  
खगंग१ कैंहँ ॥ २३ ॥

नृपहिं पास बैठानि ठानि नुतैं, सो नृपेंअंक धरयो दारा४०१ सुत  
पैलित१पट्ट२सुत३सूचि अवधिपर, कहिय त्रानि तीन२न अव तो कर

पानी१ हग२ गङ्गद१ स्वर२पावत, दिय भैं साह नृपहिं विरुदावत

१ फिर ॥ २६ ॥ २ नाम ॥ २० ॥ ३ उचित ४ समय देखकर ५ राजा का छोटा  
भाई ६ महाबाहु ॥ २१ ॥ ७ पराक्रम सहित ॥ २२ ॥ ८ इधर को रोकने के लिये

पर्यंत और मारने को निह हैं, तथा नकार को निषेधार्थ में रक्खाजावे तो यह  
अर्थ भी हो सकता है कि हम इधर की भूमि को स्थिर रखनेवाले पर्वत नहीं हैं  
किन्तु ग्वर (कर) हैं ९ जिस पीछे १० खड्ग ॥ २३ ॥ ११ स्तुति १२ राजा की गोद  
न अपने पुत्र दाराशाह को रक्खा १३ अपने स्वतः केश १४ रक्षा ॥ २४ ॥ १५ भार

बादशाहकाराजाकोदाराकीभलाभनदंन] सप्तमराशि-द्वादशमयूख (२५१?)

उर लगाइ दारा ४०।१ नृप अकिंखय, रघुवर जो धर १ पर सिर २ र किंखय  
तो गहिय अप्प १ हि रहिहो तिम, प्रभु १ पीछें एसहि दारा ४०।१।२ इम  
हहु ६१ नपति यह कहि ठहोहुव, दुपयन धरत कैनक शंखल दुव २  
पिक्खि सु कुंम्मकुमर नर्म पचिय, रायसिंह १ कीगति सिंह २ रचिय  
कहिय सता १९४ नृप जैरठ कहावहु, पय लंगर धरि किम छविपावहु  
अकिंखय अप्प हूँपो रन रहनौ, गिनहु लज्जलंगर १ नहि गहनौ॥  
अति भर कष्ट तदपि जा आवहि, आइअदि इनमें उर भावहि २८  
इनहि घंसीटि भजै तब अप्पहु, थिर रहि हास्य जयामति अप्पहु ॥  
कूरमनृप जयसिंहके कुमर, तहँ यह सुनि चुप भये ज्हीतैतर ॥ २९ ॥  
सिक्ख भई बलिसब भट सभयन, अनिय साह सुभविधिविनु लभ्यन  
तव सहाय बुंदीपति तौवहु, अप्प सिबिर दारा ४०।१ लैजावहु ॥ ३० ॥  
सता १९४।१ कहिय दारा ४०।१ प्रभुपासहि, बहु बिलसहु सुख भोग-  
विलासहि ॥

हम अवरंग ४०।३।१ मुराद ४०।४।२ हटावहि, उँपदा १ विजय २ नि-  
वेदन आवहि ॥ ३१ ॥

साह कहिय पुर्वहि वरज्यो सुत, यह गो तउ भजन अत्रंति उत  
इहि वरजत हम अबहु रहन इत, मानत सो न सूख बय मदमित ॥  
यातै नृप तवसंग पठावत, याहि सरन याहि न भय आवत ॥  
तू नृप १ अरु कासिय २ जाफर शनिम, अरु साइस्तेखान ४ चउम ४ इम  
च्यारि ४ न सरन करत सुत मैं चहि, बिधि कछु याहि वचावहु हित बहि

॥ २५ ॥ ? खड़ा हुआ २ दोनों पैरों में ३ स्वर्ण के ४ लंगर पहने था ॥ २६ ॥ ५  
जैपुर के कड़वाहे के कुंवर ने हंसी की ६ बुढ़ा ॥ २७ ॥ ७ शत्रुशाल ने कहा कि  
युद्ध में खड़ा रहना है इसकारण ये ८ लज्जा के लंगर हैं शृंग नही हैं ९ बुन्दी  
का आडाबला नामक पर्वत इन में उलझा १० खँचकर ११ आप भी १२ खड़े  
रहकर १३ बहुत लज्जित होकर ॥ २६ ॥ १४ नज्जामदों को १५ तहाँ १६ डेर में  
॥ ३० ॥ १७ केट ॥ ३१ ॥ १८ पहिले ही १९ उजैन ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ २० हित करके

भूपकहिय तउ सिविर न भेजहु, प्रस्थित होहिँ हमहिँ लौ यह पहु ॥  
 पै इक अरज सुनहु दिल्लीपति, अजलौक हम जिते नम्र अति ३४  
 साधत हुकम रावरो सबविधि, निजधर्महिँ रखन रंक कि निधि ॥  
 हम निजधर्म भंगकरि हजरत, होत मृतक जियतहि स्वदिष्ट हत  
 प्रभु हम धर्म भंग जनि पारहु, पुनि सब जिततित मरन प्रचारहु ॥  
 हम सिर १ धर २ निज देत धर्महित, याहि रखिख धन गिनत  
 अपरिमित ॥ ३६ ॥

पै सुतको प्रभुके प्रपितामह ३१।१, गढ आमेर व्याह किय १ साग्रह  
 बलि प्रभुपिता ३८।१ जोधपुर व्याहे २, एदुवर विघ्न मुख्य अवगाहे ॥  
 इनकरि धर्म चतुर्थ ४हु अंस न, विद्यमान अब बाहुज २ वंस न ॥  
 सुनहु पुव्व स्वामी अकबर ३७।१ सन, सत्त ७ करार लहे नृपसु-  
 र्जन १९०।१ ॥ ३८ ॥

दुर्ग तवहि रनथंभनाम दिय, कोलहु नियत लेख दँल ए किय ॥  
 न कैनी दैन १ जान नोरोजन २, संसर्ग गमन इक १ आयुध मन ३।३९।  
 कवहु करै न अटक उलंघन ४, साह दाग न धरै हय संघर्ष ५ ॥  
 वंश मुखपतोरन लग वज्र ६, अजि अनुगवहे संग न सज्ज ७ ॥ ४० ॥

लंघन १ संघन २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अटक पार न गमन ४ यह इनमें, खल पन मिलत जात उत खिनमें  
 पुव्वहु सुर्जन ३८।१ लगे पठावन, रतन १९२।१ भूप न गधे रहै रावन  
 करि वल सज्ज मरन स्वीकृत किय, अटक गमन ४ तन ५ मन २ करि,  
 उज्जिय ॥

१ आर्यलोक ॥ ३४ ॥ २ घन ३ अपने भाग्य से हान ॥ ३५ ॥ ४ भंजा ५ प्रमाण  
 गहित ॥ ३६ ॥ ६ आप के प्रपितामह ने ७ आग्रह सहित ॥ ३७ ॥ ८ क्षत्रियों  
 के वंश में ॥ ३८ ॥ ९ निश्चय १० लिखावट के पत्र में ११ कन्या १२ सभा में  
 ॥ ३९ ॥ १३ अटक नदी १४ घोड़ों के सबूह में पादशाही दान नहीं लगावेगे  
 १५ मुख्य द्वार तक नगरा वजेगा १६ आर्य राजा के सेवक हांकर साथ नहीं  
 जायेंगे ॥ ४० ॥ १७ रावण के समान हठ करनेवाला ॥ ४१ ॥ १७ सेना १८  
 छोड़ा ॥ ४२ ॥

प्रभु अप्पहु जब तत्थ पधारे, नृप हम सबहि रहे रुकि न्यारे॥४२॥  
मम काका संगहि गय माधव१९३।२, धी हित गिनि तुम कियउ  
धराधव ॥

हुते कहा न और दैवेहित, बुंदिय देस दयो बसुवर्धित ॥४३॥  
बुंदीमाँहिँ मऊ१ तिम बाराँ२१, लखहु प्रान२ बुंदी१ बपुँ२ लाराँ॥  
सोहि प्रान तुम कहिँ समप्पिय, स्वास रहित बुंदी प्रभुअप्पिय ४४  
हमरी१ भुव विधिवस तुमरी२ हुव, धरयो हमहु आश्रय प्रभुको धुव  
धर्म रहयो गिनि भूदुख२न धरयो, सब अज्जन प्रभुहुकम अनुसरयो  
अटकहिँ लंघत रुक अज्ज इम, तह माधव९१३।२पायउ प्रसाद तिम  
यह न गिनी धर्महिँ जिहिँ उज्झयो, साधन जाहि लोभ इक सुज्झयो  
अरि मम कोहु सबल जब अहँ, लव तव पलटत यह न लगैहँ ॥  
इम न इक्खि काका आढ्यंकरयो, बुंदियं प्रान जु देस सु वितरयो  
देते अप्प और बहु देसहि, बनाते सु हमतैँ सु विसेसाहि ॥  
तो हि उचित न परंतु अप्प तव, सो मम जीवन देस दयो सब ४८  
को तँहँ मंतुँ अटकविनु कहिय, बलि अब दैन हेतु का बैहिय ॥  
आयउ करैँ जनेँक सुनि आतुर, तिम ओरहु हुव चलान त्वराँतुर  
आतुर१ रातुर२ अन्तपानुप्रासः ॥ १ ॥

रोकि सबन मै तव तत्थ रहयो, चित्त उदय हजरतकोहि चहयो ॥  
आये आप संग तव आये, समुचित दर्महु सबन पुनि पाये ॥५०॥  
तबहु मऊ१ बाराँ२ न दईतुम, सेवक भयो विदल जाँतीसुम ॥  
दिय अब प्रभु किहिँकारन द्वैही, वितरन विनहु हुकम सिरवैही

१ बुद्धि में २ भूपति ॥ ४३ ॥ ३ बुंदी रूपा शरीर के साथ ॥ ४४ ॥ ४ निश्चय ५  
आर्य लोगों ने ॥ ४५ ॥ ६ प्रसन्नता ७ छोड़ा ॥ ४६ ॥ ८ क्षण ९ धनवान् किया  
१० बुन्दी के प्राण रूपा ११ दिया ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ १२ अपराध १३ कौन कारण  
बड़ा १४ बीकानेर के कुमार कर्णसिंह १५ गिता को १६ व्याकुल सुनकर १७  
शीघ्रता में आतुर ॥ ४९ ॥ १८ दंड १९ ५० ॥ १९ बिना पत्तों का चमेली का  
पुष्प २० बिना दिये ही हुक्म होवे सो सहनक पर है ॥ ५१ ॥

निबहयो पन तब अटक न लंघन, प्रानहु दैन करत अब हम पन॥  
 \*अज्जन धर्म रक्खि प्रभु असैं, पठवहु मरन काल रन पैसैं॥५२॥  
 वहे हम धर्महानि जिहिं हेतू, सुहि निवारि बंधहु बिय सेतू ॥  
 कोटिन अरज अरज यह इक्क१ हि, मित रक्खहु धन१ धाम२चमू  
 ३महि४ ॥ ५३ ॥

धर्महि इक्क१निवाहि अखेधन, सब जयकाम लेहु प्रभु हमसन ॥  
 करै विजय प्रभुको दुस्सह कलि, बढन आस प्रभुसोहि चहैं बलि  
 मृध लोदिन पहिलो१जय१मंडिय, खानजिहान पुत्र चउ४खंडिय ॥  
 भय बिहस्त लोदी सु भ्रमायो३, जिम कीलागढ अमल जमायो ॥  
 हुव तहैं रीभ लूट के गज१हय२, मन्नि तदपि मय अरज न्यायमय  
 काका हरि १९३३ गुग्गेर अधिपकिय, हम सोही सब रीभ गि-  
 नी हिय ॥ ५६ ॥

दुर्ग दोलताबाद१ प्रमुख बलि, करि अधीन जीयो दूजी२कलि ॥  
 सो जय मिल्यो रावरे संगहि, उहाँ रही भुव मिलन उमंगहि॥५७॥  
 सिवप्रसाद१हुंख कथित समप्पिय, अवनी लेसहु तबहु न अप्पिय  
 दक्खिन२३कुमर साह पदवायो, प्रभुसासन तीजो३जयपायो॥५८॥  
 महि ले लक्खपंचहत्तरि ७५००००० मित, किय ओरंग४०१३ तंत्र  
 जस अंकित ॥

ओरहि तबहु परगनाँ अष्टक८, पायो तउन मिल्यो निज नष्टक ॥  
 पै हम धर्म हानि जव न परी, क्रम बढिबढि सेवाहितव करी ॥  
 लखिधर्महि इक१अटक न लंघिय, सब तहैं परेहे प्रभु संघिय ॥  
 विदिसैं धर्म दृढ तब न विसासे, तुम प्रत्युत दंडि रु सब लासे ॥

\* आर्यों का ॥ ५२ ॥ ? कारण २ मर्यादा ३ न्यून ॥ ५३ ॥ ४ युद्ध में ५ फिर  
 ॥ ५४ ॥ ६ लोदा यवनों से प्रथम युद्ध में ७ भय से व्याकुल ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ८  
 आदि ९ युद्ध ॥ ५७ ॥ १० आदि ?? बादशाह के ॥ ५८ ॥ ११ अधीन १३ अ-  
 पना नाश हुआ परगना नहीं मिला १४ साथ में ॥ ६० ॥ १५ देखकर १६ उलट

देसहि मम काकाहिं दिवायो, प्रभु प्रसाद सो मैं ममपायो ॥ ६१ ॥  
 ढिग गो बधन १ सुराखाय ढाहन २, बुंदिय दिखिय अवधि निवाहन ३ ॥  
 बिनुसिक्खहि पाउस गेह बसन ४, पाये कुमार भोज १९१।२ इ-  
 ति मुख पन ॥ ६२ ॥

प्रभु जो लिखित निदेसहु पलटैं १, हृद जो न गिनि समुद्रहु नहटैं २ ॥  
 नैभाविय अधर मही जो न रहैं ३, बट्ट सतत रवि १ सासि २ जो न बहैं ४ ॥  
 विधिप्रपंच तो अखिल बिनासैं, पन निजनिज सब जां न प्रकासैं  
 अबतैं धर्म निवाहहु अज्जन, सज्जन समर खरे हम सज्जन ॥ ६४ ॥  
 मृधं गंजैं ओरंग ४०।३।१ मुराद ४०।४।१ हिं, बहैं संजव सत्रु छलबादहिं ।  
 इहिं संकल्प देव अनुसरिहैं, कै जय १ कै उपादा सिर २ करिहैं ॥ ६५ ॥  
 जोलों हम धर १ सिर २ सिर २ जानहु, तोलों सतनय प्रमद प्रमानहु ॥  
 यह करि अरज सिविर नृप आयो, संगर उचित वरुंथ सजायो ॥ ६६ ॥  
 ॥ दोहा ॥

साहपास प्रसादही, रक्खि कुमार द्वारा ४०।१ सु ॥

भूप चढत मिलिहैं भनि रु, आयो स्व सिविर आसैं ॥ ६७ ॥

रासु १ आसु २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सेर १९२।२ तनय विह्वल १९३।१ सुभट, आयो तामें न एह ॥

किय निंदा तस सूचकन, नृप न सुनिय करि नेह ॥ ६८ ॥

तंदनु प्रात करि सिक्ख तहैं, भूप कुमार भगवंत १९५।३ ॥

स्वामी निज ओरंग ४०।३सन, मिल्यो जाइ मृधंमंत ॥ ६९ ॥

अरु चोथो ४ सुत भूप इत, समुझायो सविसेस ॥

तव वय अवहि न रन तलप, सयन उचित अतिसेस ॥ ७० ॥

१ प्रसन्नता ॥ ६१ ॥ २ अंदिरों को गिराना ॥ ६२ ॥ ३ आकाश में ४ मार्ग में नि-  
 रन्तर ॥ ६३ ॥ ५ जल्मा की रचना (सब लोक) ६ आयों को ७ युद्ध के प्यारे ८  
 हम मित्र होकर खड़े हैं ॥ ६४ ॥ ९ युद्ध में १० शीघ्र ११ मस्तक अंद, करेंगे ॥ ६५ ॥  
 १२ शरीर के ऊपर १३ मस्तक, १४ पुत्र सहित १५ हर्ष १६ सेना ॥ ६६ ॥ १७  
 महलों में ही १८ शीघ्र ॥ ६७ ॥ १९ तहां ॥ ६८ ॥ २० जिस पीछे २१ युद्ध के  
 विचार से ॥ ६९ ॥ २२ युद्ध शय्या सोने की ॥ ७० ॥

विसेस१ तिसेस२ अन्त्यानुप्रास ॥ १ ॥

करनजोरि भारत१५।४ कुमर, बिन्नति किय प्रति\*वप्प ॥

भारतसिंह१६।४ ममाऽभिधा, अप्पी क्यौं प्रभुअप्प ॥७१॥

मम यहनाम लजाइ मै, भजिज दुरों किम भोन ॥

जुइ जनक अगैं जुरों, पय१ पैव्वय२ कर पोन२ ॥७२॥

आलय भेजन प्रैसभ अति, जदपि सता१९४।१ किय जाहि ॥

करि साहस चोथे४कुमर, तदपि नमन्निय ताहि ॥ ७३ ॥

कैय१ विक्रय२ स्वीकारकरि, प्राननके व्यापार ॥

वनिक तुला आरुहि शैवय, किय बहु सज्ज कुमार ॥७४॥

धार१ अनी२ लग्गी धुपन, लोहन सानन लेह ॥

पंडु बारन रन पाहुँन, दीसन लग्गे देह ॥ ७५ ॥

मुच्छै१ भौह२नसौं मिलन, जिमजिम सूरन जाइ ॥

इत अति संम्मद अच्छरिन, उत तिथतिम अधिकाइ ॥ ७६ ॥

अँज्ज१ जवन२ दल हुव अतुल, आकारितें एक१त्र ॥

उव्वट२ वल पौउस उदक, तुँला न पावत तत्र ॥ ७७ ॥

नर१ बाहन२ आयुध निकर, जिततित पिकखेजात ॥

जिन्ह संचय अति दैर्घ्य जगि, मनमन जयहि जनात ॥ ७८ ॥

भैवतैं सुरि अँज१ विष्णु१ भैव२, स्वर्ग४ विभव द्विय साहि ॥

दैन पैराभव१ दुर्जनन, संभव२ लेत समाहि ॥ ७९ ॥

दान१पठन२जय३सैह४दिपत, हँवैन५सउच६दितियैदान७ ॥

\*पिता प्रति\* मेरा नाम ॥७१॥ १ पिता के आगे २ पैरों को पर्वत और हाथों को पवनरूपी दरके ॥७२॥ ३ घर भेजने का हठ ॥७३॥ ४ लेना देना ५ अपनी समान अवस्थावालों को ॥ ७४ ॥ ६ तलवारों की धारा ७ चाले आदि की अगियों उज्ज्वल होनेलगीं ८ सांख्य चाटने लगा ९ चतुर वीरों को ॥७५॥ १० हर्ष ॥ ७६ ॥ ११ आर्य १२ चलाये हुए १३ वर्षा ऋतु का जल १४ बराबरी नहीं पाता ॥ ७७ ॥ १५ समूह १६ घमंड ॥ ७८ ॥ १७ संसार से मुड़कर १८ ब्रह्मलोक १९ कैलास २० पराजय ॥ ७९ ॥ २१ उत्सव २२ होम २३ स्त्रियों का त्याग (ब्रह्मचारी)



पुंनना अज्जनं सुभट प्रति, वरतत सरिस विधान ॥ ८० ॥

संध्या त्रयं गुंगा सलिल, आप्लव पूत अधीस ॥

दृष्टुं उपाले इष्टं हरि, स्वकुल धर्म धरिसीस ॥ ८१ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशल्पचरित्रे यवनेन्द्रान्छत्रुशल्पदशप्रान्तप्रापणापुत्रवान्ध-  
वादिपारितोषिकासादन १, वाराणमज्जप्रान्तानधिगमहेतुधर्मोद्देशमुख्य  
ताप्रतिपादनपुरःसंगनेकोदाहरणपूर्वकशत्रुशल्पयवनेन्द्रनिवेदन २, य-  
वनेन्द्रान्तिकदाराशिकोहरणकशत्रुशल्परणसर्जाभवनं द्वादशो म-  
यूखः ॥ १२ ॥

आदितश्चतुर्विंशत्युत्तरद्विशततमः ॥ २२४ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतीभिश्चितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुभटसंस्तरवाहनसिलह ४, वानौ नरन बटाइ ॥

रोकि इतर गोचररहे, असहे आगरा आइ ॥ १ ॥

जवन १ न चलन कुरान २ जिम, अज्ज १ न श्रुति २ अनुनार ॥

क्रम चिंतन १ अर्चन २ कलित, होत उचित व्यवहार ॥ २ ॥

१ सेना २ आर्यों की ॥ ८० ॥ ३ स्नान ४ पवित्र ॥ ८१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणे के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में बुन्दी के राव शत्रुशाल का वादशाह की ओर से दूध  
परगने और पुत्र वान्धवादिकों को मिलत मिलना १ वारा और मज्ज का पर-  
गना पीछा नहीं मिलने के कारण धर्म को मुख्य बनाकर वादशाह से शत्रु-  
शाल का अनेक उदाहरणों सहित निवेदन करना २ दाराशिकोह को वारा  
के समीप रखकर शत्रुशाल का युद्ध के अर्थ सज्जित होने का चारहवां  
यूख समाप्त हुआ आदि से २२४ मयूख हुए ॥

५ युद्ध से नहीं भगने की प्रतिज्ञा का चिन्ह ३ न  
चलन कुरान के अनुसार और आर्यों का चलन  
म पूर्वक चिंतन और ८ पूजन ९ विदित होते  
रूपक से सेना का वर्णन करते हैं ॥

\*पाउस घन घनपन<sup>१</sup> प्रतिमं, पुहवी<sup>२</sup> दलन प्रपात<sup>३</sup> ॥  
 कटि लहरू<sup>४</sup> कि प्रसार कौं, जैनता<sup>५</sup> जिनतैं जात ॥ ३ ॥  
 इंद्रायुध<sup>६</sup> केतन<sup>७</sup> उदित, चपला<sup>८</sup> असिबैर<sup>९</sup> चंड ॥  
 गति खद्योत<sup>१०</sup> फुलिंग<sup>११</sup> गन, बक<sup>१२</sup> बारन द्विज दंड<sup>१३</sup> ॥ ४ ॥  
 गज्जन<sup>१४</sup> बज्जन<sup>१५</sup> भेरिगंन, फुज्जहु<sup>१६</sup> तोपनफैर<sup>१७</sup> ॥  
 चातक<sup>१८</sup> घंटार चीरिका<sup>१९</sup>, सिजित<sup>२०</sup> दिखवत सैर<sup>२१</sup> ॥ ५ ॥  
 अज्ज<sup>२२</sup> जवन<sup>२३</sup> इम आगरा, आये सब आहुत<sup>२४</sup> ॥  
 भूप बिसालातैं भजे, दुरि घर न लखैं दूत ॥ ६ ॥  
 जथा जोधपुर<sup>२५</sup> आदिजे, आये ज्हीत<sup>२६</sup> न अत्य ॥  
 रायसिंह<sup>२७</sup> संसय रहत, सुनहु स्व निश्चय सत्य ॥ ७ ॥

पादाकुलकम् ॥

इक्खे साह सुभट सब आये, पै कति तैंदपि न हाजरि पाये ॥  
 गेह अंति जुद्ध तजि जे गय, रिसकरि बुल्ले तेहु बडे रय ॥ ८ ॥  
 त्रैपा<sup>१</sup> बिदुर<sup>२</sup> सब तजि भय आतुर, पत्तो भजि जसवंत<sup>३</sup> जोधपुर  
 तनया कर्मवती १९५१ जु सता १९४१ की, एह हुती रानी तैंह  
 याकी ॥ ९ ॥

बासैंक हो ताको तिहिं बासैंर, बिसैंपो तसाहि प्रासाद धरौवर ॥  
 इहिं रानी प्रति सुनि भजि आयो, रटत महींनस लोह रुकायो ॥ १० ॥

\* वर्षा काल के अत्यन्त मेघ के † समान पृथ्वी पर ‡ सेना का पड़ाव हुआ ?  
 मनुष्यों के समूह का उत्पन्न होना ही जहाँ मेघ की लहरों का फैलाव हुआ  
 ॥ ३ ॥ २ ध्वजाओं का उदित होना ही इन्द्र धनुष ३ भयंकर खड्ग ही विद्युत्  
 ५ अग्निकण ४ जुगलू, और हाथियों के ६ दांत जहाँ पगले हुए ॥ ४ ॥ ७ नावतों  
 के समूह का बजना ही मेघ की गर्जना, और तोपों के फैंर ही ८ बिजुली की  
 कड़क, हाथियों के वीर घंट ही चातक और १० मृषणों के शब्द ही जहाँ ६  
 भिक्षियों की ११ शोभा दिखाते हैं ॥ ५ ॥ इसप्रकार आर्य और धवन १२ बुलाये  
 हुए आगरा में आये १३ उज्जैन से भगे हुए राजा घरों में छिप गये जिनको दूतों  
 ने नहीं देखा ॥ ६ ॥ १४ लज्जित ॥ ७ ॥ १५ तौ भी १६ उज्जैन का १७ वेग से  
 ॥ ८ ॥ १८ लज्जा १९ भय से व्याकुल ॥ ९ ॥ २० बारा २१ उस दिन २२ प्रवेश  
 किया २३ भूपति ने २४ रसोई में लोहे का पजना बंद करवा दिया ॥ १० ॥

आलय सख दुराइ दूर२ अरै, इभरदै बलपै छंकि पटअंतर ॥  
छोनी वह पगभंडन छाई४, अप्प व्यंजन गहि सम्मुह आई५।११।  
दासिन बदिय बधाई बंटन६, खिनं तिहिं टारि बाजनै भूखन७ ॥  
बलि लैजाइ तल्प बैठारघो८, पयदब्बन लागि९ हरख प्रसारघो१०  
अधिप न समुझि व्यंग्यजुत इनको, चविष ठकहु क्यौं कर  
चूरिनको ॥

बदिय प्रकट गजरदै बलपावलि, विघ्नकरै प्रभु रहन इहाँ२बलि ॥  
वरज्यो हमहिं महानैस बज्जत१, सिजित के न भूखनहु सज्जत२ ॥  
स्वामि लखन चिरैकरि हुव संभव, लैहु तामैं जिन होइ विघ्न लव  
यह समुझि रु मै रातिकरी यह, सुनि सु कबंध १ सिटायो छवि २  
सह ॥

बहुरि साह जसवंत बुलायो, इहिं आगसै सो नहीतै न आयो ॥१५॥  
रायसिंह१ भजि तिम टोडा रहि, दुर्धर भीम जर्नैक जस सुत दहि ॥  
अंदर पैठि न बाहिर आयउ, तस जस नारि उदार तनायउ ॥१६॥  
सुपै न तव दिल्ली जाइसक्यो, तजि बाहिर१ अंतर२ रहन तक्यो ॥  
गदतै किते भजि गो भय साग्रह, अनरसिंहमुंन रायसिंह२यह ॥१७॥  
नृप जसवंत भतीज निहागहु, धो नागोरैपुराधिप धारहु ॥  
सूचत किते अवंती रासने, भज्यो सु बीकानेर भूमिधेन ॥१८॥

१ शीघ्र २ हाथी दांत का ३ चूड़ा कपड़े से ढका ४ भूमि को ५ पंखा लेकर  
॥ ११ ॥ ६ शय्या पर बिठाया ॥ १२ ॥ ७ इस व्यंग्य में राजा जसवंतसिंह नहीं  
समझा ८ कहा कि चूड़ियों को क्यों ढकती है ९ राणी ने प्रसिद्ध कहा १०  
हाथी दांत का चूड़ा ११ बलवान है सो फिर आपके यहाँ रहने में विघ्न करेगा  
॥ १३ ॥ १२ रसोवड़े में १३ बजनेवाले श्रुषण भी नहीं पहने १४ बहूत समय  
ने आरका देखना स्या है १५ शीघ्र ॥ १६ ॥ १७ इस अपराध से १८ लजित  
होकर नहीं आया ॥ १९ ॥ २० पिना सीयसिंह के यश को जलाकर ॥ २१ ॥  
१६ कितने ही कहते हैं २० यह रायसिंह अनरसिंह का पुत्र था ॥ २१ ॥ २२  
बुद्धि में २२ नागौरपुर का अधिप २३ उज्जैन के युद्ध से २४ राजा ॥ २८ ॥

पे वह रायसिंह ३ अति\*पुव्वहि, अक्वरं३७।१ समय हो पव-  
न१†ही२ अहि ॥

जहाँगीर३८।१ लग संभव जाको, तबको सुनहु उदंतहु ताको१९  
यह प्रवया परन्यो भटियानी, जो बय१ रूप२ अतुल जगजानी ॥

यह नोरोज स्व तोरन आई, मुगलदनयन१ उर२ लखत न माई २०  
दगदगमिलत मिले मन दोहु२न, कतिदिन कढयो विरह खिन  
कोहु न ॥

रायसिंह ३ सुहु जानि सहिरहयो, यह१ गहि२ वैभव३ देस४ १)  
लहिरहयो ॥ २१ ॥

हुव दिल्ली चिर वास हवेलिय, जत्थहु जाइ साह किय कोलिय ॥  
कैद मुहुम्मद तकी१ खुरुम३६।२।२ किय, जिहिं कहूँ साह बि-  
जन लहि जंपिय ॥ २२ ॥

अहो रैन१९।१ नृप मम आलोचत, रायसिंह३ भीरुकर्पन रोवत ॥  
हे हमसंगम कवहु हवेलिय, करन तास रानी सन कोलिय ॥ २३ ॥  
इस असगोत्र१ सर्जातीय२हि तब, सजहु नर्म कहि असह मर्म  
सब ॥

असि १ फर२ ताहि रैन १९२।१ तुम अप्पहु, थाहन मोहि हन-  
न मति अप्पहु ॥ २४ ॥

तुमरे नर्म लज्जि रिस तानै, असि१ फर२ गहि सुच्छहु कर अनै ॥  
पुरुखारथ १ तो ताग प्रमानै, जो नहि तो बै असर्व२हि जानै ॥ २५ ॥

\* बहुत पहिले पवन रूपी लज्जा को खानेवाला सर्प "सर्प का नाम पचना-  
शन है" इसकारण पवन रूपी लज्जा को खानेवाला कहा सां इस निर्लज्जता  
का कारण आगे बताते हैं ॥ १९ ॥ १) वृद्ध अवस्था में अपने (बादशाह के) हार  
पर ॥ २० ॥ २१ ॥ ३) बहुत समय तक ४) कीड़ा ५) एकान्त में लेकर कहा ॥ २२ ॥  
७) मेरे विचार से ८) कायरपन ॥ २३ ॥ ९) एक ज्ञानिवाले १०) हँसी. हे रत्नसिंह  
११) हाल तलवार देकर उसके मन का १२) थाह लेने के लिये मेरे मारने की मति  
स्थापन करो ॥ २४ ॥ १३) अब १४) बलहीन ॥ २५ ॥

जुवती भोगसक्ति१ व्है जामैं, सो नर जार२ सहै न सभामैं ॥  
 सद्धि रहस्य साह१ नरनाह२सु, रचि नोरोज सुगल६ किय राहसु  
 मस्जिद लग गो जाँत१ तियनमैं, मन्निय आत२ कही सु कियनमैं  
 यह तब भेजि हुरमजन अग्गहि, सुग्गो भटन संगैत तस मग्गहि॥  
 प्रबिसि हवेली तजि ठाँ प्रबहन, नालि चढि सु सहसा ज्ही नबहन  
 रायसिंह३ दर्पति२ जँहँ राजत, ताहि महल गो साह मदन तत२८  
 लखि तजि तल्प सलाम करि लज्यो, भेट तिय सु करि नृप नि-  
 कसि भज्यो ॥

हुतो प्रैकोष्ठ प्रौहरिक रैन१९२१हि, बुल्लयो सो असहन कटु बैनहि  
 मम असि लै रु मुररि वीर बनहु, हम१ तुम२माँहिँ जाहुसाह हनहु।  
 नृप असि रायसिंह३ जब न लयो, भरि स्वर तौर साह कहतभयो  
 प्रसँभ राव गजा किम पावत, यह काहूकी दई न आवत ॥

अखिलैन मन्नि रत्न१९२१ अपगयी, बचै अब न जान्यो प्रभुबोधी  
 सु किय परंतु साहके सम्भँत, गँदी कछु न इम साह मर्म गत ॥  
 रायसिंह३ नृप१की यह रानिय१, याकी बहिनि२ देवरहु आनिय ॥  
 पृथ्वीराज२अनुज निज पति२को, सो व्याहो इहिँ धर्म सुमतिको  
 ही स्वसाँ२१सु देरानी२इम हुंव, दिष्टै तंत्रइक१घर आई दुवर२३३।  
 कबहु कहिय जेठी३ १ अनुजों २ कैहँ, जुग२हि करै इक१ थाल  
 असेँन जँहँ ॥

अनुजा२कहिय छुयो तब अँभैहि, छत्र२कुलीन पिवै सु अँभैहि३४

१ स्त्री के भोगने की शक्ति २ सलाह ३ बुन्दी का राय रत्नसिंह ॥ २१ ॥ ४  
 जाते समय ५ साथ ॥ २७ ॥ ६ नरयान (ताम्रजाम) ७ लज्जा ८ स्त्री पुरुष ९  
 कामदेव के कारण ॥ २८ ॥ १० शय्या ११ द्वार पर १२ रत्नसिंह पहनायत था  
 ॥ २९ ॥ १३ उच्च स्वर से ॥ ३० ॥ १४ हठ १५ सब ने १६ स्वामी को मारनेवाला  
 ॥ ३१ ॥ १७ वादशाह की सलाह से १८ इस कारण वादशाह ने कुछ नहीं कहा  
 ॥ ३२ ॥ १९ छोटा भाई २० बहिन २१ भाग्य के वश होकर ॥ ३३ ॥ २२ बड़ी बहिन  
 ने २३ छोटी बहिन से कहा २४ भोजन २५ तेरा स्पर्श किया हुआ जल भी ॥ ३४ ॥

अनख सु सुनि जेठी१ उर आई, साहहिँ इम बनि पिमुन सुनाई ॥  
 मोमै रूप कहा प्रभु मानहु, जामि अनुज२ देवर घर जानहु ॥ ३५ ॥  
 तिलहु रूप मोमै नहि ताको, वह किन इकखहु पुंज प्रभाको ॥  
 अरयो मुगल ६ जब ताहि बुलावन, पित्तल २१ हो हरिभक्त सु  
 पावन ॥ ३६ ॥

इहिँ संकट जिहिँ उमा उपासिय, कँछ वासिनी पँछ प्रकासिय  
 स्वप्न कहिय मै १ व्है तव तिय २ सम, दलिहों दर्प मिच्छको  
 दे दम ॥ ३७ ॥

पै मम जौन न पिहितै पठावहु, तव तिय अतुल लाखै जग तावहु ॥  
 तिम नृजान भेज्यो पित्तल तव, सब पुरभनिय अतुल छवि साग्रह  
 मर्दित जाग्र करयो मुगले६ सहिँ, लज्ज्यो तव तजि नैरपन लेसहिँ ॥  
 अरु किय नियम कुँसुम १ तिय २ तू १ अलि २, बीकानेरतै न  
 संगहु बलि ॥ ३९ ॥

बिमाति रह्यो कित व्यूँढ १ बुलैबो, पै अबतै डोला२ हु नपेबो ॥  
 साह दियउ लिपिदँल सुहि स्वीकैरि, टाग्यो बीकानेर गया टरि ॥ ४० ॥  
 कतिक कहत जेठी१ यह कन्या, रायसिंह३१ न बरी धँव धन्या  
 सो १ गिनि हुरम बरी जवनेस१हि, अनुजा २ तस पित्तल २ बरि  
 एसहि ॥ ४१ ॥

आनी बहुरि गई पिउहर ए२, असेन निमित्त मुगी हठपर ए२ ॥  
 जेठी१ जाइ साहप्रति सूचिय, तब बलकरि बुली अनुजारतिय ४२

१ क्रोध २ चुगल खोर होकर ३ छोटी बहिन ॥ ३५ ॥ ४ क्रांत का समूह ५  
 हठ किया ॥ ३६ ॥ ६ देवी की उपासना की ७ कँछ देश में निवास करनेवाली  
 राजमाई नामक चारण कुल की देवी ने ८ पल ९ दंड ॥ ३७ ॥ १० यान ११  
 द्विगुण मन भेजना १२ तहाँ ॥ ३८ ॥ १३ मनुष्यपन १४ लोखरी पुष्प का  
 १५ अमर १६ फिर ॥ ३९ ॥ १७ विवाही हुई को बुझाना तो कहाँ रहा १८ लिखावट  
 १९ स्वीकार करके ॥ ४० ॥ कितने ही कहते हैं कि उम बड़ी कन्या जिसका नाम  
 राजपूताने में “नाथी भाटियांजी” प्रसिद्ध है तिसको २० पति होकर रायसिंह  
 ने नहीं विवाही थी ॥ ४१ ॥ २१ भोजन के कारण २२ छोटी बहिन को ॥ ४२ ॥

भक्तन मति पित्थलरतवही भजि, सो उमाहु भक्तहिँ अवसर सजि  
जो पठई अपिहित तिय जेसैं, तँहँ है सिँह त्रास दिय तैसैं ॥ ४३ ॥  
जंगल तिय न चहैं सु जवन जिम, अंबा लिखित कराइ लयो इमा  
इमहु होहु हमहिँ न कछु अग्रह, साह १ हरम १ अनुजा २ पित्थल  
२ संह ॥ ४४ ॥

नत्थी १ तिहिँ भटियानी १ नामहु, कहत कति रु तासहि यह  
कामहु ॥

तो यह वत्त होहु अँसैं तँहँ, करन चही निजंसम अनुजा २ कँहँ ॥ ४५ ॥  
अंबा किय अनुजा २ सहाय इम, जस जिततित पित्थलरको हुव  
जिम ॥

रायसिंहकी कोउक रानी, सुगलदराज तो ओरहि मानी ॥ ४६ ॥  
पै लापर निंदाकरि पित्थल २, किय अग्रज १ अपजस कोलाहल ॥  
कंहिय आत १ वपु मढ्यो कँनकमैं, नक्क रु १ पगधरहे न तँनकमैं ।  
जासि बडी १ पित्थल २ तिय २ की जो, रायसिंह १ अग्रज १ न बरी जो ॥

१ देवी ने भी रसासन्द १ सिम ॥ ४३ ॥ ४ जंगल द्वारा (वीकानेर के राज्य) की ५  
देवी ने वहमको हठ नहीं है ॥ ४४ ॥ ७ नाथी = उसी से यह कार्य हुआ १ अपने  
समान छोटी बहिन को करनी चाही ॥ ४५ ॥ १० देवी ने ११ छोटी बहिनकी  
सहाय की ॥ ४६ ॥ १२ स्वर्ण में १३ कुछ भी नहीं रहे ॥ ४७ ॥ १४ बड़ी १ बहिन

\* इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध है कि पृथ्वीराज द्वारा गया तब चंडारवा नामी ग्राम में उसको राजवाई  
नामकी चारण जाति की स्त्री मिली जो उस समय शक्ति का अवतार मानी जाती थी उसने प्रसन्न होकर  
पृथ्वीराज से कहा कि तुममें काम पड़े तब मुझे याद करना इसकारण पृथ्वीराज ने इस कष्ट में याद करी  
तो उस देवी ने पृथ्वीराज की स्त्री का रूप किया और महायान पर बैठकर वह देवी बादशाह के समीप गई ता-  
व उसको महायान से उतारने के लिये बादशाह समीप गया तब देवी ने सिंह का रूप करके उसको ता-  
स दिया और राजाओं की स्त्रियों को फिर नोरों में नहीं बुलाने का प्रण करालिया ॥

† वीकानेर और जैसलमेर के इतिहासों से सिद्ध है कि, जैसलमेर के रावळ हरराज के तीन पुत्रियें  
थीं जिनमें एक तो नाथी नाम की बादशाह अकबर को परणई और दूसरी गंगा वीकानेर के राजा राय-  
सिंह को और तीजी चंपा (चांपा) रायसिंह के भाई पृथ्वीराज को परणई थी सो यहां नाथी को राजा राय-  
सिंह की राणी लिखकर उसका अकबर के साथ व्यभिचार लिखा सों मिथ्या है ॥

तो वह१ होहु साह१ ब्याही तिम, अरु पितृल २ तिय२ सील  
बच्यो इम ॥ ४८ ॥

रायसिंह१ नृपकी तउ राँनी१, ओरहि कोहु साह उरभाँनी ॥  
मुनसब१ सप्तहजारी७००० सम्मद, पायउ रायसिंह३१ राजापद२  
बहु परगना३ बसन४ भूखन५ बलि, कैरी६ तुरग७ पाए तिय मुकँलि  
सजातीय१ अरु विजातीय२ सब, ताको अपजस करनलगे तब५०  
रायसिंह१ कविलोकन रखिय, दान पटा१ मनि२ धन३ लक्खन  
दिय ॥

सो कवि जबहि बारहठ संकर, उजिँ जोधपुर बास१ ग्राम२ अर  
चंपाउत गोपाल जंगचहि, लगे न जे तिन्ह सबन यहै लहि ॥  
संकर१ सह खट६ दरसन खेला, बीकानेर गयो तिहिँ बला ॥५२॥  
रायसिंह ३१ कवि कहँ तिय२ रोधिय, पट्ट लिखित करि दई  
पलोधिय१ ॥

तास ग्राम दसअग दुसत ९१० तब, संकर खट६ दरसनहिँ दये  
सब ॥ ५३ ॥

कविसंकरहित बहुरि रीभकिय, पुर नागोर२ त्रिलख३०००००  
पटा दिय ॥

बीकानेर बच्यो तबतै तँहँ, किय इम रीभ घनै सुकवि५० कहँ ॥५४॥  
जान्यो कवि टारहिँ तिय अपजस, बरख्यो इम बसुविंदु त्रपावस ॥

१ बादशाह की बिचाही हुई ॥ ४८ ॥ २ हर्ष सहित ॥ ४९ ॥ ३ हाथी ४ स्त्री  
को भेजकर ५ अपनी जातिवाले और दूसरी जातिवाले ॥ ५० ॥ ६ छोड़कर  
७ जीविका ८ शीघ्र ॥ ५१ ॥ ९ मारवाड़ में ब्राह्मण चारण आदि को \* खट  
दरसन कहते हैं १० क्रीड़ा सहित ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ११ धन लुपी बुन्दों से १२ राजा

\* मारवाड़ में ब्राह्मण १ चारण २ सैन्यासी २ (हिन्दू साधुमात्र) जती ३ (जैनी साधु) फकीर ५  
(पवन साधु) और देवताओं के पुजारी क्षत्रिय ६ (जैसे रामदेवजी के पुजारे तैवर क्षत्रिय हैं) इनको खट  
दरसन कहते हैं अर्थात् ये वहाँ दर्शन करने योग्य हैं ॥



पै न टरें ऐसे कलंक पवि, क्यों न उपाय करहु कोटिन कवि ॥५५॥  
जु यह रायसिंह ३११ की कथा जिम, अकबर ३७१ छत हुव कहत  
किते इम ॥

बूंदीपति तैं भोज १९१२ विचारहु, नैम सु तब तसरचित निहारहु  
पै इहि रायसिंह ३११ संभव पर १, अचिर जहाँगीर ३८१ रु चिर २ अ-  
कबर ३७१ ॥

जो अब भज्यो जुद्धतँ अतिजव, सो यह न तैं द्वैरहिको संभव ५७  
रायसिंह टोडा १ रानाउत, सह नागोर २ कबंध अमरसुत ॥

इनमै इक १ कै द्वैरहि भजे अर, साहजिहाँन ३९१२ साहके अवसर  
ए २ हु साह आहुत न आये, जिम जसवंत १३ सु तिमहि लजाये  
बीकानेर करननृप तब हो, जुग २ ठाँ रायसिंह जुग २ जबहो ॥५९॥  
पुर्व कथित करि मंतुं कर्ण पहु, आयो नहि तब १ को भीतँ अब २ हु ॥  
भजि रन तब द्वैरही ए भूपति, होत रुके आवनमै लखि हैति ॥६०॥  
तमैकि साह अहदी पठये तह, दुसहँस २००० दम्म अखिख दम्  
प्रतिग्रह ॥

अपि दमहु ए बहुरि न आये, बलिबलि तिमसिर दम्म बढाये ॥६१॥  
भनत किते इम बढतबढत भय, प्रतिदिन दिय अयुत १०००० हुदम  
रूपय ॥

आये तउ न पाइ साध्वँस १ अति, प्रतिदिन कुपित सहो सु जव-  
नपति ॥ ६२ ॥

के वश होकर १ वज्र खी ॥ ५५ ॥ २ हँसी ॥ ५६ ॥ जहाँगीर के समय में ३  
अनिश्रय और अकबर के समय में ४ निश्रय है ५ अत्यन्त शीघ्र ॥ ५७ ॥ ६  
शीघ्र \* ॥ ५८ ॥ ७ बुलाये हुए ८ दोनों जगह दोनों रायसिंह थे ॥ ५९ ॥ ९, प-  
हिले कहा हुआ १० अपराध ११ डरकर १२ लाजित १३ हानि ॥ ६० ॥ १४  
क्रोध करके १५ रुपये १६ दंड के १७ प्रतिदिन ॥ ६१ ॥ १८ भय ॥ ६२ ॥

इत औरंग ४०।३।२ मुराद ४०।४।२ अवंतिय, पहुँ करि निखिल  
घायलन पंतिय ॥

उचित गीत सब बोरन अप्पिय, मग लखि चान कुंच भुव मपिय  
दुवर्हि भीरलै इम सब दक्खिन ३।२, पट्ट १ लहन गंजन परपक्खिन  
जुग २ हि साहजादे तदनंतर १, हं हं हं हं हंके अकवर ३७।१ हं १६।१  
दर्म इक १ पर बाजीगर दुव २, इमदिह्नी १ पर ए २ हंकतहुव ॥  
दस १० मैं जोहि सता १९।४१ वृद्धिदसा, लिय छत्रो ६ परगनाँ  
भेलासा ६ ॥ ६५ ॥

तस सोमाडिग द्वै बैल तिनको, उत्तर ७।४ बढयो ग्रीखम किं इनको ॥  
इम कडि देस निपथमग अंतर, कालीसिंधुकेर परतट पर ॥ ६६ ॥  
निपथा १ पुग जु वजत अब नरउर १।२, धारी जैहं नल भूप राज्य धुर  
वैहं तैहं साहसुतन इल हंक्रिय, अगै मग जोजन जुग २ अंक्रिय १६।१  
कल मुकाग ग्वालेर निकटकरि, सेनापति न बुझि क्रम अनुसरि ॥  
सैनन संधि दुहु २ न दिह्यो १ दिष, लैनन वंधि हजर १ नैहं लिय ॥ ६८ ॥  
इत आगरा सोहि क्रम अनुसरि, कासिमखान १ सता १९।४।२  
सम्मत करि ॥

जितो स्वचैक कुनर दाग ४०।१ जब, सह हाजरी सम्हारिलयो ल  
उत १ तै वे भ्राता दुव २ आये, धीर बोर इत १ तै ए धाये ॥  
दलन इक फुटिय देसंतर, इत १ उत २ बढे मिटावन अंतर ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

चैतुरंगिनि हुव चैक्रमन, रन अंगन भुव रीक्षि ॥

दिय जरीपत १ न हुलने, स सैनीनन गय सीन्धि ॥ ७१ ॥

१ सय घायलों को निरोग करेगा २ ३।२ अकबरी को इलिय पीह ४ धाये धाये ५  
अकबर के पोते ॥ ६५ ३ पर क मय पर ४ जय कल हृष दय परगनों में ६ ७० के म  
॥ ६८ ॥ सेना १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०  
सेना ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ चतुरंगिनी सेना का गसन दूगा २२ मय में धातन रमन  
घायलों के दूय पट्टिलन दूय धात २३ परी दूय नयवालों के तल मय २४ २५

धोलपुर के पास शाहजादों का युद्ध] सप्तमराशि-त्रयोदशमयुग (२७०७)

दुवर्दिय कमत अनीक दुवर, \*मह सह हुवां टामंक ॥

धारा अंकन विष्णु, बंकन कहन बंक ॥ ७२ ॥

अज्ज १ जवन २ दत्त उज्जले, रिपुन लवन आरंभ ॥

पलाटे यिति १ दिन जिम प्रलय २, उलाटे सिंधुन अंभ ॥ ७३ ॥

केतु १ न प्रखर २ न कंकट ३ न, वीर ४ न बाह ५ न ब्रात ॥

छोनी मग दुहुं २ धाँ छडे, अहि १ घोनी २ अकुलात ॥ ७४ ॥

गंही रक्खन इत १ गरज, उत २ तरि लौन उपाय ॥

जोध रचन रन जय जतन, करै वचन १ मन २ काय ३ ॥ ७५ ॥

प्रतिरन भावत धालपुर, ठाम जनावत ठीक ॥

निधिपर धावत रंक निभ, आवत उभय २ अनीक ॥ ७६ ॥

इत १ दारा ४० १ १ २ ओरंग ४० ३ २ उत, धरिवाजीगर २ धम्म ॥

चहत दव्यो दल १ चम्म २ तै, दिल्ली १ कहन दम्म २ ॥ ७७ ॥

दारा ४० १ १ २ इत १ अप्पन सदन, जानत रक्खन जंग ॥

सिंहनके कैसे सदन, उत १ मानत ओरंग ४० ३ २ ॥ ७८ ॥

जंज १ तंज २ मंज ३ न जतन, इत दारा ४० १ १ २ चउ ४ अंग ॥

इक १ न अकुस आदरै, उत पन्नग ओरंग ४० ३ २ ॥ ७९ ॥

सिर अतिविस ओरंग ४० ३ की, दिसविस त्रासत देस ॥

फोज १ न रूप उठाइ फन २, आयो फुंकरि एस ॥ ८० ॥

मनमै गिनत मुराद ४० ४ काँ, विजय अनंतरै बंधि ॥

इक १ छत्र रहिहौ अभय, सब दहिहौ भयसंधि ॥ ८१ ॥

इत १ हंके तजि आगंग १, सकल मनोरथ मुजिक्त ॥

० उत्तराय मर्दिय १ नगरे धृष्ट १ कमल को अपने नाम से चिन्हित करनेवाले को धिय धृष्ट ॥ ७२ ॥ २ शत्रुओं के नाश करने के आग्रह से ३ जल ॥ ७३ ॥ ४ पाप्मन (घोड़े का कवच) ५ कवच ६ लसुह ७ दोनों ओर ८ शेषनाग की टोड़ी ॥ ७४ ॥ ९ गंही लोहे का उपाय ॥ ७५ ॥ १० घन पर ११ लहज ॥ ७६ ॥ १२ धर्म १३ मेला लगी यम (जात) से दिल्ली स्त्री १४ नगों को दवाना चाह ॥ ७७ ॥ १५ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ११ विजय हुए पीछे ॥ ८१ ॥

करि चले जय संकल्प, उत २ ग्वालेर २ हिं उज्जिं ॥ ८२ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमगणौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशाल्यचरित्रे विशालारण्यप्रतिनिवृत्तयोधपुराधीशयशव-  
न्तसिंहस्वपत्नीतिरस्करणा १, विशालाप्रपत्तापितरायसिंहसदेह-  
देतुकविक्रमनगराधिपरायसिंहनिर्लज्जताकथन २, धवलपुरसमीप  
दाराशिकोहौरङ्गजेवसैन्यसंगमवर्णनं त्रयोदशो मयूखः ॥ १३ ॥

आदितः पञ्चविंशोत्तरद्विशततमः ॥ २२ ॥

प्रायोव्रजदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सता १९४१ चलिण विरचन जब सो रत्न, मिलि औरंग ४०१३ मुराद  
४०१४ हि मारन ॥

भाता १ भ्रातृजैर आदि तबहु भट, बट्ट मिले बंहु स्ववल विसंकट ॥

जेठो १ इन्द्रसाल १९४२ को जायो, सज्ञाकरि गजसिंह १९५१ सुहायो  
अनुज तास पंचम १ आनंदक १९५५ ते दुव २ मिले कोस पंचक ५ तक  
सोदर राजसिंह १९४४ को जो सुत, जेठो १ विष्णुसिंह १९५१

अभिधाजुत ॥

जेठो १ सुत काका हरि १९३३ को जिम, अगौ कछुक मुजान १९४१  
मिल्यो इम ॥

सुतहु तास जेठो १ गजसिंह १९५१ रु, अनुज चउत्थ ४ अजब १९४४  
शत्रु नखरु ॥

१ विजय का संकल्प करके २ ग्वालिघर को छोड़कर ॥ ८२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के प्रपति  
शत्रुशाल के चरित्र में उज्जिण के युद्ध से भागे हुए जोधपुर के महाराजा यश-  
वंतसिंह का उनकी राणी से अन्याय पाना १, उज्जिण के युद्ध से भागनेवाले  
रायसिंह के सदेह में बीकानेर के राजा रायसिंह की निर्लज्जता का कथन २  
धवलपुर के समीप दाराशिकोह और औरंगजेब की सेना के मिलने के वर्ण-  
न का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२५ मयूख हुए ॥  
१ भतीजे ४ मार्ग में १ विशाल अथवा विशेष संकट में ॥ १ ॥ १ नाम ॥ २ ॥  
॥ ३ ॥ ७ शत्रुओं पर सिंह रूप

धोलपुरके पास शाहजादोंकी सेना आना। सप्तमराशि-चतुर्दशमचंद्र (२७०९)

तिम त्रयश्चदयनरायन १९२।२ नत्तिय, पहुसन मिले वार भ्राता प्रिय  
हरु १ स्वरु २ अन्त्यानुप्रासा ॥ १ ॥

मुख्य प्रयाग १९४।१ जैत १९३।१ सुत मानी, दुर्गीपुर सासक अति दानी  
सूनु बडे रनछोर १९५।१ सहित सो, आइमिल्यो मग दलन अहितसो  
तस काका बल १ राम १९३।२ तनै तह, सबल सिंह १९४।१ पहुँच्यो  
प्रसरित सह ॥

कह्यो विजयराम १९४।१ जु तस काका, तहँ घासीराम १९४।१ हु  
सुत ताका ॥ ६ ॥

रत्न १९२।१ अनुज केसव १९२।३ कुल रोचन, सतल १९५।१ नाम  
सबु संकोचन ॥

अप्पन भट गुरु १ लघु २ इत्यादिक, बट्टहि विच पहुँचे जयवादिक ॥ ७ ॥  
इहिँ क्रम ढिगहि धोलपुर आयो, पै विठल १९३।१ आनेसन पायो ॥

तहँ पिसुनन निघुर जंपिय तब, मगमिले हु स्वामिधर्मी सन ॥ ८ ॥  
अरु रनभूमि दिष्टि यह आई, परपुतना हु ढिगहि सुनिपाई ॥

अब को संस आगमन अवसर, विठल १९३।१ जिम गिनते प्रभु  
भट जर ॥ ९ ॥

तबतोतिमहि अपिसुनन अदिखय, रंचहु विठल १९३।१ कानि नरदिखय  
गदि इन पुनि पूछ्यो रुकमंगद १९४।१, हे कबलग काका आवन हद

भाखी यह सुनि दुसन भतीजै, प्रबल दिष्ट कछु विघ्न पतीजै ॥  
अधिप कह्यो रन जब आरंभहि, खरो तरु न लखँ जयखंभहि ॥ ११ ॥

विधिवस तस कछु विघ्न बखानै, तुममै अवहि कोन रन तानै ॥  
संगर पुव्व विफल सबहीहो, तुमहि तास सूचन तवहीहो ॥ १२ ॥

ऐसी बत्त होत मग आई, दारा १८०।१ सिनियन डाल दिखाई ॥  
१ पोते २ राजा से ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३ लिखायत का रुख ॥ ६ ॥ ४ कुल का शोभा  
देनेवाला; अथवा कुल का चंदन ॥ ७ ॥ ५ आशा नामक आय का पति ॥ ८ ॥

६ सबु की सेना ७ आने का समय कौनसा बाकी है ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥  
८ बडा झंडा

पट आलय दारा४०।१ पैठायो, अप्पहु अधिप सिविर निजआयो  
॥ दोहा ॥

इम किय प्रथम१ सुकाम इत, रन लोभिन रहि रति ॥

चले प्रातं दरकुंच चहि, धैन आडंभर घति ॥ १४ ॥

उततैं वे दुवर साहसुव, मिलि ओरंग४०।३ सुराद४०।४॥

दरकुंचन आये दुसह, विस्तारत जय वाद ॥ १५ ॥

घोर प्रलय घनकी, घटा, जिम दुवर अभिमुख जात ॥

इम हल्ली पृतना उभयर मही बैलय मचकात ॥ १६ ॥

उभयर अनीकैनतैं अनी१, जिम लहरू२ कढिजाइ ॥

मृगयामुख कोतुक करत, जित तित स्वजय जनाइ ॥ १७ ॥

घटत निवानन पान घन, नासीर१न करि नीर२ ॥

कामि तैंहैं तैंहैं चंदोल१के, पंक२हिं लखत प्रवीर ॥ १८ ॥

वन दुर्ग१न पद्धर२ वनत, दिसदिस मग्ग दिखात ॥

भजि भजि फोजन भीरमैं, जंतुव जन थकिजात ॥ १९ ॥

दुसह कंप लागि दिग्गजन, अकिवकि खंड असेस ॥

उदंक समुद्रन उच्छलत, प्रसरत बिजल प्रदेस ॥ २० ॥

मूँड१ चंडी२ दंपति३ मुदित, सह नारद३ लागि संग ॥

आघ विमानन अच्छरि४न, आये वरन उमंग ॥ २१ ॥

गजतुंडा१दिक जोगिनी५, भैरव६ भीम दगादि ॥

चउसठि६४ रु बावन५२ चले, छक लावन मह छादि ॥ २२ ॥

किन्नर७ डाकिनि८ साकिनी९, रक्खस१० प्रेत११चुरल१२

बिहसि जच्छ१३ बेताल१४बलि, गुह्यक१५ लग्गे गैल ॥ २३ ॥

गिद्ध१६।१कंक॥७।२चिल्ल१८।३न गगन१, उडत छये बहु आघ ॥

दरे में ॥ १३ ॥ ३ मेघ के समान ॥ १४ ॥ १५ ॥ ३ सन्मुख ४ भूमि मंडल को

॥ १६ ॥ ५ सेनाओं से ६ शिकार आदि ॥ १७ ॥ ७ आगे चलनेवालों को ८

सेना के पीछे चलनेवालों को कीचड़ मिलता है ॥ १८ ॥ १९ ॥ ९ पानी १०

निर्जल प्रदेशों में ॥ २० ॥ ११ शिव ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

महीरकोक<sup>१९</sup> जंबुके<sup>२०</sup> मु... इत पाके ॥ ३५ ॥  
 सिव<sup>१</sup> आदिक ए उकर<sup>२०</sup> ... तात<sup>२</sup> सखा<sup>१</sup> रके,  
 इत वीरन उच्छाह अ... तति भ्रातृजै<sup>१</sup> काके<sup>२</sup> ॥  
 जुब्बनवय जिम र... तेज मंताके,  
 डम सूरन रन ... वर भ्राता<sup>१</sup> रके ॥ ३६ ॥  
 ... लश्रेय बिर्धाके ॥  
 ... र रखवार रंसाके,  
 ... छकमै जस छाके,  
 ... न पानि तीरन गन ताके ॥ ३७ ॥  
 ... ह दिलचाव दगाके,  
 ... त जंग थट्टन नन थाके ॥  
 ... न प्रहार गेरत गुंजाके,  
 ... क सज भर लंब भुजाके ॥ ३८ ॥  
 ... ह मंडेलगा मुख मंग मजाके,  
 ... तेक उग्र सैय सिंह सटाके ॥  
 ... ति बल अखंड पटु दंड<sup>१</sup> पटारके,  
 ... क रसिक रारि रासक रेंताके ॥ ३९ ॥  
 ... जिम पचन सुद्धि मन तिम मंताके,  
 ... सूरन सद्ध हत्थिन हंताके ॥  
 ... हरबे<sup>३</sup> अर्क<sup>४</sup> नरहरि<sup>५</sup> नंताके,

तीजे ४ मामा ५ विचारके ॥ ३६ ॥ ६ दादा (पिता-  
 नुत्रिय १० भूमि के रत्नक ११ क्रोध में ॥ ३७ ॥  
 १३ चिरमी १४ भाले ॥ ३८ ॥ १५ खड्ग १६  
 सिंह की गर्दन के बाल २० कितने ही वी-  
 स्वासी के लोन की पाचन की ख-  
 ाओं के साथ में २२ जानेवाले २४

पट आलय दारा४०।१ पैठायो, अप्पहुं अधिप सिबिर निजआयो,

॥ दोहा ॥

इम किय प्रथम१ सुकाम इत, रन लोभिन रहि रति ॥  
 चले प्रातं दरकुंच चहि, घन आडंबर घति ॥ १४ ॥  
 उततैं वे दुवर साहसुव, मिलि ओरंग४०।३ मुराद४०।४॥  
 दरकुंचन आये दुसह, बिस्तारत जय बाद ॥ १५ ॥  
 घोर प्रलय घनकी, घटा, जिम दुवर अभिमुख जात ॥  
 इम हल्ली पृतना उभय२ मही बैलय मचकात ॥ १६ ॥  
 उभय२ अनीकैनतैं अनी१, जिम लहरू२ कढिजाइ ॥  
 मृगयामुख कोतुक करत, जित तित स्वजय जनाइ ॥ १७ ॥  
 घटत निवानन पान घन, नासीर१न करि नीर२ ॥  
 क्रमि तैंहैं तैंहैं चंदोल१के, पंकरहिं लाखत प्रवीर ॥ १८ ॥  
 बन दुर्ग१न पढ़र२ बनत, दिसदिस मगग दिखात ॥  
 भजि भजि फोजन भीरमैं, जंतुव जन थकिजात ॥ १९ ॥  
 दुसह कंप लागि दिग्गजन, अकिवकि खंड असेस ॥  
 उदक समुद्रन उच्छलत, प्रसरत बिजल प्रदेस ॥ २० ॥  
 मंड१ चंडी२ दंपति३ मुदित, सह नारद३ लागि संग ॥  
 ओघ बिमानन अच्छरि४न, आये वरन उमंग ॥ २१ ॥  
 गजतुंडा१दिक जोगिनी५, भैरव६ भीम दगादि ॥  
 चउसठि६४ रु बावन१२ चले, छक लावन मह छादि ॥ २२ ॥  
 किन्नर७ डाकिनि८ साकिनी९, रक्खस१० प्रेत११चुरेल१२  
 बिहसि जच्छ१३ बेताल१४बलि, गुह्यक१५ लग्गे गैल ॥ २३ ॥  
 गिद्ध१६।१कंक॥ ७।२चिल्ल१८।३न गगन१, उडत छये बहु ओघ ॥

दरे में ॥ १३ ॥ ३ मेघ के समान ॥ १४ ॥ १५ ॥ ३ सन्मुख ४ भूमि मंडल को  
 ॥ १९ ॥ ५ सेनाओं से ६ शिकार आदि ॥ १७ ॥ ७ आगे चलनेवालों को ८  
 सेना के पीछे चलनेवालों को कीचड़ मिलता है ॥ १८ ॥ १९ ॥ ९ पानी १०  
 निर्जल प्रदेशों में ॥ २० ॥ ११ शिव ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥



शाहजादों की सेनाका मिलना] सप्तमराशि-चतुर्दशमयूख (२७११)

मही२कोक१९।१जंबुक२०।२मुखन, मन्न्यौ सुख न सुमोघ२४-

सिंव१ आदिक ए उक्त२० सब, हुव संगहि हरखाइ ॥

इत बीरन उच्छाह. अति, बार दगन बरखाइ ॥ २५ ॥

जुवनवय जिम रसिकजन, मन्नै व्याहत मोद ॥

इम सूरन रन मह अतुल, किय सूचन चहुँ४कोद ॥२६॥

॥ मनाहरम् ॥

उभय२ अनीकनमें कालीसम नाली केक,

चाली मतवाली पारै वज्रमैहु बुरमाँ ॥

सूरि. निज दासनको आसनको पूरि दुख,

नासनको भूरि देत थैली१ थान२ थुरमाँ ॥

नीठि नीठि जाइ पै बडेगढ निरौइ खंड,

खंडन खिराइ खाइ जाइ जैसे खुरमाँ ॥

फैलन के फीली१न जुती जे जूह बैल२नके,

गैलनके बीच करै सैलनके सुरमाँ ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

एक१हि दिल्ली१आगरा२, साह सदन सामान्य ॥

सुकवि कथन सामान्यमै, मन्नहु जुग२धा मान्य ॥ २८ ॥

पुव्व१हु लिखि आये प्रथित, अबै२ जनावत एह ॥

इन दोउ२नमें अन्यतर, गिनहु कोहु तस गेह ॥ २९ ॥

॥ अन्त्यानुपासिनीरोला ॥

दिल्लीपति चहुवान भान छै पान विदाके,

करि सब पति दारा४०।१कुमार भट साजि प्रभाके ॥

पहुँ भेज्यो अज्जनपुरोगँ हुव तँज्जस हाके,

१ व्याघ्र २ गीदड़ ३ आदि ॥२४॥२५॥ ४ उत्साह ५ चारों दिशाओं में, ॥ २५ ॥

६ तोप ७ छंद ८ पंडित ९ चहुन १० रूपों की धेनी ११ दुशाला १२ समीप लेकर १३ हाथियों से १४ समूह १५ पर्वतों का कज्जल ॥२८॥ १६ प्रसिद्ध ॥२९॥ १७ कानिवाले १८ राजा शत्रुशाल का १९ आर्य लोकों का अग्रणी २० उसके यश के

कथित राम १२ कीर्तिराइ कुमार कूरमनेताके ॥ ३० ॥  
 इत्यादिक गुरुलघुअनेक नृप१ कुमरसन नाके,  
 मिच्छन कासिमखान१मुख्य सममान सता१९४१ के ॥  
 जिम साइस्तेखान२ जोध जाफर३ ढिगजाके,  
 कहत कलाज४हु कों कितेक क्रम विचिकिच्छाके ॥ ३१ ॥  
 नहिं जों याके भागनैर तांतो इत१याके,  
 भागनगर जो तासभाग तो उतर पहु ताके ॥  
 अधिक सता१९४११कासिम२उमैरहि सासक सेनाके,  
 और चले दाग४०१उपत छकछाई छैटाके ॥ ३२ ॥  
 इम दक्खिन३२१उत्तर१११अनीक तिम सम्मुह ताके,  
 दरकुंचन दळे दुल्लह जम जूह जिलाके ॥  
 अंगै१अंभै२सु पिठि१पंक२तैहँ सर१सरिता२के,  
 पारि जलजंतुन असह पीर रहि सीर सिराके ॥ ३३ ॥  
 डगमांगय डुंगर डरात पविपैत प्रथाके,  
 अंग मचके दलन धाव उफनाव इलाके ॥  
 कगरकिय आलुके कपाल फटि जाल फँटाके,  
 प्रविमै तस रद कमठपिठ किमु टँकक्रियाके ॥ ३४ ॥  
 मित्रूलगत भटनसीस कारन भोकाके,  
 मिहछा के असह सूर करतार कैटाके ॥  
 वेन रद जिम डक्क१बैर बुल्लन बाचाके,

१ कीर्तिराइ. कलवाही के २ पति का ॥ ३० ॥ ३ नांही नहीं करनेवाले ४ सेनापति ५ शत्रुशाल के समान आदरवाला ६ विचिकित्सा (संदेह) के क्रम में है अर्थात् इसमें संदेह है ॥ ३१ ॥ ७ शीघ्र द शोभा ॥ ३२ ॥ ८ कठिनाई से नर्कना में आवे ऐसा १० आगे पानी और पीछे कीचड़. तालाब और ११ नदी के १२ ऊपर से सीर का आना बंध होगया ॥ ३३ ॥ १३ वज्र पड़ने की प्रसिद्धि से १४ पृथ्वी के १५ शोषनाग के १६ फण के १७ मानों १८ पत्थर पर टांकी छुसे इसप्रकार ॥ ३४ ॥ १९ सिन्धवी रागनी के २० युद्ध वा कतल करनेवाले २१ हाथी के दांतों के समान (हाथी के दांत एक ही बार) बाहिर निकलते हैं जो पीछे नहीं छुसते ॥

भासत इत१उत२बंधुभाव प्रचुरन हित पाके ॥ ३५ ॥  
 कति जामाता१स्वसुर२केक सुत१तात२सखा१२के,  
 कति सालक१जामिप२प्रकार कति भ्रातृजै१काके२ ॥  
 क्रम मातुल१भानेज२कक मन तेज मंताके,  
 दौहित्रक१नाना१२उदार भट वर भ्राता११२के ॥ ३६ ॥  
 जैनकपिता१नैती२अजेय बलश्रेय विद्याके ॥  
 बाहुजरा१के के जवन२वार रखवार रंसाके,  
 धैकमें मन मावै न धीर छकमें जस छाके,  
 पटकत पछिछन कतिन पानि तीरन गन ताके ॥ ३७ ॥  
 दाव नमनै कति डुंरुह दिलचाव दगाके,  
 जे अभिमानिन हनत जंग थट्टन नन थाके ॥  
 पटु बिगंतरि तुपकन प्रहार गेरत गुंजा१के,  
 सद्धे कुंतन कतिक सज्ज भर लंब भुजाके ॥ ३८ ॥  
 लेत किते गहि मंडलगा भुख मंग मंजाके,  
 अचनहार कितेकउग्र सँय सिंहसटाके ॥  
 अभ्यासक कति बल अखंड पटु दंड१ पटा२के,  
 रिपुगन वासक रसिक रारि रासक रेतोंके ॥ ३९ ॥  
 स्नामि लवन जिम पचन सुद्धि मन तिम मंता१के,  
 सतिन गंतों सुरन सद्ध हत्थिन हंतों के ॥  
 ईस१ उमा२ हेरंब३ अर्क४ नरहरि५ नैताके,

१ बहूतों से ॥३५॥ २बहिनाई ३भतीजे ४मामा ५विचारके ॥३६॥ ६दादा(पिता-  
 मह ७पोता ८अष्ट विधानवाले ९क्षत्रिय १०भूमि के रक्षक ११ क्रोध में ॥३७॥  
 १२ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसे १३ चिरमी १४ भाले ॥३८॥ १५ खड्ग १६  
 आदि १७मार्ग(पैतरे) १८हाथा से १९सिंह की गर्दन के बाल २०कितने ही वी-  
 र्य से नृत्य करनेवाले ॥३९॥ २१मंत्री अथवा स्वामी के लोन की पाचन की ख-  
 यर पर मानों उपदेश करनेवाले २२ देवताओं के साथ में २३ जानेवाले २४  
 मारनेवाले २५ गणेश २६नमन करनेवाले

तुच्छ चउदह १४ लोक तकि किल अतिक्रंताके ॥४०॥

कर बल मेहनहार केक बहु बैर व्यथाके,  
हृद संसृति की रहनहार विच किंति कथाके ॥

इभं गंजन मजबूत अंग जमहूत जथाके,  
चल्ले इम रजपूत चंड पुरुहूत प्रथाके ॥ ४१ ॥

हुलसे अतिभट चलनहार प्रतिभट पर्जा के,  
हेला संगर बहनहार लंगर लज्जाके ॥

पल्लभोजिन पालक पुगाइ मधु रस मंजाके,  
लुब्धि सयन सुख लैनहार मूगन सँजाके ॥४२॥

इत निर्भय जीवन उदास खिल दास खुदाके,  
मानी अति बल मुसलमान मनमेत मुँदाके ॥

पर खंडन पटकै प्रपात तरवारि तुँदा के,  
इम पंजपुर्तन १ च्यहार ४ यार २ जिम इष्ट जुदाके ॥४३॥

उभय २ दीन जय पीन अोज तँहँ भिन्न तँफाके,  
होडाहोडी बहनहार बल १ लौन बैफा के ॥

दबै संकल असह दाव पय काल कफा के,  
द्वै ही दिस इच्छक दुरुहँ निज किंति नफा के ॥

१ निश्चय २ उल्लंघन करनेवाले. (इस छंद में अन्त्यानुप्रास में 'के' शब्द आये हैं सो बहुधा कितनों के वाचक हैं) ॥ ४० ॥ ३ पीड़ा के ४ सृष्टि की सीमा ५ कीर्ति ६ हाथियों के मारने में ७ इन्द्र के समान प्रसिद्धिवाले ॥ ४१ ॥ ८ शत्रुओं को ९ नीच बनानेवाले वा दवानेवाले १० युद्ध में क्रीड़ा पूर्वक चलनेवाले ११ मांस भोजन करनेवाले पशु पक्षियों के १२ मेद (हाड के भीतर की मीजी) १३ लोभ करके १४ शरशय्या ॥ ४२ ॥ १५ बाकी के १६ हर्ष १७ 'तुद व्यथने' इस धातु से तुदा शब्द का अर्थ पीड़ा देनेवाला है १८ दिन भर में पांच बार निमाज पढ़नेवाले १९ आयों में चार वर्षा हैं इसीप्रकार यवनों में शैव, शय्यद, मुगल, पठान ये चार जातियें हैं सो इन चारों में कितने ही का मजहब (सुन्नी सिया आदि) जुदा था परन्तु परस्पर में १९ मित्र थे ॥ ४३ ॥ २० पुष्ट. जुदे जुदे २१ जिलों के २२ निमक हलाल २३ क्रोध से काल की सांकल को पैर से दवानेवाले २४ कठिनाई से तर्कना में आवें ऐसे

कहूतहार करनकाय समसेर सफा के ॥४४॥

बादी डारन विजय वाद असिबर आखा के,  
कोप जहर भासक कराल त्रासक ताखा के ॥

सुरबानी१ अरबी२ सं मुख्य भाखन भाखा के,  
तेरह१३ चबु४ आदिक प्रतानं संभृत साखाके ॥४५॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशल्यचरित्रे धवलपुरान्तिकदाराशिकोहौरंगजेवसमरार-  
म्भवर्णनं चतुर्दशो मयूखः ॥ १४ ॥

आदितः पङ्क्तिष्वुत्तरद्विशततमः ॥ २२४ ॥

प्रायोद्वजदेशायप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

विदित तीज३ आसाढ४ वदि२, जोसी हरजि द्विजात ॥

समर सुँद्वि१ पंग्व२न सहित, अप्पी बूँद्वि१ आत ॥ १ ॥

रानि१न कुमरानि१न सरुचि, चहि ठकुगानि३न चाय ॥

सुनि बहुतन पतिमृत समर, किय प्रातहि हुँत काय ॥२॥

तीजी३ अरु चोथी४ तिमहि, इम छट्टा६ आसु आस ॥

रानीत्रय३ जीवते रही, करि अपकिति प्रकास ॥३॥

तीजी३ राजकुमारि१९४३तहँ, जो प्रतापगढ जात ॥

जाके बापी१ बाग२ जुग२, कोटा मरग कहात ॥४॥

१ हाथियों के शरीर में २ साफ तरवार निकालनेवाले ॥ ४४ ॥ ३ हठ करनेवाले  
४ पूर्ण ५ तत्काल ६ संस्कृत. नेरह और चार शाखाओं को ७ फैलाकर ८ पोषण  
करनेवाले; अथवा अष्ट रीति से पुष्ट करने वाले यह आर्य और यवनों का वर्णन  
यथा संख्या से है ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में धवलपुर के समीप दाराशिकोह और औरंगजेब से यु-  
द्ध प्रारम्भ होने का चौदहवां १४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२६ म-  
यूख हुए ॥

१. ज्ञानमय १० युद्ध की खबर ॥ ११ ११ शरीर होसे ॥ २॥ १२ ज्ञान की आशा से ॥ ३॥ ४॥

नित्यकुमरि१९४।४ तिम नारची, चौथी४ जीवन चाहि ॥

विक्खन सुख विलसन बची, सुत भगवंत१९५।३ सगाहि ५।

इम छट्ठी६ असु लोभ वह, करि आनंदकुसा॥१९४।६॥

बडो१ सुतहु मरतहु बची, बंधू सगर्म विचारि ॥६॥

पंच५हि सुत भारत१९५।४प्रिया, उठी जसन दित आति ॥

चरु४ सगर्भा चालुकी, तँहँ शेकीं दठ ता ति ॥७॥

अकखी ममसुत असयह, उदर तिहारे आहि ॥

यातै तू१ रहि मैरहु ईम, जियत रही लखि जाहि ॥८॥

रानी ए३ इम बचिरही, तीन अहि लोन व्यताई ॥

सत्त७ मरी सुभगा मुनहु, पात पहिलैं बिधि पाइ ॥९॥

बूदीसन दिस बांरुनी३।५, अंग मिर आयत एस ॥

रविछत्रा१ विरची रुचिर, बंधु जिहिं खरचि विसस ॥१०॥

स्यामकुमरि१९४।१ रट्टारि सो, पुव्व गई परलोक ॥

जेठी१ यह भाऊ१९५।१ जननि, सुभगा सतिय विसोक ॥११॥

चंद्राउति दूजो२ चतुर, प्रेमकुमरि१९४।२ खिनपाइ ॥

भीम१९५।२ प्रेम सङ्गति भंजी, विधिवल देह विहाइ ॥१२॥

नयम९ ईडेरची निपुनि, अरु पिछली चउ४ ऊँढ ॥

पति पहिलैं सुभगापनहि, मृत ए सत्त७ अमूह ॥१३॥

रानीखट६ अब नृप मरत, पंच५ खवासि उपेत ॥

जे पातुरि चालीस४० जुत, हुत हुव सहगाति हेत ॥१४॥

प्रिया चालुकी पंचमी५, सूरजकुमरि१९४।५ सनाम ॥

ऐकी हठि पहिलैं जगत, अब सु जग अभिगम ॥१५॥

१नरुकी २सुख देखने की ॥१॥ ३प्राण के लोभ से ४ पुत्र की वधू को गर्भवती जानकर ॥ ६ ॥ ५ उस स्त्री को, अथवा उसको स्त्रियों ने रोकी; अथवा माता रूपी सासू ने रोकी ॥७॥ ६है ७इस कारण से भी ॥८॥ ९निमक हराम होकर ॥९॥ १०पश्चिम दिशामें १०पर्वत के ऊपर ११बडा १२घन ॥१०॥ ११ १३भीमसिंह की माता ॥१२॥ १४विवाही हुई १५सुहागनपन में १६चतुर ॥१३॥ १७सहित ॥१४॥ १५॥

जाके बापी१ बाग२ जुग२, अबहु सुजस अंकूर ॥  
 छारबाग सन इत सु छवि, दिस दक्खिन२१३ कछु दूर ॥ १६ ॥  
 रानी सप्तम०हरकुमारि१९४१७, उदित चालुकी आहि ॥  
 रानाउति अष्टम०रुचिर, चंद्रकुमारि१९४१८जस चाहि ॥ १७ ॥  
 जाके बापी१ बाग२ जुग२, मिलत कुमारति मग्न ॥  
 इमहि जरी तँहँ अष्टमी०, यह करि किति उदग्ग ॥ १८ ॥  
 कावंधी दसमी१०कही, कम कल्याण कुमारि१९४१२० ॥  
 सोहु जरी अति प्रीतिसह, असह बिगह अवधारि ॥ १९ ॥  
 विदित बेल१अस बापिकार, याके दक्खिन१३ओर ॥  
 छारबागके ढिगहि छवि, जे सूचत जसजोर ॥ २० ॥  
 कावंधी एकादसी११, फुल्लकुमारि१९४११गुन फीत ॥  
 जो महलन बासी जरी, भूपविरह अवधीत ॥ २१ ॥  
 जासबेल१बापी२जुग२हि, माटुंदापुर मग्न ॥  
 अंकित जससूचक अबहु, लसत पुव्व१दिस लग्न ॥ २२ ॥  
 अपर२ईडरेचीहु इम, ध्रुव लच्छी१९४१२अभिधान ॥  
 रहुउरी यह बारही, बिंसी कसाने विहान ॥ २३ ॥  
 पंच५भुजि०वा राम२०३१४प्रभु, जरी सुनहु अब जत्य ॥  
 प्रथम१चमेली१नाम पटु, स्वामि विरह हुव सत्य ॥ २४ ॥  
 चत्वर जो चोगानके, गोपुंर ढिग इत आहि ॥  
 कहियत ताके नामकरि, सो यह विदित रुदाहि ॥ २५ ॥  
 गिरिसे ओर८चत्वर ढिगहि, सिद्धरबंध हरिसदा ॥  
 तिहि विरच्यो अज्जहु तनत, प्रभा प्रात जिम पैदा ॥ २६ ॥

१ राठोड़ी २धारण करके अर्थात् विरह को गहरा जानकर ॥ १९ ॥ ३ बान ॥ २० ॥  
 ४ गुणों का समूह ५ राजा के विरह से उली हुई ॥ २१ ॥ ६ जिसका बाग ॥ २२ ॥  
 ७ दूसरी ईडरेची = प्रवेश किया १ अग्नि में १० प्रज्ञान समय ॥ २३ ॥ ११ पास-  
 वान जिये १२ हे प्रभु रामसिंह ॥ २४ ॥ १३ शहर के दरवाजे के पास ॥ २५ ॥  
 १४ ईशानकोण में १५ चोगान के समीप १६ विष्णु का मंदिर १७ जिस प्रकार

इस खवासि दूजीर इहाँ, जरी अनारौं रजास ॥

पुर साखापुर छत्रपुर, वापी हरिमृह रवास ॥ २७ ॥

स्यामरंग शतीजी सुसति, चोथी ४ तँहें चंपा ४ रु ॥

पट्ट हरिमाला पंचमी ५, चढी चिता ए ५ चारु ॥ २८ ॥

तिम पातुरि चालीस ४० तँहें, गई मयूरी गैल ॥

पुरढिग तस छत्री प्रथित, समन दिसा २३ के सैल ॥ २९ ॥

इस दूजीर आसावरी, अठतीस ३८ तिम ओर ॥

चालीस ४० हि प्रविसी चिता, ठानि सुजस सबठोर ॥ ३० ॥

छ ६ अरु पंचचालीस ४५ छँम, इहिँ क्रम रानि १ न आदि ॥

इक्कावन ५१ प्रविसी अनल, सत्यहि हित संवादि ॥ ३१ ॥

चिता निलय आयत रुचिर, इक विंसी सत्र आइ ॥

किय भाऊ १९५१ सबको रैवकर, दाह सु विधि दरसाइ ॥ ३२ ॥

जिम निज निज पति पगध जुत, सुनहु जरी अवसेस ॥

कुमरानी भारत १९५४ कुमार, ऊँठा पंचक ५ एस ॥ ३३ ॥

आदि सुता आनंदकी, सेखाउति रंभा १९५१ सु ॥

परनि मनोहरपुर प्रिया, आनी भारत १९५४ आसु ॥ ३४ ॥

पुनि कोलासर सिवपुरी, राजाउत अमरस ॥

कुमरहि दिय जमुना १९५२ कनी, इहिक्रम दूजीर एस ॥ ३५ ॥

बल्लनोत जुज्झार बलि, कनी सुजान कुमारि १९५३ ॥

परिनाई खीना पति जु, निपुन तृती ३ य सु नारि ॥ ३६ ॥

सोलाखा हरिसिंहकी, रतनकुमरि १९५४ कुमरी सु ॥

प्रधान समय में कमल प्रांति कैलाता है तिसप्रकार यह मंदिर भी कैलाता है

॥ २६ ॥ १ पुरा (शहर के द्वार के बाहर का छोटा ग्राम) ॥ २७ ॥ २ सुन्दर ॥ २८ ॥

३ प्रसिद्ध ४ दक्षिण दिशा के ५ पर्वत पर ॥ २९ ॥ ३० ॥ ६ समर्थ ७ अग्नि में

८ रत्न का कथन करके ॥ ३१ ॥ ९ चिता के चौड़े सुन्दर घर में १० इकट्ठी

होकर छुई ११ अपने हाथ से ॥ ३२ ॥ १२ बिचाही हुई ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥



कुमरानी मारत १९५।४ कुमर, ब्याह चतुर्थ ४ बरी सु ॥३७॥  
मरीसु १ बरीसु २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

॥ दोहा ॥

कती गोर रनछोरकी, इंदकुमरि १९५।५ अभिधान ॥  
पंचम ५ ब्याह कुमार, पटु, परन्यौं रीति प्रमान ॥ ३८ ॥  
ए पंच ५ हि जरिवे उठी, इन्हैं सस्सू तैंह आइ ॥  
चउमं ४ सगर्भा चालुकी, रोकी प्रसभ रचाइ ॥ ३९ ॥  
बरजी भाऊ १९५।१ जेठ बलि, \*ओक रही इम एह ॥  
तनय जन्यौं आनंद १९६।१ तस; उछव किन्न अछेह ॥४०॥  
बहुरि मरयो चउ ४ मास बचि, यह बालहि आनंद १९६।१ ॥  
अति सोच्यो भाऊ १९५।१ अधिप, मन कल्प न कहि मंद ॥४१॥  
यह कछु भायी १ सुनहु अब, वर्तमान २ सुहि बत्त ॥  
चोथी ४ भूषा सु चालुकी, रोकी जियन बिरैत ॥ ४२ ॥  
तास सपत्नी चउ ४ हि तिम, सूचित जाइ मसान ॥  
ज्वलन अप्रसूता जरी, सह पतिपगध सुजान ॥ ४३ ॥  
अधिप अनुज मुहुकम ११४।५।१ उदय, १९४।६।२ सूर १९४।७।३  
परे लय ३ सूर ॥  
परे भतीजे चउ ४ प्रधन, यह सुनिये जसपूर ॥ ४४ ॥  
दलि ओरंग ४०।३ मुराद ४०।४ दल, परे जहाँ अतिप्रान ॥  
इंद्रसल्ल १९४।२ सुत अष्ट ८ महु, गिनिये प्रथम १ गुमान १९५।८। ॥४५॥  
तिम जेठो मुहुकम १९४।५ तनय, जोरावर १९५।१।२ भुज जोर  
प्रधन तत्थ दूजो २ परयो, सचि खगन घन रोर ॥ ४६ ॥

दूजो२ अरु तीजो३ दुय२हि, महासिंह१९४।९ सुत मेये ॥  
 ए तीजो३चोथो४इहाँ, कनक१९५।२।३लाल१९५।३।४जसक्रेय।४७।  
 इक१ कुमार अरु त्रय३ अनुज, बंधुन चउ४ समवेत ॥  
 स्वयं नवम९ संभर सता१९४।१, खिरयो असम रनखेत ॥ ४८ ॥  
 लो मुहुकम१९४।५ मुख सत७ जँहँ, तुष्टे तेगन तँष्ट ॥  
 तिम संगहु निज निज तियन, किय सहगोन अकँष्ट ॥ ४९ ॥  
 जुग२मुहुकम१९४।५पतनी जरी, सती विदित पतिसंग ॥  
 इक१इक१सेस६न संग इम, अनल विसी हुतअंग ॥ ५० ॥  
 किते कनक१९५।२लाल१९५।३हि कहत, दिव अनूढ रागतदोइ  
 किते बिबाहै पै कहत, गई न तिय जिय गोई ॥ ५१ ॥  
 बिठल१माधव२आदि बलि, परे सुभट सतपंच५०० ॥  
 चउसत४००तँहँ धारँन चढे, बाहुज२बीर अबँचै ॥ ५२ ॥  
 बाहुज२तहँ कोउक विरँयो, ललनाविनु सुरलोक ॥  
 क्रम इतरन संगहु किती, सती जरिय गतसोक ॥ ५३ ॥  
 इम सुँचि४असित२चउत्थि४अँह, हुँव घरघर होकार ॥  
 बिसवासे भाऊ१९५।१बखसि, अखिलन बिभव उदार ॥ ५४ ॥  
 चँविहँ पहु भाऊ१९५।१चरित, बंधन दोउ२न व्याह ॥  
 भीम१९५।२व्याह पुब्बहि भनै, त्रय३बालहि मृत ताह ॥ ५५ ॥  
 अधिप सता१९४।१बिरचेहु अब, सुनि ए थान असेस ॥  
 अधिप ख्यात सूचत अबहु, निज जस राम२०२ नरेस ॥ ५६ ॥  
 चउ४मंदिर हरिके रुचिर, पुरबिच इक१प्राकारँ१।५ ॥  
 तिहँ ढिगइक१चोगान१।दतँहँ, इक२दुर्गा आगारँ१।७ ॥ ५७ ॥

१ प्रमाण (गणना) वाला २ यश खरीदनेवाला ॥ ४७ ॥ ३ साथ ४ चट्टवाय  
 शत्रुशाल ५ जिसके समान दूसरा कोई नहीं ऐसा ॥ ४८ ॥ ६ आदि ७ खड्गों  
 से छोटे छोटे टुकड़े होकर ८ बिना फट ॥ ४९ ॥ ९० ॥ ९ स्वर्ग गये १० बिना  
 विवाह ११ जी छिपाकर ॥ ५१ ॥ १२ घायल हुए १३ चात्रिय १४ नहीं ठगनेवाले  
 ॥ ५२ ॥ १५ ली बिना कोई ही ज़मीन स्वर्ग में गयी १६ आवाह यदि चौथ के  
 १७ दिन ॥ ५४ ॥ १८ कहेंगे ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १९ कोट २० देवी का मन्दिर ॥ ५७ ॥

दुवरगोपुर२।९ प्रासाद२।१२ दुवर, इक १ सर १।१२ इक १ उद्यान १।१३  
ए तेरह १३ अविवाद इन; पहु प्रणीत थित थान ॥ ५८ ॥

पत्थरगज १।१४ इक १।१४ अष्टपर, संसय तँहँ दरसात ॥  
सब ए अव क्रमतेँ सुनहु, आयत जस अवदात ॥ ५९ ॥

श्रीकेसव मंदिर १ सुभग, अतुल सु पट्टनि आईहिं ॥  
दुवरस्यामल २ जगदीस ३ के, मंदिर २।३ बूंदीमाँहिं ॥ ६० ॥

हित निर्जपर बलराम १ हुव, सेवक बिप्र सनाढ्य ॥  
किय चोथो ४ तसनाम करि, इहाँ बिदित छबि आढ्य ॥ ६१ ॥

पूरब सूरजपोलितै, बरयो जु संतति बीत ॥  
दामोदर १ राधा २ बिदित, पधराये तँहँ प्रीत ॥ ६२ ॥

रत्नबुरज १ सन बारुनी ३।५, करि गिरि २ लागि प्राकार १।५ ॥  
बाहिर करि दक्खिन २।३ वसति, बिचकिय चोक १।६ बिथारा ६।३।

उमा हर्षदाको उहाँ, मंदिर १।७ पंचम ५ मंडि ॥  
गोपुर १।८ तँहँ चोगानको, बिरचिय चोर बिहंडि ॥ ६४ ॥

दूजो तँहँ मंडूकदर, तँहँ गोपुर २।९ रचि ताम ॥  
ढढ त्रि ३ खंड १।१० चउ ४ खंड २।११ दुव, रचे महल २।११ अभिरामा ६।५।

महलन बिच पहिलो १ महल १।१०, रात्रिखंड अभिधान ॥  
गजमुखसाल १ रु रंगंमुख, मंडप २ मंजु अमान ॥ ६६ ॥

मुकुट आदिमंदिर ३ महित, तीजो ३ खंड जु तास ॥  
महलन भिरि दूजो २ महल २।११, प्रौची १ करत प्रकास ॥ ६७ ॥

जाको खंड चतुष्क ४ जुत, नाम इक १ नरनाह ॥  
छत्रमहल २।११ बिख्यात छिति, सो यह लेत सराह ॥ ६८ ॥

केतु १ कलसर दोउ २ न कमनै, छत्रमहल २।११ सिर छल १।२ ॥

१ शहर के द्वार २ महल ३ तालाब ४ बाग ॥ ५८ ॥ ५ पाषाण का शार्थ  
६ बुर्ज पर ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ७ तहाँ ॥ ६५ ॥ ८ नाम  
९ गजशाला १० रंग मंडप ॥ ६६ ॥ ११ मुकुट मन्दिर १२ पूर्व दिशा में  
॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ११ सुन्दर

गढ कोटा जिहिं लैगयो, अधको भीम१९८११अमल ॥६९॥

पती१नाम निजधाइ पटु, ताके नाम तैडाग१ ॥

राबि प्रताप सागर११२ रुचिर, भूप भज्यो जसभाग ॥७०॥

॥हितं रक्तदंता निकट, बिहित सुरथपुर बांग११३ ॥

माधव१ ऋतु बिरखन मनुज, रक्खैं जैंहँ अनुराग ॥७१॥

प्रतिमा गज११४इक१अट्टपर, दक्खिन१३दिस सो स्निग्ध॥

नगर बरोदाके निकट, सता१९४११ रचित सँदिग्ध ॥७२॥

गज जवानभाई गँदित, तस प्रतिमा, वह तत्थ ॥

रची रतन१९२११ कति इम कहत, सो पै संसयसत्थ॥७३॥

एक१ कुंड१ छत्री२१३ उभय१, धन्य पंती१ नृपधाइ ॥

किय प्रतापसागर११२ निकट, पँहु यँह अह पधराइ॥७४॥

अगग मनोहर१९२१४ भोज१९११२ उत, जो उपवन किय जत्थ ॥

तास ढिगहि जो कुंड१ तिम, सुभ छत्री२१३जुग२सत्थ॥७५॥

इम नृपधाली भ्रात इत, मन्नि सुजस फलमान२ ॥

छत्ती१ किय पँथु तास छिति, थित प्राँची१ गिरिथान॥७६॥

सक दुव बसु सोलह१६८२ समय, भूपकुमार हुव भीम१९५१२ ॥

तनुत्यागी सूचित समय, सत्त ख सलह१७०७ सीम ॥७७॥

भूपकुमार भारत१९५१५ भयो, इम नव अष्टि अनेह ॥

पंद्रह सत्रह१७१५ साक पर, दिव पत्तो तजिदेह ॥७८॥

गुन खट सोलह १६६३ सकल गन, भयो सता१९४१५ह भूप ॥

सिंधुर अहि सोलह१६८८समय, राज्य लहयो अनुरूप॥७९॥

पंद्रह सलह सक परव, तनुभव१ भ्रात२ भतीज३ ॥

१ पाप का पात्र ॥ ६९ ॥ २ ताजाय ॥ ७० ॥ ३ बसन्त ऋतु में ४ प्रीति ५  
वुर्ज पर ६ सचिद्वान ७ शङ्खशाल के रचने में सन्देह है = जिस दायी को  
जवान भाई कहते हैं ॥७१॥ ८ राजा की धाय ने १० प्रसू का ११ उत्सव सहित  
दिन में पधराये; अथवा उत्सव के दिन पधराये ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ १२ राजा का  
धाय भाई १३ मोटी १४ पूर्व दिशा के पर्वत पर ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

अष्टसहित सुतो अधिप, धवलद्रंग रनधीज ॥८०॥

इति श्रीविंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीव-  
सुधावरशत्रुशलयंचरित्रे हरजीनामविप्रशत्रुशल्यादिवीरमरणोदन्तप्रा-  
पक्षाराज्ञीकुमारपत्नीपतिलोकगमनः, शत्रुशलयसामयिकमासाददे-  
वालयदिस्थाननिर्मितिवर्णनं पञ्चदशो मयूखः ॥ १५ ॥

आदितः सप्तविंशोत्तरद्विशततमः ॥ २२७ ॥

१. ब्रोलपुर के युद्ध में ॥ ८० ॥ \*

श्रीविंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
शत्रुशाल के चरित्र में हरजी नामक ब्राह्मण का राव शत्रुशाल आदि-वीरों  
के मारेजाने की खबर लाने पर राणियों और कुमराणियों का सती होना १  
शत्रुशाल के समय में महल मंदिर आदि स्थान बनने के वर्णन का पन्द्रहवाँ  
११. मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२७ मयूख हुए ॥

\* ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) की इच्छा थी कि शत्रुशाल के मारेजाने के इस युद्ध का वर्णन अत्यन्त उत्तम-  
ता के साथ किया जावेगा इसकारण शत्रुशाल के बुन्दी से चढ़ने का वर्णन करके युद्ध के वर्णन का स्था-  
न खाली छोड़ दिया और आगे शत्रुशाल के मारेजाने का और उसके साथ मारेजाने की गणना करके बु-  
न्दी में सतिये होने का वर्णन कर दिया है, परन्तु फिर या तो सावकाश नहीं मिला अथवा स्मरण नहीं  
आया, इसकारण इस युद्ध का वर्णन नहीं हो सका, यह हमने स्वयं सूर्यमल्ल के समीप रहनेवालों से सुना  
है ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ भावसिंह १९५१ चरित्रस्य प्रारम्भः ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभीष्मा ॥

॥ दोहा ॥

रवि चउत्थि ४ दिन ग्यारहम ११, कथित आहकैरटा १ दि ॥

दान अखिल विप्रनं दये, सब विधेय संपादि ॥ १ ॥

बहु भोजन दिन बारहम १२, जन द्विज १ मुख जेमाइ ॥

तद्दिन विधि सम सद्धि तिम, ठाम नदालय १ ठाइ ॥ २ ॥

सक पंद्रह सत्रह १७१५ समय, रोति सद्धि अनुरूप ॥

मुचि ४ संगत पंचमि ५ असित २, भावसिंह १९५१ हुव भूप ॥ ३ ॥

कनक छत्र १ चामर २ कर्लित, छादन १ रबीजन २ छाइ ॥

जनक पट्ट भाऊ १९५१ जई, बैठो नय विकसाइ ॥ ४ ॥

आये जन गुरु १ लघु २ अखिल, संभरराज समाज ॥

उत्तारन १ उपादा २ दि इन, सब सद्धि विधि साज ॥ ५ ॥

सुधा बचन सबके श्रवन, पुंटे सह प्रीति पिवाइ ॥

आस्वासन करि आदरे, स्वच्छभाव दरसाइ ॥ ६ ॥

पीतांबर १ पायन प्रनमि, रवि अर्चन अभिराम ॥

आसापूरनि २ आंबिका, पूजा सविधि १ प्रनाम २ ॥ ७ ॥

तद्दिन इम बैठो तखेत, पट्ट भाऊ १९५१ भूपाल ॥

मित्र १ न घृती धर्ममति, सत्रु १ न छती साल ॥ ८ ॥

जुग २ भ्रातन अब जंपियत, व्याह अखिल बिलसंत ॥

परनै पुढव अनेह इम, भाऊ १९५१ १२ अरु भगवंत १९५१ ३२ ॥ ९ ॥

कुमरपन हि भाऊ १९५१ करे, बारह १ रमिन सब व्याह ॥

१ एकादशा आदि आह २ उचित सम्पादन करके ॥ १ ॥ ३ आदि ४ आह विशेष ॥ २ ॥ ५ अषाढ वदि पंचमी ॥ ३ ॥ ६ विदित ७ छत्र ८ चमरों से ॥ ४ ॥

९ सभा में १० न्यौछावर ११ नजराना ॥ ५ ॥ १२ कर्णपुट में अर्धात् कानों के सड़ों में ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ १३ पहिले समय में ॥ ६ ॥

अष्टकरे भगवंत १९५।३ इम रचि निगमोदित राह ॥ १० ॥

॥

ए क्रम करि कहियत अखिल, राजराज प्रभु राम २०३।४ ॥ ११ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

रानी राजसिंहवारी भगिनी कुमार भाऊ १९५।१,

नाम धनकुमारि १९५।२ बरी जो पहिले १ विवाह ॥

साक ख ख सत्रह १७०० तनूज ताके पृथ्वीसिंह १९६।१,

जो भयो सो जियत दुर्मास भयो नरनाह ॥

दूजी २ हरिक्री सुता प्रतापगढ सीसोदनी,

भातुलादिदेवी १९५।२ नाम व्याहो अधिके उछाह ॥

राजपुर तीजी ३ हरकुमारि १९५।३ सनाम बढ-

गूजरि विवाहो फतैसिंह सुता रुचिराह ॥ १२ ॥

कल्यानकी कन्या ईदरेची रठ्ठारि डंडा,

चोथी ४ कुमरानी नाथकुमारि १९५।४ तदीय नाम ॥

भीम जमुनादि भानुदहर दुर्नाम वारो ताकी,

सुता पंचमी ५ विवाहो गंगा १९५।५ अभिराम ॥

नाथाउत चालुक प्रतापसुता छठो ६ नाम,

अमरकुमारि १९५।६ सो वरी निज रिहानी गाम ॥

चंद्राउत नरहरी अमरसुता जो सप्तमी ७ सो,

दीपकुमारि १९५।७ विवाहो भाटखेरी ताम ॥ १३ ॥

स्वसुरको नाम सो न जान्यो पर अष्टमी ८ यो,

कल्यानाहिं कुमारि १९५।८ विवाहो जोधपुर जाइ ॥

चुंडाउत राजसिंहकन्या देवकुमारि १९५।९ विवाहो,

नवमी ९ यो पुरवेप्रम सुपर्व पाइ ॥

१ वेद के कथनानुसार ॥ १० ॥ १ हे राजाओं के राजा: अपना कुपेर रामसिंह

॥ ११ ॥ २ भातुल देवी ४ प्रीति के मार्ग से ॥ १२ ॥ ५ विवाहिता ५ उसका ७

तहां ॥ १३ ॥ ८ अष्ट समय पाकर

लाडकुमरी१९५।१० सो प्रेमकुमरी१९५।१० दुनामवारी,  
 दसमी१०कबंध हरनाथकी सुता सुभाइ ॥  
 एगारही११ मल्हनादिवासी रठ्ठरि सदा-  
 कुमरि१९५।११ सुमेरुसाहिपुत्री बरी छक.छाइ ॥१४॥  
 सो सीसोदनी जो सुता सहस्रमल्लवारी बारही१२,  
 कुमरानी लाडकुमरि१९५।१२ बरी कुमार ॥  
 भाऊ१९५।१ के सुता इक१ खवासकी भई सो अन्न,  
 पूरना१ बिबाही रानाउत रघुनाथ दार ॥  
 आठों८ भगवंत१९५।३कै विवाह सुनि ए बै सबे,  
 जंपेजात राम२०३।४ नरनाह क्रमके प्रकार ॥  
 भाग्यवती१९५।१ जेठी१ जसकुमरि१९६।१ कनीकी प्रसू,  
 प्रमारी जुं रामठेस भानुकी सुता सुढारा॥१५॥  
 दूजी२ मंचहरी फतमल्ल बडगुज्जरकी,  
 देवमति१९५।२ कन्या सो ही बखतकुमारि१९५।२ नाम ॥  
 तीजी३ चंद्रकुमरि१९५।३ चालुक्य हरिकन्या चौथी४,  
 नष्ट जिहिं नाम बल्लनोति१९५।४सु बिबाही बाम ॥  
 कल्यानकी कन्या पट्ट पंचमी५ मऊके प्रांत,  
 रठ्ठरि राधा१९५।५ सुभ लग्न सो लही ललाम ॥  
 चंद्राउत उदय तनूजा तिम छट्ठी६ छत्र-  
 कुमरि१९५।६ बिबाहयो जाडभानुपुर भव्य धाम ॥१६॥  
 राघवकी कन्या सप्तमी७ जो जाइ रामगढ़,  
 व्याहयो ब्रजकुमरि१९५।७ सनाम गोरि विंदबनि ॥  
 तामैं भई दूजी२ भगवंत१९५।३ कै तनूजा नाम,  
 कुमरि१९५।२ बरी सो रामपुर के महीष मनि ॥  
 रतनकबंधकी कनी जो हरकुमरि१९५।८,



बिबाही अष्टमी८ सो भगवंत१९५।३मह मंजु तनि ॥

भाता च्यारि४ ए इम कुमार हि बिबाहे क्रम,

बारह१२ छद् अष्ट८ पंच५ भूत सु उदंत भनि ॥१७॥

वर्तमान बात अब अन्वय मैं आनी जात,

भाऊ१९५।१भयो भूपति पिताको इम पट्ट पाइ ॥

साचिव सुसील सनमानैं उपर्धा मैं आनि,

राज्यके सम्हारे सब अंग दढता दिखाइ ॥

घायलन पांयो जब पाटवैं तबहि तैसैं,

कामआये बीरन के पुत्र बली बुलाइ ॥

ते१रु तिमं घायल २ अघायल ३असेस आप,

नियत निवाजे वीर वाजे जसके बजाइ ॥ १८ ॥

धोलपुर धारन लगे १ जे घुर धारन सपिंड१,

असपिंड २ रु सगोत्र ३ असगोत्र ४ सूर ॥

घायल भये २ जे नहि घायल भये २ पै जे,

विसेस बढि जूके मुख्य मुख्य प्रतिघात पूर,

जूके सतपंच५०० नाम तिनमें जितेक जानैं,

विप्रा१दिक वीर जे असुरूप हु कलह क्रूर,

तिनके तनूजनके बैभव बढाये भाऊ १९५।१,

दड्ड६।१न अधीस ए बुलाइ सबही हजूर ॥ १९ ॥

सता१९४।१के सपिंड१ तूटे एकादस११ संगरमें,

एक१अंगजन्मा१भाता३।४तीन३रु भतीज४।८च्यारि४ ॥

तीन३हि सपिंड१ भाता ३।११ सात७ असपिंड२रु,

सगोत्र ३ दुव २तूटे असगोत्र ४ दस १०राचे रारि ॥

याही क्रम थायल २सनाभि १ असनाभि २ रु,  
 समोल ३ असगोत्र ४ इन्ह पीछें बैदिहैं दिथारि ॥ २० ॥  
 सता १९४१के सपिंड १ ए व एकादस ११ जानों इहाँ,  
 इक १ सुत भारत १ जो ढारत गजन ढालें ॥  
 सूचे क्रम आता मुहुकम १९४१ २ ज्यों उदय १९४१ ३ सूर १९४१ ४,  
 भातृज गुमान १९४१ ५ जोरावर १९४१ ६ त्यों कनक १९४१ ७ ला-  
 ल १९४१ ८ ॥

ईटावा अधीस हिरदाउत २४१२० उदयसिंह १९४१ १९,  
 बिहल ११३११२० रु माधो १९४१ १११ पूर १८८१३ मोकल-  
 १८८१४ प्रसंस्तिपाल ॥

ए व असपिंड २ सात ७ सारन १९४१ पिनाति रायसिंह १९०१ ११,  
 नगराज १९११ १२ पिता १ पुत्र २ तलवासवाल ॥ २१ ॥  
 कल्याणादिसिंह १९०१ १३ नवगामपति निम्माउत १२१८,  
 भाई नवरंग पोते ८४ उभय २ इहाँ अर्वाह ॥

खैरुना १ खजूरी २ पति इदयनरायन १९२१ १४ रु,  
 साँवल १९३१ १५ सधीर अरि एन संहन सीह ॥

हालूपोते ४ बंधु दुवर डाभीपति हरिसिंह १९२१ १६,  
 ओवन अधीस दूजोरकनक १९३१ १७ उदार ईह ॥

खीची १३ द्वैरसगोत्र ३ जोध १ जुन्यापति गैरोलीस,  
 गोवर्द्धन २ ए व असगोत्र ४ दस १० जेत लीह ॥ २२ ॥

भाटी जैतसिंह १ चंद्राउत मुहुकमसिंह २,

गोर सदानंद ३ दहिया दुवर बिजय २ ४ रामरा ५ ॥

डाभी आसकरन ६ कबंध चंद्रसिंह ७ रूपसिंह १८,

लालसिंह १९ दुवर चालुक रु भाला स्याम १० ॥

१ विस्तार से कहेंगे ॥ २० ॥ २ हाथियों के निशान को गिरानेवाला  
 दस्तावेजों (लिखावटों) का पालनेवाला ४ पोता ॥ २१ ॥ ५ कल्याणसिंह  
 निर्भय ७ शत्रुओं रूपी हरिणों को मारनेवाला सिंह ८ इच्छा ॥ २२ ॥

बिप्रशुव२वीर जोगीराम१बलराम२च्चारि४,  
 लाल१३हरि२१४रत्न३१५खेम४६९४बनिक३आये काम ॥  
 फतैनंद१७कायथ गुमान१८ऊदा२१९गुज्जर रु,  
 मालीखेम११०नाथू२११पज्ज४पंचक५योंकीनों नाम ॥२३॥  
 जानों अब जवन दलेलखान१अलीखान२,  
 दाऊद३रु रुस्तुम४सल्लेमखान५मोनखान६ ॥  
 पीरखान७भाजीखान८हैदर९रहीमबेग१०,  
 कुतब११करीम१२सेखकादर१३पहलवान ॥  
 तेरह१३ए नाथी खरे खगनकी धार खिरि,  
 स्वामी सत्रुसाल१६४१२के समीप परे अतिप्रान ॥  
 थोर गज१बाजि२चामर३दिन के चाकर,  
 अनेक ही परे पै उनके न जानैं अभिधान ॥ २४ ॥  
 इत्पादिक संकल परे जे जूझि पंचसत५००,  
 रीक्ष दै विसासे पुत्र तिनके बुलाइ बीर ॥  
 पुत्र जिनके हुते न तिनकी तियन पाये,  
 स्वापतेयँ जीवन लौं पुश्य१ रु निबाह२सीर ॥  
 नारिहु हुती न जिनके तो तिनके निमित्त तीरथ,  
 प्रयाग१गया२आदिक निखिल नीर ॥  
 कर्कस१गिराइ दान२भोजन कराइ कवि,  
 लोकनके काव्यन मढाये धर्मधारी धीर ॥ २५ ॥  
 घायल२हु बीस२०जे सपिंड१अमपिंड२पंच५,  
 यों त्रय३सगोत्र३सप्तदस१७असगोत्र४आइ ॥  
 तीजो३इंद्रसाल१९४१२को तनूज रनछोर१९५३१६जो२,  
 गोपालादिसिंह१९५२२मुख्य१वैरीसाल१९४३को बुलाइ ।  
 मुहुकम१९४५स पुत्रस तेन१९५६३जगमोहन१९५७३४है२,

छठोद्वार सप्तमदसराहि मन मोदछाइ ॥

कका महासिंह १९५।५रु तदीय सुत जेठो १मान १९५।१६,  
ए खटदसपिंड १न मैं मुख्य बढने बनाइ ॥ २६ ॥

याही क्रमसे सजे चउदह १४सपिंड १इहाँ,

जनक के काका हरि १९३।३को सुत बडो १सुजान १९४।१।१

याको भ्रात चौथो ४अजबेस १९४।४।२रु तनय याको,

जेठो १गजसिंह १९५।१।३कुलपट्टप नय निधान ॥

पट्टप प्रयाग १९४।१।४नाती हृदयनरायन १९२।२को,

जेठो १रनछोर १९५।१।५सुत संजुत प्रथितपान ॥

भाई सबलेस १९४।१।६याको काका बलराम १९३।१सुत,

काका बिजैराम १९३।३सुत घासीराम १९४।१।७मतिमान २७

१तन १९२।२के भ्राता के सोदास १९२।३को पिनाती मुख्य

सातल १९५।१।८सधीर सनमान्यो सतकार ठानि ॥

रायमल्ल १९१।३तनय कुपुत जेठो १रामचन्द १९२।१,

ताको मुख्य १नाती अजबेस १९४।१।९हु अधिक मानि ॥

सुर्जन १९०।१के भ्राता अखैराज १८९।२के पिनाती दोइर,

जेठो १रूपसिंह १९३।१।१०दूजीरसाखा बखतेस १९४।१।११जानि ॥

सुर्जन १९०।१को चौथो ४भ्रात राम १८९।४को पिनाती मुख्य १,

मान्यो त्यो मुकुंद १९२।१।१२हु प्रवीरन मैं पहिचानि ॥ २८ ॥

अर्जुन १८८।१के दूजो २भ्रात भीम १८८।२को पिनाती मुख्य १,

प्रेमसिंह १९३।१।१३नाम ताको बैभव १पटा २बढारि ॥

अर्जुन १८८।१के तीजे ३भ्रात पूरन १८८।३को नाती मुख्य,

हिंडोलीस नाम रुकमंगद १९४।१।१४बली विचारि ॥

निकट छदबंधु अरु दूरयो चउदह १४,

सपिंड १सब ही ए बीस २०धायन परे निहारि ॥

रामे २०३।४ दिन दुल्लह सुनौ वै असपिंड २ पंच ५,  
 घायन परे जे सुगलन की मरोरि मारि ॥ २९ ॥  
 भूपति सुभांड १८६।४ को जो आता अखैराज १८६।१ वडो १,  
 स्वामिदोह ठानि खोयो जाकै कुल स्वामिधर्म ॥  
 तामें मुख्य १ सूर सिवसिंह १९४।१।१ असपिंडन,  
 पाये घाय सन्तुनके सखन विदीर्षा बर्म ॥  
 लालाउत १०।६ जैतसिंह १८५।१ वंस अवतंस मान १९१।१।२,  
 डुंगरपउत्त ७।३ बलू १९१।१।३ कलिमें कृतान्त कर्म ॥  
 भीम १९३।१।४ हरपालपोता ५।१ हाथाउत्त ३ धीर १९४।१।५ अस,  
 पिंड २ पंच ५ घायल ए रुईक सुगल ६ मर्म ॥ ३० ॥  
 ए त्रय ३ भदोरिया ६ सगोत्र ३ चहुवान अब,  
 भंडपुरभूप को भतीज सन्तुसाल १ नाम ॥  
 दूजो २ अभैपुर को अधीस्वर सुकुंद २ तीजो,  
 मंडाउरी सासक जो सो पै चंद्रसिंह ३ ताम ॥  
 अब असगोत्र २ सुनौ सोढा वनमालीदास १,  
 साला रविमल्ल ३ स्वीय चालुक जनन जाम ॥  
 मोहिल सुकुंद ३ प्रतिहार त्यों परसुराम ४,  
 भाला रत्नसिंह ५ रु विहारीदास ६ धीरधाम ॥ ३१ ॥  
 मानकुल मंडन त्यों कूरम अजवसिंह ७,  
 तोमर प्रतापसिंह ८ जादव विजयपाल ६ ॥  
 सक्रवाला राघव १० कबंध सैरसिंह ११ रु,  
 प्रमार जयसिंह १२ हरी सैगर १३ कलहकाल ॥  
 वाँधूगड भूपको भतीज भीमसेन १४ वंस,

१ हे रामसिंह २ अब ॥ २९ ॥ शलों से कटे हुए एकचबवाला ४ युद्ध में यम  
 राज के समाज कार्य करनेवाला ॥ ३० ॥ ५ तहां ६ सोलंखी वंश में जन्म ले-  
 नेवाला ॥ ३१ ॥ ७ युद्ध में यदराज

चालुक बघेल वीर छादन गजन ढाल ॥  
 भाटी रतनेस १५ बडगूजर कनक १६ वैस,  
 वंसी बलवंत १७ वीर वीरतरु आलवाला ॥ ३२ ॥  
 असेँ बीस २० घायल सपिंड १ असपिंड २ पंच ५,  
 तीन ३ त्यों सगोत्र ३ सप्तदस १७ अमगोत्र ४ आनि ॥  
 भूसुर सदासिव १ जनेस जलधारी धाय,  
 भाई सिवराम १ सुत भारत १ ९५ ४ को ठामठानि ॥  
 इत्यादिक स्वस्थ भये सप्तसत ७०० घायल,  
 बुलाइ कै निवाज भट भावसिंह १ ९५ १ भूमीजानि ॥  
 घायल भये न जे बिसेस बढि जुजके तेहु,  
 सुनिये समस्त मुख्य मुख्य पटुता प्रमानि ॥ ३३ ॥  
 राम २० ३ ४ नरनाह तिनमें हु जे सपिंड १ अस-  
 पिंड २ असेँ जानहु सगोत्र ३ असगोत्र १ जांध ॥  
 जेठो १ इंदसाज १ ९१ १ २ कोतनूज गजपिंह १ ९५ १ १ तथा,  
 आनंदादिसिंह १ ९५ ५ २ सुत पंचम ५ रिघुन रोध ॥  
 विष्णुसिंह १ ९५ १ १ ३ जेठो १ राजसिंह १ ९४ ४ को तनूज वीर,  
 दूजा २ मधु १ ९५ २ ४ वैरिन विदारन बिसंदबोध ॥  
 दूदाउत २ २ १ ८ मुख्य १ प्रेम १ ९४ १ ५ काका अनरेस १ ९३ १ १ ६ सुत,  
 नाता रामल्ल १ ९२ ३ को त्यों केसरी १ ९३ १ १ ७ कलह क्रोध ॥ ३४ ॥  
 सूर सुरतान १ ८ ९ १ को पिनाती रामसिंह १ ९३ १ १ ८ मुख्य,  
 आठ ८ सपिंड १ असपिंड २ अब जंपेजात ॥  
 चुंडाउत १ ४ १ ० मुख्य १ नसे सेसनमें मुख्य १ लाल १ ९३ १,  
 ऊदाउत १ ५ १ ७ मुख्य १ अखैराज १ ९३ १ १ २ तिम खग ख्यात  
 सारन १ ९६ १ के अन्वय अधीस १ जसवंत १ ९२ १ १ ३ नव-

वीरता रूपी वृक्ष का १ थांबला ॥ १९ ॥ २ ब्राह्मण ३ राजा का जल रखनेवाला (पाणे-  
 री) ४ नैरोग्य ५ श्रुपति ॥ ३४ ॥ ६ आनन्दसिंह उज्ज्वल ज्ञानवाला ॥ ३४ ॥ ८ वंश

ब्रह्म१९५।२को पिनाती वीर बिठल१९१।१।४जस जमात ॥  
 बंस नवरंग१८३।२के को नाथ भट नाथूराम१९२।१।५,  
 लाडपुरवारी जाहि संगर सदा सुहात ॥ ३५ ॥  
 बैरिन बियाती थिरराज१८३।३नाती रामचंद्र१९१।१।६,  
 नाम भगवानदास१९२।१।७पट्टपशतने उपेत ॥  
 सप्त७असपिंड१ए बली अब सगोत्र३सुनौ,  
 देवरा९दलोल१हरि२खीर्चा१३संभु३समवेत ॥  
 टंक५गजमाल४च्यारि४सूर ए सगोत्र३अस-  
 गोत्र४अब जानौ जुग२जादव नवल१नेतर ॥  
 भाटी मालदेव३कृष्ण४कूरम प्रमार पता५,  
 एते असगोत्र४पंच१खग्गन खिल्हारी खेत ॥ ३६ ॥  
 इत्यादिक आपुनै दुर्जन दत्तनहार,  
 राज्यरखवारे ते छुलाइ सनमान सूर ॥  
 आस्वासन ईसको समरत पै समुक्ति जानि,  
 हानिन सतां१९४।१की भो प्रजाहुं कै प्रमदपूर,  
 आयो इन आगरा कुमार दारा४०।१साहनै सो,  
 पैठन दयोन कछो दिल्ली रहि मोसौं दूर ॥  
 जो बनें तो जूझि नतो अने यह ऊजिझ बलि,  
 काहूसौं न बूझि कालैं काटहु कितहु कूर ॥ ३७ ॥  
 वरज्यो घनों भैं तब तो तैं अतिवीर बनि,  
 जंग जुग२हारे सब सेना अपनी नयाइ ॥  
 आगरा रहै तैं अब अनुज२तिहारे तजि,  
 मेरोहू बिसास कछु करिहै अनिष्टआइ ॥  
 दिल्ली जो टिकै न तो जितोक धन जाइसके,

सो लै जाहु भै न जिहिँ भो न मन तैरे भाइ ॥  
 दारा ४०।१ यों कहाई बनै दिल्ली टिकिबो न अब,  
 जानिहो अभय जहाँ बचिहों जियत जाइ ॥ ३८ ॥  
 भाखि इस लौ धन अभीष्ट दारा ४०।२ भजि,  
 होइ मरुदेस मैं लग्यो सो पंचधनद मग्न ॥  
 जोलों कछुवाह १ गोर २ जवन ३ न जुड़े भये,  
 ता सुत सलेस ४१।१ सौँ विसासि राख्यो गहि बग्न ॥  
 पीछैं जो पलाइत है श्रीनगर सासक सौँ,  
 पाइहै पनाह ज्यों उदंत सु कहेंगे अग्न ॥  
 पाइ जय पापी अवरंग ४०।३ रु मुगद ४०।४ इत,  
 आये आगरा पै गूढ तखत के लोभ लग्न ॥ ३९ ॥  
 सुतन समीप सुत आवंत उभय साह,  
 यों कहि पठाइ मुरि जाहु तुम स्वस्व धाम ॥  
 कपट करंड इन दोउ २ न कहाई एह,  
 खानै जाद आये एक चुवन चरन काम ॥  
 आयो सुनिबै मैं खेद प्रभुके अमाध्य यातै,  
 भेजिहो दरस दे तो गिनिहो हमें गुलाम ॥  
 योंही भेजिबै मैं खीज खोली इत जानीजात,  
 द्वां परमिटाइ देहु तातै तात तिम ताम ॥ ४० ॥  
 असीदेत अरजी समीप आगराके आइ,  
 परभट भेदि केक तहँ तहँ स्वीय २ राखि ॥  
 साहसों कहाई आप दारा ४०।१ कौं द्रविर्न दैकै,  
 भेजते नहीं जो अैसे अंगजती अभिलाखि ॥

॥ ३८ ॥ १ पंजाब के मार्ग २ आगकर ३ श्रीनगर पर आज्ञा करनेवाले से ४  
 प्ररण ५ वृत्तान्त ॥ ३९ ॥ ३ अपने अपने घर ४ कपटके करंड (छपड़ा) अर्थात्  
 कपट का (दोहरा) पात्र ५ सन्देह ६ तहाँ ॥ ४० ॥ १० धन देकर ११ पुत्रपुत्री



तो तो हमैं संसय न होतो पर यातैं अब,  
 \*पानवान जतन कियोहै प्रभुको भैं भाखि ॥  
 याको आप धोखा जिन आनहु दरस दैकैं,  
 पुत्रन पठावहु सनातन सनेहसाखि ॥ ४१ ॥  
 साह कहि पठई कही मैं तब दारा ४०।१ सन,  
 अनुजतिहारे मोपैं पूछन कुसल आत ॥  
 मानी गूढ तोहू मम सम्मति न मानी खल,  
 जूझयो जाइ जाइ कै अवंती१ धोलपुर रुपात ॥  
 नाहक अनीकें आपुनैं ही दुहुँ२ओर के जे,  
 बालिल विनासे तातैं सो१न सुत मै२न तात ॥  
 याही तैं बिडारयो पुर पैठन दयो न द्रव्य,  
 कछु न दयो मै कोन कहत तृथाही बात ॥ ४२ ॥  
 पुत्रन२कहाई सो हु सुनि रु पिता सों पीछी,  
 अबहु सलेम४।१प्रभु सासन सों अजआहि ॥  
 सत्रुसुत सों जो प्रीति रावरी न व्है तो आप,  
 दारा४०।१के निर्दान क्यों न तबही बिडारो ताहि ॥  
 दारा४०।१संग द्रव्य दैकैं अब जो नटत आप,  
 यातैं भय धोखा रहैं चाकरन चित चाहि ॥  
 अंतर प्रकोष्ठलों जे चोकी रावरी है उहाँ,  
 आपुनी उतीही हय राखहि नय निबाहि ॥ ४३ ॥  
 बिगरतेवरं भली१भासत बिरुद्धभात,  
 यातैं करी सो सब प्रमादी साह अंगीकार ॥  
 जान्यो जेस तेम दुष्ट मिलिहु सुरैं तो ताज१,  
 तखत२बचाइ देखिलैहों पुनि जोरदार ॥

\*प्रायः रक्षा सा भय कहकर प्राचीन स्नेह रखकर ॥ ४१ ॥ १ सुलाह २ सेना  
 ३ खर्च ४ निशाला ॥ ४२ ॥ ५ हमारे शत्रु दाराशिकोह के पुत्र से. ६ कारण  
 ७ निकाले ८ भीतर के द्वार पर ९ नीति ॥ ४३ ॥ १० समय

आपुनैँ प्रवीर पलटाये जे न जानि उन,  
 माँहि उतनैँही राखि रिपुनके रखवार ॥  
 अंतर प्रकोष्ठ अंत \*छद्मिनके छंदकरि,  
 स्वल्प रचि संसद बुलाये दुवर्दी कुमार ॥ ४४ ॥  
 अंतर म्बलज आइ पैठन लगै न उहाँ,  
 पूछत कही यों क्यों व पुत्रन में धोखा पूर ॥  
 चुंबन चरन बाबा ज्यान के अधीन इहाँ,  
 स्वीय बालबच्चे हम लाये सब ही हजूर ॥  
 धावरन अंक यातैं एहु सिसु अहैं भय,  
 प्रानको हम हु तातैं आयक तजैं न दूर ॥  
 औसी भाखि ठहरि प्रकोष्ठपैं कछुक काल,  
 सिबिर सिखाइ राखे सैन सँ बुलाये सूर ॥ ४५ ॥  
 ह्योही साहजादनके बहत बिसेस बीर,  
 जैहैं मिलैं जालम प्रमादी इम साह जानि ॥  
 भाखी सावधान रन अंकन में आनदेहु,  
 छाँ जिते सभामैं तिते सुतन के संग ठानि ॥  
 सासन सु पाइ अवंग ४०।३६ मुगद ४०।४३भैर,  
 पुत्रन लै आगैं त्यों तेंपुत्रन को तोम तानि ॥  
 पीठि दै प्रजाकों दुवर्दुष्टन चरन चुंबे,  
 अश्रुन उपेत व्है रुमालसन बंधि पानि ॥ ४६ ॥  
 दै दै उपांलंभ साह ए दुवर्दुष्टगाय इम,  
 लेत दुंग लेत सब सिसु हु लगाइ उर ॥  
 भाख्यो अब जाहु नेक निपुन सुपुत्र तुम,  
 दारा ४०।१ ज्यों करो त्यों करिहो न धारि धर्म धुर ॥

\*छलियों के आधीन करके छोटी सभा रख कर ॥ ४४ ॥ प्रभीतर के द्वारपर १  
 बाउओं की गोदों में रखकों कोरहे में ॥ ४५ ॥ ४ गोदों में प्रभव्यों को वस सह  
 सन्तानों को अपनी पीठ पीछे रखकर दहाय ॥ ४६ ॥ ६ प्रोक्तं भा १० नेत्र मिलते ही

सुनि अवरंग ४०।३ कहौ चुंवते चरन हम,  
 च्यारिदिनपै भो छली रावरो ही चित्त \*छुर ॥  
 तो ए बालबच्चे सब जंज्र मैं मिलावहु हमैं,  
 तो जानदैहु है अभीष्ट हमैं प्रान १ + पुर २ ॥ ४७ ॥  
 चरनन चुंवि अवरंग ४०।३ कहि अैसें ऊठि,  
 अश्रुन दिखाइ आयो प्रथम १ प्रकोष्ठ पर ॥  
 आवत हि दोउ २ न ॥ बिसासके बुलाये हुते,  
 ते सब पठाये कहि साह डारो कैद घर ॥  
 एतेमें मुराद ४०।४ हु सवेग उठि आयो मिलि,  
 डाकिंन प्रकोष्ठ रुपि तापैं डारयो एक डर ॥  
 साहके जिते हे तिन सौ दस १० गुनित दोरि,  
 पकरन पैठे मेरे पुत्रनके पापपर ॥ ४८ ॥  
 सिसुन बचाइ गहिलीनों इम साह तिन,  
 पाके १ हुते ताके ते खिरे ह्वैं फारि तरवारि ॥  
 नमि नमि काचे २ साहजादन सों राचै धरा १,  
 धाम २ धन ३ जाचे तिन्हैं साचे मिले सुखकारि ॥  
 उजिफ जयसिंघ १ अनिरुद्ध २ दलेल ३ इत,  
 साह रोक्यो सुतन सलेम ४१।१ भज्यो मनमारि ॥  
 श्रीनगर सासंकके सरन गयो सो पीछैं,  
 ताहि गहिदैहैं सो बिसासघात बिसतारि ॥ ४९ ॥  
 एक १ देह इहाँलौ अवरंग ४०।३ रु दारा ४०।४ उभैर,  
 पकरि पिताकों दयो कारांनाम धाम धरि ॥

\* छुर (लींच्य) वांशी में † नगर अर्थात् हमारा प्राय और हमारा नगर ही हमको चाहिये ॥ ४७ ॥ § आश बोली पर ॥ विश्वासवाले सेवकों को १ उन मनुष्यों को खानेवालों ने ॥ ४८ ॥ २ पक्षे बिचारवाले यादशाह के सेवक थे ३ साहजादों के रंग में रंगे ४ जयसिंह आदि नीचे लिखे हुएों को छोड़कर ५ आशा खलानेवाला (हाकिम) ॥ ४९ ॥ १ इस समय तक ७ कैद के घर में

यातैं जयसिंह १ अनिरुद्ध २ रु दल्लेला ३ दुव २,  
 बंधनसों सूची हम कैकोगिनें साह करि ॥  
 अब अवरंग ४०१३ लै मुराद ४०१४ हिं बिजन बोल्यो,  
 कैसीकरिहैं बें लिखी कूरम तो पाप परि ॥  
 औसी कहि ताहि पत्र ओरहि दै आप लघु,  
 बाधों मिस आयो छली घेरन को घाट धरि ॥ ५० ॥  
 दूजे २ द्वार आपुनै भरोसाके असेस भट,  
 भेजिके मुराद ४०१४१ हिं गहाइ पापी पुत्र २ जुत ॥  
 कूटमंत्रि निर्दय निसंक करि कैद तेहु,  
 ग्वालेरके गढमें पठाइदये द्वै २ हिं हुत ॥  
 आपुनै पिताकों आगेरेही राखि कारा अब,  
 आप भयो साह व्है निरंकुस निखिल नुंत ॥  
 दिल्लीपुर जाइ पीछैं नृप १ रु नबाब २ सब,  
 बेगहि छुलाये अवरंग ४०१३ तीजे ३ साहसुत ॥ ५१ ॥  
 जब जयसिंह १ अनिरुद्ध २ रु दल्लेला ३ एहू,  
 सैदाबाद सों चढि कै दिल्ली गये बैस्य बनि ॥  
 भूमिपति भाऊ १९५१११ गयो बुंदी तैं सम्हारि सेना,  
 आयो जसवंत २ जोधपुरतैं खलत्वैखनि ॥  
 गो इत मुकुंद १९४११ सुत कोटातैं जगतसिंह १९५११३,  
 इत्यादिक आरिज १ मलेच्छ २ जुरे तोयें तनि ॥  
 आमेरेअधीसकों हजारो एक १००० को अधिक,  
 मुनुसब दीनों ख्यात कीनों मानवंस मनि ॥ ५३ ॥

१ पादशाह को कैद करनेवाले औरंगजेब और मुरादखान से पूछा कि हम  
 २ दिल्ली को पादशाह जातें ३ मुराद को एफाना में लेकर ४ अब दिल्ली का  
 करने के मिससे १ मुराद को घेरने का घाट चयन कर ॥ ५० ॥ ७ छोटे मंत्री  
 शीघ्र ६ कैद में १० सप् से स्तुति पाकर ॥ ५१ ॥ ११ आधीन बनेकर १२  
 बुद्धता की खान ११ आधी १४ समूह ॥ ५२ ॥

॥ दाहा ॥

उत्तारनजुत आसमैं, उपदा १ गज हय २ आदि ॥  
 सबन भेट किय साहके, पहिलैं क्रम संपादि ॥ ५३ ॥  
 तदनंतर साह हु तहाँ, सलुचित सबन समपि ॥  
 इकसहस्र १००० सुनसब अधिक, इम जयसिंह १ हिं अपि ॥ ५४ ॥  
 बुल्लि निकट जसवंतर बलि, अदभुत तुररा एक ॥  
 स्वकर साह तस पण्य सो, रक्खयो हठ अतिरेक ॥ ५५ ॥  
 कहिय बिहसितैं नृप कहिय, पटकि कंठ अतिप्रानै ॥  
 अवरंग ४०१३ हि गहि आनि हौं, सुह अब तुह सुखमा न ॥ ५६ ॥  
 यह भजिगो उज्जैनितैं, अपाँ दूर परि आस ॥  
 गहीके चाकर गदिय, प्रभु अधान अब पास ॥ ५७ ॥  
 याहि रीझि इक १ इक १ अधिक, दुव १ दुवरगज १ हय दत्त ॥  
 इक १ खिलत रु जानी न उर, बदलन भाँवी वत्त ॥ ५८ ॥  
 भँजिवे १ करि रीझतभयो, वां कारन कछु ओर २ ॥  
 वा लुटिवे ३ रडोर इम; मन्न्यों गिनि भटमोर ॥ ५९ ॥  
 इम चतुष्क ४ क्रमतैं अधिक, भाऊ १ ९५ १ नृप किय भेट ॥  
 जिन्ह नाम हु जँह गढ गिरे, फते सुवारिक १ फेट ॥ ६० ॥  
 गजराज २ रु तिम प्रानगज ३, संग्रामादिकें सूर ४ ॥  
 उपदा भिन्न ६ भिन्न ६४, गेवैर डानगरूर ॥ ६१ ॥  
 कीनों पंचम ५ जयंकलभ ५, उपदा क्रम अनुसार ॥  
 सब रक्खि रु दिय जो मुनहु, असो साह उदार ॥ ६२ ॥

१ न्यूझावर २ नजराना ३ पट्टिले करने थे यह क्रम संपादन करके ॥ ५३ ॥ ५४ ॥  
 ४ अतिशय दृढ़ करके ॥ ५५ ॥ ५ सत्यन्त बल के साथ कंठ में कथान डालकर  
 ६ यह परम शोभा अब तुम्हारे मुख पर नहीं है ॥ ५६ ॥ ७ लज्जा ८ कहा  
 ॥ ५७ ॥ ९ दिये १० आने आनेवाले समय में बदलेगा यह बातों नहीं जानी  
 ॥ ५८ ॥ उज्जैन के ११ बुद्ध से भागने के कारण ॥ ५९ ॥ ६० ॥ १२ संग्रामशूर १३  
 नजराना जुदा किया और ये चारों ही जुदे नजर किये १४ हाथी ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

सहससत्त ७०० मुनसब १ सहित, इभ २ हय ३ प्रमुख उपेत ॥  
 पाइ एकदस ११ परगना ४, खिरयो सता १९४ १ रनखेत ॥ ३६ ॥  
 गद्दी को चाकर गिन्यौं, जो भजिगो जसवंत ॥  
 जो तुट्यो सत पंच ५०० जुत, सतसप्तक ७०० छतसंत ॥ ६४ ॥  
 गद्दीपति तंत्र न गिन्यौं, सता १९४ १ नृप सु अतिसूर ॥  
 इभ चउ ४ दिय भाऊ १९५ १ अधिप, जे पुनि रक्खि हजूर १५६ ॥  
 इती अधिक उपदा हु इहिं, रक्खिहु प्रत्युत रुष्ट ॥  
 पहुके मुनसब १ परगना २, दुव रहि घटाये दुष्ट ॥ ६६ ॥  
 पहिलै मुनसब १ परगना २, सता १९४ १ लये भजि साह ॥  
 आगस बिनु औरंग ४० १ ३९, रुष्टि लये खलराह ॥ ६७ ॥  
 सो सब क्रम १ उद्देश २ सह, अग्रिम किंरन उदंत ॥  
 कहियत अब सुनिये कहुक, महिप राम २० ३ ४ मतिमंत ॥ ६८ ॥  
 इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
 भूपभावसिंहचरित्रे भावसिंहबुन्दीसिंहासनाधिरोहणविवाहादिक-  
 थन १, धवलपुरसमरहतशस्त्रक्षतवीरतारणविधातृगणन २, यव-  
 नेन्द्राप्रसाददाराशिकोहपञ्चनदप्रान्तपलायन ३, कपटरचनया यव-  
 नेन्द्रान्तिकप्राप्तकुमारौरंगजेबमुरादतद्वन्दीकरण ४, कीलितमुराद-  
 रंगजेबयवनेन्दीभवन ५, पूर्वाधिकैकसहस्राश्ववाराधिकारप्रदानपूर्वक  
 १ घायल ॥ ६४ ॥ २ अधीन ॥ ६५ ॥ ३ खटा कोषित हुआ ॥ ६६ ॥ ४ बादशाह का सेवन  
 करके बिना अपराध ॥ ६७ ॥ ५ अनुसंधान सहित ७ अगळे मयूख में ॥ ६८ ॥  
 श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के श्रुपति  
 भावसिंह के चरित्र में भावसिंह का बुन्दी की गद्दी पर बैठना और विवाहा-  
 दि का कथन १ धोलपुर के युद्ध में मरनेवाले, घायल होनेवाले और वीरता से  
 युद्ध करनेवालों की गणना २ बादशाह की अप्रसन्नता से दाराशिकोह का पं-  
 जाब की ओर भागना ३ कपट की रचना से शाहजादा औरंगजेब और मुरा-  
 दखाना का बादशाह शाहजहाँ के पास पहुँचकर उसको कैद करना ४ मुराद-  
 खाना को कैद करके औरंगजेब का बादशाह होना ५ जैपुर के राजा जयसिंह  
 को एक हजारी मनसब अधिक देकर उसको और जोधपुर के राजा जसवंत

जयपुराधीशजयसिंहयोधपुराधीशयशवन्तसिंहप्रसादापादन ६, बु-  
न्दीन्द्रभावसिंहाश्ववाराधिकारन्हासवर्णनं प्रथमो-मयूखः ॥ १ ॥

अदितोष्टविंशोत्तरद्विशततमः ॥ २२८ ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मुनसब इक्कहजार१०००मित, जयसिंह१हिं दिय जूथ ॥

गद्दीपति तंत्रं सु गिन्यौ, तोसो समुचित तत्थ ॥ १ ॥

दारा४०११कुमर हिं पिठि दै, जो रन तैं जसवंतर ॥

गो भजि तिहिं गज१हय२द्वि२गुन, सहतुररा३दिय संत ॥२॥

अधिक निवेदे च्यारि४ई३३, सो भेटहु लहि साह ॥

भाऊ१९५११ प्रति रूष्टहि भयो, रंच न समुभयो राह ॥ ३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अल्पहि रीभ सता१९४११मन आये, पहिले अट्टपरगनां पाये ॥

टोंक१मालपुर२केकरी३हु तिम, अरु गढहथनी४हिं गुलाज५इमा४१

भैंसोदा६रु पानगढ७भासक, केथोली८बलि सुबलि प्रकासक ॥

अखेसेन१मुहुकम२खिच्ची१३अरि, सोदरद्वै२हि तहाँ मित संहरि५

तिनकोँ जित्ति भीमगढ९पत्तन, लयो नवम९लरि धीर धराधेन ॥

गढमऊ१रु वाराँ२पहिलैं गत, लये साह तब अटंक न लंघत ॥६॥

मिलिअवरंग४०१३मुराद४०१४इक्क१मन, सब आयेउज्जयिनी जुज्जन

पुव्वहि तब सु मऊ१पुनि पायो, अरु बुंदी हि पटा तस आयो ॥७॥

जब औरंग४०१३मुराद४०१४हि जित्ते, विसालाहि इतके भट वित्ते ॥

दारा४०१११सहित जियन मन दिन्नौ, कासिमखान पलार्थन

सिंह को अपनी प्रसन्नता में लेना ६ बुंदी के राजा भावसिंह का मनसब घ-  
टाने के वर्णन की प्रतिज्ञा का प्रथम ? मयूख समाप्त हुआ और आदि से २२८  
मयूख हुए ॥

? आधीन ॥१॥१॥ २हथी ३कुट्ट ॥३॥४॥ ४ नाश करके ॥ ५ ॥ ५पुपति३अटक  
नदी के पार नहीं जाने के समय ॥६॥ ७ ॥ ७ उज्जैन के युद्ध में ८ भागा ॥८॥

किन्ना ॥ ८ ॥

बुंदी अधिप सता १९४१ तब बुल्लयो, तस आदर बढ़तो इम तुल्लयो  
प्रथम लयो सु दयो बाराँ २ पुनि, संग अधिक नव ९ प्रांत लेहु  
सुनि ॥ ९ ॥

बाराँ २ जुत ते दस १० हि बखानत, जहँ बाराँ १ पहिलो १ सब जानत  
बहुस्यो खैराबाद २ बरोद ३ हु, लौ कोटासन लय ३ हि दये लेहु ॥ १० ॥  
अप्पन तंत्र चउम ४ दिय आगर ४, सारंगपुर ५ भेलसा ६ सागर ७ ॥  
बालाभेट ८ सिरौं भ ९ दंग बलि, छवरा १ अप्प्यो दसम १० रीक  
छलि ॥ ११ ॥

दस १० ए मऊ १ सहित एकादस ११, बीस २० भीमगढ १ जुत  
पहिले ८ वस ॥

नृप परगनाँ इते २० क लहे नुत, सप्तहजारी ७००० मुनसुब संजुत १२  
नृप भाऊ १९५१ गुन साह न धारे, अब ए बीस २० हि प्रांत उतारे  
हो जब मुनसब सप्तहजारिय ७०००, अबहु सहचउसहँस ४५००  
उतारिय ॥ १३ ॥

अहसंहित दुसहँस २५०० मुनसब इम, जिहिँ भाऊ १९५१ कै रक्खि  
इतरँ जिम ॥

सहँस सहदुव २५०० मित रनसंतहिँ, भनि मुनसुब दिन्नों भगवंत  
१९५३ हिँ ॥ १४ ॥

दिय तिहिँ संग मऊ १ बाराँ २ दुव २, सम आदर किय द्वै २ हि सता  
१९४१ सुव ॥

भाऊ १९५१ कै कंछ अधिक रही भुव, हाइ तदपि स्वानुजँ स्व  
तुल्य हुव ॥ १५ ॥

॥ ९ ॥ १ शीघ्र ॥ १० ॥ २ अपने अधिकार में ३ रीक में उक्त कर ॥ ११ ॥  
४ स्तुति योग्य ॥ १२ ॥ १३ ॥ ५ दाई हजार १ अन्य राजाओं के समान ७  
युद्ध में अष्ट जानकर ॥ १४ ॥ ८ शत्रुशाल के पुत्र ९ खेद की बात है कि १०  
छोटा भाई अपने बराबर होगया ॥ १५ ॥



॥ दोहा ॥

मुनसब१मुनसब२माँहिँ सौं, देस१माँहिँ सौं देस२ ॥

भिन्न रावपद३पाइ भौ, इम भगवंत१६५।३इलेसं ॥ १६ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सहँस दुसह२५००रखिख मुनसब सब, इम किय अल्पविभव भाऊ

१९५।१ अब ॥

लुब्ध सहचउसहँस४५००छिन्नि लिय, दुव२दँल३ सहँस२५००तावि

च उक्त हिँ दिय । १७।

पुनि यह हुतँ सु रावपद३पै हैं, जेठे१सौं हु बहुरि बढिजेहँ ॥

पंचसहँस५०००दँल२५००वटि इम ए पहु, लखि जेठे१सम अनुज३।२

कानि लहु ॥ १८ ॥

कहि अब रावपद२ हु सम करि है, साह१ कथित २ दिस दित

अनुसरिहँ ॥

खल मुनसबदुवसहँस२००० रह्यो खिल, किन्नाँ स्वबल खालसा

सो किल ॥ १९ ॥

अगँ सता १९४।१ प्रांत अष्टक८ इम, जित्ति भीमगढ९ नवम ९

लपो जिम ॥

बाराँ १ मऊ २ गई सु लई बलि, क्रमतँ दई मऊ १।२० पहिले

कलि ॥ २० ॥

प्रांत सता १६४।१ कोही यह १० ही पँर, दयो माधवहि १९३।२

साह जथा दँर ॥

तस संगहि बाराँ २।११ हु गई तिम, जब नव ९ संग दई सूचित

१ भूपति ॥ १६ ॥ २ लोमकरके ३ दो और आधा (दाई) ॥ १७ ॥ ४ शीघ्र ५ पांच हजार का आधा आधा ६ शीघ्र ॥ १८ ॥ ७ बाकी ८ निश्चय ॥ १९ ॥ ९ युद्ध में ॥ २० ॥ १० परन्तु ११ अथ से ॥ २१ ॥

जिम ॥ २१ ॥

मिलिबरोद१बारा१२आगर३\*मुख, खैराबाद४सिरौं भूपा सुधनसुख ॥  
इक घटिबीस २० स खिल इत्यादिक, बीसम २० तत्थ भीमगढ  
९१२० आदिक ॥ २२ ॥

ए भाऊ१९५१ सनसब२०हि उतारे, पुनि मऊ११० रु बारा१२११  
बट पारे ॥

ते दुवर अप्पि स्वभट भगवंत १९५३ हि, सुरि साह रु सन्नि न  
कछु मंतहि ॥ २३ ॥

रहे भीमगढ९१२०जुत अह्वारह१८, तेसब प्रांत खालसा करि तह ॥  
मुनसब कथित तुल्य दै मित मित, इत भाऊ १९५१११ भगवंत  
१९५३२गिन्यौ इत ॥ २४ ॥

मऊ१बहुरि बारा१२ खल मंत सु, अधिप भयो लाहि जुगर भगवंत  
१९५३ सु ॥

कही इम न मैं अग्रज१किंकर, अग्रज२को किम सहो अनादर२५  
बुंदी सब हड्डन जननी बर, जनन्यौ मैंहु अवहि जिहिं जाठर ॥

किम चंडातक तस कतराऊँ, प्रभुसौं भिन्न नई भुव१पाऊँ ॥ २६ ॥  
भिन्नहि, तिम मुनसुब लाहि भासौं, प्रसू सुजंस मैं पुत्र प्रकासौं ॥

सक्तहिं हजरत भिन्न समर्पन, अप्पन कछु अप्पन हित अप्पन  
अग्रज१भुव१मुनसब२चहि अक्खय, मोहि इतर अप्पैं बहु बंसुमय

सुमैं तदपि न बढौ अग्रज१सन, मन्नाँ सदा मुख्य स्वामीमन ॥ २८ ॥  
पुहवी१कछु पद१कछु घंटीपाऊँ, अग्रज१सासन स्वसिर उठाऊँ ॥

सता १९४१ तनयपन तब मम सुधरैं, कित्ति मैदीय सुकवि अ-  
तुल करैं ॥ २९ ॥

\*आदि१अष्ट धन ॥ २२ ॥ †पेट कर दिये १सलाह ॥ २३ ॥ २थोड़ा थोड़ा ॥ २४ ॥  
३दुष्ट विचार से ॥ २५ ॥ ४उदर में थलहंगा ॥ २६ ॥ ५ माता ७ समर्थ = देने में  
॥ २७ ॥ ८ धनमय ॥ २८ ॥ १० शत्रुशाल का पुत्रपन ११ मेरी कीर्ति ॥ २९ ॥

जन्मसफल तो मैं सम जानौं, \* प्रभु१ प्रभु प्रभु२ मम उचित प्रमानों  
भाऊ१९५१ अनुज तबहि मैं भूतल, विदित रहों जसखट्टि बा-  
हुबल ॥ ३० ॥

पै प्रभु राम२०३४ न यहहु प्रमानी, जिहिं सठ स्वीयें वृद्धि सुभजानी  
मति सोधी भाऊ१९५१ अग्रज१ मम, सो क्यों रहैं दुष्ट० है मोसम ॥  
कछु ताहु सौं तिकख निकासों, प्रभुता बंटि ताहि तनु पारों ॥  
सुहि गिनि मुनसब१ देस२ सुहाये, अग्रज१ के इहिं खल उतराये ३२  
तउन प्रांत बीस२० हि पाये तिहिं, जुग२ मऊ१ रु बारा१ हि मिले जिहिं  
मुनसब सल्लसहँसचउ ४५०० मिटाइ, पुनि तासों सल्ल दु सहँस  
२५०० पाइ ॥ ३३ ॥

अग्रज१ पूज्य जदपि संभव अहं, मन्नि तदपि निज वृद्धि महामह  
कुटिल तंत्र दुसहँस २००० मुनसब करि, उक्त प्रांत अठारह १८  
लिय अरि ॥ ३४ ॥

पहुनैं साहरीभ यह पाई, उपदा तहँ चउ४ गज अधिकार्इ ॥  
भोज१९१२१ प्रतिर्म भो यह भगवंत१६५३१२हु, लिन्नी भुव दूदा  
१९११ सन जिहिं लहुं ॥ ३५ ॥

यह न कही हो प्रभु तुम अकबर ३७११, वखसहु भिन्न बिभव  
भूमुख बर ॥

पै सुनि कहि लुंदी तिहिं पाई, अग्रज१ सन गिनि मन अधिकार्इ ॥  
इसाहि दुष्ट भगवंत१९५३ इहाँ यह, मन्नतभो घर बंटि बडो मह ॥  
भेट अधिक चउ४ गज तउ भूपति, करि मन्निय इसु दिन जैहँ कति ॥

\* हे स्वामी मेरी स्वामिता के समान स्वामिता मिलना उचित है, अथवा हे  
प्रभु आप स्वामी के स्वामी हो सो मेरे उचित होवे सो प्रमाण करो भूमि पर  
सम्पादन करके ॥ ३० ॥ हे स्वामी रामसिंह २ अपनी ॥ ३१ ॥ ३ न्यून ॥ ३२ ॥ ३१ ॥  
४ जन्मदिन से ५ बहने में बड़ा उत्सव माना ६ उस कुटिल औरंगजेब ने अपने  
अधिकार (खालसे) में ॥ ३४ ॥ ७ राजा ने ८ सदृश ९ दुर्जनशाल से १० जिसने  
शीघ्र भूमि ली थी ॥ ३५ ॥ ११ अकबर बादशाह १२ भूमि आदि ॥ ३६ ॥ १३ उत्सव

\*बलिहु गिनै न साह गद्दी बस, तजिबो तबैं समुचित आश्रय तस  
इहिं विचार अल्पहि लहि आदर, बिस्यो सिबिर निज सुरि बुंदीबर  
भगवंत १९५३ हु अग्रज १ निभ भास्यो, करि खलभाव समत्व  
प्रकास्यो ॥

साह लयो दुसहँस २००० मुनसब सौमि, अछारह १८ परगनाँ अ-  
तिक्रमि ॥३९॥

आमैर १ जोधपुर २ आदि इँनन, पाइ देय अदर हि इत कर्जुपन ॥  
भयो विमन कछु तँहँ नृप भाऊ १९५१, इच्छि मरन रन सबन अगाऊ  
जान्यो कामपरहिं तब जुझहिं, बिकस्यु साह कौहि बलि बुझहिं  
बीरत्वहि लखि जु यह बढावहिं, पुनि तोतो विभवहि हम पावहिं  
तदपि स्वकीय गिनै न साह तब, समझहिं अब विप्रदा रौकृत सब  
रान प्रताप रहे जिम रहिहैं, बनै तिम न तो दिवैं सुख बहिहैं । ४२ ।  
सुनि यह अरज करी सब सुभटन, पटा तजहु अब सजहु बीरपन ॥  
को इहहेतु बिसिख यह कुप्यो, लज्जा १ रीति २ प्रीति ३ सब लुप्यो  
भूप कहिय अवहि न इम भाखहु, रंचक बीर धीरपन राखहु ॥  
अपनो मन जो लखि यह उज्वल, खलपन तजि बहुरि न भासैं खल  
याके अनुग हैंहितो अप्पन, पुनि लखिलौहि स्वामि मत थप्पन ॥  
बहुरि न मिच्छ प्रीति जो बिकस्यहिं, सब सम्मत तोतो सुहि सिक्खहिं  
पै यह सोक अतुल हम पायो, दुबर प्रांतन सब ग्रास दुरायो ॥  
बिष्णुसिंह १९५१ आदिक बीरन वस, हरीगढा १ दि हुते जय  
साहस ॥ ४६ ॥

॥ ३७ ॥ \* फिर १ उचित २ अपने डेरे में प्रवेश हुआ २ बुन्दो का पाति  
॥ ३८ ॥ ३ सदृश ४ बराबर पन ५ ठंडेपन से; अथवा काट लिया १ उल्लंघन क-  
रके ॥ ३९ ॥ ७ रोजाओं ने = सीधापन ९ उदास ॥ ४० ॥ १० देखकर ११ फिर  
किसको पुर्तगा १२ बीरता ॥ ४१ ॥ ११ संगीकार १४ स्वर्ग के सुख ॥ ४२ ॥  
१५ बिना शिखावाला (यवन) ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १६ संवत् ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

ते सब गये रही मम भूतनु, जवन लई हेतन लखिकैं जनु ॥  
 अब न इतीक मिलैं छिति इनकोँ, जथाश्रद्ध मिलिहैं तउ जिनकोँ  
 बदि यह निज अध्यक्ष बुलाये, ए बस सब बुंदी चलि आये ॥  
 काका महासिंह १९४।९।१ जहँ हाकिम १, अरु दहिया सुंदर २  
 चमूप २ इम ॥ ४८ ॥

सचिव ३ रायमंलोत २३।१९ सपिंड सु, बंधु नाम हरिमानु १९४।१।३  
 बुद्धिबंसु ॥

त्रय ३ हि मऊ १ बाराँ २ अधिकृत तब, ए हे ते भाऊ १९५।१  
 बुल्ले अब ॥ ४९ ॥

सुनहु पुब्ब दहिया यह सुंदर २, बन्यो सता १९४।१ छत सचिव  
 वर्ग बर ॥

मऊ १ रघो सु सजि भट मेला, दल्यो सता १९४।१ जब नृप बुं-  
 देला ॥ ५० ॥

अनख्यो तब कछु साह देखि उर, पलटयो यह प्रभुभक्त मऊ १ पुर  
 सूबा मालवईस विसांला, हो जो सेरखान १ जिम दाला ॥ ५१ ॥

सोहि नसा बढिकैं निज सूरन, प्रस्थित भो दिल्ली कछु पूरन ॥  
 कछन लग्यो भग मऊ १ सीमकरि, तहँ सुंदर २ बनि समरसिंधु तरि

फिरि अहो रु रोकि तस फैलन, गेरयो मोरि दयो वह गैलन ॥  
 अबहु चमूप हुतो दहिया यह, सुहु आयो निज स्वामिधर्म सह ५३

अंतिम दोउ २ न ग्रामहुते उत, जेहु गये इतरन बहुतन जुत ॥  
 बलि इत्यादि मऊ १ बाराँ २ बस, जहँ आये निबहन सासन १ ॥

जसर ॥ ५४ ॥

जड़ हरपालंपउत्त ५।१ भये जिम, उतरयो इनतैं जज्जाउर इम ॥

१ अल्प मानो २ अपराध देखकर १ अन्धा के अनुसार ॥ ४७ ॥ ४ अपने अधिकारी  
 ५ सेनापति ॥ ४८ ॥ ६ राजा के सात पीढी के भीतर का आई ७ बुद्धि ही है ध-  
 न जिसके ८ अधिकारी ॥ ४९ ॥ ९ समूह ॥ ५० ॥ १० उल्लेख का ११ जहर ॥ ५१ ॥  
 १२ युद्ध रूपी समुद्र को तिरकर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १३ आज्ञा ॥ ५४ ॥

सता१९४१महासिंह१६४१हिं बितरयो सो, काका हाकिम मऊ  
१करयो सो ॥ ५५ ॥

मंत्री१सेनानी२रू सचिव३मत, ते आये सिटि जदपि हुते तत ॥  
हो जज्जाउर महासिंह१९४१हित, अतुल ग्राम तो जुत प्रवृत्त इत  
पातैं उत३न मिल्यो कछु याकँहँ, तिन सेसनके ग्राम हुते तँहँ ॥  
नृप अधिकृत सुंदर २१ हरिभानुक ३१२, भये छुंधित तंत्रत्य ग्रा-  
स भुक ॥ ५७ ॥

इनको त्रिक३बुंदी जब आयो, पहु तब समुचित हुकम पठायो ॥  
ग्राम ब्रह्म२ जुत ठिकरिया १ गुरु ३१२१, अप्यो सुंदर २ हित देस  
अनुरु ॥ ५८ ॥

अरनिष्ठा११दुव२ग्राम सहित इम, हरिभानु१९४११हिं दिय नृपवै  
उर हिम ॥

अधिकृत दुर्मन त्रय३नहिं आये, दुव अंतिम दै कथित दिपाये ॥५९॥  
राजसिंह१९४१४कुल मुख जस रक्खन, विष्णुसिंह१९५११ आदि-  
क देव अरिबन ॥

इत्यादिक सुभटादिन अखिलन, ग्रास बिहीन भयेउत बहुगना ॥६०॥  
गदित हँमारे नेगन ग्रामहु, परबस परि इम दुव२हि गये पहु ॥  
बंभन खेट३रू भीमखेट२बलि, वृत्ति नियतहै बँहुल भेट बलि ॥६१॥  
खेटबलि१भेटबलि२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

ग्राम जुग२हि वह मऊ गलै गंग, इम बिनु दत्ति भये हम बिनु अंग  
विष्णु १९५११ राजसिंहोत ११३१ आदि वर, भये अनायँ जिते  
अप्पन भैर ॥ ६२ ॥

१ दिया था सो ॥५५॥५६॥ २ भूखे ३ वहाँ के ग्रामों को ४ भोगनेवाले ॥५७॥  
५ तीनों का समुदाय ६ समीप ॥५८॥ ७ ठंडे हृदय से ८ कहे हुए ॥५९॥ ९ अ-  
ग्नि ॥ ६० ॥ १० ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) अपने नेग के ग्रामों को कहते हैं ११, हे  
राजा १२ ग्रामएयाँ खेड़ा १३ निश्चय १४ यद्वत ॥६१॥ १५ बिना शुभ भाग्य  
के १६ बिना आमदनी १७ भेट ॥६२॥

इत चम्मलि सन-तिन्हहु मिले अब, संबसथांशदि सबन क्रमतैं सब  
हमरे पितरहु वृत्ति हीन हुव, दिल्ली पहुँचे खेम१६८१११राम१६८११।

१ दुव २ ॥ ६३ ॥

सुकवि खेम१६८१११नगराज१६७११ केर सुत, जहँ भूपाल १६७११  
तनूज राम१६८जुत ॥

दिल्ली गये वृत्ति बिनु ए दुव२, हड्डनपति सन बिर्मन मिलन हुष६४  
॥ दोहा ॥

भूप कह्यो जिन दुख भजहु, गये जदपि ए ग्राम ॥

गिनहु उभैरहमरे गये, तुम सिर भारन ताम ॥ ६५ ॥

उनको जो कर आवतो, दम्म ताहिमित देय ॥

समय समय बंटी सु सुकवि, सकल लोहु गिनि श्रेय ॥ ६६ ॥

संबधन१०याहन२सिसुन, गर्भधरन३तिम गेह ॥

बसु इतमुख अवसर बिर्मजि, अखिल सम्हारहु एह॥६७॥

उरलाये कवि स्वीय इम, बुंदी अधिप बिसासि ॥

नेगन बंधिय रीति नव, प्रीति बिसेस प्रकासि ॥ ६८ ॥

गत मुनसब नृपको गिन्यो, सहससह४५००चउ४सर्व ॥

समुझिरहे कविजन सुमति, अप्पत यहहु अखर्व ॥६९॥

कहियत सो अग्रिम किरन, राजमुँकुटमनि राम२०३१४ ॥

नेग कविन जिम हुव नियत, गुमत वृत्तिमय गाम ॥ ७० ॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीभू-  
पभावसिंहचरित्रे यवनेन्द्रौरङ्गजेवाप्रसत्तिहेतुबुन्दीन्द्रभावसिंहप्रान्ता-

१ ग्राम ॥६३॥ २ उदास ॥६४॥ ३ तहाँ ॥६५॥ ४ हासिल ५ उतने ही रुपये ॥६६॥

६ धन ७ इत्यादि, समय छंट करके ॥ ६७ ॥ ८ नवीन ॥६८॥ ९ जो देते हैं सो  
ही बहुत है ॥६९॥ १० अगले मयूख में ११ हे राजाओं के सुदुष्ट रावसिंह ॥७०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
भार्यासिंह के चरित्र में बादशाह औरंगजेब की अप्रसन्नता के कारण बुन्दी के  
राव भार्यासिंह के परगने और मन्सब कम होकर उसके छोटे भाई भगवंत-

शिववाराधिकारन्हासतदनुजभगवन्तसिंहवृद्धिवर्णनं द्वितीयो मयूखः

आदित एकोनत्रिंशदधिकद्विशततमः ॥२२९॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

हमतैं खिल जे पंचपहे, नेगी हे नरनाह ॥

ग्राम तिनहुके सब गये, हे पैरतट ते हाह ॥ १ ॥

इमहिं सबन किन्नी अरज, जिन जिन दिखिय जाइ ॥

तिन तिन सबन बिसासितैंहैं, किय नृप हित अधिकाइ ॥२॥

प्रथम पुरोहित१व्यास२पुनि, चारन३भट्ट४हुंचित ॥

पंचम५नापित५डौबै६पुनि, बिसवासे भूबित्त ॥ ३ ॥

कतिक नेग सामान्य किय, सब हम तत्थ सरीक ॥

हुव२त्रय३चउ४पंचम५बिदित, ठाँठाँ सुहु अब ठीक ॥ ४ ॥

जे उद्देस१रु चिन्ह२जुत, अब कहियत अवनीप ॥

ते मुक्तागन धरहु तिम, खवन सु पेसलैं सीप ॥ ५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

जब जब स्वस्व समय रानीजन, लहैं प्रथम१सुत दोहैंदलच्छन ॥

सहपैरिजन तबछ६हि वृत्त्यासन, नृपघरहोइ प्रैसवलग भोजन ॥१६॥

प्रथमेतैरे गर्भहिं जब पावैं, जिम तब करि सीमंत जिमावैं२ ॥

प्रथम १ पुत्र संभवैं उच्छवपर, बंटैछ६हि खटसत ६०० रूप्य -

य ३ वर ॥ ७ ॥

सिंह की वृद्धि होने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ॥और आदि से २२९ मयूख हुए ॥

१ बाकी २ घामल नदी के पैले किनारे ३ खेद है ॥ १ ॥ २ ॥ ४ उदास ५ ना-

ई ६ ढोली ७ भूमि ही है धन जिसके ऐसा राजा ॥ १ ॥ ८ ठौर ठौर ॥ ४ ॥९

मोतियों के समूह के समान धारण करो १०कानों रूपी सुन्दर सीप में ॥ ५ ॥

११गर्भ १२घर के लोगों सहित १३वृत्ति भोगनेवाले १४यालक के जन्म होने त-

क ॥ ६ ॥१५ब्राह्मण (पुरोहित) को छोड़कर अन्य १६पंचमासी १७ जन्म ॥ ७ ॥



अरु चउ१मुख्यन चउ४गज४उत्कट, पुरुख१तिपरनके सब भूख  
न ५ पट ६ ॥

अंत्य जुग२ हि सब यह दृष४ आदिक ५६, सुनहु कनिष्ठ सुतन  
प्रासादिक ॥ ८ ॥

करैं तवहु यद३तारतम्य करि, पुत्र जितेक तितेक भेद परि ॥  
प्रसवनतैं अविश्वय जो पूरव, सुता जन्म अवधिहु सो८ सो९जव ॥  
अरु कन्याके प्रणव अनंतर, पावहिं जे कहिहैं अवसरपर ॥  
खिलन नेग जे भिन्न रहे खिल, ते तिन्ह जानैं होहु गिरि'१ कि  
तिल२ ॥ १० ॥

पुत्र निमित्त अधिक हम३पावहिं, सो वें सुनहु सबनिषेत्सुदावहिं  
हम३कुल मुख्य दैपती२हैं जे, लहि गोरेव यह बढन लहैं जे ॥  
प्रथम१पुत्रभैव भुंतिन पूजन११२०, जहैं गार्धे प्रभुबंधु बधूजन१११  
इम महर्घे भूखन ३१२२ पट ४१२३ अर्चित, सदन क्रैमैं अवरोध  
समर्चित११२४ ॥ १२ ॥

पूजन१धूजन२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सब घरके हम बैसन ६११५ लहैं सब, तिम खोजन अवरोधैं लहैं  
७११६ तव ॥

महुर ८११७ पंच १ इक१ द्वार ११२८ पुरटमय, जैबादै कवितियहि  
जसोदय ॥ १३ ॥

नेग नवक ९ हमको यह नियतहि, लिखिदिय प्रथम १ कुमार उ-  
द्भव लहि ॥

कुमार सखबन्धन अनेहँ क्रम, मिले महुर् ११९ दस १० कनक मनोहर  
प्रथम १ कुमार प्रथम १ सगपनपर, धरै कटक ११२० हम खट ६  
हि वृत्तिधर ॥

सत १०० सत १०० रूप्य २१२१ तिमहि लहैं सब, तुरग ३१२२ बख ४१२३  
समुपेत तथा तब ॥ १५ ॥

लघुसुतादि प्रसवादि समै लहि, सगपनलग कछुघटिइम ५१२४  
सर्वहि ॥

अब विवाह विधि वृत्ति इत्तापति, मति क्रम कहियत सुनहु महा-  
मति ॥ १६ ॥

ज्येष्ठ १ कुमार व्याहन विधिक्रम जँहँ, कहत लहत जोजो जाजा कहँ  
कहुँ छ ६ पंच ५ चउ ४ त्रय ३ दुव २ इक १ क्रम, पै हम बंट सु सुनहु  
जथा प्रेम ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

गनपतिपूजनतँ गिनहु, बंधुनसहित बुलाइ ॥

सुरस अन्न नृपके सदन, खट ६ हि वृत्तिधर खाइ ११२५ १८१

आम अन्न २१२६ सबके अरथ, बलि मन मिति चउबीस २४॥

मिलैं सु बँटै खट ६ हि मिलि, अक्षतनाम अधीस ॥ १९ ॥

वृद्धिबेराभिध धान्य ३१२७ बलि, मनन बिहत्तरि ७२ मान ॥

बँटै सुहु खट ६ वृत्तिधर, सब सब वृत्ति सुजान ॥ २० ॥

बहुरि बिहत्तरि ७२ मन बिहित, आम सालिमय अन्न ४१२८ ॥

जव पावनदिन मिलहि जो, सब बंटहि संपन्न ॥ २१ ॥

महँडेकेदिन सत १०० महुर् ५१२९, पैसेल खट ६ सिरुपाव ६१३० ॥

१ निश्चय २ जन्म ३ समय ४ स्वर्ण की ॥ १४ ॥ ५ कहे (कंकण) ६ सहित  
॥ १५ ॥ ७ हे भूपति ॥ १६ ॥ ८ प्रमाण ॥ १७ ॥ १८ ॥ ९ कचा अन्न १० आखे  
॥ १९ ॥ ११ नेग का नाम है ॥ २० ॥ १२ कछे चावल १३ यव धान्य ॥ २१ ॥ १४ सुन्दर

खंभहिं रोपत महुर७।३१खट६, भूखन८।३२खट६मनिभाव ॥२२॥

इक१खंभहिं बंधें सु इमं१।३३, मनन विहत्तरि७२ मेयें ॥

मधुर नवयें गोधूम मय, अष्ट१०।३४पिंड अभिधेय ॥ २३ ॥

बेहें खंभहिं जो वसन११।३५, विहित जरीमय बुद्ध ॥

तुलित विहत्तरि७२मन तिमहि, सुरस मिठाई१२।३६सुख ॥२४॥

तिहिं बासर अवसान तिम, निस बीरत निसनाम ॥

सूचित७२मित समिता१३।३७सुमन, त्योंहि सुमन१४।३८तैंहें तौम७२

आज्य१५।३९विहत्तरि७२मन इहाँ, सक्कर१६।४०ता७२हि समान

इम बीरत निस नेम ए४, अखिल दलित अभिधान ॥ २६ ॥

॥ पट्टपात ॥

दूजे२दिन इम दिष्ट निचेंय बसु परन निमंत्रन१।७।४१ ॥

धवपट्ट१भूखन२धरन२।१८।४२रु तस वैडवा आशेहन३।१९।४३

दस१०।१५पंच५।२६ पंचदस१५।३महुर३०त्रय३ठाँ इम मारेंन ॥

वृत्तिलहें त्रय३वढत विदित वृद्धन सैकखी सन ॥

चढि बलि बरात पथ गम्यें चलि व्याहें दुलहनि जाइ वर ॥

तहें निधत वृत्ति दूजे२दिवस प्रथित त्याग आरंभ पर ॥ २७ ॥

मारेंन१खीसन२अन्त्यालुमासः ॥ १ ॥

नेम छेदमित तहें नियत त्याग पहिलैं इम तीन३न ॥

भेदक चारन१।३महुर३४जथा अंतिमै६ पटही जन३।६ ॥

महुर२०।४४तीन३धरि मध्य पंच५अंगुलि भरि रूपय२।४५

॥ २२ ॥ १ छापी २-पलाश ( तोल ) ३ नवीन ४ गेहूँ ५ इन नेम का नाम  
स आटा का पिंड नाम है ॥ २३ ॥ १ धूम्र के लपेटने हैं यह वस्तु ॥ २४ ॥ ७  
वसन दिन के चरन में ८ मैदा (गेहूँ का चारोंक आटा) ९ गेहूँ की १० गेहूँ ११  
गहों ॥ २५ ॥ १२ सूत ॥ २३ ॥ १३ धन का मन्त्र १४ पति के यज्ञ १५ यात्री  
१६ मोक्षक शाखा के चारण १७ वृक्ष लोगों की लार्जी से १८ जाने चारण स्थान  
न पर जाकर १९ निमेष २० प्रसिद्ध ॥ २१ ॥ २२ लोहा २३ पाँचों अंगुलियों से

सयं निज निज संग्रहित तावें मानव हमही त्रय३ ॥  
 ए वीरमुष्टिनामक उदित तीन३न३तीन३हि नेग तिम ॥  
 तीन३न बहोरि त्रय३त्यागमैं नेग सुनहु पालन प्रतिम ॥ २८ ॥  
 चंडाल१रु चम्मार२ रंजक३तच्छक४व्योकार५रु ॥  
 क्रम नापित६कुंभार७आदि कारुकं उपेत अरु ॥  
 भृत्य८रु बेतनभृत्य९जिते जाके पुनि जाचक१० ॥  
 सुरपूजक११तिम साधु१२विप्र निजवृत्ति सु बाचक१३ ॥  
 जामात१४भाम१५भानेज१६जुत सवित सुत१७रु विधवा१८सहित  
 लै द्वि२गुन त्याग२२१४६निज निजकुलजपुरुख दूरदेशहु प्रहित॥ २९ ॥  
 ररु१अरु२अन्त्यानुप्रासः ॥ २ ॥

रूपय१गज२हय३कैर४वसन५भूखन६जाजाविधि ॥  
 बंठहिं त्याग बिसाल नियत खुलवाइ कोस निधि१ ॥  
 तास द्वि२गुन हम त्रय३हि गहैं गौरव१लाघव२गति ॥  
 भूखन१गज२हय३ भोलि४अयनैं इक१इक१इक१इक१अनि ॥  
 जाचक१ रु पुरोहित२ भृत्य३ जन पावहिं द्विगुनित पुरुखप्रति ॥  
 खिलै नाम द्वि२गुन इक१इक१लखहिं सबन तदपि पालनसुमति३०  
 वाहीदिनके अंत पंति भोजन जब पावहिं ॥  
 कौनी जनकसन कहि रु दुलह यह हमहिं दिवावहिं ॥  
 पंच५महुर१२३१४०वर पुरैट मंजु मन बीस२ मिठाई२१२४१४८  
 बलि घर आइ बरात दुलह प्रविसैं बसुदाई ॥

मुठ्ठी भरकर १ अपने अपने हाथ से २ तहां ३ सदृश ॥ २८ ॥ ४ चमार ५ घो-  
 बी ६ खाती ७ लुहार ८ नाई ९ कमीशों सहित १० चाकर ११ तनखा  
 पानेवाले नौकर १२ मन्दिर का पुजारी १३ स्वामी (संन्यासी आदि) १४ पुरो-  
 हित १५ जमाई १६ बहिनोई १७ पुत्र सहित पुत्र की माता १८ अपने अपने  
 कुल के पुरुष १९ दूर देश में बिखरे हुए भी दूना त्याग लेते हैं ॥ २९ ॥ २५ ॥  
 २० जंत २१ धन का खजाना २२ बड़प्पन २३ जंत २४ एक एक के घर २५ सेवक  
 २६ पाकी के ॥ ३० ॥ २७ कन्या के पिता से २८ सुवर्ण की २९ धन देनेवाला ॥

तैंहँ महुँर१।२५।४९ जुग२ रु कुलदैवतहिँ पूजत २।२६।५० पंच५  
रु बहुरि वर ॥

कंकन तजंत दस१० महुँर३।२७।५१ करि ध्रुव हम हुव इम वृत्तिधर  
॥ दोहा ॥

पयलग्गैँ दुलहनि प्रथम१, पंच५ महुँर१।२८।५२ करि पेस ॥

तिम पगलग्गैँ कवितिनय, ईतर इक्क१ दै एस२।२९।५३ ॥३२॥

॥ पट्पात ॥

मध्य२ कनिष्ठ३ कुमार जितैजिहिँ क्रम प्रभु जानहु ॥

नेगहु तिहिँक्रम१।३०।५४ प्रचुर१ न्यून२ प्रति दुलह प्रमानहु ॥

लै जन्म१हिँ व्याहरलग गेह आवन३ लग यागति ॥

नियत इते५६हम नेग करे इम खिलन भिन्न कति ॥

हमरेहि नेग१ कैकै हमहि सहिपै भाग जिनमैँ मिलहिँ२ ॥

तेअत्थ कहिँ१रुकदियत२तथा खेतन मिति जिम तजिखिलहिँ३३।

सब व्याहन सब सुनत नेग सम च्यारि४ घटैँ नन ॥

इम मुखसन सब असन१ करहिँ मोचन लग कंकन ॥

वंधैँ गज२खंभ बलि सोहु पलटैँ न सदांसम ॥

वीरसुष्टि ३ तिन बहुरि त्याग४ आरंभ नियत तम ॥

परदेस थितहु निजंकुलपुरुष कारुनजुत पहिलेहि क्रम ॥

लै द्वि२गुन त्याग४एँ च्यारिँ लछु वैन नेग इम तुष्ट हम ॥३४॥

कानी नेग अब कहत गर्भआदिक पहिलीगति ॥

प्रसवकाल छ६हि पात्रं महुँर१।३१।५५द्वादस१२लैँ१सम्मति ॥

सिरुपाव१।३२।५६नत्रिक३ सहित महुँर२।३३।५७।३ पंद्रह १५

तीन३न मैँ ॥

१ दुलहन पहिले पहिल पने लागै २अन्य ॥ ३२ ॥ ३ बहुत ४ बाकी के लोगों के ५ हे राजा ६ सब ॥ ३३ ॥ ७ कंकण डोरड़ा खोलने तक ८ कमीज लोगों सहित ९ छोटै ॥ ३४ ॥ १० कन्या के नेग

बरके घरतैं वृत्ति मिलै ए दुवर् सगपनमैं ॥

हम१ भट्ट२ तथा पंढरी सहित बरपरखाई नामविधि ॥

तैंहँ ए दुश्नेग बंटैं त्रय३हि नेग व्याह सुनिये सुनिधि ॥३५॥

ननमैं १पनमैं२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

वहे पूजित हेरंब उहाँ बारह१२ मन अच्छत १३४।५८ ॥

जथा पुव्व सब जनन असन२।३५।५९ तबतैं तैंहँ अबिरैत ॥

बावन जब चउबीस२४ मान सुमनैन अच्छत ३।३६।६० मन ॥

मंडप दिन खट६महुर१।३७।६७ प्रथित पीछल कपर्दपन ॥

खट६ महुर५३।८।६२ खंभरौपन खिन रु जिहिं वेढैन१अंसुक ज-  
री ६।३९।६३ ॥

मन चउ रु बीस२४अच्छत सुमन७।४०।६४ क्रमतिहिं बंधै सो  
करी ८।४१।६५ ॥ ३६ ॥

पुनिछ६महुर९।४२।६६सिरुपाव१०।४३।६७तत्थखट६मिलहिंखंभतल  
मधुर मिठाई११।४४।६८छ६मन मिलहिं सबके बट निर्मल ॥

पंच५महुर१२।४५।६९सिरुपाव१३।४६।७०मंहत पंच५रु पचीस२५मन  
अट्ट१४।४७।७१पिंड अभिधात तास बट पंच५सदातन ॥

तिहिं दिवस अंत वीरततमी मन बारह१२विदलित सुमन१५।४८।७२  
मन छ६छ६हंवी१६।४९।७३रु सकर१७।५०।७४मिलहिं जुहुं हम बंटहिं  
पंच५ जन ॥ ३७ ॥

मन पचीस२५पुनि सुमन१८।१।७५नेग यह अच्छत नामक ॥

पंच५महुर१९।५२।७६सिरुपाव२०।५३।७७पंच५तैंहँमिलहिंप्रकामैंक  
पिंडा१४दिन हम पंच५बंट पावहिं तैंहँ व्यास२न ॥

बंट सबदन बलि बदहिं सकल सनियम जिम सांसन ॥

१ढोली ॥३५॥ २गणेश ३ निरन्तर ४ गेहूं ५ प्रसिद्ध ६ पीली कोडी ७ थम्भ के  
लपेटने का ८ जरी का चञ्ज ९ हाथी ॥ ३६ ॥ १० बडे सिरपाव ११ दलेहुए गेहूं  
१२ घृत ॥ ३७ ॥ १३ विशेष कामना सहित १४ जैसी आज्ञा है

तैंहें मन छतीस३६सालिं२१।५४।७८कि सुमन२१।५४।७८वृद्धि वरन  
लाहिहैं छ६बट ॥

दापा सनाम जावतंदये प्रति नर दुव२रूपय२२।५५।७९प्रकट॥३८॥

लग्नसमय प्रभुमिलहिं हमहिं इक१महुर१।२३।५६।८०विवाहत ॥

तैंहें बंटत तंबोलं मिलहिं भूखन२।२४।५७।८१इक१सम्मत ॥

जंपति२कर जुग२जुरन समय जरमय इक१सारिय३।२५।१८।८२

बहुरि दु२कैर बिचछुरत भर्ममाला४।२६।५९।८३इक१भारिय ॥

ए नेगचारि४हमरेहि अब पटजर चँवरी १।२७।६०।८४मंडप२।२८।

६१।८५ न ॥

छादक जितैक तिन्ह बंट छ६हि समय हैं रु पहुँचन सबन ॥३९॥

इम प्रभु अष्टाईस२८कनीउपयाम नेगकिय ॥

वरके घर सन बहुरि सुनहु जे नियत प्रकासिय ॥

समुह मेलसिरुपावा१२९।६२।८६महुर२।३०।६३।८७खट६खट६प्रभु

मानहु ॥

दापानामक दम्भ३।३१।६४।८८प्रमिति खटसत६००पहिचानहु ॥

इम नेग सबन त्रय३वस्तु ए लाहि विभाग छ३हि हम लहैं ॥

हम त्रय३हि नेग पंचकंपलहत करहु श्रवन ते अबकहैं ॥ ४० ॥

आदिम१तोरन ईम१।४३२।६५।८९रु दैत गोरनदिन दाई ॥

तिथि१५महुर२।५३३।६६।९० रु सिरुपाव३।६३।६७।९१तीन३मन

दुदस१२मिठाई४।७३।५।६८।९२ ॥

दास१कैरु२जुत द्वि२गुन पुरुख त्याग५।६।३७।६९।९३सु सबपावहिं

हम१भट्ट२रु पटहौ२ सुबिसिखपुमित नेग बटावहिं ॥

इम गर्भआदि१व्याहनअवधि१नेग५।८।३६।६९।९३पुत्र१पुत्रि२ननियत

बंधि रु नरेसभाऊ१९५।१७दिय जिन दुख पावहु सो जियत ॥४१॥

१चावल, अथवा गेहूँ ॥ ३॥ २पानवीडा३स्त्री पुरुष का हथलवा ४तांस की साड़ी

५दानों हाथ (हथलवा) छूटते समय ६ सोने की माला ॥ ३९ ॥ ७ कन्या के विवाह

में १४०। ८तोरणका हाथी ९ चाकर और कमीषों सहित १०दोली ११पांशों ही ॥४१॥

॥ दोहा ॥

बुल्लि सपिंड१सगोत्र२बलि, इंद्रसल्ल१९४१२कुल आदि३५ ॥

सवन सुनाये नेगसव, सब देहुव संवादि ॥ ४२ ॥

सव हट्ट६१न घर तवाहि सन, नियत भये सब नेग ॥

नदिय लुपन हम वृत्ति नृप, बांधि रीति यह वेग ॥ ४३ ॥

के हमरी१ हम बंट२कै, अकखी वृत्ति सु अत्थ ॥

भिन्न कतिक अपरन भई, सो सो नही समत्थ ॥ ४४ ॥

इम नेमिसिक१ अप्पि अब, नित्य२नेग नरनाह ॥

प्रतिबच्छर१ अवसर प्रथित, रचै सुनहु धुवराह ॥ ४५ ॥

जिनमैं हम पावत जितै, कहियत विन्नति कर्म ॥

श्रवनदेहु भूपति श्रवन, विजय१ धर्म२ जस६ वैर्म ॥ ४६ ॥

॥ षटपात ॥

मधु१ सित१ प्रतिपद१मिलन दम्भ ११९४नवँ अठ्ठ लगत दुवरा ॥

मन१ मोर्दक २१९५ गुनगोरि६ हेतु अंतहपुरतैं हुव ॥

पुनि इक१इक१सिरुपाव१३१९६महुर१४१९७सित१राधँ२तीजमत ॥

जिह्वा१अमा३० दम्भ५१६८जुग२मु पहु अंतहपुर संगत ॥

इम अट्ट१आदि सावन५अमा३०सव भोजन उपहार६१९९ सव ॥

रक्खी अनहँ पुणिगाम१५रुचिर तिथि जब रूपय७१२००पंच५॥

तव ॥ ४७ ॥

ज्यौ कुलदेविय जैजत दम्भ११८१२०१ईस१सित१छट्टी६दस १०॥

दिन नवमी९पुनिदम्भ११९१०२तेहु दस१० सान अग्न तस ॥

दसमी१० विजयादिवस महुर ३१२०१२०३दस१०दये महीपति ॥

१ कथन करके ॥ ४२॥४३॥२ अन्य लोगों की ॥४४॥ ३ सात्ताजा ४ प्रसिद्ध ॥४५॥५ यश के कवच ॥ ४६ ॥ ६ चैत सुदी एकम ७ नवीन वर्ष लगता है तब ८ लहुर ९ जगाने से १० वैशाख सुदी तीज ११ ज्येष्ठ वदि अमावास्या १२ समय ॥ ४७ ॥ १३ पुजते हैं तब १४ आसोज सुदि छठ और दशमी के दिन



\*प्रथित इक्षुसिरुपाव४।११।१०४ मुल्लवहु मेय महामति ॥

दस१०दम्भ१।१२।१०५दीपमाला३०दिवस अखिलानेग मनुजन

असन २।१३।१०६ ॥

जैहँ इम प्रदेय रानी जनन विदितखाद्यशरूपय२ वसन३।१८८

नियत पट्टरानी सु पक्क मोदक१।१४।१०७ मन पंचक ५ ॥

पंच५ दम्भ ४।१५।१०८पहुँचात इक्षुसिरुपाव५।१६।१०९अवंचक ॥

इम लघुरानी अखिल दुर्मन मोदक६।१७।११० रूपय ७।१८।१११

दुव२ ॥

भेजै तँहँ हम भोन धन्य सिरुपाव८।१९।११२इक्षुधुव ॥

जीरोति नाम यह नेग जिम तिथि दूजी२सुदि१३उज८तँहँ ॥

मंगलदम्भ१।२०।११३ पंच५रु सुमन जावक२।२१।११४ मिति मन

पंच५जैहँ ॥ ४९ ॥

अहछहीदतस अग्न देय थप्पिय रूपय२२।११५दस१० ॥

माघ११विसद१पंचमि५यजुगल२महुर२३।११६हि साधकजस ॥

होरी१५दिन आहरँ पुरटुंदा२४।११७किय पंचक५ ॥

कर्क४।१ मकर १०।२ सक्रांति असन १।१५।११८।१२६।११९ सब

जनन अवंचक ॥

जबजबहिफागखेलन जुरहिँ तव तव इक१उष्णीस १।२७।१२०तहँ

तुरा१।२८।१२१रु हार३।२९।१२२सुमननँ बितरि किय सु वृत्ति इम

कविन कहँ ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

जन्मदिवस नृपको जहाँ, महुर१।३०।१२३इक्षुअतिमान ॥

जिहँकुमरके जन्मपै, दम्भ१ ३१ १२४पंच५मित दान ॥ ५१ ॥

\*विदित १वड प्रमाण का ॥४८॥२ पके छुप लड्डू ३सरल चित्त से ४काती सु-

दी दौज ५ जव ॥ ४९ ॥ ६ छठ के दिन ७ होली के दिन की शिकार में ८ सो-

ने की ९ पगड़ी १० श्रेष्ठ मन से; वा फूलों के हार और तुराँ देकर ॥ ५० ॥ ११-

पाँचवी कुमर के १२ जन्म दिन (साकगिरह) पर १३ पाँच रुपये देते हैं ॥५१॥

इतर कुमारन जन्म अहै, दुव२दुव२रूपय३।३२।१२५ देय ॥  
 तजि रोगहिँ नृप न्हान तँहँ, महुर१।२३।१२६ द्वि२संख्या मेय॥५२॥  
 जिह१कुमरके न्हान जिम, रूपय२।३४।१२७पंचक रक्खि ॥  
 दुव२दुव२इतरन न्हानदिय, अप्पन रूपय३।३५।१२८अक्खि॥५३॥  
 बीस२० महुर १।३६।१२९रन नृपविजयँ, पुरुखन प्रति सिरुपाव २।  
 ३७।१३० ॥

महुर३।३८।१३१पँटसुत पंचपमित, चैलँ४।३९।१३२उचित जयचाव  
 इक१महुर४।४०।१३३ सन दंस१०अवधि, दम्म५।४०।१३३ खिलत  
 जय देय५।४०।१३३ ॥

इक१हय५।४१।१३४दँ नृप खिलत२।४२।१३५इक१, साह रीभलहि  
 अयेय ॥ ५५ ॥

महिखी१केर द्वि२रागमन, जँहँ पय लागत जावँ ॥  
 मिलैसुकवितियकोमहुर१।४३।१३६, पंच५इक१सिरुपाव२।४४।१३७  
 उभय२महुर ३।४५।१३८ सिरुपाव ४।४६।१३९ इक१, क्रम रानीजु  
 कनिठ ॥

इक१महुर५।४७।१४० सिरुपाव६।४८।१४१ इक१, जिह१ कुमर तिय  
 जिहँ१ ॥ ५७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

पटसव७४९।१४२रूपय८।५०।१४३पंच५, अप्पै कुमरानी इतर ॥  
 रीति यहै तँहँ रंच, हड्ड६१हेलि न न्हासहै ॥ ५८ ॥  
 जाया भ्रातन जेम, आवै घर मुख्य१रू इतर२ ॥  
 अँवर ९।५१।१४४ नाखकँ १०।५२।१४५ एम, अप्पै ते निज निज

१ जन्म दिन पर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ २ युद्ध में राजा के विजयी होने पर ३ पाद  
 पुत्र के युद्ध जीतने पर ४ चक्र ॥ ५४ ॥ ५ पाकी कुमरों की जय होने पर ६  
 दशाह स रीभ लेने के समय ॥ ५५ ॥ ७ राणी के जहाँ ॥ ५६ ॥ ८ छोटी राखी १० बड़े  
 कुँवर की बड़ी कुँवराणी ॥ ५७ ॥ ११ अन्य कुँवराणियों १२ हाथों के सूर्य १३ जय  
 अर्थात् इन नेगों में क्षति नहीं करते ॥ ५८ ॥ १४ भाइयों की स्त्रियों १५ वस्त्र १६ रुपये

उचित ॥ ५९ ॥

जिम ए सूचित जाइ, पितालय कुछ हेतु पुनि ॥

अप्पन आलय आइ, तँहँ पयलंगै कवितियन ॥ ६० ॥

अप्पै महिखीएह, तब तब रूपय१।५३।१४६पंच५तिन्ह ॥

अरु खिल ताहि अनेहँ, दे पयलंगत दम्म२।५४।१४७दुव२६१

द्वैरहि निवेदहिँ दम्म३।५५।१४८, मुख्य१कुमर जेठी१जनी ॥

क्रम पयलंगन कम्म, दम्म४।५६।१४९इक१दे सेस सब ॥ ६२ ॥

रखिख नेग इहिँ रीति, सब हहु६१न घर तान ससि१४९ ॥

पुनि सोलह१६।१६५सह प्रीति, देस प्रजाप्रति किन्नदढ ॥ ६३ ॥

कर्षुर्क धान्यकुमाइ, जो घरआनैँ मन जिते ॥

उनतैँ क्रम कठि आइ, सेर१।१५०तिते हमरे सदन ॥ ६४ ॥

इच्छु१दसंगुल२अंब३, साका४दिन विक्रैय समय ॥

कठि लव२।१५१दसम१०कंदंब, सब पहुँचैँ हमरे सदन ॥ ६५ ॥

लहत ज्येष्ठ१सुत लाह, पंच५दम्म३।१५२ भेजहिँ प्रजा ॥

इतरन मैव उच्छाह, दुव२दुव२रूपय४।१५३देय सब ॥ ६६ ॥

दम्म५।१५४पंच५दुव२दम्म६।१५५, याही क्रम तिन्ह व्याह अरु ॥

करन असन हम कम्म, सामग्री७।१५६अँदा१दि सब ॥ ६७ ॥

हालिक१काँरु२बिहाइ, श्रीलैँ खिलन जन्मते सुता ॥

इक१रूपय८।१५७घर आइ, व्याहनतस जुग२दम्म९।१५८बलि।६८।

गुड१घृत२आदिक गैल, बिक्रय बट लव१०।१५९बारहम१२ ॥

विकि मैहिषी१गोरबैल३, बीसम२०लव११।१६०उपदाँवनैँ ॥ ६९ ॥

॥ ५६ ॥ १ पिता के घर २ किसी कारण से ॥ ६० ॥ ३ राणी ४ समय ५ रुपये

॥ ६१ ॥ ६ भेट करते हैं ७ माता ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ = घरसे लोग ॥ ६४ ॥ ९ गन्ने

१० खरदूजा ११ तरकारी आदि १२ बेचने के समय १३ दशवैँ अंश का खनूह

निकालकर ॥ ६५ ॥ १४ जन्म ॥ ६६ ॥ १५ आटा ॥ ६७ ॥ १६ हल हाँकनेवाले

और १७ कमीशों को छोड़कर १८ बाकी के धनवालों के पुत्री होने के समय

॥ ६८ ॥ १९ बारहवाँ हिस्सा २० मैस २१ भेट ॥ ६९ ॥

इतपरदेसिन आइ, वारन१हय२मैय३मुख विकत ॥

क्रम लव सतम१०० कढाइ, सठिम६०तिम तीसम३० सहित१॥

१२।१६१।२।१३।१६२।३।१४।१६३ ॥ ७० ॥

बनिज पैटा१दिक वस्तु, व्यापारिन देसि१न विकत ॥

अंस१।१५।१६६सोलहम१६अस्तु, अस्तु बिदेसि१न अष्टम८सुर।

१६।१६७ ॥ ७१ ॥

इम दिल्लियनृप अक्खि, सँसदबिच ए १६७नेग सब ॥

रीति निघत पर रक्खि, स्वीकारिने हड्ड६१न सबन ॥ ७२ ॥

॥ युग्मम् ॥

अवनि रही घर अढः, अढः लही उद्धत अनुज ॥

निज पालन सँनढ, भूप तँदपि भाऊ१९५।१ मयो ॥ ७३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

गार्ग१प्रसव२संबंध३कैग्रह४, वैच्छरइक१बिच दिवस५चउदह१४॥

कक०१।१५कर१०।२रवि गमन६फाग७क्रम, सहिपा१दिन जँन्माह८

सनोरम ॥ ७४ ॥

सहिपा१दिन गँद तजि न्हँवन मह ९, इम सहिपा१दिन जुँ

विजय अँह१० ॥

सुपहु लँहँ जवरीक११साहसन, सँहिपी१आदि डिगमस मेलन१२

पुनि पिउँहर जाइ रु आवनपर१३, बंस नेग खिल ए तेरह१३वर॥

अर्जनधान्य१।१४फलादि२।१५विक्रन इम, तनपादिने प्रसव ३।१६

रु विवाह४।१७तिम ॥ ७६ ॥

विकत गुडा१दि ५।१८गवा२दि६।१९ समै वर, परदेसिन गज१मुख

विक्रय७।२०पर ॥

१हार्थ २ ऊट आदि ॥ ७० ॥ ३ वस्त्र आदि ॥ ७१ ॥ ४ मन्मा में ५ चंगीकार

निगा ॥ ७२ ॥ ६ पृथ्वी ७ सँयार ८ तो बी ॥ ७३ ॥ ९ जन्म १० लगान ११ वि-

वाह १२ एक वर्ष में १३ जन्म दिन ॥ ७४ ॥ १४ नैराग्य होकर १५ दिन १६

राणी ॥ ७५ ॥ १७ पिता के घर १८ धान इकट्ठा करने पर १९ कन्याओं के ज-

दुकूलांशदि-विक्रपन॥२१॥ कर देसि१ न, पावतलाभ-तस१॥२२॥ हि  
परदेसिन ॥ ७७ ॥

करदेसिन१परदेसिन२अन्त्यानुमासः ॥१॥

ए नव६समय प्रजा बलि अप्पन, सब बाईस२२स्ववृत्ति समप्पन  
द्वि२धा गर्भ१सब असन नेग दुव२, होते द्वि२धा-हि प्रसव२ पंचक  
२॥५॥७ हुव ॥ ७८ ॥

कनी गर्भ३ दुव२दुव२॥७॥९ पूरवक्रन, प्रथम१पुत्र भव४ नेग नवक  
९॥१८ प्रम ॥

हुव ए नेग नव९हि हमरेदी, सुनहु खिलहु सब६बंट सनेदी ॥७९॥  
छुरिकाबंध५नेगइक११९छजै, कुमर प्रथम१सगपन६चउ४१२३कजै  
लघु१सुतादि भव१ जुन सगपन२॥७॥लग, मिलैमकल यह १॥५॥२५  
तारतम्य मग ॥ ८० ॥

प्रथमा१दिक सुतव्याह२॥८॥तास३०॥५४पुनि, सदा सहस तैंहँ च्यारि  
४लेहु सुनि ॥

गृहजन असन१ रु खंभ बद्ध गज२, वीरमुष्टि३ अरु द्वि२गुन त्याग  
४ ब्रज ॥ ८१ ॥

दुहिता नव९इक१॥५५॥ रु सगपन१०दुव२॥५७॥ हित ए द्वै२हि दुलह  
घरतैं हुव ॥

अष्टाईस२८॥८५॥कन्यका उपपम११, प्रभु निजघर१तैं देय जथाप्रम८२  
पुनि वरघर२तैं अष्ट८नियतपन, लिक३१३१॥८८॥सब६बट पंचक५॥८॥  
३६॥९३ हम तीन३न ॥

चउदह१४ समय१५ नेग चउबीस२४॥११७॥ हि, महींदिन किय प्रति-  
अब्द१महीसहि ॥ ८३ ॥

न्म ॥ ७६ ॥ १ वल्ल आदि ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ २ जन्म ३ प्रमाण ॥ ७९ ॥ ४ छुगी चां-  
धने का ५ विचार ॥ ८० ॥ ६ समूह ॥ ८१ ॥ ७ विवाह ॥ ८२ ॥ ८ उत्सव के  
दिन ९ सालाना ॥ ८३ ॥

दुव१११९ संक्रांति२६ फाग२७ त्रय३।२२ दृढदय, तिम नृपा१दि३ज-  
न्माह३।३० नेग त्रय३।१२५ ॥

अरुज नृपा१दि३ न्हानत्रय३।३३ त्रय३।१२८ इम, जय३।३६ नृप१ मुख्य  
त्रय३ करतपंच५।१३३ जिम ॥ ८४ ॥

प्रभु दुव३।१३५ साहरीभ प्रभुपावत१।३७, खट६ हि१ द्विरागम ६।४३  
दसक१०।१४५ दिखावत ॥

रानि२ न कुमरानि४ न ठकुरानि६ न, ए गुरु१ लघु२ पन छ६ खिनन  
रनइन ॥ ८५ ॥

पिउहर१० है चउ४ गेह पधारत१।४७, महिखी१ प्रमुख४ देत चउ४।  
१४९ ध्रुव मत ॥

नेग तानभू१४९ मित नरनायक, बंधे निजकुल१ वृत्तिविधायक।८६।  
सोलह१६ सनियम बंधि प्रजासन, सहिप दिवाये हमहिं महामन ॥  
सव कृषिधान्य१।४८ बंट१।१५० चालीसम४०, दसम१ फला१ दि१।३।  
४९ न बंट१।१५१ अरिंदम ॥ ८७ ॥

आदि१ रू इतर२ सुतनके संभर्व१।१५१, अप्पै दम्म१।२।१५३ पंच५।  
दुव२ उच्छव ॥

द्वि२ विध व्याह१।२।१५३ तिनकेहु१।२।१५५ पंच५ दुव२, हमरे सब-  
मनुजन भोजन३।१।५६ हुव ॥ ८८ ॥

हलिय१ कारु२ विनुसुताजन्म१।५४ हित, इक्क१।१।१५७ रू व्याह१।५८  
दम्म१।५८ दुव२ अंकित ॥

वेचिगुड़ा१ दि१।५६ वारहम१२ लव१।१५९ बट, बीसम२० वेचि१।१५७ ग-  
वा१ दि१।१६० विसंकट ॥ ८९ ॥

वेचि१।५८ द्विरद१ लव१।१६१ सतम१०० विदेसिन१, सहिम६० लव१।  
१६२ विक्रय१।५६ हय२ सेसिन ॥

१ दृढ दयावाले ने २ जन्म दिन ३ नैरोग्य ॥ ८४ ॥ ४ हे युद्ध के सूर्य ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

५ नियम सहित ॥ ८७ ॥ ६ जन्म ॥ ८८ ॥ ७ हल हांकनेवाला ८ कमीश ॥ ८९ ॥

बट१।१६३तीसम३०वांसंत३न विक्रय१।६०, बेचि१।६० पटा१दि अंस  
१।१६४अष्टमऽव्यय ॥ ९० ॥

देसि२नलव१।१६५ सोलहम१६ पटा१दि६१न, दूढ ए१६५ नेग करे  
नृप जा दिन ॥

चउदह१४दिन प्रतिअब्द१तेहुचुनि, समयनकी संख्याहु लेहुसुनि९१  
सब अवसर इकसठि६१संकलन, सोलह१६तँहँ ए नेग प्रजासन ॥  
तानइंदु१४९ मित नेग स्वकुल१ तत, सोलह१६ सह पैसठि अग्न  
सत १६५ ॥ ९२ ॥

॥ दोहा ॥

छितिप बांधि इम नेग छुद्धि, वृत्तिधरन बिस्वास ॥

पठये सब बुंदीपुरी, रक्खि मुद्धित गुनरासि ॥ ९३ ॥

हमरे पुब्ब पितामहहु, दै आसिख लहिदान ॥

सुकविखेम१६८।१।१अरु राम१६८।१।२सह, बिलसे आइ लवान ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दीभू-  
पभावसिंहचरित्रे ग्रन्थकर्तृसूर्यमल्लाद्याश्रितनियतवसुप्रतोलीपात्रत्व-  
त्यागादिवर्णनं तृतीयो मयूखः ॥ ३ ॥

आदितस्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मह समाढय बाराँ१मऊ२, भूप मयो भगवंत१९५।३ ॥

अग्रज१भू लिय छिन्नि इम, अनख बढाँइ अनंत ॥ १ ॥

१ ऊँट ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ९४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
भावसिंह के चरित्र में ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) आदि नेगियों के नेग और पोलपा-  
त्र के त्याग आदि के वर्णन का तीसरा ३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से  
२३० मयूख हुए ॥

२ धनवान् ॥ १ ॥

बसुधा साह सहाय बिनु, लैतो छिन्नि सु लुद्धं ॥  
 जबहु बीरपन जानते, बदि यह धर्म बिरुद्ध ॥ २ ॥  
 पै जिम सरभसहाय पागि, रुकर लै सिंह ३ बिभाग ॥  
 भूमि अदः लहि सम भयो, रक्खि भूपपन राग ॥ ३ ॥  
 तब भाऊ १९५१ भूपहु तजी, प्रथित अनुजसन प्रीति ॥  
 बहुरि दुश्चातन मिलन बिधि, न हुव मान धननीति ॥ ४ ॥  
 भीरु सुजा ४०१२ इतजो भज्यो, पहिलै गंगापार ॥  
 जय १ अनिरुद्ध २ दलैल ३ जब, रहेरोध रखवार ॥ ५ ॥  
 साहभयो अवरंग ४०३ सुनि, एहु मिले सब आनि ॥  
 सुजा ४०१२ कटक उततै सज्यो, पुनिदैं मुच्छन पानि ॥ ६ ॥  
 पूरव पाटलिपुत्रतैं, राजमहल अभिराम ॥  
 पुर गंगातट जो प्रथित, तह आयो यह ताम ॥ ७ ॥  
 व्है तथहि दल हाजरी, चढ्यो सु दर्प मचात ॥  
 अहो अनुज गद्दी गद्दी, सल्य सु उर न समात ॥ ८ ॥

॥ पद्धतिका ॥

सुनि आत सुजा ४०१२ बल बहुल संग, अवरंग ४०३ चढ्यो इततैं  
अभंग ॥

संभंवित भूप हाजरी लसात, भाऊ १९५११२ भगवंत १९५३१२ हु  
संग भ्रात ॥ ९ ॥

इम समुख मिले उद्धत असेस, दुव २ कटक द्वेगैखजुवा प्रदेश ॥  
 दुश्दिनरु दुश्चरति तोपन दगाइ, ठहरे बिदूर बिच जुद्ध ठाइ ॥ १० ॥  
 तीजे ३ दिन बाजिन बग्ग तानि, जुग चैक्र जुरे बल १ संक्र २ जानि ॥  
 आरुढ गजन भाई उभैरहि, ललकारत पहुँचे निजन लैहि ॥ ११ ॥

१ लोभी ॥ २ ॥ २ सिंह की ३ राजापन से स्नेह रखकरा ॥ ३ ॥ ४ विदित  
 ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ५ पटना शहर से ६ प्रसिद्ध ७ तहां ॥ ७ ॥ ८ आश्चर्य है कि  
 ॥ ८ ॥ ९ बहुत सेना के साथ १० जिनका हाजर होना सम्भव था वे ॥ ११ ॥ ११  
 खजुवा नगर के पास १२ बहुत दूर ॥ १० ॥ १३ सेना १४ इन्द्र और बलराजा ॥ ११ ॥



इतरहु इतउत२के कति अमीर, बेतंडेन आरुहि मिलन वीर ॥  
हुसियार सुजा ४०१२कैदल हरोल, लहि अवसर भारे खग लोल  
अवरंग ४०१३ कटक कछु सिथिल आस, तिमातिम इत क्रमक्रम  
बढत त्रास ॥

विच पैठि सुजा ४०१२ के भटन ब्रात, दृढ सैय चलाइ कछु जय  
दिखांत ॥ १३ ॥

इमपिल्लि सुजा ४०१२ के इक अमीर, सन्निधि अवरंग ४०१३ हि लै  
सधीर ॥

गज तास स्वंगज टकर लगाइ, जानुन जकाइदिय सीघ्र जाइ १४  
चीस१रु पुरीसं२इम ईम अचेत, बेपैन२लग्यो सु घुम्पन२व्यपेत ॥  
नो होइ पैलायन सक्ति जाहि, तो जाइ दूरभजि भजि सु ताहि १५  
त पांत अति असह एह, दिय स्वामि अनुज अरि द्विरददेह  
अवरंग ४०१३ चाहिय गिरि चढन अँव, गिनि अँसु बिपत्ति ईभपर  
बिगँव ॥

अवरंग ४०१३ बीर तँहँ इक अँलीह, ललकारयो स्वामि सु तज  
लीह ॥

गिरिबो यहगज१तँ तखत२तँ सु, हत्थी रहँहि निजहिहँ हैं सु १७  
ईभ१ही यह दिल्लीपद२ अज्ज, करिये नताहि तजि लजि कुँकज्ज

१ और भी २ हाथियों पर सवार होकर ३ चपल ॥ १२ ॥ ४  
ढीला हुआ ५ समूह ६ हाथ ॥ १३ ॥ ७ औरंगजेब को सक्षिप लेकर  
८ उस औरंगजेब के हाथी के अपने हाथी की टक्कर लगाकर ९ घुटनों के प-  
ल गिरा दिया ॥ १४ ॥ १० लौट करके ११ हाथी १२ कांपने लगा १३ दुर्गति  
होने से १४ भागने की शक्ति होती तो ॥ १५ ॥ १५ स्वामि के शत्रु छोटे भाई  
औरंगजेब के हाथी ने १६ औरंगजेब ने हाथी से गिरकर घाड़े पर चढ़ना चा-  
हा १७ प्राण का १८ हाथी पर १९ गँव रहित ॥ १६ ॥ २० बिना मार्ग से अर्थात् से-  
षक का स्वामि से यह कड़ने का मार्ग नहीं है तो भी उसने ललकारा २१ यह  
हाथी से गिरता है सो तखत से गिरना है २२ हाथी अपने नीचे रहने से ही त-  
खत भी अपने नीचे रहेगा ॥ १७ ॥ २३ यह हाथी २४ छोटा कार्य

उज्जैन की दारा ४०१२ करि यहैहि, बन बनन भ्रमत बिपदा बहै-  
हि ॥ १८ ॥

है मरन१ जियन२ जय३ दैव हथ, सब स्वीय लखहिं गजथित  
समर्थ ॥

भनि मृत कि१ भग२ इम सून्य इकिख, सब लगहिं मगग उदा-  
व सिक्खि ॥ १९ ॥

तिम कहिय गजाजीवहिं प्रतर्जि, इमकोँ उठाहु कछु धिज्ज अ-  
र्जि ॥

घन रीक१ लेहु तो जय घुमंड, देहु न उठाइ तो प्राणाबंड२ ॥२०॥  
वृत्तांत कहंत लगत विलंब, काल सु हुव दुद्धर डर करंबे ॥

जो लौं गज उठहिं पुब जास, प्रदुत अनीक हुव तास पास ॥२१॥  
मिथ्याहि नैष्ट अवरंग४०१३१मानि जित्यो सुजा ४०१२२ हि जि-  
य सत्य जानि ॥

तहँ नृप१ नबाव२ बहु बदलि तोर, अति त्रस्त भजे पति सिविर  
ओर ॥ २२ ॥

जसवंत जोधपुरभूप जत्य, मन्त्रिसु सुजा४०१२ बै हुव पति समर्थ ॥  
इहिं धूर्त अचानक सिविर आइ, सन्नद स्वीय सब बल सजाइ ॥  
क्रम लुटि साह वैभव१ कितोक, जु मिल्यो वरोध जेवर२ जितोक  
लौ वित्त जोधपुर गो निलज्ज, अवरंग४०१३ न जान्यो जियत अ-  
ज्ज ॥ २४ ॥

१ उज्जैन के युद्ध में दाराशिकोह ने हाथी से उतर कर ॥१८॥ अपने लोग ३ समर्थ  
४ हाथी को खाली देखकर आप का भरा हुआ या भगा हुआ कहकर सेना  
के सधलोग ५ भागे ॥ १९ ॥ ६ महाबत को ७ धमका कर कहा ८ कैय  
देकर ॥ २० ॥ ९ यह बात कहते वार जागती है १० वह समय ११ अय का  
बसह होने के कारण दुर्धर हुआ १२ सेना भागी ॥२१॥ १३ झूठे ही औरंगजेब  
को मरा हुआ मानकर औरंगजेब को १४ डेरों की ओर १५ बच ॥२३॥ १६ ज-  
नाने में १७ घन १८ आज औरंगजेब को जीवित नहीं जाना ॥ २४ ॥

खल एह सुजा ४०।२ जय करत रूपात, जब लुटन लग्यो अर्ध  
जात ॥

बुंदीस सिबिर, जब नरन ब्रात, हो सोहु सुजा ४०।२ जय सुनिसु-  
हात ॥ २५ ॥

भगवंत १९५।३ सिबिर संजुत स्वभाइ, लुटतहुव जँहँतँहँ प्रसभ  
लाइ ॥

मन बिगरे सबके सिबिर माँहि, जन बहु पँलाइ दिसदिसन जाँहि  
इम डसर मच्यो इत सिबिर आनि, तिम उत रन २ तिहिँ भट को-  
प तानि ॥

उतरन दयो न इभँतँ स्वईसँ, रु कहिय इभँपँलाहिँ बितँत रीसा ७२।  
इभँकोँ उठाइकै लेहु इष्टँ, अँसु तव कै लैहोँ २ रे अनिष्ट ॥

बिसवास १ धिज्ज २ बल ३ मन ४ बढाइ, इँभ सिथिल निठि तिहिँ  
दिय उठाइ ॥ २८ ॥

उठत मतंग तापर बइड, दल १ अप्प २ अप्प १ दल २ बिकल दिह ॥  
गजकै गजटकर गो लगाइ, जो मिच्छ हन्योँ भगवंतँ १९५।३ जाइ ९२।  
भाऊ १९५।१ नरेस गिनि स्वामि भाव, कछु दूर खरो न भजन  
कहाव ॥

अवरंग ४०।३ कहिय लखि कवन एह, निज बुल्ले भाऊ १९५।१  
यह सनेह ॥ ३० ॥

बुल्लयो सु खरो यह सरबिलंद, करिहँ फतेहि तो किति कंद ॥

अवरंग ४०।३ अखिख इम पीछु पिल्लि, किय हलल सुजा ४०।२ पर  
१ प्रसिद्ध २ धन ३ बुन्दीश के डेरों लें ४ मनुष्यों का समूह ॥ २५ ॥ भगवन्तसिंह के  
डेरों सहित ५ अपनी इच्छानुसार ६ हठ करके ७ भागकर ॥ २६ ॥ ८ उपद्रव ९  
क्रोध करके १० अपने स्वामी औरंगजेब को हाथी से नहीं उतरने दिया ११  
महावत को १२ क्रोध फैलाकर ॥ २७ ॥ १३ मन चाहा फल १४ प्राण १५ हा-  
थी को ॥ २८ ॥ १६ हाथी के दफ़र लगानेवाले म्लेच्छ को भगवन्तसिंह ने मा-  
रलिया ॥ २९ ॥ ३० ॥ १७ कीर्ति का मूल १८ हाथी को बढाकर

सरन किल्लि ॥३१॥

हड्डा ६१ धिप भाऊ १९५ तस हरोल, बढिगो लै अखिलन देत बोल  
 बुंदीस दल १६ निजदल २ बिसिष्ट, दिल्लीस जुरघो स्वभंटोपदिष्टा ३२।  
 अवरंग ४०।३ जिपत लखि सुभट ओर, ते दूर दूर हे प्रहतजोर ॥  
 मिलि तेहु सबै रचि सख मार, मिलि जुटे अरिसिर पटकि भार ॥  
 अवरंग ४०।३ नियति अनुकूल आइ, इक चित जुरे सब छक अघाइ ॥  
 भाऊ १९५।१ अधीस भुजबल भरोस, सो गोहि पैठि परबल सरोस  
 चउ ४ भेद लरन प्रहरन चलंत, छिति अंग रंग १ नभर उच्छलंत ॥  
 सामीप्य लयो गजथित सुजा ४०।२ सु, इहाँ १ इमरन जुरे हय १ ह-  
 यरन आसु ॥ ३५ ॥

बुन्दीसहिँ अखिय साह बीर, व्है तव भुज रैन १ खनि २ विजय १  
 हीर २ ॥

सद्धु तिम खल जिम बढि सकैन, अवसर यह मुनसब बढन अैन  
 सुनि नृप प्रसन्न हलकारि स्वीय, गय भूपि सुजा ४०।२ सिर रय  
 गरीय ॥

जिम परत किलकिला १ सैफर २ जानि, तिम पहुँचि सनु गंज रँज  
 प्रतानि ॥ ३७ ॥

पीलुँ १ हिँ प्रहारि खैर भारि खग, आंधोरन मस्तक किय अलग  
 दूजी २ हु बाँजि भूपा दिवाइ, आघात सुजा ४०।२।३ सिर कियउ

१ बाणों से कीलकर सुजा पर हला किया ॥ ३१ ॥ २ सब को ३ युक्त ४ अपने वीरों से  
 उपदेश पाकर ॥ ३२ ॥ ५ निर्बल होकर ॥ ३३ ॥ ६ भाग्य ॥ ३४ ॥ ७ मुक्त, अमु-  
 क्त, मुक्तामुक्त और यंत्रमुक्त इन चार प्रकार के द शस्त्र चलते समय ९ नज-  
 दीक १० हाथियों के सवारों का हाथियों के सवारों से और घोड़ों के सवा-  
 रों का घोड़ों के सवारों से ११ शीघ्र युद्ध हुआ (यहां हाथियों का हाथियों से  
 और घोड़ों का घोड़ों से लड़ने में लक्षणा से सवारों का ग्रहण है) ॥ ३५ ॥ १२  
 युद्ध रूपी खान में विजय रूपी हीरा १३ स्थान ॥ ३६ ॥ १४ अपने लोगों को  
 बढाकर १५ बड़े वेग से १६ मच्छी को देखकर १७ रजोगुण फैलाकर ॥ ३७ ॥  
 १८ हाथी को १९ तीक्ष्ण २० महाबत को २१ घोड़े को भूप दिलाकर ॥ ३८ ॥

आइ ॥ ६८ ॥

सो खग खवासीके सिपाह४,\*अड्डन पर भेल्यो अखिख बाह ॥  
आधोरन आसन पुनि सु आइ, प्रेरतहुव प्रीलुहिं छिद्रपाइ ॥३९॥  
प्रभु १ बाहु सुजा४०१२ सर इक पइठ, बलि भंपि गयो ढिग हय  
वइठ ॥

गजपेरक १ अग्ररहु दियउ गोरि, जान्यो सुजा ४०१२हु हनिहैहि  
हेरि ॥ ४० ॥

हय १ लिय तिहिं गय २ तजि कछु सहाय, कुंजर लखि परभट  
सून्यकाय ॥

जिहिं जानि नष्ट अवरंग४०१३जेम, तासहु दलभगो पुव्व तेम ॥४१॥  
इहि अंतर भो इत भानु अस्त, मचि अंधकार छाये समस्त ॥  
पर १ अप्यन २ जन बोध न परंत, हुव त्रास सुजा४०१२ हिय आस  
हंत ॥ ४२ ॥

नृपकें भतीज तैंह रूप १९६१२ नाम, जजाउरपति बढि उचित  
जाम ॥

अरि साहसुजा४०१२को जो वजीर, मारयो सु इवादतखान १वीरा४३॥  
उदावे मचतठहरयो न एह४०१३, निज असु लौ भगो रनअनेहें ॥  
बुंदीसकेहु कनका १९५११दि बीर, साधक सहाय हुव बिजय सीर  
अवरंग४०१३केहु खिलभट अनेक, इहिं जय हुव भांगो चित्त एक १  
पै हहु६११ ताहि गज २ सह पिराई, गजपाल १ खवासीभट २ गि-  
राइ ॥ ४५ ॥

\*हाल पर १ महावत के आसन पर आकर २ हाथी को ॥३९॥ राजा भाऊसिंह  
के भुज पर सुजा का एक तीर लगा ४ दूसरे महावत को भी ॥४०॥ सुजा हाथी  
छोड़कर घोड़े पर चढ़ा २ हाथी को खाली देवकर ३ जिस प्रकार औरंगजेब का  
मरा हुआ जाना था तिस प्रकार सुजा को भी मरा हुआ जाना १ पहिले की  
भांगि ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ८ जहां ॥ ४३ ॥ ६ भागना १० प्राय ११ युद्ध के समय  
॥ ४४ ॥ १२ पाकी के वीर एक चित्त होकर १३ बंद करनेवाले १४ पीड़ा देकर  
१५ महावत ॥ ४५ ॥

गजतैं सु गिरायो बिकल गत, \*धमसान मचायो प्रात घत ॥  
 पति न लाखि परना प्रद्व परंत, इभः बाजिरहे कति रंगअंता ४६  
 इकः सोहि खासगज रु दुवरओर, त्रिगजीश्लिय नृप बल बिजय  
 सोर ॥

बलि तिनमें इकपर रजत बंब ४, किय निज तिम तिथि १५ तिम  
 हय कदंब १९ ॥ ४७ ॥

त्रयः गज हय पंदह १५ लुटि ताव, भास्यो अवरंग ४० ॥ ३ हिं जयद  
 भाव १९५ ॥ १ ॥

पायो सता १९४ १ जु जगजस प्रसारि, बलि मुनसब देवे सुहि  
 चिचारि ॥ ४८ ॥

सतकारि सराहत रीकिसाह, भाऊ १९५ १ प्रति भाखिय वाहवाह ॥  
 बारन त्रय इतिथि १५ हय रजत बंब १, लूटहु दई सु कहि जय बलंब  
 भूपहु प्रसन्नहुव अडर भासि, बचनन निज कथन नन बिकासि ॥  
 कासिब सुख निच्छन अकिख किति, बुल्ले मुगलेसहि समय बित्ति  
 अब होत सकल हय जय उपेत, खेलन रन जित्यो कोन खेत ॥  
 प्रभु अप्प लखत जिहि बल प्रसारि, इभतैं सु पंदह दिन्नो उतारि  
 तासो बै उचित इह बुल्लि ताहि, अप्पन मन जो कछु देहु ग्राहि ॥  
 जवनेस बदिय तुम कहत ज्योहि, सह बिजय भये बुंदीस सोहि  
 सिविरन अब पाकों अप्पि सर्व, अनुमत सराहि गिनिहै अखर्व ॥  
 रन जिति इम सु दुंदुभि घुराइ, पहु भाऊ १९५ १ जय अवलंब पाइ  
 सिविरन बिस आवत सुदित साह, पथमाहि सुन्यो आगस प्रवाह

\*युद्ध कोपने खासी को नहीं देखकर शत्रुओं में भागण पड़ी युद्ध भूमि  
 के अन्त में ॥ ४६ ॥ १. तीन छाधियों का समुदाय ? चांदी का नगरा २ पन्द्रह  
 घोड़ों का समूह ॥ ४७ ॥ ३. तहां ४ जय देनेवाला भावसिंह ॥ ४८ ॥ ५. हाथी  
 ६. चांदी का नगरा ७ जय का अवलम्ब कह कर ॥ ४९ ॥ ८. आदि ॥ ५० ॥ ९. सहित  
 १०. आकर ॥ ५१ ॥ ११. अब ॥ ५२ ॥ १२. हेरों में १३. उत्साह करने की प्रशंसा  
 करके १४. बटा ॥ ५३ ॥ १५. अपराध का

बुंदीस \*सिबिरके जनन जात, खलभावं विभव लुट्योहि ख्यात  
मन्नत जसवंतहि जड निमित्त, बुंदीसहि लोलुभ चाहिय बित ॥  
किय प्रथम लूट जसवंतकूर, सिबिरस्थ तदपि बुंदीस सूर ॥५५॥  
करते जो संगति दोस कष्ट, भगवंत१९५॥३सिबिरहोतो न भष्ट॥  
बलि खास सीर२खी पुर३वजार४, सब लुट्टिन करते लुप्त सार५६  
जसवंतसौहु ए बढत जाव, भगवंत१९५॥३विभव लुट्टन प्रभाव ॥  
रन चहत सुजा४०॥२जय मच्छरीक, अब जानिपरिय लुट्टत अनीक५७  
न पिहित जो व्है इन्ह नृप निदेस, क्यों मंतु करै तो असह एस ॥  
अवरंग४०॥३सुनत यह सिबिर आइ, प्रजस्यो कसानुं जनु आज्य पाइ  
सासन दिय तोपन पिछि साह, भाऊ१९५॥१कैहँ भुंजहु गुरु गुनाह  
पाये भगवंत१९५॥३हु दुवरप्रहार, तिहिँ करहु स्वस्थ तम बैद्यवार५९  
बुंदीस सिबिरजन इक१वचैन, अखिलान पहुँचावहु समन अैन ॥  
यह सुनि लौ तोपन तस अनीक, रिसरस बस बेढिय संभरीक६०  
उतरयो इत भूपति सिबिर आनि, मन लुट्टन आंगस असह मानि  
लुंटाकनै धिक्करि बंधि लैन, दृढ किन्न जथोचित दंडवैन ॥ ६१ ॥  
जिहिँ चविय आतताइन सजोर, मूढन किय जयश्रम व्यर्थ मोर ॥  
पाये प्रहार परभटन पारि, हत्थी तजिगो भजि अरि सु हारि ॥६२॥  
सो मम जस दुर्लभ दलन सज्ज, असुदंड सहहु फल सकल अज्ज ॥  
जिन्ह इनन खिलान दै हुकम जाव, तोपनगन बिटिय सिबिरताँव  
हो सज्ज नृपहु लौ असि सदायै, निजभटन कहिय अब मरन न्याय

\* डेरों के लोगों के । समूह ने ॥ ५४ ॥ † कारण § अत्यन्त लोभी १  
डेरों में ठहरे हुए ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ २ जहाँ ३ चहुवाख ४ बुरा ॥ ५७ ॥ ५ राजा  
की इस आज्ञा नहीं होती तो नहीं सहने योग्य अपराध क्यों करते ६ अग्नि  
७ घृत ॥ ५८ ॥ ८ तोपें भेजकर ९ बड़े अपराध से १० बहुत नैराग्य ॥ ५९ ॥  
११ डेरों के लोग १२ यमराज के घर १३ चहुवाख को घेरा ॥ ६० ॥ १४ अप-  
राध १५ लूटनेवालों को धिक्कार देकर ॥ ६१ ॥ १६ कहा १७ आततायी लोगों ने  
१८ विजय के परिश्रम को ॥ ६२ ॥ १९ प्रायों का २० जहाँ २१ तहाँ ॥ ६३ ॥  
२२ खड्ग को सहाय लेकर

पुनि आतताइगन बुलिपास, अक्खिय अवहै इक १ मरन आसा ६४।  
बचिहैं तो देंहें दम बहोरि, जितने जस भुजबस लेहु जोरि ॥

कति भटन अरज किय नैय प्रकास, पटकहु अपराधिन साहपास  
नृप कहिय मोहि दम दें नीति, इहिं तुम मर्त जिय भय कुजस  
इति ॥

तौहू कति सुभटन प्रसभ तानि, अक्खिय देहेला दिष्टि आनि ६६।  
इत हम अपराधिन करत दूर, व्है इष्ट तिमहिं सखव हजूर ॥

जिन किन्न अरज पच्छहु जाइ, तिन्हतर्जि साह दिय बध बताइ ६७।  
इत कहिय आइ मन्नी न एह, नृप इत निज तर्जें नीति नेह ॥

बाहर सु कहि बाहन बिहीन, लौ निजगन मन पन सरन लीन ६८।  
अक्खिय इक १ पहिले तोप वार, सहि पीछें आरहिं निसित सार

चाहें यह जीवन आरु चाहि, सोहैन रहै इम आसि समाहि ६९।  
पहिलें तुम सखहु स्वामि पच्छें, मारहु पुनि हमकहें मिलि सखच्छ

अतिघोर अज्ज यह जवन अग्नि, जहें को पंतंग हम जरन जग्नि  
पुनि यह उदंत गय साहपास, अति क्रुद्ध तबहु हंताहि आस ॥

सासन यह तीजो ३ घोर सोधि, बेलमें हुय हाहा भय प्रबोधि ७१।  
बहु साह सान्य तहें दुवरे नवाव, सिविरनैथित जय १ बध २ गि-

नि हिसाव ॥

लुंदास सिविरविगै कडत बेर, अक्खिय कलु ठहरहु नहिं आवेर ७२।  
सन्नेन लाठ तो देवाय संग, आचरि मरि करियो जस उदंग ॥

तोपनअव्यंछहु बुलित नत्य, अरु अक्खिय ठहरहु बुलित अत्य

१ लुंदावालों के समूह को पास बुलाकर ॥ १४ ॥ २ देख ३ नीति ॥ १५ ॥

तुम्हारा सलाह ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ तीक्ष्ण स्वप्न ॥ २० ॥ २१ पक्ष २२ अस्त्र

(सन्मुख) = आज ॥ २० ॥ २१ तुलान्त २० मारनेवाला ही दुआ २१ सेना में

॥ २२ ॥ २३ दोनों में स्थित २३ ठेरे के पास निकलते समय ॥ २३ ॥ २४ अपने

मर्ग (मरने मारने) का २५ आचरण करके २६ तोपखाने के दारोगा को ॥ २७ ॥



जोलौं हम विन्नति करहिं जाइ, भ्रमि तोलौं न करहु हुकम भाइ  
जंपिय सकोप तिन दुहुँ २ न जाइ, प्रभु गर्बहु तानक दु२ जय पाइ ७४  
दारा सो सत्रु रु उचित दायं, सो दूरभयो हिंदुन सहाय ॥

भग्नो सुजा ४०।२ हु तिन्ह त्रास भार, तिनको न इनहु गिनि अ-  
प्रतारै ॥ ७५ ॥

प्रभुके पिता ३९।१ हु बैलि विद्यमान, दारा ४०।१।२ सुजा ४०।२।३  
हुं अरि नय निदान ॥

रिपुवै कढयोहि रहोरगज ४, अरिकरत अप्प या ५ कोहु आज ७६।  
हो भूप यहै प्रभुके हरोल, तस स्वामिधर्म जय विगत तोल ॥

पीछै कबंध यह लूट पाइ, संगी किय कति खल फँल सुनाइ ७७।  
बुंदीस दये तिनको बिडारि, जोदोइ देहु खल बंधि १ जारि २ ॥

हिंदुन भुव यह हुव अप्प हस्त, प्रतिकूल न बर्तहु तिन्ह प्रसस्त ॥  
है इह ६१।१ स्वामिहित करनहार, अप्पहु कछु जयफल हो उदार ॥

जसवंत जामिपहु सत्रुजानि, प्रभु स्वामिधर्म सेवत प्रमानि ॥ ७९ ॥  
देहो इनिबेको इहिं निदेस, अभिमत तब करिहै सरत एस ॥

प्रभुलौं बढिआवहिं जो प्रतारि, वहे तब अनिष्ट न सुरै सु हारि ८०  
जो कढिहु जाइ तो बंधि जोर, ए द्वे २ हि रहै प्रभु घातओर ॥

जो अल्पआयु मारयोहु जाइ, दुर्मन है तो सब मन दुराइ ॥ ८१ ॥  
विगैरै सब हिंदुन प्रभु बिसास, अति दूर परै तव राज्य आस ॥

तातैं जो मन्नहु स्वहित तुल्लि, बैल १ तोप २ न प्रत्युतैं खेहु बुल्लि ८२।

॥ ७४ ॥ १ इस दाराशिकोह का घंटा भी उचित था २ टगने के वा तोड़ना  
के योग्य नहीं जानकर ॥ ७५ ॥ ३ इफिर ४ नीति के शत्रु होने के कारण ॥ ७६ ॥

५ लाभ ॥ ७७ ॥ ६ निकाल दिशे ७ उन श्रेष्ठों के प्रतिकूल न चलना ॥ ७८ ॥

८ यद्दिन के पति को भी ॥ ७९ ॥ १० विशेष ताड़ना करके ॥ ८० ॥

११ जोधपुर का राजा यशवन्तसिंह और कुन्दा का राव भाऊसिंह ॥ ८१ ॥ १२

सेना १३ उलटी (पीछी) ॥ ८२ ॥

नहिँतो यह अवसर बलि बनै न, हजरत पछितैहो उचित है न ॥  
हम मृत्यु हिताहित १ कहनहार, बलि प्रभु प्रमान जिहिँ तिहिँ  
बिचारं ॥ ८३ ॥

निस अंधकार अति जिहिँ अनेहै, अकखी दुखनबावन अरज एह  
तिम सुनि भय संसय नैय तुलाइ, बल १ तोप २ निकर साह सँ  
बुलाइ ॥ ८४ ॥

नृप कहँ बिसासि अक्खिय निसैस, बंधन घरभेजहु फल बिसेस  
बल १ तोप २ न जातहि मत बिचारि, नृपतँ खल लुंठक दिय  
निकारि ॥ ८५ ॥

अक्खिय मै आतहि बेर अत्थ, सब दंडि बिडारिय खलन सत्थ ॥  
वहै तो गहाइ लेहु ब हजूर, देसहु सन ते जन किन्न दूर ॥ ८६ ॥  
अवरंग ४०।३ क्रुधानलतै अधीस, रक्खयो हम दिष्टहिँ टारि रीस ॥  
जाफर १ साइस्तेखान २ जोट २, एहुव नबाब नृप कष्ट ओट ॥ ८७ ॥  
॥ दोहा ॥

इम बुंदीपति तँ अनख, निठि न साह निवारि ॥

कथित नबाबनके कहँ, धीरभयो हितधारि ॥ ८८ ॥

कछुदिन अंतर न्हानकरि, भाऊ १ ९५।१।१ अरु भगवंत १ ९५।३।२ ॥

भिन्न समय जावतभये, साहसभा बिलसंत ॥ ८९ ॥

करेरीअ भगवंत १ ९५।३।३ कोँ, सत्त ७ परगनाँ साह ॥

पै तिनमँ इक बिघ्न परि, हे परतंत्र प्रबाह ॥ ९० ॥

चक्रसेन १ अभिधान चढि, सबरराँज अतिसूर ॥

॥ ८३ ॥ १ समय २ नीति ३ समूह ४ बादशाह ने उनको बुझवा लिये ॥ ८४ ॥

५ सम्पूर्ण ६ लूटनेवालों को ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ७ क्रोध की \* अग्नि से ८ भाग्य ने

॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ १ चक्रसेन नामक १० भीलों का राजा ॥ ९१ ॥

\* अग्नि शब्द पुलिङ्ग के परंतु कोशिका में गी. रि. से चक्रसेन किया जाना है अतएव दसने भी  
ही लिङ्ग लिखा है ॥

सहस्र पंच५००० भिल्लन सहित, पैठो तहँ बल पूर ॥ ९१ ॥

जावहिँ साह अनीकें जब, जो दुर्गम भजिजाइ ॥

आइबिसैं बनि ईस यह, पीछैं अवसर पाइ ॥ ९२ ॥

जत्र कुत्र तत्रत्यं जन, हुव हाकिम दुवरेहेतु ॥

तत्थ रहैं इस तोरिबो, कठिन किरातन केतु ॥ ९३ ॥

पुर चाचुरनीशनाम पुनि, खत्ताखेरियरहयात ॥

बिलसैं जो जुगथान बसि, सँवर परगनाँ सात७ ॥ ९४ ॥

ते भगवंत१९५३हिँ रीभूतकि, सात७हिँ अप्पे साह ॥

कहयो चक्रधर हनि करहु, अप्प अमल रुचिराह ॥ ९५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दीभूप-  
भावसिंहचरित्रे खजुवान्तिकसूजौरङ्गजेवरणाकरणा१, सूजावीरवार-  
णाघट्टनेनौरंगजेवारोह्यकरिपातन २, औरंगजेवपञ्चत्वभ्रमयोधपुरेश  
यशवन्तसिंहस्यौरंगजेवशिविरलुटन ३, भावसिंहानुजभगवन्तसिं-  
हस्यौरंगजेवगजपातकयवनहनन ४, हड्डाधिराजभावसिंहसूजारोह्यग  
जाम्बव्ठमारणा ५, अश्वारूढसूजापलायनेन तत्सैन्यप्रपलायन ६, ए-  
तद्विजयहेतवौरङ्गजेवभावसिंहप्रसूतिलमययोधपुरेशयशवन्तसिंहस्यौ-

१सेना ॥ ९२ ॥ २ वहाँ के लोग ३ दोनों कारणों से ४ तहाँ ५ भीलों की  
ध्वजा ॥ ९३ ॥ ६ भील ॥ ९४ ॥ ७ चक्रसेन नामक भील को ॥ ९५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
भावसिंह के चरित्र में खजुवा के पास सूजा और औरंगजेव का युद्ध होना १  
सूजा के एक वीर का अपने हाथी की टक्कर दिलाकर औरंगजेव की सपारी  
के हाथी को गिराना २ औरंगजेव को सरासुआ जानकर जोधपुर के राजा य-  
शवन्तसिंह का औरंगजेव के डेरों को लूटना ३ औरंगजेव के हाथी के टक्कर  
लगानेवाले यवन को भाऊसिंह के छोटे भाई भगवन्तसिंह का मारना ४ ह-  
ड्डाधिराज आज का सूजा की सवारी के हाथी के महायत को मारना ५ सू-  
जा के घोड़े सवार होकर भागने के कारण सूजा की फौज का भागना ६ इस  
विजय के कारण औरंगजेव का भाऊ पर प्रसन्न होने के समय जोधपुर के रा-  
जा यशवन्तसिंह का औरंगजेव के जनाने आदि लूटने के समय बुन्दी के लो-

रङ्गजेवावरोधलुखटनखुन्दीभटसहायकरणासूचनप्राप्त्या भावसिंहो-  
पर्यौरङ्गजेवसैन्यप्रेषणा ७, जाफरखांशाइस्तखांनामयवनद्वयनिवेदन  
क्षान्तभावसिंहापराधनीरुजभगवन्तसिंहप्रान्तसप्तकप्रदानं चतुर्थो  
मयूखः ॥ ४ ॥

आदित एकत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३१ ॥

प्रायोन्नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जसवंतहु इत जाइकैं, प्रथम कर्मवति १९५। पास ॥

मुच्छ करंखि हड्डीमहल, अधिक बिकैथन आस ॥ १ ॥

अकिखय जिहिं आतंकतैं, मोकहूँ भग्गो मानि ॥

उज्जइनीतैं आवतहि, तैहु नर्मकिय तानि ॥ २ ॥

भय ताकै जो मैं भज्यो, तो बँ तसहि जव जुधि ॥

मुच्छ १ रु नासार छिन्नि मैं, लायो किम बँसु लुधि ॥ ३ ॥

आनैं तस अवरोधकै, हरम जनन हारादि ॥

ए धारहु तुम आभरन, छँमपन संसय छादि ॥ ४ ॥

कर्मवती १९५।रानी कही, जहँ हड्डी करजोरि ॥

सूरहि प्रभुलाये सदन, वसु लंखि छिद्र बहोरि ॥ ५ ॥

पतिके देतहु नलियपुनि, बासकैं करन बिलास ॥

जथा कुपित जसवंतको, तथा सखो सबलास ॥ ६ ॥

लिपि पत्रन पावत लिखित, भाऊ १९५।१ नृप भगिनी सु ॥

गों का यशवन्तसिंह की सहायता करने की सूचना पाने के कारण औरंगजेब  
का अपसन्न होकर भाऊ पर जेना भेजना ७ जाफरखां और जाइस्तखां दोनों  
नवाबों के निवेदन करने से आज्ञासिंह का अपराध क्षमा करके भगवन्तसिंह  
के नैरोग्य होने पर उसको खान परगने मिलने का आधा ४ मनुष्य समाप्त हु-  
आ ॥ और आदि से २३१ मनुष्य हुए ॥

१ हाडी रानी २ मुछ खांचकर ३ कहता हुआ ॥ १ ॥ ४ दूरी ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ जनाने के ८ हार आदि शृंगार ९ समर्थ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १० अपन

सुलतान सुहस्मदका सुजासे मिलना] सप्तमराशि-पंचममयूख (२७७१)

रमन बिरत अबिरत रही, गृहसुख रति न गिनी सु ॥ ७ ॥

प्राची१दिस ओ प्रद्वित, भीरु सुजा ४०।२ इत भजि ॥

बंधनलग्गो बहुरि बल, सा लोभित भट सजि ॥ ८ ॥

॥ पटपात ॥

तापर पठयो तनय मुख्य१ सुलतानसुहस्मद ४१।२ ॥

भाऊ१९५।१ बुंदियभूप दयो तससंग दुरासंद ॥

कुमर राम१।२ अरु किर्तिसिंह२।३ कूरमनृपकरे ॥

नृपति गोड अनिरुद्ध४ प्रंगुन अग्रंजपर प्रेरे ॥

पुनि जगतसिंह१६५।१।५ कोटापतिहु संगहि भोजि सुकुंद१६४।२  
सुत ॥

सबतैहि कहिय पकरहु१सुजा४०।२हेति" अनल कै रहहु हुँत९

पुत्रसंग इन्ह प्रमुख अयुत अष्टक८०००० दल दिन्नौ ॥

साहसुतहु बढि सविध कथित काका बल किन्नौ ॥

सुता सुजा४०।२ की सुनत एह चिरैतैं हो इच्छित ॥

सुजा४०।२ सु जानत सहज तास सुहिपासै रच्यो तित ॥

पठई भतीज कहिकहि पिहितै अनुजपुत्र तुम मुख्य१ उत ॥

जामातैं होहु जुवराज जिमै प्रिया आय व्याहहु प्रनुत ॥ १० ॥

ग्रह न लखैजिम ईतर अप्प छनै कहि आवहु ॥

कारि निंकाह आतहि कैंनी सु पैतनी प्रिय पावहु ॥

बार में ॥ ६ ॥ १ रति से विरक्त होकर २ निरन्तर ३ प्रीति ॥ ७ ॥ ४ पूज  
दिशा को ५ भाग ६ सना ॥ ८ ॥ ७ दुष्प्राप्य अथवा दुर्घट " यह बुन्दी  
के राजा का विशेष है" ८ कीर्तिसिंह ९ विशेष मुखवाले १० बड़े भाई  
सुजा पर ११ राजा स्वर्ण अग्नि में १२ होय होकर रहा ॥ ९ ॥ १३ आदि १४ बहू-  
त समय से चाहता था १५ सुलतान सुहस्मद सुजा की पुत्री के पास रात्र र-  
हा था १६ सुत १७ पाटवी १८ जमाई १९ युवराज की आति अर्थात् औरंग-  
जेब को कैद करके तुम युवराज होकर यहाँ आकर २० विशेष स्तुति योग्य  
प्रिया से विवाह करो ॥ १० ॥ २१ अन्य नहीं देखे ऐसे २२ यावनी भाषा का  
विवाह बाकी शब्द है २३ कन्या का २४ स्त्री

हम सहाय इत होइ जनक<sup>१</sup> करि तास जनक<sup>२</sup> जिम ॥  
 दिल्ली बिलसहु दुलभ करहु संदेह अथ किम ॥  
 जामात मारि जो मैं जैरठ कनी रुचिर विधवा करौ ॥  
 तुम<sup>३</sup> नर<sup>४</sup>मिलाप रैव सखिख तव पलटि कोल दोजखपराँ ॥११॥  
 काका लिपि यह कुमर कलिंत निर्जन गोचर करि ॥  
 अंतरंग निज अनुग भावबोधन लोभी भरि ॥  
 काका पुव्वहि कुटिल जेहु कुट्टे जर जुतिन ॥  
 ते बुल्ले कढि त्वरित निटिल निज मंडहु सुतिन ॥  
 विस्वस्त भेजि काका वदुरि जिम बुल्ले तिम चलहु जँह ॥  
 करिजेर बप्प तस बँप्प क्रम तुम बिलसहु नव रूच्य तँह ॥१२॥  
 लुब्ध सु लुब्धन लपित मन्नि सुलतान सुहुन्मद<sup>५</sup> ४११ ॥  
 छोरि जनक बँलछिद्र पाइ निकस्यो अघ<sup>६</sup> छलरपद ॥  
 बुल्ल्यो जो विस्वस्त सुजा<sup>७</sup> ४०१२ भेज्यो सुहि तासह ॥  
 काकाप्रति कतिकाम मिल्यो इक सु व्याहन<sup>८</sup> मँह ॥  
 कुमरहिं न विखिख इत तँह कटक पठई सुहि लिखि साह प्रति ॥  
 अवरंग<sup>९</sup> ४११३ लिखिय रहियो उतहि मग अहे तुम रोध<sup>१०</sup> मति ॥३॥  
 इम लहि हुकम अनीक रहिय तत्थहि मग रोधक ॥  
 काका सन इत कुमर विद्वनि मिलिय कुबोधक ॥

१ तुम्हारे पिता और नज्ब को उत्तरे पिता जाएजहाँ के समान कैद करके  
 २ तुम ३ तुम्हरे कन्या को ४ नरक में पहुंचा ॥१॥ ५ विदित  
 अधवा प्राप्त ६ पक्षान्त में देखकर ७ जानगी ८ जोकर ९ अभिप्राय जानने के  
 लिये १० लगाए शोभियों ने रचो चार्मान् शोभियों के अजन चढ़ाया "निदि-  
 त जगत् का कार्य दण्डाकार चरित्र की टीका में प्रमाण सहित ललाट लिख्यो  
 है" १२ मरने के पुर्णों का १३ अपने पिता (साहजग) के क्रम में १४ तर्जान  
 हुल्ल ॥ १२ ॥ १५ जन्म जोभी ने शोभियों के कलम को मानकर १६ पिता  
 (और नज्ब) की सेना को छोड़कर १७ व्याह करने के उन्माह में १८ सेना ने  
 कुमर को मारि देकर १९ रोकने की सुखि में ॥ १३ ॥ २० सेना २१ दुताह  
 २२ दुर्ग राजाधवाला

स्वसुता तत्थ सुजा४०।२सु भेट किय व्याहि भतीजहिं ॥  
 अति तामैं आसकत बन्यौ मन्नि सु सुख बीजहिं ॥  
 अवरंग४०।३पटकि कछुपेच इतकुमर१आत२बिच द्रोहकरि॥  
 कछु मिस बुलाइ गहि सो कुमर अटक्यो गढग्वालेर अरि१४  
 ॥अष्टपात् ॥

जैराअवधि रहि जत्थ मरहिं सुलतान मुहुम्मद४१।१॥  
 तिम मुराद४०।४काकाहु तास सहपुत्र१सभासद२ ॥  
 इत बिजई अवरंग४०।३प्रबल आयो दिल्लीपुर ॥  
 लरिहौं कछुक बिलंबि आइ यह मंत्र सुजा४०।२उर ॥  
 सो कुटुंब बलसहित तबहिं दिलिय सीमातजि ॥  
 छलवध संकित छमहु भीरुदिस पुब्व१गुयो भजि ॥  
 सो साहसुजा४०।२विस्वाससह अराकान पुरके अधिप ॥  
 सकुटुंब हन्यौ पापी सहज भरि अघ भर निजदेह निपा१५।

॥ घनाक्षरी ॥

बर्मा की विलायतके पच्छिम३।५प्रदेस माहिं,  
 इंदौर१अप्पनतैं अराकान नाम पुर ॥  
 तामैं राज्य करत नरेस कोऊ तासमय,  
 ता विसासघातीनैं धिजोइ दैदैं धिज्ज छुर ॥  
 सोहैंदैं सहाय मैं रु बिजय बिभागी बनि,  
 इच्छत कृतघ्न अवरंग४०।३को प्रसौद उर ॥  
 भूलिधीज्यो भोरां जो सुजा४०।२ सो सकुटुंब मारयो,  
 छत्रघात कीनों बँदों मनके महानिदुर ॥ १६ ॥  
 रोधैंक सुजा ४०।२के मगमैं जो बँल राख्यो साह,

१ अपनी पुत्री २ कारण ॥ १४ ॥ ३ वृद्धावस्था पर्यन्त ४ पुत्र सहित ५ विलम्ब  
 करके ६ सलाह ७ सेना सहित ८ छल घात से ९ अपने शरीर रूपी कलश  
 को पाप के भार से भरकर ॥ १५ ॥ १० ईशान कोण में ११ प्रसन्नता १२ छल  
 ॥ १६ ॥ १३ रोकनेवाली १४ सेना

सो अब बुलाइ भेजे सीख दैदैं स्वीय घर ॥

जान्यों जसवंत जोधपुरके नरस इत,  
देह<sup>१</sup> परयो दुर्लभ तो पुहवी बिदूरपर ॥

आलोचत अैसे स्वीयभटन समेत गहि,  
दारा४०।२ काँ धिजौइ सौँपिदेबो जानि श्रेयतर ॥

दारा४०।२नै दुखेरे जो बचायो आगैं तातैं वह,  
धीजतहो ताहि सोहि भेज्यो भाटीबंस भैर ॥ १७ ॥

ताके संग ओरहु कृतघ्न भट आपुनै ते,  
भेजि रु कहाइ हमहँ बँ अवरंग४०।३ अरि ॥

नीतिहूसौं नियत तुमारोही तखत यातैं,  
कीजै पातसाही आप हमहिँ वजीर करि ॥

चोर अवरंग४०।३ हाहा स्वामीके तखत चढ्यो,  
ताहि गहि लेहौं मैं महामृध मैं मारिमरि ॥

बीच हरि<sup>१</sup> गंगा<sup>२</sup> दै बुलावत हजूर हमैं,  
पीछैं पछितैहो आज सँसय प्रवाह परि ॥ १८ ॥

ज्यौंही इन हाहा जाइ दुष्टन सिलाइ दारा४०।२,  
किंतवन त्योंही भरे कपटके बैन कहि ॥

दावपेच विरचि लपेटलीनों दारा४०।२ यातैं,  
कौल जोजो कीनों सो लिखाइ चढ्यो संगचहि ॥

जोधपुर आयो जो सैतबूके समीप सैन,  
दिल्लीपति आदर बढाइ आन्यों, छैद्य बहि ॥

मैना<sup>१</sup> मेर<sup>२</sup> व्याध<sup>३</sup> रु पुलिंद<sup>४</sup>न मुखर मेलि,

१ दिवार करते हुए २ अपने चीरों ललित ३ विश्वास देकर ४ बहुत श्रेष्ठ  
५ भइ (वीर) " गोयन्ददास भाटी " को ॥ १७ ॥ ६ जब ७ मिश्रय ८ युद्ध  
में ९ संदेह के ॥ १८ ॥ १० ठगों ने ११ नदी का नाम है १२ से १३ छल करके  
१४ भील १५ नीचाँ (अप्रिय गोलनेवालों) को मिलाकर



चक्र च्यारिअयुत४०००० दिखायो निज रेफ रहि ॥१९॥  
 दारा ४०११ कहुं संग तहाँ जुरिगो कितोक दल,  
 तासहित ताकाँलै कबंधज प्रयानकिय ॥  
 दिल्लीठिग आवत अनीक इतकोहु सज्जि,  
 अभिमुख आत भीरुं प्यारिनके प्रानप्रिय ॥  
 मंत्रमिस दावमैं लै दारा४०११ अतिसीम दुष्ट,  
 देखत गहाइ दग लज्जाको न लेसलिय ॥  
 दिल्लीपुर आइ पठवाइ कैद दारा ४०११ जोरि,  
 कहाई सु बत यह लैकैं देहु दास जिय ॥ २० ॥  
 साह जसवंतसौं तो कहु न कहाइ ताहि,  
 मारनके मंत्र निजफोज चढिवो निवारि ॥  
 अंतिक बुलाइ दारा४०११ पूछयो अवरंग४०१३ हमको,  
 जो गहते तो कहाकरते तब निहारि ॥  
 दारा४०११ कह्यो तेरोकंठ कर्तन कराते हम,  
 अवरंग४०१३ कह्यो कैसी हमैंकरिवो विचारि ॥  
 दारा४०११ कह्यो जोहि करते हम करो तुम सो,  
 सो सुनि हुनन भेज्यो बीजैं इकःहू विसारि ॥२१॥  
 जवन भरोसाको बहादुरखाना नाम जानि,  
 भाख्यो अवरंग४०१३ कंठदारा४०११के छुरीकरहु ॥  
 दारा४०११कों लिवाइ तिहिं बारह१२ पुलन आइ,

१ मेना २ ऊपर रहकर अर्थात् रेफ, अक्षर के ऊपर रहता है इसप्रकार मयके ऊपर रहकर; अथवा उस अक्षर ने अपने को दारा को निज का दिखाया ॥१९॥ ३ राठोड़ ने ४ सन्मुख ५ कायर ६ स्त्रियों के प्रार्थों के प्यारे ७ सलाह करने के मिस से ॥ २० ॥ ८ दाराजिकोह को नारने की सलाह से जो फौज की बहाई होती थी वह रोक दी ९ समीप १० कंठ कटवाना ११ अब हम को क्या करना चाहिये १२ एक वीर्य से उत्पन्न हुय थे सो झूलकर ॥ २१ ॥

भाख्यो करिलेहु कैरतव्य जिय जो धरहु ॥  
 गुसल<sup>१</sup> निमाज<sup>२</sup> करि दारा<sup>४०१</sup> कछुकाल कहि,  
 पढत कुरान<sup>३</sup> कह्यो क्यों बै चिर आचरहु ॥  
 सो सुनि कुरानकी किताबकी बहादुरके,  
 उरमें दई रु कह्यो पापी पापमें भरहु ॥ २२ ॥  
 लै वह किताब कलामुल्लाकी बहादुरनै,  
 बैठि उर दारा<sup>४०१</sup> को बिदारयो कंठ बीर बनि ॥  
 पुस्तक कितेकनमें पावत यहहु लेख,  
 नभतैं प्रसून उहाँ बरसे बितान तनि ॥  
 जोधपुरभूप जसवंत मुख धूरिडारि,  
 प्रचुर प्रजानै हाहा धिकधिक भूरि भनि ॥  
 जानि धूर्त कातर बिडारयो अवरंग<sup>४०३</sup> जाहि,  
 फलहि मिल्यो न नाँकदैकैं अपसॉन जनि ॥ २३ ॥  
 श्रीनगर भूपतिके सरन सलेम<sup>४११</sup> हुतो,  
 दारा<sup>४०१</sup>को तनूज अहो विपुल बिसास लहि ॥  
 माख्यो सुनि दारा<sup>४०१</sup>को कृतघननै कपटमंडि,  
 सो गहि सलेम<sup>४११</sup> भेज्यो सोपै रह्यो कैद सहि ॥  
 रोकि<sup>१</sup> जनका<sup>१</sup>दिक सुजा<sup>२</sup>दिक भराइ<sup>२</sup> इत,  
 दारा<sup>३</sup>दिक मारि<sup>३</sup>अकंटक अवरंग<sup>४०३</sup> रहि ॥  
 दारा<sup>४०१</sup>की सुता निज तृतीय<sup>३</sup>सुत आजम<sup>४१३</sup>को,  
 दीनी तास ओरहु जो आत हैतो कैद कहि ॥ २४ ॥  
 सेना जो सुजादिसँ ही ताके सब भूप सहि,

१ करना होवे सो करलो २ अप विलम्ब क्यों करते हो ॥ २२ ॥ ३ आकाश से  
 ४ पुष्प ५ विशेष फैलकर ६ बहुत ७ बहुत ८ कायर ९ निकाला १० नासिका  
 देकर अपशब्द देने का ॥ २३ ॥ ११ दारा का पुत्र १२ पिता आदि को ॥ २४ ॥  
 १३ सुजा की ओर थी

औरंगजेबका भगवंतको राव पद देन । सप्तमराशि-पंचममयूज(१०८५)

गेहन पठाये तब भाऊ १९५१ को अनुज गो न ॥  
 पंचमासपीछें भगवंत १९५३ चढ़ि सीख भाख्यो,  
 भेट गुप्तदैके जाइ जाफरनुबाब भोन ॥  
 बुंदीके वरव्वर बढायो बलुधादे मोहि,  
 पै नपायो भूपपद सो अब सफल होन ॥  
 ईष्ट उपदा दे अवलोक आप मानै यानै,  
 करहु सहाय इहाँ आपसो इतर कोन ॥ २५ ॥  
 सोही खान जाफर नबाबहु निवेदि,  
 अवरंग ४०३ तैं दिवायो भगवंत १९५३ काजै रावपद ॥  
 पीछें लहि सीख मऊ पत्तन यहहु आई,  
 मर्तुलकों मारि वहाँ दिखावतभो राजपद ॥  
 कल्याणकनाम जो ककोरको नरुकी सुत,  
 चंद्रभानुको सो हो अमात्य लऊदंग-हद ॥  
 प्रीति १ ताकी भाऊसोंहि १९५१ पिहित प्रमानि,  
 पकराइ कछु पत्र २ सु हन्याँ यों गेरि कोप गंद ॥ २६ ॥  
 भाऊ १९५१ भूमिपाल इत बुंदी भूत भीम १९५२ सुत,  
 कृष्ण १९६१ मान्यों कुमारसता १६४१ सो स्वैत सत्यकरि ॥  
 कुमारपनेगें मुख्य कापरनि १ पत्तनसों,  
 सहस्रपचीस २५००० को पटा दिय सनेह भरि ॥  
 जौम यह बुंदीकी मैदी न बटिजाति तोतो,  
 पावतो कुमार पटा द्वि २ युन २५००० भुवत्व धरि ॥  
 तोहू धर्मधोर पुत्र पँटप प्रानि ताकों,  
 वैभव बढाइ कीनों दिवित इतो विर्तरि ॥ २७ ॥

१ भाऊ का छोटा भाई भगवन्तासिंह नहीं गया २ भूमि देकर ३ राजा  
 की पदवी ४ बांछित नजराना देकर ५ आधार ॥ २५ ॥ ६ अर्ज करके ७ पुर  
 ८ मामा को ९ छिपी हुई १० कोष स्वर्ण रोग दाहकर ॥ २६ ॥ ११ जन से १२  
 जहाँ १३ भूमि १४ निश्चय ही १५ पाटली १६ देकर ॥ २७ ॥

इत भगवंत १९५३ मऊपत्तन अधीस होइ,  
 भाऊ १९५१ सौ बिरोध कोटि अधिक तुलापै आनि ॥  
 बुंदीके समान सब बैभव बनाइ गज १,  
 बाजि २ छत्र ३ चामर ४ चलाये मद १ मोद २ मानि ॥  
 पीछ खिन पाइ पुतना निज सकल सज्जि,  
 चाचुरनी १ खाताखेरी २ जाइ भो अवनिजानि ॥  
 चक्रसेन सबैर बिंडारयो जीति चोरैखेत,  
 परगना सात ७हि तहाँके करे स्वीयपानि ॥ २८ ॥  
 चाचुरनी १ चालुक हरी २ कौ राखि हाकिम रु,  
 सोमानी बनिक राम २ खाताखेरी २ रूपातकरि ॥  
 अच्छी च्यारिसहँस ४००० चर्म हौ इन्हपास राखि,  
 आयो मऊ आप भिल्ल गंजनके दंर्पभरि ॥  
 सोपै ताहि हौयनके सावनमै आइ सूर,  
 १२ पैने पंचसहँस ५००० पुलिदनको जाल जरि ॥  
 गोमैन गिराइ परमाँहि तनु पाइ खाता-  
 खेरी १ २ गरदाई जुखो जमका जलूस धरि ॥ २९ ॥  
 जाकहँ न आतो जानि मेघागमँ सोद मनि,  
 घरनँ घनँ भट गयेहे सुख सिक्ख लहि ॥  
 सोही छिदपाइ चक्रसेन इम आइ मेहँ,  
 गोलीन मचाइ दुर्ग कीनों रुद्ध दौव दहि ॥  
 बरखा प्रसौद असनौदि उपहार बीति,

१ समय पाकर २ सेना ३ सब ४ भूपति हुआ ५ चक्रसेन नामक भील को ६ नि-  
 काला ७ अपने हाथ में किये ॥ २८ ॥ ८ प्रसिद्ध ९ सेना १० भील को दबाने  
 के घमंड में भरकर ११ उसी सम्बत् के १२ तीक्ष्ण १३ भीलों का समूह १४  
 गजओं के समूह को गिराकर और फिले में १५ थोड़े शत्रु पाकर १६ घेर कर  
 ॥ २९ ॥ १७ वर्षों के भागम का आनंद मानकर १८ अपने-अपने घरों को १९  
 वर्षों २० अग्नि से जलाकर २१ मेघ की प्रसन्नता के दान से अर्थात् अत्यन्त  
 वर्षा होने से २२ भोजन आदि २३ सामग्री वातने से

माँहिके सिपाह भये व्याकुल विपत्ति वहि ॥  
 अप्पन सहाय मंग्यो तबहु मऊतैं दैसक्यो,  
 न भगवंत१९५।३ सोपै रुख कछु\*हेतु रहि ॥ ३० ॥  
 दुर्गके प्रवीरनको खाताखेरी१।२ तीन३दिन,  
 असनबिहीन जात निखिलन वहै निरास ॥  
 माँग्यो धर्मद्वार द्वारि सबरसिरोमनिसोह,  
 तानैं जय जानिकैं इन्हैंहु दयो अवकास ॥  
 हरि१अरु राम२देरहि ए तब उहाँहे पहुँचे,  
 ते सब संगले सिटाये भगवंत१९५।३पास ॥  
 धिक्करि न चहि भगवंत१९५।५वहाँ दुर्दुर्न भाख्यो,  
 असन न अप्पि अहो अब यह कोप आस ॥ ३१ ॥  
 मास इक१लौ तो भूँज्यौ अन्नहु कठिन मिल्यो,  
 पाउसमैं तोहू पंचसहस५०००रुकाइ पर ॥  
 जिम तिम जुइ छम संधाते नछुट्टे के,  
 किरातगन कुट्टे देखि लज्जा१जाति२स्वामि दर३ ॥  
 भोजनको गंध जब त्रि३दिन न भाख्यो तब,  
 फोजनको आख्यो फैल खोजनको गैल खैर ॥  
 स्वामी अब नाहकहीं विभन बनें तो कट्टि,  
 कट्टहु कृपान गँदि यौं रु कीनैं अगग गैर ॥ ३२ ॥  
 निर्बचन वहैकैं तब आगसँ निवारि पीछैं,  
 पाउसके अंत भगवंत१९५।३सजि सेना भूरि ॥  
 प्रबल पुलिंद चक्रसेनपैं चलाइ ताँकों,

\*कारण॥३०॥ भोजन बिना अस सब भीलों के राजा से अधिकार देकर भोजन नहीं देकर १हुआ ॥३१॥ ४भूँगा भागी आदि सुना हुआ अन्न ५वर्षा में ६श-  
 व्यों को ७ समर्थ प्रतिज्ञा से ८ भीलों के समूह से ९ स्वामी के भय से १०  
 आस दिया हुआ ११ तीक्ष्ण मार्ग १२ उदास १३ खड्ग १४ यों कहकर १५ कंठ  
 आगे लिये ॥ ३२ ॥ १३ चुप होकर १४ अपराध १५ चढ़न १६ भील २० भीलों

बहुरि विडारि खाताखेरी १२लाई पनपूरि ॥  
 साहनैहु काऊकाम तासमै \*समरसाध्य,  
 सोंप्यो भगवंत१९५३हिं सुधारि सु समरखूरि ॥  
 दिल्लीके अधीन देस१दुर्ग२जो बिरचि बीर,  
 आयो मऊ बैरिनको चंड चतुरंग चूरि ॥ ३३ ॥  
 ताकों तिहिं रीझपैं बहादुरी बखसि पंच,  
 लाख५०००००के पटासों दीनों गूगोरक१नाम दंग ॥  
 साहसों इतोक अब पावतं अतिक अति,  
 सीमपन पायो दर्पछायो भगवंत१९५३ अंग,  
 भाऊ१९५१सों भनाई आजलों तो तुल्य अप्पहे ब,  
 साहदों बढायो सब सुनसब१ देस संग,  
 बुंदीके घरानैमाहिं मैं अब बडो यों आइ,  
 मुजराकरहु मोहि पहिलैं विनय बंग ॥ ३४ ॥  
 भाई भगवंत१९५३बीरपन१मैं बढयो त्यों धर्म१,  
 धारि मद३मारतो तो भासतो ज्यों धर्म१मनि२ ॥  
 पै इम अहंपदके पत्रहिं पठात भनी,  
 निर्जनतैं भाऊ१९५१चलो विलासैं विनम्रबनि ॥  
 पंचन प्रबोध्यो अवरंग४०३की महर वापैं,  
 एक१घर बाढयो द्रोह देहैं अपकिलि तनि ॥  
 राज्य इत अनुज जमायो भलीरीति बैठे,  
 आनिके मऊमैं बडेसेठ स्वापतेय खनि ॥ ३५ ॥

के राजा का नाम है \*युद्ध से सिद्ध होनेवाला कार्य १ अयंकर सेना का  
 चूर्ण करके ॥ ३३ ॥ १ प्रशंसा युक्त; अथवा अधिक पाकर बढप्पन पाया §  
 कहाई १ अथ २ देश के साथ ३ नम्रता के व्यंग्य से; अथवा सरतक झुकाकर  
 (झुंकाकर मुजरा करने में और प्रथम मुजरा करने में व्यंग्य रूप नम्रता सिद्ध  
 होती है) ॥ ३४ ॥ ४ अपने लोगों से ५ विशेष नम्र होकर ६ समझाया ७ अप-  
 कीर्ति फैलावेगा ८ धन की ९ खान ॥ ३५ ॥

बुंदीसों बढयो यों सुतबैभव बिचारि बुंदी,  
 माता भगवंत१९५।३की हुती सो आनि मानमति ॥  
 नाम नित्यकुमारि१९४।४ककोरकी नरूकी भेदि,  
 पतिके परिग्रहके लोकहु कढाइकति ॥  
 सोचि अब बुंदीहै मऊकैबस यातैं सब,  
 चाहो स्वामि सेवन बलो तो इस गूढगति ॥  
 पाटनके न्दानके बहानैसों निकसि प्रैसू,  
 लोक बहु लैकैं पहुँची यों मऊ पुत्रप्रति ॥ ३६ ॥  
 संबत प्रमान अष्टि सत्रह१७१६समय यहै,  
 यों पति सता१९४।१के घर ईरखा१असूया२आनि ॥  
 सासु१नके सोति२नके जेठ३देवर४नके प्रभूत,  
 पलटाइ जन पुत्रकाँ महत मानि ॥  
 धावर१धइत्री२दास३दासी४बलि बैतनिक५,  
 मौल६मनुजाँदिक के लैगई जो लोभी ठानि ॥  
 रीति गनिकाकी रजपूतहु कितेक गये,  
 संग१रू कितेक जुदे२ जाकोँ बरजोर जानि ॥ ३७ ॥  
 जीविका मऊवस ही जिनकी कितेक जेहू,  
 जाइभये तंत्र सनमानैं ते समस्तजन ॥  
 स्वासी सुनो स्वीयं कविकुलको कुलीन कोऊ,  
 तबहु गया न मानि कोटाँको प्रैसाद मन ॥  
 वृत्तिधर जे गये पुरोहित२ प्रमुख बंस,  
 बाँधि गज१ बाजी२ तिन्ह बाँर भरे धाम धन ॥  
 इनकाँ सुवर्ण तारैं पात्रहु अखिल दैकैं,  
 बुंदीपैं कटाक्ष कीनाँ ईरखा अमंदपन ॥ ३८ ॥

१अङ्कार की बुद्धि सेरडिपाकर३माता ॥३६॥ ४सहित५यह ६तनखा पानेवाले  
 सबक ७मनुष्य आदि ॥३७॥ ८आधीन ९हे स्वामी रामसिंह १०आप के कवि  
 (सूर्यमल्ल)के कुल की ११प्रसन्नता १२आदि १३द्वार समय १४चाँदी के ॥३८॥

भाटहु करोडिया चतुर्भुज धनिक भयो,  
 याकों दये जानैं तहाँ अधिक बतीस३२ बीति ॥  
 मातुलको मारिबो प्रबंधन लिखित पायो,  
 भाट यह कारन बतायो तामैं तजि भीति ॥  
 गूँरको गुरुइ गिनी सो राजधानी राखि सब,  
 छक पाइ राज्य बिलस्यो रमनरीति ॥  
 जहाँजहाँ साहनें पठायो तहाँतहाँ जाइ,  
 हत्यनं बिकथन दिखाइ सुर्यो जंगजीति ॥ ३९ ॥  
 इनही दिन१न कछू पीछै२ पहिलै३वा ईतर,  
 बुंदेलन भूमैं ब्रजभाषाकवि विप्र तीन ३ ॥  
 जेठो१ भात भूखन१ रु मध्य२ मतिराम२ तीजो ३,  
 चिंतामनि३ विदित भये ए कविता प्रबीन ॥  
 किंवदंती औसी कर्णपावतहे राम२०३।४ प्रभु,  
 भूखनकी भामों कहों पीछें लखि तुंग पीन ॥  
 होंसैं गजबांधवेकी निर्म्वसि हृदय हेरि,  
 भारूपो किम राखैं भिच्छु दारिद्र्य लघुत्व लीन ॥ ४० ॥  
 जेठो१ यहजानि वा सुमति मतिराम२ मानि,  
 अग्रज प्रबोधि प्रजावतीको दुखितपाइ ॥  
 जेठो१गो सितारा सिवराजको सुजसजानि,  
 मध्य२ आयो बुंदी रीक भाऊ१६।१ की गुरु गिनाइ ॥  
 चिंतामनि३ विचरयो समीपके रसेसनमें,

१करोडिया जाति का भाट२धनवान् हुआ ३घोड़े४मामा का मारना५ग्रन्थों में  
 लिखा हुआ मिला ६ भारी ७ पति की भाँति ८ हाथों के विशेष कथन के  
 साथ अर्थात् बाहुबल दिखाकर ॥ ३९ ॥ ९ अन्य समय में १० दंतकथा ११  
 भूषन कवि की स्त्री ने १२ जंघा और पुष्टहाथी देखकर १३ चाह १४ निश्चाय  
 से बालकर १५ मिलाकर होकर दरिद्र से छोटे पन में लीन होकर हैं ॥ ४० ॥ १६  
 बड़े भाई को समझाया १७ भोजाई को १८ यही १९ राजाओं में



लाये सब बारन बिसेसक्रमतें बढाइ ॥  
 लहुरो३ नजानिये कितेक करी लायो मति-  
 राम२ इत आयो त्यों रिझायो भूप गुन गाइ ॥ ४१ ॥  
 भाऊ१९५१ को प्रभाव अलंकारन विषय आनि,  
 नूतन बनाइ ग्रंथ ललितललाम१ नाम ॥  
 संसंदकों पाइ सो नरेसन सुनाइ रुचि,  
 रीझपै बढाइ कह्यो आगम जितेक काम ॥  
 सब पट१भूखन२रु वारन३वर्त्तीस३२कहैं,  
 बाईस२२हु कति रु दये चउसहँस४०००दाम४ ॥  
 गेहहि इत गज निर्बाहन बहुरि दये,  
 पाटनिके प्रांतके रिरा१रु चिरा२दुवरगाम५ ॥ ४२ ॥  
 भाऊ१९५१भूमिपाल अभिलाप मतिराम२को यो,  
 कूरन विरचि भेद्यो जगती जगाइ जस ॥  
 भौन भान ललितललाम१हु विदित भयो,  
 पढन१पढावन२मैं सुकविन रम्यरस ॥  
 बुंध मतिराम२भगवंत१९५१हु बुलायो सो,  
 गयो न गिनि गर्व वीखिं बुंदीसों विरोधवस ॥  
 जेठो१गो सितारा जहँ बनमैं सिकारीवेस,  
 अस्ववार एक१सिवराज२आयो दिठि तस ॥ ४३ ॥  
 पूछ्यो को१कह्यो मैं कविराजाकों रिझाइ ईम,  
 भूरि लैन आयो कहो कौन तुम प्रेश्वकार ॥  
 सेवक समीपी छत्रपतिको छितिपै भाख्यो,  
 मोहि पै सुनावहु सो अनुकंपा अनुसार ॥

बाकों तब भूखन१मनोहर सुनायो एक१,  
 जेप्यो करजोरि जिहिं ओरहु कही उदार ॥  
 छन्ननृपकों इम सुनावत कतिकछंद,  
 घाँघाँतें घुमंडि मिले सेनाके विविध वार ॥ ४४ ॥  
 प्रभु पहिचानि कवि बावन५२प्रमित पद्य,  
 हे जब उपस्थित सुनाये ते सुदित होइ ॥  
 कहत कितेक आयो एकाकी१सिकार तानै,  
 बावन५२सुने यो वृत्त नम्रबनि गोत्रगोइ ॥  
 किमहु उदंते होहु पै इम सितारा कवि,  
 आनि सनमानि दैकैं द्विद१पचासदोइ५२ ॥  
 ग्राम२धाम३दाम४पट५भूखन६उचित अप्पि,  
 रूपात७कीनों भूखन सु दूखन दग्दि खोइ ॥ ४५ ॥  
 बावन५२सुनाये कवि बनमें नृपहिं वृत्त,  
 तादीमिंत दंताव७ल५२दानमें आचि७ज येह ॥  
 दक्खिन१२के अर्द्ध३देस पच्छिम५३को पाता नव,  
 लक्ख९००००००दलनाथ ताकै गज न कितेक गंह ॥  
 तनकहुं तर्कपै सता१९४१२नै दई सैतसई७००,  
 मूर्ति तामै नंद रस भू १६९मित दिपत देह ॥  
 कै गज जितेक निबहैं घर तितेक लौकै,  
 आयो मंचवायो द्वारमें दुरमदन मेंह ॥ ४६ ॥

१ मनोहर जाति का छंद २ कहा ३ छिपे हुए राजा को ४ दिशा  
 दिशा से ५ समूह ॥ ४४ ॥ ६ प्रमाण अर्थात् गिन्ती के बावन छंद ७ कंठ में  
 अकेला ९ छंद १० गोत्र छिपाकर ११ वृत्तान्त कैसे ही होओ १२ हाथी १३  
 प्रसिद्ध किया ॥ ४५ ॥ १४ उतने ही १५ हाथी १६ आश्चर्य है १७ "पा रक्षणे"  
 इस धातु से "पाता" शब्द का अर्थ रक्षा करनेवाला है १८ थोड़ी सी तर्क पर  
 शत्रुशाल ने १९ सात सौ हाथी दिये थे जिनमें १६९ हाथी २० मूर्तिमान  
 (सदरूप) थे २१ सस्त हाथियों के मद की चर्पा ॥ ४६ ॥

## ॥ दोहा ॥

इम भ्रातन त्रयश्चानि इम, बंधि निबह निज \*बार ॥

प्रजावतिन प्रति किय प्रकट, ए घर लखहु उदार ॥ ४७ ॥

नाम सत्रुसल्लहि नृपति, बुंदेलहु रनबीर ॥

वरनि महुब्बानाह बलि, भूखन १ धन किय भीर ॥ ४८ ॥

बहु उज्वल १ के बीर १ के, पैद्य मनोहर प्राय ॥

जे भूखन १ कृत नामजुत, अबहु बिदित जस आय ॥ ४९ ॥

मतिराम २हु शृंगारमय, ग्रंथ गोत्र रसराज २ ॥

नेत्रित लच्छन निर्मयो, अपर २हु भासत आज ॥ ५० ॥

चिंतामनि ३ नृगिरा रचिय, पिंगल ३ लच्छन पद्य ॥

उज्वल १ मुख वृत्तहु इतर, बहुत अबहु गुन गद्य ॥ ५१ ॥

भाऊ १९५ १ गज बर्नित, मनत, इक १ मनोहर आहि ॥

आयो अग्रज संग इह, जुपै जनावत जाहि ॥ ५२ ॥

कवि भूखन १ निज काव्यमें, मारित १ कथित सुराद ४० ४ ॥

कवि बहुमत रूबरु कही, पहुँचै कित सु प्रमाद ॥ ५३ ॥

बंधनमें हु बिसेस बैलि, गढ पठयो ग्वालेर ॥

कैदहि तस पुत्रा १ दि किय, जोपै तत्थहि जेर ॥ ५४ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी

भूपभावसिंहचरित्रे औरंगजेबसूनुसुल्तानसुहुस्मदस्य स्वपितृव्यसू-

॥

\*बार ॥ भोजाइयो को ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ १ शृंगार रस के और वीररस के रंजद जिनमें

अधिक रंजद मनोहर जाति के हैं १ लच्छनों को दिखाने वाला; वा लच्छनों की

अनर्गलता सहित; अथवा लच्छनों की लक्ष्मीवाला ४ बनाया ५ अन्य अर्थात्

कलितललाम नामक ग्रन्थ से अन्य ॥ ५० ॥ ६ देश भाषा में १ शृंगार आदि छंद

भी ॥ ५१ ॥ ८ भाऊसिंह के हाथियों का दर्शन ६ है ॥ ५२ ॥ १० सुराद को मारना

कहा है ११ सूर्यमल्ल कहते हैं कि मैंने यहुतों के मत से कैद करना कहा है

॥ ५३ ॥ १२ फिर १३ वहाँ ही कैद रहे ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भा-

वसिंह के चरित्र में औरंगजेब के बड़े पुत्र सुल्तान मोहम्मद का अपने काका-

जासुतोद्वहनतन्मेलनहेतुबन्दीभवन १, औरंगजेबभयप्रपलायितारा-  
कानस्थानस्थितसूजाछलघातमरणा २, योधपुरेशयशवन्तसिंहच्छल-  
गृहीतदाराशिकोहौरंगजेबमारणा ३, भावसिंहाजुजभगवन्तसिंहस्य  
कोचदानराजपदादान ४, भावसिंहस्य कृष्णसिंहयुवराजीकरणा ५  
भगवन्तसिंहस्य चक्रसेनभिच्छनिष्कासनखाताखेडीप्रभृतिप्रान्तादान  
तद्वत्सरचक्रसेनतत्स्थानपुनरादान ६, तदनन्तरचक्रसेनविष्कासनेन  
भगवन्तसिंहस्य पुनरधिकारसंपादन ७, शिवराजाङ्गुषणाकवेर्भाव-  
सिंहान्मतिरामस्येतरराजभयश्च चिन्तामणोः करटिलाभैकैकस्य पृ-  
थक्पृथग्ग्रन्थनिर्मितिसूचनं पञ्चमो मयूखः ॥ ५ ॥

आदितो द्वार्त्रिंशोत्तरद्विंशततमः ॥ २३२ ॥

प्रायो नजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ गीतिः ॥

जिम जिम हित साइनै जनायो, तिम तिम है भगवंत १९५।३

मुख्य नामी ॥

निभय अधिक भ्रात१ माँ वनायो, मुनसबकोहुँ बढान वृत्ति मन्त्री॥१॥

रुचि पद तस रडूरि रानी, पटुपटु डक्क१ सुता वहै-प्रसूता ॥

शूजा की पुत्री से विवाह करके शूजा से मिलजाने के कारण कैद होना  
१ औरंगजेब से भागेहुए शूजा का आराकान में छलघातसे माराजाना २ जो-  
धपुर के राजा यजयन्तसिंह के छल से पकड़ेहुए दाराशिकोह को औरंगजेब का  
मरवाना ३ भाऊ के छोटे भाई भगवन्तसिंह का रिरवत देकर राजा पद लेना ४  
भावसिंह का कृष्णसिंह को छुमर बनाना ५ भगवन्तसिंह का चक्रसेन नामक  
भील को निकालकर खाताखेडी आदि परगने लेना और उसी संवत् में चक्र-  
सेन का फिर खाताखेडी विजय करना ६ जिसपीछे चक्रसेन को निकालकर  
फिर भगवन्तसिंह का अधिकार करना ७ भूपण कवि का शिवराज से, मति-  
राम का भाऊ से और चिन्तामणि का अन्य राजाओं से हाथी पाना और  
प्रत्येक के भिन्न भिन्न ग्रन्थ बनाने की सूचना का पाँचवाँ मयूख समाप्त  
शुभा ॥ ५ ॥ और आदि से २३२ मयूख हुए ॥

जसकुमरि१९६।१ जु नामपाइ जानी, उचितविबाह बया भई सु इक्खी  
जिम सगपन चित्रकूट जाको, रहैत समै तिहिँ राजसिंहरानाँ ॥  
तनुजैनु सरदारसिंह१ताको, बर गिनि सो भगवंत१९५।३ तत्थ बुल्लयो  
जसकुमरि १९६।१ सुता बिबाहि जासौं, द्विरद १ तुरंगम २ ग्राम३  
दास४ दासी५ ॥

पट६ पुरट अलंकृतो७ प्रथाँसौं, मनिन जरी परितोखँ दै समप्पी ॥४॥  
जु दुल्लह सरदारसिंह१ जंप्यो, प्रथित सु पट्टप धर्मसील पिकरयो ॥  
स्वजनक रिससौं कृती सु कंप्यो, पटु निजदेह बिहांत भोहि पीछै॥५॥  
सक नख मुनि भू१७२० समै बरयो सो, जसकुमरी१९६।१ भगवंत  
सिंह१९५।३ जाई ॥

सक सरदग वाजि भू१७२५ मरयो सो, अवसरपर कहिँ हैं सहेतुं अगँ  
॥ घनात्तरी ॥

संवत प्रमान नख सलह १७२० समय हुतो,

लंधनमें पातसाह दूजो२ चारलिस १ नाम ॥

पुत्री ताहिँ व्याहिँ पोर्टगेजनके पातसाह,

बंबईपुरी हो इहाँ जाकेबस बत्तीधाम ॥

दायजमें जानै दूजे२ चारलिस१ कौं जो दयो,

तबतैं गयो सो अंगरेज८नके दंग तीमं ॥

सुता भगवंत१९५।३ नैं विबाही जाही संवत१७२० में,

यो गो अंगरेज८नके बंबई१ नगर बौस ॥ ७ ॥

संवत नयन पच्छ मुनि भू१७२२ प्रमित समै,

कारो अवरुद्ध साहजिहान३९।१ हु छोरयो काय ॥

१ वय (अवस्था) बाली ॥ २ ॥ २ पुत्र ॥ ३ ॥ ३ स्वर्ण के अणु की ४  
प्रसिद्धि से ५ इनाम देकर ॥ ४ ॥ ६ कछा ७ विदित ८ वह पण्डित पिता के  
क्रोध से कंपायमान होकर ९ उस चतुर ने अपना शरीर इस विबाह हुए पीछे  
छोड़ा अर्थात् आत्मघात किया ॥ ५ ॥ १० समय पर आगे कारण सहित  
कहेंगे ॥ १ ॥ ११ तथा १२ उलटा ॥ ७ ॥ १३ कैद में रुके हुए ने १४ शरीर

तबतो निसंक अवरंग ४०।३०६ प्रसभ तानि,  
 सत्वर बुलायो सब भूपनको समुदाय ॥  
 संबत बिकृति बाजि भू १७२३ मित लगत समा,  
 राध १ में गये सब निदेशतंत्र नरराय ॥  
 स्वामी तब कर्ण १ बीकानेरको हुतो सो सिटि,  
 नायो भूत अटक किनारेको सुमिरि न्याय ॥ ८ ॥  
 मूरसिंह नृपनै बिहायो जब संहर्नन,  
 ताको पट्ट पायो तब कर्ण १ हि बडेकुमार ॥  
 मातम मिटाइबेहु आयो तबतें न वह,  
 अटकि न लंघि १ मुरि अनेरके भय अपार ॥  
 आहुतेंसु अबहु न आयो सुदि संका आनि,  
 दूजा २ जसवंत २ जोधपुर वै दुरितंकार ॥

१ शीघ्र २ सप्त ३ वैशाख में ४ क्रांति के बराबर ५ राजा इनहीं आया ७  
 पहिले अटक नदी उल्लंघन नहीं की थी उसका स्मरण करके ॥ ८ ॥ ८ देह छोड़ी  
 तब ९ बुलाया हुआ १० जोधपुर का \*पापी पति ॥ ९ ॥

\*इस ग्रन्थ (वंशभास्कर) में यथावसर निन्दा और स्तुति सभी की है यहां तक कि बुन्दीवालों के परम वि-  
 रोधी शीपोदिया क्षत्रियों ने जो जो कार्य स्तुति योग्य किये हैं उन उनकी पूर्ण प्रशंसा की है और स्वयं बुन्दी  
 वालों ने जो जो कार्य निन्दनीय किये हैं उनकी निन्दा भी लिख दी है. इसकारण मिथ्यावादी होने का दोष  
 तो इस ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) पर कदापि लग नहीं सकता. परंतु कहीं कहीं किसी किसी के इतिहास में हेर  
 फेर भी पाया जाता है; इसका कारण यही प्रतीत होता है कि उनको बड़वा भाटों आदि से जहां का जै-  
 सा वृत्त मिले वहां वह वैसा ही लिखना पड़ा है. जिसके लिये हमने दिग्दर्शन न्याय से जहां तहां  
 नोट कर दिये हैं. वैसे ही इस स्थान में भी लिखा जाता है कि जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह के उ-  
 जैन से भागने के कारण उनकी राणी हाडी का व्यंग्य से पति की निन्दा करना, औरंगजेब के जनाने को  
 लूटने के कारण अश्वर्मी आदि विशेषण देना और दाराशिकोह के साथ विश्वासघात करना लिखकर पापी  
 लिखना, जोधपुर की ह्वात से सिद्ध नहीं होता. दारा के साथ विश्वासघात का किसी ह्वात में कोई ले-  
 ख ही नहीं है; और उजैन से भागने के विषय में लिखा है कि युद्ध में सब परगह के मारे जाने पर रतलाम  
 के राजा रत्नसिंह के समझाने पर उनको छत्र चमर देकर महाराजा स्वयं निकल आये और जिस पीछे और-  
 गजेब का हलवात करना जानकर उसके हुरमखाने को लूट कर जोधपुर चले आये इत्यादि. इस ग्रन्थ के इस  
 प्रकारके कथन से विरुद्ध लेख उक्त महाराजा से पाँहले के और पिछले अनेक मिलते हैं जिनको पाठक लोग  
 स्वयं बिचारलें. इसमें तो किसीको संदेह नहीं है कि उक्त महाराजा बड़े प्रतापी, वीर और बलवान् थे.

दारा४०।१छलिदीनों तोहु जोधपुरलीनों सो न,  
दीनों यातैं यहहु न आयो भीति अनुसार ॥ ९ ॥

कहत कितेक यह आयो पै न धीजि' अरु,  
रह्यो कुछ अंतर सौं स्वीय सेना समुपेत ॥

कहत कितेक दारा बंछि' जबदीनों यह,  
तोहु आदरयो न तबहीतैं हो तिहिं निकेत ॥

कहत कितेक यातैं जोधपुर लैकैं याके,  
अग्रज समरसुत रायसिंह कहँ देत ॥

देस पुनि लैवेकौं गद्दाइदीनों दारा४०।१सोहु,  
भेदहिं मिल्यो न हुतो तबतैं चकित चेत ॥ १० ॥

सेस जे असेस तहँ हाजरि नरेस होत,  
निर्भय निदेस अवरंग४०।३तिन्ह दीनों एस ॥

हिंदु न कहावहु बहावहु भ्रमिंत भेद,  
अबतैं जवनहोइ पावहु बिभवबिसेस ॥

मानिकें सुहुम्मद१कुरान२करि कंठ नित्य,  
साधहु निमाज३बदि कलमा४बिहित बेस ॥

दुहितासमैं दे ताहि राखतहो भिन्न तुम,  
सो अब करो न करो पंति हमरी प्रबेस ॥ ११ ॥

पबिसो परत यह सासन सबन सीस,  
भीत सबभूपन बिबिक्त बिचयो बिचार ॥

दीसत दुलभ जाहि मुत्तसब१देस२द्रव्य३सो,  
तुरक होहु दो२हु लोकन लहन सार ॥

भूमिपाल भाऊ१२५।१एक१बेर सरिबोहै भाखि,

१ विश्वास नहीं करके २ अपनी सेना सहित ३ उगकर ४ घर में ५ मूर्ख को ॥ १० ॥

६ भ्रम युक्त भेद को छोड़ो ७ समय पर हमको पुत्री देकर फिर तुम उसको  
भोजनादि व्यवहार से जुदी रखते हो सो अब ऐसा नहीं करके ८ हमारी पं-  
क्ति में प्रवेश करो ॥ ११ ॥ ९ वज्र के समान १० जानें

भाख्यो मिलि सर्व यह भेलाहिं भुजन भार ॥  
 जानैं सीसधरपैं १ कृपानकरपैं २ है जोलों,  
 मृत्यु १ बरें मानैं पै न ठानैं जवन त्वं प्यार ॥ १२ ॥  
 एक १ मन व्है करि समस्तन सलाह एह,  
 निर्भय निवेदी निबहैं जो हमतें निदेस ॥  
 सोतो सिरधारैं लौन आंजिमैं उजारैं भेट,  
 प्राननकी पारैं अरि मारैं प्रभुके असेस ॥  
 जापैं जाफरा १ दिक नबाबन निवाख्यो जोहु,  
 बांदा अवरंग ४० ॥ ३ तोहु न तज्यो प्रसभ बेस ॥  
 भूपन कंहाई औसी कबहु भई न हम,  
 हाजरिहैं मारहु १ बढारहु २ वा सुगलेस ॥ १३ ॥  
 हो आमैर कुंम्म जयसिंह कछुकाज तहाँ,  
 तैनुज तदीय रामसिंह २ ॥ १ हो हे नरनाइ ॥  
 भाटी तैससंग जैसलादिभेरैवारो भूपर,  
 सूंचि हित भिन्नलौकैं ए दुव २ प्रबोधे साह ॥  
 तिनमैं तृतीय ३ जसवंत ३ हु कहत केते,  
 इनसौं कही इम रहो तुम हुकम राह ॥  
 द्वि २ गुन पटा लौ बांत स्वीकृत दिखावो सोहि,  
 सबन सिखावो चित्त आदारि कैथित चाह ॥ १४ ॥  
 जेजे दुहिता न देत तिनपैं जैतन जानौं,  
 जवन न व्हैहैं १ तोहु दैहैं दुहिता २ तो जेहु ॥  
 जो तुम १ न मानौं तो तिन्ह २ तो दूरजानौं यातैं,

१ खड्ग २ ओष्ठ ३ परन्तु ४ यवन पन से ॥ १२ ॥ ५ जरज कराई ६ युद्ध में  
 इठी औरंगजेब ने ७ छठ ८ हे सुगलों के पति ॥ १३ ॥ ९ कछवाहा १०  
 पुत्र १२ उसके साथी १३ जैसलमेर का १४ हित जना कर १५ बादशाह  
 समझाये १६ प्रबन होने की हमारी कही हुई चार्ता स्वीकार करके १७  
 हुई ॥ १४ ॥ १८ पुत्री नहीं देते हैं १९ कपाय



लेखसंग सुमति कही सो तुम करिलेहु ॥  
 अजनके अच्छे दिन रंचक हुते यों उन,  
 लाभ न लह्यो रु कस्यो आलोचहु अप्प एहु ॥  
 होइ हमरै जो सुता लेहु तो हजूर दाहा,  
 दीनद्विगराइ हमें जाति तैं न जानि देहु ॥ १५ ॥  
 अधिप उदैपुर १ त्यों रामपुर २ बुंदी ३ आदि,  
 जाति १ तैं बिडारै कुल २ तैंहु टारै दै कलंक ॥  
 जवन अमीर इतै रावरे जितेक हम,  
 जं पिहैं १ जवन सुता न दैहैं २ सहसंक ॥  
 इत १ उत २ द्वैरहि धौ तैं अंतर १ अनादर दै,  
 बाहिर २ बडेकहि बखानिहै कथनबंक ॥  
 पुत्रि १ न तो जवन विवाहहिं परंतु रिक्त,  
 रहिहैं हमारेकुल पुत्र २ नके पैरजंक ॥ १६ ॥  
 दाहा यह दुष्कार हजूर पकन्यो प्रसभ,  
 अगहु सिकंदर १ से उग्रन भई न एह ॥  
 छत्रिय २ न राखों छिति कहि यों कुठारकरि,  
 काटे रौम हम कुल तोहु अवहै अछेह ॥  
 यातैं आहि उचित निदेसको निवारिबोही,  
 जोन यह तो ज्यों नृपभाऊ १ २५ १ विरचिनेह ॥  
 पहिलें कराइ ताहि स्वीकृत हमारी पंति,  
 पीछें हमें प्रेरहु लुपें न ज्यों लपितैलेह ॥ १७ ॥  
 बीकानैरभूप बदलो समनै आइवन्पों,

१ जो तुमको अष्ट सजोह कही है उसकी लिखावट कर दो २ आयों के ३ आप  
 ही बिचारो ४ पुत्री ५ धर्म ॥ १५ ॥ १ निकालें ७ यवन तो कहेंगे और अपनी  
 पुत्रियें नहीं देंगे ८ दोनों ओर से ९ देहे कथन से १० रीता (खाली) ११ यथा  
 ॥ १६ ॥ १२ कठिन १३ हठ १४ परशुराम ने १५ है १६ कहा हुआ सोख ॥ १७ ॥

ताकीसुता व्याहो कृष्ण १९६।१ भाऊ १९५।१ जो गिन्यों कुमार ॥  
 बीकानेर १ बुंदी २ अैसे संबंधी उभै २ ए घातैं,  
 भाऊ १९५।१ जो भनै सो कर्ण १ क्यों न निबहै करार ॥  
 बुंदीसकी बहिनी विवाही जसवंतजैसे,  
 सो १ जिम कहैतिम करै यह २ समुक्ति सार ॥  
 सोहि जब भाखी साह भाऊ १९५।१ तब भाखी हम,  
 हाजरि हनहु हमैं बिरचहु ज्यों विचार ॥ १८ ॥  
 अैसे अवनीसनतैं सासन लगाइ साह,  
 दिल्लीकी दुहाईमें भरोसाके भट पठाइ ॥  
 हुकम दया यों ढाहि देवालय हिंदुनके,  
 मस्जिदन मंडो जिन सामग्री सु व्यर्थजाइ ॥  
 जबतैं नरेस एक १ दीनको हुकमजान्यों,  
 बीर जबहीतैं असु आरा निहचै विहाइ ॥  
 दूजो २ सुनि देवालय लाहन निदेश पत्र,  
 बुंदी पठयो यों कृष्ण १९६।१ कुमारहिं जो जताइ ॥ १९ ॥  
 केसवके मंदिरपैं हल्ला जो करैं तो मेरे,  
 भैरव मरै पैं दुष्ट मिच्छन छुवनदेहु ॥  
 जवन न व्हैवो हमैं १ इत मरिजैवो तुम्हैं २,  
 उत न वचैवो प्रान निर्भय उचित एहु ॥  
 बितैं बहु दैकैं मेर १ मैना २ सैबरादि बुलिया,  
 सदनकी सेना सह लासिकैं भँचक लोहु ॥  
 दीठि ज्यों परैं न भ्रष्टव्हैवो इष्टदेवनको,

१ भाऊ ने जिसको कुमार मान लिया उस कृष्णसिंह को २ वादशाह ने कहा  
 सो वार्ता कही ॥ १८ ॥ ३ राजाओं से ४ मंदिर गिराकर ५ चनाओ कि सामग्री  
 व्यर्थ नहीं जावे ६ धर्म ७ प्राणों की आज्ञा छोड़कर ८ मंदिर गिराने की आज्ञा  
 ॥ १९ ॥ ९ बीर १० वज ११ भील आदि बुलाकर १२ घर की सेना से १३ युद्ध में  
 द्रष्टा सहित १४ टकर

प्रान१ आगैं पीछैं लाल तिनके गिरहुगेहु२ ॥ २० ॥

कृष्णसिंह१६६।१कुमर पिताको यह पत्र पाइ,  
सेना सजि बुंदी पहिलैं यों भयो सावधान ॥

देसकेहु छत्रिय१ चतुर्थ४लैव दैनहार,

अखिल बुलाये मेर२मुखहु बडे उफान ॥

एतेमाँहि सेना पंचसहस्र५००० उपेत इत,

देवालय दारिवेकों आयो खल अस्तखान१ ॥

केसवके मंदिरको कलस उतारयो यामैं,

मिच्छन चमूके दैकैं पट्टनिपुरी मिलान ॥ २१ ॥

कलस उतारि ताहि गेरनको जलनकरैं,

बैर न लगाइ तोलों बुंदीपतिके कुमर ॥

कृष्णसिंह१९६।१ अशुत अनीक लै कराल पहुँच्योहि,

बनि काल ततकाल परजाल पर ॥

पूरे पृष्ठवाँहन प्रमारी जे जवनजन,

अन्ना१दिक लैन आँढ्यग्रामनमें जात अँर ॥

भिल्ल१ मेर२ मैनें सब संगदै कितेक भट,

तिनपर चक्र भेज्यो छसहस्र६००० तूर्यांतर ॥ २२ ॥

वानाँधर टारिकैं हजारचउ४००० वीर करि,

दूजी२ अनी आप कढ्यो मिबिरैं बिनास काज ॥

पहिले गये तिन प्रसारमें पहुँचि पृष्ठ—

वाहन पकरि लूटे१ मारे२ घनें सहलाज३ ॥

१ हे पुत्र, २ गिरो ॥ २० ॥ ३ चौथा घंट देनेवाले ४ आदि ५ मंदिर गिराने को ६ स्लेख सेना के उन्मत्त ॥ २१ ॥ ८ समय पिल्ल ९ दश हजार १० घमराज होकर ११ तुरन्त १२ शत्रुओं के समूह पर १३ बैल पोढिये १४ धनवान आमों से १५ शाघ १६ सेना १७ बहु शाघ ॥ २२ ॥ १८ युद्ध से नहीं भागने का चिन्ह रखनेवाले १९ डेरों का नाश करने को २० फैलाव (वालध) में या तृण काष्ठ बानेवालों के समूह में २१ पोढियों (पैलों) को

ताको चहुँध्रोर होत हाको दलके तुरक,  
 कलिकलि पूगे कुछ बलिवलि बंछि बाज ॥  
 घोर घमसान होत तिनको तुमुल बिजै,  
 खुंदीभट तैतमये सूरनके सिस्ताज ॥ २३ ॥  
 सूनँ सिधिरनपे अचानक इततै कृष्णा १०६१,  
 कुसर परयो ज्यों सुमर १० न पै लुधित सीढ़ ॥  
 गेरे काटि घेरे पाऊँकरे नर १ बाजि २ गज ३,  
 वैभव अवरे हरे लूटि लूटि अनवाह ॥  
 भाज्यो अस्तखान तजि सेना जत्रकुत्र भूत,  
 उज्ज्वल सुरलाय गिगन अभिमान हँह ॥  
 लोहहु लग्यो न खेतलौ जय कुमार खरो,  
 मानत मरीर जत तानत जगत जीह ॥ २४ ॥  
 कोट पंचमहंस चमूको गखि पट्टनिके,  
 गैप १ हय २ सख ३ वस्त्र ४ मालीजल ५ पैंटगेह ६ ॥  
 स्वापनेय ७ अन्न ८ भारवाह ९ न समेत सब,  
 उपहार सब लूटि लाग्यो आलमे कुमार एह ॥  
 मेर १ सवरी २ दिनको प्रचुर प्रगोदि दये,  
 ओदन १ वसन २ वित ३ इनको नियत गेह ॥  
 आसननै उचक्यो सकास लो भुवन भाट,  
 बारुन जीती अन्न ज्यों लुबत गयेदे देह ॥ २५ ॥

१ पोहो पर चर २४ नवयताय नालय सुत ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

भाऊ१९५।१ रु भूँ२ पै इक१ संग देल भेजतो सो,  
 निहिनिहि निहोरिवे२ नवाब बोले नृपमित्र ॥  
 मारयो सुनि दारा४०।१ मन हारयो खानकासिम१हु,  
 लारयो पय आनि सोहु बोलयो पहुँता पवित्र ॥  
 बुंदीपति सम्मति कुमार जो करी तो ताहि,  
 व्है हम हरोल हनै१ कौ गहै२ यहि न चित्र ॥  
 भाऊ१९५।१ भिन्न व्है तो कोप रहस्य करो न हाल,  
 अप्पनहु हैं ज्यों बारि भ्रमरी बहिर ॥२६॥  
 माँचिर है घाँघाँमें उपलव तिहि अनेहँ,  
 चोरी१ घाँटि२ जोरी हेतु प्रचुर परै पुकार ॥  
 देस१ दुर्ग२ गाम३ धाम४ सबठाँहुँजन दावै,  
 यातैं रुक्यो तबतो नवाब त्रिक३ अनुसार ॥  
 औसैं एक१ दीन पै निहोरे होत इत१ उतर,  
 देस गुड़वानैकी पुकार आई जँवदार ॥  
 बारीगह१ चोकीगह२ है२ ही दाविराखे अब,  
 गौड़न उपाय इलाँ खिलहु करैं अगार ॥२७॥  
 होत श्राद्धकारक ज्यों सव्य१ अपसव्य२ होत,  
 एकदीन करत हुतो यों साह व्यग्रअंति ॥  
 घाँघाँकी पुकारमें पुकार सु सुनत घोर,  
 पठयो लिखाइ फरमान भगवंत१९५।३ प्रति ॥  
 सुबापति संगलै अवंतीको वजीर खान,

भाऊ और बुंदी की भूमि पर अलेना शराजा भाऊसिंह के द्विप्र४ पदुरागा ५ सलाह से १ इसमें आश्चर्य नहीं है ७ भाऊसिंह कुमार से जुदा होवे तो ८ अचानक ९ जल के भ्रमर में १० नाव होवे जिसप्रकार ॥ २६ ॥ ११ दिशा दिशा (ठौर ठौर) १२ उस समय १३ बाढ़ा १४ कारण से बहुत पुकार १५ दुर्जन १६ भर्म १७ शीघ्रता से १८ बाकी की भूमि को भी अपने घर करते हैं ॥ २७॥ १९ भाऊ करनेवाला सव्य अपसव्य होता है इसप्रकार २० व्याकुल

गढ दुवर् लोहु गंजि गौड़न दे कौंदगति ॥  
 साँवनमें सासनगयो सो धरि सीस इस,  
 अंतमें चढयो सो मिल्यो सूचित सो जुद्धमति ॥ २८ ॥  
 वानाँधर साँदी खटसहँस ६००० स्वकीय बलि,  
 रक्खि रनकाज है २ हजार २००० बढते बहोरि ॥  
 उज्जइनी जाइ सो वजीरखानकों लै इम;  
 गौड़नकों गंजन गृये ए जवँ १ जोरँ २ जोरि ॥  
 सूची भगवंत १९५१ ह्वाँ वजीरखानतँ सर्मद,  
 तुम १ हमारभेजे जय वंटन अरिन तोरि ॥  
 जातैं जाहि जैसी शरि रुचत रचो सो तिम,  
 दीजिये न दखल जुरैं जँहँ मन न मोरि ॥ २९ ॥  
 यह सुनि दर्पवन अंतर १ अनखँ घानि,  
 अच्छी कहि ऊपर २ तैं सुवापति होइ संग ॥  
 लुट्टि गुड़वान द्वै २ हि वारीगढ १ लागे जागे,  
 भाग्यबल जेमिनके जाविधि जझायो जंग ॥  
 सुर्जन १९०१ पोरि १ घाँ प्रचारि भटखीय भग-  
 वंत १९५१ चढि निश्रेनिन पैठो इततैं अभंग ॥  
 केते काटिडारे १ केते पकरि निकारे २ दई,  
 गढमें दुहाई औंधिराज सूचि अवरंग ४०१३ ॥ ३० ॥  
 सिद्ध जय सीरी पैठि पीछें तँहँ सुवापति,  
 बाहिरकी बाँह दे सराहयो भगवंत १९५१ वीर ॥  
 ज्योंही ज्यों जाइ गरदाइ दूजी २ चोर्कागढ २,  
 लौलयो सता १९४१ केसुत तामैं लग्यो इक १ तीर ॥

१ कैंद करके २ साक्षियन मास के अंत में ॥ २८ ॥ ३ नही भागने का चिन्ह रखने  
 वाले ४ सवार ५ अपन ६ वेग ७ बल ८ दर्प युक्त कहा ॥ २९ ॥ ९ घमंड के  
 बपन १० क्रोध ११ ऊपर के मन से १२ अवरंग को स्वामी जनाकर ॥ ३० ॥ १३  
 ऊपर के मन से प्रशंसा करके १४ वेगवान्,

॥ वृत्तान्तः क्वली ॥ १ ॥ ॥ हाथी घोड़ा मार्ग में राव के इलाज में शिष्य दिला कर षोप यदि पक्ष में ॥ ३२ ॥ ॥ विद है कि देखवर विवाहिता क्रिये समूह शुग्गर नामक स्थान में ॥ ३३ ॥ ॥ पास ११ हे पुत्र १२ हे पुत्र १३ डेर की लुट की सोमयौ

ऊतरयो कलस सो पै न तुम चढाहु अब,  
 ओहैं इस तो पुनि चढै हैं विधिसौं अचल ॥

\*एक१दीनदठ न तजै हम१मरै तो उहाँ,  
 तुम२हु मरै पै देहु आपनों छोनितल ॥३४॥

हल्ले बारबार इत एक१दीनकाजें होत,  
 भाऊ१९५।१मुख भूप पेलिदेत जे समै प्रवीन ॥

एक१ गज आगे ज्यौ बगंडहि के अंतराय,  
 केही टिकै खड़ी२ इन यों नय बरंड कीन ॥

भाऊ१९५।१ पास भेज्यो दल तासमैं करनभूप,  
 आप जो सहाय रहो आऊँ तब मैं अधीन ॥

पच्छी लिखी भूप साह भ्रष्ट जो न पारै१ लिखि,  
 मैं बलि बुलाऊँ२ तब आवहु स्थाहित लीन ॥ ३५ ॥

मानी साह पट्टनि लुट्यो सो उपहार१ मंग्यो,  
 माख्यो तिहिं बैर मंग्यो मारक सुही कुमार२ ॥

भूप लिखिभेजी उपहारतो अबहि भेजि,  
 कुमरकहाई बंदि लैगये बिजयकार ॥

साह इहिं अंकट विलांबहि परत सोधि,  
 लैनलागो पट्टनि तदीयें सब ग्राम लार ॥

भूपहु कहाई नयओटै लै कुमर१ भेजौ,  
 आनि तस संग हि लुट्यो सु दूनो२ उपहार ॥ ३६ ॥

भाखो साह बिरचि विलांब क्यों न भेजत तो,  
 तब नृप वेहीमित्र दै बिच नबाव तीन३ ॥

\*एक धर्म करने का । भूमि तल ॥ ३४ ॥ † भाऊ आदि १ अगड़ के अंतर से एक हाथी के आगे कई १ खड्गवाले भी टिकजाते हैं तैसे ३ नीति का थरंडा (अगड़) किया बीकानेर के राजा कर्णसिंह ने भाऊसिंह के पास ४ पत्र भेजा १ धर्म अष्ट ६ फिर ॥ ३५ ॥ ७ सामान उभारनेवाले कुमर कृष्णसिंह को मांगा ९ विजय करनेवाले १० मोड़ (अगड़े) में ११ उसके ग्रामों सहित १२ नीति की आद देकर १३ सामग्री ॥ ३६ ॥



लकखदुव२००००० मुद्रा दै वजीरहिँ पिहित लोभ,  
बिन्नति कराई इन च्यारिन४ पै यों प्रवीन ॥

सुत अपराधी गहि सौंपन भनत भूप,  
दूनों२ उपहार देत आगसँ१ त्रपाँ२ सौं दीन ॥

इतर असाध्य जोलों मतलब लेहु यातँ,  
कोलों बहिकावहि हजूरकों सो बलवान ॥ ३७ ॥

एक१ दीनको हठ हजूर न तजो, तो अब,  
जोधपुर हीन अतिखीन राजाजसवंत ॥

भाऊ१९५१ सु भाम तातँ याहि विच दैकँ ताहि,  
भीतरहि बुलाइ साँकरमें लै भयभ्रमंत ॥

देहु बलि लोभ जानिवैमें सो करें गँदित,  
औरहु किते तो करें नाँकरैं ते पावैं अंत ॥

पै इहिँ प्रसभ हाहा उलटपलट व्हैहैं,  
हिंदुनके बैस ए असेस कहि हंतहंत ॥ ३८ ॥

मरिबेलगैं जे तिनकों तो टारि काह मिस,  
लोभ१ भय२ सौं जे व्है तिन्हें यों निजदीन लेहु ॥

हुकम न मोघ होइ जगहु इसै न जैसैं,  
असैं सुनि मानी साह नीठि नीठि मानी एहु ॥

भाखी तुम मोहि भाखी सोहि भाखो भाऊ१९५१सन,  
देहु अपराधी१जसवंत२हिँ बुलाइ देहु ॥

मिलि सु महीपसों नवाबन निवेदी गूढ,  
यह जो करो तो रहैं पट्टनि निजहिँ गेहु ॥ ३९ ॥

अधिप कर्यो हैं हम पट्टप अधीन पँहु,

१ छानें २ अपराध की ३ लज्जा से दीन होकर ४ अन्य ॥ ३७ ॥ ५ बहिनोई ६ कहा हुआ ७ नाश ८ हठ से ९ हुक्म (हाहाकार) ॥ ३८ ॥ १० अपने धर्म-से ११ कुमार कृष्णसिंह को और जोधपुर के राजा जसवंतसिंह को ॥ ३९ ॥ १२ पाँट (तख्त) के अधीन

हितही हमारे सतच्यारि४००मरे धोलपुर ॥  
 पट्टहितही मैं सत्तसय७०० न प्रहार पाये,  
 औसैं अवरंग४०।३ अब पट्टप प्रमानि उर ॥  
 मैं यों प्रभुजानि उपदाहु लैं अधिक मिल्यो,  
 धोरी गज च्यारि४त्यौं निसेस दये भेट धुर ॥  
 रीभकी ठाँ अर्द्धः प्रतिदेय२मिल्यो औरनसौं,  
 सोहु सही तोहु पुनि रीभ सुनि ये प्रचुर ॥ ४० ॥  
 मुनसव१मोसौं सत्तसहस७०००छमासौं छोनि,  
 बारा१मऊ२प्रवर छमा३हू छोनि अर्द्धः इम ॥  
 अर्द्धः अबनी सौं मोहि अट्टाईहजारी२५००अक्खि,  
 जेठो१करयो अनुज२समान मंतु हांड जिम ॥  
 ताहि पुनि द्वि२गुन देढायो जैमी रीभ तकि,  
 तैसी ठाँ सुजा४०।१के रन मोपैं प्रतिकूल तिम ॥  
 नाक काटिवो१जो तुम सबल न मानौ तोहु,  
 नाक काटिवेमें२तो कुमी न राखी साह किम ॥ ४१ ॥  
 पट्टनि हू लेहु तजि एक१दीनको प्रसभ२,  
 उजिभंडावरे२को तिम दूरनौं लेहु उपहार ॥  
 भृत्यहैं न मेरे जसवंत१रु करण२भूप,  
 तोहु अभैं दैहैं तो चलै हैं कहु जलन तार ॥  
 हम पहिलैंही मरिवेकों हुसियारहैं पे,  
 कपटकरो तो लगैं पातक हसैं हु डार ॥  
 भाखैं जग भाऊ१९५।१की भलाई विसवास दे,

१मालिक जानकर २नजराना ३ मुख्य ४ जगह ५ छलवा (पाछा) दान ६ बहुर  
 ॥ ४० ॥ ७ छमा युक्त से; अथवा सम से ८ छुमि ९ अपराध होवे इसप्रकार  
 १०मासिका(मनसब कम होजाने से बुन्दीवालों ने नाक काटना माना) ११स्वर्ग  
 की प्राप्ति सिद्धाने में तो किसी प्रकार छुमी नहीं रक्खी ॥ ४१ ॥ १२मेरे लड़के  
 को छोड़कर १३सामान १४ सेवक

बुलाइकै मराये१कै कराये२कैद अघकाँर ॥ ४२ ॥

होत असै भंभट बसंत१दूजो२पूरो होत,

ग्रीखम१के लगत अराजक पुरी गूगोर ॥

माताभगवंत१९५।३की बुलाइ कृष्ण१९६।१कुमरहिँ,

निरलोभी छानै धरयो दूरनै राज्य सुत ठोर ॥

पहिलै बुलायो मधु१९५।१ नाम राजसिंह१९५।४पुत्र,

स्वीयन ह्वाँ सूची जिन मेटो पतिबँस जोर ॥

बलि जिहिँ भेजि गूढ कृष्ण१९६।१सु बुलाइ ताहि,

अंकलौ नरुकी दीनौ पंचकहजारी५०००तोर ॥ ४३ ॥

तैसी सुनि भूप लिखिभेजी अब बूंदी ताहि,

पैठन न देहु गयो अप्पनतैं सो कुपूत ॥

पट्टनिकी लूट सब दूरनी पहुँचाइ कहयो,

मो बस न कृष्ण१९६।१है बुलावहु दै बर्याँदूत ॥

जोहू साह पट्टनि उतारिवे लग्यो सो तँहँ,

दम्भ दुवलदख२०००००मार्न दै पुनि सचिव सूत ॥

अय३हि नदावन बजीर४सह भाखी तहि,

भाऊ१९५।१साध्यो हुकम तऊ न करिये अभूत ॥ ४४ ॥

दूरनौ उपहार सब लूटको हजूरकोँ दै,

कढिगो पिहितँ कृष्ण१९६।१बलि सु दयो बताइ ॥

मरजी तऊ तो कछु लेहु दैम सुदा जातैं,

सासन बनै१रु जोधैभूप न बिगरिजाइ ॥

पंचलाख५०००००मुद्रा तब सौहस सो भूपपर,

१ पापी ने ॥ ४२ ॥ वसन्त ऋतु का २ दूसरा ग्रीष्म वैशाख मास ३ राजा विना  
४ अपने लोगों ने कहा ५ वंश के पति का बल गत मेटो ६ मोद ॥ ४३ ॥ ७ पत्र  
८ प्रमाण ९ पहिले नहीं हुआ सो मत करो ॥ ४४ ॥ १० छिप कर ११ दंड  
के रुपये १२ हुक्म १३ वीर राजा है सो बिगड़ नहीं जावे १४ दूत से

सोहु भरदीनों स्वांत टेक उतकी टराइ ॥  
 सो पै टेक साह न तजी रु यौ प्रबोधयो सोहु,  
 मीन पै पल्लमान लोभको लपेटा लाइ ॥ ४५ ॥  
 पत्तन गूगोर इत नतीश्रो पितामहीरके,  
 राज्य प्रभुतामें नैक न बनी बिहित रीति ॥  
 भिदिभिदि लोक इत त्यों उत दुर्पाले भये,  
 औसी बढी सो न फेरि समिति सखी अनीति ॥  
 तबही नरुकी तीरथनको बहाँनाँ ताकि,  
 कोपि चली निकसि भुलाइ यौ करन भीति ॥  
 अपजस घाँघाँ उडयो पोतेशको पितामहीरको,  
 बात सु सुनतगई साहकी कृपा हु बीति ॥ ४६ ॥  
 समुझी नरुकी नाँती पट्टनि अहित साध्य,  
 याही अपराध साह कृष्णा१९५१सौं न अनुकूल ॥  
 तातैं मो पुकार सुनि दैहैं सो बिडोरि ताहि,  
 मैं त्यों कृपापाल भगवंत१९५३प्रैसू हितमूल ॥  
 च्यारि४धाम को करि बहाँनाँ सो अनखि चली,  
 संग कुमरानी बडी१भेजी कृष्णा१९६१सहि सूल ॥  
 सचिव१सिपाह२ संग दीनै दै कथित द्रव्य,  
 झारि यौ प्रबोधे क्यौहुँ मेटहु हृदय हूल ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

केसरदेवी१९६१नाम करि जेठी१कुमरानी जु ॥

१ मन का हठ छुटाकर २ समझाये ३ मछली पर मांस के समान ॥ ४५ ॥  
 ४ पोता और दादी ५ उचित ६ अनीति रूपी सखी की सभा में; अथवा सभा में अनीति रूपी सखी ऐसी बढी ७ इसप्रकार झूलकर भय करने को चली ८ ठौर ठौर पोता और दादी का अपयंत्र बढ़ा ॥ ४६ ॥ १० पोते ने पाटन में ११ प्रसन्न नहीं है १२ उसको निकाल देवंगा १३ भगवन्नासिह की माता होने के कारण १४ कहने के साफिक द्रव्य देकर १५ किसी प्रकार ॥ ४७ ॥

\*दइत नरुकी संग दिय, जतन निपुन जानी जु ॥ ४८ ॥

साह नाम पंचायशन सु, सचिवशरु कति सामंत २ ॥

उचित पठाये संग इम, उचित निहोरन अंत ॥ ४९ ॥

तीरथ न्हानशन चित्त तस, प्रत्युत करन पुकारि २ ॥

गया अवाधि सो तब गई, बहुरि मुरी इहि बारि ॥ ५० ॥

कुमरानीसह कृष्ण १९५१के, जनबैभव हे जेहु ॥

मथुरा आतहि मुद्धमति, गहि हठ पठये गेहु ॥ ५१ ॥

जाइ अप्प अवरंग ४०।३जैहैं, किय तिय कुमति पुकार ॥

मातासन जातहि मिल्यो, भाऊ १९५१धरि कुलभार ॥ ५२ ॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी  
भूपभावसिंहचरित्रे महाराणा राजसिंहसूनुसरदारसिंहस्य चाहुमान  
भगवन्तसिंहसुतोपयमन १, आंगलमोहमयीपत्तनप्रापणा २, यवनेन्द्र  
शाहजहांकारामरणा ३, आर्यराजयवनीकरणौरंगजेबप्रसभार्थराजा  
स्वीकरणा ४, आर्यमन्दिरपातनतत्सामग्रीयवनमस्जिदनिर्माणौरंग  
जेबनिदेशन ५, पट्टनिमन्दिरपातनसमयकुमारकृष्णसिंहयवनेन्द्रसै  
न्यविजयन ६, गुडवानावारीगढविजयानन्तरसविषक्षतौषधिमऊरा  
जभगवन्तसिंहतनुत्यजन ७, स्वसूनुकृष्णसिंहोपरि भगवन्तसिंहजा  
यायाः प्रक्रोशार्थदिल्लीद्रङ्गगमनं षष्ठा मयूखः ॥ ६ ॥

\*प्यारी;अथवा पति ने साथ दी।४८।१उमराव ।४६।२बलदा।५०।३सूर्य ।५१।५२।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
भावसिंह के चरित्र में महाराणा राजसिंह के पुत्र सरदारसिंह का चटुबाण  
भगवन्तसिंह की पुत्री से विवाह होना १ वंजई का अंगरेजों के हाथ लगना २  
बादशाह शाहजिहांका कैद में करना ३ औरंगजेब का हिन्दू राजाओं को  
यवन करने का हठ करना और राजाओं का अस्वीकार करना ४ हिन्दुओं के  
मंदिर गिरा कर उसी सामग्री से मस्जिद बनवाने का औरंगजेब का हृद्य ५  
पाटण का मंदिर गिराते समय बादशाही सेना से बुन्दी के कुमार कृष्णसिंह  
का विजय ६ गुडवाना और वारीगढ विजय किये पांडे घाघ के इलाज में  
जहर होकर मऊ के राजा भगवन्तसिंह चटुबाण का देहांत होना ७ भगवन्त

आदितस्त्रयस्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३३ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ बैतालीयम् ॥

इत भाऊ १९५।१ भूप उच्चर्यो, कठिन अनुग्रह पुत्रपै करयो ॥

बिअया जो कृष्ण १९५।१ आदरयो, पाप सु पुत्रकपंति तैं परयो ॥ १ ॥

अरजो मम चित्त आनिकैं, सैमि अरजी हु न देहु साहको ॥

जननी सुत मोहि जानिकैं, पुरबुंदी अबहू पधारिये ॥ २ ॥

बंदे सिर ही विराजिये, जोलों जीवित दासकैं जथा ॥

सवपै स्व निदेस साजिये, अनुचित विन्नति दै न उजिअकौ ॥ ३ ॥

प्रत्युत खिजि नारंवी प्रसू, अंगज बैनन सोहु आदरयो ॥

बिचकी जन अर्थ दै बंसू, पठई विन्नति स्वीय साहपै ॥ ४ ॥

हजरत भगवंत १९५।३ माइ हौं, अंकस्थ न जिहिं कृष्ण १९६।

१ आदरै ॥

प्रभु सासन मान पाइहौं, भय तिहिं दै तंहँ मोहि भेजिये ॥ ५ ॥

सो सुनतहि कुपि साह हू, अस्त्रिखय जाहु निकै पाय अप्पनै ॥

गिनि ममकैंत बहु गुनाह हू, लोभिनिअंक कुपुत्र कयौलयो ॥ ६ ॥

तिहिं इम जवनेस तैजिकैं, विन्नतिसौं प्रतिकूल वहाँ बन्यौ ॥

बलि यह वह मान बैजिकैं, गुग्गेर १ हि तजिकैं मऊ २ गई ॥ ७ ॥

राजसवर्तिका ॥

बुंदी करे नव ९ कृष्ण १९६।१ विवाह चही तिहिं त्योंहि खवासि

सिंह की स्त्री का पुत्र कृष्णसिंह पर दिल्ली पुकारू जाने का ६ छठा मयूख समाप्त हुआ और आदि से २३३ मयूख हुए ॥

१ वी (आला) नहीं मानने का कार्य कृष्णसिंह ने अंगीकार किया तो; अथवा कृष्णसिंह ने निर्द्वजता अंगीकार की तो २ पापी ॥ १ ॥ ३ शान्ति करके ॥ २ ॥

४ सेवक के अस्तक पर ही चिराजो ५ अनुचित अरजी देना छोड़कर ॥ ३ ॥

६ उलटा ७ माता नरुकी ८ पुत्र का वचन ९ धन ॥ ४ ॥ १० गोद रखता हुआ कृष्णसिंह ॥ ५ ॥ ११ घर १२ किये हुए १३ गोद ॥ ६ ॥ १४ धमका कर १५ मान

चउदह१४ ॥

तत्थहि ताके भये सुत तीन३ \*सुता दुवर तेहु सुनौ क्रमसंग्रह ॥  
कर्णकी नंदिनी राजकुमारि१९६।३ तृतीय३ वधू त्रय३ तोकजनै  
तह ॥

सो अनिरुद्ध१९७।१ रु कीरतिसिंह१९७।२ सुत द्वय२ बख्तकुमारि  
१९७।१ सुता१ सह ॥ ८ ॥

जादवी ही तस छट्ठी६ जनी तस इक्क१ सुता हुव नाम सुखाँ१९७।१  
तस ॥

इक्क खवासिके सूनू ओ इक्क१ पै सिवराम१ ए पंच५ प्रजा अस ॥  
सो त्रयोविंशति२३ वर्ष वया अब जाइ बन्पौ भगवंत१९५।३ को  
औरस ॥

यानै सबै तिय बुझी उहाँ जहँ पंचगई न उबारि त्रैपा जस ॥९॥  
सो भयो कृष्ण१९६।१ नृपारुंज को सुत ताके न व्याह कहे सब  
ताहि सौं ॥

पै जे बधूँ न गई तहँ पंच५ सुनौं तिनको क्रमतो लुखमाँहिसौं ॥  
तीजीइवधू जो प्रजा त्रिक३ की जननी न गई पहिलैं हठि जाहिसौं ॥  
औरहु च्यारि४ गईन उहाँ पतिके अबुंधत्वपै छिज्जि लंपाहिसौं ॥१०॥  
गोड़ी किसोरकुमारि१९५।५ गिनौं पुनि पंचमी५ जादवी छट्ठी६  
जसोवति१९५।६ ॥

सप्तमी७ कल्ली जो गंगा१९६।७ सनाम रु अष्टमी कावंधी पूरौ  
१९६।८ सुंधी अति ॥

बुंदीपुरी इन पंच५ वधून तजी न चहे न पती सुख१ संतति ॥  
पंच५ हि ते इत राखी प्रसन्न मनोमैंत साधिकैं आऊमहामति॥११॥

रहित होकर ॥ ७ ॥ \* पुत्रिये † पालक ॥ ८ ॥ ‡ माना १ सन्तान २ वय  
वाला ३ लज्जा ॥ ९ ॥ ४ राजा के छोटे भाई भगवंतसिंह का पुत्र १ छिये ६  
परम प्रीति से ७ मूर्खपन पर ८ लज्जा से ॥ १० ॥ ९ राठोड़ी १० अष्ट रुद्रि  
वाली ११ मनचांछित ॥ ११ ॥

दैं अरजी निज दर्प दहाइ मुरी जब नारवी नैर मऊ मग ॥  
 कृष्णा १९६।१ पै व्है तब मिच्छप क्रुद्ध उतारि मऊ हु लई लघुता  
 लग ॥

नारवी मान तहाँतैं नसाइ गुगोरगई प्रतिकूलसे दैं पग ॥  
 तानैं स्वमान गुमायो तऊ सुतकृष्णा १९६।१ घटयो सु अहो भई  
 उच्चग ॥ १२ ॥

लै मऊ१ बाराँ२ त्यों संगही लै अवरंग४०।३ नैं कृष्णा १९६।१  
 घटाइदयो इम ॥

राखी गुगोर१ ओ चाचुरनी२ खाताखेरी३ ब्रईहि दीय पटातिम ॥  
 राख्यो हजारउभै२००० उँपटंक जु पै त्रीहजारी ३००० को छीनि  
 लयो जिम ॥

तातैं लुभावन स्वस्त रुकाँ अवरंग४०।३ बिचारयो सुलोभ दैं  
 अयिम ॥ १३ ॥

भाऊ१९५।१ साँ साह सो अैसेँ भनी वह कृष्णा १९६।१ कुपुत्र मरयो  
 अपराधन ॥

दंग वे बाराँ१ मऊ२ अब द्वै२ हि लहो तुमरेतुम हैं हमैं लोभ न ॥  
 जो इक१ दीनमैं होहु जई ततो होहु वजीर हमारे सनातन ॥

सुर्जन १९०।१ पायो जितो लाहि सर्व करो जस रूयात भरो घर  
 कंचन ॥ १४ ॥

जिति सुजा४०।२ को लयो जस एसैही सासन एहहु मानिबो  
 सारहै ॥

जो न रुचै यह तो जसवंत१ रु कर्या२बुलावहु सु पै उपकारहै ॥  
 भूप भन्यो नहिँ पूर्व१ निदेस बनेँ तस क्योँ दठ बारहिबार है ॥

१जरुकी२बादशाह३ऊँची गति बाखी-अर्थात् कृष्णासिंह के बढ़ने से आप अपने  
 को ऊँची समझने लगी सो आश्चर्य है ॥१२॥४खिताब ॥१३॥ ५प्राचीन रीति  
 (सदैव)के अनुसार६प्रासिद्ध ॥१४॥७प्रथम[एक दीन होने] की आज्ञा नहीं बनती



सासन दूजो२ करो जब सोह रचौ तब जो छलको न बिचारहै १५  
 मार्मक मान घटायो घनौ इस फेरि घटाइबेहीको उपाय है ॥  
 आपतैं छन्नमदीय उदंत अहो न जितोक रहयो व्यय १६ आय २ है ॥  
 ज्यों उपटक अढाई हजार २५०० को रंच रहयो समुक्तयो सु ॥  
 सहाय है ॥

तोहू बनी सो करी तब त्यों घरआन्यों बिजै खजुवा लहि धाय है १६  
 तोहू हजूरकी रीझ बहै तिम गौरव मेरो लिखपाद गुमाइकैं ॥  
 भ्राता मदीय लई सुधि भूमि लहौ अब मैहु जो लोभहिं लाइकैं १॥  
 जाँमिप १ व्याही २ बुलाइ उभै २ जिम पेचके संकटमाँहिं पराइकैं  
 हड़न ६ १ को मुख स्यामँ व्है जो किम सुख व्है सो न कही  
 बहिकाइकैं ॥ १७ ॥

आपकाँ न कहानहै ओरकै देखतहो मम चित्त जो निर्दर ॥  
 साह कछो तुम स्वामिकाँ सौंह दिवावत न्याय सो कैसे दिगंतर ॥  
 लैहु इहाँ नृप द्वै २ ही बुलाइ जिन्हैं हम भेदिहैं अपि जमो १ जर  
 लोभतैं वे हम दीनलहैं तो नही सु मही तब कृत्य गिनैं नर ॥ १८ ॥  
 चाकरी सोपै सिरेचढती तुमरी हम मानिहैं सीम जहाँतक ॥  
 यों करजोरि कहाई अधोस व्है हीन बिसाससो नाँ करिवो इक ॥  
 कोल करो प्रतिभू जो स्वयं कडि बाढै बिसास जो संसय बाधक ॥  
 जो न रुचै यह तोपै हजूरके आश्रितहैं रहिहैं बनि रोचक ॥ १९ ॥  
 जोरतैं यों नृपपै इठजाल दिखावत साहकाँ अब्द गये दुव २ ॥  
 अंतपै भाखी उभै २ अबलीसन हड़ ६ १ बुलाइ कहाहु कूँती हुव ॥  
 तासों चढ़े नृप सौंह तहाँ धरि कोप इठी प्रतिकूलता लै धुव ॥  
 भाख्यो अहो खल किंकर भाखि भुवँलवनहँ मैराखिअधोभुव ॥ २० ॥

१ मेरा २ मेरा वृत्तान्त ३ खरच ४ आमद ॥ १६ ॥ ५ तीन अंश बिटा कर एक अंश  
 बाकी रक्खा ६ बहिनोई ७ काला मुख ॥ १७ ॥ ८ निर्भय ९ श्रुति और धन देकर  
 पृथ्वी पर वह १० कार्य तुमारा नहीं गिना जावेगा ॥ १८ ॥ ११ जामिन [जमानत  
 देनेवाला] १९ ॥ १२ चतुर १३ सौगन १४ बिह्वना १५ राजा १६ छड़े में ॥ २० ॥

भाऊ१९५१ तहाँहु चहयो प्रैतिभू कहि यों आप बली बदलो तो  
कहाकरैं ॥

हायन है इम भंफठ होत महीप कहयो हनिये बै इहाँ मरैं ॥  
जोरपै यातें बढे जवनेस भन्यो तुमपै दस ओर कहा भरैं ॥  
हिंदुन इष्ट जो कृत्य इहाँ इम होन न दै हैं मिटाइ हरैं ॥ २१ ॥  
संवत बेद बिलोचन सत्रह१७२४ उज्ज्वल१ भद्वद के दसमी१०  
अह ॥

साँइस साहि कही इम साह अहो अब हिंदु तजो यह आग्रह ॥  
कलिह कछु मह जो करिहो मचिजै हैं ततो महमैं सृतिको मँह ॥  
ज्यों जिजिया१दिक भेट भरो इक१दीनन होहु रहो कुल उँदहा२२।  
बज्रसो भाऊ१९५१ यहै सुनि बेन विचारि इहाँ अब हे मरिबो बर  
कूरम१ आदि महीपनको समुझाइ कहयो गिनो मोहिपुँरस्सर ॥  
संग न जो पै चलो तुम सर्व तथापि पैरिग्रह संगदै सँत्वर ॥  
कलिहको उच्छव मेटकरैं न निरंकुस जुजिभ परैं नरपै नर ॥ २३ ॥  
ओर नरेस न भाखी यहै छितिपै तुमरी नहिं बीरता छन्न है ॥  
रावरेसंग पठाइहैं रीझि पैदाति कितेक जे जाति प्रपन्नहैं ॥  
माच्यो निसा सबठाँ यह मंत्रपै राजा न भो खिलकोहु प्रसन्नहैं ॥  
इकिखलई अबतो सबनै इहाँ अँज असेसहिं मिच्छन अन्नहैं ॥ २४ ॥  
प्रात भयो इहिं मंत्र प्रपंचमैं सुँधिपै लागिरहे चैर साहके ॥  
नित्य निवेरि रू भाऊ१९५१ नरेस सज्यो मरिवेहिततंत्र सलाहके ॥  
कुँकुमीवस्त्र पिताजिम स्वीकरि राजसचिन्ह धरे पिँवराहके ॥

१ जामिन २ वर्ष तक ३ अथ ४ दंड. हिंदुओं के दण्ड का ५ कार्य जो यहाँ  
होता है सो नहीं होनेदेंगे ॥ २१ ॥ ६ दिन ७ हठ करके = हठ ९ उन उत्सवों  
१० सृष्टि का उत्सव ११ कुल के नायक [कुल का उच्चार करके] ॥ २२ ॥ १२ अग्र  
णी १३ परिणह १४ शीघ्र ॥ २३ ॥ १५ पैदल १६ जाति के शरण है १७ सलाह  
१८ सब आर्य १९ म्लेच्छों का भक्ष्य है ॥ २४ ॥ २० खबर पर २१ हलकार २२  
बलाह के आधीन होकर २३ कोसर के वस्त्र २४ शत्रुशाल ने किये थे जिस प्रकार  
स्वीकार करके २५ राजापन के अध्या; रजोगुण के २६ स्वर्ग के मार्ग के

सो सुनि चोथे ४ वजीर समेत नबाब सखा सकुचे नरनाहके ॥ २५ ॥  
 स्वामी रुठाई सहाय न दै सकें १ राज्य को थंभ गिरें इत संभरी ॥  
 तोहू तिरोहित दूत तंती करि प्रस्थित भूपपै ख्याति यहै करी ॥  
 क्यों मरिये अनिमित्त १ अकाल २ हिंदाइये आज पटाल यही हरी ॥  
 एककी मानै नही अवरंग ४०।३ धरि मन सोलिपि बंजपै ज्यो धरी २६  
 भूपहु गूढ कहाई न भो तुमसो यह पाप पै साह प्रतीपै तो ॥  
 जो मरिबे मैं प्रसन्न व्हो जोधैं मुरै न सो छुद्रहु दूर महीप २ तो ॥  
 चुकिबो हो तो हमैं कुलचाल जो टारते क्यों इक १ दीनकी  
 टीपै तो ॥

मुक्तिसे जाबिच मोती मिलैं सो तजैं किम धर्ममयी सुभ सीप  
 तो ॥ २७ ॥

साइस्ते १ जाफर २ कासिम ३ सोँ इम गूढ कहाई वजीर ४  
 उपेतहि ॥

जाम उभै २ दिनपै कछु जात करयो इक ठाँ बल ब्रौत यहै कहि ॥  
 श्रीप्रभुवारे बिमानके संग चलो मम पीठि जिते मरिबो चाहि ॥  
 सेसनको हितसोँ जब सीख गिनोँ जुहि श्रेय करो सुअभै गहि २८  
 पंचन भाखी हमैं प्रभुपास अहो न भयो कछु दुर्लभ आजलौ ॥  
 खगन यातैं घनै रिपु खाइ कहो बँ न क्यों पहुँचैं प्रभुकाजलौ ॥  
 भेजि भरोसाके आधे इहाँ सब विष्णुबिमानन आनिसमाजलौ ॥  
 बीच तिन्हैं करि आप बली जमुनापै चलयो धरि धर्मजिहाजलौ २९  
बुंदीचंसू सुनि आते बिमान कहयो अवरंग ४०।३ न ठाँठाँ कटाकरो

१ स्वामी को कुछ करके २ चहुवाण ३ छिपीहुई ४ पंक्ति ५ भेजकर ६ बिना  
 कारण ७ बिना समय ८ जलजात्रा के उत्सव में विष्णु को ९ डेरों में ही खुला-  
 ओ १० हीरे के लेख के समान ॥ २६ ॥ ११ गुप्त १२ यह पाप तुम से नहीं छुआ  
 है परंतु बादशाह ही १३ विरुद्ध १४ बीर होता है सो छोटा भी मरने से नहीं  
 डरता सो राजा का डरना तो दूर रहा १५ उच्चस्वर की आवाज ॥ २७ ॥ १६  
 सहित १७ सेना का समूह ॥ २८ ॥ १८ अब ॥ २९ ॥ १९ बुन्दी की सेना २० ठाम ठाम

ए जब पीछे मुरै करि इष्ट सबै फल तोपन दै तहँ संहरो ॥  
 आप लै जाइ विमान इतैं बिधि क्रीड़ा कराइ कह्यो बैल बिस्तरो ॥  
 कालिंदी कूलपैं अज्ज कहाइ महाभट अज्ज महापदको मरो ३०  
 यों कहिकैं मुरिबेके अनेहतो पूगी प्रलैकरी तोपनकी तति ॥  
 अर्धव महीपको रोकि अनीक निदेस चह्यो हनिबे सहबिन्नति ॥  
 भाऊ १९५१ कह्यो भट भूपन भेजे जे स्वैस्व विमानके अग्र लै  
 संगैति ॥

हौं सदै इष्ट २ हौं सर्व हरोल करैं जस यों जु मरैं न सँमा कति ३१  
 बरिन यों अनुकूल बनाइ व्है भाऊ १९५१ हरोल कह्यो बैलना-  
 हहि ॥

क्यों मग नाहक रोकिरहे सुकरैत्वमें कष्ट दै मात्र सिपाहहि ॥  
 क्योंहै बिलंब निदेस करो इतपै मरिबो हम सर्व उमाहहि ॥  
 साहको सासन आयो तहाँ यह दाहहु क्यों न तुमहैं न तो दाहहि ३२  
 लै यह १ सासन खानदलेल द्वितीय २ चलयो वहाँ निदेस सुही दयो ॥  
 आइ चतुर्दश ४ सो इहि अंतर पाय परयो रू भली भनतोभयो ॥  
 वीतिहैं हिंदु न स्वामी बिसासतो आसको देखहुत्रासहि उन्नयो ॥  
 नीतिके आश्रय देहुनिदेस लचे जिम हिंदु तजैं हठ जोलयो ॥ ३३ ॥  
 चाहैं मरे जे स्वतंत्र चलैं तिन्ह मारन टेक कहाँ लग तानिये ॥

१ नाश करो २ सेना अथवा पराक्रम फैलाओ ३ जशुना के फिमारे ४ आर्य  
 कहाकर ५ आज ॥ ३० ॥ ६ पीछे फिरने के समय ७ पंक्ति. राजा का ८  
 मार्ग रोककर ९ सेना ने मारने का हुक्म चाहा १० राजाओं ने भेजे जो वीर  
 ११ अपने अपने विमानों को आगे लेकर १२ साथ रहो १३ इष्ट देव के साथ १४  
 कितने वर्ष नहीं मरेंगे अर्थात् कभी तो मरना होवेहीगा ॥ ३१ ॥ १५ सेनापति  
 से कहा १६ अष्ट कार्य में १७ नहीं तो तुमको जलावेंगे ॥ ३२ ॥ १८ तीनों तो ऊपर  
 कहेहुए और चौथा दलेलखा यह चारों का समुदाय बादशाह के पैरों पड़ा  
 १९ हिन्दुओं पर स्वामी का विश्वास जाना रहेगा ॥ ३३ ॥

भाऊको दिल्लीमें देवदूतनी काउत्सवकरना] सप्तमराशि-सप्तममयूख (२८१०)

जानिये यों १ \* प्रपितामह १ जोर मुरे इत २ रान प्रताप २ से मानिये ॥  
तुटै पै जोरतै नाहि नमै बपुके १ बलतै बल बुद्धि २ खानिये ॥  
ज्यों प्रपितामह जे जिजिया १ दि तजे तिनको इनपै पुनि आनिये ३ ४  
ए १ जिजिया १ दि रुके इकबीस २ १ ही आप इहाँ बहुभार बिथारिये  
और मिलाय घनै इनमें दैम दुस्सहको डर बज्रसो डारिये ॥  
कोलग दैहै विचार कितेक मुरै इतको तिनह दारिद भारिये ॥  
ऐसी विधा करि अल्पइन्है बलि जोरके तोर सुसाध्य विचारिये ३ ५  
व्याज कछु करि दंड बुलाइकै सक्तिलौ दंडके दैम सम्हारहु ॥  
त्यों जिजिया १ मुख दंड कितेहि वनै न इते बरजार बिथारहु ॥  
सो सुनि लौ जननीमिस साह बुलाइ अनीक कदाई विचारहु ॥  
आज मो माता बचाये इहाँ पर यों कबलौ रहिहो भयपारहु ॥ ३ ६ ॥  
यों जब सेना मुरी अवरंग ४ ० १ ३ की सम्मद ह्यौ सबके उर संघरे  
माइको है मिस भाऊ १ ९ ५ १ १ भन्यौ कित माइ १ हुती जब कैद  
पिता २ करे ॥

पै भलो क्यों रह्यो कुल पंथ यों बधि बिमान खड़े रन आ हरे ॥  
स्वीय विमान वहाँ यापि सबे क्रमतै खिल ठाँठाँ स्वयं पहुँचे करे ३ ७  
बज्र १ टरयो यह बुंदियतै सहिबो यह बंट टरयो तिम सेसतै ॥  
लोभके पत्र तथापि लिखाइकै लोभिन धाँधौ दये दित लेसतै ॥  
अज १ कुलीन हजारन आइकै मिच्छ भये टरि सै १ उमेसरतै ॥  
इक १ वहाँ चालुक १ हाडा २ दु इक १ यों दोरे दै दुष्ट त्यों बुंदिय देखतै ३ ८

अकबर के बल से भी राणा प्रतापसिंह मुड़ बैठा था ३ ४ ॥ हिंदुओं के तीर्थों पर  
यवन वादशाह की लागत विशेष लो थीं उन इक्कीस लागतों को अकबर ने  
छोड़ दी थीं १ दंड २ रुहान तक ॥ ३ ९ ॥ १ मिस ४ सेना का बुलाकर दंड के नपये ५ आदि  
५ जवरदस्ती फैलाओ ७ माता का मिस करके अर्थात् माना के कहने से सेना  
पीछी बुलाई गई है यह कहकर ॥ ३ ६ ॥ ८ हर्ष ॥ ३ ७ ॥ ६ ठौर ठौर १ ० आदि १ १  
सक्ष्मी के पति विष्णु और शिव की भक्ति से दलकर ॥ ३ ८ ॥

हो जयसिंह १ जु चालुक हो अरु मोहन उत्त २ हो हङ्क ६ १ सो हथिय ॥  
 राज्यकी हौस बढाइ ए रंक सबेग हजूर गये दुव २ सथिय ॥  
 लैलै पटा इक १००००० इक १ हि लाख १००००० को ओ उपटंक  
 हजारी १०० को अथिय ॥

दभ्र हि लोभपै यौ अति दुष्ट किते नव्है मिच्छ स्वगौरव कथिय ३ १  
 यौ जिन सत्रह १७२४ संवत अंतर एकादसी ११ सिर्त १ पद्मा ११  
 उछाहको ॥

धौधौ छयो बरखा जल धौट नवीन यहै जस बुंदिय नाइको ॥  
 मिच्छ हु केक भये टरि मूढ सद्यो १ निबद्यो २ सु निदेसै सलाइको ॥  
 पे अब दुस्सह दंड परयो सु घटानल ग्यो सब भूपन साह को ॥ ४० ॥  
 मुद्रौ सवाय ४ तैं बीस २० प्रमान समान धर्यो जिजिया १ सबके सिर  
 इक १ सैमा प्रति दंड जो अज्ज न जाय चंडालके द्वार भरै चिरै ॥  
 ऐसे अकव्वर ३७ १ छोरे इकीस २ १ इहाँ इनमें बहु ओर मिले ईर ॥  
 कष्ट भो अज्ज कहाइवो वहाँ तिथि १ धर्मकी भाऊ १ ९५ १ करी  
 सिरपै थिर ॥ ४१ ॥

ऐसी सुनै जल १ अन्न २ हु पै कैर अंचकै लोभ बढायो भयंकर ॥  
 नीठि बचाये जे देवनिकेतै परयो दैम दुस्सह त्यौ तिनै ऊपर ॥  
 को चैऊ ४ धाम रु तिथि करै विनु भूपन सूपन पाइसकै वर ॥

१ हाथी सिंह २ चाह ३ साथी ४ खिताय ५ अर्थ (धन) वाला ६ अल्प लोभ  
 से घबरा होकर ७ अपना बहृष्पन कहा ॥ ३९ ॥ ८ शुक्ल पक्ष की ९ भाद्रपद  
 की एकादशी का नाम पद्मा है १० ठाम ठाम ११ वर्षा ऋतु के जल की भांति  
 १२ आज्ञा ॥ ४० ॥ १३ रुपये १४ एक वर्ष प्रति १५ बहुत १६ आ मिले "इ-  
 गतौ" इस धातु से 'इर' का अर्थ गति है १७ आर्घ्य कहलाना १८ धर्म का दिन  
 ॥ ४१ ॥ १९ हासिल २० उल कर को चलाने वाले ने "अञ्चु गतिपूजनयोः" इस  
 धातु से यह शब्द बना है २१ मंदिर २२ दंड २३ जन हिन्दुओं पर २४ जगदीश,  
 बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वर ये चारों धाम और २५ तीर्थ राजाओं के बिना  
 कौन करे २६ व्यंजन अर्थात् भोजन के पदार्थ भी नहीं पासकते

असो परयो अवरंग ४०।३ अकाल जो सप्तही ७ इतिन रीतिन  
सोदर ॥ ४२ ॥

जोरतैं मिच्छवनेबो रुक्यो जिम ए ए अनीति मची चहुँ ४ ओरतैं ॥

ओरतैं छुटत टेक अहेय सबै रही दहदह<sup>१३</sup>नके सिरमोरतैं ॥

मोरतैं श्रीजमुनातैं विमान दब्यो न जो सम्मह गोहन दोरतैं ॥

द्वारतैं डेरन लेगो स्वदेव जथा लघु १ दिग्घ २ विमानन जोरतैं ॥ ४३ ॥

भाऊ १९५।१ नरेस बिचारि मन्यो दढचित्त अहो सहिहैं सब दंड तो ॥

तोहु जो मिच्छ करैं बलतैं अटकी वह साहकी टेक अखंड तो ॥

मंडतो जो यह टेक अमोघ तोमैं परिबो ततकालहि मंडतो ॥

दंडतो जो न रुकैं तनु दंड तो चंड तो है पै तथा न प्रचंड तो ॥ ४४ ॥

मानि विमान निकासन संतु लये दम दम्भ छलाख ६००००० इलोसतैं

संसद आवनजावन साधि जो पूरवरीति मिल्यो जवनेसतैं ॥

बुदिवैं यों लाहि रंच बिसास दै प्रत्र स्वनामको जंगलदेसतैं ॥

बुल्लयो भूपति कर्ण कबंध सु पै गयो संसय कै कछु सेसतैं ॥ ४५ ॥

आइ नरुकी करी अरजी लाहि कोप तहाँ सरवस्वहि लेतहो ॥

कृष्ण १९६।१ पै हो जो धनो प्रतिकूल सो मारिवेके अभिप्राय

समेतहो ॥

उक्त नवाबनैं वहाँहु कह्यो इम हाहा कितो भगवंत १९५।१ सों

हेतहो ॥

नामतो ताको मिटाइये नाहि वढेबो बिसस बहयो प्रभुचेतहो ॥

१ औरंगजेब खूपी दुर्भिक्ष अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टीडी, चूहा, खुदे, अपने राज्य की  
सेना, शत्रु की सेना इन सातों को ईति कहते हैं जिसका रसगा भाई ॥ ४२ ॥ ३

अन्य लोगों से ४ नहीं छोड़ने योग्य चमूना से विष्णु का विमान पीछा ५  
मुड़ते समय ६ उत्तम उत्सव ७ तोपों के गोलों के फैलाव से; बागों की दौड़ से

८ अपने इष्टदेव ॥ ४३ ॥ ९ खाली नहीं जानेवाली १० छोटा दण्ड देता हुआ  
नहीं रुकै तो यह दंड ११ अर्थकर तो है परन्तु अत्यन्त अर्थकर नहीं है ॥ ४४ ॥

१२ अपराध १३ दंड के रुपये १४ राजा भाऊसिंह से १५ सभा में १६ बुदिव  
१७ बीकानेर से ॥ ४५ ॥ १८ चित्त ॥ ४६ ॥





आपुनौ हयाँ मिलिबो सुनि एह बिवाहीपनौ १ व्यवहार २ बिचारिकै  
मानै न ज्यौं करि वे मिलि मंल टिक्यो यह बाहर रीतिहु ठारिकै  
संसय नाँ व्यवहारी सगे सो न वहे बिपरीत कुकाँल निहारिकै ॥

आपँ भार परै जो इहाँ मिलिहौं मैं तहाँ तब फोजन फारिकै ५१

कर्ण कह्यो बहु भारपरै पंहिलैं मिलिहौं यह माँहि प्रतीतिहै ॥

आपके डेरनहू अबतैं नहिँ आइबो मेरो सु पै सुभनीतिहै ॥

कालके पासमँ बास करयो तऊ भाऊ १९५१ के पास न नासन  
भीति है ॥

भूप भनी मन इक्क १ भयो जिनको वे सदाही असंसय जीतिहै ५२  
गीतिः ॥

करि सिक्ख कर्ण इम कहि, भाऊ १९५१ नृप सिबिरँ ढिगहि  
रहत भयो ॥

गूढ वजीरहिँ आग्रहिँ, द्रव्यहु उपहार पंचलक्ख ५००००० द्यो ॥ ५३ ॥

नृपके मित्र नबावहु, सह कासिम १ जाफर २ पुनि साइस्ते ३ ॥

पँहु प्रेरित साधे पहु, लखि देस १ रु काल २ लोभं दुर्दिस लग्यो ॥ ५४ ॥

तत्थ वजीर १ रु ए त्रय ३, च्यारिन ४ को मंत्र साह अधिक चह्यो ॥

इन जिम सम्मति आश्रय, कति कहत कलीजखान ५ पंचम  
५कों ॥ ५५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तमराशौ बुन्दी  
भूपभावासिंहचरिते यवनेन्द्रौरंगजेवाज्ञाविरुद्धनिश्चितनिधनभावासिंह  
हजलयात्रैकादशीधस्त्रविष्णुविमानयमुनातटनयन १, शाइस्तखांप्रभु

१ छिपीहुई सलाह २ उत्तार कर ३ व्यवहार रखनेवाले ४ बुरा समय ॥ ५१ ॥ ५ नाश  
होने का डर नहीं है ६ निस्संदेह ॥ ५२ ॥ ७ डेरे के समीप ८ आग्रह करके ९  
नजराने में ॥ ५३ ॥ १० राजा भाऊसिंह की प्रेरणा से औरंगजेब को शीघ्र  
साधा ॥ ५४ ॥ ११ इन चारों की सलाह का आश्रय लेकर ॥ ५५ ॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भा  
ऊसिंह के चरित्र में औरंगजेब की आज्ञा के विरुद्ध भाऊसिंह का मरना ठान  
कर जलजात्रा एकादशी के दिन विष्णु भगवान् के विमान को यमुना नदी

तिप्रार्थनयैतत्प्रत्यूहशमन २, औरंगजेबबहुलतरार्ययवनकिरणा ३,  
विक्रमनगराधीशकर्णसिंहस्य दिल्लीद्वंगभावसिंहान्तिकनगरान्तर  
निवसनं सप्तमो मयूखः ॥ ७ ॥

आदितश्चतुस्त्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३४ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कहे जवन जे च्यारि४कै, पंच५ वजीर पुरोग ॥

मानतहो इनकी सुगल६, जानत प्रतिभा जोग ॥१॥

तोहू बाहिर उत्तरयो, सुनि नृप कर्णहिं साह ॥

सह सेनेस१ बजीर२ सिंग, रिसकिय लिय लखि राई ॥२॥

राजसवतिका ॥

द्वैम तथा प्रतिवासर दंडके पंचहजार५००० चमूप१पै भेरिकैं ॥

भेरि बजीर२पै या५००० ही प्रमान भन्यौं तुम छन्न मिले हिय  
भेरिकैं ॥

जो लग द्वंगन बुल्लहु जंगली तोलग देहु तथा हित हेरिकैं ॥

भाऊ१९५१पै कर्ण२पै दै सुहि भार बलेस१ बजीर२ सुलीनौ  
निबेरिकैं ॥ ३ ॥

कर्णसँ यौं अवरंग४०१३ कहाई पिता नम संग गयो न क्यौं  
पाछिम५११ ॥

सिंधुपै शोके क्यौं हिन्दू सबैर रु गयो सुरि गेह क्यौं तूही

पर लजाना ? साहस्तखा आदि की परज से इस विघ्न का मिदना २ याद  
शाह औरंगजेब का चहुत से हिन्दुओं को खपन करना ३ बीकानेर से राजा  
करणसिंह का दिल्ली में जाकर भाऊसिंह के समीप पुरके बारह ठहरने का सा-  
तपां ७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ चौतीस २३४मयूख हुए ॥  
? प्रज्जणी (आदि) २ बुद्धि के योग से (बुद्धिमान्) ॥ १ ॥ २ मार्ग ॥ २॥ ४ रूपये  
५ प्रतिदिन ६ सेनापति पर ७ हृदय थिड़ाकर ८ बीकानेर के राजा को  
नगर में नहीं बुलाओगे तब तक ६ सेनापति ॥ ३ ॥ १० अटक नदी पर

तहाँ तिम३ ॥

\*अजहु क्यों न हवेलिय आत४कहावहु तो तनुाँ अँह घुसी किम॥

भाऊ १९५।१ के सम्मत जंगलीभूप २ इतीक भयँ अरजी पठई

इम ॥ ४ ॥

सिंधुको लंघन बर्जित १ सूचिकै हाडा६१सता १९४।१ अटके वहाँ

सदा हम२ ॥

साध्य न खेद पिताकै सुन्याँ मुरिगो घर मैं सुपै धर्महीहो मम३॥

तापर खीजिकै रावरेतात लुभायँ लयो सु दयो सबनैँ दम ॥

जो सब पूछत मोसूँ हजूर उहाँ हो मदीयँ किसोर बैँ आगम ॥५॥

बुंदिय भूप की प्रीति बिसेस सो मैं दुहिता दिय कृष्ण १९६।१

कुमारको ॥

भूपति भाऊ १९५।१ इहाँ उतरे मगमैहि मिले बढतै व्यवहारको ॥

हैं हम जेते अधीन हजूरके प्रेरै परस्पर प्रीति प्रसारको ॥

ताहुपै द्वैरहम व्याही तहाँ प्रकटै किम नाँहि जँयोचित प्यारको६

भेद इतो समुझयो मैं इहाँ भये खुंदी अधीस्वरको बहु बैसर ॥

मैं इनसौँ यह जानि मिल्यो इनकोँ अब ओसर सीखको संत्वर ॥

ताहुपै जो प्रभुको यह त्रास तो पासही दास हो दूर कितेपर ॥

बिक्रमनैर उतारि बुलाइकोँ कीलते लंबे इते प्रभुके कर ॥ ७ ॥

जो हुँत सीख मिलै चढिजाइ तो भाऊ १९५।१ सौँ मो२ सौँ अहो

कब भेट व्है ॥

आगँ मिले नहीं पातँ इहाँ कछु काल रहयो ज्यों पुरागमँ केट व्है

ऐसीहु विन्नतिपै अवरंग ४०।३ फँटा जिम व्यालकी १ कालकी

\*आज भी १ घमंड १ सलाह से २ बीकानेर का राजा ॥ ४ ॥ ३ अटकनदी

का उतरना हिन्दुओं को मना है यह जनाकर शत्रुशाल ने रोके ४ मेरे पिता के

असाध्यरोग सुना ५ लोभ करके ६ देव ७ मेरे ८ तबख अवस्था का आगम

था ॥ ५ ॥ ९ पुत्री १० जप करने के उचित ॥ ६ ॥ ११ दिन १२ समय १३

शीघ्र १४ बीकानेर १५ कैद करते ॥ ७ ॥ १६ शीघ्र १७ पुर मैं आये कहे [पीछे]

होबेगा १८ काले सर्प के फण की टकर के समान होकर

फेट २५ है ॥

कर्णमहीपपै कोप्यो कराल मनो प्रलयोदधि सो किम मेट व्हे  
बेगही खानबलेल बुलाइकै प्रेरयो तोपन संगी चमूपति ॥

भाऊ १९५।१ यहै पहिलैं सुनि भीर सज्यो नृपकर्ण२की कर्ण  
की संमति ॥

बस्त्रहू कुंकुमरंग बनाइ कँम्यौ निजडेरन रक्खि बली कति ॥

जोलौ दलस१न जाइसकै गयो तोलौ यहै गजपै हरिकी गति ॥९॥

भाख्यो तहाँ इक जंगलभूप महीपको निर्मितं वृत्त मनोहर ॥

ऊहाकरो इहिँ पद्यकौ आदिलै अघिनँ आदिकै जोरिकै अक्षर ॥

काव्य मनोहर के जिम अंतके पंद्रह१५वर्णा जे रूपात धरापर ॥

भव्य मनोहर कीरति भाऊ१९५।१की पद्य प्रैतीक जनातजो प्रध्वर१०

रोधक सत्रु न संभररायँ सहाय सज्यो न लज्यो भय साहके ॥

साथी स्वकीय प्रवीरन साथ लहै पट इष्ट त्रिविष्टप लाइके ॥

ज्यौं लखि जातहि वंदी लौ बैन कहै नृपकर्ण अहो इम बाइके ॥

भल्ले इहाँ पहुँचे पहुँ भीर गदोग्रज जैसे समै गज१ग्राह२के ॥११॥

रोकि करीनँ विथीकि अरीन तुरंगन ओकि है तोकि त्रिभागन ॥

१ प्रलय का संसुद्रा २ सैन्यापति को कर्ण के समान बीकानेर के राजा कर्ण की सहाय पर सभा ३ केसर के रंग के वस्त्र बनाकर ४ चला जिस भांति गज और ग्राह के युद्ध में गज की सहाय पर ५ विष्णु भगवान् गये तिस भांति ॥९॥ ६ बीकानेर के राजा ने अपना कन्यायाहुआ मनोहरजाति का छन्द भाऊ से कहा १३ छन्द को आदि में देकर तर्जना करो १० इस छन्द के आदि के चरण से प्रत्येक चरण के आदि के अक्षर जोड़ो ११ मनोहर छन्द के अन्त के चरण के पृथ्वी पर पन्द्रह अक्षर १२ संस्कृत हैं १३ भाऊसिंह की सत्य और १४ सुन्दर कीर्ति का १५ छन्द का एक अंग (टुकड़ा) १६ सीधी [पाथरी] जनाता है ॥ १० ॥ १७ शत्रुओं को रोकनेवाला बहुबाण राजा १८ स्वर्ग के लाभ के अर्थ १९ जिस प्रकार भाट स्तुति करे तिस प्रकार २० प्रशंसा के वचन कहै २१ हे राजा २२ विष्णु भगवान् ॥ ११ ॥ २३ छाथियों को रोककर २४ शत्रुओं को बिलेर कर तथा शत्रुओं के विशेष समूह को रोक कर २५ आले उठाकर २६ घोड़ों

साधन सोहि \*सुरालय कौनयको जय संसय कोहुं निरागन ॥  
 दीपन बोला उछाहके दै अवनोपन आदरयो त्यों ॥ तनु त्यागन ॥  
 नामी नरेस मिलयो इम मित्रसों वृष्टि ज्यों चित्रसों सूकते वागन १२  
 नाकी १ विमान चढे सहनारि २न आनिकैं छाये अनीकन ऊपर ॥  
 थैट सजे दुव २घाँ रनथंभ बजे स्वर सिंधुन बंब १धुर २ वर ॥  
 काल इतेकके अंतर काल ज्यों साह व्है साहबमू चली संगर ॥  
 पंद्रह १५ अंधि इहाँलों त्रि ३पंद्यन आदिमें धारत कर्णके अक्षर १३  
 खानदलेल १निदेस ले खीजत आयो इतेकमें तोपन तानिकैं ॥  
 बत्तीबतावनको ही विलंब उभै २दल बेछि लये बिधि आनिकैं ॥  
 बेग मिलाइ सजे गज १वाजि २चढे नृप द्वै २मरिबो पहिंचानिकैं ॥  
 पुत्रनलों यह तास परयो जन दै कपाट दुर भय जानिकैं ॥ १४ ॥  
 अर्ज १रु मिच्छ २रसेसं असेस १ससेसप्रजेसं २ह सोचे यह सुनि ॥  
 धुंधि रची रज दिग्गज धूजि पयोधि हले पुट १धू के चले पुनि ॥  
 मांसुरी वीरन भूसों मिली गन जोगिनी २वीर २न जोगिनी सो १०० गुनि

को शत्रुओं में डालेंगे साही \*स्वर्ग का साधन है और + प्राप्ति का भी  
 यही साधन है और जय के संदेह में भी निश्चय ही + प्रीति नहीं है [यहां  
 नि अल्प निश्चयार्थ में है; अथवा बादशाह में युद्ध करने में विजय का संदेह  
 है तोभी उस युद्ध करने में किसीको अप्रीति नहीं है, उस अर्थ में यह नि  
 निषेधार्थ में है] § उन राजाओं ने इसप्रकार वीर रस के उद्दीपन के दोस्त  
 देकर ॥ शरीर छाड़ना अंगीकार किया ? आश्चर्य करानेवाली बर्षा ॥ १२ ॥  
 २ स्वर्ग में रहनेवाले (देवता) ३ सेना के ऊपर ४ लम्बूह ५ युद्ध के लक्ष्य ६ जि-  
 न्धवी रागनी (वडाराग) ७ सृष्टि ८ यमराज के सम्मान. यहां तक के १० तीन  
 छन्दों के पन्द्रह ९ चरण. वीरानेर के राजा कर्णसिंह के कहे हुए अक्षर आदि  
 \* में धारण करते हैं ॥ १३ ॥ १४ ॥ ११ आय १२ अप्रति १३ सब दोष मॉहत  
 १४ ब्रह्मा १५ समुद्र १६ भूमि के पुट १७ वीरों के सृष्टों के पाल सुधारों ने  
 धिले १८ पावन वीरों से; अथवा सेना के वीरों में जोगिनियों (देवी की

\*उपरोक्त तीन छन्दों के पन्द्रह चरणों के आदि के अक्षर जोड़ने से मनहरजाति के छन्द का नीचे  
 लिखा हुआ अन्तिम चरण निकलता है जो राजा कर्णसिंह ने कहा था 'भाऊ' का भरोसा जो भरोसा  
 दीनानाथका'.

रारिके कौतुकी रुद्र१ पुरोगं चले सर्व रीभ घनी मनमें चुनि ॥१५॥  
 भाऊ१५॥११ मन्यों पहिलो तो प्रहारइहाँ सहिवोइक १ साहकी ओरको  
 पोछें वनैं सु लरैपरिहैं करिहैं पलैपजन खड्ग कठोरको ॥  
 बाहुन बाहिनी ठारैं बिलोरि जथा मद मारैं अरातिन जोरको ॥  
 यों अवरंग४०॥३ करैं अनुताप चुकयो जिम धापरुखयो मन चोरको१६  
 तोपनके चलतेहि तुरंगं चमूपर सम्मुह संग चलाइहैं ॥  
 दुमरी२वेर न फेर दगें जिम भूपर भंजते ऊपर जाइहैं ॥  
 मा० प्रसार घपार सचाइ कितैक अनीकहिं खगगन खाइहैं ॥  
 अजसों औसी बहोरि वनैं न तथा अवरंग४०॥३ प्रथा पछिताइहैं १७  
 घोर समेंमें तटाँसेवर्धाभुव पैं जितहीतित भासित भै रह्यो ॥  
 लोह समैसमके लहिवे छलि छोई छमाछम छत्रन छैवै रह्यो ॥  
 पानिव छ्वाँ प्रतिमाँप्रतिमाँपैं चढ्यो लख्यो वीर१न भीरु२नछैवै रखो  
 आसा विधात दुर्य्याँ बचिवो अबवै किनवै यह संसंय वैरह्यो१८  
 वा समेह जिहि नेक दजोर१ओ साइस्त२जाफर३कासिम४संगवै  
 यों अरजाँ कर जोरि करी इक१दीनैक सागन हीन उमंगवै ॥  
 चिन दखाइ रहे चउ१ध्याँ जिनमें अब सज्ज ए२जुज्जन संगवै ॥  
 जो मरिहै तो घनी बजै जंगमें वातिहै रावरो रीति कुवंगवै ॥१९॥  
 जो नि आडमिनी जसवंत२द्विधारमत हिंदुव भूप दुरचित्तके ॥  
 कुरम२बाहिदु भीरकरै विपरीत इहाँ बहु दौचक वित्तके ॥

दासियों) को सांगुनी गिनी १ गवाजा देवतेवाले २ आदि ॥ १५ ॥ ३ भा-  
 कासिंह ने कहा ४ संसंय मे ५ दासों से संजा को चितो दारंग ६ बाहुओं  
 के ७ परमाणाद ॥ १६ ॥ ८ घोर (यहाँ लच्छना से मोड़ों के नवार, जामो) ९  
 कासिम १० अजस (असिंह) ॥ १७ ॥ ११ सय दार (सब दिशाओं में) १२ सय  
 गवाजिन जोरदा है १३ जस जीर जसम बाक्यों के लेने से १४ कासि बरका १५  
 छारदा है १६ गवाजिन १७ नि मुनि पर अपीत इरेक मनुष्य पर १८ बायों का  
 पराजय दगर (मह) १९ भा २० दीनों और सपने की आजा का नाश हो रहा  
 भा २१ सज्ज २२ ॥ २३ एक मजहब होने के कृम से २४ संजा २५ कुराति  
 से ॥ १५ ॥ २६ लच्छनादा [कासिंह का राजा] २७ देववाले

बित्त जो लेत न क्यों बैबली भय छोरिन तो लुटिहैं इहाँ भित्तके॥  
भित्तके पच्छ भरोसा करो मतिमानों इतैं इते भित्त अमित्त के२०  
जो सब हिंदु जुदे टरिजाइ तो कैसी बनें इनमें हि रहैं किते ॥

मित्त१को पच्छ मिटैं सह मूल अमित्र२उदास३दु२घाँ उँमहैं किते  
सर्वघाँ सीमा इहाँ इँनकी तिनकी प्रतिकूलता लाह लहैं किते॥

सोचो बिपत्ति हुमायोंसमै अजमेर अधीस करो सो कहैं किते२१  
साँईस सीमाहुतो यह साह पै मानोयहै सो भुवाँलन भागतैं ॥

पूँजे तोप पदाति२नके सजे सूर सबै करे दूर कुमार्गतैं ॥

लाख चुहान सौ पंच५०००००इतैं लाहि लाख पचीस २५०००००  
कैबन्ध२कोँ लागतैं ॥

साँईसमुद्रा इती३००००००क समेटि ससाँईससाहसँभ्यो इन आगतैं  
कर्नकोँ औसैं बचावनकोँ जस हाका जग्यो चहुँ४घाँ चहुवानको ॥

कृत्यैं सो काव्य कविंदनके मैं इतो प्रसरयो ज्यो सता१९४।१ सँस  
आनको ॥

भूप उमै२सौं तहाँ सब भूप मिले करि उच्छव ज्यो निज मानको  
भाऊ १९५।१ के पायन कर्ण २ भुवाल परयो गिनि निर्भय दा-  
यक प्रानको ॥ २३ ॥

कंठलगाइकैं भाऊ१९५।१क्यों हमकोँ तो इहाँ ब सँसा त्रय३वहै गयो

१घन के२अब३भीति(शहरपनाह)के भीतरवाले४मित्र के पच का भरोसा मत करो  
अर्थात् यवन लोग आपके मित्र हैं जिनके भरोसे पर मत रहो क्योंकि यह  
इतने आर्य राजा ५ मित्र हैं सों अमित्र होरहे हैं ॥२०॥ ५ उदासीन (तटस्थ  
रहनेवाले) ७ बसाह (उत्साह) करेंगे ८ हिन्दुओं की ९ लाभ ॥ २१ ॥ १०दठ  
की सीमावाला यह बादशाह था परन्तु ११राजाओं के भाग्य से मानलीतोपें  
और पैदलों के १२समूह सभे हुए जो वीर थे उनको उस कुमार्ग से दूर किये  
१३राठोड़(बीकानेर के राजा) को इतने रुपये लगते ही १४दंड के रुपये १५बह  
इठ १९ शान्त किया ॥ २२ ॥ १७ कार्य १८शत्रुशाल के सप्तान अन्य का यश  
ऐसा कभी नहीं हुआ ॥ २३ ॥ १९ तीन वर्ष

सीखको पाइवो आयो समीप सु पै अहो साहको साहस खेंगेपो  
 आयेहो आप इहाँ अबही पुरमें प्रबिसो इम भंसैको भै गयो ॥  
 कीनी सोकर्या त्यों सेस रसेसन संघहुँ गेहकों सिक्खहिँ दैगयो २४  
 यों रहि तीन इसमा कछु ऊँन सबै जिन सत्रह १७२४ संवत अंतर ॥  
 बापसों कीगति आप बढाई गवाइ कविंदन छाइ दिगंतर ॥  
 आपनों धर्म निवाहि अहो सिरदैन सज्यो बहुबेरके संगर ॥  
 यों जय सिक्खलै बुंदीअधीस पुरी प्रबिस्यो सक उँक्त १७२४ समा पर  
 संवत सोहि इतैं जिन सत्रह १७२४ मान गयो तँई साइ महामति ॥  
 लंधन सासक चारलिंसाख्य सो कंपनीकों दई बंबई संप्रति ॥  
 अब्दै चतुष्टय ४ साहअधीन रही अब कंपनी पाई जथा रँति ॥  
 बानिजको व्यवहार बढाई सु पै गिनि मुख्य पुरी त्रय संगति २६  
 यों इन अबदन माँहिँ उदैपुर राजपदोंदिकसिंह जो रानहो ॥  
 ता समै या जगतेस तँनूजके दास जो हीरक मंत्री प्रधान २हो ॥  
 राज्यमें कोऊ स्वतंत्र न राखि सबै तस तंत्र करे यों सुजानहो ॥  
 भेदी असेस सो हीरक भृत्य अधीसके नासमें उँद्यगवानहो ॥ २७  
 मुख्य वहाँ रानके जो ही कुमार सु पै अभिधाँ करि सो सरदारहो  
 जो भगवंत १९५३ सुतापति जानहु धर्मधुरंधरता जैत धारहो ॥  
 पट्टकुमारकी ही जो पैसू तिहिँ हीरक भेदि तन्धों इक तारहो ॥

१ बादशाह का हट भिंट गया २ नाश होने का भय गया ३ जाकी के राजाओं के  
 ४ समूह को ॥ २४ ॥ ५ तीन वर्ष से कुछ कम ६ घुसा ७ कहे हुए विक्रम के शक  
 के सम्वत् में ॥ २५ ॥ ८ चार्लिस नामक ९ सौदागरों के समूह को अंगरेजों  
 भाषा में कंपनी कहते हैं १० इस समय ११ चार वर्ष १२ प्रीति के अनुसार ॥ २६ ॥  
 १३ राज शब्द है आदि में जिसके अर्थात् राजसिंह १४ इस महाराजा जगतसिं  
 ह के पुत्र [राजसिंह] के हीरदास नामक सत्ताहकार और प्रधान [दीवान]  
 था १५ अधीन १६ अपने स्वामी के नाश में उपाय करनेवाला था ॥ २७ ॥  
 जिसका १७ नाम सरदारसिंह था १८ नियम का धारण करनेवाला था  
 १९ पाटली कुमार की माता को ही हीरदास ने भेद कर यह तंत्र रचा कि पुत्र  
 को गद्दी मिलाने के कारण पति को सरवाढाले।



पुत्रके काज हतैं पतिकों बिरच्यो इम पापिनी पापविधारहो ॥२८॥  
 पापिनीके सरदारसो पुत्र हुतो पै सुतो अपराध बिहीन हो ॥  
 जाकी प्रसूही रच्यो यह जाल सो कैंतिय अस्वेत १ मैं स्वीकृत कोन हो  
 भूति बिसासको हीरक भृत्यके ऊँरुज नाम दयालु अधीन हो ॥  
 रान १ के हीरक २ ज्यों रुचिमें इस हीरक २ के यह ३ प्रत्यय पीन हो २९  
 ऊँरुज दीपावलीकी निसा यह सासुरे जावन लागो समीप ही ॥  
 हीरक तापैं प्रसन्न वहाँ होइ कटारी स्वकीयं सो दै ह यहै कही  
 सासुरेमें छिगसों हनौ सस्त्रन लै यह जाहु ज्यों जानैं स्वयं लही  
 सो लै दयालु इती समुभयो न सम्हारिकें लै कछु जैवो भलो नही ३०  
 हीरकसों कछु अंतर व्हैकें सम्हारी दयालु कटारी सो सत्वर ॥  
 कोस तें दीपमें पत्र कढ्यो सब राज्यके अंगनकी लिपि संकर ॥  
 मारिकें रानकों सर्व मिलै बइठारिहै काल्हि कुमारकों बिष्टर ॥  
 पै कही रानी जो ताकी प्रेमू वाकी डाकिमी ताहू रहैं सबउपर ३१  
 देखि यों जो अधपत्र दयालु हो हीरको पै पलट्यो हिय हालही  
 सासुरेको तजि जैवो सुपै पुहँधीस प्रकोष्ठ कैंभ्यो ततकालही ॥  
 रान बुलाइ त्वरी अवैरोधतैं सौंप्यो सोपत्र निभालकें सालही ॥  
 लै यह रान ज्यों प्रानलये महाकालनिसा मची दीपकें मालही ३२  
 सूची जो रानी प्रेमू सरदारकी जातिकी हाडी ६१ के ताहि जनावत  
 ताहिको बाँसक हो सो तहाँ पुनि रानाँ गयो छलछिद्र जो पावत

१ विस्तार २ कार्तिक मास के शुक्लपक्ष में यह अपना कार्य करना ठहराया था।  
 ४ तनजायाला हीरदास का लेखक ५ वैश्य [धनियाँ] ६ दयालदास नामक आधीन  
 था ७ पूर्ण विश्वासपात्र था ॥२९॥ ८ वह धनियाँ ९ दीवाली की रात्री में १० अपनी  
 कटारी देकर ॥३०॥ ११ शीघ्र १२ उस कटारी के मियाज के भंडारिये में १३  
 राजा के मुख्य लोगों के १४ लेख सहित संकर [मिलाष्ट्रना लेख] १५ सिंहासन  
 पर १६ सरदारसिंह की माता ॥३१॥ १७ राजा की १८ दाई पर १९ गया [चला]  
 २० राना को शीघ्र २१ जनाने से बुलाकर २२ देखने से निश्चय ही शाल रूपी  
 २३ दीवाली की उस रात्रि में बड़ी कालरात्रि मची ॥३२॥ २४ माता २५ घर

मारि गदा करि सो महिला जन ताके असेस हनैं तिम जावत ॥  
 पापी सु धाड़ उदैपुरमें सबही पकरे सुनैं जेहु नैसावत ॥ ३३ ॥  
 माताको मारियो जानि कुमार अमंतुहोपै सुनि जा अभिसापकों  
 काय तज्यो द्रुत काहु प्रकार बहोरि दिखायो न आनन बापकों ॥  
 सूचित हीर लयो सरनैं सो पुरोहित रानके जानिन पापकों ॥  
 केते कहैं नहीं हीर कढयो तस पुत्रही गो सरनैं लाखि तापकों ३४  
 केते कहैं तस बंधु कढयो हितसों सरनैं सुहि राख्यो पुरोहित ॥  
 कोइ कढोपै पुरोहितको कुल १ हीरक के कुल २ ज्यों दल्गो द्रोहित  
 ओरहू जे हुते या अघतैं स कुटुंब ते कोल्हू पिलाइकैं सोहित ॥

१ उस स्त्री का गुरज से मारी २ नाश किया ॥ ३३ ॥ ३ निरपराध  
 [निर्दोषी] था परन्तु उस ४ झूठे दोष को सुनकर ५ शरीर ६ छोड़ा १ फिर  
 पिता को सुख नहीं दिखाया. यह पाप नहीं जानकर पुरोहित ने हीर को शरण  
 लिया ॥ ३४ ॥ ७ द्रोह करनेवाले ने ८ धार्मिकों में पिलाकर ९ शोभित हुआ

शमेवाड़ के इतिहास बीरनिनोद में यह वृत्तान्त इसप्रकार से है कि कुमार सरदारसिंह की माता ने अपने  
 पुत्र को राज दिलाने के कारण महाराणा के मन में सन्देह कराकर बड़े कुमार सुलतानसिंह को मरवाडाला  
 जिस पीछे बड़े पुरोहित के नाम एक पत्र लिखा कि सुलतानसिंह को तो मैंने मरवाडाला अब दरबार को  
 भी जहर दे दो कि मेरा बेटा सरदारसिंह राजा होनावे, इस पत्र को पुरोहित ने अपनी कटारी के खोले  
 में रख दिया, जब पुरोहित का नौकर दयालदास वैश्य अपने ससुराल देवाली नामक गांव में जाने लगा  
 तब उसने पुरोहित से कोई शस्त्र मांगा और पुरोहित ने वही कटारी दयालदास को देा उसका खासा  
 (भंडार) खोल कर देखा तो वह पत्र दयालदास को मिला जिसको पढ़कर उसी समय देवाली से एक कोस  
 पर पीछा उदयपुर आया और उसी आधी रात को वह पत्र महाराणा राजासिंह को दिखाया जिसको देखते  
 ही महाराणा ने क्रोध में होकर भीतर जाकर उस राणी [सरदारसिंह की माता] को गुरज की देकर मार डाली  
 और प्रभात होते ही पुरोहित महलों में आया तब उसी गुरज से उसको मारा यह वृत्तान्त सुनकर  
 निर्दोषी कुमार सरदारसिंह ने बहर खाकर आत्मघात किया और मरते समय निम्न दोहा अपने हाथ से  
 लिखकर मस्तक नीचे रख दिया.

“पाणी पिंड नष्टाह, पिंड जातां पाणी रहै ॥ तो चातारसी घणाह, सपना उयें सरदारसी ॥ १ ॥”

इस पीछे महाराणा ने दयालदास वैश्य को अपना प्रधान [दीवान] बनाया और इन पापों से छूटने के  
 कारण राजसमुद्र नामक बड़ा तालाब बनाया उस समय में बड़ा पुरोहित गरीबदास था परन्तु उसको  
 मारना नहीं पाया जाता. इससे ऐसा जाना जाता है कि यह पुरोहित गरीबदास के भाइयों में से  
 कोई होवेगा.

पापिश्नमें गिनिकेही अपाप२लयो अघ रान कियो पुर लोहित३५  
जानै न पापको गंधहु जे पै सुनै इम रान हजारन संहरे ॥

बाहिर हे ते वचे बलसौ पुरके तो घनै जमजंत्र पिले परे ॥

वानिज सोही दयालु बिसासि मुसाहिब मानि टराइ जिते टरे ॥

ते जन सर्व करे तस तंत्र चवी सब पंथ चलो अंब उबरे ॥ ३६ ॥

कृष्ण१९६।१ बुलाई स्वसा पहिले कछु आई गुगोर सुता भगवंत

१९५।१ की ॥

स्वामी मरयो वहाँ सुन्यो सरदार करयो सहगोन लही गति कंतकी

संबत मान पचीस रु सत्रह१७२५निंदा नची यह रान उदंतकी ॥

ऊर्ज७सिता१दि१की के उत१के इत२केके लिखै यह आश्विन

६ अंतकी ॥ ३७ ॥

रानसौ वहे यह पापकराल भई जगनिंदक हाक भयंकर ॥

अर्चकलो नसुनै जिन्ह अंग उमंग न रंचक राखै कही और ॥

पीछैतै रान तथा पिछताइ बुलाईके पंडित पूछि महीवर ॥

राजसमुद्र तड़ांग१रच्यो रु दयालु रच्यो हरिमंदिर दुस्तर ॥३८॥

रानको छोटोकुमार रह्यो जयसिंह सु पै इहि पाप घनौ जरयो ॥

तानै जयोदिसमुद्र तड़ांग३कुमारनै तातहुसौ बढतो करयो ॥

तापर ईश्वर आनिकै तात बडोहु सो ताल कहयो जरि डीवरयो

१नगर को लाल फर दिया ॥ ३५ ॥ २ बनियां ३ आधीन ४ कहा ॥ ३६ ॥ ५ कृ-

ष्णसिंह ने अपनी बहिन को ६ पुत्री ७ पति ८ सती हुई ९ प्यारे की गति

ली १० रानी के वृत्तान्त की ११ मेवाड़ के बड़वाभाट आदि ११ कार्तिक

सुदि एकम लिखते हैं और १३ बुंदी के बड़वाभाट आश्विन सुदि पूर्णिमा

लिखते हैं ॥ ३७ ॥ १४ जिसके अंग पर कोई पूज्य पन नहीं सुना अर्थात् कोई

राज्य चिन्ह नहीं पहना और १५ शीघ ही उस राजसिंह ने कहा कि मुझको

राज्य की कुछ भी उमंग नहीं है १६ बड़े श्रेष्ठ लोगों से पूछा; अथवा पण्डितों

से बड़ा वर पूछा १७ तालाव ॥ ३८ ॥ १८ जयसमुद्र तालाव १९ पिता

से भी बड़ा बनाया २० राजसिंह ने उस तालाव का नाम जलकर

जाहिर नाम भयो तस जोह्मि तऊ वह ताल बदै अति बिस्तरयो ३९  
 बुंदी इतैं नृप भाऊ १९५।१ प्रवीर प्रबुद्धन पूजिकैं बेदविधानसों ॥  
 अस्तखाँ के अब कुंभ उतारयो सो पीछो चढाइकैं रीति प्रमानसों  
 धर्मसों राज्य जमाइ धुरंधर भूपन मुख्य रह्यो रहि भानसों ॥  
 अजहुँ जाको लै नाम असेस करै करै विक्रय ११ विक्रय २२ काढि दुकानसों ४०  
 यों सिवराज सितारा अधीसको दोर मच्यो अति जोरको दक्खिन  
 पावत साहनैं ताकी पुकार तयार करयो नृप संभरी तर्क्खिन ॥  
 भाऊ १९५।१ मन्यो इक १ मो भगिनी सु बिबाह बै है अब साखकी  
 संक्खिन ॥

याकों सबेग बिबाहि इहाँ १ पुनि दास उहाँ २ दहैलि परपंक्खिन ४१  
 ऐसी बैलापति दे अरजी बलि ठानि पैंपंच स्वसाके बिबाहको ॥  
 रानको पुत्र जो मुख्य १ रह्यो सो बरयो कछु टारक सासन साहको  
 व्याही स्वसा वह ताकों बुलाइ निदेस सो चिति सता १९४।१ न-  
 रनाहको ॥

गंगा १९५।५ को व्याहि उदैपुर गो सैवधू जयसिंह लैबोल सराहको  
 व्याह्यो वहरान किते यों वैदे सु पे पैंच्छ गिनो निहचैन सम्हारिकैं

देवर \* रक्खा १ फैलाहुआ ॥ १६ ॥ २ चिदानों को ३ पाटण के मंदिर का  
 कलश ४ आज भी ५ व्यापार ॥ ४० ॥ इधर सितारा के पति का ६ फैलाव  
 ७ चहवाय को ८ उली समय ९ अवस्था १० साची से ११ शत्रुओं को  
 ॥ ४१ ॥ १२ आडा बला नामक पर्वत का पति १३ रचना १४ बहिन के  
 बिबाह की १५ बादशाह के हुकम को नहीं माननेवाला १६ की सहित  
 ॥ ४२ ॥ १७ कहते हैं १८ इसमें निश्चय पक्ष कौनसा है सो नहीं जाना गया

\* बहवाभाटों की लिखी हुई या कोई अन्य लोगों की प्रसिद्ध की हुई यह कथा ग्रन्थकर्ता [सूर्यमल्ल] के  
 कथनानुसार सब राजपूताना में प्रसिद्ध है परन्तु अत्यंत है क्योंकि महाराणा राजासिंह के देगंत सम्वत् १७२०  
 में हुए पीछे जयसमुद्र तालाब का काम सम्वत् १७४४ में प्रारम्भ होकर सम्वत् १७४८ में समाप्त हु-  
 या है और पर्वतों के जिन नामों को व्यापकर यह तालाब बनाया गया उस नामों का नाम देवर या  
 इसकारण इस तालाब का नाम देवर का तालाब प्रसिद्ध हुआ है ॥

दायजमें सब दूरन दये नृप भाऊ १९५१ स्वतंत्र सो व्याह निहारिकें  
ताहूनै त्याग दयो दिपंतो पट १ भूखन रहै ३ गै ४ स्वयं भोली ६ प्रसारिकें  
भाम १ नै सालक २ प्रीति भजी सजी भाम १ की सालक २ धी हित  
धारिकें ॥ ४३ ॥

संभरें व्याहि यौ गंगा १९५५ स्वैसा पुनि साह खैरा लाखि साजि  
प्रयानकों ॥

रानी कितो इहाँ रखि स्वसंग लई किति बाहिर मंडि मिलानकों  
ओरंगाबाद गयो दरकुंच यौ मानी बढावत बीरन मानकों ॥

पास बसाइकें भावपुरा १ निबैर्यो तहाँ सत्रुन संक. निदानकों ॥ ४४ ॥  
कृष्ण १९६१ कुमार गुगोर गयो बैलि बारा १ मऊ २ जिहि खोई  
कुबुद्धिसौ ॥

गो अब दिल्ली यहै पैर गो न सभालग जोलों स्वभाव बिस्सुद्धिसौ ॥  
बार १ मऊ २ की दई लाखि विन्नति काहू कसो तँहँ साहहे कुद्धिसौ ॥  
सो सुनिकें भजि भीत सिटाइ गयो सो गुगोर लगी हिय लुद्धिसौ ४५  
जोपै मुकुंद १९४१ तनै जगतेस १९५१ लखाइकें अस्तमरार त्रिल-  
कख ३०००००० ॥

लोभी इजारा मऊ इक १ लैकें चुभयो हिय कृष्ण १९६१ कें आस-  
य चखन ॥

संबत भू गुन सलह १७३१ मैं इत कृष्ण १९६१ गुगोर पित्तमही  
अचखन ॥

सो भगवंत १९५३ की दूजी २ सुता परिनाई स्वसा निज बुद्धि लैपचखन

१ स्वतंत्र राजा से व्याह हुआ देवकर २ प्रकाशमान [प्रसिद्ध होने योग्य] ३  
हाथी ४ घोड़ा ५ धन ६ ऊट ७ पहिनोई ने = साले से प्रीति की १ हित की  
बुद्धि धारण करके ॥ ४३ ॥ १० अष्टवक्त्र ने ११ गंगा नामक बहिन को १२  
शीघ्रता १३ अपने साथ १४ नगर के बाहिर मुकाम करके १५ निवास किया  
॥ ४४ ॥ १६ फिर १७ परन्तु सभा तक नहीं गया १८ विशेष शुद्ध स्वभाव से  
१९ लोभ से ॥ ४५ ॥ २० दादी के कहने से ॥ ४६ ॥

भाऊ १९५१२ तहाँ घर सासन भेजि नरुकी प्रसू जिन जीवत जानिकैं  
दूसरी रानी जो भाउलदेवि १९५१२ पठाई गुगोर स्वमेह प्रमानिकैं  
रामपुरा मुहुकम्म नरेसको पुत्र गुपाल तथा पहिचानिकैं ॥

कृष्णा की १९६१२ जामि जो मानकुमारि १९६१२ सो ताहि बिचाहि  
दर्ई मैह तानिकैं ॥ ४७ ॥

जानि इतैं अवरंगके जोरकोँ राजपंदादिक सिंहर साँ गनहु ॥  
साहके पायन लागिवो सोधि प्रथासों चमू सजि कीनों प्रयानहु ॥  
नौपित पंथमैं सो कमं नाम मिल्यो कवि ओ कह्यो क्यौं न हँ मानहु ॥  
नैक अहो कुलरीति निहारि पतासे पितामहतो पहिचानहु ॥ ४८ ॥  
यौं मरुबानिमैं छप्पई एक १२ नई रचि पंथ पढी कवि नापित ॥  
सो सुनि रान हु चेत सम्हारि सुर्यो प्रतिमग्ग जथा मही मोंपित  
मालपुराके प्रमाण ३२ मारि सु पै पुर लूटि करयो किधौं सोंपित ॥  
यौं गो उदैपुर ओ इनसों पलटे करि दोह प्रमार ते पोंपित ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

सुर सत्रह १७३३ मित लगत सक, इत श्रीपुष्कर आई ॥

बहु कवि नरहरि बारहठ, बुधजन तत्थ बुलाइ ॥ ५० ॥

एकलक्ष १००००० मितैंसों अधिक, करि मुद्रा किय कैल ॥

पूछि अर्थ तिन्ह पंडितन, सु हुव काव्य हित सज्ज ॥ ५१ ॥

ओर खरचि सरवरव इम, न कवि निकासैं नाम ॥

बुध विप्रन लहि अर्थवल, तिहिं सु काव्य किय तौम ॥ २५ ॥

१ बहिन २ उत्सव ॥ ४७ ॥ ३ रांणां राजसिंह ४ प्रसिद्धि से  
मार्ग में ५ कमा नामक ५ नाई मिला ७ खेद (हाय) ८ प्रतापसिंह जैसे ॥ ४८ ॥

इस अभिप्राय की मरुसाया में ९ उलटे मार्ग १० भूमि को सापताद्वया ११

आपयुक्त [जलाया] १२ पापी ॥ ४६ ॥ १३ तहाँ पंडितों को बुला कर ॥ ५० ॥

१४ प्रमाण १५ कार्य किया ॥ ५१ ॥ १६ पंडित ब्राह्मणों से अर्थ का यत्न लेकर उस

(बारहठ नरहरिदास) ने तहाँ अष्ट काव्य किया ॥ ५२ ॥

\* गवाड़ के इतिहास में महाराणा राजसिंह ने पाट बैठ कर टीका दोह का उसमें मालपुरा को जलाना लिखा है.

भनि रामायन १ भागवत २, उभय २ मुख्य अनुसार ॥  
भाषा कविता में भने, अखिल बिष्णु अवतार २४ ॥ ५३ ॥  
सहस्र अष्टि १६००० अरु अष्टसत् ८००, एक सष्टि ६१ तिन्ह अगग ॥  
आर ३ अष्टमी ८ सुचि ४ असित २, सो किय ग्रंथ समग ॥ ५४ ॥  
कवि अवतार चरित्र १ करि, इहि प्रबंध अभिधान ॥  
क्रम लिखाइ तिम रूपात किय, पुस्तक सतन प्रतान ॥ ५५ ॥  
संकृति २४ मित अवतार सब, हरिके जाबिच हैहि ॥  
राम १ २ १ कृष्ण २ २ विस्तर रचित, दुतिहि प्रकासत द्वैहि ॥ ५६ ॥  
असौ कवि चारन अपर, भाषा के विवर भो न ॥  
जाकी कविता भक्ति जुत, किति लहत चहुँ कोन ॥ ५७ ॥  
पुब्बहि इत आमैरपुर, सो नृप मृत जयसीह ॥  
राम सीह रतस पटलहि, लहिय राज्य जस लीह ॥ ५८ ॥  
कुलपति २ माथुर बिप्रकुल, भाषा कवि जिहि रूप ॥  
सादर बुद्धि प्रसाद सह, रीझ बिंरचि अनुरूप ॥ ५९ ॥  
दोन पर्व ७ १ भारत बिदित, अर्थ तास अनुकार ॥  
ग्रंथ रचायो नाम करि, संगीमादिक सार ॥ ६० ॥  
सुर सत्रह मित १७३३ यहहि सक, बदि २ फगुन १२ गुरु पवार ॥  
सप्तम ७ तिथि तहँ ग्रंथ सो, किय प्रारंभ प्रकार ॥ ६१ ॥  
भाषा ग्रंथन में भलो, प्रविदित यहहु प्रबंध ॥  
पद असाधु बहुठा परत, सुतो हरत दह संघ ॥ ६२ ॥  
इक संबत बिच ए उभय २, बनै ग्रंथ विरूपात ॥

॥ ५३ ॥ १ मंगलवार २ आपाह मास कृष्ण पक्ष १ समग्र ॥ ५४ ॥ ४ हस ग्रन्थ का नाम ६  
सैकड़ों पुस्तकें कैलाकर प्रसिद्ध किया ॥ ५५ ॥ ७ प्रमाण ८ विस्तार पूर्वक ९ कान्ति १२ वी  
१० अन्य भाषा में ११ अष्ट कवि नहीं हुआ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १२ प्रसन्नता  
सहित बुलाकर १३ अपने स्वरूप के अनुसार ॥ ५९ ॥ १४ सहस्र १५ संग्राममार  
॥ ६० ॥ ६१ ॥ १६ विशेष प्रसिद्ध १७ ग्रन्थ १८ अशुद्ध १९ दृढ़ प्रतिज्ञा कालाश

कुलपतिश्चावन रीकरकिय, नरहरि लोभ निपात ॥६३॥

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी भूपभावसिंहचरित्रे यवनीकरणार्थविक्रमनगराधीशकरणसिंहोपरि यवनेन्द्रौरंगजेबसैन्यप्रेषणतत्सहायभावसिंहतदन्तिकगमन१, जाफरखांप्रभृतिप्रार्थनौरंगजेबसैन्यप्रत्यागमनेनोभयभूपमृत्युमुखोद्वरण२, मोहमयीपत्तनस्यांग्लकरपतन ३, उदयपुराधीशराजसिंहच्छद्मघात प्राकट्यहेतुराज्ञीपुरोहिताद्यनेकमरणकुमारात्मघातमरण ४, राजसमुद्रजयसमुद्रकासारनिर्मितिभणन ५, महाराणाराजसिंहमालपुरप्रज्वालन ६, महाराणाजयसिंहस्यभावसिंहभगिनीपरिणयन ७, यवनेन्द्रौरंगजेबनिदेशसैन्यभावसिंहस्य दक्षिणात्यसितारानगराधीशशिवराजाक्रमण ८, चारणद्वारहठनरहरिदासस्यावतारचरित्रप्रबन्ध रचन ९, कुलपतिमिश्रस्य संग्रामसारग्रन्थनिर्माणसूचनमष्टमो मयूखः ॥ ८ ॥

करते हैं ॥ ६२ ॥ १ नरहरिदास ने लोभ का त्याग कर दिया ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भाऊसिंह के चरित्र में यवन करने के अर्थ बीकानेर के राजा कर्णसिंह पर बादशाह औरंगजेब का सेना भेजना और कर्णसिंह की सहाय पर राव भाऊसिंह का कर्णसिंह के पास जाना १, जाफरखां आदि की अरज से औरंगजेब का सेना को पीछी बुलाना और इन दोनों राजाओं का मृत्यु के मुख से वचना २ बंबई नगर का अंगरेजी कंपनी के हाथ में पड़ना ३ उदयपुर में महाराणा राजसिंह को छलघात से मारने का यत्न प्रकट होजाने के कारण राणी और पुरोहित आदि अनेक मनुष्यों का माराजाना और कुमर सरदारसिंह का आत्मघात करके मरना ४ राजसमुद्र और जयसमुद्र तालाबों के बनने की कथा ५ महाराणा राजसिंह का मालपुरा को जलाना ६ राणा जयसिंह का राव भाऊ की पहिल को विवाहना ७ बादशाह औरंगजेब की आज्ञा के अनुसार सेना सहित दक्षिण में सितारा के पति शिवराज पर जाना ८ चारण द्वारहठ नरहरिदास का अवतार चरित्र नामक ग्रन्थ बनाना ९ कुलपति मिश्र के संग्रामसार नामक ग्रन्थ बनाने की सूचना का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ पैंतीस २३५ मयूख हुए ॥



आदितः पञ्चत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

गो भजि जो गूगोरगढ, कुपित साह सुनि कृष्ण १९६।१ ॥

सूचित पुनि व्याही स्वसाँ, वसु बहु वितरि वितृष्ण ॥ १ ॥

पुब्वहि हो साहहु कुपित, रनपट्टनि अपराध १ ॥

वने उभय २ अपराध बलि, बिधि समस्त करि बाध ॥ २ ॥

गो दिल्ली पै डरि न गो, दिल्लीपति दरबार ॥

मरजी विन बाराँ १ मऊ २, चाहयो लैन विचार २ ॥ ३ ॥

बिनाँ मिलै भजिगो ३ बहुरि, अति रिस तातै आनि ॥

इनन विचारयो हड्ड ६ १ कौ, मुगल निरंकुस मानि ॥ ४ ॥

दूजो २ हो दिल्लीसकै, सुत जो आलमसाह ४ १ २ ॥

पठयो ताहि अवंति पुर, रवि सूवापति राह ॥ ५ ॥

भगवंत १ ९ ५ १ ३ हिँ गरलँद भन्यो, जो खल खानदजीर ॥

तिहिँ बिडारि इमानिजतनय, मालव पठयो मीर ॥ ६ ॥

क्रमतवेर तासौ कहयो, सठ कृष्ण १ ९ ६ १ २ हु तव संग ॥

ताहि इनहु कछु छिद तकि, सँहसा पटकि प्रसंग ॥ ७ ॥

आलम ४ १ २ सुत समुझाइ इम, पठयो कथित प्रदेस ॥

दै फरमान रु संग दिय, ऐस कृष्ण १ ९ ६ १ २ भनि ऐस ॥ ८ ॥

अबतै तू आलम ४ १ २ अनुग, सासन मम अनुसार ॥

कथितै तास अविर्त करहु, मालिक गिनहु कुमार ॥ ९ ॥

॥ वेताल ॥

१ बादशाह को जोधित सुनकर २ कहीहुई वहित का बिबाह किया ३ धन ४ देकर ५ तृष्णा रहित ॥ १ ॥ ६ पाटण के युद्ध को ॥ २ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० विष देनेवाला ११ निकाल कर बादशाह ने अपने पुत्र को भेजा ॥ १२ ॥ १३ चलते समय १४ अचानक ॥ १५ ॥ १६ इस कृष्णसिंह को १७ यह कहकर ॥ १८ ॥ १९ सेवक २० उसका कहना २१ निरन्तर करना

दल दौर घोरन जोरतव गूगोर तौर दिखाइ ॥

मगमाहिं आलम४१२सौं मिल्यो यह कृष्णसिंह१९५१हु आइ ॥

उपदा१रु बलि२ करि रीति आश्रित सद्धि थान सलाम३॥

कर जोरि अक्खिय दासको सिरहैं ब साहन काम ॥१०॥

भगवंत१९५३ सौं अतिमेय लै प्रतिदेय सो नवभूप ॥

भाखी सुंठां लहि संग भों रहि रीतिके अनुरूप ॥

निज चित्त चिंतिय साहसुत इहिं होइ बहु नरनास ॥

छलि मारिवो सुनि छन्न व्है प्रति बीर कति इहिंपास ॥११॥

इम सोचिकै किय कृष्ण१९६१आलम४१२स्वीयें बेगम संग ॥

भ्रम टारि पुष्प करंडिनी चलि सद्धिहों खल भंग ॥

दरकुंच हंक्रिय थप्पि यों नियरायि उक्त प्रदेश ॥

अरु सुंक्र३सुंभ्र१ चतुर्दसी१४दिन ताजपुर रहि एस ॥१२॥

श्रुति बन्दि सलह१७३४मान संवत पूर्णिमा१५तिथिपाइ ॥

प्रैबिस्पो सु पुष्पकरंडिनीपुर एम आलम४१२आइ ॥

आवासहो जहैं आपनों तहैं पैत सैत्वर एह ॥

गहि बाँह कृष्ण सु१९६१लैगयो जिम मित्र अप्पन गेह१३॥

करि छैद्य घातक सज्ज अप्प टस्यो कछू मिस कांस ॥

कर कृष्ण१९६१पै तिनके चले इत चोर जानि कुरास ॥

तस बीर सज्ज प्रकोष्ट हे तिन हक्क अंदर होत ॥

सह हल्ल पैठन क्यों करयो जिम मीन प्रैतिमुख सोत१४

जिनमें कटे बहु स्वामिलौ नवबीर पहुँचेजाइ ॥

१ सेना के २ कैलाच से ३ प्रताप ४ नजर ५ न्यौछावर ६ अब ॥ १० ॥ ७

प्रमान ८ पीछा दिया ९ नवीन राजा पन १० श्रेष्ठ जगह ११ मनुष्यों का ना-

म ॥ ११ ॥ १२ अपनी बेगम के साथ १३ स्थान का नाम है १४कहे हुए प्रदेश

को समीप लेकर १५ ज्येष्ठ १६ सुदि ॥ १२ ॥ १७प्रवेश हुआ १८नगर का नाम

१९महल २०पहुँचा २१शीघ्र ॥ १३॥ २२छलघात करने वाले को२३पास से२४बुरे

दंग से २५ द्वार पर २६ उलटी धारा में मँची जावे जैसे ॥ १४ ॥ २७अपने स्वा-

मारे सपातकं स्वामिघातक खगग फगग मचाइ ॥  
 कटि चूक पूरन टूक सूरन उच्छटे चहुँ४कोद ॥  
 चहुवान१मिच्छरनके चले बहु पाँनि तानि विनोद ॥१५॥  
 जँहँ रंगरंग सुगंध नीर१प्रसून२मनि३गन जोग ॥  
 भरिगो सुथान कृपान कर्तित अस्थि१पल२आभोग ॥  
 त्रय कृष्ण१६६११करतँ कटिपरे कटिमिच्छ घातक तत्थ ॥  
 खिल बीस२०रखिय खेत जे समवेत हहु६१न सत्थ ॥१६॥  
 लखतो रहयो सु अटा चढयो सुत साहको यह लाभ ॥  
 तल लुत्थि लुत्थिनपँ लगी हुव चूक वह तुमलाम ॥  
 तँहँ ए परे दस१०स्वामि१संजुत पारि अरि तेईस२३ ॥  
 सिव अर्थको हु रहयो न वहाँ खिरि खंड संभर सीस ॥१७॥  
 इम बेदराम३४प्रमेय संबत सुँकके३सित१अंत ॥  
 गूगोरको नृप काम आयउ प्रेरि कित्ति दिगंत ॥  
 दिल्लीपुरी सैन भीरु ज्यौं तब त्यों भन्यौं सुनि दोह ॥  
 अब बीर यौं स परयो अँवतिय लागि बुँत्थिन लोह ॥ १८ ॥  
 ढिग पंच५धीर सगोत्र१बीर परे अरातिनँ लाहि ॥  
 असगोत्र२च्यारि४करे उहाँ दस१०गोत्र ए अब आहि ॥  
 लरि सदाराम१पहार२भैरव३केसरी४अरु लाल५ ॥  
 तँहँ हहु६१पंच५हि ए खिरे जिम टूक लोमँन ताल ॥ १९ ॥  
 सीसोद भारत१भारमल्ल२उभै२कटे पहु संग ॥

मी ( कृष्णसिंह ), पर्यंत १ पाप साहित २ स्वामी को मारने वालों को ३ चारों दिशाओं में ४ हाथ ॥ १५ ॥ ५ पुष्प ६ खड्ग से कटेहुओं से ७ हाड और मांस से परिपूर्ण होकर ८ बाकी के ९ मिलेहुए [साथ] १० हाडों के साथ ॥१६॥ ११ आकाश को भर देनेवाला १२ शिव के काम का [पूर्णमस्तक] कोई नहीं रहा अर्थात् सब के मस्तकों के टूक टूक होगये १३ चहुवाण का मस्तक ॥१७॥ १४ ज्येष्ठ सुदि के अन्त में १५ दिल्ली से १६ जलैन में १७ शस्त्रों से लोथे [मृतक शरीर] लगकर ॥१८॥ १८ शत्रुओं को गिरा कर-१९ हरताल से केशों के टुकड़े होजाते हैं तैसे ॥ १९ ॥

आनंदशङ्कनाम कबंध चालुक लाल ११४ खंडित अंग ॥

ए० ज्यों नव० गृह कृष्ण १०६ ११ ज्यों सिसुमार १० इन्ह आधार

वहै टूक ए दस १० ही भरे बहु मारि मारनहार ॥२०॥

इत१ के प्रवीर प्रकोष्ठ बाहिर तुट्ये इकतीस ३१ ॥

उत२ केनकी गिनती न जाहिर भइ प्रमानहु ईस ॥

तिम कृष्ण १०६ ११ मारन हक सुनि खिल सत्य भजि गतास

पठई चमू तिनकेहु डेरन पै प्रकोप प्रकास ॥ २१ ॥

दुव२ देस बगड पै वजै सीसोद राउल दोइ २ ॥

हो तथ दोउ२न माँहिँसैं इक१ जास संभव होइ ॥

कति लोग भजि रुतास डेरन उब्बरयो ततकाल ॥

बलि गो कितो गूगोर भजि तजि सिबिर सून्य बिसाल २२

बिनुसंक डेरनको सु बैभव लुटि मिच्छन बात ॥

सब लैगयो जिहिँ हथ जो परिगो सु जै दरसात ॥

गय हो गनेसवतार १ सो गयलूट कारन गैल ॥

गज तिलक २० जो २ नाम यो सह कोप सासुँ कि सैल ॥२३॥

मदमूढ मिच्छन हो लयो करटी सु गोलन मारि ॥

पुँतनाप्रदेस अरग्य सो हुब को सकै वै पुकारि ॥

सूबा अवंति अधीन हे नृप जे हुते तहँ सर्व ॥

उनके अचानक मंतुँ खोजत भो अचिज्ज अखर्व ॥२४॥

द्विज जो पुरोहित कृष्ण १०६ ११ को तहँ हो भवानियदास १

खिलमैं जु मुख्य १ हुतो द्वितीय २ सु स्थाभरूप २ खवास ॥

१ तारा मंडल २ मारने वालों को ॥२०॥ ३ डयोही के बाहर ४ हे स्वामी रामासह  
५ बाकी की सेना (साथ) ॥ २१ ॥ ६ बागड देश के पै अर्थात् पति ७ मलेच्छों  
का समूह लूट लेगया ८ जय दिखाते हुए ९ हाथी १० हाथी ११ मानों प्राण  
साहित पर्वत ॥२३॥ १२ हाथ १३ उस हाथी को १४ सेना का प्रदेश १५ वन (शून्य)  
होगया १६ अब १७ अपराध हेरने में १८ आश्चर्य १९ १० बाकी के लोगों में

ए द्वैरहि राउलकेर डेरन मुख्य है अवसेस ॥

सीसोद पुच्छिय द्वैरहिसौं कुछ बुद्धहै किं कलेस ॥ २५ ॥

सीसोद राउलसौं कह्यो द्विज खग चालन सुद्धि ॥

बलि गोशकि स्वामि मरयोसु निश्चय बुद्ध है न स्वबुद्धि ॥

किय ख्यात राउल बिप्रकौं तँहँ काम आयउ कृष्ण १९६ ॥

तृदिवौक भो स्व ख वेद ४० सत्यिन जुजिभ देह बित्त २६

बहु मिच्छ बाहिर १ बद्धये इम माँहि खल तेईस २३ ॥

सुनि बिप्र अक्खिय वाहवाह घनौ धुनावत सीस ॥

बलि हेतु पुच्छत बिप्र बुल्लिय अप्प जानहु एह ॥

गहिवो बुरो १ हनिवो भलो २ सुरगेह व्है जिम गेह ॥ २७ ॥

पीछें वकील स्वकीय राउल भोजि आलम ४० ३ पास ॥

सब लुत्थि मंगिय छारि मंचन स्वामि सौं सबिसास ॥

चालीस ४० पुद्गल मंच चउदह १ ४ इक्क १ पै निज १ आनि ॥

सिपातटस्थ पिसाच सोचन ठाम दग्धहु ठानि ॥ २८ ॥

अहँ तीन ३ बिप्र १ खवास २ रहि किय अस्थि लैन उपाय ॥

तत्रत्यं लोकन यौ कह्यो तँहँ है न लैन हिताय ॥

यह मुख्य तीस्थ है तहाँ सन अस्थि जाइ अहो न ॥

कुछ बुद्धि ऊँहन सुद्धि कारन कोन क्योंसु कहो न ॥ २९ ॥

नर जे बचे सीसोद के तिन्ह ताहि रति निकासि ॥

बलि एहु द्वैरहि चउत्थ ४ वासर त्यों कटे हिय आसि ॥

इन सुद्धि बिम १ खवास २ दोउ २ न दिन बुद्धिय आइ ॥

१ हुंरपुर के राउल के डेरों में बाकी थे ॥ २५ ॥ २ हमारी बुद्धि में माकूम नहीं ३ देवता हुआ अर्थात् स्वर्ग गया ४ अपने चालीस माथियों सहित ५ वृष्णा रहित ॥ २६ ॥ ६ कटे ७ कारण ८ जिसमें स्वर्ग घर होता है ॥ २७ ॥ ९ लोथें (मृतक शरीर) १० शरीर ११ सफरा नदी के किनारे पिशाचमोचन नामक जगह पर दाग दिया ॥ २८ ॥ १२ तीन दिन १३ वहाँ रहनेवालों ने १४ यहाँ से अस्थि लेना हित के अर्थ नहीं है १५ तर्कना ॥ २९ ॥ १६ चौथे दिन १७ खबर

गूगोर सेस बचे गये पतिनास त्रस्त पलाइ ॥३०॥

नभ व्योम १७०० सम्वत भद्रमेचक ३ कृष्ण १९६ १ जन्म निदान ॥

मति भिन्न जाइ मऊ लई तेबीस २४ सम बय मान ॥

बपु त्यों तज्यो चउबीस २४ सम बय सुक्र ३ अंतिम १५ स्वेत १ ॥

न कही मऊ पति जानि ही नव ९ नारि तास निकेत ॥ ३१ ॥

बुंदीपुरीहि रही कही तिनमाँहि पंच सु बुद्धि ॥

तिनमाँहि भस्म भई लयी सुनि स्वामि नियत न सुद्धि ॥

पटु पंचमी ५ १ तँहँ गोड़ि झल्लिय सप्तमी ७ २ सु प्रवीन ॥

तिम अष्टमी ८ ३ गडोरि बुद्धिय ए जरी तिय तीन ३ ॥ ३२ ॥

तीजी १ १ रु छट्ठि ६ २ य द्वै २ जरी न प्रजावती रहि तत्थ ॥

वैधव्य धर्म विधानतँ अवसान सद्धिय अत्थ ॥

गूगोर चपारि ४ कही गई पति के बुलावत पास ॥

इक १ दाहरी नवमी ९ १ जरी तँहँ प्रीतिके अवकास ॥ ३३ ॥

अरु द्वै २ हि पुंय मरी द्वितीय २ १ चतुर्थ ४ २ सेखाउति ॥

पहिली १ जु केसरदेवि १ ९ ६ १ सो न जरी मनोहर पुति ॥

कति कहतही दसमी १० हु तिय तस गौड़ि लाडकुमारि १ ९ ६ १ ०

नहिँ सुँद्धि पै रु खवासि तेहु जरी चउदह १ ४ नारि ॥ ३४ ॥

गूगोर नारायनगिरीके बाग हुव सँहगोन ॥

अद्यापि चौरा तत्थ उनके भाँ प्रकासत भोन ॥

अठ्ठारही १ ८ लहि संग नारिन कृष्ण १ ९ ६ १ गो दिवँ एम ॥

तस नास संसय भो असेस न हेरि हेतन तेस ॥ ३५ ॥

१ डर से भगकर ॥ ३० ॥ २ भादवा वादि बुद्धि से भिन्न होकर [निर्बुद्धि]

४ वर्ष ९ ज्येष्ठ सुदि पूर्णिमा के दिन, उसके घर में नौ स्त्रियाँ थीं परन्तु

उस कृष्ण को ३ मऊ का पति जानकर स्त्रियों के व्याह का वृत्तान्त नहीं कहा

७ घर में ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ४ सन्तानवाली होने से नहीं जल्दी ९ विधवापन

के धर्म में १० यहाँ ही अन्त हुआ ॥ ३३ ॥ ११ खबर ॥ ३४ ॥ १२ सती १३ अय तक

भी १४ कान्ति १५ स्वर्ग १६ दोष नहीं देखकर ॥ ३५ ॥

सुनि कृष्णा १९६। १मारन भावसिंह १९५। १नरेस इत किय सोक ॥  
 ताकेहि बुंदिय सुद्ध ओरस जे रहे चउ४तोक ॥  
 तिनमाँहिँ दोउ२न द्वै२मुता बिनसी अनूढहि-गेहु ॥  
 रठोरि३कै सुत द्वै२ रहे लघु२अंत तिम सुनिलेहु ॥ ३६ ॥  
 यह कीर्तिसिंह १९७। २सनाम जो अनिरुद्ध १९७। १सोदर आस ॥  
 पहिलै सु भावपुरा १ हि भूपति बुल्लयो निज पास ॥  
 सो व्हाँ मरयो सिसु या समै तनु रक्खि हायन तीन३ ॥  
 अनिरुद्ध १९७। १इक्क३रहयो सँता १९४। १कुलतंतु अप्प अधीन ॥ ३७ ॥  
 तव कृष्णा १९६। १कों दिय जो पटा सु स्वसूनु गिनि दिय ताहि ॥  
 अरु अब्द ग्यारह ११ लौ इहाँ बयमै गये तस आहि ॥  
 कति यौ कहँ बुंदीहि ताकहँ स्व स्व पुत्र बनाइ ॥  
 मतभेद कोउक होउ पै दिय औरसत्व मनाइ ॥ ३८ ॥  
 इत साह जो दिय १जोधपुर अमरसके सुत अत्थ ॥  
 तो लैलियो रु दयो न२तो तबलौ रहयो तिम तैत्थ ॥  
 अरु काँनि स्वीय घटाइ सो जसवंत बर्जित आस ॥  
 निरंगार दुँस्थ रहयो ससंक त्रिसंकु भूप निकास ॥ ३९ ॥  
 बुंदीस वढि जब लैगयो पँद्वा ११ विधेय विधान ॥  
 जसवंत तव कहि मुक्कली किय भव्य अप्प सु मान ॥  
 अबतैहि तुम १हम२इक्क १हँ भनिमुक्कली तव भूप ॥  
 हम साह आश्रित अप्प हेरहु रावरे अनुरूप ॥ ४० ॥  
 कहिमुक्कली पुनि साह प्रेरित आहु ज्यौ नृपकर्ण ॥  
 संका तथापि मिटी न जावत ज्यौ धनी १प्रतिसर्ण २ ॥

१ वालक २ विना विवाही हुई ॥ ३६ ॥ ३सगा भाई हुआ ४ वर्ष ५ शत्रुशाल  
 के वंश में ॥ ३७ ॥ ६ अपना पुत्र मान कर ७ औरसपन ॥ ३८ ॥ अमरसिंह  
 के पुत्र के ८अर्थ जोधपुर दिया ९तहाँ १०आदर (इज्जत) ११आशा रहित हुआ  
 १२विना घर १३दरिद्री ॥ ३९ ॥ १४भादवा सुदि एकदशी के दिन १५शुभ १६आप  
 के सदृश ॥ ४० ॥ १७ जिसप्रकार राजा करणसिंह आया वसीप्रकार

सो तोहु जाइसक्यो न१ ओ ठहरयो२न बिनु अवलंब ॥  
 अब साह अखिखय नैरतैं इन्ह कहि देहु कदंब ॥ ४१ ॥  
 जसवंत तियेजन मात्र हे जिन्ह नैरतैंहु निकासि ॥  
 रठोर परिजन१हीन पुर किय इक परजन २रासि ॥  
 सकुटुंब अब जसवंत सोचत देसबिरहित दीन ॥  
 मतिहीन गति अवलंबे खोजत ज्योंक बाहिर मीन ॥ ४२ ॥  
 अदख्यो जु कासिमखान१तस सुत नाम खानअमीर२ ॥  
 भो पुब्ब तासन मित्रभाव सु पै चह्यो अब सीर ॥  
 कछु छन्न दै उपहार ताकैंहें मंडि पत्रन मंत्र ॥  
 तिहिं द्वार लै बिच तास तांत१तथा वजीर२हु तंत्र ॥ ४३ ॥  
 जिनकाँहु दै उँपदा अभीष्ट रु साहचित्त जगाइ ॥  
 इक प्रान निर्भय मंत्र जानि पर्यो सु पुरढिग आई ॥  
 सबही नबाव१अमात्य२वहाँ सन छत्र भेट प्रसारि ॥  
 अपनैकरे तैंहें के भये१न भये२समै अनुकारि ॥ ४४ ॥  
 दिय तत्थ बिनैतिपत्र यौ अब जीविकाबिनु दास ॥  
 कहिहो सु करिहै चाकरी लाहि प्राणलाभ प्रकास ॥  
 लहिं सरन चरन हजूरके दिय आदि परिजनलोक ॥  
 सबही इहाँ रहिहैं परे स्व निबाहको तजि सोक ॥ ४५ ॥  
 तब साह त्यों हि निदेसदै चहि जीविकाबिनु ताहि ॥  
 दियभोजि सूबा सिंधुपार तथा अनादर दाहि ॥  
 वलि कहिय परिजन तब रहैं इहैं जौम तौम बिसास ॥

१समूह सहित ॥ ४१ ॥ २ स्त्रियाँ मात्र ३ पास के लोगों [सेवकों] से ४ शत्रु के  
 लोकों का समूह रहा ५ आधार ६ जल से बाहिर होकर मीन (मछली)  
 आधार सोचै जैसे ॥ ४२ ॥ ७ उससे ८ नजराना ९ पुत्रों से सलाह करके  
 १० उसके द्वारा उसके पिता (कासिमखान) को ॥ ४३ ॥ ११ नजराना इच्छा-  
 नुसार देकर १२ समय के अनुसार (सदृश) ॥ ४४ ॥ १३ अरजी १४ सेवक ॥ ४५ ॥  
 १५ जब तक तेरे घर के सब लोग यहाँ रहें १६ तब तक ही विश्वास है



नहि तो निलज्ज' वहैहि तू हमरोहु चाहत नास ॥४६॥  
 सुहि मन्नि गो जसवंत सिंधुहि लॉघि काबल सीम ॥  
 दिल्ली रहे सब तास परिजन आस जानि कदीम ॥  
 तिम इक्क' गर्भवती हुती जसवंत रानिय तत्थ ॥  
 सब तास चाहिरहे प्रसूति गहे बडे मह सत्थ ॥४७॥  
 पैतीस सत्रह १७३५ साल पै इम दिष्टको अनुसार ॥  
 कछु काल जातहि बाल भो तस अजितसिंह कुमार ॥  
 इन गूढ रक्खिय तोहु सुत वह जानिकै अवरंग ४०१३ ॥  
 सूची पठावहु बाल अप्पहि जोधपुरही संग ॥४८॥  
 इन यौ बिचारिय मारिबे सिसु साह संगत अज्ज ॥  
 कहि मुक्कली अबही न भो ढिग तोहु प्रसवन कज्ज ॥  
 जान्यौ न आसय साहको पर एहु सुनि अति जोर ॥  
 अपनौ अनीकै पठाइ तिन्ह दैल बिंटयो चहुँ ओर ॥ ४९ ॥  
 अरु यौ कहाइय जो न भेजहु पास बालक एहु ॥  
 न बहोरि ता कहै जोधपुर मिलि है मुँधा किम नेह ॥  
 उन देखि प्रत्युत बेढै अप्पन मारिबोहि प्रमानि ॥  
 कछु रीति कहन बाँब चितिय बंस रक्खन कानि ॥५०॥  
 गोविंद बनि तहँ व्याल ग्राहक बेस अप्पन गोई ॥  
 धसिगो चमूबिच छै स्व डेरन जेमतेम धिजोइ ॥  
 कछु बित्त इक्क' करंड रक्ख करंड इक्क' कुमार ॥

१ वही हमारे डेरों को लूटनेवाला है ॥४६॥ २ अटक नदी को लांघ कर प्राचीन  
 आशा अर्थात् जोधपुर की आकाश ४ उत्सव सहित ॥ ४७ ॥ ५ भाग्य के ६  
 बालक ७ छाने ८ सूचना की ९ जोधपुर साथ ही देंगे ॥ ४८ ॥ १० आज  
 ११ प्रसव होने का कार्य १२ सेना १३ सेना को घेर ली ॥ ४९ ॥ १४ वृथा स्नेह क्यों  
 करते हो १५ उलटा १६ अपने को घेर कर १७ विचार अथवा प्रसंग ॥५०॥ गोवि-  
 ददास भाटी तथा १८ काल बेलिया बना १९ अपना लिबास छिपाकर २० धन २१  
 टोकरे (करंडे) में रखकर एक करंडे में कुमार अजितसिंह को रक्खा

कठिगो सु मंगत टूक रुष्टिन भाखतो जयकार ॥ ५१ ॥  
 आजन्म रक्खन बाले समुचित भै समस्तन आनि ॥  
 तिम दुर्गदासकबंध त्यों रघुनाथर भट्टिय मानि ॥  
 इनसौ कहयो तुम जाहु द्वैरतहँ उच्चरी इम एह ॥  
 यह साह छन्न करी इहाँ मचिहँ ब सखन मेह ॥ ५२ ॥  
 जहँ सर्व तुम जुत स्वामिके रनिवासलौ कटिजाइ ॥  
 कहि ए तहाँ दुवक्क्यौटैरँ हम धर्म हीन कहाइ ॥  
 उनको तरु हठ देखि दोउरन उच्चरी पुनि एह ॥  
 भैवदीय मरन निभालि द्वैरअसिपूत करि निजदेह ॥ ५३ ॥  
 पीछै उभैरकटिजाइकै रहिहँ सदा सिसु पास ॥  
 इम सौहँ लै जवही कहीं तबही लही उन्ह आस ॥  
 करि कोप यह सुनि साह तब अवरोध निश्चय काज ॥  
 सह मुक्कलेनरवेस नारिख सौविदल्लरसमाज ॥ ५४ ॥  
 तिन जाइ इम जसवंतको अवरोध सोधिय तौम ॥  
 परखी सु सँव प्रसूतिका जसवंत रानिय जौम ॥  
 न लख्यो तथापि प्रसूत बालक त्योंहि आइ निवेदि ॥  
 रिस साहकै बढती रचात भये प्रलुब्धन भेदि ॥ ५५ ॥  
 खिजि साह अखिखय अस्तखानहिँ जाइ तू अति जोर ॥  
 न मिलै जु सिसु तो पकरि नारिन आनि वहाँ हनि और ॥  
 सुनि अस्तखाँ इम साह सासन संक्रम्यो सह सेन ॥  
 इत त्यों कबंधन अंगम्यौ रनिवास कट्टन एँन ॥ ५६ ॥

१ रोटी का टुकड़ा मांगता हुआ ॥ ५१ ॥ २ जन्म पर्यन्त ३ उचित ४ अब ॥ ५२ ॥  
 ५ जनाना ६ आप मरना तक कर ७ खड़ से अपने शरीर को पवित्र  
 करके ॥ ५३ ॥ ८ सौजन्य लेकर ९ जनाने में निश्चय करने के लिये १० साथ  
 भेजे ११ कंचुकियों (नाजरों) के समूह को ॥ ५४ ॥ १२ जनाना १३ तहाँ १४ तुरन्त  
 की बालक जननेवाली स्त्री १५ उस समय (जहाँ) १६ लोभियों को भेदकर ॥ ५५ ॥  
 १७ स्त्रियों को पकड़ ला और अन्य को मार १८ चला, जनाने को काटना  
 १९ अंगीकार किया २० घर में ॥ ५६ ॥

प्रविसे वरोध सपिंड भट लै लै बिकौस कृपान ॥  
हनिबेलगे निज स्वामि नारिन मन्नि निज बपु हान ॥  
हड्डी ६१ जु कर्मवती १६५ १ हुती तिनसौ कह्यो तिहिँ तथ्य ॥  
हनि कै हमँ मरिहो कहो तहँ कोन पिकखहि हँथ ॥ ५७ ॥  
सुनि यौ कह्यो तिन स्वामिनी मरिबो न तंत्र प्रमान ॥  
तुम हथ पिकखन जो रहो अब तो गहँ तुम कान ॥  
दठपुब्ब वे न हनै १ गहँ २ गहिबो बिचारनहार ॥  
दिल्लीस पित्थल १७ १ से इहाँ दृष्टांत केहि उदार ॥ ५८ ॥  
भटवेस कर्मवती १९५ १ सज्यो तहँ इक्खि सो तिन्ह भाव ॥  
छुरिका उभै २ खर मारि छतिय बेढि कोच बनाव ॥  
अपनै सपिंडन इक्खतै यह सज्जि यौ हुव संग ॥  
भट ते मुरे इम ठानि खिल सब भूप नारिन भंग ॥ ५९ ॥  
अपनै प्रबीरनमै रही हड्डी सु गज आरूढ ॥  
गहि छत्र १ चामर २ आदि निजपति राजचिन्ह अगूढ ॥  
इहिँ बीच सह बल १ पुब्बबल २ मिलि अस्तखानहु आनि ॥  
प्रतिबैन भोजिय अर्भ अप्पहु के दिखावहु पानि ॥ ६० ॥  
करि हल्ल मिच्छनसौं भिरे तहँ धीर बीर कबंध ॥

१ जनाने में घुसे २ सपिण्डी ( सात पीढ़ि के भीतरवाले ) उमराव ३ खड्ग निकालकर ४ अपने स्वामि की स्त्रियों को ५ तुम्हारे हाथों ( प्रहारों ) को कौन देखेगा ॥ ५७ ॥ ६ मरना अपने आधीन नहीं है ७ आदर ८ हठ पूर्वक ९ दिल्ली के पति पृथ्वीराज ने बहुत मरना चाहा था परन्तु गोरी-शाह ने पकड़ना चाहा तो पकड़ ही लिया सो ऐसे कितने ही दृष्टान्त विद्यमान हैं ॥ ५८ ॥ दो ११ तीक्ष्ण १० छुरियाँ छाती में मारकर १२ कवच से ढक ली १३ अपने सपिण्डी के देखते १४ बाकी के ॥ ५९ ॥ १५ हाथी पर सवार रही १६ प्रसिद्ध १७ पाहिले भोजी हुई सेना से १८ बालक को सौंपो १९ हाथ दिखाओ (युद्ध करो) ॥ ६० ॥

हड्डी ६१ लरी विच अठ्ठ ८ हत्थिन स्वामिवेस सुसंध ॥

इक १ जामलौ घमसान अंकुरि पूर सत्रुन मारि ॥

पैररखि कर्मवती १९५१ परी बपु खंडखंड बिथारि ॥ ६१ ॥

रठोर सूर सबै रहे रन बाढ भारि बिचित्र ॥

पहिलै कहे दुवश्ते कढे करि काय घाय पवित्र ॥

धरि अगग ते खिल लै गये कतिदूर फोज धकोइ ॥

दे अस्तखानहिं प्रानसंसय निरखसे इम दोइ ॥ ६२ ॥

पैतीस सत्रह १७३९ साँकपै अतिघोर रन हुव एह ॥

दुबरघाँ हजारन व्हां भये तिम मृतक १ घायल देह ॥

पहुँ जो रहयो इत सिंधुपार सु जानि सुहु जसवंत ॥

ऐसो लग्यो भुवलोभ जिहिं समुझ्यो न आगम अंत ॥ ६३ ॥

इत भूप दकिखनदेस भावपुरा रह्यो दस १० अब्द ॥

सबघाँ संपान कृपान साधन बिस्तरयो जस सब्द ॥

अब अठ्ठपावक बाजि भू १७३८ सक राँधर लगत एह ॥

अह पकख मेवँकर अष्टमी ८ दिवँ गो बिहाइ स्वदेह ॥ ६४ ॥

विधि प्रथम १ पंचम ५ २ छठ ६ ३ सप्तम ७ ४ नवम ८ ५ दसम १० ६ बिवाह

पहिलै मरी खट ६ ए प्रिया निज भक्ति सौं भजि नैह ॥

इनमैहु सप्तम ७ ऊँठ इक १ पहिलै मरी पतिपास ॥

खिल जे रही खट ६ ते जरी अवसोन अब खिन तास ॥ ६५ ॥

दूजी २ १२ चौथी ४ २ अष्टमी ८ ३ छंदी भई हुतदेह ॥

१ श्रेष्ठ प्रतिज्ञा से २ प्रहर तक ३ युद्ध में खड़ी होकर ४ शत्रुओं को मारकर ५ १ ॥ ५ घावों

से शरीर पवित्र करके वाकी की राटोड़ी फौज को आगे धर कर बका ले गये

७ प्राण का संदेह ॥ ६२ ॥ ८ सम्वत् में ९ दोनों ओर १० राजा (यशवन्तसिंह) ११

भूमि का लोभ १२ अन्त समय के आगम को नहीं समझा (यशवन्तसिंह) इस

से थोड़े ही समय पीछे मर गया इस कारण अन्त का आगम लिखा है ॥ ६३ ॥

१३ सब दिशाओं में १४ हाथ के साथ खड्ग के साधन से १५ वैशाख मास १६

दिन १७ कृष्णपक्ष अपना शरीर छोड़ कर १८ स्वर्ग को गया ॥ ६४ ॥ १९ पति का

सेवन करके २० बिवाहिता २१ वाकी २२ उसके अन्त समय में ॥ ६५ ॥ २३ सती हुई

तीजी३१तथा एगारही११२अरु बारही१२३ढिग एह ॥  
 बुंदी१तथा तँहँ२द्वै२हिथान जरी खवासि बतीस३२॥  
 इम अष्टतीस२८जनीन सहदिवपत्त हड्ड६१नईस॥६६॥  
 पैहुकै सुता इक१अन्नपूरनिकाखवासि प्रजात ॥  
 सीसोद बीरमकर सुनुहि ताहि व्याहिय तात ॥  
 जामात सो रघुनाथ नामक देह रक्खि जनेसँ ॥  
 ताके समान पटा हु ताकँहँ दत्त बुंदियदेस ॥६७॥  
 बुंदी सुन्यौ नृप मरन निश्चय ताहुसौ सुनि बेग ॥  
 तब हड्ड६१दुर्जन१९६१नाम दुर्जन स्वामिपर लिय तेग॥  
 पति एह बलवनि द्रंगको गोपालको१९५१खल पुत्र ॥  
 सहसा मरयो सुनि स्वामिको तब ओ अधर्म तनुत्र ॥६८॥  
 अति लुब्ध भिल्ल१रु मेर२मैनन३जोरि लोभ उपाय ॥  
 बुंदी प्रसू निज भोग बंछि चढ्यो सु लोलुप चाय ॥  
 जिहिँ पैस बुंदिय भूप निपतन सुद्धि पहुँचिय जाइ ॥  
 पहुँच्यो सु दुर्जन१९६१ताहि बाँसर बेठपुर प्रकटाइ ॥६९॥  
 तिहिँ काल भातुलदेवि१९५२आदिक उक्त रानिय तीन३  
 पति सत्य होन खवासिगनजुत निकलसी जसपीन ॥  
 अरजी सुनी तँहँ दुष्ट दुर्जन१९६१द्रंग लगिय आनि ॥  
 महिपाल निज अनिरुद्ध१९७१पंद्रह१५अब्द बय सिसुमानि ॥७०॥  
 सीसोदनी२प्रति सर्वनैँ अरजी निवेदिय एह ॥  
 इह कोन अंग लरैँ मरैँ हम अप्प जरन अनेहँ ॥

१स्वर्ग गया ॥६६॥२राजा के रपासवान स्त्री से उत्पन्न ४पिता ने ५जमाई ६  
 राजा ने अपने देश में रख कर ७दिया ॥१७॥८शत्रु [दुष्ट] दुर्जनामिह ने ९अचा-  
 नक १०अधर्म का कवच ॥६८॥ ११अत्यन्त लोभी १२बुन्दी रूपी अपनी माता  
 से भोग करना चाह कर १३जिस दिन बुन्दी के राजा के मरने की १४ग्वर  
 १५उसी दिन नगर के घेरा लगा कर ॥ ६९ ॥ १६पुर के आ लगा (घेर लिया)  
 है ॥७०॥ १७ किसके आगे १८ आपके जलने का समय है

बलि सत्रु तक्रत छिद्र बाहिर देखि यौ कछु देर ॥  
 करिकैं जसो लखि जुद्ध विघ्नहु व्है न ज्यौ उतकर ॥ ७१ ॥  
 सीसोदनीरसुनि यौ तनै अनिरुद्ध १९७१ बुल्लिल समीप ॥  
 सबसौं कह्यो यह सैनु मन्नहु याहि स्वीय महीप ॥  
 तासौहु अक्खिय रक्खि तू सुत स्वीयजन सतकार ॥  
 हमसंग होहु न सत्रुसद्धहु पिल्लि चंड प्रहार ॥ ७२ ॥  
 मोको टैरे कढि जारि आवहु जोध इकहजार १००० ॥  
 कलि भूप जुत खिलजित्ति दुर्जन १९६१ होहु जय जसकार ॥  
 तिन्ह छार बाग कहे जिते १००० टारि लैगये भट तथ ॥  
 सहगोन ठानि विधानसौं तिन त्यों कर्यो पति सथ ॥ ७३ ॥  
 पुर कोटपै इत सज्ज भट करि दुर्ग तोपन प्रेरि ॥  
 गन जत्रकुत्र करे अरातिन लुत्थिलुत्थिन गेरि ॥  
 अनिरुद्ध १९७१ को इम जुद्धमें दुवर्जाम होत अतीत ॥  
 भजिगो सु दुर्जन १९६१ इहु ६१ दुर्जन ताहि बासर भीत ७४  
 सौराष्ट्री दोहा ॥

भाऊ १९५१ नृप भवभूत, संवत नभ वसु नृप १६८० समय ॥  
 हहु ६१ नकुल पुरुहूत, तिथि सतह १७१५ सक १० तथा ॥ ७५ ॥  
 अब वसु गुन अत्यष्टि १७३८ अष्टमि ८ अह माधव २ असित २ ॥  
 नियति करी वपु नष्टि, सोक भयो अज्जन सबन ॥ ७६ ॥  
 अब तस निर्मित अैन, स्रवनकरहु प्रिय लोक सब ॥  
 निरखत व्है सुख नेन, सरप अैसे आयत रुचिर ॥ ७७ ॥  
 भंडिय महलनमाहिं, सौधें मुकुटमंदिर सता १९४१ ॥

१ इसकारण ॥ ७१ ॥ २ इस पुत्र को ३ अपना राजा मानो ४ अपने लोगों का  
 ॥ ७२ ॥ ५ छटे हुए ६ युद्ध में ७ यश करनेवाले ८ शत्रुओं को ९ लोथ पर लोथ  
 गिरा कर १० दो प्रहर ११ व्यतीत १२ दुष्ट दुर्जनसिंह १३ उसी दिन डरकर  
 ॥ ७४ ॥ १४ जन्म हुआ १५ इन्द्र ॥ ७५ ॥ १६ दिन १७ वंशाख यदि १८ सर्व  
 आयों को ॥ ७६ ॥ १९ उसके बनाये हुए स्थान २० चौड़े (वड़े) ॥ ७७ ॥ २१ महल

ऊपर तस इक १ आँहि, महल सु १ भाऊ १ ९५ १ निर्मयो ॥ ७८ ॥

अधमहलन बिच एम, मंजु पृथुल मोतीमहल ॥

तँहँ कुमारपन तेम, निबस्यो यह नयमँ निपुन ॥ ७९ ॥

अध्यात्मादिकदास, बैष्णवकी बिज्ञप्ति तँ ॥

नियत पांथश्रमनास, नृपति स्थान इक निर्मयो ॥ ८० ॥

पुर लक्खैरिय पास, दिपत कोणा ईसान दिस ॥

अधिप पूरि तस आस, मंदिर १ बाँपी २ निर्मये ॥ ८१ ॥

ताकी निर्मितिकाज, लूणाकरणा कायथ ललित ॥

रक्खि भाउ १ ९५ १ अधिराज, लूणाबाय प्रसिद्ध हुव ॥ ८२ ॥

उपवन विरच्यो एक १, रत्नबाग ढिग जो रुचिर ॥

बैलि दूजो २ सबिवेक, फूलसरोवर तट फँवत ॥ ८३ ॥

पति बिबिध प्राकार, जो चहारि जलजल जुत ॥

अब जीरन उद्धार, किय जाको प्रभु अर्प्य किल ॥ ८४ ॥

इति श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण सप्तमराशि बुन्दी भूपभावसिंहचरित्रे औरंगजेबनिदेशतत्पुत्रालमगुगैरपतिकृष्णसिंह छद्महनन १, कृष्णहननानन्तरभावसिंहस्यानिरुद्धपुत्रीकरण २, योधपुरराज्यप्रहाणाहेतुप्रार्थितौरंगजेबदिल्लीरक्षितस्वावरोधयशव-

१ है २ भाऊने बनाया ॥ ७८ ॥ ३ नीचे के महलों में ४ सुन्दर खड़ा ५ नीति में ॥ ७९ ॥ ७ अध्यात्मदास की ८ अरज से ९ पथिक [मार्ग चलनेवाले] लोगों का श्रम मिटाने के लिये ॥ ८० ॥ १० बावड़ी ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ११ बाग १२ फिर १३ विचार पूर्वक १४ शोभायमान है ॥ ८३ ॥ १५ फव्वारों सहित १६ हे प्रभु जिसका जर्णोद्धार आपने १७ निश्चय किया है ॥ ८४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति भाऊसिंह के चरित्र में औरंगजेब की आज्ञानुसार औरंगजेब के पुत्र आलम का गुगैर के पति चहुवाण कृष्णसिंह को छलघात से मारना १ कृष्णसिंह के मारेजाने पीछे भाऊसिंह का अनिरुद्धसिंह को अपना पुत्र बनाना २ योधपुर खाते से होजाने के कारण औरंगजेब को अरजी देकर राजा जसवंतसिंह

न्तसिंहकाबुलाक्रमण३, यशवन्तसिंहात्मजाजितसिंहजन्मसमकालनिःशलाकतन्निष्कासनान्तरकृतयवनेन्द्रसैन्ययुद्धयशवन्तपत्नी-  
हाडीमरण ४, दक्षिणजनपदभावसिंहपञ्चत्वप्राप्तावनिरुद्धसिंहपट्ट-  
प्रापण५, दुर्जनसिंहबुन्दीरणपराजयवर्णनं नवमो मयूखः ॥ ९ ॥

आदितः पट्टत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३५ ॥

का अपने जनाने को दिल्ली में रखकर काबल के सूबे पर जाना३ यशवन्तसिंह के पुत्र अजितसिंह का जन्म होने पर उस बालक को छाने निकाले पीछे यशवन्तसिंह की राणी हाडी का बादशाही सेना से युद्ध करके काम आना ४ बुन्दी के राजा भाऊसिंह के दक्षिण में देहान्त होने पर अनिरुद्धसिंह का पाट बैठना५ हाडा दुर्जनसिंह का बुन्दी से युद्ध करके हारने का नवमां मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ छतीस २३६ मयूख हुए ॥





॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथाऽनिरुद्धसिंह १९६।१ चरित्रस्य प्रारम्भः ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

करि उत्तरविधि निज करन, बय किसोर जय बुद्ध ॥

तीजी ३ तिथि बैठो तखत, राधे २ विसद १ अनिरुद्ध १९६।१ ॥ १ ॥

किते विसद १ तेरासि १३ कहत, अधिपभाव अभिसेक ॥

भाऊ १९५।१ ठाँ अनिरुद्ध १९६।१ भो, अंक गनित घटि एक १।१

कहयो प्रथम तुम कृष्ण १९६।१ को, यातैं तिहिँ क्रम अंक ॥

अब भाऊ १९६।१ सुत अंक इहिँ, इहिँ क्रम गनित असंका १।१

पट्टदिवस मंगल प्रसरि, सब उपदाँ १ बलि २ साधि ॥

भट १ अमात्य २ परजन ३ भये, उर प्रसन्न तजिआँधि ॥ ४ ॥

पीतंबर १ कुल इष्ट प्रभु, जजि कुलदेवी २ जुत ॥

भाऊ १९५।१ विधि पालत भयो, अवनी दुरित अछुत ॥ ५ ॥

ईक १ ठाँ भावी १ भूत २ अब, बदाहिँ ससंतति व्याह १ ॥

वर्तमान बलि बरनिहँ, आदरि क्रम उच्छाह ॥ ६ ॥

( घनाक्षरी )

भूत १ भावी २ कीने छदविवाह अनिरुद्ध १९६।१ भूप,

चउ ४ द्वै २ सुता त्यों भावी ये लहे छदतोकै ॥

पुव्व व्याह जादवी करोली रत्नपाल पुत्री,

व्याहि स्यामकुमरि १९६।१ बनियक करे विसोक ॥

१ वैशाख शुक्लपक्ष में ॥ १ ॥ पीढ़ियों की २ गणना के अंकों में एक अंक घट कर ॥ २ ॥ ३ गोद आने के कारण पीढ़ियों की गणना का जो अंक कृष्णसिंह के नाम पर आया था वही अंक अनिरुद्धसिंह के नाम पर आया इस कारण एक अंक घट गया ॥ ३ ॥ ४ नजराना ५ न्यौछावर ६ प्रजा के लोक ७ मन की पीड़ा छोड़ कर ॥ ४ ॥ ८ पूजन करके ९ पाप से अछूती [विना स्पर्श की हुई] भूमि १० पहिले और पीछे के सब विवाह और संतान एक ही स्थान पर कहेंगे ११ फिर ॥ ६ ॥ १२ बालक १३ याचकों को शोक रहित किये

नाथाउति दूजीरलाडकुमारि१९६।१नमानां स्त्रीय,

भट जसवंतमुता अन्वय चुलुक्य \*ओक ॥

वापी जुगर्बाग एक१जाके बनवाये प्रभु,

अज्जहि प्रसिद्ध पूर लहत प्रसंसा लोक ॥ ७ ॥

देवी हर्षदा सौ दीप पच्छिम३।५प्रदेस पर,

बापी बनी एक१यह सो हैं बडे बिस्तार ॥

साखापुर देवपुरा ताके जो समीप बापी,

दूजीरसो रु ताहीके समीप बाग१।३छबिदार ॥

याही चालुकीके बडे अंगज भये ए उभैर,

सूर बुधसिंह१९७।१जोधसिंह१९७।२क्रमतै कुमार ॥

बापी नाथाउति२नै बनाई पहिली१जो बडी,

मुदा तैंह लागी मान द्वै अयुत द्वै हजार२२००० ॥ ८ ॥

व्याही तीजी३दक्खिनमै डोलाही बुलाइ भटि-

यानी चंदकुमारि१९६।३भवानीदासपुत्री भूप ॥

कन्या फतैसिंहकी नरुकी बरतकुमारि१९६।४कको-

रकी विवाही कछवाही चोथी४रुचिरूप ॥

प्राचीश्वाननामक खवासकी हवेलीपास,

जाकी बापिका१है लखयो पुण्य सत्र१जैसजूप ॥

जंदाकेर ताकिया समीप बाग१।२जाको ताल,

जायवंतसागरतैं उत्तर४।७छिति अनूप ॥ ९ ॥

पंचमी५भूलायपुर व्याही गजसिंहपुत्री,

राजाउति रानी रामकुमारी१९६।५नियतनाम ॥

ताकै द्वै२तैनूजा द्वै२तनूज चउ४तोका तहाँ,

\* सोलंखियों के घर में वावड़ी ॥ ७ ॥ १ शहर के बाहर का पुरा २ पुत्र ३ रुपये ४ प्रमाण ॥ ८ ॥ ५ रूप में क्रान्तिवाली ६ पूर्व दिशा में ७ वावड़ी ८ पवित्र यज्ञ ९ यज्ञ रूपी खंभ युक्त १० जैतसागर ॥ ९ ॥ ११ निश्चय १२ पुत्रियों १३ बालक

कुसलकुमारि१६७।१\*कल्यानादिककुमारि१६७।२ताम॥  
 ए बड़ी सुता द्वैरद्वैरभये स्याँ इनके अनुज,  
 बाला अभिधातँ अमरेश१९७३रु विजय१९७।४वाम ॥  
 दुर्जननादिसिंह सुता छठी दुबलानाँ लाड-  
 कुमरि१९६।६सनाम व्याहयो चालुकी छवी ललाम॥१०॥  
 भूत१पहिले१ द्वैरपिछले चउ४बिवाह भावी३,  
 भावी३सर्व संतति कही ए अनिरुद्ध१९६।१केर ॥  
 वर्तमान२जानाँ विधिसाँ इम तखत बैठि,  
 वर्ष तिथि१५ वै विच सद्धारयो राज्य ताही बेर ॥  
 साहपास भेजन जथोचित सचिव सोधि,  
 सबन निवेदी बेनीदत्त है बचन सेर ॥  
 याहि कुछ सासन दै सासन करहु एह,  
 आनाँ फरमान अव दै अरज वहे न देर ॥ ११ ॥  
 बेनीदत्त व्यासकोँ निवेदि औसी पंचननै,  
 सुलवपत्र सासन गहायो वारवासि१ ग्राम ॥  
 हांडा६१ जगभानु१द्विज नागरप्रताप२हेरि,  
 ताको संग दै ए द्वै २ पठायो वह दिल्ली ताम॥  
 रीति अनुसार अनिरुद्ध१९६।१वस बुंदी राखि,  
 दीनाँ फरमान साह व्यासहिँ लिखे लै दाम ॥  
 लोभी परगनाँ तोहू ए दुव २ उतारिलये,  
 नाम मुख्य तामैं खैरावाद१ रु बरोद२ नाम ॥ १२ ॥  
 मुख्य उपदा१वैलि२रहे खिले स्वयंमिलेन.

\*कल्याणकुमारी तिली हाँडा नाम से दुर्जनसिंह १सुन्दर ॥१०॥२पति  
 हुए ३ भाग होने वाले विवाह और आगे होनेवाली ४ मन्तान ५ अपर  
 अरज करी ७ बालन में सिंह. इसको कुछ उदक ग्राम देकर हुकम करे  
 ६ नाया पत्र देकर वारवासी नामक ग्राम उदक दिया १०तहाँ ॥११॥  
 १२ न्याँठावर १३ नाकी १४ अपने मिलने पर

सेस बिधि साहि आयो बेनीदत्त तांके साथ ॥  
 सेस अवनिसौं फरमान लै लिखितसिद्ध,  
 आये पंचप्रहदी हजूरके पसारे हाथ ॥  
 भैर्मशबसनादि रीति उचित तिन्हें दै भूप,  
 नाइ सिर ठाढे फरमान लयो बुंदीनाथ ॥  
 मरत महीप भाऊ १९५ १ देस इत दक्खिन २ ३ में,  
 अमल अरीनको लग्यो बढन लै लै आथ ॥ १३ ॥  
 अकबर ४१ ४ चोथो ४ अवरंग ४ ० ३ को तनय इतै,  
 जनकसौं जनक करी जो बिधिमें बिचारि ॥  
 कोपपाल हो खल कुपाचिता कितीक करि,  
 सो अब कढ्यो भाजि सखा लै मंत्र अनुसारि ॥  
 भागपुर १ बीजापुर २ पत्तन सितारा ३ भूप,  
 एते अपनावैं अवरंग ४ ० ३ ईला धक धारि ॥  
 जाइमिल्यो इन ३ में कह्यो सो ४ साहजादा टेक,  
 पापकी पकरि संगी भेदसौं कतिक टारि ॥ १४ ॥  
 मालवके सूबापैं बहादुरखाँ १ भोजि मीर,  
 आलम ४ १ २ २ अवंतीमें पठायो अवरंगाबाद ॥  
 कासिमको तनय अमीरखान ३ काबलके,  
 सूबापर भेज्यो साह प्रीत अधिके प्रसार्द ॥  
 प्रेरयो अस्तखान ४ दुर्गदास १ रघुनाथ २ पटु,  
 एह न ठिगायो दुर्गदास १ भट अंप्रमाद ॥  
 मिच्छन प्रसार्दो रघुनाथ २ जाइ मारयो वंदै,

१ साथि ( बिधि साधकर ) २ स्वर्ण वस्त्र आदि ३ खड़े होकर शिर झुकाकर  
 ४ धन ॥ १३ ॥ ५ पिता औरंगजेब ने उसके पिता शाहजहाँ को कैद किया  
 सो ६ पचावट (सहनता) नहीं करके ७ संलाह के ८ भूमि को ॥ १४ ॥  
 ९ प्रसन्नता से १० सावधान ११ स्तेच्छों की प्रसन्नता चाहने वाला १२ कहने हैं

साह पहिलैही इन्ह लच्छन विनु विखाद ॥ १५ ॥  
जब जसवंत जात अर्भक अजितसिंह,  
गोइंददास भाटी कापालिक जेस गहि ॥  
लै कढयो करंड धरि साहको कैंटक लंघि,  
वंसथिति हेतु स्वामिधर्महिं विसैस बहि ॥  
सिसुके सहाई दुर्गदास रघुनाथरद्वैर ही,  
काढे नीठिनीठि कढे रारिहु पुरोग रहि ॥  
काह बिप्रगेह राख्यो गोई सिसु केतै कहैं,  
केतै कहैं संभव बन्यो त्यों देसकालरसाहे ॥ १६ ॥  
पाछै रट्टऊर भाटीरपासन उभैरपकरि,  
लूटतभये जे लागि दिल्लीके द्रविन देस ॥  
विरले पुर नबाव दीपक जरनदये,  
अग्रहतै राखि भूमि जोधपुरकी असेस ॥  
गोपै अधिकारी कहतै कति बनिकरगहे,  
धूमि डारि धरनी धुजावत जन धनेसैं ॥  
साह तैसी तिनकी पुकारपै पुकार सुनि,  
दोउरनके चित्र मगवाइ देखे वपुर्वेसैं ॥ १७ ॥  
तोभरतै वर्तक पकात फेरि पावकतै,  
आसुकरा अंगैजतो ईख्यो अस्ववारएह ॥  
भाटी सुरतानसुतछीवै सह भोजनपै,

॥ १५ ॥ जसवन्तसिंह भे उत्पन्न (पुत्र) ? बालक रंगाविन्ददास ईका खवालय का  
बेस करके ४ करंड (टोकरे) में रखकर पचादशाहा सेना को लांछकर देश की  
स्थिति के कारण अगुह में अग्रणी रहकर छिपाकर ॥ १६ ॥ बाल पकड़कर १०  
धनवाले देश, नवायों के विरले पुरों में दीपक जलने दिया ? ? ज्ञाने (हानि) रहित  
११ रवाल ? १३ जला डाली ? १४ धनवात अनुप्यों को ? १५ नखद्वि ? १६ शरीर के बेस  
(पोशाक) ॥ १७ ॥ १७ भाले से फेरकर अग्नि पर ? १८ वादी [नारकरा] पकाना हुआ  
१९ आजकाल के पुत्र (दुर्गदास) को बांहे पर चढा हुआ देखा २० सुरतान-  
सिंह के पुत्र (रघुनाथसिंह) की तसवीर भोजन करते सदोन्मत्त रूप की देखा

जोपै भीम अनुजनिवारयो तउनै सुजान ॥ २३ ॥

संवत भुजंग गुन सत्रह १७३८ सिसिरदसमै;

साह इम रानकी लिखाइके सह प्रसाद ॥

कुंच अजमेरतै अतिवर तदनु कीना,

बेलापटु जैबोही बिचारि अवरंगाबाद ॥

आप दिस टोडाशराजमहल २ समीप आत,

बुंदीसहु जाइमिल्यो सम्मुह बिनुबिखाद ॥

गेहको प्रबंध करि जैसै अनिरुद्ध १९११ गयो,

सोपै सुनिये ब लौकथारस सरस स्वाद ॥ २४ ॥

बुंदीनृपको हो अवरंगाबाद सो बिभव,

उदित कथासौ कछु पहिले समय आनि ॥

जज्जाउरईस मानसिंह १९५१ तनुजात महा-

सिंह १९४१ को पिनाती रूपसिंह १९६१ मिल्यो प्रभु मानि ॥

संग गै पचास ५० है छसै ६०० ओ बीस २० वेगसर,

तीनसै सैंकट ३०० रथ १३ हैल २ तदर्ध १५० तानि ॥

सत्ताईस २७ तोप तथा तिन्ह उपहार सजी,

पंचसै ५०० किरींची लायो स्वामिधर्म पहिचानि ॥ २४ ॥

सवन सराह्यो रूपसिंह १९६१ कहि सांधुसांधु,

पछि इम अबो सुनि साहको समय पाइ ॥

सेवा १ कुलदेवीकी पुरोहित सुंक १ हिं सौपि,

नाथाउत चालुक किसोर २ हिं प्रभु रवनाइ ॥

१ छोटे आई भीमसिंह ने मना किया तो भी ॥ २३ ॥ २ प्रसन्नता के साथ ३ प्रस्थान ४ श्रीप्रजिस पीछे ५ समय चतुर ६ उत्तम ॥ २४ ॥ ८ ऐश्वर्य वह कथा ९ पहिले कह दी गई है १० पुत्र ११ पोता १२ दाधी १३ बोड़े १४ वेगवान् घोड़े; अथवा ज्वर १५ छकड़े १६ रथ और पोठिये छकड़ों से आधे फ़ैलाकर १७ सामग्री १८ मार के छकड़े (तोपों की सामग्री मरे हुए छकड़े) ॥ २५ ॥ १९ अष्ट अष्ट २० गान है

कर्मसिंह३वनिक नियोगी३ताकै पास करि,  
 उदैसिंह४कायथ मुनीम४करि सीम आइ ॥  
 गैनोलीपुरीको सेखाप बनिक बुलाइ गुली,  
 सेस ताकाँ देसको असेस कामपसमुझाइ ॥ २६ ॥  
 द्वारा६मिरंधाकाँ कोटपाल अधिकार६दैकै,  
 कल्पपाल घासी७नाम अदि१वन२पाल७करि ॥  
 सेस अधिकारी जे पुरातनही राखि सबै,  
 इम बुंदी ताम अधिकारी ए७नवीन धरि ॥  
 दै रानी पुरा१तिम पुरोहित भवानीदास१,  
 संग लै मिल्यो यौं राजमहल समीप सरि ॥  
 साह बिसवारम्यो कहि नाती तू सता१९४१को अब,  
 बीर चलि दक्षिण२३हमारेसंग जीति अरि ॥ २७ ॥  
 रीति साधि उ१पदा१ निछावरि२ बिरचि राजा,  
 पाइ प्रतिदेय१ तैसैं साहसो१ ई१भ१पुरो१र्ग ॥  
 सेना स्वीय सहित नरेश व्हैं यौं साहसंग,  
 पुर अवरंगाबाद पहुँचे जलूस जोग,  
 भावपुरहीमैं अनिरुद्धको१९६१निवास भयो,  
 छाड़ तास चहुँ४घाँ बैरूथिनी बिबिधछोर्ग ॥  
 मिच्छ१पैले मानैं बुरहानपुरको बचन,  
 लोभी तऊ बेरहि प्रमानैं मगहद्व२लोग ॥ २८ ॥  
 लाखैरी पुरीके अद्रि घाँटेमैं कढत दल,  
 बाँसी बंधदुर्ग१आइ लूटी पिछली बहीरैं ॥

१आज्ञा करनेवाला २गुमास्ता ३नाम है ४गुलमी (कुछ समूह की रक्षा करनेवाला अर्थात् हाकिम) ॥ २९ ॥ ५जाति विशेष; अथवा अधिकार विशेष ६कोटवाल ७कलाल कोटपहिले थे उनको ही रखकर चलकर ॥ २७ ॥ ८नजर १ १खिलत १ २हार्थी १ ३आदि १ ४सुरातिव; अथवा शोभा; अथवा तखत के योग्य १ ५सेना १ ६उत्साह ॥ २८ ॥ ७पर्वतों का कठिन मार्ग १ दराठोड़ दुर्गदासने १ ९भार वरदारी आदि सेना का पिक-

\*उपालंभ भेज्यो अस्तखानपैँ तमकि यातैँ,  
 पीछेँ खानदेस गो अवंतीके अरचि पीरैँ ॥  
 सूनु साह आलम४१२कौँ जातैँहिँ पकरि साह,  
 राख्यो अवरंगाबाद पासहिँ बिमति बीर ॥  
 आजम४१३तृतीय३सुत तातैँ भो प्रसन्न अति,  
 मूढ जान्यौँ दिल्लीदंग मैँही बन्यौँ हौँ व भीर ॥ २९ ॥  
 संभा नाम कैतो हो सिताराको अधीस१उत,  
 प्रतिनिधि२को हँ मरद्वनमैँ मुख्यपन ॥  
 अकबर४१४चोथो ४ पुत्र ताके पास हौँ सो अव,  
 साह आयो सुनत निकासिदीनौँ भीतिसन ॥  
 अस्त गो उदैपुर वहाँ रानहु न राख्यो ताहि,  
 धीज्यो जाहि दुर्ग१हिँ टिकायो तिहिँ बिबधन ॥  
 खानदेस अरजी पठाई यह अस्तखान,  
 तापैँ पुनि भेजी चमू सुनतहिँ सद्यतन ॥ ३० ॥  
 बाहिनी बहोरि अस्तखानके सहाय इम,  
 आई अजमेर मुनि संका दुर्गदास१आनि ॥  
 अकबर४०१४ताहूनैँ निकासिदीनौँ भीत वह,  
 काहूनैँ नराख्यो पुनि साहकी करत वानि ॥  
 उत्तरि अटक तब साहको तनय एह,  
 मगमैँ अमीरखानसौँ दुरि कुसल आनि ॥  
 सरन बिचारि देस फारस गो ताम तिह,  
 रान नगरीके पातसाह राख्यो हित तानि ॥ ३१ ॥  
 काबुलसौँ पच्छिम३५बिलायत इरान कहैँ,

ला भाग\*उलहना १ क्रोध करके. उज्जैन के २ पीर का ३ पूजन करके ३ जाते ही ४  
 निर्बुद्धि ॥ २९ ॥ ५ अस्तखां. दुर्गदास ने उस ६ धन के प्रतिबिम्ब को ठहराया  
 ७ तुरन्त ॥ ३० ॥ ८ सेना ९ आदर तथा भय १० छिपाकर ॥ ३१ ॥



सूबा मुख्य जामैं गिनैं बारह १२ \*द्विनि सार ॥

तिनमें नगर मुख्य कर्मासाह १ तवरज २ दिज-

फूल ३ सारी ४ कर्मा ५ मसहिद ६ जेबदार ॥

रसद ७ सखुरमादि १ अस्तरादि २ आवादि ८ ९,

रुसीराज १० रुतार ११ द्रंगं इतिमुख हैं सुंदार ॥

सबनमें नामी राजधानी के सहर इस्फ-

हान ११ १२ तिहरान १३ १४ उमें गिनिये जिहिं अगारैं ॥ ३२ ॥

इस्फहान १ पत्तन पुरानी १ राजधानी उहाँ,

राजधानी नैव्य २ तिहरान २ बिरची बहोरि ॥

जाको पार्तसाह अवलंब लखि साहजादा,

जो तस सरन गयो अकबर ४१ ४२ हाथ जोरि ॥

ताको उर लाइ बिसवामि वहाँ टिकायो तानैं,

रहतो इहाँतो गहिलेतो पिता रन रोरि ॥

आलमको ४१ ४२ रोकि अकबर ४१ ४२ को भजाइ ऐसे,

दक्खिन २ ३ रहो सो परपक्खिन दल्लन दोरि ॥ ३३ ॥

नृप अनिरुह १ ६ १ अरु मनवरखाँ रनबाव बीर,

देश आँजम ४१ ४२ पै राखि अवंगवादा ॥

सूबा खानदेसकी सम्हारि इनको हैं साह,

अजि आप सत्रुनपै पहुँच्यो विनुपैसाद ॥

अंगी अनुकूल भई साहकी निगति उहाँ,

गंगैर तिक ३ हिमें चम्पायो जानैं जयम्वादा ॥

बीजापुर १ तें तिम सिकंदर १ पकरि दान,

एव १ जय पायो नच्यो चउ ४ यो रुजस नाद ॥ ३४ ॥

दूजैरन भागनैर बलको \*बरन डारि,  
 पानिबल जीति तानाँ साह२हु लयो पकरि ॥  
 समर तृतीय३जीतिलीनों गहि संभा३साह,  
 अैसेँ दावि दक्खिन२।३लये ए बाँधि तीन३अरि ॥  
 नैन पुनि संभा३के निकासे पाँ किते कहत,  
 दोलतादि आबादक१धाम ए सबैहि धरि ॥  
 आन तिनकी पर मरवतखाँ राखि तहाँ,  
 जीते सेस जिमहि सिपाहनके अग्रसरि ॥ ३५ ॥  
 पंचम५तनूज खानबखस४१।५हुतो जो पास,  
 तानि अनुकंपा राज्य उभय२समृद्ध ताहि ॥  
 बीजापुर१भागनैर२दीने ए संबित१बल२,  
 दक्खिन२।३प्रभुत्व१दीनों साहपद२सीमासाहि ॥  
 प्रीतिपात्र हो यह५कुमार पैननारि पुत्र,  
 अधिक प्रसन्न यासों आप होइ मउ माहि ॥  
 पट्टे ताहि दैकरि अवाची१।३भुव पातसाह,  
 आयो पातसाह पीछो स्वीय जहाँथिति आहि ॥ ३६ ॥  
 विजय त्रयी३लै दैपीं आइ अवरंगाबाद,  
 अभय निरंकुस भो अब सबघाँतें साह ॥  
 तीजे३सुत आजम४१।३विचारि रह्यो साहतनै,  
 मैदी अब मुख्य लैहों अवसरें दिल्ली लाह ॥  
 सैक नव राम मुनि भू१७३इत अटक सूबा,  
 नाम जसवंत मरयो जोधपुर नरनाह ॥

\* सेना का कोट डाल कर १ भुजा के बल से २ स्थान ॥ ३५ ॥ २ कृपा फैलाकर  
 ३ वेङ्ग का पुत्र ४ दक्षिण भूमि का पाट देकर जहाँ अपनी प्रस्थिति है ॥ ३६ ॥  
 ७ तीन ८ घमंडी ९ अकुश रहित (स्वतन्त्र) १० समय पर ११ लाभ १२  
 विक्रम का सबत् १३ जोधपुर का राजा

अनिरुद्धसिंहको दक्षिणमें भेजना ] सप्तमराशि-प्रथममयुख (२८६७)

साहनेँ अजितसिंह तबहु बुलायो सोपै,  
भटन न भेज्यो राख्यो तिमहि \*निगूढ एह ॥ ३७ ॥  
आनंदादिरावश्नाम संभाके सुभट इत,  
बारहहजार१२००० बाहिनीसौ बीर बंध बल ॥  
सीमा जो सिताराकी कितीक अब दावी साह,  
नेंगके सहायतामैं हिंडन न देत हल ॥  
जिततित जात मारलूट२हिँ सचात भैत,  
सो सुनि पुकार साह दे कितोक संग दल ॥  
नृप अनिरुद्ध१९६।१।१अरु मनवरखाँशनबाव,  
पठये उमै२ए सुख्य तापै न बिलंबि पल ॥ ३८ ॥  
सोलह१६संमा वय नरैस अनिरुद्ध१९६।१।१सूर,  
सूचित नबाव३लैकैं मित्रपनमैं समान ॥  
गाढे हठ लूटि बुरहानपुर को गरदँ,  
जात मरहट्ट रोहयो सो पुनि न जायो जान ॥  
ग्रामनाम कुंभारी समीपलों पहुँचि गैल,  
खंडन खलन अनिरुद्ध१९६।१।१मनवरखाँन ॥  
खंडन खिल्हारी भृंग१भानु२हिँ रुकातभये,  
घाँघाँ घुमडाइ कुंसुमाकर सो घमसान ॥ ३९ ॥  
वनिक धनिक कैदी१लूटको संकल बित२,  
ए२तो पहुँचतही छुराये भीम अनुकारी ॥  
बाहिनी सिताराकी बिलौरिडारी व्हैव्है बीच,  
मोरिडारो मिलत अनी केँ घनी मनुहारि ॥

\* गुप्त मार्ग से ॥ ३७ ॥ † सेना से बंध बांध कर ? भाले की सहायता से ?  
हल नहीं चलने देता ? मस्त ? सेना ॥ ३८ ॥ ‡ वर्ग की अपस्था में ? तुलना  
कियेहुए नबाव को ? घेरा ? रोका ? काट कर. खिल्हाड़ी भँवरों ने सूर  
को रोका ? वनन्त अनु के समान लाल ॥ ३९ ॥ १।भीम के सदृश ? २।सेना  
? ३।मथडाली ? ४।कितनी ही.

पाइ समता न सेख १ मुगल २ पठान ३ नकी,  
 तैसी चंड चाली चहुवाननकी तरवारि ॥  
 मालिक समेत रूपे न रहे इकठे \*आजि,  
 मठे मन नठे मरहठे स्वीय मद मारि ॥ ४० ॥  
 भूप अनिरुद्ध १ ९६१ को प्रबीर १ असपिंड भ्राता,  
 ताम आयो काम नवरंग पोता ४८ सुरतान १ ॥  
 सरत्र दुव २ लाये बुंदी अधिपके संहनन,  
 सूरसंज्जा इत १ उतर २ के बहु समान ॥  
 नृप १ रु नवाब २ इस आये पाइ उभै दीनौ,  
 साह रीझ १ मैं सराह २ को विदित दान ॥  
 जासमैं विरोधी मरहठनैं जिततित,  
 भीत करिराख्यो देस दक्खिन २ ३ विकल भान ॥ ४१ ॥  
 दूजी २ वेर व्हुरि बहादुर खाँ १ संग दैकैं,  
 भेज्यो मरहठनपैं साह अनिरुद्ध १ ९६१ भूप ॥  
 सिवापुर १ कालोचा २ दि दंगन समीप सीम,  
 जुद्ध १ मख २ दूजो २ रच्यो तोमर १ विदित जूपर ॥  
 सत्रु १ हँवनीय २ आप १ दिच्छित २ कृपानं सुंवा,  
 सिंधू रागै १ मंत्र २ सहस्रगै १ वेदी १ २ अनुरूप ॥  
 जय १ फल २ ताको लै निवेद्यो साह आगै जाइ,  
 चाहि प्रीति तवहु सराहे जुँग २ ही चमूप ॥ ४२ ॥

\* युद्ध में माही मन ले भागे ॥ ४० ॥ १ मान पीछी से बाहिर का भाई १ तहाँ  
 १ शरीर २ शत्रु ३ चेत रहित ॥ ४१ ॥ ४ युद्ध रूपी यज्ञ ५ भाला है  
 सोही प्रसिद्ध यज्ञ धंश है ॥ गत्रु है सो ही ७ होम का पदार्थ है और स्वयं ८ दीक्षित  
 [ यज्ञ की दीक्षा लेनेवाला ] है ९ खड्ग है सो १० होम करने का पात्र है ११  
 सिन्धवी रागिनी [ यडाराग ] है सो ही वेदमंत्र है १२ युद्ध क्षेत्र है सो ही १३  
 वेदी [ होम करने का कुंड ] है १४ दोनों सेनापतियों

बालापुर तीजीरारि त्यों जुगलहयो बिजय,  
 यों अब प्रमान्यों आजि कोबिद है अनिरुद्ध ॥  
 अहितन ओघ अभिभूतहु रुके न इत,  
 द्यूतमें दबाये द्यून मीठो जानि जेम मुद्ध ॥  
 बीजापुर १ भागनैर २ कहै जे जवन बचे,  
 मेल मरहटनसों जोरि अब तेहु जुद्ध ॥  
 धामधाम लूटनलगे यों डारि धाँटिनको,  
 पारत पुकारपै पुकार बीरप्रन बुद्ध ॥ ४३ ॥  
 चौथी ४ बेर आजम ४१ ३ तृतीय ३ सुतको चढाइ,  
 सत्रुनपै भेज्यो दै नरेस अनिरुद्ध १ ६ १ संग ॥  
 आनंदादिराव १ मरहटनमें मुख्य उत,  
 जवन दुर्घाँके जुरे इक्क १ वहै बिबलजंग ॥  
 दिल्लीकी बरूथिनीको विक्रम असह देखि,  
 भाजत १ जुगैत २ जुरि १ भाजत २ लहत भंग ॥  
 आगैआगै धाटिनके उक्त अधिकारी अटे,  
 पीछैपीछै साहपुल बिचग्यो दमन बंग ॥ ४४ ॥  
 दारा ४० १ की सुता जो व्याही आजम ४१ ३ उचित देखि,  
 सोपै ही तदीय संग बेगम सह सनेह ॥  
 पाइ छिद्र कोऊ परी सत्रुनके सकट सो,  
 ताहि लै बली ते परदाई चले मुरि गेह ॥  
 सो परयो अलीअल वहै आजम ४१ ३ मंडई श्रुति,  
 आनिचित अनख अचानक उछरि एह ॥

की प्रशंसा की ॥ ४२ ॥ १ युद्ध में २ चतुर ३ शत्रुओं का समूह ४ व्याकुल होकर भी नहीं रुका ५ मूर्ख ६ धाड़ायातियों को ॥ ४३ ॥ ७ सेना का ८ बल ९ फिरे (चले) १० दंड देन के भेद (व्यंग्य) से ॥ ४४ ॥ ११ पड़दे में लेकर (छिपाकर) १२ बिच्छू का डंक होकर आजम रूपी १३ सिंह के कान में पड़ा १४ क्रोध

भेजतभो भुजन भरोसा भाखि भूपतिकों,  
 आनिपूगो यहहु मचावत सरन सेह ॥ ४५ ॥  
 अैसे अनिरुद्ध १९६१ पहुँचतही अरिन ओघ,  
 सम्मुह पलटि जुरे घोर भयो घमसान ॥  
 मिच्छ१तो टरे वहाँ बुरहानपुर कोल मानि,  
 काटे सरहट्टन२के चखाइ घाय चहुवान ॥  
 स्वीयजन कैदी१अवरोधकी विभूति२सह,  
 जीतिकें छुरायो उक्त वेगमको नरजानि ॥  
 फोरयो घाय तीन३नृपके वपु लगे फवत,  
 पान१सान२पैनेँ एक३वान रु दुव२कृपान ॥ ४६ ॥  
 तेरे मुंड१केते फेरे रुंड२केते अंधगति,  
 तोरे तुंड३केते काटे भुंड४केते जयकार ॥  
 आनंदादिराव१ संतू२आदि सरहट्ट उहाँ,  
 पंच५मुख्य पारे चीरिडार घने अनुचार ॥  
 लोभ दे पलाद१गन रनके कुंतूहालि२न,  
 सकल रिभाये ढाहि संचय प्रहरि सार ॥  
 भंजिकें सितागदल एक अनिरुद्ध भूप,  
 हरकों निवेदे वीर तहिन प्रैचुर द्वार ॥ ४७ ॥  
 बुंदीके भटनसाहिं मुख्य भूरे दुव२वार,  
 फतेसिंह१चालुक परचो प्रबल दल फारि ॥  
 गोरि देवसिंह२दूजी३नागद रिंकाड गिरयो,  
 अठ्ठताम१८ इतके रहे भट इतर गारि ॥

१वागों का मत २रुद्धी के राजा रनसिंह से युद्ध नहीं करने का बुरहान  
 में मल्लकों ने कोल दिया था उसको मानकर ॥ ४५ ॥ ३ जनान की सामग्री  
 सहित ४ पाकली ५ मान से तीरग किए हुए ६ नर ॥ ४६ ॥ ७ अन्य का  
 ८ सेवकों को ९ मांस भोजन करनेवाले आद्य आदिकों को १० युद्ध का समा  
 देनेवाले ११ मगनों के यष्टन द्वार जिव की भेट किये ॥ ४७ ॥ १२ गोर

आनंद १ रु संतूरनारु ३ नत्थेराव ४ ईस्वर ५ ए,  
सुरूप मरहठ मरे ओर घने अनुसारि ॥  
विजय १ समेत यौ नरेस लायो वेगम २ कौ,  
बाराह १ ज्यौ बसुधा २ दिती के सुत कौ बिदारि ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

आजम ४ १ ३ मिलत लगाइ उर, बहुत नृपहिँ बिखदाई ॥  
राखी इजत तैं मरद, भाखी यौ मम भाइ ॥ ४९ ॥  
बहुत बडाई वेगमहु, पहुँकौ करि पतिपास ॥  
अकखी जो जात न यहै, व्है कुल १ जस २ असु ३ न्हास ॥ ५० ॥  
आजम ४ १ ३ जन कहिँ वै अरज, नृप कहँ रीझ निमित्त ॥  
प्रथित दिवाई गत पुहवि १, बलि पीछी सह बित्त ॥ ५१ ॥  
महत देस वाराँ १ मऊ २, बलि लघु खैरावाद ३ १ ॥  
चाचुरनी ४ १ २ खेरी ५ १ ३ उ ४ हि, सहित वरोद ६ १ ४ प्रसाद ॥ ५२ ॥  
खट ६ हि देस पट १ भूखन २ रु, आयुध ३ गय ४ हय ५ आदि ॥  
देय बिभव भूपहिँ दयो, बीर सुजस संवाँदि ॥ ५३ ॥  
इम सोलह १ ६ सम वय अधिप, नियत उधारयो नाँम ॥  
भटियानी व्याहत भयो, तर्थाहि डोला ताँम ॥ ५४ ॥  
नाम चंद्रकुमरि १ ९ ६ ३ जु निपुन, जेसलमेरु प्रजात ॥  
इम रानी तीजी ३ यहै, व्याही नृप बिख्यात ॥ ५५ ॥  
पाये इम गत देस पुनि, सह जस १ विजय २ प्रसंग ॥  
गत सुनसर्व देवोहु गिनि, रहयो साह अवरंग ४ ० ३ ॥ ५६ ॥

इति श्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी

१ हिरण्याक्ष को मारकर ॥ ४८ ॥ २ स्तुति करके ॥ ४९ ॥ ३ राजा की ४  
माग ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५ यश कहकर ॥ ५३ ॥ ६ वही डोला मंगवाकर  
७ वहीं व्याहा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ८ भाऊसिंह से गयाहुआ मनसब ॥ ५६ ॥  
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणे के सप्तम राशि में बुन्दी के उपति

पत्यनिरुद्धसिंहचरित्रेऽनिरुद्धसिंहविवाहसंततिवर्णन १, बुन्दीपट्टले  
खनहेतुवेशीदत्तादिल्लीप्रेषण २, औरंगजेबपुलाकबरतत्प्रतीपीभवन ३  
अकबरमन्त्रज्येष्ठात्मजालमौरंगजेबप्रतीपभावौरंगजेबससैन्यदक्षि-  
णादिगगन ४, राठोड़दुर्गदासयवनेन्द्रसार्थलुगहन ५, कीलिताल-  
मौरंगजेबकियत्कालदक्षिणाविवसनाकबरफारसदेशगमन ६, बुर-  
हानपुरान्तिककृतमहाराष्ट्रयुद्धानिरुद्धसिंहाजमरमणीमोचन ७, अ-  
निरुद्धवारां १ मऊ २ प्रान्तफर्यासादनं नाम दशमो मयूखः ॥१०॥

आदितः सप्तत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ ॥ २३७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

फैल्यो जस नृपको फबत, हुत इम दक्खिन २।३ देस ॥

हित सह साह प्रसन्न हुव, अप्पि विभूति असेस ॥ १ ॥

जीत्यो जुद्ध चउत्थ ४जब, पाये दुव २प्रतिकूल ॥

इक भ्राता असपिंड इह, सामंत १८७।१२ज कुलमूल ॥२॥

कूर सुपै अभिधान करि, दुर्जनसिंह १हिं दुष्ट ॥

भुजनेरी सासक भयो, स्वामिद्रोह संतुष्ट ॥ ३ ॥

विश्वनाथ १कायथ बलि, फतैचंदसुत फुटि ॥

अनिरुद्धसिंह के चरित्र में अनिरुद्धसिंह के विवाह और सन्तानों का वर्णन १  
बुन्दी का पट्टा लिखवाने को वेशीदत्त को दिल्ली भेजना २ शाहजादा अकबर  
का औरंगजेब से वाणी होना ३ अकबर की सलाह से बड़े शाहजादे आलम  
का औरंगजेब से विरुद्ध होना और औरंगजेब का सेना सहित दक्षिण में  
जाना ४ राठोड़ दुर्गदास का बादशाह की वहीर को लूटना ५ शाहजादे आल-  
म को कैद करके बादशाह औरंगजेब का दक्षिण में रहना और शाहजादे अ-  
कबर का भागकर फारस में जाना ६ बुरहानपुर के समीप अनिरुद्धसिंह  
मरहटों से युद्ध करके आजम की हुरम को मरहटों से छुड़ाना ७ अनिरुद्धसिंह  
को वारां, मऊ का परगना पीछा मिलने का दशवां १० मयूख हुआ और  
आदि से दो सौ सैंतीस २३७ मयूख हुए ॥

१श्रीधर ॥ १॥ २मूल ३ दुर्जनसिंह ॥ ३ ॥



संदरीस पलटयो सुपै, बखसी धर्मबिछुट्टि ॥ ४ ॥  
 मरहठन सन ये मिले, दुवर्हि ठानि प्रभुद्रोह ॥  
 उत१क पाये पत्र इतर, पापिन पाप प्ररोह ॥ ५ ॥  
 इत१के पत्रहु जात उत२, सुनै पिहितलिपि सज्ज ॥  
 जेम तरै उत१के जवन१, उनतै इत२के अज्ज ॥ ६ ॥  
 इत्यादिक सब मर्म इन, खल दोउरन किय ख्यात ॥  
 प्रभुद्रोही जानै प्रभुहु, पलचरन पँह पात ॥ ७ ॥  
 चेति काँकगति अति चमक, प्रथम१सुद्धि यह पाइ ॥  
 भीत जुगर्हि ढिगैत भजे, लघुजन कुलहिँ लजाइ ॥ ८ ॥  
 दुवर्भुजनैरी१संदरी२, तव इन्हस्थान उतारि ॥  
 बुंदी कहि पठई बहुरि, विमतिन देहु बिडारि ॥ ९ ॥  
 दुवर्न दये गेहन दुर्गन, जामिक इतके जाइ ॥  
 इम अधमन जिस आदस्यो, अर्घ पर अघ अधिकाइ ॥ १० ॥

( घनाक्षरी )

संवत गगन वेद सत्रही १७४० लगत समा,  
 दुर्जन१रु विस्वनाथ२छन्न रहि बुंदी देस ॥  
 विष्णुसिंह१९५१सूनु राजसिंह१९४१४नाती बलभद्र१९६१  
 बुंदी हो सु फोरयो नृप ताको लोभ दै बिसेस ॥  
 सो अघ बिदितहोत गो भजि इहाँ तँ सोहु,  
 लीनों जाइ सरन उदैपुर लवकुलैस ॥  
 जानै स्वीय तनया विचित्रकुमरी१९७१सो जहाँ,  
 व्याही वरि बिंद जयसिंह राना बसुधेस ॥ ११ ॥  
 कन्या इक१याकँ भई पीछै सोहि कालकरि,

॥ ४ ॥ ५ ॥ १ बुंदी के लेख २ भेद ३ हलकारों से ४ पाते थे ॥ ७ ॥ ५ काकपत्नी  
 सदैव सचेत रहता है इसप्रकार ॥ ८ ॥ ९ घरों में नहीं घुसने दिये ७ पहरा-  
 यत ८ पाप पर पाप ॥ १० ॥ ९ लव के वंश के पति (महाराणा) का १० दुल्लह ॥ ११ ॥

व्याहयो भीम१९८।१कोटा कुमार नृप बुधवेर १९७।१वेर ॥

असैं बलभद्र१९६।१बर्तमानमें उदैपुर गो,  
सो इत दुजनसिंह१९६।१समुक्ति सपिंड सेर ॥

विस्वनाथ१दुर्जन२सौ असैं कहि भेजे बेन,  
बैरीसाल१९४।३वंसी बीर दुर्जन१९६।१न करि देर ॥

बुंदी लईचाहैं तासौ मिलिकैं करो विहित,  
कैसी प्रभुता वहै तह१के उद्यममें हमेकर ॥ १२ ॥

बुद्धि मेरी बदली तुमारे वहिकाइवैंत,  
पीछैं राजसिंह१९४।४कुल लगत कलंक पाइ ॥

हेरि हित पीछैं सकुटुंब निकस्यो मैं हारि,  
लाभ पुर पढ़नके न्हानको बहानौ लाइ ॥

उत तुम संग टिकिवो न लखि पायो इत,  
असन१बसन२को निवाह उदैपुर आइ ॥

ईस बलवैनिको सहाइ तुमरैहि अब,  
भूपति भंजहु बुंदी बुंदीपतिको भ्रमाइ ॥ १३ ॥

दुर्जन१९६।१के आगैं बलभद्र१९६।१टारि असैं दीन,  
विस्वनाथ१दुर्जन२सौ निरुह कहाई बात ॥

हुरबलौ ए तो दुष्ट चाहत हे चाम१हाड,  
बलवनि ईससौ मिल मन हुत बढात ॥

द्विगुन पटाके लोभ अधम विस्वासि द्वैरही,  
दुर्जन वहै दुर्जन१९६।१घुमाई बुंदीपर घात ॥

अस्ववार१छसत६००पदाति१छहजार६०००आनि,  
पटके पुरीको बोढि हेतिनके वज्रपात ॥ १४ ॥

संवत गगन वेद सत्रह१७४०कथित समै,  
राध१भास असित१चउत्थि दिन मंडी रारि ॥

१ बुवासिंह के समय में रसिंह १उचित ॥ १२ ॥ ४ भोजन ५ ग्राम का नाम है ॥ १३ ॥ ६ इच्छा रहित ७ गीदड़ के समान ८ शीघ्र ९ दुर्जनसिंह ने शत्रु होकर १० सवार ११ घेर कर १२ शत्रुओं के ॥ १४ ॥ १३ वैशाख १४ बुंदी

नीठिनीठि द्वैरदिन किसोरसिंह नाथाउत,  
 बुंदी जुद्ध ठहरि कह्यो भट जस विगार॥  
 दारित कपाट माँहि पैठे भट दुर्जनके,  
 धाम धाम लुट्यो पुर जामैशतम दूठ धारि॥  
 बुंदीमें अमल ठानि छद्दीक दिवस वैठा,  
 पट आइ दुर्जन१९६१अचानक दिशंध पारि ॥१५॥  
 दुर्जन१रु विस्वनाथ२आदिक गृहायदाता,  
 जानै जई द्विशुन पटा दै मानै मुख्यकरि ॥  
 मुख्य भुजनैरी१ तैं हु नंदनारनृपति मान्यो,  
 यहहि जनाइ हेतु पीछैं दुंदुकारि अरि ॥  
 वर्तमानमें यौ स्वामिद्रोही सो तखतवेठि,  
 धरतीअधीस है दिवान बज्यो होस धरि ॥  
 चिन्ह सिर आतपत्र१चामर२चलाये पहिले,  
 न जे पलाये ते मिलाये कौरा दर्प परि ॥ १६ ॥  
 ऊँरुज करमसिंह१कायथ उदैसिंह२,  
 विप्रविस्वनाथ१३हरिवल्लभ२४उभयूरव्यास ॥  
 कौरामें पठाये अधिकारी ए चउ४हि कैद,  
 रानी जन भेजिराखे निखिल अधोनिवास ॥  
 द्विज व्हाँ पुरोध्या सुकदेव कह्यो दुर्जन१९६१सों,  
 होत अवरोध काळें कुल१जस२धर्म३ह्रास ॥  
 अधम सैदर्प उलटी रिस पकगि सापें,

१ किंवाड़ तोड़कर २ एक प्रहर तक; अथवा जहाँ तहाँ ३ तहाँ ॥ १५ ॥ ४  
 सहाय देनेवाले ५ जय करने वाले ६ ग्राम का नाम है ७ विकार के साथ  
 निकाल कर ८ शृपति ९ बुंदी के राजराजा का उपपद दीवान है १० छत्र  
 ११ भागे जिनको १२ कैद किये ॥ १३ ॥ १४ वैश्य १५ कैद (जेलगाने) में  
 १६सप्तको गीचे के सहलों में रहने १७ पुरोहित १८ दानि १९धर्मद

पट्टनि पठायो अवरोधहु हठ प्रकास ॥ १७ ॥

भ्राता पहुँचाइकेँ आपुनै अनुज भेजे,  
नेता करि द्वैरही फतेसिंह १९६।२ जैतसिंह १९६।३ नाम ॥

आधे पंथ रानिन उमैरए पहुँचाइ आये,  
ठाकरिया ग्रामलौं गये लखि निकट ठाम ॥

जन अवरोधवारे पट्टनि बसे यौं जाइ,  
जानी यह सुद्धि अहिरुद्ध १९६।१ नृप वर्ती जाम ॥

आजम ४१।३ के द्वारा भेजी अरज हजूरएइ,  
दासपै इहाँ बै बिनु धाम न खरच दाम ॥ १८ ॥

अधिक प्रसन्न नृप सौं हो साइ यातँ एह,  
सुनत रिसायो यौं दमंग ज्यौं मिलत सोर ॥

आजम ४१।३ की अंगनैहु बिन्नति पठाई असै,  
मानहु स्वसुर राखी इज्जत नृपहि मोर ॥

इच्छा प्रियपुत्र १ की वधू २ को लखी त्योंहि आप,  
जोध अनिरुद्ध १९६।१ संग बाहिनी है अतिजोर ॥

बुंदी लैन भेज्यो कह्यो चलत बहोरि बैल,  
अलप लखोतो लिखिभेजो भेजिहौं मैं और ॥ १९ ॥

भीम १ नाम रानाँ जयसिंहको अनुज भ्रात,  
रानाँ राजसिंहसुत जो बच्यो तटस्थ रहि ॥

पीछै जाहि उचित पटामैं सह भूपपद,  
बनहड़ा १ द्रंग मिल्यो गौरव विसेस बलि ॥

हित १ जनाने लोकों को ॥ १७ ॥ २ हाकिम ३ जनाने के लोक ४ खबर ५  
राजा अनिरुद्धसिंह था वहाँ कही ६ अथ ॥ १८ ॥ ७ अग्नि ८ दुरम ने ९  
पुत्र की स्त्री की १० सेना ११ सेना ॥ १९ ॥ १२ राना राजसिंह को मारने का खे-  
द प्रसिद्ध होजाने पर जो उपद्रव हुआ था उस उपद्रव से किनारे रहकर १३  
राजा पन के साथ \*बन्हड़ापुर भिला.

\* महाराणा जयसिंह श्रीर महाराज भीमसिंह का एक ही दिन का जन्म है इसके लिये ऐसा प्रसिद्ध

पीछें सुता याहीकी बिबाहयो जोधसिंह १९७१ अग्रज १,  
के संग अनुज समै पै विधिलेख लहि ॥

अग्रजसों तोरि साहआश्रित हुतो वहाँ यह,  
सो १हु दयो संग पहिलैतैं प्रीति चित्त चहि ॥ २० ॥

दीनों संग भूमिपति अबिदित नाम दूजो,  
अन्ववाँय गोड़ १ जाको चामरिक १ उपटंक ॥

जवन सुगलखान तीजो ३ संग भेज्यो जाहि,  
सूबा अजमेर दीनों उद्यमी गिनि असंक ॥

अस्तखान अलस न राख्यो अधिकारी उहाँ,  
एक १ दुर्गदासहि रुक्यो न जानि हठ अंक ॥

सुगलसों सुगल कही यों इन्ह संग मिलि,  
बुंदी लै प्रथम १ पीछें २ सरलीकरहु बंक ॥ २१ ॥

बोधि ऐसेँ भीम १ चामरिक २ ओ सुगल ३ बुंदी,

॥ २० ॥ १ जिसका नाम मालूम नहीं २ वंश ३ पदवी ४ आलस्य नहीं रक्वा  
५ युद्ध में हठ करनेवाला; अथवा हठ का चिन्ह रखनेवाला ६ देहां को सीधे  
करो ॥ २१ ॥ ७ समझाकर

हे कि दोनों की ब्याई लेकर दो जने महाराणा राजसिंह के पास गये तब महाराणा सोते थे तहाँ जयसिंह  
की ब्याई लानेवाला पैरों की तरफ और भीमसिंह की ब्याई लानेवाला सिर की तरफ बैठ गया, फिर  
महाराणा जगे तब पगथि की तरफ दृष्टि पड़ते ही जयसिंह की ब्याई देनेवाले ने कुमार के जन्म की सूच-  
ना की तब मिराने की तरफ से भीमसिंह की ब्याई देनेवाले ने अरज की कि मैं जिनकी ब्याई लाया हूँ  
उसका जन्म पहले हुआ है इस पर महाराणा राजसिंह ने कहा कि इस समय हमारे पाटवी पुत्र सुरताण-  
सिंह और छोटा सरदारसिंह दोनों मौजूद हैं फिर इन में छोटे बेटे का झगड़ा निरर्थक है इसलिए हमको  
पहिले खबर हुई वही बड़ा है इस पर उस समय तो कुछ विचार नहीं हुआ परन्तु सुरताणसिंह और सरदा-  
रसिंह तो राणा राजसिंह की विद्यमानता में न मरगये और सम्यक् १७३७ में महाराणा राजसिंह का दे-  
गान हुआ तब जयसिंह के पाट बैठने पर छोटे बेटे का विचार बढ़कर भीमसिंह ने उदयपुर को छोड़ दि-  
या और अजमेर में बादशाह औरंगजेब के पास जाकर राजपुत्र की पदवी सहित बनेड़ा पाया तो उस न-  
य बादशाही अधिकार में होगया था उदयपुर से इनके साथ इस टीकाकार (बलराम किसनसिंह) के पर-  
पुरा उदयमान जागे जिनको भीमसिंह ने बनेड़े के नेग और गीहड़्या नामक ग्राम दिया सो धनी मौजूद  
हैं सो इन भीमसिंह को बुंदी की सहाय पर भेजना लिखा सो तो उचित ही है परन्तु बनेड़े का पत्र उस समय  
य लिखना लिखा तो असत्य है; क्योंकि बनेड़ा पहिले ही मित्र नुका था.

सीसोदर गोर मिच्छर भेजे नृपके सहाय ॥  
 आजम४१३की बेगमहु पतिसौं निवेदि इहाँ,  
 पठई कितीक पत्ति सेनाहू प्रबल प्राय ॥  
 मऊ१बारा१२आदिकमैं अमल जमाइ मगग,  
 कोटापुर आइ तनैं फोजके पटनिकाय ॥  
 सूबापति संगिन मयूर तँहँ एक१मारंग्यो,  
 बढिगो कलह तापैं बिखकी लगत लाय ॥ २२ ॥  
 जावत भो दक्खिन२१३नरस साहसंग जव,  
 पट्टनिके डेरन भो पहिलैं यह उदंत ॥  
 न्हदयनरायन१९२१पिनाती छत्रसिंह१६हाडा,  
 संग अवनिसकै हुतो सो भट बंधु हंत ॥  
 नामी गज ताकै एक हो गजकुमर१नाम,  
 केते कहैं पहिलैं दयो सो ताहि छितिकंत ॥  
 तासौं नृप मंग्यो सो दयो न गजराज तनैं,  
 जारहयो कोटा तजि बुंदी वास बरजंत ॥ २३ ॥  
 कोटाके मुकामपैं मारत मयूर क्रुद्ध,  
 छत्रसिंह१९भटन चलाई तेग धारि छोहँ ॥  
 मारिक मयूरको लयो वह जवन मारि,  
 दल निज भेज्यो तापैं सूबापति आनि द्रोह ॥  
 छत्रसिंह१९ । सिबिर<sup>२</sup> लयो तिन भटन छाड़,  
 तोपन दगाइबो तदयोही महारिसमोह ॥  
 भूप अनिरुद्ध१९६।१यह जानत सबेग भजि,  
 ले भैर स्व सिर रोच्यो पहिलैं जवन रोहँ ॥ २४ ॥

१ अरज करके २ बहुत प्रबल ३ डेरे ४ जहर की ॥२२॥ ५ वृत्तांत ६ पोता ७  
 हाथ (खेद है) ८ बुन्दी के राजा ने ९ बुन्दी का निवास छोड़कर ॥२३॥ १० क्रोध  
 ११ मयूरों को मारनेवाले यवन को १२ डेरे का १३ भार १४ शोभायमान  
 हुआ १५ यवनों को रोककर ॥ २४ ॥

मिच्छनकों सौंह दै टिकाइ ततकाल सुरि,  
 आइ सूबापतिपैं सबेग भूप अनिरुद्ध १९६।१ ॥  
 सूची ऐह राखि जवनेस भोज १६१।२सुर्जन १९०।१सौं,  
 सोहु तुमसौं न छानी समुझहु भाव सुद्ध ॥  
 हनिबो हमारो तुम्हैं जो रुचत स्वीय हित,  
 अर्थ लागिजैंहैं तोतो लुत्थिनपैं लुत्थि उद्ध ॥  
 नाँतो सौंपिदैहैं असिबाहकं तुमहि न्याय,  
 जवनन रोकिदेहु जवन न होहु जुद्ध ॥ २५ ॥  
 मानि सु मुगलखान लैबो गहि मारकंको,  
 भूप संग दूत भेजि बैलाहि लयो बुलाइ ॥  
 छलसिंह १९ । डेरन गो बैठो गजपैं छितिप,  
 उतरि उहाँ रु मनै भ्राताको लयो मनाइ ॥  
 लग्गंत विरुद्ध पास आपुनैं चढाइ लायो,  
 ठाम निज पिठिपैं खवार्सीमैं सुभट ठाइ ॥  
 मोदित मुगलखानसौं यह मिलायो सूर,  
 मारकं दयो सो पहिलैंही गूढ निकसाइ ॥ २६ ॥  
 माँग्यो मोरमारकको मारक मुगलखान,  
 पहुँतहैं भाख्यो भजिगो सो क्योंहुँ लहि प्रान ॥  
 हाडोतीधरामैं अपराधी पुनि आइहैं तो,  
 समुचित पाइहैं बचाइहैं न अवसान ॥  
 असैं बढयो विग्रह मिटाइकैं निज अनीक,  
 कोटातैं चलाइ घेरी बुंदी सह तुरकानैं ॥

१सौगन देकर २यह बात ३यहां ४ऊंची ५तरवार चलानेवाले को ६जाग्रत बुद्ध नहीं है ॥ २५ ॥ ७ मारनेवाले को ८ सेना ९ स्तुति १० मारनेवाले को पहिले ही अग्नि निकाल दिया ॥ २६ ॥ ११ मयूर को मारनेवाले यवन को मारनेवाला १२ राजा ने कहा १३ किसी प्रकार; अथवा कहीं भान गया १४ उचिन दंड पावेगा १५ नाश; अथवा अंत में बंद हुए १६ विग्रह को मिटाकर १७ अपनी सेना में १८ यवनों सहित

समय हुतो पै छत्रसिंह १९ । सुत आयो संग,  
आहव रचायो अनिरुद्ध १९६। इतैं अतिमानैं ॥ २७ ॥

बुंदीतैं कछुककाम बखसी सु बिस्वनाथ,  
१पट्टनि गयोहो गूढ रानी जन जानि पास ॥

पहुँचत सुद्धि ताकी नृपपै मगहि मध्य,  
ग्राहक पठाइ गहि संग लयो अबिसास ॥

आवतहि बुंदी गरदाई पटक्यो असह,  
सहरके सूरनपै तोपनको अति त्रास ॥

तोप इक १तैसैं प्राच्य १पर्वत चढाइ तासों,  
जोरही दुर्ग अट्टे डारघो तोरिकैं चरख जास ॥ २८ ॥

दक्खिन २। ३दिसासों इत गोपुर अररं दारि,  
अर्द्ध १दँल माँहि आयो बाहुन बढात दल ॥

उत्तर ४। ७दिसासों डोभरेकैं राह होइ इत,  
दुर्गके अररं तोरि पैठो माँहि अर्द्ध १दँल ॥

दुर्जन १९६। १सनाँभि १असनाँभि २कहि भीतद्वै २ही,  
पान लै पँलाये दुष्ट थान ठहरे न पल ॥

भाद्रपद ६असितैं २चतुर्थी पै अमल भयो,  
बुंदी अनिरुद्ध १९६। १को यों जयजस लै विमल ॥ २९ ॥

तारागढ कैरा खल बिस्वनाथ १ राखि तिम,  
वाजे मंडि मंगल विजैके बीर बजवाइ ॥

रीति कुलधर्मकी चलाइ रु जमायो राज्य,  
लीनों अवरोध उँकतपुर १तैं पुर १बुलाइ ॥

१गुद्ध १बडा ॥ २९ ॥ अन्तर ४पकड़नेवालों को भोजकर ९घेर कर ६पूर्व दिशा के ७  
बुरज = तोप का शकट ॥ २८ ॥ ६सहरके द्वार के १०कपाट ११ तोड़कर १२आधी  
सेना १३आधी का नाम है १४गढ के किवाड़ तोड़कर १५आधी सेना १६सपिंडी  
भाई १७ सपिंडी से बाहर के भाई १८ भागों १९ जग भर भी नहीं ठहरे २०  
कृष्णपक्ष २१निर्मल ॥ २६ ॥ २२कैद २३जनाना २४कहेछुप (पादण) पुर से २५बुंदी में



सूबापतिः आदि जे सहायक त्रयः हि संगी,  
गेह महमानि राखि दीनी सीख हित गाइ॥

जातहि मुगलखान सूचा अजमेर जंगी,  
रठ्ठर रोके जितहीतित रनरचाइ ॥ ३० ॥

सामंतः १८७१ के सुनुनमैं जेठो बलकर्णः १८८१ जान्यौं,  
मुख्यः कुल ताको तामैं दुर्जनः १९ । कह्यो जो मूढ ॥

बैरीसालः १९४३ नाँती दुष्ट दुर्जनः १९६१ को संगी बन्यौं,  
गो भजि बहोरि तास संगहि निकसि गूढ ॥

तीजेश्रुत तेजः १८८३ बंसी मानैं तिहिँ ठामः मुख्य,  
राख्यो भुजनैरी छीनि नंदनः २ अन्नवरूढ ॥

संदन सम्हारि अनिरुद्धः १९६१ नृप याही समैं,  
आनी तीनः रानी पुनि ओसर बिरचि ऊढ ॥ ३१ ॥

भाख्यो जो सपिंड दुष्ट दुर्जनः १९६१ इहाँ तैं भज्यो,  
गूढ रहि लूटैं तिहिँके इत भउके ग्राम ॥

आनिमिल्यो यासौं तहाँ धाँटिधर भिल्ल भीम,  
जाडलई चाचुरनीः दोउः न लरि छुड़जामैं ॥

साकैं लगतेही भूमि बेद सुनि इंदुः १७४१ समैं,  
स्वेतः १ मधुः १ दसमीः १० चढ्यो नृप जय सकाँस ॥

साधानीः २२ २६ जुझारः १९४१ सुत नाम जयसिंहः १९५१ मगग  
ईस कोटरेको ईख्यो बलसैं बहत बाँस ॥ ३२ ॥

पत्तन बरोदसौं कितोक धन जोर पाइ,

भोमियाँ बिभाग यह लेतहो प्रमार्द भाइ ॥

१ मिहसानी ॥ ३० ॥ २ पुत्रों में १ पोता ४ प्राचीन समय से चढाहुआ अर्थात् प्राचीन अधिकार से नानणा नामक ग्राम छीन लिया ५ घर ६ विवाह ॥ ३१ ॥ ७ छाने ८ धाढ़ायती (डाकू) ९ नाम है १० पहर ११ सम्बन्ध १२ शुद्धपक्ष १३ चैत्रमास १४ जय की कामना से १५ साधोसिंहोत हाडा १६ देखा १७ विरुद्ध ॥ ३२ ॥ १८ भोम का बंट १९ मत्तता की रीति से

तासों करि जुद्ध कोटराहु लै निकास्यो ताहि,  
 सोपै भाजि चाचुरनी पहुँच्यो तिस सिटाइ ॥  
 एक१ही दिवसमें महीप अनिरुद्ध१९६।१वहै,  
 जीतिलीनी चाचुरनी सत्वर असह जाइ ॥  
 भिल्ल१रु सेनाभि२सह दुर्जन१९६।१तहाँ सों भजि,  
 खीचि१३नमें जाइ दुरघो स्वीय बलकाँ खपाइ ॥ ३३ ॥  
 चाचुरनी१लौता भट राखि भूप वहाँतैं चढि,  
 नगरी मऊ२में किते दिवस करघो निवास ॥  
 साहडिग जाइ इतैं मालवको सूबादार,  
 आयो पीछो मालव बहादुर लै अवकाँस ॥  
 अधिपके मित्र खानमुगल१बहादुर२ए,  
 तासों यह मिलन अवन्ती गो सुहृद तास ॥  
 छत्रार्धम दुर्जन१९६।१न आइ इत छानैं पुरी,  
 लाखैरी प्रँविसि निसि कीनों कोटवाल नास ॥ ३४ ॥  
 सो सुनत सूचि नृप सुहृद बहादुरसों,  
 दंड हित भेज्यो दंडैं खीचि१३नपैं जोर दैन ॥  
 कहि यों पठाइ तुम काढि हाडा६१दुर्जन१६।१काँ,  
 बहुरि न आनदेहु कानदेहु इक१वैन ॥  
 दंड भरि लाहकाँ बिडारयो तिन दुर्जन१९६।१काँ,  
 आकुल अँटयो सो अँनअँनैं में रहित अँनैं ॥  
 तीससत३००सँदिन सों कुसल पठायो तापैं,

? शीघ्र २ सपिंडी आई ३ अपने बल का नाश करके ॥३३॥ ४रत्नक(चाचुरनी  
 की रक्षा के लिये) ५ फुरसत दरजा अनिरुद्धसिंह के मित्र ७ उज्जैन ८उसका  
 मित्र ९ अधम चर्चा १०प्रवेश करके ॥ ३४ ॥ ११ मित्र १२ सेना १३सुनो १४  
 निकाला १५ व्याकुल होकर फिरा १६ घर घर में १७विना घर १८सवारों से  
 १९ कुयलसिंह को

निज जो सिलहदार नृपसो अरुननैन ॥ ३५ ॥

दुर्धर कुसलसिंह नृपके सिलहदार,  
दुर्जन १९६१ को एक शठास स्वस्थ टिकिवे दयो न ॥

छाया शजिम बिग्रह की संग न कबहु छोरि,  
भाजतहि राख्यो दुर्गदास सो जुंग भयो न ॥

जैतथ वह १ प्रात तथ दुपहर २ एह २ जात,  
लहि इम त्रास स्वास सीतल कहूँ लयो न ॥

सहसा तुपक छूटि धात्रीसुत स्वीयहीकी,  
ठाँ इक मरयो सो दुष्ट चितितं तस ठयो न ॥ ३६ ॥

मित्र शमिल २ द्वै २ इत अवंती अति मोद मिलि,  
गज शहय २ लौ दै भूप बुंदी दिस कीनों गोने ॥

द्वै २ ही उक्त दुर्जन १९६१ के अनुज इहाँ ते आनि,  
भूप १ रु बहादुर २ के पाय पर गत भोने ॥

तिनकी दया लौ कह्यो सूबापति १ भूपति २ सों,  
लंघि कुलधर्म जिहि रावरो लजायो लोन ॥

सहज मरयो सो खल दुर्जन १९६१ हरामखोर,  
हीन तस बंधु दीन आये ए अनुग होन ॥ ३७ ॥

अन्न १ वस्त्र २ इनको हमारे ही कथन हरि,  
देहु आप अवतो गयो करि दुसह दाह ॥

मित्रको कथन भानि संग तिन्ह आनि मित्र,  
नगर गुगोर आइ ऐसे जई नरनाह ॥

चौराँ पूजि कृष्ण १९६१ १ भगवंत १९५१ २ के तहाँ तैं चढि,

१ आहद का नाम है २ लालनेत्र करके ॥ ३५ ॥ ३ काठनाई से घपणा (डराने) से आवे ऐसा शजिसप्रकार शरीर का साथ छाया नहीं छोड़ती है तिसप्रकार ४ दुर्गदास से नहीं मिल सका ५ जहाँ ७ ठंढा, श्वास ८ अचानक चन्दक कूटकर ९ अपने ही धाय भाई की १० उसका विचारा हुआ नहीं हुआ ॥ ३६ ॥ ११ गमन १२ बिना घर १३ सेवक ॥ ३७ ॥ १४ दृग् स्थान का मंदिर

लाखैरी पुरी लाखि प्रजा कौं दे दम् लाह ॥  
 कोटवाल सुत कौं पिता ज्यों अधिकारी करि,  
 कंटक प्रजा के कोटि बुंदा बिस्मो रुचिगह ॥ ३८ ॥  
 दुर्जन १९६१ के भ्राता फतै सिंह १९६११ कौं उचित दीनौ,  
 गोत्र रह टोडा १ जो समीधी को लगत ग्राम ॥  
 खेरा १ गजधर को दुलारा १ लाखैरी को खेट,  
 दीनै दुवर देखि जैत सिंह १९६१३२ कौं उचित जाम ॥  
 साधि स्वामी सेवा बीर पीछै यह जैत सिंह १९६१३,  
 किंति करि भावी काल दिल्लीपुर आयो काम ॥  
 सूनु जाको देव १९७१ सो बखामै बुध सिंह १९७१ संगी,  
 धीर भयो छोरि दुवलाख २००००० के धरनि धाम ॥ ३९ ॥  
 संवत नयन वेद सत्रही १७४२ लगत समा,  
 सितरमधु १ आदि १ तिथि संगत समय सुद्ध ॥  
 नाथा उति दूजी १ नृपराणी नै प्रसव पाइ,  
 बालक जन्याँ सो नाम करि सो कुमार बुद्ध १९६१ ॥  
 पत्तन १ रु देस २ जाको उच्छव मच्यो प्रचुर,  
 रीतिपर लखन लगाये द्रम्म अनिरुद्ध १९६१ ॥  
 पीछै सक वेद वेद सत्रह १७४४ अनेह पर,  
 तेनय भो दूजो २ ताकै जोध सिंह १९७१ रजित जुद्ध ॥ ४० ॥  
 रानी जुत दुवरहि कुमार ए तब नरेस,  
 मातामह भोन भेजे नगर नमानाँ नाम ॥  
 तबतै रहे ए वसु ८ अर्द्धलो कुमर तत्थ,  
 आये सक वावन ५२ मै पीछै गेह प्रभुराम ॥  
 जेठ १ के जनम पीछै राजा उतिरानी जनी,

१ प्रवेश किया ॥ ३८ ॥ २ परगना के मुख्य ग्राम का नाम है ३ खेड़ा ४ जहाँ ५ कीर्ति ६  
 आगे आनेवाले समय में ७ दुःख में ८ भूमि ॥ ३९ ॥ ९ चैत्र शुद्ध एकम १०  
 जापा ११ चहुन १२ रूपये १३ समय १४ पुत्र ॥ ४० ॥ १५ नाना के घर १६ आठ वर्ष तक

दोइरदुहिता जे वाल्यहीमँ मरी विधिबाम ॥

कावलके सूबा गये याहीके उभैरकुमर,  
तत्थ भये पीछँ मरे तत्थाहि पृथुक ताम ॥ ४१ ॥

एह कछु भावी वर्तमान अब जानौं इहाँ,  
पाये मतभेद दोइग्रंथलेख भेद परि ॥  
मानै किते बेद वेद सत्रह १७४४के सालमँहि,  
धीर अंगरेज ८न उपायन कितोक धरि ॥

साहके निदेससौं रिझाइ बंग सूबापति,  
अर्घ दैके मोललये तीन ३ग्राम होन अरि ॥  
मानै किते छप्पन ५६के संवत लये ए मोल,  
कलकत्ता १ गोविंदोर २ छोटानटीनाकरि ॥ ४२ ॥

ग्राम कलकत्ते माँहि सत्तरि हुते वहाँ गेह,  
बहुरि बसायो इननै जो बडोबिसंतार,  
अंतर तदीय फोर्टविलियम १ नाम एक,  
रुँचिर बनायो दुर्ग स्वीय पँछ रखवार ॥

अज्जनके मंडलकी राजधानी एक १ अब,  
वहै रही पुरीजो सब वस्तुसार दुखहार ॥  
सो तँहँ बनाइ अवरंग ४० ॥ ३ साह सम्मतिसौं,  
देखो अंगरेज ८ भये उतके जमीनदार ॥ ४३ ॥

नृप अनिरुद्ध १९६१ के प्रवीरपनको प्रभाव,  
जान्यौं सो इहाँलौं अपकिति अब जानौं जास ॥  
मान सक पंच वेद सत्रह १७४५ तँपस्य १२मास,  
बुंदीपति कीनों रँच पट्टनि नगरवास ॥

१ ब्रह्मा की विरुद्धता से २ वालक ३ तहाँ ॥ ४१ ॥ ४ मजराना ५ हुक्म से  
६ बंगाले के सूबापति को ७ मूल्य (कीमत) ८ नाम है ॥ ४२ ॥ ९ उसके भीतर  
१० सुन्दर ११ अपने पक्ष के लोगों की रक्षा के लिये १२ आर्यावर्त की ॥ ४३ ॥  
१३ अब आगे उसकी अपकृति जानो १४ प्रमाण १५ फाल्गुन १६ कुछ

जासमै सिनसिनी १ रु सिवगिरिश्वारे जट्ट,  
 प्रबल भये जे मंडि मारलूट २ चहुँ ४ पास ॥  
 सो सुनि पुकार अवरंगाबाद बासी साह,  
 आजम ४१।३ को पुत्र भेज्यो स्वीय नाती जय आस ॥ ४४ ॥  
 याके संग हो न बुंदीसहुको हुकम आयो,  
 ओरहु नबाब १ नृप २ भेजे के घन उफान ॥  
 पट्टनिही पहुँच्यो निदेस साहनौतीको हु,  
 थट्ट सह बट्ट आइ मिलियो अमुकथान ॥  
 चूक मिलिबैमँ करिहो तो दंड पैहो चाहि,  
 हमहि न दोष व्हैहँ जस १ वसु २ देस ३ हान ३ ॥  
 याबिधि कहाइ साहजादा दरकुंच आइ,  
 जेय जटवारि कीनी सन्निधि रन अजान ॥ ४५ ॥  
 पट्टनिहँ भूप चलयो खटपुर १ रति रहि,  
 कीनौ पुरवंसी २ जाइ दूजो २ दलको मुकाम ॥  
 सीखवारे गेहनसौ सुभट बुलाये संग,  
 विन्नति करी वहाँ किते भृत्यन नियति बाम ॥  
 देखहु रहैहँ गुनगोरि ३ के दिवस दोइ २,  
 जोधँ अपनैहू आइ मिलिहँ अखिल जाम ॥  
 यातँ पुरबुंदी व्है पधारहु सँजव आप,  
 लैकैवय जुबन नवोढँन रस ललामँ ॥ ४६ ॥  
 पीछँ पूगिजैहँ करि धाव साहजादेपास,  
 को मरै १ वचै २ को चलिवो है उहाँ रनकाज ॥  
 स्वामी मूढ भृत्यनकी अरज यहैही सुनि,

जाट २ अपने पोते को ॥ ४४ ॥ ३ बहाव से ४ हुकम ५ लेना सहित  
 मार्ग में ७ फलाने स्थान पर ८ घन ९ जाटों का देश १० समीप ॥ ४५ ॥  
 १ भाग्य की २ विरुद्धता से ३ वीर ४ जहाँ ५ शीघ्र ६ जोवन ७ न-  
 दा स्त्रियों का ८ सुन्दर रस लेकर ॥ ४६ ॥ १९ दौड़ २० सर्व सेवकों को

आयो चढि बुंदी अहो हड्डि१नको अधिराज ॥  
 तीजी३अरु चोथी४तिथि रहिकै कथिततत्थ,  
 सकल मिलाइ सेना संगरको सजि साज ॥  
 स्वेत१मधु१पंचमी५छ बेद मुनि इंदु१७४६साक,  
 बुंदीतैं चलयो जो करि लंबे कुंच अतिबाज ॥ ४७ ॥  
 संकेतपै जाइ सुत आजम४१३के स्वीय सेना,  
 अखिल निहारी वहाँ न पूगिसक्यो नृप एह,  
 ताके अपराधकी लिखाइ अरजीहु तानैं,  
 पठई पितामहपै नृप यों जनायो नेह ॥  
 पीछैं बडे बेगैंतैं विजेयथान पहुँचत,  
 श्रमित मिल्यो सो गुनिगोरि३पै निबंसि गेह ॥  
 कैदतैं छुडाईहुती सु प्रसू तऊ कुमार,  
 आदरयो न बुंदीपति सूचिकै रिसअछेह ॥ ४८ ॥  
 मानी प्रतिपैकिखनसों प्रातहि प्रधात मच्यो,  
 जँतहु न पूगिसके साहके कतिक जोध ॥  
 जट्टनको तत्थ बढिगो अति असह जोर,  
 स्वबल सिटायो ताको कुमरहुँ पायो सोध ॥  
 मोहनोत२माधानी । वहाँ कोटाकी चँमूतैं कढि,  
 काम आयो गोवर्द्धन१९५२मारि घनैं अतिक्रोध ॥  
 त्रिदिवँ गयो सो राजगढको अधीस तहाँ,  
 बाँह गलछारि नारि अच्छँरीसह सुबोध ॥ ४९ ॥  
 पुव्वहि अनीककी अनी कति मुरत पेखि,

आश्रय २ कही हुई ३ युद्ध ४ चैत्र सुदि ५ अत्यन्त शीघ्रता से ॥ ४७ ॥ १ अप-  
 ७ औरंगजेब के ससीप ८ विजय करनेवाले स्थान पर ९ थकाहुआ १०  
 एगोर पर घर में निवास करके ११ शाहजादे की माता को ॥ ४८ ॥ १ राजदुआ  
 १२ विशेषघात (युद्ध) १३ जहाँ श्री १५ शाहजादे ने १६ माधोसिंहान १७  
 ना से १८ स्वर्ग १९ अप्सरा ॥ ४९ ॥ २० सेना का २१ अग्रभाग

निखसि अनीकतैं अनीक जुत खोइ नाम ॥  
 रोस साहनातीको बिचारि तैसें अनिरुद्ध१९६।१,  
 भीत गीत आयो भजि धामदीन निजधाम ॥  
 धारनमें धसिकैं अकेले१धीर गोवर्द्धन१९५।२,  
 राख्यो जसभागी बीर कोटाको अधिप राम१९८।३ ॥  
 सेस सेना साहकी इतेबिच पहुँचि संख्य; :  
 जट्टनके थट्ट जीति लैं लयो लारि दुर्जाम ॥ ५० ॥  
 इत अनिरुद्ध१९६।१कुलधर्म कैंहैं दैं उदक,  
 आयो भजि बुंदी तापैं अमरखं साह आनि ॥  
 काहूँनैं लयो न पुरपट्टनि कबहु क्योँहु,  
 जोपैं लयो छीनि सदा बुंदीके बँटहु जानि ॥  
 भूप बुधसिंह१९७।१जैसो आत्म४१।२मरत भयो,  
 तैसोही यहैहु भयो ब्रीडों भजिबेकी तानि ॥  
 अैसी अपकित्ति उडी दिष्टेकरि जैसी उहाँ,  
 हड्ड६१न न पाइ सुरतानैं१८९।१बिनु धर्महानि ॥ ५१ ॥  
 कोटैकी गई प्रसरि याहीतैं अतुल किँत्ति,  
 ग्रामनसमेत पुरपट्टनि लाहि स्वगेह ॥  
 कोटापति अँन्वयमें पुरुख उभै२न कहे,  
 उनको उदंतैं हयाँ प्रसंगसों सुनहु एह ॥  
 सुतजु मुकुंद१९४।१को मरयो जंव जगतसिंह१९५।१,  
 नीति करि पंचननैं कुल१क्रम२हेरि नेह ॥

? बुरी रीति से निकलकर सेना सहित नाम खोकर २वादशाह के पाति का  
 क्रोध ३ मय का गान करता हुआ ४ उस स्थान को छोड़कर ५ तरवारों की  
 धारा में ६ यश में घेड़ करनेवाला ७ युद्ध में ८ प्रहर ॥ ५० ॥ ९ कुल के धर्म  
 को पानी देकर १० क्रोध ११ किसी कारण से १२ बुन्दी के बंद में समझकर  
 १३ भागने की लज्जा १४ फैलाकर १५ भाग्य से १६ बुन्दी के राव सुरता-  
 णसिंह के बिना ॥ ५१ ॥ १७ कीर्ति १८ वंश में १९ वृत्तान्त



मोहन१९४२के सूनुन मनाई तुमरो तखत,  
 तदपि जनाई तिन दास हमरेतो देह ॥ ५२ ॥  
 भाखि अँसँ सबन निवाहयो धुर भीखमको,  
 मोहन१९४२अनुज कन्ह१९४३सुत तव स्वामी मानि ॥  
 प्रेमसिंह१९६१बाल धरयो पंचननै कोटापट्ट,  
 आदि कुलरीतिसौ अनुक्रम उचित आनि ॥  
 ताकी सिंसुतामँ तास धात्रीनँ प्रसारि तोरँ,  
 वँययहि घटायो न बढायो कछु लौ कुबानि ॥  
 उँषिकाके अँसन करी१हय२निबल ईखि,  
 कोटातँ निकारिदये करी हय कहु कानि ॥ ५३ ॥  
 मूँधमँ मरयो न सुत पंचम५जो साधव१९३२को,  
 लोहनतँ जर्जर बच्यो बलिष्ठ आयु लहि ॥  
 पंचननै सो तव किसोर१९७१धरयो कोटापट्ट,  
 करिकँ रहस्य नँय१सूरता२समान कहि ॥  
 ताकै राम१९८३सुत तीन,  
 पहिले इहाँ दुव२परे गिनि प्रसाद प्रँहि ॥  
 पुत्र तीजो३राम१९८३सुत किसोर१९८५मान पट्टपति,  
 गो दिवँ बहोरि चिँके धायन उदँके गहि ॥ ५४ ॥  
 पुत्र तसँ तीजो३रामसिंह१९८३तव वैठो पट्ट;  
 जेठे दुव२भ्रात रहे ईरखा बहु जनात ॥  
 पै जो कहयो जनकँ विचारि निजदेस प्रभु,  
 मिँछहु पटाँ दै मान्योँ ताहिकोँ ज्योँ तँस तात ॥

१पुत्रों ने २तोभी३शरीर४कल के साथ५पालन में६धाय ने७प्रताप८स्वर९कु  
 रीति१०अल्प धान्यके११भोजन से हाथी और घोड़ों को निर्मल देवकर॥५५॥  
 १२युद्ध में १३ एकान्त (गुप्त) १४ नीति १५प्रसाद के रूप में १६स्वर्ग १७अपकृत  
 हुए १८घावों से १९आगे आनेवाले समय का कर्म फल उत्पन्न करके ॥५४॥  
 २०पिता २१बादशाह ने २२उसके पिता को माना था निजीप्रकार

सोही रामसिंह १९८।३इहाँ कोटापुर सासक हो,  
 उक्त भूप १हैं पै वर्तमान अब जानौं बात ॥  
 पाई एक १भाई सेंटि यानैं पुरी पट्टनि सो,  
 बुंदीपति कीनौं जयजसरको जँह बिघात ॥ ५५ ॥  
 भागे सब हाडे ६१ पहिलैं तो यह रूपात भई,  
 बुंदी देस १कोटादेस २सोक भो बिनु विसास ॥  
 तोहनपुरेस कविराज हरनाथ तहाँ,  
 गोवर्द्धन १९५।२भागो सुनि छोरयो लैन मुखयास ॥  
 भाख्यो यौं परिच्छा हम कीनी सो बितथ भई,  
 तो अब न जीवैं बजि चारन घटक तास ॥  
 अन्नबिनु या कविकौं असेँ कढे तीन ३अंह,  
 चोथे ४दिन पाई ज्यौं भई त्यों चारमुख चाँस ॥  
 हाडे ६१ और भागे पै न भागो सुत मोहन १९४।२को,  
 खेतपरयो गोवर्द्धन १९५।२जट्टन घनेन खाइ ॥  
 असो भयो निश्चय लयो तव सुकवि अन्न,  
 जो सु भजिआवैं निहचे तो यह मरिजाइ ॥  
 तूटिपरयो ताकाँ जानि प्रेत्युत सुमह तानि,  
 तानैं कविता करि परिच्छा जगकाँ जताइ ॥  
 कोटापति रूतिभोजी जीवन विचारयो कवि,  
 काव्य जाके डिंगल गिराँमैं अजौं चमकाइ ॥ ५७ ॥  
 साह असेँ पट्टनि उतारी अनिरुद्ध १९६।१सन,  
 कोटापति राम १९८।८को मिली सो सबग्राम साथ ॥

१पति २वदले में देकर ३ नाश ॥ ५५ ॥ ४प्रसिद्ध ५विश्वास ६ थूढ़णपुर का पति  
 कवि महियारिया जात्रा का चारण ७ परीक्षा ८ झूठी ९ इस चारणपन  
 का शरीरधारी बजकर १० दिन ११ हलकारों के मुख से, १२ खबर सुनी  
 ॥ ५६ ॥ १३ डल्ला १४ अष्ट उत्सव करके १५ परीक्षा १६ जीविका १७ खानेवाला

यातैं हमरेहु ग्राम खटहहि लवान१आदि,  
 पटनके संग गये पाथमैं ज्यों मिलि पाथ ॥  
 तब खटहए रहे बरोदिया नगर तंत्रै,  
 हरिना१प्रमुख अल्प प्रभुके कविन हाथ ॥  
 पहु बुधसिंह१९७१संग स्वकवि कहे न पीछैं,  
 यातैं सब खोइराख्यो हरिना१स्वगृह आर्थ ॥ ५८ ॥  
 सोपै राख्यो हमरे उमेद१९८१४नृपही सँदय,  
 नाँतो व्है दलेल१९८१२के रहे हे इम जातो नाम ॥  
 एह कहु भावी३वर्तमान२ प्रभु जानौ अब,  
 कोटापतिके गये लवान१मुख यों छेदगाम ॥  
 जाइ तब कोटा रामसिंह१९८१३कोँ नँति जनाइ,  
 छुँतपन ठानि कह्यो लेहु न स्वकवि धाम ॥  
 राम१९८१३कह्यो वृत्ति हमनैं तो सहियारिय२न,  
 सोँपी तुमतो१नटाइ क्यों अब इत सँकाम ॥ ५९ ॥  
 माधव१९३१२हमारे प्रपितामह उचित मानि,  
 तुमहि बुलाये पै न आये व्हँ प्रसभ तानि ॥  
 भाख्यो हम बुंदी तंत्रै कितकित हाहा भ्रम,  
 माधव१९३१२तदपि लायो 'खंधिल' । हिं निज मानि  
 बुंदी१ओ लवान२जेवो बरज्यो न मान्यौ बलि,  
 ईससौ अधिक दीनी गोठि जयसिंह आनि ॥  
 उँदत ससुभि मान । खंधिल । तनय यातैं,  
 वृत्ति दीनी ओरनकोँ तुमरी लखि कुवानि ॥ ६० ॥

१ जिसप्रकार पानी में पानी मिलजावे तिसप्रकार मिल गये २ आश्रीन ३ हरणां आदि ४ आप के कवियों के हाथ से ५ राजा बुधसिंह के साथ ६ अपने घर का धन ॥ ५८ ॥ ७ दयावान् ८ बुधसिंह के विशेधा दलेलसिंह के होकर रहे थे इस कारण ९आदि १०नजना ११वृत्तना करके १२कामना सहित क्यों होते हैं ॥ ५९ ॥ १३ दृष्ट करके १४ आश्रीन १५नाम है १६चञ्चल ॥ ६० ॥

आई अब पढ़नि हमारे तुम यातैं आई,  
 खोये जे लवान<sup>१</sup> आदि राखेचहो ग्राम खटव<sup>२</sup> ॥  
 तोतो आई अबहु हमारे होहु बुंदी तजि,  
 बलि सु न मानि छोरि पढ़नि प्रदेस बट ॥  
 आवत बुलाइकैं लवानमें हवेलि<sup>३</sup> अरु,  
 पुढ़विशहवालेकी दईदे कछु द्रव्य<sup>४</sup> पटैर ॥  
 सो मुनि दई न लहि पढ़निहू बुधसिंह<sup>५</sup> १९७१,  
 पछु दुवसंगी काकैताराज्याँ करे प्रकट ॥ ६१ ॥  
 पीछें गई बुंदी बुधसिंह<sup>५</sup> १९७१ नृपके प्रसाद,  
 तब जो भई सो कही कहिहैं बहुरि तौम ॥  
 राखि पे हवेली<sup>३</sup> ओ हवाला<sup>६</sup> यों लवान<sup>१</sup> में रु,  
 आये उपालंभ लहि बुंदीको छवि ललाम ॥  
 इत अपराध अनिरुद्ध<sup>७</sup> १९६१ को भजत इहाँ,  
 जानि अवरंग<sup>८</sup> ०१३ अतिकोपको बिखम जाँम ॥  
 भेज्यो नृप काबलके सूझा अहदीन भेजि,  
 दीनीसुद्धि जाहु नदे प्रत्यह हजार<sup>९</sup> १००० दास ॥ ६२ ॥  
 वज्रसो हुकम यहै साहको सुनत बुंदी,  
 धार भय माच्यो ज्यों अनीरि भखैं जेठ<sup>१०</sup> ग्राम ॥  
 भाख्यो भूप सुजर्जन<sup>११</sup> १९०१ नरेस करि कोल सात७,  
 तोरयो गुडवानाँ अकवर<sup>१२</sup> १९१२ के प्रसाद तौम ॥  
 भोज<sup>१३</sup> १९११ रतनेस<sup>१४</sup> १९२१ सत्रुसल्ल<sup>१५</sup> १९४१ अरु भाऊ<sup>१६</sup> १९५१ भूप,  
 काहुन अटकैं लंघी स्वीयहुँ विगारि काम ॥

१ पेट २ लुमि ३ कन्न ४ काक पत्ती की दृष्टि आगे पीछे दोनों ओर जाती है ऐसे ॥ ६१ ॥ ५ वहाँ कहेंगे ६ ओलंभा लेकर ७ जहाँ ८ स्वर ९ प्रति दिन (हमसे) ॥ ६२ ॥ १० ज्येष्ठ मास की धूप में बिना पानीवाली मच्छी के समान ११ वहाँ १२ नटकनदी १३ अपर्णा

हारि अब जेहों कहा कहिहैं सकल हाइ,  
 स्वीयेन वहाँ सुचि धुव रहिहैं गयेही धाम ॥ ६३ ॥  
 पाउसको अँवो अनिरुद्ध १०६ १ नृप तोहू पेखि,  
 प्रतिदिन बंड मादकी जो तसठाँ पुगाइ ॥  
 आठिवन ७लों बारह हजार १२००० अहदीन अपि,  
 भीत सीत पानी बँसबिरुदन देवो भाइ ॥  
 लघु दुवरा रानी ओ खवासि कछु संग लैकैं,  
 जीवत मृतक भयो अटक परत्र जाइ ॥  
 राजा अब्द पंचक १ अमीर खान पास रहि  
 सुजर्न १०१ को कोविंद विगाथो सर्वसों सिटाइ ॥ ६४ ॥  
 छठे ६ अब्दलें तँहँ कुदिष्ट करि रोग छाड,  
 मास सुचि ४ मेचक २ द्वितीया रंगयो भूप मरि ॥  
 बुंदी लाये गानि १ न खवामि २ न सह विभूति,  
 कथित प्रामन उहाँ भूपतिको दाह करि ॥  
 दुर्जन १०६ १ दवायो कुँसलारुय १ मो सिलहदार,  
 महाराज रनाथाउत साकलहु मज्झ पगि ॥  
 नयन कलंव सुनि इंदु १ ७५ २ सक बुंदीनैर,  
 सहसा अमंगल अनिष्ट मध्यो भे प्रसरि ॥ ६५ ॥

( चूडात्त दोहा )

बह ६ १ न इन अनिरुद्ध १०६ १ हुव, अटक पार विनु अंग अमंगल  
 इत बुंदी सब आकुले, सनु भये इहि संग समंगल ॥ ६६ ॥

१ अपने लोगों ने ॥ ६३ ॥ २ जालसा करने तथा दंड लेने को भेजे जाते थे  
 ३ लोगों को अहदा करने थे जो राजपूताने में जालसा का नाम प्रसिद्ध  
 हो गया है ४ सय का सिद्ध होकर भेजेकी स्तुति को पानी देना कहा ४  
 अटक नदी के पार जाना १ पांच वर्ष ६ सुजर्न की पंद्रह वर्ष ७ वर्ष में ॥ ६४ ॥  
 ८ गुरे भाग्य में ६ सपना यदि दोष के दिन १० कुशलनिष्ठ नाम का ११ सय  
 १२ भय ॥ ६५ ॥ १३ हाथों का राजा १४ मंगल नातिन ॥ ६६ ॥

पुर्व१ मरी रानी प्रथम१, सह जेहोनि २हुतीहि से सप्रसव ॥  
 उत न जरी न जरी इतहु, तीस ३० खवासि हुई ससंग तव ॥ ६७ ॥  
 महाराम१ सालक कुमति, पीछें सालम संग भयो पर ॥  
 सिलहदार१ कुसलाख्य१ सह, आयो लौ सब भूति इहाँ अर ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

अटक पार मरतहि अधिप, हुय बुंदिय हाकार ॥  
 सिमु दुव२ मातुल सदन सन, बुल्ले बिदित बिचार ॥ ६९ ॥  
 क्रमित चरित अनिरुद्ध१ ६११ का, अल्पहि हो जिम आनि  
 कथन जथाश्रुत तिम कहिय, पुनि श्रुत१ लेख२ प्रमानि ॥ ७० ॥

॥ ॥

सुपहु रचे सबही महलन सिर इहि अनिरुद्ध महल१ अभिधान ॥  
 सबसन उच्च अजि१ छत्रि३ न सह बहु तुंगित करि बहुत विधान ॥  
 गिरिगंढ द्वार अवधि सन सुभ गिनि क्रमकरि सबपुरविच परिकूट१  
 पाउस जल कर्हस दुख परिहरि लिय पहिलैं डम करि जस लूट ॥ ७१ ॥  
 पुर कापरनि तथाहि कुमरपन प्रथित रुचिर बिरचे प्रासाद३ ॥  
 नृपधातैर्यहु देव१ सनामक बाढिय जस जग मुख संबाद ॥  
 निज आख्यां करि देवपुरा१ नवसाखापुर यह रचिय सयान ॥  
 बापी२ उपवन३ महल३ बनाइ रंथितिकिय तँहँ सुहिगिनि निजथान ॥  
 डक१ छत्रिय१ ५ बिरचिय तँहँ अनुपम चउरासिय थंभन चित चौर ॥  
 थिर जैसी कहियत बिरले थल किय तैसी प्रमुदित करि कार ॥

१ जादवणी सहित २ पति के साथ ॥ ६७ ॥ ३ कुशलासिंह के साथ ४ ऐश्वर्य  
 ५ शीघ्र ॥ ६८ ॥ ६ मामा के घर ७ से उचित विचार से बुलाए ॥ ६९ ॥ १ चत  
 ताहुआ चरित्र १० सुनेहुए और लिखेहुए के अनुसार ॥ ७० ॥ ११ महलों के  
 ऊपर १२ चौक १३ ऊँचा १४ पर्वत के गढ के दरवाजे की सीमा से १५ नगर  
 का द्वार १६ वर्षा के जल के कीचड़ का दुःख मिटा कर ॥ ७१ ॥ १७ प्रसिद्ध  
 १८ धाय बाई १९ कहलाया २० अपने नाम से २१ शहर के बाहर का पुरा  
 ॥ ७२ ॥ २२ सुन्दर २३ कारीगरों (शिल्पियों) ने

विरचिय तिम दूजीरुखत्री२।६वर पुनि तारागढ प्राच्ये१प्रदेस ॥  
कहियत सुत सजनक आख्या करि इम तबतैं छत्रिन जुगएस ७३  
॥ दोहा ॥

पहुँ बुंदिय बाजार पथ, सिला खुग किय सँज्ज ॥  
पाउसमैं दुख पंकको, यातैं मचत न अँज्ज ॥ ७४ ॥  
किंते कहत खलु यह खुरा१, मंजु रच्यो नृप माइ ॥  
किमहु होहु पै कहमैं न, जिहिं करि अबलगि जाइ ॥ ७५ ॥  
तज्यो देह नृप रचित जँह, अज्जहु चौराँ आहि ॥  
रच्यो चरित अनिरुद्ध१९६।१को, बिधि क्रम बँत निबाहि ॥  
जिहिं संग न डक१हु जरी, अबला रानिन आदि ॥

यह अचिउँज पिखहु अधिप, उँज्जिय रीति अनादि ॥ ७७ ॥  
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशौ बुन्दी-  
पत्यनिरुद्धसिंहचरित्रे ज्ञातदक्षिणागतानिरुद्धहाडादुर्जनसिंहबुन्दीवि-  
जयन १, यवनेन्द्रसेनासहायप्रद्रावितदुर्जनसिंहानिरुद्धसिंहबुन्दी-  
पुनराधिगमन २, क्रीतकलिकातानगरांगलफोर्टविलियमदुर्गनिर्मा-  
णा ३, सनसनीकजट्टयुद्धानिरुद्धसिंहपलायन ४, तद्युद्धकोटासेना-

(श्रेष्ठ २ तारागढ का पूर्व दिशा में ३ पिता सहित पुत्र के नाम से ॥ ७३ ॥ ४ राजा  
ने १ पत्थर का खुरा तयार कराया ६ कीचड़ का ७ आज [ इस समय ] ॥ ७४ ॥  
५ निश्चय, १ यह सुन्दर खुरा राजा की माता ने बनाया १० कादा [ कीचड़ ]  
॥ ७५ ॥ ११ शमशानों का \* मंदिर १२ है १३ चार्ता का निर्वाह करके  
॥ ७६ ॥ १४ स्त्री १५ आश्चर्य १६ अनादि रीति का छोड़ी ॥ ७७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में बुन्दी के भूपति  
अनिरुद्धसिंह के चरित्र में अनिरुद्धसिंह को दक्षिण में जानकर हाडा दुर्जन-  
सिंह का बुन्दी विजय करना १ बादशाही सेना के बल से दुर्जनसिंह का भ-  
गाकर अनिरुद्धसिंह का बुन्दी पीछा लेना २ और अंगरेजों का कलकत्ता नगर  
मोल लेकर वहाँ फोर्टविलियम नामक गढ़ बनाना ३ सनसनीवाले जाटों के  
युद्ध में अनिरुद्धसिंह का आगना ४ इसी युद्ध में कोटा के सेनापति गोवर्धन

\* पहिले समय में दग्ध स्थान पर मंदिर बनते थे अब उसके स्थान में छत्रियाँ बनती हैं किन्तु जोधपुर में  
तो शमशानों में अब भी मंदिर ही बनते हैं ॥

पतिगोवर्द्धनप्रद्रवश्रवणास्वपरीक्षानृत्यहेतुकृतानशनव्रततूहणापु-  
रीयमहियारियाचारणाहरनाथस्य रणाहतगोवर्द्धनश्रवणात्सर्वपुरः-  
सराशनकरणा ५, रणापलायनापराधहनानिरुद्धपट्टनप्रान्तकोटा-  
धिपप्रदान ६, प्राप्तदण्डकृतसुर्जनसंधानिरुद्धसिंहयवननेन्द्रसेवासि-  
न्धुसरित्परतटगमन ७, उपितपञ्चदायनानिरुद्धसिंहतडूभिमरणा-  
तत्समयनिर्मितस्थानसूचनमेकादंशो मयूखः ॥ ११ ॥

आदितोऽष्टत्रिंशोत्तरद्विशततमः ॥ २३८ ॥

दाम का भागना सुनने के कारण अपनी परीक्षा को झूठा मानकर मरने के  
कारण अन्न जल छाँड़नेवाले तूहणपुर के महियारिया चारण हरनाथ का गो-  
वर्धन का युद्ध में काम आना सुनकर उत्सव करके अन्न जल लेना ५ युद्ध में  
भागजाने के अपराध से अनिरुद्धसिंह से पाटण का परगना ग्वालसे होकर  
कोटा बालों को मिलना ६ बादशाह से दंड पाकर सुर्जन के किये हुए कोल को  
तोड़कर अनिरुद्धसिंह का शाही सेवा में अटक नदी के पार जाना ७ पाँच  
वर्ष रहकर अनिरुद्धसिंह का वहीं पर मरना और अनिरुद्धसिंह के समय के  
बने हुए स्थानों की सूचना का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि  
दो सौ अड़तीस २३८ मयूख हुए ॥

